

GRYER 00769

ΔΗΜΟΣΙΑ ΒΙΒΛΙΟΘΗΚΗ ΒΕΡΟΙΑΣ

K.B. 10B

ΔΗΜΟΣΙΑ ΒΙΒΛΙΟΘΗΚΗ
ΒΕΡΟΙΑΣ
9059
Αριθ. εισ. 221960
ΔΩΡΕΑ *Παραδωμένο*

ρ
ε
π
ε
ρ
τ

α
α
τ
ο
ρ
ε
π
ο
π
ε
τ
ο
ρ
ο
α
σ

ΔΗΜΟΣΙΑ ΒΙΒΛΙΟΘΗΚΗ ΒΕΡΟΙΑΣ
K.B. 10B

ἀριθμ. 11,
Εὐαγγέλιον
τοῦ 16. αἰῶνος
ἔτος 1512 τοῦ
Σουλτανοῦ

Ἰωάννης ὁ πρῶτος ἀπὸ τοῦ Ἰουδίου καὶ τοῦ
καὶ τοῦ



7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 84



ἡ ἀρχὴ τῷ λόγῳ· καὶ ὁ λόγος τῷ πρὸς
 τὸν θεὸν καὶ τῷ λόγῳ· οὗτος τῷ ἐν
 ἀρχῇ πρὸς τὸν θεόν· πάντα δι' αὐτοῦ ἐγε-
 γνήτο καὶ χωρὶς αὐτοῦ ἐγένετο οὐδὲ ἓν ὃ
 οὐκ ἦν ἐν αὐτῷ ζωὴ καὶ ἡ ζωὴ τῷ
 τὸ φῶς τῶν ἀνθρώπων· καὶ τὸ φῶς ἐν τῇ σκο-
 τίᾳ φαίμεν καὶ ἡ σκοτία αὐτὸ οὐ κατέ-
 λαβεν· ἐγένετο ἄνθρωπος ἀπεσταλμένος
 παρὰ τοῦ θεοῦ ὁνομασθεὶς ἀγγελος· οὗτος
 ἦλθεν ἐν μαρτυρίᾳ ἡν αὐτὸς μαρτυρήσῃ πε-
 ρὶ τοῦ φωτός· ἡν αὐτὸς πείσασθαι οἱ διὰ
 τοῦ· οὐκ ἦν ἐκ τοῦ φωτός ἀλλ' ἡ μαρ-
 τυρήσῃ περὶ τοῦ φωτός· τῷ τὸ φῶς τὸ ἀλη-
 θινόν ὃ φωτίζει πάντα τὸν ἄνθρωπον ἐρχόμενον
 εἰς τὸν κόσμον· ἐν τῷ κόσμῳ τῷ καὶ
 ὁ κόσμος δι' αὐτοῦ ἐγένετο· καὶ ὁ κόσμος αὐ-
 τὸν οὐκ ἔγνω· εἰς τὰ ἴδια ἦλθε· καὶ οἱ
 ἰδίοι αὐτοῦ οὐ παρέλαβον· ὅσοι δὲ ἔλα-
 βον αὐτὸν ἐδώκεν αὐτοῖς ὄξος ἵνα τε-
 κνῶν ἡνέσθαι τοῖς πείσασθαι ὅτι τὸ ὄ-
 νομα αὐτοῦ· οἱ οὐκ ἐξ αἱμάτων· οὐδὲ
 ἐκ θελήματος σαρκὸς οὐδὲ ἐκ θελήματος

ἀνδρὸς· ἀλλ' ἐκεῖθεν ἐξημνήθησαν· καὶ ὁ λό-
γος σαρξ ἐγένετο καὶ ἐκήρυσσεν ἐν ἡμῖν·
καὶ ἐθεασάμεθα τὴν δόξαν αὐτοῦ· δόξαν ὡς
μονογενοῖς πατρὸς πλήρης χάριτος καὶ
ἀληθείας· ἰσχυρὸς ἀνυμνῶν περὶ αὐτοῦ
καὶ κέκραγεν λέγων· οὗτος υἱὸς τοῦ Θεοῦ· ὁ
ὀπίσω μου ὄχλος μόνος ἐμπροσθέν μου γε-
μεν· ὅτι πρῶτος μου υἱός· καὶ σὺ τοῦ πληρω-
ματος αὐτοῦ ἡμεῖς πάντες ἐλάβωμεν·
καὶ χάριν ἀντὶ χάριτος· ὅτι ὁ νόμος διὰ
κωσέως ἐδόθη· ἡ χάρις καὶ ἡ ἀληθεία δι-
ὰ τοῦ υἱοῦ ἐγένετο· ~ τὸ κτλ. ~

Οὗτος ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ, τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ πρὸς ἡμᾶς·

Θὴ ἐπὶ τὴν ἡμέραν ἐκείνην· ἡμεῖς οὖν ἐ-
ώρακεν πᾶν ποτε ὁ μονογενὴς υἱὸς
τοῦ Θεοῦ εἰς τὸν κόλπον τοῦ πατρὸς ἐκείνου· ἐξ-
ήγησατο· καὶ αὐτὴ ἐστὶν ἡ μαρτυρία τοῦ ἰσχυ-
ροῦ· ὅτε ἀπέστειλαν οἱ Ἰουδαῖοι δέξασθαι
σοφίαν καὶ ἐκείνον· ἵνα ἐρωτη-
σωσιν αὐτόν· σὺ τίς εἶ; καὶ ὁμολόγησε
καὶ οὐκ ἐμήθετο· καὶ ὁμολόγησεν ὅτι οὐ
κὴμὶ γνώσκω· καὶ ἠρώτησαν αὐτόν· τί οὖν
ἡλίας εἶ σὺ· καὶ λέγει· οὐκ εἰμὶ· ὁ προφήτης
εἶ σὺ· καὶ ἀπεκρίθη· οὐ· ἡ πόλις οὖν αὐτοῦ·
τίς εἶ σὺ; ἵνα ἀποκρισὶν δώκεν τοῖς πε-
πασμένοις· τί λέγεις περὶ αὐτοῦ; ἐφ-
ήκει· ἡ φωνὴ βοῶντος ἐν τῇ ἐρήμῳ· ἀθύνατε
τὴν ὁδὸν κυ· καθὼς εἶπεν ἡσαΐας ὁ προφή-
της· καὶ οἱ ἀπεσταλμένοι ἤσαν ἐν τῇ φωνῇ

σαίωμ· καὶ ἤρῳησαν αὐτὸν· καὶ ἡ πορ αὐτῶ·
 πούω βαπτίζεις· ἡσὺ οὐκ ὁχῆ· οὔτε ἡλίας·
 οὔτε ὁ προφήτης· ἀπεκρίθη αὐτοῖς οἱ ἰωάννης
 λέγων· ἡσὺ βαπτίζω ἐν ὕδατι· μέσων δὲ ὑ-
 μῶν ἔστηκεν ὁ ὑμῶν οὐκ οἶδατε· αὐτὸς ἔ-
 στίμ ὁ ὀπίσω μου ἐρχόμενος· ὃς ἐμπροσθεν
 μου ἔρχεται· οὐ ἐγὼ οὐκ ἔμὶ ἀξίος ἵνα λίσσω
 αὐτοῦ τὸν ἱμάτα τοῦ ὑποδήματος· ταῦ-
 τα ἐν ὑμῶν ἐγὼ περὶ πέραν τοῦ ἰορδάνου
 οἱ ποὺ ἰωάννης βαπτίζων· — τῇ Γ'
 τῆς δευτερείας· καὶ τοῦ· πᾶν καιρὸν ἐκείνῳ· ὁ
 πέτρος ἀναστὰς· πᾶν τῇ ἐκείνῳ τοῦ αἵματος·

τῇ δ' τῆς δευτερείας καὶ τοῦ· || ζῆ' ἐκείνῳ

καὶ πᾶν καιρὸν ἐκείνῳ· ἡσὺ καὶ οἱ ἰωάννης καὶ ἐν τῶν
 μαθητῶν αὐτοῦ διὰ καὶ ἐμβλέψας τῶ
 ἰσὺ περὶ παποῦν τὴν λέγει· ἰδοὺ ὁ ἀνθρώπος τοῦ θῦ·
 καὶ ἡ κοίσα αὐτοῦ οἱ διὰ μαθηταὶ λαλοῦν-
 τος· καὶ ἡ κολούθησαν τῷ ἰσῷ· γραφὴ δὲ
 οἱ σὺ καὶ θεοσάμενος αὐτοῖς ἀκολουθοῦν-
 τας· λέγει αὐτοῖς· τί ζητεῖτε· οἱ δὲ ἡ πορ αὐ-
 τῶ· ραββὶ· ὁ λέγεσθαι ἐρχόμενον διδά-
 σκαλε· ποῦ μένεις· λέγει αὐτοῖς· ἐρχάθε·
 καὶ ἰδέτε· ἡλθον οὖν καὶ ἡσὺ ποῦ μένει·
 καὶ παρ' αὐτῶ ἐμεγαλυντὶν ἡ μέρα ἐκεῖ-
 νη· ὡραίων ὡς δὲ κατῆ· λίον δὲ ἀνδρέας
 ὁ ἀδελφὸς σίμωνος πέτρου· ἡσὺ ἐν τῶν δι-
 τῶν ἀκούσαντων παρὰ ἰωάννου καὶ ἀκο-
 λουθησάντων αὐτῶ· ἀντίκρυ οὗτος πρῶτος τὸν
 ἀδελφὸν τὸν ἰδὼν σίμωνα καὶ λέγει αὐτῶ·

ἀρίκα μεν τὸν μισίαν ὅτι μεθερμίνωσεν
μενορχεῖ + καὶ ἠγάγετο αὐτὸν πρὸς τὸν ἱὺν. ἐν
βλέμῃ αὐτῷ ὁ ἰσὶ εἶπεν. σὺ ἡσίομαι
ὁ υἱὸς ἰωάννου. σὺ κληθήσῃ κηφᾶς. ὁ ἐρμίνω-
σται πέτρος + τῇ ἐπαύριον ἠθέλησεν ὁ ἰσὶ
ἐξελθὴν εἰς τὴν γαλιλαίαν. καὶ ἀρίσκω φί-
λίππον καὶ λέγει αὐτῷ, ἀκολουθε μοι + ἰὼ δὲ
ὁ φίλιππος ἀπὸ βιθαϊδᾶς μετ᾽ αὐτὸν πόλως ἀν-
δρέου καὶ πέτρου + ἀρίσκω φίλιππος πρὸς τὸν ἱ-
ωάννην καὶ λέγει αὐτῷ. οὐκ ἔγραψεν ἡσίομαι
τῶν ὀνομάτων καὶ οἱ προφηταί. ἀρίκα μεν ἱὺν τὸν
υἱὸν τοῦ ἰωάννου τὸν ἀπομαρτυρεῖ + καὶ ἡσίομαι
αὐτῶν ἠγᾶτο. εὐμαρτυρεῖ δὲ αὐτῷ τίς α-
γαθὸν ἔργον. λέγει αὐτῷ φίλιππος, ἐρχου καὶ
ἰδε + ἰδε μὲν ἰσὶ τὸν μαθᾶν ἔρχομενον
πρὸς αὐτὸν, καὶ λέγει περὶ αὐτοῦ. ἰδε ἀλη-
θὴς ἰσραηλῆτης ἐν ᾧ δόλος οὐκ ἔστι + λέγει
αὐτῷ μαθᾶν. πόθεν με γινώσκεις + ἀπε-
κρίθη ἰσὶ καὶ ἡσίομαι αὐτῷ. προτοῦτε φίλιππος
φωμῆσαι ὅντα ὑπὸ τῷ σὺ κηφᾶς εἶδον + ἀπε-
κρίθη μαθᾶν καὶ λέγει αὐτῷ. ραββί. σὺ εἶ
ὁ υἱὸς τοῦ θῷ. σὺ εἶ ὁ βασιλεὺς τοῦ ἰσραὴλ + ἀπε-
κρίθη ἰσὶ καὶ εἶπεν αὐτῷ. ὅτι ἡ πόρνη εἶδον
αὐτὸν κατὰ τῆς σὺ κηφᾶς. πῶς αἶσθαι μὲν τοῦ
πορνοῦ + καὶ λέγει αὐτῷ. ἀμὲν ἀμὲν λέγω
ὑμῖν + ἀπ᾽ ἀρτίου ἔσθαι τὸν οὖνον ἀνεωγμένον
καὶ τοὺς ἀγγέλους τοῦ θῷ. ἀναβαίνομεν
καὶ καταβαίνομεν ἐπὶ τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου.

πίστευετε· οὐδὲ γὰρ ἀναβίβηκεν γὰρ τὸν οὐρανόν·
μή οὐκ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ καταβῆσ· οὐ γὰρ τοῦ ἀέρος
ὁ ὤν ἐν τῷ οὐρανῷ· καὶ καθὼς μὴ σῆσ' ἴψωσεν
τὸν ὀφθαλμὸν ἐν τῇ ἐρήμῳ· οὕτως ἴψωθῆναι δὲ
τὸν ἵον τοῦ ἀέρος· ἵνα πᾶς ὁ πιστῶν γὰρ αὐτὸν
μὴ ἀπαλήται· ἀλλ' ἐχθρὸς ζωὴν αἰώνιον·

τῇ παρὰ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ κατὰ τὴν
Καὶ ῥῶ ἐκείνῳ· ἦλθεν οὖν ὁ θεὸς καὶ περμασίν·
αὐτὸς καὶ ἡ μήρ' αὐτοῦ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ· καὶ
οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· καὶ ἐκείνῳ ἐμνησάμενον πο-
λλὰς ἡμέρας· καὶ ἄλλοις ἐν τῷ πᾶσι καὶ τῶν ἱου-
δαίων· καὶ ἀνέβη εἰς ἱερὸν σόλῳμα ὁ ἴσους·
καὶ ἀρξάμενος ἐν τῷ ἱερῷ· τοῖς πωλοῦντας βοῦς
καὶ πρόβατα καὶ περὶ τεράς καὶ τοῖς κερμα-
τίσιν καθήμενος· καὶ ποιήσας φωνήν
ἐν σιμωνίῳ· πάντα ἐξέβαλεν ἐκ τοῦ ἱ-
εροῦ· τὰ τε πρόβατα καὶ τοῖς βοῦς· καὶ τῶν
κοιλύβιστων ἐξέχευεν τὸ κέρμα· καὶ πᾶς τρα-
πέζας ἀνέστρεψεν· καὶ τοῖς πᾶσι περὶ τεράς
πωλοῦσιν εἶπεν· ἀρά τέ τὰ ταῦτα ἐν τῷ ἱερῷ
μὴ ποιῆτε τὸν οἶκόν τοῦ πατρὸς μου οἶκος ἐμπο-
ρίου· ἐμνήσθησαν δὲ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ
ὅτι γεγραμμένον ἐστίν· ὁ οἶκος τοῦ οἴκου
κατέφαθ' ἐμε· ἀπεκρίθησαν οὖν οἱ ἱουδαί-
οι καὶ ἔπουν αὐτῷ· τί σημεῖον δὲ κρύνεις ἡμῖν·
ὅτι ταῦτα ποιῆς· ἀπεκρίθη ἰσους καὶ ἔπουν αὐ-
τοῖς· καταλίψατε τὸν ναὸν τοῦτον· καὶ ἐν ἑξ-
εὐκ ἡμέραις ἐγερῶ αὐτόν· ἔπουν οὖν οἱ ἱουδαί-
οι· πᾶσα γὰρ κοίτη καὶ ὅτι ἐπεσὶν ἡ κοδοδμήτης

4

Δημόσια Κεντρική Βιβλιοθήκη Βερόνικας

$$T_1 \cap T_2 \cap \dots \cap T_n$$

οὐδὲ τε πύργῳ τὸν καλὸν οἱ μὲν ὥς ἀρτί+ πάλ-
 τῳ ἐποίησαν τὴν ἀρχὴν τῶν σημείων οἱ δ'
 ἐκ κατὰ τὴν θαλιλαίαν· καὶ ἐφάρεωσεν τὴν
 δόξαν αὐτοῦ· καὶ ἐπίστανται αὐτὸν οἱ μὲν

ὁ πρὸς τοὺς ἑαυτοῦ καὶ ἰω^ν || θηταὶ αὐτοῦ:

Υμαθῆταίς· οὕτως ἡ βαπτισμὸς τοῦ κόσμου
 ὡς τε τοῦ ἰσχυροῦ αὐτοῦ τοῦ μορογενῆ ὁ δὲ κεν-
 ῖμα πασὸ πίστεως εἰς αὐτὸν μὴ ἀπώληται·
 ἀλλ' ἐχθρὸν αἰῶριον· οὐ γὰρ ἀπέσθλην ὁ
 τοῦ ἰσχυροῦ αὐτοῦ ὁ κόσμος ἵνα κρύβῃ
 τοῦ κόσμου· ἀλλ' ἵνα σωθῇ ὁ κόσμος δι' αὐτὸν·
 ὁ πίστεως αὐτοῦ, οὐ κρύβεται· ὁ δὲ μὴ πί-
 στεως ὁ δὲ κρύβεται· ὅτι μὴ πεπίστευκεν
 τὸ ὄνομα τοῦ μορογενῆ ἰσχυροῦ τοῦ θῆ·
 αὐτὴ δὲ ἐστὶν ἡ κρίσις, ὅτι τὸ φῶς ἐλήλυθεν
 εἰς τὸν κόσμον· καὶ ἡ χάρις τοῦ ἀνθρώπου
 μορφοῦτος, ἢ τὸ φῶς· ὡς γὰρ πομπὴ αὐτῶ
 τὰ ὄρβια· πᾶς γὰρ ὁ φαῦλα πρᾶστον, μὴ
 τὸ φῶς· καὶ οὐκ ἐρχεται πρὸς τὸ φῶς· ἵνα
 μὴ ἐλεχθῇ τὰ ἔργα αὐτοῦ· ὁ δὲ ποιῶν τὸ
 ἀληθὲς ἐρχεται πρὸς τὸ φῶς· ἵνα φανερω-
 θῇ αὐτοῦ τὰ ἔργα· ὅτι ἐν τῷ θῷ ἐστὶν ἡ ἀλήθεια

τῇ δ' τῆς θ' εὐ' ἐ' πῶ αὐτῶν. || μένα:
 ὅτι περὶ οὗ πρὸς τοὺς ἐληλυθότας πρὸς αὐτὸν
 Ἰουδαίους· ὁ πῆρ μου ἕως αὐτῶν ἐργάζεσθαι καὶ
 γὰρ ἐργάζομαι + δι' αὐτοὺς οὖν ἐξήτοιμα αὐτοὺς
 οἱ Ἰουδαῖοι ἀποκτεῖναι· ὅτι οὐ μόνον ἐλὺ
 ἐπὶ σάββατον, ἀλλὰ καὶ πρᾶϊ ἰδίῳ ἐλθε-
 τὸν θῆ· ἴσον ἐαυτὸν ποιῶν τῷ θῷ + ἀπεκρί-

η δ' αὖτις ἔπειτα

καταοὖν οἷον καὶ ἐλθὲν αὐτοῖς + ἀμὲν ἀμὲν
λέγω ὑμῖν· οὐδὲν αὐταὶ οἷον ποιῶν αἰφ' αὐτοῦ
οὐδὲν· εἰ μὴ τί βλάβη τὸν πρῶτον ποιοῦνται +
αὐτὰρ ἐκ γένος ποιῶν· ταῦτα καὶ οἷον οἰκίσας
ποιεῖ + ὁ γὰρ πῆρ φιλή τὸν ἱόν καὶ πάντα δει-
κνύσιν αὐτῷ αὐτοῖς ποιεῖ· καὶ μὴ φοβῶν τὸν
τῶν δὲ ζῶντων ἐξ ἑαυτῶν καὶ μὴ σθαι μάλιστα +
ὡς περ γὰρ ὁ πῆρ ἐχρήσθη τοῖς μετ' αὐτοῦ καὶ ζωοποι-
ῇ, οὕτως καὶ οἷον οἰκίσας ζωοποιῇ + οὐδὲν
γὰρ ὁ πῆρ κρινθούδεναι, ἀλλὰ πῶς κρίσιν πα-
σαρδεῖ δώσει τῷ ἱώ· ἵνα πάντες τίμωσιν τὸν
ἱόν, καθὼς τίμωσιν τὸν πρῶτον + ὁ μὴ τίμωσιν τὸν
ἱόν, οὐ τίμωσιν τὸν πρῶτον τὸν πέμψαντά αὐτόν +
ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν· ὅτι ὁ τὸν λόγον μου
ἀκούων καὶ πιστεύων τῷ πέμψαντί με, ἔχων
ζωὴν αἰώνιον, καὶ δεξιὰ κρίσιν οὐκ ἐρχεται· ἀλλὰ μετὰ
βέβηκεν καὶ τοῦ θανάτου εἰς τὴν ζωὴν· ~

τῇ ἑπομένῃ ἡμέρᾳ ἔτι ἰὼν, λέγει ἡ δεξιὰ κοίμηθεν·
Καὶ περὶ αὐτῶν προστοῖς ἐληλυθότας πρὸς αὐ-
τὸν ἰουδαίους· ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν·
ὅτι ὁ τὸν λόγον μου ἀκούων καὶ πιστεύων
τῷ πέμψαντί με ἔχων ζωὴν αἰώνιον· καὶ
εἰς κρίσιν οὐκ ἐρχεται, ἀλλὰ μετὰ βέβηκεν
καὶ τοῦ θανάτου εἰς τὴν ζωὴν + ἀμὲν ἀμὲν
λέγω ὑμῖν ὅτι ἐρχεται ὥρα καὶ νῦν ἐστὶν
ὅτε οἱ μετὰ τοῦ ἀκούσαντος τῆς φωνῆς τοῦ ἱού
τοῦ θύου καὶ οἱ ἀκούσαντες τῶν ζήσαντων + ὡς περ
γὰρ ὁ πῆρ ἔχων ζωὴν ἐν αὐτῷ, οὕτως ἐδω-
κεν καὶ τῷ ἱώ ζωὴν ἐχόν ἐν αὐτῷ καὶ ἐ-

Ξοισίαρ ε' δ' ἔδωκε καὶ τῷ καὶ κρίσιν ποιῆσαι ὅτι
ἡ οὐσία τοῦ θεοῦ καὶ θαυμάζειτε τοῦτο· ὅτι ἐρ-
χεται ὥρα ἐν ἣ πάντες οἱ ἐν τοῖς σκήνοις
ἀκούσονται τῆς φωνῆς αὐτοῦ· καὶ σὺ πορεύ-
σονται οἱ τὰ ἄλλα θὰ ποιήσαντες εἰς ἀνά-
στασιν ζωῆς· οἱ δὲ τὰ φάσμα πρᾶξαντες εἰς
ἀνάστασιν κτάσονται· οὐδὲν αἰσθάνομαι ὡς ποιῆ-
σά περ ἐμαυτοῦ οὐδέ μιν· καθὼς ἀκούω κρίνω
καὶ ἡ κρίσις ἡ ἐμὴ δικαία ἐστίν· ὅτι οὐ β-
γῶ τὸ θέλημα τὸ ἐμὸν· ἀλλὰ τὸ θέλημα
τοῦ πέμψαντός με πρὸς· ~

τῇ παρὰ τοῦ θεοῦ κατὰ ἰωάννην
Εἰπὼν οὕτως πρὸς τοὺς ἐληλυθότας πρὸς αὐτὸν ἰ-
ουδαίους· καθὼς ἀκούω κρίνω καὶ ἡ κρίσις ἐστίν
ἐμὴ δικαία ἐστίν· ὅτι οὐ βγῶ τὸ θέλημα τὸ ἐ-
μὸν· ἀλλὰ τὸ θέλημα τοῦ πέμψαντός με πρὸς·
ἐὰν γὰρ μαρτυρῶ περὶ ἐμαυτοῦ· ἡ μαρτυρία
μου οὐκ ἐστὶν ἀληθὴς· ἄλλος ἐστὶν ὁ μαρτυ-
ρῶν περὶ ἐμοῦ· καὶ οἶδα ὅτι ἀληθὴς ἐστὶν ἡ
μαρτυρία· ἡ μαρτυρία περὶ ἐμοῦ· καὶ ἡ μαρτυρία
περὶ ἐμοῦ πρὸς ἰωάννην· καὶ με μαρτυρεῖ
καὶ τὴν ἀλήθειαν· καὶ οὐκ ἔστιν ἀπορία τῇ
μαρτυρίᾳ λαμβάνω· ἀλλὰ ταῦτα λέγω·
ἵνα ὑμεῖς σωθῆτε· ἐγὼ γὰρ οὐκ ἔχω ὅλκον
οὐκ ὁμιλοῦμαι φαίνομαι· ὑμεῖς δὲ ἡθελε-
σατε ἀγαθὰ θῆναι πρὸς ἐξ ἑαυτῶν τὸ φῶ-
ς αὐτοῦ· καὶ οὐδέ γὰρ τῇ μαρτυρίᾳ μόνον
τοῦ ἰωάννου· καὶ τὰ ὅσα αὐτὸς ἔδωκε μοι ὁ πατήρ·
ἵνα τελέσω αὐτὰ· αὐτὰ τὰ ἔργα αὐτοῦ

ποιῶ μαρτυρῶ περὶ ἐμοῦ· ὅτι ὁ πῦρ με ἀπέ-
στειλεν· καὶ ὁ πέμψας με πῦρ αὐτὸς με μαρ-
τύρικε περὶ ἐμοῦ· οὔτε φωνὴ αὐτοῦ ἀκὴ
κώαπε πώποτε· οὔτε ᾄδου αὐτοῦ ἐώρακατε
καὶ τὸν λόγον αὐτοῦ, οὐκ ἔχετε μένοντες ἐν ὑ-
μῖν· ὅτι ὁ ἀπέστειλεν ἐκ ἡμῶν, τοῦτο ὑ-
μῖς οὐ πίστευετε· ἐξ αὐμάτων πάντων γραφὰς
ὅτι ὑμεῖς οὐκ ἔχετε, ἐν αὐταῖς ζωὴν αἰώνιον ἔ-
χετε· καὶ ἐκ ἡμῶν αἱ μαρτυροῦσαι περὶ
ἐμοῦ· καὶ οὐ θέλατε ἐλθεῖν πρός με, ἵνα
ζωὴν ἔχητε· δόξα ὑμῖν ἀνθρώπου λαμβάνω
διὰ τὴν καὶ ἡμῶν, ὅτι τὴν ἀγάπην τοῦ θῦ, οὐ
ἔχετε ἐν ἑαυτοῖς· ὡς ἐλήλυθα ἐν τῷ
ὀνόματι τοῦ πατρὸς, καὶ οὐ λαμβάνετε με·
ἐὰν ἄλλος ἐλθῇ ἐν τῷ ὀνόματι τῷ ἰδίῳ, ἐ-
κ ἡμῶν λήψατε· πῶς δύναισθε ὑμεῖς πιστέ-
σαι, δόξα ὑμῖν ἀλλήλων λαμβάνοντες·
καὶ τὴν δόξαν τὴν παρὰ τοῦ πατρὸς τοῦ θῦ, οὐ ζη-
τεῖτε· μὴ δοκῇτε ὅτι ὡς κατηγοροῦσιν ὑμῶν
πρὸς τὸν πατέρα· ἐγὼ ὁ κατὰ τὴν κατηγορίαν ὑμῶν μὴ
σηῶς ὅτι ὑμεῖς ἐλπίκατε· ἡ γὰρ ἐπίσταται
μῶς, ἐπίσταται ἅνθρωποι· περὶ γὰρ ἐμοῦ
ἐκ ἡμῶν ἐγραψεν· ἡ δὲ τοῖς ἐκ ἡμῶν γρα-
μμασί, οὐ πίστευετε, πῶς τοῖς ἐμοῖς ῥήμα-
σιν πισθῶσιν· μετὰ ταῦτα· ἀπῆλθεν ὁ
ἰσπερὶ ἀπὸ τῆς θαλάσσης τῆς γαλιλαίας
τῆς τίβεριδος· καὶ ἡ κολούθησεν αὐτῷ ὁ
χλος πολὺς· ὅτι ἐώραν αὐτοῦ τὰ σημεῖα αἱ
ἐποίησε ἐπὶ τῶν αἰσθησάντων· ~

σαμβατον β̄ κατὰ ἰωάννην·

καὶ ῥῶ εὐκῆρῳ· ἰδοὺ τες οἱ ἄνθρωποι ὅτι ἐποίησαν
 σημεῖον ὅτις ἐλεγον, ὅτι οὗτος ἐστὶν ἀληθὺς
 ὁ προφήτης, ὁ ἐρχόμενος ὁσὸν κόσμον· ἰσ-
 τὼν γὰρ οὗ ὅτι μέλλοι σὶν ἐρχοθαι καὶ ἀρπα-
 ζῇ αὐτόν, ἵνα ποιήσω σὶν αὐτὸν βασιλέα,
 ἀντιχρῆσεν ὁσὸν τὸ ὄρος αὐτὸς μόνος, ὡς δὲ ὁ
 ψῆαι ἐγένετο κατέβησαν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἐ-
 πὶ τὴν θάλασσαν, καὶ ἐμβάντες εἰς τὸ πλοῖον
 ἤρχοντο πέραν τῆς θαλάσσης εἰς καπερναοὺν,
 καὶ σκοπία ἦδη ἐγένετο καὶ οὐ κεληλύθη
 πρὸς αὐτοὺς ὁ ἰσ· ἦτε θάλασσαι ἀρέμουν με-
 γάλου πνέοντος, δι' ἣν κίρβοι ἐληλακό-
 τω οὖν, ὡς σαβῶν ὁσὸν πεντή· ἦ τριακον-
 τα, θεωροῖσι τὸν ἰὺν περιπατοῦντα ἐπὶ
 τῆς θαλάσσης, καὶ ἤρως τοῦ πλοίου γινώσκον-
 τες, καὶ ἐφωβήθησαν, ὁ δὲ λέγει αὐτοῖς· φο-
 βήσθε μή φοβέσθε, ἡ θέλησα μοῦ λαβῆναι
 τὸν ὁσὸν τὸ πλοῖον καὶ ἀνθέωσθαι τὸ πλοῖον ἐγέ-
 νητο ἐπὶ τῆς γῆς, εἰς τὴν ὑπὲρ γῆν + τῇ ἐπαύ-
 ρισιν ὁ ὄχλος ὁ ὅσος περὰν τῆς θαλάσσης·
 ἰδὼν ὅτι πλοῖα ἄρματα ἄλλα οὐκ ἦν ἐν ἡ εἰμη-
 ρῶ + ἐκῆρῳ εἰς ὁσὸν ἐβήσαν οἱ μαθηταὶ αὐ-
 τοῦ· καὶ ὅτι οὐκ ἐβήσαν τοῖς μαθηταῖς αὐ-
 τοῦ ὁ ἰσ εἰς τὸ πλοῖον ἄριον· ἀλλὰ μόνος οἱ μα-
 θηταὶ αὐτοῦ ἀπῆλθον, ἀλλὰ ὁ δὲ ἦλθε πλοῖ-
 α ἄρματα ἐπὶ βερνίκῳ, ἤρως τοῦ πόπου ὅπου
 ἐφάτον τὸν ἄρτον, ἀγαρίστησαν τοῦ κῦ·
 ὅτε οὖν εἶδε ὁ ὄχλος, ὅτι ἰσ οὐκ ἐστὶν ἐκῆρ

δαλινῇ καὶ μαρίαι ἀνῶβου καὶ ὁλῶν· ἡ δὲ
 ρασαυ ἀνῶματα ἵνα ἐλθοῦσαι ἀλί· φωσὶ τὸν
 ἵμ· καὶ λίαν πρῶτῃ τῆς μεσσοσάββατων· ἔρχο-
 νται ἐπὶ τὸν κρημνόν· ἀνατεῖλαντες τοῦ ἡ-
 λίου· καὶ ἔλεγον πρὸς ἑαυτάς· τίς ἀποκυ-
 λίσσει ἡμῖν τὸν λίθον ἐκ τῆς θύρας τοῦ κρημ-
 νου· καὶ ἀναβλέψασαι θεωροῦσιν ὅτι ἀπο-
 κυκλίσθη ὁ λίθος· ὡς γὰρ μέγας σφόδρα· καὶ
 ἵστελθοῦσαι εἰς τὸν κρημνόν· εἶδον μετὰ ἰσχυ-
 ροῦ καθεήμενον ἐν τοῖς δεξιόις· περὶ βεβλημένον σ-
 ληνὸν λαλῶν· καὶ ἐξεθαμβήθησαν· ὁ δὲ λέ-
 γων αὐταῖς· μή σὺ θαμβήσθε· ἡμῖν ζητεῖτε τὸν
 ζαφεινὸν τὸν ἐστῶμενον· ἡ γὰρ θηοῦ κέστιν ἡ
 δε· ἰδεὶ ὅτι πόσος ὅπου ἐθήκαμεν αὐτόν· ἀλλ' ὡ-
 πάγε· εἰπατε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ καὶ τῷ
 πέτρῳ· ὅτι πρὸ ἀντιμεσσοσάββατον· ὡς γὰρ
 σὺ γὰρ αὐτὸν ὤψαθε καθὼς εἶπεν ἡμῖν· καὶ
 ὁ ξελεθόσας ἐφυγον ἀπὸ τοῦ κρημνίου· εἶ-
 χεν δὲ αὐτὰς τρόμος καὶ σέβας· καὶ οὐδε-
 νί οὐδ' ἐν εἰπόν· ἐφοβοῦντο γὰρ· ~

τῇ β' τῆς γ' αὐτῆς κατὰ ἰω·

Καὶ ἔκρινεν ὁ κύριος τὸν βασιλικόν, οὗ οὐκ ὄνομα
 θεοῦ· ἐκπερμαδύμ· οὗτος ἀνέστης ὅτι
 ἴσ' ἡκει ἀπὸ τῆς γαλιλαίας, ἀπῆλθε πρὸς αὐ-
 τὸν· καὶ ἡρώτα αὐτὸν ἵνα καὶ ταυβῇ καὶ ἰάση-
 ται αὐτοῦ τὸν ἵον· ἔμελλε γὰρ ἀποθνήσκειν·
 εἰπερ οὖν οἷός τις πρὸς αὐτόν· ἔα μὴ σῆμα
 καὶ τέρατα ἴδωτε, οὐ μὴ πείσασθε· λέγει
 πρὸς αὐτὸν ὁ βασιλικός· κέ· κατὰ βῆθι πρῶτον

ἀποδαρθὴν τὸ παιδίον μου· λέγει αὐτῷ ὁ ἴσ.
 πορδου, οὐ γόσ σου ζή· καὶ ἐπίστασεν ὁ ἄρσ
 τῷ λόγῳ, ὡς περ αὐτῷ ὁ ἴσ· καὶ ἐποράσθη· ἡ δὲ
 δὲ αὐτοῦ καὶ παρβαίμου τοῦ, οἱ δὲ δούλοι αὐτοῦ ἀπην
 τησαν αὐτῷ· καὶ ἀπήγγειλαν λέγοντες, ὅτι ὁ παῖς
 σου ζή· ἐποίησε τοῦ παρβαίμων τῷ ἄρσ· ἐν ἡ
 κομφοτέρῳ ἔσχευ καὶ ἡ πορ αὐτῷ· ὅτι χθὲς ὡρῶν
 ἐβδόμην, ἀφῆκεν αὐτὸν ὁ πρεπόσ· ἐγνώσθη
 ὁ πῆρ ὅτι ἐνεκῆ μνητῆ ἄρσ ἐν ἡ περ αὐτῷ ὁ ἴσ
 ὅτι ὁ γόσ σου ζή· καὶ ἐπίστασεν αὐτὰς καὶ ἡ σι
 κία αὐτοῦ ὅλη· τοῦτο πάλιν δεύτερον σημεῖ
 ον ἐποίησεν ὁ ἴσ· ἐλθὼν σὺ τῷ ἰουδαίῳ σὺ
 τῷ χαλδαίῳ· ~ τῇ γ τῷ σ γ αὐ τῷ

Εἰπεν οὖν ἐπὶ τοῦ ἐλγυθότασ πρὸς αὐτὸν
 ἰουδαίῳ· ἐργάζεσθε, μὴ τῷ βρώσιν τῷ α
 πολλῷ μένιν, ἀλλὰ τῷ βρώσιν τῷ μένοιον
 εἰς ζωὴν αἰώνιον· τῷ οὐ γόσ τοῦ ἄρσ οὐ μὴν δά
 σαι· τοῦτον γὰρ ὁ πῆρ ἐς φάρισεν ὁ ἄρσ· εἰ πορ
 οῦν πρὸς αὐτὸν· τί ποιῶμεν ἵνα ἐργάζομε
 θαι τῷ δόξῃ τοῦ θῷ· ἀπεκρίθη ὁ ἴσ καὶ ἡ περ
 αὐτοῖς· τοῦτο ἐστὶν τὸ ἔργον τοῦ θῷ· ἵνα πῖ
 στασῇτε ἐξ ὧν ἀπέστειλεν ἐκ γόσ· εἰ πορ
 οῦν αὐτῷ τί οῦν ποιῶσιν σημεῖον, ἵνα ἴδω
 μεν καὶ πῖ στασωμεν σοί· τί ἐργάζεσθ· οἱ πρεῖς
 ἡμῶν· τὸ μαῖμα ἐφατορ ἐν τῇ ἐρήμῳ καθὼς
 ἐστὶν γεγραμμένον· ἀφῆκεν σὺ τοῦ οἰῶσος ἐ
 δωκεν αὐτοῖς φάριν· εἰπεν οὖν αὐτοῖς ὁ
 ἴσ· ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν· οὐ μὲν σὺ δέ
 δωκεν ὑμῖν ἀφῆκεν σὺ τοῦ οἰῶσος, ἀλλ' ὁ

τῷ ἔργῳ

πῆρ μου δίδωσίμ ἡμῖν τὸν ἄρτον σὺ τοῦ οἴνου
τὸν ἀληθινόν· ὅτι ἄρτος τοῦ θύεσθι οὐ κατὰ
βαίρων σὺ τοῦ οἴνου καὶ ζωὴν δίδως πάντες·

Καὶ τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ καταΐτω ἁρνήν ἡ δὲ κοίμηθεν
ἡ περὶ οὗ· πρὸς τοὺς πεπιστάκοντας αὐτῷ
τοῦ Ἰουδαίου· ἡγῶμαι ὅτι ἄρτος τῆς ζωῆς· ὁ ἐξ
ἐρχόμενος πρός με, οὐ μὴ πθῇ· καὶ ὁ πί-
σάων γὰρ ἐμὲ, οὐ μὴ διψήσει πώποτε· ἀ-
λλ' ἡ πόσις ἡμῶν ὅτι ἐώρακά με καὶ οὐ πῖ-
σάκε· παρ' οὐδὲ δώσει μοι ὁ πῆρ' πρὸς ἐμὲ
ἐξ ἧς καὶ τὸν ἐρχόμενον πρός με οὐ μὴ σώ-
σω· ὅτι κατὰ βίβηκα σὺ τοῦ οἴνου·
οὐχ ἵνα ποιῶ τὸ θέλημα τὸ ἐμὸν, ἀλλὰ τὸ
θέλημα τοῦ πέμψαντός με· τούτο δὲ ἐστὶν
τὸ θέλημα τοῦ πέμψαντός με πρὸς ἡμᾶς
ὅδε δὲ κέ μοι μὴ ἀπολέσω ὅξ' αὐτοῦ· ἀλλὰ
ἀραστήσω αὐτὸν σὺ τῇ ἑσχάτῃ ἡμέρᾳ·

Καὶ τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ καταΐτω ἁρνήν ἡ δὲ κοίμηθεν
ἡ περὶ οὗ· πρὸς τοὺς ἐληλυθότας πρὸς αὐ-
τὸν Ἰουδαίους· τούτο ἐστὶν τὸ θέλημα τοῦ
πέμψαντός με πρὸς ἡμᾶς ὁ θεὸς ὡρῶν τὸν
ἱόν· καὶ πίσαων γὰρ αὐτὸν ἐξ ἧς ζωὴ αἰών-
ιον· καὶ ἀραστήσω αὐτὸν ἡμέρᾳ τῇ ἑσχάτῃ ἡμέρᾳ
ἐγὼ γὰρ οἶμαι οἱ Ἰουδαῖοι περὶ αὐτοῦ· ὅτι
εἶπερ· ἡγῶμαι ὅτι ἄρτος ὁ καταβάς σὺ τοῦ
οἴνου, καὶ ἔλθον· οὐχ οὐτός ἐστιν Ἰσὺς ὁ υἱὸς
ἰωσήφ· οὐ γὰρ οἶδαμεν τὸν πατέρα καὶ τὴν
μητέρα· πῶς οὖν λέγεις οὗτος· ὅτι σὺ τοῦ οἴνου
κατὰ βίβηκα· ἀπεκρίθη οὖν οἱ ὅτι καὶ ἐγώ

καὶ ἡ κοίμησεν

περ' αὐτοῖς + μή μοι γινώσκετε μετὰ ἀλλήλων. οὐ
δεῖς δυνάσται ἐλθόντες πρός με. εἴ μὴ ὁ πῦρ
ὁ πέμψας με, ἐλκεῖ αὐτόν + καὶ ἑγὼ ἀνα
στήσω αὐτόν. ἐν τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ: ~

τῇ παρὰ τῆς Γ' εὐαγγ. κατὰ τὸ ἀρρην.

Εἰ περὶ οὗτοῦ προῦ τοῦ ἐληλυθότατος πρός αὐ
τὸν Ἰουδαίου. ἑγὼ ἡμιόαρτος τῆς ζωῆς +
οἱ πρὸς ὑμῶν ἐφαγον τὸ μᾶννα ἐν τῇ ἐρή
μῳ καὶ ἀπέθανον + οὗτος ἐστὶν ὁ ἄρτος ὁ
ἐκ τοῦ οὐνοῦ κατὰ βαίμων. ἱματιστέξαν
τοῦ φαγεῖν καὶ μὴ ἀποθάνει + ἑγὼ ἡμιόαρ
τος ὁ ζωὴ ἐκ τοῦ οὐνοῦ κατὰ βάσ + ἐα
πὶς φάγετε τοῦτου τοῦ ἄρτου, ζήσεται ἡσὶ τὸν αἰ
ῶνα + καὶ ὁ ἄρτος δὲ οὐκ ἔγω δώσω, ἡ σὰρξ μου
ἐστίν. ἡ γὰρ δώσω αὐτῶν ὑπὲρ τῆς τοῦ κόσμου ζω
ῆς + ἐμάχοντο οὖν πρὸς ἀλλήλους οἱ Ἰου
δαῖοι λέγοντες + πῶς δύναται οὗτος ἡμῖν δο
ῦναι τὴν σὰρκα φαγεῖν + εἰ περὶ οὗτοῦ οὗ
τοῦ ἀρην ἀρην λέγω ὑμῖν. εἴ μὴ φά
γετε τὴν σὰρκα τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου καὶ ποίη
τε αὐτοῦ τὸ αἷμα, οὐκ ἔχετε ζωὴν ἐν ἑα
σέως + ὁ τρώγων μου τὴν σὰρκα καὶ πίνων
μου τὸ αἷμα, ἔχει ζωὴν αἰώνιον + καὶ
ἐγὼ ἀναστήσω αὐτόν ἐν τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ: ~

λέγει ὁ ἰσ
μὴ φά

σαῖβα Γ' κατὰ τὸ ἀρρην.

Εἰ περὶ οὗτοῦ τοῦ ἐαυτοῦ μαθηταῖς. ταῦτα δὲ
τέλλομαι ὑμῖν ἵνα ἁπαλῆτε ἀλλήλους + εἰ
ὁ κόσμος ὑμᾶς μισεῖ, γινώσκετε ὅτι ἐμε
πρώτον ὑμῶν μεμίσηκεν + εἰ ἐκ τοῦ κόσμου

ἦτε, ὁ κόσμος ἂν τὸ ἴδιον ἐφίλει + ὅτι τῆς ἐκ τοῦ
κόσμου οὐκ ἐστὶ· ἀλλ' ἐγὼ ἐξελεξάμην ὑμᾶς
ἐκ τοῦ κόσμου, διὰ τοῦτο κησεί ὑμᾶς ὁ κόσμος +
μη μοι δοκεῖ τοῦ λόγου οὐδ' ὧς ἐπὶ κοινῇ· οὐ
κέστι δούλος μείζων τοῦ κυρίου αὐτοῦ + ἔμε' ἐδύ-
ωξαν, καὶ ὑμᾶς δ' ὡξοιοῖν + εἰ τοῦ λόγου κησεί
ἐτηρήσαν, καὶ τὸν ὑμῶν τήρησοιοῖν + ἀ-
λλὰ ταῦτα πάντα ποιήσοιοῖν ὑμῖν διὰ τὸ ὄνο-
μα μου ὅτι οὐκ οἶδασι τὸν περίφημον τὰς + ἔ-
μὴ ἦλθον καὶ ἐλάλησα αὐτοῖς ἀμαρτίαν οὐκ ἔ-
χον + νῦν δὲ κοροφασίαν οὐκ ἔχουσι περὶ τῶν ἀ-
μαρτίας αὐτῶν + ὅ ἐμ' ἐμίσων καὶ τὸν πρῶτον
μίσει· εἰ τὰ ὅσα ἐποίησα ἐν αὐτοῖς, αὐ-
τοὶ οὐδεὶς ἄλλος πεποίηκεν ἀμαρτίαν οὐκ ἔχον +
νῦν δὲ καὶ ἐώρακασί καὶ ἐμ' καὶ τὸν πρῶτον·
ἀλλ' ἡ μαρτυρία τοῦ λόγου ὁ ἐγραμμένος ἐν τῷ
νόμῳ αὐτῶν· ὅτι ἐμίσον σὰρκα ἐδωρεᾶν + ὅταν
δὲ ἐλθῇ ὁ παράκλητος ὁ ὧς πέμφω ὑμῖν πα-
ρά τοῦ πατρὸς τοῦ πρώτου ἀληθείας + ὁ παρὰ τοῦ πατρὸς
ἐκπορεύεται, ἐκ κήρυκος μαρτυρήσει περὶ ἐμοῦ +
καὶ ὑμεῖς δὲ μαρτυρεῖτε ὅτι ἀπαρχὴς ἐμὴ ἐ-
μοῦ ἐστίν· ταῦτα λελάληκα ὑμῖν ἵνα μὴ σκ-
δαλίσητε + ἀπὸ τῶν ἀγῶνιστον ποιήσοιοῖν ὑμᾶς +
ἀλλ' ἐρχεται εὐρα· ἵνα πᾶς ὁ ἀποκτεθῇ ἀπὸ
μας δόξῃ καὶ τρεῖς ἀνὰ πρός φέρῃ ἐν τῷ θῷ· καὶ
τὸ πρῶτον ὅτι πρὸς ἡμεῖς ἐν τοῖς ἐθνεσιν· ἔσονται καὶ αἱ
ἐκ τοῦ ὅτι πρὸς ἡμεῖς ἐστὶν· ἐπὶ λητοῦ καὶ ἰω·
καὶ ἐκ τῶν ἐκ τῶν· ἀνέβη οἱ ὅτι ἔφροσόν
μας· ἐστὶ δὲ ἐκ τοῖς ἔφροσόν μὲν ἐπὶ τῇ πρῶ-
τῇ

- καὶ ἐμὴ καὶ
καὶ ἐμὴ



βαπτὴν κολῦμβήθρα· ἡ ἐπιλεγομένη ἐστὶν
ἰσηθῆναι δα· πέντε τοιαῦτα ἔχουσαι· ἐν ταῖς
ταῖς κατέκειτο πλῆθος πολὺ τῶν ἀσθενούντων·
τυφλῶν· χωλῶν· ξηρῶν· ἐμδεχομένων, τὴν
τοῦ ὕδατος κίνησιν· ἀγγέλους γὰρ τοῦ θύειν αὐτὰν
καιρῶν κατέβηκεν ἐν τῇ κολῦμβήθρᾳ· καὶ ἐ-
παράσθη τὸ ὕδωρ· ὁ οὖν πρῶτος ἐμβὰς με-
τὰ τῷ παραχλῆν τοῦ ὕδατος ὑγίης ἐγένετο·
ᾧ δὴ ποτε κατήχετο μοσχίματι· ὡς δὲ πρὸς ἄνθρω-
πον· τρία κορυφαῖα οὐκ ἔχων ἐν τῇ ἀσθενεί-
ᾳ· τοῦτο μὲν οὖν οἷον κατὰ κείμενον· καὶ γινώσκω
ὅτι πολλὴν ἡδὴ χρόνον ἔχει· λέγει αὐτῷ· θέλεις
ὑγιὲς γενέσθαι· ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ ἀσθενὴς· καὶ·
ἄνθρωπος οὐκ ἔχων· ὅταν παραχλῆ τὸ ὕδωρ βάληται
εἰς τὴν κολῦμβήθραν· ἐν ᾧ δὲ ἔρχομαι εἰς αὐτόν·
ἄλλος πρὸ ἐμοῦ καταβαίνει· λέγει αὐτῷ οἷον·
ἔχουσαι· ἄνθρωπος τὸν κράββατον σου καὶ περιπα-
τεῖ· καὶ ἀθέως ἐγένετο ὑγιὲς ὁ ἄνθρωπος· καὶ ἦρε-
τον κράββατον αὐτοῦ καὶ περιεπατεῖ· ὡς
δὲ σάββατον ἐνεκλήθη τῇ ἡμέρᾳ· ἐλεγον οὖν
οἱ Ἰουδαῖοι τῷ θεραπεύειν αὐτόν· σάββατον
ἐστίν· οὐκ ἐξεστῆναι αὐτὸν κράββατον·
ἀπεκρίθη αὐτοῖς· ὅποιον θέλει ἡγίη· ἐκεί-
νοί μοι εἶπεν· ἄνθρωπος τὸν κράββατον σου καὶ
περιπατεῖ· ἡρώτησαν αὐτόν· τίς ἐ-
στίν ὁ ἄνθρωπος ὃς πῶς σοι, ἄνθρωπος τὸν κράββατον
σου καὶ περιπατεῖ· ὁ δὲ ἰαθεὶς οὐκ ἔδεικται
ἐστίν· ὁ γὰρ ἰσχυρὸς ἐξέμασεν· ὁ χλοὺ οὐκ ὁρᾷ
τὴν τὸ πῶς· μετὰ ταῦτα εἰρίσκει αὐτόν ὁ ἰσχυρὸς

ἐν τῷ ἱερῷ καὶ εἶπερ αὐτῷ + ἰδὲ ὑγίης γέγονας
μικέτι ἀμάρτανε· ἵνα μὴ χεῖρον τί σοι γένη
ται + ἀπῆλθεν ὁ ἄρτος καὶ ἀνήγγηλε τοῖς ἰου
δαίοις· ὅτι ἴσ' ἐστὶν ὁ ποιήσας αὐτὸν ὑγίης· ~

Τῇ β' τῆς δ' λμ' κατὰ τὸ ἀρχαῖον·

Καὶ πενὸς ὡς πρὸς τοῖς ἐληλυθότας πρὸς αὐτὸν ἱ
ουδαίους· ὁ τρώγων μου τὴν σάρκα καὶ πίνων
μου τὸ αἷμα ἐνεμοίμεν καὶ ὡς ἐν αὐτῷ + κα
θὼς ἀπέστη λένε δὲ ζῶν πῆρ'· καὶ ὡς ὁ δὲ αὐτὸν
πρῶ + καὶ ὁ τρώγων με καὶ ὁ ὄψων με ζήσεται δι' ἐμε +
οὗτος ἐστὶν ὁ ἄρτος ὁ ἐκ τοῦ οὐνοῦ κατὰ βάσ +
οὐ καθὼς ε' φαγονοὶ πρὲς ὑμῶν τὸ μαῖμα
καὶ ἀπέθανον + ὁ τρώγων τοῦτον τὸν ἄρτον·
ζήσεται εἰς τὸν αἰῶνα + ταῦτα ἡ περ ἐν ἱναβωλῇ
διδάς καὶ ἐν καπερναοῦν + πολλοὶ οὖν ἀκού
σαντες ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ ἤκου· σκληροὶ
ἐστὶν οὗτος ὁ λόγος· τί δύναται αὐτοῦ ἀκούειν + ἡ
δὴ δὲ οἱ ἴσ' ἐν αὐτῷ· ὅτι πολλοὶ ἔροισι περὶ τούτου
οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· εἶπεν αὐτοῖς + τοῦτο ἱμασ
σαμεδαλήζει· εἰ μὴ οὖν θεωρήτε τὸν υἱὸν τοῦ
ἀνθρώπου ἀναβαίνοντα ὅπου ἦν πρῶτον +
τὸ πρῶτον ἐστὶ τὸ ζῶν ποιοῦν· ἡ σὰρξ οὐκ ὠφελεῖ
οὐδὲν + τὰ ῥήματα αὐτοῦ ὡς ὁ λόγος ἡμῶν· πρῶτον
ἐστὶ καὶ ζωὴ ἐστὶν + ἀλλ' ὅσιν ἐξ ὑμῶν τίνες οἱ
οὐ πιστά σοι σὶν + ἡ δὲ γὰρ ἐξ ἀρχῆς ὁ ἴσ'· τίνες
ἔσιν οἱ μὴ πιστά οντες· καὶ τίς ἐστὶν ὁ παρα
δώσων αὐτὸν καὶ ἐλεγε + διὰ τοῦτο αἶρεται
ὑμῖν· ὅτι οὐδὲν δύναται εἰσθῆναι πρὸς με· εἰ μὴ
μὴ ἡ δὲ δοθένον αὐτῷ ἐκ τοῦ πατρὸς + ἐκ τοῦτου

πολλοὶ ἀπήλθον τῶν μαθητῶν αὐτοῦ εἰς τὰ
ὀπίσω· καὶ οὐκ ἔτι μετ' αὐτοῦ περιέπα-
του· εἰπεν οὖν οἱς τοῖς δώδεκα· μὴ καὶ
ὑμεῖς θέλατε ὑπάγειν· ἀπεκρίθη οὖν αὐτῷ
σίμων πέτρος· κέ· πρόστιναι ἀπελδοσ-
μεθα· ῥήματα ζωῆς αἰωνίου ἔχεις· καὶ ἡ
μαῖς ἐμώκαμεν καὶ πεπίστεύκαμεν· ὅτι
σὺ ᾧ ὁ χριστὸς τοῦ θυτοῦ βοῦτος· τῆς τῆς ὁ ἀμ

Καὶ οὐκ ἔτι μετ' αὐτοῦ περιέπαται· καὶ ἰσχυρῶς
οἱς ἐν τῇ γαλιλαίᾳ· οὐ γὰρ ἠθέλησεν τῆς
δαίᾳ περὶ πατέρων ὅτι ἐξήτοιμασεν αὐτοὶ οἱ
Ἰουδαῖοι ἀποκτεῖναι· καὶ ἐξήρῃς ἔσθ' τῶν
Ἰουδαίων ἡσυχίᾳ πηγάς· εἰ ποιοῦν οἱ ἀ-
δελφοὶ αὐτοῦ πρόστιναι· μετὰ βηθθαῖν
θελον· καὶ ὑπάγετε εἰς τὴν Ἰουδαίαν ἵνα καὶ οἱ
μαθηταὶ σου θεωρήσωσιν τὰ ἐργάσου αὐτοῦ
ποιεῖς· οὐδεὶς γὰρ ἐν κρυπτῷ τίποιε· καὶ
ζητεῖ αὐτὸς ἐν παρρησίᾳ εἶναι· εἰ ταῦτα
ποιεῖς· φανερώσου σε αὐτὸν τῷ κόσμῳ· οὐ
δὲ γὰρ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ ἐπίστασθαι αὐτὸν·
λέγουσιν αὐτοῖς οἱς· ὁ κερὸς ὁ ἐμὸς οὐπω
παρεστίν· ὁ δὲ κερὸς οὐ μέτερος πάντοτε ἐ-
στίν· ἐτοιμοὶ· οὐδὲν αὐταὶ ὁ κόσμος μῆσειν ὑ-
μᾶς ἐμὲ δὲ μῆσει· ὅτι ἐγὼ μαρτυρῶ περὶ
αὐτοῦ· ὅτι τὰ ἐργα αὐτοῦ ποιεῖ ἐστίν· καὶ ὑμεῖς
ἀναβήτε εἰς τὴν ἑσθ' τῶν ταύτων· ἐγὼ οὐπω
ἀναβάνω εἰς τὴν ἑσθ' τῶν ταύτων· ὅτι ὁ κερ-
ὸς ἐμὸς οὐπω πεπλήρωται· ταῦτα δὲ ἔπο-
ν αὐτοῖς· ἐμῶν ἐν τῇ γαλιλαίᾳ· ὡς δὲ ἀνέ-

12
βησαροὶ ἀδελφοὶ αὐτοῦ· τότε καὶ αὐτοὶ ἀμέ-
βη θύτῳ ἑορτῇ, οὐ φανερώς, ἀλλ' ὡς ἐν
κρυπτῷ· οἱ οὖν ἰουδαῖοι ἐζήτουν αὐτὸν ἐν τῇ
ἑορτῇ καὶ ἐλέγον· πού ἐστὶν ἐκ γένου· καὶ γο-
γγυσμὸς πολλὸς περὶ αὐτοῦ, ὡς ἐν τοῖς ὄχλοις·
οἱ μὲν ἐλέγον ὅτι ἀγαθὸς ἐστίν· ἄλλοι ἐλέγον,
οὐ· ἀλλὰ πλάνατόν ὄχλον· οὐδεὶς μὲν τοι
παρρησίᾳ ἐλάλη περὶ αὐτοῦ διὰ τὸ φόβον
τῆς ἑορτῆς· τῶν ἰουδαίων· ἡ γὰρ ἑορτή ἐστὶν

κατὰ τὸ ἀρχαῖον·

Καὶ ἡ ἑορτὴ τῶν μεσοίων· ἀνέβη οἱ οὖν καὶ ἐδί-
δασκε· καὶ ἐθαύμαζον οἱ ἰουδαῖοι λέγον-
τες· πῶς οὗτος γράμματα οἰδεύει καὶ
θηκῶς· ἀπεκρίθη οὖν αὐτοῖς οἱ οὖν καὶ ἔπει-
σεν· ὡς ἐμὴ διδασχὴ, οὐκ ἐστὶν ἐμὴ, ἀλλὰ τοῦ
πατρός μου· ἐάν τις θέλῃ τὸ θέλημα
αὐτοῦ ποιῆν, γνώσεται περὶ τῆς διδασχῆς·
πότερον ἐκ τοῦ θύ ἐστίν· ὡς γὰρ, ἀπὸ ἐμαυτοῦ
λαλῶ· ὁ ἀφ' αὐτοῦ λαλῶν τὴν δόξαν τῇ ἰδι-
αίᾳ τῇ· ὁ δὲ ζῇ τῶν τῇ δόξαν τοῦ πατρός μου
αὐτοῦ, οὗτος ἀληθὴς ἐστίν· καὶ ἀδελφεὶς αὐτῷ
αὐτῷ οὐκ ἐστὶ· οὐ μωσὴς δὲ δώκεν ὑμῖν τὸν
νόμον· καὶ οὐδεὶς ἐξ ὑμῶν ποιεῖ τὸν νό-
μον· τί με ζῇ τῇ τε ἀποκτεῖναι· ἀπεκρίθη
ὁ ὄχλος καὶ ἔπεμψεν δαιμόριον ἐχθρὸν· τί με
ζῇ τε ἀποκτεῖναι· ἀπεκρίθη ἰσχυρὰ καὶ εἶ-
πεν αὐτοῖς· ἐν ἐφ' ὅν ἐποίησα καὶ πάν-
τες θαυμάζετε διὰ τοῦτο μωσὴς δὲ δώκεν
ὑμῖν τὴν περὶ τοῦ νόμου· οὐχ ὅτι ἐκ τοῦ νόμου

αὐτὸς ἐστίν, ἀλλὰ τῶν πρῶν· καὶ εὐσαβ
 βᾶτω περὶ τέμνεται ἄπορ· ἢ περὶ τομὴν λα
 μβαρεῖ ἄπορ εὐσαββατῶν· καὶ μὴ λυθῇ ὁ
 κος μὴ αὐτὸς· ἐμοὶ χολατε· ὅτι ὁ λόγος ἄπορ
 ἡγῆται· ἐποίησεν, εὐσαββατῶν· καὶ κρίνεται
 τὸ φῶς· ἀλλὰ τῶν δὲ καὶ ἀνὰ κρίσιν κρίνατε·
 ἐλεβοροῦν τῶν ἐκ τῶν ἱεροσολυμιτῶν·
 οὐχ οὗτος ἐστὶν ὁ ζῆτοῦσιν ἀποκτείναι· καὶ
 ἰδε παρρησίαι λαλεῖ· καὶ οὐδὲν αὐτῶν ἐ
 γοῖσιν· καὶ ποτὲ ἀληθῶς ἐγνώσαντο ἄρχ
 τες ὅτι οὗτος ἐστὶν ἀληθῶς ὁ χς· ἀλλὰ τοῦτον
 οἶδαμεν πόθεν ἐστίν· οὐδὲ χς ὅταν ἐρχέ
 ται· οὐδὲ γινώσκω πόθεν ἐστίν· ἐκ
 θεοῦ οὖν ἐν τῷ ἱερῷ οἶδας καὶ οἱ σὺ καὶ
 γων· καὶ οἶδατε καὶ οἶδατε πόθεν ἐστίν·
 καὶ ἀπὸ μαυτοῦ οὐ κελύβου· ἀλλὰ ἐστὶν
 ἀληθῆς ὁ πείρασμός· οὐ γινώσκουσι οὐκ οἶδα
 τε· ἐγὼ οἶδα αὐτὸν ὅτι παρὰ τοῦ ἁγίου καὶ
 κήρυξ μετ' ἀπεσταλῶν· ἐξήτονω οὖν αὐτὸν
 πῶς αὐτὸν καὶ οὐδὲ ἐπέβαλεν ἐπ' αὐτὸν
 πῶς χεῖρα· ὅτι οὐ πῶς ἐληλύθει ἡ ὥρα αὐτοῦ·

τῇ ἐ τῆς δ' αὐτῆς καὶ τῶ ἀντιπ
Εἰ πενὸς πρὸς τοῦ ἐληλυθότατος πρὸς αὐ
 τὸν ἰουδαίον· ἀλλὰ καὶ τὸ φῶς τοῦ κόσμου·
 ὁ ἀκολουθῶν ἐμοὶ οὐ μὴ περιπατήσει
 ἐν τῇ σκοτίᾳ· ἀλλὰ ἐξ τῆς φωστὸς ζωῆς·
 εἰ πορὸν αὐτῶν οἱ φαρισαῖοι· σὺ περὶ
 σε αὐτοῦ μαρτυρῆς ἢ μαρτυρίας σου οὐκ ἐ
 στὶν ἀληθῆς· ἀπεκρίθη ἰσχυρὰ καὶ ἡ περὶ αὐτοῦ.

καὶ ἡμάρτυρά ποτε ἐμαυτοῦ· ἀληθὲς ἐστὶν
ἡμάρτυρά μου, ὅτι οἶδα πόθεν ἦλθον· καὶ
πού ὑπάγω· ἐμεῖς καταπλήσας καὶ κρίνεις
ἡμάρτυρά μου· καὶ ἐὰν κρίνω δὲ ἐγὼ
κρίσις ἢ ἐμὴ ἀληθὲς ἐστὶν· ὅτι μόροσός κε
μή, ἀλλ' ἐγὼ καὶ ὁ πέριφασμε πῆρ· καὶ ὅ
πῶρό μου δὲ τῷ κτετῶν γράφεται· ὅτι
δύο ἄνθρωποι ἡμάρτυρά μου ἀληθὲς ἐστὶν· ἡμάρ
τεῖς οὐκ ἔμεν οἱ ποτε ἐμαυτοῦ· καὶ ἡμάρ
τεῖς ποτε ἐμοῦ ὁ πέριφασμε πῆρ· ἐλεγον
οὐκ αὐτῷ· πού ἐστὶν ὁ πῆρ σου· ἀπεκρίθη
ἰσ· οὔτε ἐμεῖς οἶδατε οὔτε τὸν πῆρά μου·
εἰ ἐμεῖς ἴδαιτε, καὶ τὸν πῆρά μου ἴδαιτε
ἄν· ταῦτα τὰ ῥήματα ἐλάλησεν ὁ ἰσ
ἐν τῷ γαβροφύλακίῳ· ὁ δὲ κωνσταντῖνος
ῥῶ· καὶ οὐδέ τις ἐπίστανται αὐτὸν ὅτι οὕτως
ἐλάλησεν ὁ ῥῶ αὐτοῦ· ~

[illegible]

1
ἐν ταῖς ἁμαρτίαις ὑμῶν· ἐλέγομαι
αὐτῷ, σὺ πῶς εἶ· καὶ εἶπε καὶ αὐτοῖς οἷς· πῶς
ἔρχω ὅτι καὶ λαλῶ ὑμῖν· πολλὰ ἔχω πε-
ρὶ ὑμῶν λαλῆσαι καὶ κρῖναι· ἀλλ' ὅτι πε-
ρὶ ἀληθείας· καὶ ἡ ἀλήθεια παρὰ τοῦ
ταῦτα λέγω ὅτι τὸν κόσμον· ὅτι ἔγνωσαν
ὅτι τὸν πρῶτον αὐτοῖς ἐλέγον· εἶπε καὶ
αὐτοῖς οἷς· ὅτι ἂν ὑψώσῃτε τὸν υἱὸν τοῦ
ἀνθρώπου τότε γνώσεσθε ὅτι ἡ ζωὴ ἐστίν· καὶ ἡ
πέμψαντός μου οὐδεὶς, ἀλλὰ καθὼς ἐ-
δόξαζέ μοι ὁ πατήρ μου ταῦτα λαλῶ· καὶ ὁ
πεμφθεὶς μετὰ μου ἐστίν· οὐκ ἔφη κεν
μόνον ὁ πατήρ· ὅτι ἐγὼ τὰ ἀρεστὰ αὐτοῦ ποι-
ῶ πάντοτε· ταῦτα αὐτοῦ λαλοῦντος·
πολλοὶ ἐπίστευσαν ὅτι αὐτόν· ~

σταυρατον δὲ καὶ ἰωαννην
Καὶ πενθὸν πρὸς τοῖς ἐληλυθότας πρὸς
αὐτὸν ἰουδαίους· ἐὰν ὑμεῖς μὴ ἴτε ἅ-
ντ' ὁ λόγος τῷ ἐμῷ, ἀλήθεια μαθηταί μου
ἐστέ· καὶ γνώσεσθε πῶς ἀλήθεια· καὶ ἵ-
στασθαι ἐλάθερωσθε ὑμᾶς· ἀπεκρίθη
καὶ ἔφη· ποῦ αὐτῶ· ἀπερμαίνεσθε
ἄνθρωποι· καὶ οὐδεὶς δέδουκεν ἀνταπο-
κρίσιν· πῶς οὐ λέγετε, ὅτι ἐλάθεροι γε-
νήσεσθε· ἀπεκρίθη αὐτοῖς οἷς· ἀμὲν
ἀμὲν λέγω ὑμῖν· ὅτι πᾶς ὁ ποιῶν τὰς ἁ-
μαρτίας, δούλος ἐστὶ τῆς ἁμαρτίας· ὁ
δὲ δούλος οὐ μένει ἐν τῇ οἰκίᾳ εἰς τὸν αἰ-
ῶνα· οἷός τις μένει εἰς τὸν αἰῶνα· ἐὰν

1
ἡ βιωὴ ἡ θαυμαρὰ ἡ τοῦ· πᾶς οὐκ ἰουδαῖος ὦν πα-
ρέμειπεν ἐν αὐτῇ· οὐκ ἔμελλεν γὰρ καὶ οὐκ ἔμελλεν
ρεῖν· οὐ γὰρ ἐκχεῖται ἰουδαῖοι σαμ-
αριταῖς· ἀπεκρίθη ἰσὶ καὶ εἶπεν αὐτῇ· εἰ
ἔδεις τὴν ὁδὸν ἀνὰ τοῦ θύ· καὶ τίς ἐστιν ὁ λέγων
σοι ὁδοῦ μοι πρὸς τὴν· σὺ αὖ ἡγήσασαι αὐτόν· καὶ
ἐδωκεν αὐτοῖς ὕδατος ζῶν· καὶ ἡ αὐτῇ βιωὴ
καὶ οὐκ ἔμελλεν γὰρ· καὶ τὸ φρέαρ ἐστὶν
θαῦ· πόθεν οὖν ἔχεις τὸ ὕδωρ τὸ ζῶν· καὶ οὐ
μεζῶν εἶπεν πρὸς ἡμῶν ἰσὶ· ὅς ἐδωκεν
ἡμῶν τὸ φρέαρ· καὶ αὐτὸς ἐξ αὐτοῦ ἐπιε·
καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ καὶ τὰ θρέμματα αὐτοῦ·
ἀπεκρίθη ἰσὶ καὶ ἡ περ αὐτῇ· πᾶς ὁ πίπων
ἐκ τοῦ ὕδατος τούτου· διψήσει πάλιν· ὅς ὁ
δαὲν πίει ἐκ τοῦ ὕδατος οὐκ ἐξ ὕδατος αὐτοῦ·
οὐ μὴ διψήσει εἰς τὸν αἰῶνα· ἀλλὰ τὸ ὕ-
δωρ ὁ δώσω αὐτῷ γενήσεται ἐν αὐτῷ πηγὴς
ὕδατος ἀλλομενουεῖς ζωὴν αἰῶνιον· λέ-
γει πρὸς αὐτὴν ἡ βιωὴ· καὶ δὸς μοι τούτο τὸ ὕ-
δωρ· ἵνα μὴ διψῶ· καὶ ὅς ἐρχομαι ἐνθάδε
ἀντλεῖν· λέγει αὐτῇ ὁ ἰσὶ· ἵπαγε φώνησον
σου τὸν ἀνδρα καὶ ἐλθέ ἐνθάδε· ἀπεκρί-
θη ἡ βιωὴ καὶ ἡ περ· οὐκ ἔχω ἀνδρα· λέγει αὐ-
τῇ ὁ ἰσὶ· ἀληθῶς εἶπας ὅτι ἀνδρα οὐκ ἔχω·
περὶ γὰρ ἀνδρας ἔχω· καὶ νῦν οὐκ ἔχεις
οὐκ ἔστιν σου ἀνὴρ· τούτο ἀληθὲς εἶρηκας·
λέγει αὐτῇ ἡ βιωὴ· καὶ θεωρῶ· ὅτι προφή-
τις εἶσὺ· οἱ πρὸς ἐμὴν ἐν τῷ ὄρει τούτῳ
πρὸς ἐκκλησίασαν· καὶ ὕμνος λέγεται ὅτι

ἐν ἑροσολύμοις ἐστὶν ὁ τόπος ὅπου δὴ πρὸς
κινῆν· λέγει αὐτῇ ὁ ἰσ'· γίνωαι· πείρασόν μοι
ὅτι ἐρχεται ὥρα· ὅτε οὔτε ἐν ἑροσολύμοις
πρὸς κινῆσεται πρὶ + ὑμεῖς πρὸς κινῆτε
οὐκ οἶδατε· ἡμεῖς πρὸς κινῶμεν οὐκ οἶδα
μεν· ὅτι ἡ σῖα ἐν τῷ ἰουδαίῳ ἐστὶν +
ἀλλ' ἐρχεται ὥρα καὶ νῦν ἐστὶν· ὅτε οἱ ἀληθι
νοὶ πρὸς κινῆται πρὸς κινῆσονται τῷ πρὶ +
πρὶ καὶ ἀληθῆ + καὶ γὰρ ὁ πῦρ τοιοῦτο ἵσ
τῇ τοῖς πρὸς κινῶντας αὐτὸν + πρῶτον ὁ θς·
καὶ τοῖς πρὸς κινῶντας αὐτὸν ἐν πρὶ καὶ α
λ + θῆαι δὲ πρὸς κινῆν· λέγει αὐτῇ ἡ κινῆ·
οἶδα ὅτι υἱοὶ αὐτοῦ ἐρχεται ὁ λῆξας νοσῆς + ὁ
πάντες ἐλθὲν ἐκ γένος ἀναστῆλθ' ἡμῶν πάντας
λέγει αὐτῇ ὁ ἰσ'· ἡ γὰρ ἡ ὁ λαλῶν σοι· καὶ ἐ
πὶ τοῦτο ἡ λῆξας μοι μαθηταὶ αὐτοῦ καὶ εἰδὲ αὐτῶ
σαν· ὅτι μετὰ γινωαι κὸς ἐλθῆαι + οὐδεὶς αὐτῶ
τοῖς εἶπε· πρὶ τῆς ἡ πύλας μετὰ αὐτῶ + ἀφῆ
κεν οὖν τῶν ὑδρίων αὐτῆς ἡ κινῆ καὶ ἀπῆλθεν
εἰς τὴν πόλιν καὶ λέγει τοῖς ἀρτοῖς + δαῦτε ἰδε
τε ἀρτὸν ὅς εἶπε μοι πάντα ὅσα ἐποίησα·
καὶ τί οὐκ ἐστὶν ὁ χς + ἐξῆλθον ἐκ τῆς πόλε
ως καὶ ἤρχοντο πρὸς αὐτὸν + ἐν δὲ τὸ μετὰ ἐν
ἡρώτων αὐτοῦ μοι μαθηταὶ· λέγοντες· ραβ
βί· φαίτε + ὁ δὲ εἶπε αὐτοῖς· ἐγὼ βρώσιν
ἐχω φαγεῖν· ὡς ὑμεῖς οὐκ οἶδατε + ἐλέγον
οὖν οἱ μαθηταὶ πρὸς ἀλλήλους· μή τις ἡμεῖς
αὐτῷ φαγεῖν + λέγει αὐτοῖς ὁ ἰσ'· ἐμὸν βρώμα
ἐστὶν ἵνα ποιῶ τὸ θέλημα τοῦ πατρὸς μου

με καὶ τελευτήσω αὐτοῦ τὸ ἐξέρχου· οὐ γὰρ καὶ
 λέγεται ὅτι ἐπὶ τετραμυροῦ ἐστὶ καὶ ὁ θέρης
 μὲν ἐρχεται· ἰδοὺ λεγώ ὑμῖν· ἐπαράτε τοῖς
 ὀφθαλμοῖς ὑμῶν καὶ θεασάμενοι τὰς χώρας
 ὅτι λα καὶ εἰσὶ πρόσθερῖς μὲν ἰδοὺ· καὶ ὁ θέρης
 ζων καὶ ὁ λαμβάνει καὶ ἑλκύει καὶ πορνεύει
 ἐν αἰῶνι· ἴνα καὶ ὁ ἀσπίρων ὁμοῦ χαίρῃ καὶ
 ὁ θέρης ζων· ἐν γὰρ τούτῳ ὁ λόγος ἐστὶν ἀληθι-
 νός· ὅτι ἄλλος ἐστὶν ὁ ἀσπίρων· καὶ ἄλλος ὁ θε-
 ρίς ζων· ἐγὼ ἀπέστειλα ὑμᾶς θερίσθαι· ὁ οὐ γὰρ
 μὲν κεκοπτεῖται· ἄλλοι κεκοπτεῖται· καὶ
 ὑμεῖς γὰρ τὸν κόπον αὐτῶν ὅσον ἡλύθατε· καὶ
 ὅτι τίς πολλὸς ἐκ τῶν πολλῶν ἐπίσταται εἰς
 αὐτὸν τῶν ἡμαρτημάτων· ὅθεν λόγον τῆς γυναι-
 κὸς μαρτυροῦσης· ὅτι εἶπε μοι πάντα ὅσα
 ἐποίησα· ὡς οὐκ ἦλθον πρὸς αὐτὸν οἱ
 μαρτυροῦντες· ἡρώτων αὐτὸν μέναι παρὰ
 τοῖς· καὶ ἐμνηστεύθη ἡμεῖς· καὶ πο-
 λὺ πλῆθος ἐπίσταται διὰ τῶν λόγων αὐτοῦ·
 τῇ τε γυναικὶ ἐλθόν· ὅτι οὐκ ἐπὶ ἀπὸ
 σὺν λαλῶν πισταμέν· αὐτοὶ γὰρ ἀνέκοι-
 μεν καὶ οἶδαμεν· ὅτι οὗτος ἐστὶν ἀληθὺς
 ὁ σῆρ τοῦ κοσμοῦ ὅστις· — τῇ ἡμεῖς ἐστὶν

ὁ πενθὺς πρὸς τοῖς ἐληλυθότασ· καὶ πρὸς
 αὐτὸν ἰουδαίους· εἰς οὗτον πᾶν ὑμῶν
 ἡ γαπατέα ἐμὴ· γὰρ ἐκ τούτου ἐξήλ-
 θον καὶ ἡμεῖς· οὐδὲ γὰρ ἀπέμεινεν ἐληλυθα·
 ἀλλ' ἐκρήμοσ μοι ἀπέστειλεν· διὰ τὴν λαλῶ-
 ἤν τιν ἐμὴν οὐ γήμοσ κετε· ὅτι οὐδὲν

αὐτὰκούειν τὸν λόγον τὸν ἐμὸν + ὑμεῖς ἐκ τοῦ
πρὸς τοῦ διαβόλου ἐστὶ· καὶ τὰς ἐπιθυμίας
τοῦ πρὸς ὑμῶν θέλετε ποιεῖν· ἐκ γὰρ οὗ ἀποστό-
μος ἐὼν ἀπαρχίως· ὅτι οὐκ ἐστὶν ἀλήθεια ἐν
αὐτῷ + ὅτι ἄλλοτε τὸ φάιδος ἐκ τῶν ἰδίων
λαλῇ· ὅτι φάσις ἐστὶ καὶ ὁ πῆρ αὐτοῦ + ἡμῶν
τὴν ἀλήθειαν λέγων οὐ πῖσα ἐπέμοι· τίς ἐ-
ξ ὑμῶν ἐλέχηκε περὶ ἀμαρτίας· εἰδὲ ὡ-
ς ληθγα λέγων, διὰ τὴν ὑμεῖς οὐ πῖσα ἐπέμοι + ὁ
ὡς ἐκ τοῦ θυ, τὰ ῥήματα τοῦ θυ αἰκούει· δι-
α τοῦτο ὑμεῖς οὐκ αἰκούετε, ὅτι ἐκ τοῦ θυ οὐ
κἔστε + ἀπεκρίθησαν οἱ ἰουδαῖοι καὶ ἔπο-
ν αὐτῷ· οὐκ ἔλαττον λέγομεν ὑμεῖς, ὅτι σαμα-
ρίται ἐστέ· καὶ δαιμόνιον ἔχετε + ἀπεκρι-
θη ἰσ· ἐγὼ δαιμόνιον οὐκ ἔχω, ἀλλὰ τὴν
τοῦ πατρὸς μου· καὶ ὑμεῖς ἀτίμαζέ με + ἐ-
γὼ δὲ οὐ ζητῶ τὴν δόξαν μου· ἐστὶν ὁ ζητῶν
καὶ κτήνων + ἀμὲν ἀμὲν λέγων ὑμῖν· ἐάν
τίς τὸν ἐμὸν λόγον τηρήσῃ, θάνατον οὐ μὴ
θεωρήσῃς τὸν αἰῶνα· ~ τὴ γὰρ τὴν ἑσπέρην

Καὶ περὶ τὴν πρὸς τοῖς ἐληλυθότας καὶ τῶν
πρὸς αὐτὰρ ἰουδαίων· ἀμὲν ἀμὲν λέγων
ὑμῖν· ἐάν τις τὸν λόγον τὸν ἐμὸν τηρήσῃ
θάνατον οὐ μὴ θεωρήσῃς τὸν αἰῶνα + εἰ-
πε ποιοῦν αὐτῷ οἱ ἰουδαῖοι· μὲν ἐγὼ κα-
τέμεν ὅτι δαιμόνιον ἔχης + αὐτὰρ ἡμεῖς ἀπέθα-
με καὶ οἱ προφῆται· καὶ οὐ λέγεις· ἐάν τις
τὸν λόγον μου τηρήσῃ, οὐ μὴ θάσσεται θάνα-
τον γὰρ τὸν αἰῶνα + μὴ σὺ μὲν ζῶν εἰ τοῦ πρὸς

ἡμῶν αὐτῶν, ὅς τις ἀπέθανε· καὶ οἱ προ
φῆται ἀπέθανον· τίνα σὺ αὐτὸν οὐ ποιεῖς +
ἀπεκρίθη ἰσ· εἰ μὴ ὁδὸν ἔχω ἐμὴν, οὐ
δὲ ξαμου οὐδὲν ἔστιν· ἔστιν ὁ πῆρ μου ὁδὸ
ἐξ ὧν με· οὐ μὴ δὲ λέγει ὅτι θεὸς ὑμῶν ἐστὶ·
καὶ οὐκ ἐγνώκατε αὐτὸν + ἠώδ' οἶδα αὐτὸν·
καὶ εἰ μὴ ἠπώσθη ὁ θεὸς αὐτὸν· εἴσομαι
ὁμοίος ὑμῶν· ἡ δὲ αὐτὸν· καὶ οἶδα αὐτὸν· καὶ
τοῦ λόγου αὐτοῦ τηρῶ + ἀβραάμ, ὁ πῆρ ὑ
μῶν ἐγὰρ ἵσταται ἰσ· ἰδὲ τὴν ἡμέραν τὴν
ἐμὴν· καὶ εἶδε καὶ ἐχαρή + εἰ ποιοῦν οἱ
οὐδαῖοι πρὸς αὐτὸν + πεντήκοντα ἔτη οὐ
παύσει· καὶ ἀβραάμ ἐώρακε + ἠπεν οὖν
αὐτοῖς ὁ ἰσ· ἀμὴν λέγω ὑμῖν· πρὶν
ἀβραάμ γενέσθαι ἀνθρώπου· ἦσαν οὖν λί
θοι ἰσ· βάλετε ἐπ' αὐτὸν + ἰσ· εὐρύ
βη· καὶ ἐξῆλθεν ἐκ τοῦ ἱεροῦ διελθὼν δι'
ἀμέσου αἵτων· καὶ παρήγε μούτως· ~

τῇ δὲ τῇ εἰς κατὰ ἰσ· ἀνθρώπου·
ἐκ τῆς αἰῶνος· ἐπάρχετο ὁ ἰσ· τοῖς ὀφθαλ
μοῖς αὐτοῦ καὶ θεασάμενος, ὅτι πολλὸς ὁ
χλος ἐρχέται πρὸς αὐτὸν + λέγει πρὸς τοὺς φί
λῳ· ποῦ ποῦ· πόθεν ἔρχεσθαι μενέτω ἰσ· φαί
νωσιν οὗτοι· τοῦτο δὲ ἔλεγε πειράζων αὐτὸν·
αὐτὸς γὰρ ἰδὲ τί ἐμέ με ποιῶν + ἀπεκρίθη
αὐτῷ φίλῳ· ποῦ· διὰ κοσίων δὲ ναρίων ἀν
τοῦ οὐκ ἀρκούσιν αὐτοῖς· ἰσ· ἐκ τῆς αἰ
τῶν βραχὺ τί λῆβη + λέγει αὐτῷ ὁ ἰσ· τῶν μα
θητῶν αὐτοῦ ἀνδρῶν ὁ ἀδελφὸς σιμωνος

17
πέτρου· ἐστὶν παῖδες ἰσχυροὶ ὡς ἄνθρωποι, οὓς ἔχει πέν-
τε ἄρτους κρίνοισι καὶ δύο οὐφάρια· ἀλλὰ
ταῖς τέσσερις τοσοῦτοις + εἰ πέντε οἱ ἴσοι· πο-
ίησατε τοῖς ἄνθρωποις ἀναπεσεῖν· ὡς δὲ ἔχοι τοὺς
πολύς ἐν τῷ τόπῳ + ἀνέπρωον οἱ ἄνδρες
τοὺς ἀριθμὸν ὡς αἱ πέντε χίλιοι + ἔλα-
βε δὲ τοὺς ἄρτους οἱ ἴσοι καὶ εὐχαριστήσας δι' ἑδω-
κε τοῖς μαθηταῖς + οἱ δὲ μαθηταὶ τοῖς ἄνθρω-
ποις μένοισι + ὁμοίως δὲ καὶ ἐν τῶν οὐφάρων ὅσον
ἤθελον + ὡς δὲ ἐνεπλήθυνον λέγει τοῖς μα-
θηταῖς αὐτοῦ· (ὡς ἀγαγῆται τὰ περισσεύ-
ματα· ἵνα μὴ παύληται + (ὡς ἡ γα-
λον οὖν καὶ ἐγένετο θανάτω καὶ κοφίνοισι κλα-
μάτων ἐν τῶν πέντε ἄρτων τῶν κρίθινων·
αἱ ἐπερίσσευσεν τοῖς βιβρωκόσιν + οἱ οὖν ἄνθρωποι
ἰδοὺντες ὅτι ἐποίησεν ἡ γαλον οἱ ἴσοι ἔλεγον·
ὅτι οὗτος ἐστὶν ἀληθῶς ὁ προφήτης ὁ εὐχο-
μένος γὰρ τὸν κόσμον· Τί ἐπὶ τῷ ἐν

Καὶ περὶ τῶν προσετοῶν ἐλθόντων κατὰ τὰς ἀρχάς
ἐλθόντας πρὸς αὐτοὺς οὐδαίους· ἡ κρίμα
ἡ γαλον τὸν κόσμον τοῦτον ἤλθον· ἵνα οἱ μὴ
ἐβλέποντες· βλέπωσι· καὶ οἱ βλέποντες· τῷ
φλοῖ γεννηταί + καὶ ἡ κοίτα ἐν τῶν
φαρισαίων ταῦτα οἱ ὄντες μετὰ αὐτοῦ καὶ εἰ-
πον αὐτῷ· μή καὶ ἐμὲ τῷ φλοῖ γεννητῷ + ἡ περ-
δὲ αὐτοῖς οἱ ἴσοι· ἡ τῷ φλοῖ ἡ τε· οὐκ ἔχει
πεῖσμα + μὴ δὲ λέγετε ὅτι βλέπομεν +
οὐκ ἔχοντες ἁμαρτίαν ὑμῶν μένει + ἀμὲν ἀμὲν
λέγω ὑμῖν· ὁ μὴ εὐερχόμενος δι' αὐτῆς

θύρας δὲ τὴν αὐλήν τῶν προβάτων, ἀλλὰ
ἀραιβαίμων ἀρχαχόθεν ἐκγόμοσ κλέπτης ἐστὶ
καὶ ληστὴς + ὁ δὲ ὅς ἐρχόμενος διὰ τῆς θύ-
ρας ποιμὴν ἐστὶ τῶν προβάτων + τοῦτω ὁ θυ-
ρῶρος ἀγορεύει + καὶ τὰ πρόβατα τῆς φωνῆς
αὐτοῦ ἀκούει + καὶ τὰ ἰδιὰ πρόβατα καλῶ κα-
τ' ὄνομα + καὶ ἐξάγει αὐτὰ + καὶ ὅτ' αὐτὰ
ἰδιὰ πρόβατα ἐξάγει, ἐμπροσθεν αὐτῶν
πορεύεται + καὶ τὰ πρόβατα αὐτῷ ἀκολου-
θεῖ· ὅτι οἱ ὀδοῦ τὴν φωνὴν αὐτοῦ + ἄλλο τρία
δὲ οὐ μὴ ἀκολουθήσωσιν, ἀλλὰ φάξονται
ἀπ' αὐτοῦ + ὅτι οὐ κοίτασι τῶν ἄλλο τριῶν
τὴν φωνὴν + ταῦτε τὴν παροιμίαν εἶπεν
αὐτοῖς ὁ ἰσ. Εὐμεροὶ δὲ οὐκ ἐκωλύθησαν
ὡς αὐτὸς ἐλάλει αὐτοῖς + εἰπενοῦν πάλιν αὐ-
τοῖς ὁ ἰσ. ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν· ὅτι ἐ-
γὼ ἢ μὴ θύρα τῶν προβάτων + πάντες ὅ-
σοι ἤλθον, κλέπτουσιν καὶ ληστὰι· ἄλλ' οὐκ
κοίτασι αὐτῶν τὰ πρόβατα + ἐγὼ ἢ μὴ θύ-
ρα· δι' ἐμοῦ ἐάν τις ἐλθῇ σωθήσεται + καὶ
εἰσελεύσεται καὶ ἐξελεύσεται καὶ βοσκῇ αὐ-

τὴν παρὰ τῆς ἐκκλ. κατὰ τὴν ῥίσει·
Ἡ περὶ οὗτος προστοῖς ἐληλυθότας πρὸς αὐτὸν
ἰουδαίους· διὰ τοῦτο ὁ πῦρ μετ' ἀγαπᾷ· ὅτι ἐ-
γὼ τίθημι τὴν ψυχὴν μου ἵνα πάρῃν λαβῶ αὐ-
τὴν + οὐδεὶς αἶρῃ αὐτὴν ἀπ' ἐμοῦ· ἀλλ' ἐγὼ τί-
θημι αὐτὴν ἀπ' ἐμαυτοῦ + ἐξοισίαν ἐχὼ
θεῖναι αὐτὴν καὶ ἐξοισίαν ἐχὼ πάλιν λαβεῖν
αὐτὴν + ταῦτε πῶς ἐν πολλῷ ἐλάβον παρὰ

τοῦ πρῶτου μου + σκίσε μου οὖν πάλιν ἐξήγειρε ἐν
 τοῖς ἰουδαίοις δὲ ἀποὺς λόγους τοῦτο + εἶπε
 γοῦν πολλοὶ δὲ αὐτῶν· δαιμόνιον ἐχθρὸν καὶ
 μῆται· τί αὐτοῦ ἀκούετε· ἄλλοι ἐλεγον· ταῦτα
 ταῦτα ῥήματα, οὐκ ἐστὶ δαιμόνιον ζομενοῦ +
 μὲν δαιμόνιον δύνάται τυφλῶν ὀφθαλμοὺς
 ἀνοίγειν; **Ε**ξήγειρε δὲ τὰ ἐγκαίρια ἐν ἱε
 ροσολύμῳ + καὶ χειμῶν ἰὺ + καὶ περιεπαύ
 τησάντων ἐν τῇ ἐρήμῳ τῇ (τοῦ αἰσολομῶνος + ε
 κύκλωσαν οὖν αὐτὸν οἱ ἰουδαῖοι καὶ ἐλθόν
 αὐτῶν + εἶπεν τῷ φίλῳ ἡμῶν αἵρεσις· ἡ σὺ εἶ
 ὅτι· ἡ περὶ ἡμῶν παρρησία + ἀπεκρίθη αὐτοῖς·
 οἱσ· εἶπον ὑμῖν καὶ οὐκ ἐπίστασθε + τὰ ἐρ
 γὰ ἃ ἐγὼ ποίω· ἐν τῷ ὀνόματι τοῦ πρῶτου μου·
 ταῦτα μαρτυρῶ περὶ ἐμοῦ + ἀλλ' ὑμεῖς οὐκ ἐ
 πιστάτε· οὐ γὰρ ἐστὶ ἐν τῶν προβατῶν τῶν ἐμῶν·
 καὶ ὡς ἡ πορνεία + τὰ πρόβατα ταῦτα ἐμὰ πῶς
 φωνῆς μου ἀκούει καὶ ἀκολουθοῦσίν μοι· καὶ
 ἡ ζωὴ αἰώνιον δίδωμι αὐτοῖς· **Ἔ**πειτα
Επερὶ οὗτος πρὸς τοὺς ἐληλυθότας πρὸς αὐτὸν
 αὐτὸν ἰουδαῖος· τὰ πρόβατα τὰ ἐμὰ τῆς
 φωνῆς μου ἀκούει· καὶ ἡ ζωὴ αἰώνιον αὐτὰ καὶ
 ἀκολουθοῦσίν μοι + καὶ ἡ ζωὴ αἰώνιον δίδωμι
 αὐτοῖς· καὶ οὐκ ἀπόλωνται ὅς τινος αἰ
 ῶνα· καὶ οὐ γὰρ πάσει τις αὐτὰ ἐκ τῆς χη
 ρῆς μου + ὁ πῆρ μου· ὅς δὲ δώκε μοι ζωὴν
 πάντων ἐστὶ· καὶ οὐδὲν δύνάται ἀρπαξέμεν αὐ
 τὰ ἐκ τῆς χερῆς τοῦ πρῶτου μου + ἡ ζωὴ καὶ ὁ πῆρ
 ἐν ἐμοί· **Ε**βασίλευσαν οὖν λίθοι πάλιν οἱ

Ἰουδαῖοι ἰμαλὶ θάσωσιν αὐτὸν· ἀπεκρίθη
 αὐτοῖς οἱ οὗτοι· πολλὰ καλὰ ἔργα ἐδράξαν
 μὴν σὺ τοῦ πατρὸς μου· διὰ ποῖον αὐτῶν ἐρ-
 γον λιθάξετέ με + ἀπεκρίθηθεν αὐτῷ οἱ ἰου-
 δαῖοι· λέγοντες· περικαλὸν ἔργον οὐ λιθά-
 ξεμέν σε, ἀλλὰ περὶ βλασφημίας + καὶ ὅτι
 σὺ ἄνθρωπος· ποιῇς σε αὐτὸν θεόν + ἀπεκρίθη
 αὐτοῖς οἱ οὗτοι· οὐκ ἐστὶ γε γραμμένον ἐν τῷ
 νόμῳ ὑμῶν· ἡμεῖς οὖν παθεῖν θέμεν + ἡμεῖς κήρυ-
 εῖν πε θεοῦ· πρὸς οἷον λόγος τοῦ θεοῦ ἐγένετο +
 καὶ οὐδὲν αὐτῷ λυθῆναι ἢ γραφῇ οὐδ' οὐ πῆρ
 ἢ γένεσεν καὶ ἀπέστειλεν τὸν κόσμον + ὁ
 μὴ δὲ λέγει ὅτι βλασφημῇ· ὅτι ἡ πόμψ
 οὐ τοῦ θεοῦ ἐστὶν + ἡ οὐ ποιῶν τὰ ἔργα τοῦ πα-
 τρὸς μου μὴ πιστά ἐστε μοι· ἡ δὲ ποίῳ καὶ ἐμοὶ
 μὴ πισθεύετε· τοῖς ἔργοις πιστάσατε + ἰμα-
 γνῶτε καὶ πιστάσσετε, ὅτι ἐνεμοὶ οὐ πῆρ καὶ
 γινώσκον αὐτῷ· καὶ ἐστὶν τυφλὸς· ἀμαρτὴν καὶ ὁ θεὸς καὶ
 ἐξομολογήσεται καὶ ἐστὶν ὁ θεὸς τῶ καιρῷ ἐκρήνωμαι
 ρίαν ἢ ἐστὶν πρὸς τὸν μῆν· ἐστὶν ἡ ἀλήθεια καὶ ἡ ἀρετή·
 καὶ καιρῷ ἐκρήνωμαι παράγω οἱ οὗτοι ἡ δὲ ἐν ἄνθρω-
 πῷ φλὸν σὺ γενητὴς + καὶ ἡρώτησαν αὐτὸν
 οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ λέγοντες· ραββί· τίς ἐ-
 μαρτυρεῖ· οὗτος ἢ οἱ γονεῖς αὐτοῦ ἰματὶ τυφλὸς
 γεννηθῇ + ἀπεκρίθη ὁ οὗτος· οὔτε οὗτος ἢ μαρτυρεῖ
 οὔτε οἱ γονεῖς αὐτοῦ· ἀλλ' ἰμα φανερωθῇ τὰ
 ἔργα τοῦ θεοῦ ἐν αὐτῷ + ἐμὲ δὲ ἔργαζεσθαι
 τὰ ἔργα τοῦ πατρὸς μου ἐως ἡμερῶν
 ἐστὶν· ἐρχεται ἡ ὥρα ὅτε οὐδεὶς δύναται ἐργα-

ζεῶνται· ὁ πὰρ ἐν τῷ κόσμῳ ὡς φῶς ἡμῖν τοῦ κο-
 σμου· ταῦτα ἡ πῶν· ἐπὶ πείσε χαμέ· καὶ ἐ-
 ποίησε πηλὸν ἐκ τοῦ πλῖσματος· καὶ ἐπέ-
 χρισε τὸν πηλὸν ἐπὶ τοῖς ὀφθαλμοῖς τοῦ τυ-
 φλοῦ· καὶ εἶπε· αὐτῷ· ὑπάγε· ῥίψαι εἰς
 τοῦ σιλῶ· ἀμὲν· τὴν κολῦμβήθραν· ὁ ἔρμυ-
 ράβηαι ἀπεσαλμένος· ἀπὸ τῆς νοῦν καὶ ἐ-
 ρίψατο· καὶ ἦλθε βλέπων· οἱ οὖν γέγονες
 καὶ οἱ θεωροῦντες αὐτὸν τὸ πρῶτον· ὅτι
 τυφλὸς ἦν· ἔλεγον· οὐχ οὗτος ἐστὶν ὁ καθήμε-
 ρος καὶ προσαιτῶν· ἄλλοι ἔλεγον· ὅτι οὗ-
 τος ἐστὶν· ἄλλοι δὲ ὅτι οὐμοῖος αὐτῷ ἐστὶν· ἐ-
 κείνος ἔλεγε· ὅτι ἡμεῖς ἡμῖν· ἔλεγον οὖν αὐ-
 τῷ· πῶς ἡμεῖς ὡς ἡσάμσου οἱ ὀφθαλμοί· ἀπ-
 κρίθη αὐτοῖς· ἐκείνος καὶ εἶπε· ἀρὸς λε-
 γόμενος ἴσ· πηλὸν ἐποίησε καὶ ἐπέχρισε
 μου τοῖς ὀφθαλμοῖς καὶ ἔπε μοι· ὑπάγε· εἰς
 τὴν κολῦμβήθραν τοῦ σιλῶ· ἀμὲν· καὶ ῥίψαι·
 ἀπελθὼν δὲ καὶ ῥίψας ἀνέβλεψεν· εἶ-
 πομεν οὖν αὐτῷ· πού ἐστιν ἐκείνος· λέγει· οὐκ οἶ-
 δα· ἀρῶσιν αὐτὸν πρὸς τοῖς φαρισαίοις τὸν
 ποτὲ τυφλόν· ἡ δὲ σάββατον· ὅτε τὸν πη-
 λὸν ἐποίησε μοι ἴσ· καὶ ἀνέωξεν αὐτοῦ
 τοῖς ὀφθαλμοῖς· παλὶν οὖν ἡρώτων αὐτόν·
 καὶ οἱ φαρισαῖοι πῶς ἀνέβλεψεν· ὁ δὲ ἔπε·
 αὐτοῖς· πηλὸν ἐπέθηκε μου ἐπὶ τοῖς ὀ-
 φθαλμοῖς· καὶ ἐνι φάμιλῳ καὶ βλέπω· ἔλε-
 γον οὖν ἐκ τῶν φαρισαίων τινες· οὗτος δὲ
 ἀρὸς· οὐκ ἐστὶ παράδῃ· ὅτι τὸ σάββατον

οὔτε ῥᾷ· ἄλλοι ἐλέγον· πῶς δύναται ἄνθρωπος
ἀμαρτωλός· τοιαῦτα σημεῖα ποιῆσαι· καὶ σιγή-
μαίεν ἐν αὐτοῖς· λέγουσι τῷ τυφλῷ πάλιν·
σὺ τί λέγεις περὶ αὐτοῦ· ὅτι ἡμεῖς οἴσομεν τοὺς
ὀφθαλμοὺς· οὐδὲ γὰρ περὶ· ὅτι προφήτης ἐ-
στίν· οὐκ ἐπίστασάμενοι οἱ Ἰουδαῖοι περὶ
αὐτοῦ ὅτι τυφλὸς ἦν καὶ ἀνέκλειψεν· ἐ-
ως ὅτου ἐφώμησαν τοὺς γονεῖς αὐτοῦ τοῦ
ἀναβλέψαντος· καὶ ἡρώτησαν αὐτοὺς λέ-
γοντες· οὗτος ἐστὶν οὗτος ἡμῶν οὐκ ἔμελλε
λέγειν ὅτι τυφλὸς ἐγέννηθη· πῶς οὖν ἀν-
τίβλεπῃ· ἀπεκρίθησαν δὲ αὐτοῖς οἱ γονεῖς
αὐτοῦ καὶ εἶπον· οἴδαμεν· ὅτι οὗτος ἐ-
στὶν οὗτος ἡμῶν· καὶ ὅτι τυφλὸς ἐγέννη-
θη· πῶς δὲ μὴ βλέπει οὐκ οἴδαμεν· ἡ τις
ἡμεῖς ἐν αὐτοῦ τοῦ ὀφθαλμοῦ· ἡμεῖς οὐκ οἴ-
δαμεν· αὐτὸς ἡλικίαν ἔχει αὐτὸν ἐρω-
τήσατε· αὐτὸς περὶ ἑαυτοῦ λαλήσῃ· ταῦτα
εἶπον οἱ γονεῖς αὐτοῦ ὅτι ἐφοβοῦντο τοὺς Ἰου-
δαίους· ἡ δὲ γὰρ συνέτεθλωτο οἱ Ἰουδαῖοι· ἵνα
ἐὰν τις αὐτὸν ὁμολογήσειεν· ἀποβιβάσω-
νται· διὰ τοῦτο οἱ γονεῖς αὐτοῦ εἶπον ὅτι
ἡλικίαν ἔχει· αὐτὸν ἐρωτήσατε· ἐφώμη-
σαν οὖν σφόδρὰ τὸν ἄνθρωπον ὃν ἦν τυφλὸς
καὶ γὰρ αὐτῷ· δὲ δέξαντες τὴν δῶν· ἡμεῖς οἴδα-
μεν ὅτι ὁ ἄνθρωπος οὗτος ἀμαρτωλός ἐστίν· ἀπε-
κρίθη ἡ κήρυξ καὶ εἶπεν· εἰ ἀμαρτωλός
ἐστὶν οὐκ οἴδα· ἐν οἴδω ὅτι τυφλὸς ἦν· ἀν-
τίβλεπῃ· εἶπον δὲ αὐτῷ πάλιν· τί ἐποί-

ὡς οἱ· πῶς ἡμοῖς ἐξέσπου τοῖς ὀφθαλμοῖς· ἀπε-
κρίθη αὐτοῖς· ἔπειτα ἡμῶν ἡδὴ καὶ οὐκ ἔκλυ-
σατε· τί πάλιν θέλτε ἀκούειν· καὶ αὐτὸς ἡμῶν
μαθὴ ταῖς αὐτοῦ χαίρει· ἐλπίδοι δὲ ἦσαν
αὐτοῦ καὶ ἔπειτα· σὺ εἰ μαθὴ τῆς ἐκείνου·
ἡμῶν δὲ τοῦ καὶ σὺ εἰς μετὰ μαθὴ ταῖς· ἐ-
μῶν οἶδαμεν ὅτι καὶ σὺ εἰς λαλῆσαι νοθεύ-
τοῦτο γὰρ οὐκ οἶδαμεν πόθεν ἐστὶν· ἀπε-
κρίθη ἐκείνος καὶ ἔπειτα αὐτοῖς· ἐν γὰρ τού-
θι μαθόντες· ὅτι ἡμῶν οὐκ οἶδατε πό-
θεν ἐστὶν· καὶ ἀνέωξεν αὐτοῖς τοῖς ὀφθαλμοῖς·
οἶδαμεν δὲ ὅτι ἀμαρτανόλον οὐκ οἶδατε·
ἀλλ' ἐάν τις θεοσεβὴς ᾖ· καὶ τὸ θέλημα αὐ-
τοῦ ποιῇ· τοῦτου ἀκούει· καὶ τοῦ αἰῶνος
οὐκ ἐκλείπει· ὅτι ἡμοῖς ἐξέτις ὀφθαλμοῖς τῷ
φλοῦν γενημένον· καὶ ἡμῶν οὐτος παρὰ
θεοῦ· οὐκ ἐκ δυνάμεως τοῦ οὐδεν· ἀπεκρίθη
σαρκαὶ εἰπομένῳ· ἐν αμαρτίαις σὺ ἐ-
γενήθης ὅλως· καὶ σὺ δὲ τίς ἐσὶς ἡμᾶς;
καὶ ἐξέβαλον αὐτὸν ἐξω· ἡκούσαν οὖν οἱ
ὅτι ἐξέβαλον αὐτὸν ἐξω· καὶ ἀνέβη αὐ-
τὸς ἐπὶ τὸ αὐτὸ· σὺ πιστεύεις γὰρ τὸν λόγον τοῦ θεοῦ;
ἀπεκρίθη ἐκείνος καὶ ἔπειτα· καὶ τίς ἐστὶς ἐγώ;
ἵνα πιστάσω γὰρ αὐτὸν· εἰπε δὲ αὐτῷ οἱ οἱ· καὶ
ἐώρακαν αὐτὸν καὶ ὁ λαλῶν μετὰ τοῦ ἐκεί-
νου ἐστὶν· ὁ δὲ ἔφη· πιστάτω καὶ προσκυ-
νησεν αὐτῷ· ~ τῇ β' τῆς 5' αὐτῆς καὶ τῷ ἀρχιερέϊ.

Καὶ τῷ καιρῷ ἐκείνῳ· συνέλαβον οἱ ἀρχιερεῖς καὶ
οἱ φαρισαῖοι συνέδριον καταποῦν· καὶ ἔλθον

τίποιούμεν· ὅτι οὗτος ὁ ἄνθρωπος πολλὰ σημεῖα
ποιᾷ· καὶ ἐὰν ἄφωμεν αὐτὸν οὕτως· πάν-
τες πίστευσουσιν ἑς αὐτόν· καὶ ἐλάβουσιν
οἱ ῥωμαῖοι καὶ αἰγυπτίῳ ἡμῶν καὶ τὸν τόπον
καὶ τὸ ἔθνος· εἰς δὲ τις ἐξ αὐτῶν καὶ ἄφας
ἀρχιερεὺς ὡς τοῦ ἐν αὐτοῦ ἐκλήρου· εἶπεν
αὐτοῖς· ὁ μῦθος οὐ κοίτατε οὐδὲν· οὐδὲ δὲ ἄλο-
γίζεσθε· ὅτι σὺ μφίρη ἡμῖν ἵμαρ ὅς ἄνθρωπος αὐ-
ποθάρει ὑπὲρ τοῦ λαοῦ, καὶ μὴ ὅλον τὸ ἔ-
θνος ἀπόληται· τοῦτο δὲ αὐτὸν οὐκ εἶ-
πεν· ἀλλ' ἀρχιερεὺς ὡς τοῦ ἐν αὐτοῦ ἐκλήρου
προεφθήτεον· ὅτι ἐμελλεν ἴσ' ἀποθνήσκειν
ὑπὲρ τοῦ ἔθνους· καὶ οὐχ ὑπὲρ τοῦ ἔθνους μό-
νον ἀλλ' ἵμα καὶ τὰ τέκνα τοῦ θῦτα δὲ ἔσκορ-
πίσμεν αὐτὰς αἰχμὰς ὡς ἐν· ἀπεκρήνισεν οὖν
τὴν ἡμέραν συνελθόντες αὐτοὶ ἵμα ἀπὸ κτήνω
σιν αὐτόν· ἴσ' οὖν οὐκ ἐτί παρρησίᾳ περιέπα-
ται ἐν τοῖς ἰουδαίοις· ἀλλὰ ἀπήλθεν ἐκ
θου ἑστὴν χώραν· ἤλθον τὴν ἐρήμουν εἰς ἐ-
φραίμ λεγομένην πόλιν· καὶ ἐδὲ ἔτρι-
βε μετὰ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ· ὡς τὴν 5^{ην} αὐτῆς

Καὶ ἦν ἡμερὰ· συμβούλιον ἔποιον οἱ φαρισαῖοι κατὰ τοῦ Ἰησοῦ καὶ
εἶπον πρὸς ἐαυτοὺς· θεωρεῖτε ὅτι οὐκ ὠ-
φελεῖτε οὐδὲν· ἰδὲ ὁ κόσμος ὅπισθεν αὐτοῦ
ἀπήλθεν· ἡσάρδε τίνας ἐλπίδας· ἐν τῶν
ἀμαβαιγόντων ἵμα πρὸς κινήσασιν ἐν
τῇ ἑορτῇ· οὗτοι οὖν προσήλθον φιλήσπα-
τῶ ἀποβιδοσαὶ δὲ τὴν γαλιλαίαν καὶ ἡρώ

τις αὐτὸν λεγόντες· κέ· θέλομεν τὸν ἦν ἰ
 δεῖν· ἐρχέαι φίλιππος καὶ λέγει τῷ ἀνδρῆα·
 καὶ πάλιν ἀνδρέας καὶ φίλιππος λέγουσι τῷ
 ἰω· ὁ δὲ ἰὸς ἀπεκρίνατο αὐτοῖς λέγων· ἐλήλυ
 θεν ἡ σῶσα· ἵνα δοξαθῇ οὗτος τοῦ ἀνθρώπου·
 ἀλλὰ ἀλλὰ λέγων ἔτι· ἔδρ' ἐμὸς κόκκος
 τοῦ σίτου πεσὼν ἐστὶν ἐν τῷ ἀνθρῷ, αὐτὸς
 μένος μένει· ἐὰν δὲ ἀποθάνῃ, πολὺν καρ
 πὸν φέρει· σφιλῶν τῶν ψυχῶν αὐτοῦ ἀπολέ
 σαι αὐτῷ· καὶ ὁ μισθὸς τῶν ψυχῶν αὐτοῦ ἐν
 τῷ κόσμῳ τούτῳ, εἰς ζωὴν αἰώνιον φυλάξει
 αὐτῷ· ἐὰν ἔμοι διακομῇ τις ἐμοὶ ἀκοι
 θήτω· καὶ ὅπου ἔμ' ἐγὼ, ἐκθ' καὶ ὁ δὲ ἀκο
 μὸς ὅ ἐμὸς ἔσται· καὶ ἐὰν τις ἐμοὶ διακομῇ,
 τίμησιν αὐτὸν ὅτι ἔμ'· καὶ ἡ ψυχὴ μου τετα
 ραῖται· καὶ τί ἔγωγε· πέρ' οὐ σὺ με σῴτῃς ὡ
 ρα ταύτης· ἀλλὰ διὰ τοῦτο ἦλθον ἐς τὴν ὥ
 ραν ταύτην· πέρ' ὁ δὲ ξασόν σου τὸ ὄνομα· ἦλ
 θεν οὖν φωνῇ σου τοῦ οὐνοῦ καὶ ἐδόξασα
 καὶ πάλιν δοξάσω· ὁ οὖν ὄχλος ὁ ἐστὼς καὶ
 ἀκούων ἐλεγε βροντῶν γεγομέναι· ἄλλοι
 ἐλεγον· ἀγγεὸς αὐτῷ λελάληκεν· ἀπε
 κρίθη ἰὸς καὶ ἔπερ· οὐδὲ ἐμὲ αὐτὴ ἡ φωνὴ
 τέχονεν, ἀλλὰ δι' ὑμᾶς· καὶ ἡ κρίσις ἐ
 στί τοῦ κόσμου τούτου· καὶ ὁ ἀρχὸν τοῦ κόσ
 μου τούτου ἐβλήθη· καὶ ἐξώ· καὶ ἐγὼ ἐ
 ἀνέβην ἐν τῷ οὐρανῷ, πάντας ἐλκίσω
 πρὸς ἐμαυτὸν· τοῦτο δὲ ἐλέγεν· σημαί
 νων ποίω θαράττω ἐμέμεν ἀποθνήσκον·

καὶ ὁ δὲ
 τῶν αἰνῶν
 τῶν αἰνῶν
 τῶν αἰνῶν

ἄπε κρήθη αὐτῷ ὁ ὄχλος· ἡ μὲν ἡ κοῦσα μὲν
 αὐτοῦ νόμου· ὁ δὲ τίς ἔμενει γὰρ τὸν αἰῶνα·
 καὶ πῶς σὺ λέγεις· δεῖ ὑψωθῆναι τὸν υἱὸν
 τοῦ ἀνθρώπου· τίς ἐστὶν οὗτος ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου· εἰ
 περὶ αὐτοῖς οἷον· ἐπὶ τὴν κροῦρον χρόνον τὸ φῶς
 μεθ' ὑμῶν ἐστὶ· περὶ πατέτε εἰς τὸ φῶς ἔχε
 τε· ἵνα μὴ σκοτεῖα ὑμᾶς καταλάβῃ· καὶ ὁ
 περιπατῶν ἐν τῇ σκοτεινίᾳ οὐκ οἶδε ποῦ ὑπά
 γει· ἕως τὸ φῶς ἔχετε· πιστάτε γὰρ τὸ φῶς ἵνα
 υἱοὶ φωτὸς γενήθετε· ~ τῇ δὲ τῆς ἑξουσίας
 ἡ ἰσχύς· πρὸς τοὺς ἐληλυθότας· καὶ ἰὼν
 πρὸς αὐτοὺς τοὺς Ἰουδαίους· ἕως τὸ φῶς ἔχοντες· πιστά
 ται γὰρ τὸ φῶς· ἵνα υἱοὶ φωτὸς γενήθετε· ταῦτα
 ἐλάλησεν οἷον· καὶ ἀπελθὼν ἐκρύβη ἀπὸ
 αὐτῶν· τοσαῦτα δὲ αὐτοῦ σημεῖα πεποιηκότ
 ῃ· ἐκπροῦθεν αὐτῶν· οὐκ ἐπίστασαν γὰρ αὐτὸν· ἵ
 να ὁ λόγος ἡσαΐου τοῦ προφήτου πληρωθῇ·
 ὃν εἶπε· καὶ· τίς ἐπίστασε τῇ αἰσῇ ἡμῶν·
 καὶ οὐραχίων· καὶ τὴν ἀπεκαλύφθη· διὰ τοῦ
 τοῦ κηδῶνα τοῦ πιστάτην· ὅτι πάλιν ἔπερ
 ἡσαΐας· τε τύφλωκεν αὐτῶν τοὺς ὀφθαλ
 μοὺς· καὶ πεπώρωκεν αὐτῶν τὴν καρδίαν·
 ἀρ· ἵνα μὴ ἴδωσιν τοὺς ὀφθαλμοῖς· καὶ νο
 ῖσιν τῇ καρδίᾳ· καὶ ἐπίστανται· καὶ
 ἰάσωμαι αὐτοὺς· ταῦτα εἶπε ἡσαΐας·
 ὅτε εἶδε τὴν δόξαν αὐτοῦ· καὶ ἐλάλησε
 περὶ αὐτοῦ· ὁ μὲν μεντοικῶν αὐτῶν ἀρ
 χόντων πολλοὶ ἐπίστανται γὰρ αὐτὸν· ἀ
 λλὰ διὰ τοὺς φαρισαίους οὐκ ᾔμαρτο λόγῳ· ἵ

καὶ ἀπὸ (ὡς ἀνέρωτοι γέγονται + ἡ γὰρ πησάρ
 γὰρ τὴν δὲ ξαντῶν ἀνῶν· μαλλονὶς τῶν δὲ
 ξαντοῦ θῦ + ἴσ' δὲ ἐκράξε καὶ εἶπεν· ὁ πῖ
 σαὼν γὰρ ἐμὲ· οὐ πῖ σαὼν γὰρ ἐμὲ· ἀλλ' ἄς τὸν πε
 μεφανταίμε + καὶ ὁ θεωρῶν ἐμὲ· θεωρῶν τ
 πέμεφανταίμε + ἐγὼ φῶς γὰρ τὸν κόσμον ἐ
 λήλυθα· ἵνα πᾶς ὁ πῖ σαὼν γὰρ ἐμὲ· ἐν τῇ σκο
 πῇ μὴ μίμνη + καὶ ἐὰν τις ἀκούσῃ τῶν ῥημά
 των καὶ μὴ πῖ σαὼν ἐγὼ οὐ κρίνω αὐτόν + οὐ
 γὰρ ἦλθον ἵνα κρίνω τὸν κόσμον· ἀλλ' ἵνα σω
 σω τὸν κόσμον· ~ τῇ ἐπὶ τῇ ἀναλήψει γὰρ ὅτι
 πρὸ οὗτο ὅδε ἐν ἀναλήψει· εἰ παρὰ τὰς ὑπερβολὰς αὐτῶν

τῶν καὶ ῥῶ ἐκ γὰρ ἀναστάς ὁ ἴσ' πρῶτ' πρῶτ'· τῇ διατῶν
 ἐπακολούθησεν ἡ ἀνάστασις· ~ ἡτ' ἐγὼ θῶν τῇ γὰρ ἡτ' ἐγὼ θῶν.

τῶν καὶ ῥῶ ἐκ γὰρ ἀναστάς ὁ ἴσ' ἐν ῥῶν· ~ τῇ εὐλο
 γοῦντες τῇ θῶν ἀνέμω· ~ ἡτ' ἐγὼ θῶν τῇ παρὰ τῇ σῶν.

Καὶ περὶ οὗτοῖς εἰς αὐτοῦ μαθηταῖς ἡ γὰρ τῶν ἀνῶν
 μὴ παρασιτάθω ὑμῶν ἡ καρδία· πῖσατε
 γὰρ τὸν θῶν καὶ γὰρ ἐμὲ πῖσατε + ἐν τῇ οἰκίᾳ
 τοῦ πρῶτον μου μοναὶ πολλαὶ εἰσὶν + γὰρ δὲ μὴ γὰρ
 ἀν' ὑμῶν· πορεύομαι ἐτοιμάσαι τόπον
 ὑμῶν + καὶ ἐὰν πορεύθω ἐτοιμάσω ὑμῶν
 τόπον· πάλιν ἐρχομαι καὶ παραλήψομαι
 ὑμᾶς πρὸς ἐμαυτόν + ἵνα ὁ ποὺ γὰρ ἐγὼ
 καὶ ὑμεῖς ἦτε· καὶ ὁ ποὺ γὰρ ὑπαγώοιδατε
 καὶ τὴν ὁδὸν οἴδατε + λέξω αὐτῶν θωμάς· καὶ
 οὐκ οἴδαμεν ποὺ ὑπάγῃς· καὶ πῶς οἴδαμεν
 θάττω ὁδὸν εἰδέναι + λέξω αὐτῶν ὅτι ἐγὼ γὰρ
 ἡ ὁδὸς καὶ ἡ ἀλήθεια καὶ ἡ ζωὴ· οὐδεὶς ἐρχεται

πρὸς τὸν πρῶ εἰ μὴ δὲ ἐμοῦ + εἰ ἐγνώκητε
καὶ τὸν πρῶ μου ἐγνώκητε αὖ· καὶ ἀπαρτί
γίνως κατεαὐτὸν καὶ εἰς αὐτὸν κατεαὐτὸν + λέ
γει αὐτῷ φίλι πρὸς + κέ· δὲ ξορήμην τὸν πρῶ καὶ
αὐ καὶ ἡμῖν + λέγει αὐτῷ οἷς· τοσοῦτον χρό
νον μεθ' ὑμῶν εἰμὶ· καὶ οὐκ ἐγνώκασθε·
φίλι ππε· ὁ εἰς αὐτὸς ἐμὲ εἰώρανε τὸν πρῶ·
καὶ πῶς οὐ λέγῃ δὲ ξορήμην τὸν πρῶ + οὐ πῖ
σάθῃ ὅτι ἐγὼ ἐν τῷ πρῷ καὶ ὁ πῆρ ἐν ἐμοί· ἐσι + τὰ
ρήματα αὐτοῦ ἐγὼ λαλῶ· ἀπὸ αὐτοῦ οὐ λαλῶ + ὁ
δὲ πῆρ ὁ ἐν ἐμοὶ μένων αὐτὸς ποιῇ τὰ ἐφ' ἃ +
πίσάτε μοι ὅτι ἐγὼ ἐν τῷ πρῷ καὶ ὁ πῆρ ἐν ἐμοί· ~

σταβρατον 5 κατὰ τὴν ἀρχὴν·
Εἰ πενὸς τοῖς εἰς αὐτοῦ μαθηταῖς· τὰ ρήμα
τα αὐτοῦ ἐγὼ λαλῶ ἡμῖν· ἀπὸ αὐτοῦ οὐ λαλῶ +
ὁ δὲ πῆρ ὁ ἐν ἐμοὶ μένων αὐτὸς ποιῇ τὰ ἐφ' ἃ +
πίσάτε μοι ὅτι ἐγὼ ἐν τῷ πρῷ καὶ ὁ πῆρ ἐν ἐ
μοί + ὁ δὲ ἐν ἐμοὶ ἐφ' ἃ αὐτὰ πίσάτε μοι +
ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν· ὁ πῖσάων ὁ ἐμὲ
τὰ ἐφ' ἃ αὐτοῦ ποιῶ καὶ ὁ μὸς ποιήσῃ + καὶ μεθ
ζωρατοῦτων ποιήσῃ + ὅτι ἐγὼ πρὸς τὸν πρῶ
μου πορεύομαι + καὶ ὅτι αὐτὸς αἰτήσῃτε ἐν τῷ
ὄνόματί μου τοῦτο ποιήσω· ἵνα δοξαθῇ ὁ πῆρ
ἐν τῷ ἡμῶν + εἰς αὐτὸ αἰτήσῃτε ἐν τῷ ὀνόμα
τί μου τοῦτο ποιήσω + εἰς αὐτὸ ἀγαπάτε με τὰς
ἐν τολᾶς τὰς ἐμὰς τηρήσατε· καὶ ἐγὼ ἐ
ρωτήσω τὸν πρῶ· καὶ ἄλλον παράκλητον δώ
σει ὑμῖν· ἵνα μένει μεθ' ὑμῶν ἄχρι τοῦ αἰῶνα +
τὸ πρῶ τῆς ἀληθείας· ὁ ὁ κόσμος οὐδὲν αἶσται

κοσμοῦ σοὶ ἦσαν· καὶ ἐμοὶ αὐτοῖς δέδωκας.
καὶ τὸν λόγον σου τετήρηκα· καὶ μὴν ἐγὼ καὶ
ὅτι πάντα ὅσα δέδωκάς μοι, παρασού ἐστιν·
ὅτι τὰ ῥήματα αὐτὰ δέδωκάς μοι, δέδωκάς
μοι αὐτοῖς· καὶ αὐτοὶ ἐλάβον καὶ ἐγνώσαν ἀληθῶς
ὅτι παρασού ἐξῆλθον· καὶ ἐπίσταμαι ὅτι
σύ με ἀπέστειλας· ἐγὼ περὶ αὐτῶν ἐρωτῶ.
οὐ περὶ τοῦ κόσμου ἐρωτῶ, ἀλλὰ περὶ ὧν δέ-
δωκάς μοι ὅτι σοὶ ἦσι· καὶ τὰ ἐμὰ πάντα σα-
φῆ· καὶ τὰ σὰ ἐμὰ, καὶ δεδύξασμαι ἐν αὐτοῖς·
καὶ οὐκέτι ἔμεινεν τῷ κόσμῳ· καὶ οὗτοι ἐν τῷ
κόσμῳ ἦσι καὶ ἐγὼ πρὸς αὐτὸν ἐρχομαι· περὶ ᾧ
τήρησον αὐτοῖς ἐν τῷ ὀνόματί σου· ὡς δέδω-
κάς μοι ἰσχύος ἐν καθῶς ἔλεγχον· ὅτε ἡμῶν
μεταῦτῶν ἐν τῷ κόσμῳ, ἔγωγε τήρου αὐτοῖς.
ἐν τῷ ὀνόματί σου· οἷός δέδωκάς μοι ἐ-
φύλαξαι· καὶ οὐδεὶς ἐξ αὐτῶν ἀπολθῶ, εἰ-
μὴ ὁ ὃς τῆς ἀπολθῶσας ἡμετέρας ἡ γραφὴ πληρω-
θῇ· μὴν δὲ πρὸς αὐτὸν ἐρχομαι· καὶ ταῦτα λαλῶ
ἐν τῷ κόσμῳ· ἵνα ἔχωσι τὴν χάριν τὴν ἐμὴν,
πεπληρωμένους ἐν αὐτοῖς· ~

τῇ β¹ τῆς α¹ π¹

κατὰ τὸ ἀρχαῖον

Καὶ πενθῶν τοῖς ἐαυτοῦ μαθηταῖς· μή τι
ῥασαίθω· ὑμῶν ἡ καρδία μὴ δεδολιγίσθη·
καὶ κοίσατε ὅτι ἐγὼ εἶπον ὑμῖν· ὑπάγω καὶ
ἐρχομαι πρὸς ὑμᾶς· ἡ γὰρ πατέρα με ἐχαι-
ρητε ἅμ' ὅτι εἶπον πορεύομαι πρὸς τὸν πατέρα·
ὅτι ὁ πατήρ μου μένων μου ἐστίν· καὶ μὴν εἶρη
καὶ ὑμῖν πρὶν γὰρ μένει· ἵνα ὅταν γένηται

πίστασινται· οὐκ ἐπὶ πολλὰ λαλήσω με-
θ' ὑμῶν· ἐρχεται γὰρ ὁ τοῦ κόσμου ἀρχὴν·
καὶ σὺ ἐμοὶ οὐκ ἐχθρὸς οὐδὲν· ἀλλ' ἵνα γινώσκῃς
κόσμος ὅτι ἀβασίλευσεν τὸν πρῶτον καὶ καθὼς ἐ-
μετὴ λατόμος ὁ πῆρ, οὕτως ποιῶ· ἐγὼ γὰρ
ἀδικήσωμεν σὺ τὰ ἔθνη· ἐγὼ γὰρ μὴ ἡ ἀμπελὶς
ἡ ἀληθινή· καὶ ὁ πῆρ μου ὁ γεωργὸς βῆεν· πάν-
τη καὶ σὺ ἐμοὶ μὴ φέρον καρπὸν αἶμα αὐτοῦ·
καὶ πάντ' ὅ καρπὸν φέρον καθέρει αὐτὸ· ἵνα
πλήσῃ καρπὸν φέρει· ἡ δὲ ὑμῶν καθα-
ροί ἐστέ· διὰ τὸν λόγον οὐκ ἐλάληκα ὑμῖν·
μήματα σὺ ἐμοὶ, καὶ σὺ ὑμῖν· καθὼς δ'
καὶ ἐμοὶ οὐ δύναται καρπὸν φέρον ἀφ' ἑαυ-
τοῦ· ἐὰν μὴ μένη σὺ τῇ ἀμπελῶ· οὕτως
οὐδὲ ὑμῶν· ἐὰν μὴ σὺ ἐμοὶ μένητε· ἐ-
γὼ γὰρ μὴ ἡ ἀμπελος· ὑμεῖς τὰ κτήνη·
ὁ μὲν σὺ ἐμοὶ, καὶ σὺ αὐτῶν· οὕτως φέ-
ρει καρπὸν πολλόν· ὅτι χάρις ἐμοὶ οὐδὲ
μαθε ποιεῖν οὐδὲν· ἐὰν μὴ τις μένη ὑ-
μῶν· ἐβλήθη ἔξω ὡς τὸ κτήνη καὶ ἐξηράνθη·
καὶ ζωάτοισιν αὐτὰ καὶ ἡσὶ τὸ πῆρ βάλλοι καὶ
καίεται· ἐὰν μὴ μένητε σὺ ἐμοὶ καὶ τὰ κτήνη
τά μου σὺ ὑμῖν μένη· ὅ ἐὰν θέλητε αἰτῆ-
σαι καὶ γενήσθαι ὑμῖν· — τῇ τῇ σ' ἀπ' ὑμῶν
ἵπεν ὡς τοῖς ἐαυτοῦ μαθηταῖς καὶ τοῖς
ἑταῖς· ἐρχεται ὡρα ἵνα πάς ὁ ἀποκτῇ μαθὼν
μαθὼν δὲ ἡ λατρεία προσφέρῃ τῷ θῷ· καὶ ταῦ-
τα ποιεῖσιν ὅτι οὐκ ἐγινώσαν τὸν πρῶτον
οὐδὲ ἐμὲ· ἀλλὰ ταῦτα λελάληκα ὑμῖν.

ἴμα' ὅταν ἐλθῇ ἡ σῶσις· μνημονεύετε αὐ-
 τῶν ὅτι ἐγὼ ᾔπομ' ὑμῖν· ταῦτα δὲ ὑμῖν
 ἐξάρχουσ' οὐκ ᾔπομ' ὅτι μεθ' ὑμῶν ἡμεῖς·
 ὡς δὲ ὑπάγω πρὸς τὸν πατέρα ταῦτε· καὶ
 οὐδεὶς ἐξ ὑμῶν ἐρωτά με πού ὑπάγεις·
 ἀλλ' ὅτι ταῦτα λελάληκα ὑμῖν· ἡ λύπη πε-
 πλήρωκεν ὑμῶν τὴν καρδίαν· ἀλλ' ἐγὼ
 τὴν ἀλήθειαν λέγω ὑμῖν· σὺ μὲν εἰς ὑ-
 μῖν ἴμα' ᾧ ἀπέλθω· ἐὰν γὰρ ἐγὼ μὴ ἀπέλ-
 θω, ὁ πατὴρ τοσούτου κέλευσται πρὸς ὑμᾶς·
 ἐὰν δὲ πορεύθω πέμφω αὐτὸν πρὸς ὑμᾶς·
 καὶ ἐλθὼν ἐκ ἡμοῦ, ἐλέγξει τὸν κόσμον·
 περὶ ἀρετῆς καὶ περὶ δικαιοσύνης καὶ περὶ
 κρίσεως· περὶ ἀμαρτίας μὲν ὅτι οὐ πισέ-
 νοισιν ἔσ' ἐμὲ· περὶ δικαιοσύνης δὲ ὅτι πρὸ
 τοῦ πρῶτον ὑπάγω· καὶ οὐκέτι θεωρεῖτε με·
 περὶ δὲ κρίσεως· ὅτι ὁ ἀρχὸν τοῦ κόσμου τοῦ-
 του κέκριται· ἐπὶ πολλὰ ἐχώλεμαι ὑμῖν·
 ἀλλ' οὐδὴν αὖτε βασάζειν ἀρτί· ὅταν δὲ ἐλθῇ
 ἐκ ἡμοῦ τὸ πρῶτον τῆς ἀληθείας ὁδηγήσει ὑ-
 μᾶς ὅς πάσαν τὴν ἀλήθειαν· ἡ δὲ ἡμεῖς
 ἵπεν οὕτως τοῖς ἐαυτοῦ μαθηταῖς· ἡ δὲ τῶν
 πάντων ὅσα ἐχει ὁ πᾶρ ἐμάστι· διὰ τοῦτο
 εἶπομ' ὅτι ἐκ τοῦ σκότους μεβάσει καὶ ἀνα-
 ζήξει ὑμῖν· μίκρον καὶ οὐ θεωρεῖτε με· καὶ
 πάλιν μικρὸν καὶ ὄψασθε με· ὅτι ὑπάγω
 πρὸς τὸν πατέρα· εἶπομ' οὖν ἐκ τῶν μαθη-
 τῶν αὐτοῦ πρὸς ἀλλήλους· τί ἐστὶ τοῦτο ὃ
 λέγει ἡμῖν· μίκρον καὶ οὐ θεωρεῖτε με καὶ

75
παλινμικρόν καὶ ὀφθαλμοί· καὶ ὅτι ἐγὼ
ὑπαίνομαι ὑμᾶς πρὸς τὸν πρῶτον· ἐλεβοροῦν
τοῦτο τί ἐστὶν ὁ λόγος τὸ μικρόν· οὐ κοίδα
μεντίλαλθον· ἐγνώσω οἱ σὸ ὅτι ἤθελε καὶ
τὸν ἐρωτᾶν· καὶ ὅτι περὶ αὐτοῖς + περὶ τοῦτου
ζητῶτε μετ' ἀλλήλων· ὅτι ὅτι πορνικὸν καὶ
οὐ θεωρεῖτε μετ' καὶ παλινμικρόν καὶ ὀφθαλμοί
αἰνῶν αἰνῶν λέγω ὑμῖν· ὅτι καὶ
σταίκα καὶ θρῆνηστέ ὑμεῖς· ὁ δὲ κόσμος χαρή
σθαι· ὑμεῖς δὲ λυπηθήσθε· ἀλλ' ἡ λύπη
ὑμῶν ἡ χάρα γινώσθαι + ἡ γυνή ὅτι αὐτὴ
τί καὶ λύπη ἔχει ὅτι ἡλθεν ἡ ὥρα αὐτῆς·
ὅτι αὐτὴ γινώσκει τὸ παιδίον· οὐ καὶ τίμη
μονάει τῇ σθλήφει δὲ αὐτὴν χάρα· ὅτι ἔ
γεννήθη ἄνθρωπος τὸν κόσμον + καὶ ὑμεῖς
οὐκ ἔχετε λύπη· παλιν δὲ ὀφθαλμοί καὶ
καὶ χαρήσθαι ὑμῶν ἡ καρδία· καὶ τὴν χάρα
ὑμῶν οὐδεὶς αἰσθάνεται ὑμῶν + καὶ ἐνεκ' ἐκ
τῆς χάρας ἐμὲ οὐκ ἐρωτήσθε οὐδὲν + αἰνῶν
αἰνῶν λέγω ὑμῖν· ὅτι ὅτι αὐτὴ στήθεα τὸν
πρῶτον ἐν τῷ ὀνόματί μου δώσει ὑμῖν·

τῇ ἑστῇ ἀπαστὴν καὶ τῶν
Εἰ περὶ οὗτοι εἰς αὐτοῦ μαθηταῖς· αἰνῶν
αἰνῶν λέγω ὑμῖν ὅτι ὅτι αὐτὴ στήθεα
τὸν πρῶτον ἐν τῷ ὀνόματί μου δώσει ὑμῖν +
ἐῶς ἄρτι οὐκ ἐθέσατε οὐδὲν ἐν τῷ ὀνό
ματί μου + αὐτῇ καὶ λήψαθε ἵνα
ἡ χάρα ὑμῶν ἡ πεπληρωμένη + πάντα
ἐν παροικίαις λελάληκα ὑμῖν· ἀμέρξε

7
 ται ὦρα ὅτε οὐκ ἐπὶ ἐν παροιμίαις λαλή-
 σω ὑμῖν· ἀλλὰ παρρησίᾳ περὶ τοῦ πρὸς Ἀ-
 μαθελάῳ ὑμῖν· ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ἐν
 τῷ ὁρματί μου αἰτήσεσθε· καὶ οὐ λήσω
 ὑμῖν ὅτι ἐγὼ ἐρωτήσω τὸν πρῶτον περὶ ὑμῶν·
 αὐτὸς γὰρ ὁ πῦρ φιλεῖ ὑμᾶς· ὅτι ὑμεῖς ἐ-
 μέπε φιλήκατε καὶ πέπισαίκατε· ὅτι ἐ-
 γὼ παρὰ τοῦ θύ ἐξῆλθον· ἐξῆλθον παρὰ
 τοῦ πρὸς καὶ ἐλήλυθα ὅς τὸν κόσμον· πα-
 λιν ἀφ' ἡμῖν τὸν κόσμον καὶ πορεύομαι πρὸς
 τὸν πρῶτον· λέγουσιν αὐτῶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ·
 ἰδοὺ μὴ παρρησίᾳ λαλεῖς; καὶ παροιμίαν
 οὐδεμίαν λέγεις· μὴ οὐκ ἴδμεν ὅτι οἶδας
 πάντα· καὶ οὐκ εἶπεν· ἐχθροὶ ἰνατίσσεσθε
 τὰ· ἐν τούτῳ πίστεύομεν ὅτι ἀπὸ θύ ἐξῆλ-
 θες· ἀπεκρίθη αὐτοῖς οἷος· ἀρτὶ πίστε-
 τε· ἰδοὺ ἐρχεται ὦρα καὶ μὴ ἐλήλυθεν ἵνα
 σκορπίσθῃτε ἐκαστος ὅς τὰ ἰδῇ· καὶ ἐμέ-
 μοι ἀφῆτε· καὶ οὐκ ἔστι μοι· ὅτι ὁ πῦρ
 μετὰ μένει· πάντα λελάληκα ὑμῖν ἵνα
 ἐν ἐμοὶ ὁρῶντες ἐχθρὸι· ὡς τὴν παρὰ τῆς θύ·
 ὡς καὶ ῥῶ ἐκῆμαι· ἐπαρὰ σὸ ἴσ'· καὶ τὸ ἀρῶν
 τοῦ ὀφθαλμοῦ αὐτοῦ ὅς τοῦ μαθητῆς αὐ-
 τοῦ ὅπερ· καθὼς σὺ πᾶν ἀπέστειλός με ὅς
 τὸν κόσμον· καὶ ἡ ἀπέστειλός με ὅς τὸν κόσ-
 μον· καὶ ὑπὲρ αὐτῶν ἡ ἀγάπη ἐμαυτοῦ·
 ἵνα καὶ αὐτοὶ ὡς ἡ γῆ ἀσμένιοι ἐν ἀληθείᾳ
 οὐ περὶ τούτων δὲ ἐρωτῶ μένον· ἀλλὰ καὶ
 περὶ τῶν πίστει δυνάμεων διὰ τοῦ λόγου αὐτῶν

ποταμοὶ ἐκ τῆς κοιλίας αὐτοῦ ῥαῖσιν· ὕ-
δατος ζῶντος· τοῦτο δὲ ἔειπε περὶ τοῦ πρὸς οὐ-
κὲν λαμβάνει οἱ πῖστα ὄντες ὅς αὐτόν·
οὐπω γὰρ ἰὼ πρὸς ἡἴον ὅτι ἰδὼν οὐδέπω ἐδόξα-
σθη· πολλοὶ οὖν ἐκ τοῦ ὄχλου ἀκούσαντες
τὸν λόγον ἐλέγον· οὗτος ἐστὶν ἀληθῶς ὁ προ-
φήτης· ἄλλοι ἐλέγον· οὗτος ἐστὶν ὁ χεῖρ· ἄ-
λλοι ἐλέγον· μή γάρ ἐκ τῆς γαλιλαίας ὅχι ἔρ-
χεται; οὐχὶ ἡ γραφή εἶπεν· ὅτι ἐκ τοῦ ἀσ-
ματος δαδ· καὶ ἀπὸ βηθλεὲμ τῆς κώμης.
ὅπου ἰὼ δαδ ὅχι ἔρχεται· σχίσμα οὖν ἐν
τῷ ὄχλῳ ἐγένετο δι' αὐτὸν· τινὲς δὲ ἠθε-
λοῦν ἐξ αὐτῶν ποιεῖσαι αὐτόν· ἄλλοι δὲ ἰσχυ-
ρὲς βάλον ἐπ' αὐτὸν τὰς χεῖρας· ἡλθοι οὖν
οἱ ὑπηρεταὶ πρὸς τὸν ἀρχιερεῶς καὶ φαρι-
σαίους, καὶ ἔειπον αὐτοῖς ἐκείνοι· διὰ τί
οὐκ ἡγάγετε αὐτόν· ἀπεκρίθησαν οἱ ὑπι-
ρέται· οὐδέποτε οὕτως ἐλάλησεν ἄνθρω-
ς ὡς οὗτος ὁ ἄνθρωπος· ἀπεκρίθησαν οὖν αὐτοῖς
οἱ φαρισαῖοι· μή καὶ ὑμεῖς πεπλανηθε-
σθε· μή τις ἐκ τῶν ἀρχόντων ἐπίσταται ὅς
αὐτόν· ἢ ἐκ τῶν φαρισαίων· ἄλλ' ὁ ὄχλος
οὗτος ὁ μὴ γινώσκων τὸν νόμον· ἐπικατά-
ρατοιγοῦσιν· λέγουσιν ὁ νόμος πρὸς αὐτοῖς ὅ-
τι ἐλθὼν ῥυκτὸς πρὸς αὐτόν· εἰς ὧν ἐξ αὐτῶν
μὴ ὁ νόμος ἡμῶν κρινεῖ τὸν ἄνθρωπον· εἰ μὴ
ἀκούσῃ παρ' αὐτοῦ πρότερον, καὶ γινώσκῃ τί ποι-
εῖ· ἀπεκρίθησαν καὶ εἶπον αὐτῷ· μή καὶ
οὐκ ἐκ τῆς γαλιλαίας εἶ· ἐράνησον καὶ ἰδε·

ὅτι προφήτευσεν τῷ βασιλεὺς αὐτοῦ ἐν γένει
παλιν οὖν αὐτοῖς οἱ ὅτι ἐλθόντες μὲν ἔχοντες
εἰς τὸ φῶς τοῦ κόσμου· ὁ ἀκολουθῶν ἐμοὶ
οὐ μὴ περιπατήσῃ ἐν τῇ σκοτίᾳ, ἀλλ' ἐξ τῆς
φῶς τῆς ζωῆς: ~

Ἀρχὴ γνώσεως ἡ ζωῆς

Εὐδοκίαν αὐτοῦ κατὰ τὴν ἐπαύριον τῆς
τῆς αὐτῆς αὐτοῦ πρὸς κατὰ ματ:

ἰπερὸς ὁρᾷτε μὴ καταφρονήσῃτε τὸν νοῦν
καὶ τῶν τούτων· ἔγωγε γὰρ ὑμῖν, ὅτι οἱ ἀφ' ἑ-
μοὶ αὐτῶν ἐν οὐνοῖς διὰ παντὸς βλέπωσιν τὸ
πρόσωπον τοῦ πατρὸς μου τοῦ ἐν οὐνοῖς· ἦλθεν
γὰρ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου σῶσαι τὸ ἀπολωλὸς· τίς
μὲν δοκεῖ· ἐὰν γένηται τίς ἄνθρωπος ἑκατὸν πρό-
βατα· καὶ πλανηθῇ ἐξ αὐτῶν· οὐχὶ ἀφρεί-
σται ἐν ἐνίκοντα ἐν μέσῳ ἐπὶ τὰ ὄρη πορεύσει
ζητῇ τὸ πλανημένον· καὶ ἐὰν γένηται ἀρρεῖν
αὐτό· ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅτι χαίρει ἐπ' αὐτό
μᾶλλον, ἢ ἐπὶ τοῖς ἐν ἐνίκοντα ἐν μέσῳ
καὶ πεπλανημένοις· οὕτως οὐκ ἐστὶν θέλημα
ἐμὸν προσθεῖναι τοῦ πατρὸς μου τοῦ ἐν οὐνοῖς· ἵνα
ἀποληται ἓξ τῶν μὲν καὶ τούτων· ἐὰν δὲ ἅ-
μαρτήσῃ ἓξ τῶν ἀδελφῶν σου, ὑπάγε καὶ ἔλε-
γξον αὐτόν, μετὰ τὸν σου καὶ αὐτοῦ νόμου· ἐ-
άν σου ἀκούσῃ ἐκέρδις αὐτὸν ἀδελφόν σου·

Εἰ μὴ ἀκούσῃ· παράλαβε μετὰ σοῦ ἐπὶ εἶνα
ἡ δὲ ἰμὰ ὅπῃ σόματος δόμαρ τυρῶν ἡ τρι
ῶν· σταθίσεται πὰρ ῥήμα· Εἰ μὴ ἀκούσῃ
αὐτῶν· εἰ πὲρ τῆς ἐκκλησίας· Εἰ μὴ ἀκούσῃ τῆς
ἐκκλησίας ἀπακούσῃ· ἐσωσοι ὡς ὁ ἐθνη κοσῆται
ὁ τῶν ἡρώδ· ἀμὲν λέγω ὑμῖν· ὅσα εἰρήνη
τε ἐπὶ τῆς γῆς εἴσται δεδεμένα ἐν τῷ οὐρανῷ·
καὶ ὅσα εἰρήνη τε ἐπὶ τῆς γῆς εἴσται λε
λύμενα ἐν τῷ οὐρανῷ· παλὶν ἀμὲν λέγω
ὑμῖν· ὅτι εἰ μὴ ὑμῶν συμφωνήσωσιν
ἐπὶ τῆς γῆς περὶ παντὸς πράγματος·
οὐ εἰρήνη αἰτήσονται γενήσεται αὐτοῖς παρὰ
τοῦ πρῶτου τοῦ ἐν οὐρανῷ· οὐ γὰρ εἰσὶν δύο
ἢ τρεῖς συνημένοι εἰς τὸ ἐμὸν ὄνομα· ἐκεῖ
εἰ μὴ ἐν μέσῳ αὐτῶν· - τῆς τῆς αἰωνίου

ὡς καὶ ἐν ὁμῶν· προσήνεμα // καταμαρ
τῶ ἰὺ πάντας τοὺς κακῶς ἐχόντας ποιη
ταις νόμοις καὶ βασάνοις (ὡς ἐχόμενοις·
καὶ δαιμονιζομένοις· καὶ σεληνιαζομένοις
καὶ παραλύτικοις καὶ ἐθελῶντες αὐ
τοῖς· καὶ ἐκκοινοῦντες αὐτῶν ὄχλοι πολλοί
ἀπο τῆς γαλιλαίας καὶ δεκαπόλεως· καὶ ἰε
ροσολύμων καὶ ἰουδαίας· καὶ πέραν τῆς
ἰορδάνου· ἰδὼν δὲ τοὺς ὄχλους· ἀνέβη εἰς
τὸ ὄρος· καὶ καθίσαντος αὐτοῦ προσήλ
θον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· καὶ ἀνοίξας
τὸ στόμα αὐτοῦ ἐδέξασκεν αὐτοὺς λέ
γων· μακάριοι οἱ πτωχοὶ τῷ πνεύματι· ὅτι αὐ
τῶν ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν· μακάριοι

οἱ περ θούουτες ὅτι αὐτοὶ παρακληθήσονται·
μακάριοι οἱ πραεῖς ὅτι αὐτοὶ κληρονομήσου
σιν τὴν γῆν· μακάριοι οἱ πεινῶντες καὶ δι-
ψῶντες τὴν διψήσων ὅτι αὐτοὶ χορτασθή-
σονται· μακάριοι οἱ ἐλεήμονες ὅτι αὐτοὶ ἐ-
λεηθήσονται· μακάριοι οἱ καθαροὶ τῇ καρδί-
ᾳ ὅτι αὐτοὶ τὸν θῆν' ὄψονται· μακάριοι οἱ ἡσ-
ποιοὶ ὅτι αὐτοὶ ὑψιθῆν κληθήσονται· μακάριοι
οἱ διωγμένοι ἐνεκ τῆς δικαιοσύνης ὅτι αὐ-
τῶν ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν· μακάριοι
ἐστὶ ὅταν ὀνειδίτωσιν ὑμᾶς καὶ διώξωσιν
καὶ ὅπως πάντοτε ὀνειδήμα κατ' ὑμῶν ψα-
λόμενοι ἐν σκενέμῳ· χαίρετε καὶ ἀγαλλιᾶ-
σθε· ὅτι ὁ μισθὸς ὑμῶν πολὺς ἐν τοῖς οὐρανοῖς·

Τῇ δ' τῆς α' εὐαγγελίου κατὰ ματθαίον
ἡ περ οὗτος· λέγω γάρ ὑμῖν ὅτι εἰς ἅν' περισ-
σὴν ὑμῶν ἡ δικαιοσύνη πλείον τῶν γραμματέ-
ων καὶ φαρισαίων· οὐ μὴ δέστε ἄνθρωπος τῆς βασι-
λείας τῶν οὐρανῶν· ἡκοῖσατε ὅτι ἡρρέθη τοῖς
ἐξ ἁγίων· οὐ φονέας· οὐδ' ἀνφονέας· ἐν ὅ-
τι ἐστὶ τῇ κρίσει· ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν ὅτι πᾶς
ὁ ὀργιζόμενος τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ εἰ κῆ, ἐμολ-
ῖται τῇ κρίσει· οὐδ' ἂν εἴπῃ τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ
ρακά· ἐν ὅχῳ ἐστὶ τῷ σκεδρίῳ· οὐδ' ἂν εἴπῃ
τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ μαρὲ, ἐν ὅχῳ ἐστὶ δὲ τὴν γ-
ενεάν του πρὸς· εἰ ἄνθρωπος πρὸς φέρεις τὸ δῶ-
ρο σου ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον καὶ ἐκ ἡμερηθίς
ὅτι ἔχει ὁ ἀδελφός σου τί κατὰ σου· ἀφες καὶ
τὸ δῶρο σου ἐμπροσθεν τοῦ θυσιαστηρίου·

καὶ ὑπᾶντε πρῶτον δι' ἀλλήλων τῷ ἀδελφώσῳ
καὶ τότε ἐλθὼν πρὸς φερὲ τὸ δῶρον σου· ἵνα
ἐροῶν τῷ ἀντίδικῷ σου ταχὺ· ἐὼς ὅτου
εἰς ἐν τῇ οἰκῇ αὐτοῦ· μή ποτε ἀεὶ παραδῷ
ἀντίδικός τῷ κριτῇ· καὶ ὁ κριτὴς ἀεὶ παραδῷ
τῷ ὑπέρβῃ· καὶ ἡ φυλακὴ βληθῇ σε· ἃ
μὴ λέγω σοι οὐ μὴ ἐξέλθῃς ἐκ ἐκεῖ ἐὼς
ἂν ἀποδῷς τὸν ἐσχατοὺν κοδράτην· ~

τῇ ε' τῆς α' κεφ. κατὰ ματθαῖον·
Εἰ πεν οὐκ ἤκούσατε ὅτι ἐρρέθη τοῖς ἀρχαίοις·
οὐ μοιχάσῃ· ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν· ὅτι πᾶς ὁ
βλέπων γυναῖκα πρὸς τὸ ἐπιθυμῆσαι αὐ-
τήν· ἡδὴ ἐμοὶ χάσεν αὐτήν ἐν τῇ καρδίᾳ
αὐτοῦ· ἡ δὲ ὁφθαλμοσκόπος ὁ δέξιός σου καρ-
δαλίζῃ· ἐξέλε αὐτὸν καὶ βάλε ἀπὸ σοῦ·
σύ μφ' εἰ γάρ σοι· ἵνα ἀπόληται ἐν τῶν με-
λών σου· καὶ μὴ ὅλον τὸ σῶμα σου βληθῇ εἰς γέ-
ενναν· καὶ εἰ ἡ δεξιὰ σου χεῖρ σαρδαλίζῃ·
ἐκκοψον αὐτήν καὶ βάλε ἀπὸ σοῦ· σύ μφ' εἰ
γάρ σοι ἵνα ἀπόληται ἐν τῶν μελών σου· καὶ
μὴ ὅλον τὸ σῶμα σου βληθῇ εἰς γέενναν· ἐρρέ-
θη δὲ ὅτι ὅς ἂν ἀπολίσῃ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ·
δότης αὐτῇ ἀποστάσιον· ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν·
ὅτι ὅς ἂν ἀπολίσῃ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ παρ-
εἰς τὸς λόγους πορνείας· ποιεῖ αὐτὴν μοιχεύει·
καὶ ὅς ἂν ἀπολελυμένῳ γαμήσῃ μοιχεύεται· ~

τῇ παρὰ τῆς α' κεφ. κατὰ ματ·
Εἰ πεν οὐκ ἤκούσατε ὅτι ἐρρέθη τοῖς ἀρχαίοις·
οὐ κε πύορκος· ἀποδώσῃ δὲ τῷ κῶ τοῦ οἴκου

αποσπασθε τοὺς φίλους ὑμῶν μόμον, τί περιεσθόν
ποιεῖτε; οὐχὶ καὶ οἱ τελῶμαι οὕτως ποιοῦσιν;
ἐσθασθε οὖν ὑμεῖς τέλειοι· ὡς περὶ ὁ πῆρ ὑμῶν
ὅς ἐν τοῖς οὐνοῖς τελῶσ' ἐστίν· ~

Καὶ ἡ ἀρχὴ πάντων· κατὰ ματθαῖον
ἐπερὶ οὗς τοῖς ἑαυτοῦ μαθηταῖς· πᾶσ' οἷς
ὁμολογήσει ἐν ἐμοὶ ἐμπροσθεν τῶν ἁγίων· ὁ
μολογήσῃ καὶ ὡς ἐν αὐτῷ, ἐμπροσθεν τοῦ πρὸς
μου τοῦ ἐνοῦντος· ὅς τις δὲ ἀρνήσεται με
ἐμπροσθεν τῶν ἁγίων· ἀρνήσομαι καὶ ὡς αὐ
τὸν ἐμπροσθεν τοῦ πρὸς μου τοῦ ἐνοῦντος· ὁ
φιλῶν πρῶτ' ἡμεῖς ὑπὲρ ἐμὲ, οὐκ ἐστὶ μου ἀξίος
καὶ ὁ φιλῶν ἡοὺ ἢ θυγατέρα ὑπὲρ ἐμὲ, οὐκ ἐ
στὶ μου ἀξίος· καὶ ὁ οὐ λαμβάνει τὸν σφόνδα
τοῦ καὶ ἀκολουθῇ ὀπίσω μου, οὐκ ἐστὶ μου ἀ
ξίος· ἀποκριθεὶς δὲ ὁ πέτρος εἶπερ αὐτῷ·
κὲ· ἰδοὺ ἡμεῖς ἀφήκαμεν πάντα καὶ ἡκολού
θησάμεν σοι· τί ἀρνήσεται ἡμῖν; ὁ δὲ ἰσ
εἶπερ αὐτοῖς· ἀμὲν λέγω ὑμῖν· ὅτι ὑ
μεῖς οἱ ἀκολουθήσατε μοι ἐν τῇ παλι
γγευσίᾳ· ὅταν καθίσῃ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου
ἐπὶ θρόνου δόξης αὐτοῦ; καθίσθετε καὶ ὑ
μεῖς ἐπὶ δώδεκα θρόνων· κρίνοντες τὰς
δώδεκα φυλὰς τοῦ Ἰσραὴλ· καὶ πᾶσ' οἱ ἀφ' ἡ
μερῶν κίνας· ἡ ἀδελφότης· ἡ ἀδελφότης· ἡ πρῶτ'
ἡμεῖς· ἡ γυναικαὶ ἡ τέκνα· ἡ ἀγροῖα, ἐ
με κερ τοῦ ὀνόματός μου; ἐκαθόνται
πλασιῶναι λήψαι, καὶ ζῶντες αἰῶνιον
κληρονομήσει· πολλοὶ δὲ ἐσονται πρῶ

τοί εἰχατοὶ καὶ οἱ τοχατοὶ πρῶτοι:~

τῆ β τῆς β ^{Δις} κατὰ ματθαίον.

Κὶ περ οὕς· αἰτεῖτε καὶ δοθήσεται ὑμῖν· ζη-
τεῖτε καὶ ἔρησιν τε· κρούεται καὶ ἀνοιγ-
σθαι ὑμῖν· πᾶς γὰρ ὁ αἰτῶν λαμβάνει·
καὶ ὁ ζητῶν ἔρῃσκει· καὶ τὸ κρούον τι ἀνοί-
γεται· ἢ τις ἐξ ὑμῶν ἀνὸς οὐρανὸν
αἰτεῖσει οὐρανὸν αὐτοῦ· ἀρτοὺς κηλίδον ἐπιδύ-
σει αὐτῷ· εἰσὶν ὑμεῖς πορνηροὶ οὐτε· οἱ
δατεδωμένα ἀγαθὰ δὲ δῶραι τοῖς τέκνοις
ὑμῶν· ποσὺ μᾶλλον ὁ πῆρ ὑμῶν ὅσον τοῖς
οὐνοῖς· δώσει ἀγαθὰ τοῖς αἰτοῦσιν αὐτόν·
πάντα οὖν ὅσα ἄν θέληται ἰνα ποιῶσιν
ὑμεῖς οἱ ἄνθρωποι· οὕτως καὶ ὑμεῖς ποιεῖτε αὐ-
τοῖς· οὕτως γὰρ ἐστὶν ὁ νόμος καὶ οἱ προ-
φῆται· εἰσελθετε διάπλοον γενῆς πύλης·
ὅτι πλατεία ἡ πύλη καὶ ἔριχος ὁ δόσος
ἡ ἀπαγορεύουσα τὴν ἀπόλειαν· καὶ πολλοὶ
ἔσιν οἱ εἰσερχόμενοι διά αὐτῆς· τίς γὰρ
ἡ πύλη καὶ τεθλιμένη ἡ ὁδὸς ἡ ἀπαγο-
ρεύουσα τὴν ζωὴν· καὶ ὀλίγοι ἔσιν οἱ ἀρῖσκο-
ντες αὐτήν:~ τῆ γ τῆς β ^{Δις} κατὰ ματ.

Κὶ περ οὕς· προσεχέτε ἀπὸ τῶν ψα-
λμῶν προφητῶν· οἱ τινες ἔρχονται πρὸς ὑ-
μᾶς ἐν ἐδύματι προβάτων· ἐσωθεσθε
ἐκ τῶν λύκων ἀρπαγῆς· ἀπὸ τῶν καρπῶν αὐ-
τῶν ἐπιγνώσεσθε αὐτοὺς· μή τι σὺ χε-
ροῖσιν ἀπὸ ἀκαρθῶν σαφύλλων· ἢ ἀπὸ
τῆ βολῶν σου καὶ οὕτως πάντες δένδρα

ἀγαθόν· καρποῖς καλοῖς ποιεῖ· τὸ δὲ σαπρὸν
δένδρον· καρποῖς πομηροῖς ποιεῖ· οὐδὲν αὐτῷ
δένδρον ἀγαθόν· καρποῖς πομηροῖς ποιεῖν·
οὐδὲ δένδρον σαπρὸν· καρποῖς καλοῖς ποιῆν·

Καὶ τῶν δὲ τῆς β. ^{Δευ.} καὶ ματθαῖ·
ἰεροῦς· οὐ πᾶς ὁ λέγων μοι κέ· κέ· εἰς
ἐλθεῖν εἰς τὴν βασιλείαν τῶν οὐρανῶν·
ἀλλ' ὁ ποιῶν τὸ θέλημα τοῦ πατρὸς μου τοῦ
ἐν οὐanoῖς· πολλοὶ ἐβροῦσίν μοι ἐν ἐκ
κλήτῃ τῇ ἡμέρᾳ· κέ· κέ· οὐ τῷ σῶ ὀνόματι
ἐ' προφητὰ σαμὼν· καὶ τῷ σῶ ὀνό
ματι δαιμόνια ἐ' ἐξεβάλωμεν· καὶ τῷ
σῶ ὀνόματι διωάμεισ πολλὰς ἐ' ποιήσ
μεν· καὶ τότε ὁμολογήσω αὐτοῖς· ὅτι οὐ
δέποτε ἐγνων ἡμᾶς· ἀνὰ χαρὴν τε αὐ
τῷ μου οἱ ἐβροῦμενοι τῷ ἀνομίᾳ·

Καὶ τῶν δὲ τῆς β. ^{Δευ.} καὶ ματ·
καὶ ῥῶ ἐ' κήν· ἐ' μβαρπὶ τῷ ἱούεις
πλοῖον· ἡ κολοῦσθ σαρκὶ αὐτῷ οἱ μαθηταί
αὐτοῦ· καὶ ἰδοὺ σεῖς μεσμέσας ἐ' γή' τοῦ
τῇ θαλάσῃ· ὥς τε τὸ πλοῖον καλύπτεσθαι
ἐ' πὸ τῶν κυμάτων αὐτοῦ· οὐδὲ ἐ' καὶ θεοὶ
καὶ πρόσ' ἐλθόντες οἱ μαθηταί ἡ γειρα
αὐτοῦ λέγοντες· κέ· σῶσον ἡμᾶς ἀπολυ
μεθα· καὶ λέγει αὐτοῖς· τί δεῖλοί ἐστε ὁ
λίγο πίστει· τότε ἐ' γερθεῖς ἐ' πετρίμας
τοῖς ἀνέμοις καὶ τῇ θαλάσῃ· καὶ ἐ' γέ
νητο γαλὶνῃ μεγάλῃ· οἱ δὲ ἄνθρωποι ἐ' θαύμα
σαρ λέγοντες· ποταπὸς ἐστὶν οὗτος· ὅτι

καὶ οἱ ἄρεμοι καὶ ἡ θάλασσα ὑπακούουσιν αὐτῷ·

τῇ παρὰ τῆς β' ἐκ' καὶ ματθαίμ.

Καὶ ὡς ἐκὼν προσήλθον τῷ Ἰησοῖ μαθη-
ταὶ τοῦ Ἰωάννου λέγοντες· διὰ τί ἡμεῖς καὶ
οἱ φαρισαῖοι μνηστῆρες πολλοὶ οἰμασθαι
σου οὐ μνηστῆροισιν· καὶ εἶπερ αὐτοῖς οἱ
μὴ δύνανται υἱοὶ τοῦ νυμφῶνος περθεῖν· ἐ-
φ' ὅσον χρόνον μετ' αὐτῶν ἐσὶν ὁ νυμφίος·
ἐλθόντων δὲ ἡμεῖς ὅταν ἀπαρθῇ αὐ-
τῶν ὁ νυμφίος· καὶ τότε μνηστῆροισιν·
οὐδεὶς δὲ ἐπιβάλλει ἐπὶ βλῆμα ῥάκοιο
ἀγνάφου· ἐπὶ ἱματίῳ παλαιῷ· αἶρει γὰρ
τὸ πλήρωμα αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ ἱματίου καὶ
χειροσχίσμα γίνεται· οὐδὲ γὰρ βάλλου-
σιν οἶνον νέον εἰς ἀσκοῖον παλαιόν· εἰδὲ
μή γέ ῥη ῥυτίται οἰσῶνται· καὶ ὁ οἶνος σπ-
χύται· καὶ οἱ ἄσκοι ἀπολοῦνται· ἀλλὰ
βάλλοισιν οἶνον νέον εἰς ἀσκοῖον καινόν·
καὶ ἄφ' ὅτεροι συντηροῦνται· ὡς παρὰ β'
ἰπερὸς μὴ κρίνετε ἡμᾶς ἢ κατὰ ματ-
θαίμ· μὴ κρίθητε· ἐγὼ γὰρ κρίματι κρίνετε·
καὶ κρίθησθε· καὶ ἐγὼ μετρώ μετρίετε· με-
τρηθῆσθαι ὑμῖν· τί δὲ βλέπετε τὸ κάρφ-
ον ἐν τῷ ὀφθαλμῷ τοῦ ἀδελφοῦ σου· τὴν
δοκίμην τῷ ὀφθαλμῷ δὲ δικοῦ κατὰ νο-
εῖς· ἢ πῶς εἶδες τὸν ἀδελφόν σου· ἀφ' ὅ-
θεν βάλε τὸ κάρφον ἀπὸ τοῦ ὀφθαλμοῦ
σου· καὶ ἰδοὺ ἡ δοκίμη ἐν τῷ ὀφθαλμῷ σου·
ὑποκρίται· σὺ βάλε πρῶτον τὸν δικόν σου

ἐκ τοῦ ὀφθαλμοῦ σου καὶ τὸ τε διαβλέψῃς
ἐμβαλεῖν τὸ κάρφος ἐκ τοῦ ὀφθαλμοῦ τοῦ
ἀδελφοῦ σου· μὴ δὲ τε τὸ ὄϊον τοῖς κισί· μὴ
δὲ βάλητε τοῖς μαργαρίτας ὑμῶν ἐμπροσ
θεν τῶν χοίρων· μὴ ποτε καταπατήσω
σὶν αὐτοῖς ἐν τοῖς ποσὶν αὐτῶν· καὶ γρα
φέντες ῥήψωσιν ὑμᾶς· αἰτεῖτε ἡμεῖς
θήσεται ὑμῖν· ζητεῖτε καὶ ἀρῆσθε· κρού
τε καὶ ἀνοιγῆσθαι ὑμῖν· πᾶς γὰρ αἰ
τῶν λαμβάνει· καὶ ὁ ζητῶν ἀρίσκει· καὶ
τῶ κρούοντι ἀνοιγῆσθαι· ~ ἐω^{9c} β̅

Καὶ ῥῶ ἐκείνῳ· περιπατῶν οἱ σπα
ρατὴν θάλασσαν τῆς γαλιλαίας· εἶδεν
δύο ἀδελφοὺς· σίμων αὐτὸν λεγόμενον
πέτρον καὶ ἀνδρέαν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ
βαλῶντας ἀμφίβλιτρον εἰς τὴν θάλασσαν·
ἦσαν γὰρ ἀλιεῖς· καὶ λέγει αὐτοῖς· δα
τέ ὀπίσω μου καὶ ποιήσω ὑμᾶς ἀλιεῖς
ἀνθρώπων· οἱ δὲ ἀθέως ἀφέντες τὰ δίκτυ
α· ἡκολούθησαν αὐτῷ· καὶ προβάς ἐ
κείθεν· εἶδεν ἄλλοις δύο ἀδελφοῖς· ἰα
κώβον τὸν τοῦ ζεβεδαίου καὶ ἰωάννην
τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ ἐν τῷ πλοίῳ, μετὰ ζε
βεδαίου τοῦ πρὸς αὐτῶν καταρτίζοντας
τὰ δίκτυα αὐτῶν· καὶ ἐκάλωσεν αὐ
τοὺς· οἱ δὲ ἀθέως ἀφέντες τὸ πλοῖον
καὶ τὸν πρῶτον αὐτῶν ἡκολούθησαν αὐ
τῷ· καὶ περὶ ἧς μόλις τὴν γαλιλαίαν

αυτοῖς διδάσκων ἐν ταῖς βωσῶταις αὐτῶν
καὶ κυρίως τὸ δ' αὖτε λίον τῆς βασιλείας
καὶ θεραπέων πᾶσαν νόσον καὶ μαλακίαν

μαλακίαν ἐν τῷ λαῷ· τῇ β' τοῦ γ' αὖτε

καὶ ῥ' ἐκείνῳ· ἰδὼν οὖν τοῖς ὄχλοις

σπλαγχνίᾳ περὶ αὐτῶν· ὅτι ἦσαν ἐς ἡμέ-

ροι καὶ ἐρριμένοι· ὥς εἰ πρόβατα μὴ ἔχον

τα ποιμένα· τότε λέγει τοῖς μαθηταῖς

αὐτοῦ· ὁ μὲν θέρϊσμός πολλὸς, οἱ δὲ ἐργα-

τοὶ ολίγοι· δέηθη τε οὖν τοῦ κυρίου τοῦ θέρϊσμου

ὅπως ἐμβαλέη ἐργάτας εἰς τὸν θέρϊσμόν αὐτόν·

καὶ προσκαλὼν μενοειδῶς τοὺς μαθητάς αὐ-

τοῦ ἐδωκεν αὐτοῖς ἐξοισίαν πῶν ἀκαθάρ-

των· ὥς τε ἐμβαλέη αὐτὰ καὶ θεραπεύειν

πᾶσαν νόσον καὶ πᾶσαν μαλακίαν· τῶν

δὲ δεκά ἀποστόλων τὰ ὀνόματα εἰσὶ ταῦ-

τα· πρῶτον σίμων ὁ λεγόμενος πέτρος,

καὶ ἀνδρέας ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ· ἰάκωβος

ὁ τοῦ ζεβεδαίου καὶ ἰωάννης ὁ ἀδελφὸς αὐ-

τοῦ· φίλιππος καὶ βαρθολομαῖος· θωμᾶς

καὶ ματθαῖος ὁ τελαῖτης· ἰάκωβος ὁ τοῦ

ἀλφαίου, καὶ λιββαῖος ὁ ἐπικληθεὶς θα-

δδαῖος· σίμων ὁ καναρίτης καὶ ἰούδας

ὁ ἰσκαριώτης, ὁ καὶ παραδίδω αὐτόν·

τούτοις δὲ τοῖς δώδεκα ἀπέστειλεν οἱς πα-

ραγγείλας αὐτοῖς· λέγων· εἰς ὁδὸν ἐθνῶν

μὴ ἀπελθεῖτε· καὶ εἰς πόλιν σαμαρείτῶν

μὴ εἰσελθεῖτε· πορεύεσθε δὲ μακρόν πρῶ-

τὰ πρόβατα τὰ ἀπολωλότα οἰκουμένης.

πορδόμενοι δὲ κηρύσσεται λέγοντες· ὅτι
ἡ γῆ κερή βασιλεία τῶν οὐρανῶν + ἀσθενοῦν
τας θρασυάτας· λεπτοὺς καθαρίζετε· δαιμό
νιαι σὺ βάλλετε δωρεὰν· ἐλάβετε δωρεὰν δώτε· ~

τῇ Γ τῆς Γ ^{αμ} κατὰ ματθαῖον.

Κι περὶ οὗς τοῖς ἐαυτοῦ μαθηταῖς· μὴ κτίσῃ
θεχριστὸν μὴ δὲ ἄρμρον μὴ δὲ χαλκὸν ἢ τὰς βώ
μας ὑμῶν + μὴ πεῖρα γῆς ὁδοῦ· μὴ δὲ δρόχισ
μας· μὴ δὲ ὑποδήματα μὴ δὲ ῥαῦδισ· ἀξίος
γάρ ὁ ἐργάτης τῆς τροφῆς αὐτοῦ ἐστίν +
εἰς τὴν δαΰν πόλιν ἢ κώμην ἢ σελῆθητε· ἐξετά
σθε τίς ἐν αὐτῇ ἀξίος ἐστίν + κακεὶ μέννατε
ὥς ἂν ἐξελεθῆτε + ἢ σερχόμενοι δὲ γῆς τῆς
οἰκίας ἀσπασσάμενοι αὐτῶν λέγοντες· ἄρη
μη τῷ οἴκῳ τούτῳ + καὶ ἐὰν μενῇ ἡ οἰκία
ἀξία ἐλθῆτω ἢ εἰρήνῃ ὑμῶν ἐπαύτην +
ἐὰν δὲ μὴ ἡ ἀξία· ἢ ἔρημῃ ὑμῶν πρὸς ὑ
μᾶς ἀπὸ γραφῆς + καὶ ὅς μὴ δέξηται ὑ
μᾶς μὴ δὲ ἀκοῖσιν τοῖς λόγοις ὑμῶν· ἐ
ξερχόμενοι σὺ τῆς οἰκίας ἢ τῆς πόλεως ἐ
κείνης· σὺ τεινὰ ἔξατε τὸν κοριὸν τὸν τῶν
ποδῶν ὑμῶν + ἀμὲν λέγω ὑμῖν· ἄρκα
τότερον ἐστί γῆς ὁδοῦ καὶ γομόρρων
σὺ ἡμέραν κρία εἰς ἡτὴ πόλει ἐκείνῃ· ~

τῇ Δ τῆς Γ ^{αμ} κατὰ ματθαῖον.

Κι περὶ οὗς τοῖς ἐαυτοῦ μαθηταῖς· ἰδοὺ ἐ
γὼ ἀποστέλλω ὑμᾶς ὡς πρόβατα ἐν μέ
σῳ λύκων + γίνεσθαι ὡς φρόνιμοι ὡς εἰ
δόφειο· καὶ ἀέροι οἱ ὡς ἡ περισεραὶ +

προσέχεται δὲ ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων· παραδώσου
 σιν γὰρ ὑμᾶς εἰς (ὡ)δρία· καὶ ἐν ταῖς (ὡ)αῖς
 ταῖς αὐτῶν μαστὶ γνώσοισιν ὑμᾶς· καὶ ἐπὶ
 ἡμεῶν καὶ βασιλεὺς ἀχθήσεσθε· ὡς κεν ἐ
 μούρῃ μαρτύριον αὐτοῖς καὶ τοῖς ἔθνεσιν·
 ὅταν δὲ παραδώσουσιν ὑμᾶς μὴ μετριμνήση
 τε πῶς· ἢ τί λαλήσητε· οὐ γὰρ ὑμεῖς ἐστε οἱ
 λοιοῦντες· ἀλλὰ τὸ πᾶν τοῦ πρὸς ὑμῶν τὸ λα
 λοῦν ἐν ἡμῖν· παραδώσει δὲ ἀδελφὸς ἀδελ
 φὸν ὅς θάνατον· καὶ πῆρ τέκνον· καὶ ἐπα
 ρατήσονται τέκνα ἐπὶ γονεῖς καὶ θανα
 τώσοισιν αὐτοὺς· καὶ ἔσεσθε μισοῦμενοι ὑ
 πὸ πάντων διὰ τὸ ὄνομα μου· ὁ δὲ ὑπομεί
 νας ὅς τέλος οὗτος σωθήσεται· ~ τῇ ἐ τῆς
 ἱερωσύνης τοῖς ἑαυτοῦ καὶ κατ
 ἡμαθι ταῖς· ὅταν δὲ ἰδοῦσιν ὑμᾶς ἐν τῇ πόλει
 ταύτῃ· φάξεσθε τῷ δήμῳ· αἰμὴν γὰρ λέγω
 ὑμῖν· οὐ μὴ τελέσητε τὰς πόλεις τοῦ ἱηλ· ἕ
 ως ἂν ἔλθῃ οἰκιστὴς τοῦ θῦ· οὐκ ἐστὶ μαθητὴς
 ὑπερτὸν διδάσκαλον· οὐδὲ δούλος ὑπὲρ τὸν
 κῆν αὐτοῦ· ἂν κέ τὸν τῷ μαθητῇ ἰσχυρὸν γένηται
 αἰς ὁ διδάσκαλος αὐτοῦ· καὶ ὁ δούλος αἰς ὁ κῆν
 αὐτοῦ· εἰ τὸν δασοτήν βεελζεβούλ ἐπε
 κάλεσαν· πόσω μάλλον τοῖς οἰκιστοῖς αὐτοῦ·
 μὴ οὖν φοβηθῇτε αὐτοὺς· οὐδὲ γὰρ ἐστὶν κτε
 ραλὺν κτενέρον· οὐκ ἀποκαλυφθήσεται· οὐ
 δὲ ἀπὸ κρυφού· οὐ γινώσκεται· ὁ λέγων ὑ
 μῖν ἐν τῇ σκοτίᾳ εἰπάτε ἐν τῷ φωτί· καὶ
 ὁ εἰς τὸ οἶον ἀκούσατε· κηρύξατε ἐπὶ τῶν

The
 ou
 m
 e
 fi

γου
 πω
 υ
 η

Δημόσια Κεντρική Βιβλιοθήκη Βέροιας

καὶ πᾶς ὁ ἀκούων μου τοῖς λόγοις καὶ μὴ ποι
 ῶν αὐτοῖς + ὅμοι ωθήσεται ἀπὸ ἐμοῦ. ὅς
 τις ὠκοδόμησεν τὴν οἰκίαν ἐπὶ τῇ ἀμ
 μων· καὶ κατέβη ἡ βροχὴ· καὶ ἦλθον οἱ ποτα
 μοὶ καὶ ἐπῆλσαν οἱ ἄνεμοι καὶ πρὸς ἐκ
 φαρτὴν οἰκίαν ἐκρήνη καὶ ἐπέπεσε· καὶ ἡ
 πτώσις αὐτῆς μετὰ γαίην· καὶ ἐγένετο ὅτε
 βυετέλῃσιν οἱ σὺ τοῖς λόγοις τούτοις. ἔξε
 πλῆστον τοὶ ὄχλοι ἐπὶ τῇ διδασκίᾳ αὐτοῦ·
 ἡ γὰρ διδασκαλία αὐτοῦ ὡς ἐξοισίαν ἔχων
 καὶ οὐχ ὡς οἱ γραμματεῖς + κατὰ βιβλίον
 δὲ αὐτῷ ἀπὸ τοῦ ὅρου· ἡ κολούθησαν αὐτῷ
 ὄχλοι πολλοὶ + καὶ ἰδοὺλε πρὸς πρὸς ἐλθῶν
 προσεκύνη αὐτῷ + λέγων· κὲ ἐάν θέλῃς
 δυνάσασθαι με καθαρίσαι + καὶ σὺ τῆρας τῶν
 χήραν ἢ ἴατο αὐτοῦ οἱ σὺ λέγων· θέλω καθα
 ρίσθαι τί + καὶ ἀθέωσεν καθαρίσθαι αὐτοῦ ἡ
 λέπρα + καὶ λέγει αὐτῷ οἱ σὺ· ὅρα μηδεμί
 νη δεῦρ εἰπὺς + ἀλλ' ὕπαγε σὺ αὐτὸν δείξοντες
 ἰερεῖ + καὶ πρὸς ἐνέγκε τὸ δῶρον σου ὅ πρὸ
 σέτα ξερμωσῇς ἡ μαρτύριον αὐτῆς· ~

τούτοις

34

καὶ πᾶς ὁ ἀκούων μου τοῖς λόγοις καὶ μὴ ποι
 ῶν αὐτοῖς + ὅμοι ωθήσεται ἀπὸ ἐμοῦ. ὅς
 τις ὠκοδόμησεν τὴν οἰκίαν ἐπὶ τῇ ἀμ
 μων· καὶ κατέβη ἡ βροχὴ· καὶ ἦλθον οἱ ποτα
 μοὶ καὶ ἐπῆλσαν οἱ ἄνεμοι καὶ πρὸς ἐκ
 φαρτὴν οἰκίαν ἐκρήνη καὶ ἐπέπεσε· καὶ ἡ
 πτώσις αὐτῆς μετὰ γαίην· καὶ ἐγένετο ὅτε
 βυετέλῃσιν οἱ σὺ τοῖς λόγοις τούτοις. ἔξε
 πλῆστον τοὶ ὄχλοι ἐπὶ τῇ διδασκίᾳ αὐτοῦ·
 ἡ γὰρ διδασκαλία αὐτοῦ ὡς ἐξοισίαν ἔχων
 καὶ οὐχ ὡς οἱ γραμματεῖς + κατὰ βιβλίον
 δὲ αὐτῷ ἀπὸ τοῦ ὅρου· ἡ κολούθησαν αὐτῷ
 ὄχλοι πολλοὶ + καὶ ἰδοὺλε πρὸς πρὸς ἐλθῶν
 προσεκύνη αὐτῷ + λέγων· κὲ ἐάν θέλῃς
 δυνάσασθαι με καθαρίσαι + καὶ σὺ τῆρας τῶν
 χήραν ἢ ἴατο αὐτοῦ οἱ σὺ λέγων· θέλω καθα
 ρίσθαι τί + καὶ ἀθέωσεν καθαρίσθαι αὐτοῦ ἡ
 λέπρα + καὶ λέγει αὐτῷ οἱ σὺ· ὅρα μηδεμί
 νη δεῦρ εἰπὺς + ἀλλ' ὕπαγε σὺ αὐτὸν δείξοντες
 ἰερεῖ + καὶ πρὸς ἐνέγκε τὸ δῶρον σου ὅ πρὸ
 σέτα ξερμωσῇς ἡ μαρτύριον αὐτῆς· ~

καὶ πᾶς ὁ ἀκούων μου τοῖς λόγοις καὶ μὴ ποι
 ῶν αὐτοῖς + ὅμοι ωθήσεται ἀπὸ ἐμοῦ. ὅς
 τις ὠκοδόμησεν τὴν οἰκίαν ἐπὶ τῇ ἀμ
 μων· καὶ κατέβη ἡ βροχὴ· καὶ ἦλθον οἱ ποτα
 μοὶ καὶ ἐπῆλσαν οἱ ἄνεμοι καὶ πρὸς ἐκ
 φαρτὴν οἰκίαν ἐκρήνη καὶ ἐπέπεσε· καὶ ἡ
 πτώσις αὐτῆς μετὰ γαίην· καὶ ἐγένετο ὅτε
 βυετέλῃσιν οἱ σὺ τοῖς λόγοις τούτοις. ἔξε
 πλῆστον τοὶ ὄχλοι ἐπὶ τῇ διδασκίᾳ αὐτοῦ·
 ἡ γὰρ διδασκαλία αὐτοῦ ὡς ἐξοισίαν ἔχων
 καὶ οὐχ ὡς οἱ γραμματεῖς + κατὰ βιβλίον
 δὲ αὐτῷ ἀπὸ τοῦ ὅρου· ἡ κολούθησαν αὐτῷ
 ὄχλοι πολλοὶ + καὶ ἰδοὺλε πρὸς πρὸς ἐλθῶν
 προσεκύνη αὐτῷ + λέγων· κὲ ἐάν θέλῃς
 δυνάσασθαι με καθαρίσαι + καὶ σὺ τῆρας τῶν
 χήραν ἢ ἴατο αὐτοῦ οἱ σὺ λέγων· θέλω καθα
 ρίσθαι τί + καὶ ἀθέωσεν καθαρίσθαι αὐτοῦ ἡ
 λέπρα + καὶ λέγει αὐτῷ οἱ σὺ· ὅρα μηδεμί
 νη δεῦρ εἰπὺς + ἀλλ' ὕπαγε σὺ αὐτὸν δείξοντες
 ἰερεῖ + καὶ πρὸς ἐνέγκε τὸ δῶρον σου ὅ πρὸ
 σέτα ξερμωσῇς ἡ μαρτύριον αὐτῆς· ~

ἡ Χ β ε ω ρ

μισήσει καὶ τὸν ἐπερὸν ἀπαήσῃ· ἡ εὐδοκία
θέξεται· καὶ τοῦ ἐτέρου κατὰ φρονήσιν
οὐδεὶς δυνάσθε θῶ δουλοῖ κιν καὶ μακρῶν
διὰ τοῦτο λέγω ὑμῖν· μὴ μεριμνᾶτε τῇ
ψυχῇ ὑμῶν τί φάσῃτε· καὶ τί πῆήτε· μὴ δὲ
τῷ σώματι ὑμῶν τί ἐνδύσασθε· οὐχὶ ἡ ψυ-
χὴ πλῆθον ἐστὶ τῆς τροφῆς· καὶ τὸ σῶμα τοῦ
ἐνδύματος· ἐμφλέψατε ἡσυχά περὶ
ματοῦ οὐνοῦ· ὅτι οὐ σπεύρουσιν οὐδὲ θείρου-
σιν· οὐδὲ (σωάζουσιν εἰς ἀποθνήσκουσιν· καὶ ὁ
πῆρ ὑμῶν οὐ οὐρανὸς τρέφει αὐτὰ· οὐχὶ ὑμεῖς
μᾶλλον διαφέρετε αὐτῶν· τίς δὲ ἐξ ὑμῶν
μεριμνῶν δυνάσκει πρὸς θῶναι ἐπὶ τῷ ἐ-
λπίαν αὐτοῦ πῆχυν εἶναι· καὶ περὶ ἐνδύ-
ματος τί μεριμνᾶτε· καταμάθετε τὰ κρι-
ματοῦ ἡρώου πῶς αὐξάνῃ· οὐ κοπιᾷ οὐδὲ κη-
θῇ· λέγω δὲ ὑμῖν ὅτι οὐδεὶς σολομῶν ἐν-
πάσῃ τῇ δόξῃ αὐτοῦ περὶ ἐβάρυνται ὡς ἐν-
τούτων· ἡ δὲ τὸν χορτὸν τοῦ ἡρώου· σήμερον
ὀρτα καὶ αὐριον ἡσυχίαν βαρὺν βαλλόμενον·
ὁ θεὸς οὕτως ἀφίενται· οὐ πολλῶν μᾶλλον·
ὑμεῖς ὀλίγο πίστει μὴ οὐκ μεριμνήσετε
λέγοντες· τί φάσμεν ἢ τί πῶμεν ἢ τί πε-
ριβαλλόμεθα· πάντα γὰρ ταῦτα τὰ ἔθνη
ἐπιζητεῖ· οἱ δὲ γὰρ ὁ πῆρ ὑμῶν οὐ οὐρανὸς·
ὅτι χρῆσθε τούτων ἀπάντων· ζητεῖτε δὲ
πρῶτον τὴν βασιλείαν τοῦ θεοῦ καὶ τὴν δόξαν
οὐκ ἐν τῷ αὐτοῦ· καὶ ταῦτα πάντα πρὸς τε-
θήσεται ὑμῖν· ~

τῇ β τῆς θ εὐ ματ

ῥῶ καιρῶ ἐκέρω· αἰκοῖσας ὁ ἰωάννης ἐν τῷ δέσμῳ
 τῆς τριῶ τὰ ἐργατοῦ χυ· πύμψας δὲ τῶν μαθητῶν
 αὐτοῦ ὅτι πεν αὐτῷ· σὺ δ' ὁ ἐρχόμενος, ἢ ἑτέρον
 προσδοκῶμεν· καὶ ἀποκριθεὶς ὁ ἰσ' εἰ περ αὐ
 τοῖς· πορὰ θέντες ἀπαγγέλατε ἰωάννῃ· αἱ αἰ
 κούται ὑμεῖς βλέπετε· τῷ φλοῖ ἀναβλέποισι· ὑμε
 χοῖ περὶ πατοῖσι· λεπτοὶ καθαρίζονται· καὶ κω
 φοὶ αἰκούοισι· μεκροὶ ἐγγύρονται· καὶ πτωχοὶ δαψέ
 λίζονται· καὶ μακάριοι οἱ ἐστίν· ὅς ἐσθ' ἡμῶν σκαρ
 δαχιστὶς ἐν ἐμοῖ· τοῦτων δὲ πορὰ μεσύνων· ἤρξα
 τοῖς ἰσ' λέγει τοῖς ὅλοις περὶ ἰωάννου· τί ἐξήλ
 θετε δὲ τὴν ἐρημον θεασάσθαι· καὶ λαμνοῦντο
 ἀνέμου σαλαόμενον· ἀλλὰ τί ἐξήλθετε ἰδεῖν·
 ἄνθρωπον ἐν μαλακοῖς ἱματίοις ἡμῶν ἰσμενόν· ἰ
 δοὺ οἱ τὰ μαλακὰ φοροῦντες ἐν τοῖς οἴκοις τῶν βασι
 λῶν ὅτι· ἀλλὰ τί ἐξήλθετε ἰδεῖν· προφή
 ταν· καὶ λέγω ὑμῖν· καὶ περισθότερον προφή
 του· οὗτος γάρ ἐστι περὶ οὗ γέγραπται· ἰδοὺ ἐ
 γὼ ἀποστέλλω τὸν ἀγγέλου μου πρό προσώποιά·
 ὅς κατασκευάσει τὴν ὁδὸν σου ἐμὴν προαθύναν·
 ἀμὲν λέγω ὑμῖν· οὐκ ἐξήλθαι ἐν γέννη τοῖς
 γυναικῶν μέζων ἰωάννου τοῦ βαπτιστοῦ· ὁ δὲ
 μικρότερος ἐν τῇ βασιλείᾳ τῶν οὐρανῶν· μέζων
 αὐτοῦ ἐστίν· ἀπὸ δὲ τῶν ἡμερῶν ἰωάννου
 τοῦ βαπτιστοῦ ἕως ἄρτι· ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν
 βιάζεται· καὶ βιάσθαι ἀρπάξουσιν αὐτὴν·
 πάντες γὰρ οἱ προφῆται καὶ ὁ νόμος ἕως ἰω
 ἀννου προεφήτευσαν· καὶ ὁ θέλετε δεξασθε·

ε

αὐτὸς ἐπὶ τὴν ἡλίαν ὁ μέλλων ἔρχεσθαι· ὁ ἔχων ὡ-
πακούειν αἰμου ἔγω· ~ τῇ γ' τῆς δ' εἰ' ἡ' ματ'

Κὶ πενὸς· τὴν ὁμοίωσιν τὴν γεμεῖν ταύτην·
ὁμοία ἐστὶν παιδίοις ἐναγοραῖς καθημένοις·
καὶ προσφωμοῖσι τοῖς ἐτέροις αὐτῶν καὶ λέγου-
σιν· ἡυλίσσαμεν ἡμῖν καὶ οὐκ ἐκράχατε· ἐ-
ξθρημήσατε ἐν ἡμῖν καὶ οὐκ ἐκόψατε· ἦλθεν
γὰρ ἰωάννης· μήτε ἐσθίων μήτε πίνων· καὶ
λέγουσι· δαιμόνιον ἔχει· ἦλθεν οὖν ὁ τοῦ ἀπὸ
ἐσθίων καὶ πίνων· καὶ λέγουσιν· ἰδοὺ ἄνθρω-
πος φάτος καὶ οἶμο πάσης· τελωνῶν φίλος καὶ ἀ-
μαρτωλῶν· καὶ ἐδίδκατο ὡς ἡ σοφία ἀπὸ τῶν
τέκνων αὐτοῦ· ~ τῇ δ' τῆς δ' εἰ' ἡ' ματ'

Καὶ ῥῶ ἐκέρω· ἤρξατο οὖν ὁ ἄρχιεπίσκοπος
πολλὰς ἐνάεις ἐλθόντες πλῆσαι διωάμους αὐτοῦ·
ὅτι οὐκ ἐτενόησαν· οὐαὶ σοὶ χώρα θν· οὐαὶ
σοὶ βῆθσαι ἰδὰ· ὅτι οἱ ἐν τύρῳ καὶ σιδῶνι ἐγέ-
νοντο αἰδιωάμους αἰτενομέναι ἐν ἡμῖν· πα-
λαιὰν ἐνθάδε καὶ ἀποδῶμετε νόησαν· πλήν
λέγω ὑμῖν· τύρῳ καὶ σιδῶνι· ἀρεκτότερον
ἔσται ἐν ἡμῖν ἀκρία ζωσ, ἡ ὑμῖν· καὶ σὺ καὶ
περμασμε· ἡ ἐὼς οὐωδου ὑψώθησας· ἐὼς
ἀδου κατὰ βιβλαθήσῃ· ὅτι οἱ ἐν σοδόμοις
ἐλθόντες αἰδιωάμους αἰτενομέναι ἐν σοὶ·
ἐμεγαλυνέμεν τὴν σήμερον· πλήν λέγω ὑ-
μῖν· ὅτι ἡ σοδόμων· ἀρεκτότερον ἔσται ἐν
ἡμῖν ἀκρία ζωσ, ἡ σοὶ· ἐν ἐκέρω τῷ καίρῳ·
ἀποκριθὲς οὖν ὁ ἄρχιεπίσκοπος· ἐξομολογούμενος
πὲρ ἐκ τοῦ οὐωδου καὶ τῆς γῆς· ὅτι ἀπέκρυσας

πάντα ἀπὸ σοφῶν καὶ ἁγίων· καὶ ἀπέκαλψας
αὐτὰ καὶ πῶς ἐποίησεν· ὅτι οὕτως εἶχεν τοὺς δούλους
ἐμπροσθεν σου· τῇ ἐπιστολῇ αὐτῇ κατὰ

Εν τῇ πενθέκῃ· πάντας παρεδόθη ὑπὸ τοῦ πρῶτου μου
καὶ οὐδεὶς γινώσκει τὸν ἵκον· ἡμεῖς οὐκ οἶμεν· οὐδὲ τὸν πρῶτον
ἐπί τῇ γινώσκει· ἡμεῖς οὐκ οἶμεν· καὶ ὡς ἐξήνθουλη
ταὶ οὐκ ἀποκαλψαί· δατέ προσμεπάντες, ὅ
καὶ πῶντες καὶ πεφορτισμένοι· καὶ ζωάρα παῖσω
ἡμῶν· ἀράτε τὸν ζῆλον μου ἐφ' ἡμῶν καὶ μάθετε
πρὸς τὸν ὅτι πράσσει καὶ ταπείνωσεν τὴν καρδίαν·
καὶ ἀρήσετε ἀνά πασῶν ταῖς ψυχαῖς ἡμῶν· ὁ γὰρ
ζῆλος μου ἡγήσεται· καὶ τὸ φορτίον μου ἐλαφρὸν ἔσται·
τῇ παραστάσει αὐτῇ κατὰ ἡμῶν ἡ γὰρ οὐσία

Τὸ καὶ ῥῶν ἐκείνων· ἐπορεύθη οἱ τοῖς βασιλεῦσι
αὐτῶν ἀπορίμων· οἱ δὲ μαθηταὶ αὐτοῦ ἐπείνευ
σαν· καὶ ἤρξαντο πλῆθος αὐτῶν καὶ ἐθίγη· οἱ δὲ
φαισάμοι οἱ δούλοι· ἡ ποικιλία· ἰδοὺ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ
ποιοῦσιν· οὐκ ἐξέστην ποιῶν ἐν σαββάτῳ· ὁ δὲ ἡ
πεν αὐτοῖς· οὐκ ἀνέγνωτε τί ἐποίησεν δαδὸς τε
πρῶτος καὶ οἱ μετὰ τὸν· πᾶς ὁ σὺλθευς τοῦ οἴκου
τοῦ θύ· καὶ τοῖς ἄρτοις πλείους προσέλαβεν· οἱ
οὐκ ἐξομῶ αὐτῷ φαίην· οὐδὲ τοῖς μετὰ τὸν· ἡμεῖς
τοῖς ἱερὰς μόνοις· οὐκ ἀνέγνωτε ἐν τῷ νόμῳ·
ὅτι τοῖς βασιλεῦσι οἱ ἱερὰς ἐν τῷ ἱερῷ· τὸ σάββατον
τοῦ βεβηλόισιν καὶ ἀνάντιοις· ἡ γὰρ οὐσία·
ὅτι τοῦ ἱεροῦ μὲν ἔστιν ὡς· εἰδὲ ἐγνώκατε·
τί ἐστιν ἐλεονθελῶ καὶ οὐθισίαν· οὐκ ἀνέγνωτε
κάσατε τοῖς ἀντιπίοις· καὶ γὰρ ἐστὶ τοῦ βασιλέως
οὐκ οὐσία τοῦ ἀντιπίου·

σαμβατον δ. κατὰ ματθαῖον.
Τῷ καιρῷ ἐκείνῳ· ἔλθων οἷός τις τῶν οἰκίαν πέτρου·
 ἔδερ τὴν περδεράν αὐτοῦ βεβλημένην καὶ πύ-
 ρετοιῶσαν· καὶ ἠΐτα τοῖς χερσὶ αὐτῆς, καὶ ἀφ᾽ ἡ-
 νερ αὐτῶν ὁ πῦρ ἐτὸς· καὶ ἠγέρθη καὶ δι᾽ ἡ κόρυφάν
 αὐτοῦ· ὁ φίας δὲ ἤρνομενός τις προσήνευξεν αὐτῷ
 δαιμονιζομένοις πολλοῖς καὶ ἐξεβαλὼν τὰ πρῶ-
 ματα λόγῳ· καὶ πάντα τοῖς κακῶς ἐχόντας ἐ-
 θεράπευσεν· ὅπως πληρωθῇ πόριθ ἐν δόξῃ τοῦ
 τοῦ προφήτου λέγοντος· αὐτὸς τὰς ἀσθενείας
 ὑμῶν ἐλάβεν, καὶ τὰς νόσους ἐβάστασεν· ἰδὼν
 δὲ οἱ πολλοὶ ὄχλοι περὶ αὐτὸν, ἐκέλευσεν
 ἀπελθεῖν εἰς τὸ πέραν· καὶ προσέλθων γόγρα-
 ματὰς, εἶπεν αὐτῷ· δίδας καλεῖ· ἀκολου-
 θήσω σοι, ὅπου ἐθὺν ἀπέρχῃ· καὶ λέγει αὐτῷ οἷός
 τις· αἰ ἀλώ περὶ φωλιῶν ἐχούσι καὶ τὰ πετῆρά τοῦ
 οὐνοῦ κατὰ σκεπῶσι· ὁ δὲ ἄρτος τοῦ ἀνθρώπου οὐκ ἔ-
 χει πού τινος φαλῶν κλίνῃ· ἐπεροσὲν δὲ τῶν μα-
 θητῶν αὐτοῦ εἶπεν αὐτῷ· καὶ ἐπὶ τρεῖς ἡμέρας
 πρῶτον ἀπελθεῖν καὶ θάψαι τὸν πρῶτον μου· ὁ δὲ
 οἷός τις εἶπεν αὐτῷ· ἀκολουθήσω· καὶ ἀφ᾽ ὧν τοῖς νε-
 κροῖς θάψαι τοῖς ἐκείνων νεκροῖς· καὶ ἐμφαν-
 τί αὐτῷ γότο πλοῖον· ἡκολούθησαν αὐτῷ οἱ μαθη-
 τὰι αὐτοῦ·

ἡ γὰρ ἀρετὴ τοῦ
 ἡ γὰρ ἀρετὴ τοῦ

κριανή δ. κατὰ ματθαῖον.
Τῷ καιρῷ ἐκείνῳ· ὅτε ἐλθόντι τῷ ἰησοῦ εἰς καπερνά-
 ουν· προσήλθεν αὐτῷ ἑκατὸν ταρχος παρακαλῶν
 αὐτὸν καὶ λέγων· καὶ ὁ παῖς μου βέβληται ἐν
 τῇ οἰκίᾳ παραλυτικὸς, δυνῶς βασανιζόμενος·

καὶ λέγει αὐτῷ οἷο· ἤνελθὼν θεραπεύσω αὐτόν·
καὶ ἀποκριθεὶς ὁ εὐατορταρχὸς ἔφη· κέ· οὐκ ἔμ
ἰκανὸς ἱνα μου ὑπὸ τῶν σέμνῳ δόσεις· ἀλλὰ μο
νοῦ ἡπὲρ λόγῳ, καὶ ἰάθῃς τὸ παιδί μου· καὶ ἔ
ἤνελθὼν ἀπόσῃς ὑπὸ ὄξοισίαν ἔχων ὑπὲρ αὐτὸν στρα
τῶτας· καὶ λέγω τοῦτω πορὰ θητῆ, καὶ πορὰ εἶται·
καὶ ἄλλω ἔρχου, καὶ ἔρχεται· καὶ τῷ δούλῳ μου·
ποίησον τοῦτο, καὶ ποιεῖ· αὐτοῖσας δ' οἷο ἔθαυ
μασε· καὶ εἶπεν τοῖς ἀκολουθοῦσιν· ἀμὲν λέγω ὑ
μῖν· οὐδ' ἔν τῷ ἡλτο (ἡμῖν) πίστις ἔσται· λέγω
δὲ ὑμῖν· ὅτι πολλοὶ ἀπὸ ἀνατολῶν καὶ δυσμῶν ἰ
ξοῖσι· καὶ ἀνακληθήσονται μετὰ ἀβᾶα, καὶ ἰ
σαᾶα, καὶ ἰακώβ, ἐν τῇ βασιλείᾳ τῶν οὐρανῶν·
οἱ δὲ αἰοί τῆς βασιλείας ἐβληθήσονται εἰς τὸ
σκοτὸς τὸ ὀξύτερον· ἐν δ' ἔσται ὁ κλαυθμὸς καὶ ὁ
βῆρυξ τῶν ὁδόντων· καὶ ἡπὲρ οἷο τῷ εὐατορ
ταρχῇ· ὑπάγε, καὶ ὡς ἐπίστασας γνηθῇ τῷ σω
καὶ ἰάθῃ ὁ παῖς ἀπὸ τῆς ὥρας ἐκ ἡμέρας·

τῇ β τῆς Ε Δμ' κατὰ ματθαῖον
Καὶ ἡνελθὼν ἐκ φηρῶ· ἡλθεν οἷο δὲ τῶν (ἡνελθὼν) ἡνελθὼν
ἰουδαίων· καὶ ἰδοὺ ἄρῳς ἐν τῷ χόρῳ ἔχων
ξίφην· καὶ ἐπληρώτηθεν αὐτὸν λῆγοντες· ἡ
δ' ἔσται τοῖς (ἡνελθὼν) θεραπεύειν· ἰνα κατηγορι
σωσιν αὐτοῦ· ὁ δὲ ἡπὲρ αὐτοῖς· τίς ἔσται ἐ
ξ ὑμῶν ἄρῳς· ὁ δὲ ἔξ' προβάτου ἐν· καὶ ἔσται ἐ
μὲν τῷ τούτῳ τοῖς σαύβασιν εἰς τὸ βόθρυον, οὐκ
κρατήσῃ αὐτὸ καὶ ἐμὲν· πόσα μαχόμεθα φέρει
ἄρῳς προβάτου· ὡς τε ἐξ ἡμῶν τοῖς (ἡνελθὼν) ἡ
λῶς ποιεῖν· τὸ τελέει τῷ ἄρῳ· ἐν τῇ πόρῳ σου τῷ

χῆραι· καὶ ἐξήκοντε· καὶ ἀπεκαταθήνημι
ὡς ἡ ἄχλι· ~ τῇ τ' τῆς ἐκείνης· καὶ ματθαί·

ὦ καιρῷ ἐκείνῳ· σὺμβούλιον ἐποίησαν οἱ
φαρισαιοὶ κατὰ τοῦ ἰησοῦ· ὅπως αὐτὸν ἀπολέσω
σιν· ὁ δὲ ἰησοῦς ἀνέχρησεν ἐκείνους· καὶ
ἐκολούθησαν αὐτῷ ὄχλοι πολλοί· καὶ ἐθερά-
πευεν αὐτοὺς πάντας· καὶ ἐπετήλειεν αὐτοῖς
ἵνα μὴ φαρμακὸν ποιήσωσιν αὐτὸν· τότε προ-
σηρέχθη αὐτῷ· δαιμονιζόμενος τυφλὸς καὶ κω-
φός· καὶ ἐθεράπευσεν αὐτόν· ὡς τε τὸν κωφόν
καὶ τυφλὸν λαλήσιν καὶ βλέψιν· ἐξίσαντο πάν-
τες οἱ ὄχλοι καὶ ἔλεγον· μὴ τοιοῦτος ἐστὶν ὁ χῆρς ὁ
ἰησοῦς δαῖς· οἱ δὲ φαρισαῖοι ἀκούσαντες ἔειπον· οὗ-
τος οὐκ ἐκβάλλει τὰ δαιμόνια· ἀλλ' ἐν βεελζε-
βούλ ἀρχόντι τῶν δαιμονίων· καὶ ἔδωκε δὲ ὁ ἰη-
σοῦς ἐν θυμῷ αὐτῶν ἔπεμψε αὐτοὺς· πᾶσα βα-
σιλεύα μεριαθεῖσα καθ' αὐτήν· ἐρημόνται· καὶ
πᾶσα πόλις· ἢ οἰκία· μεριαθεῖσα καθ' αὐτήν·
οὐκ ἐσθθήσεται· καὶ εἰς ὅσα μαρτυροῦντες τὸν Ἰησοῦν
ἐβάντες ἐφ' αὐτὸν ἐκείνη· πῶς οὐκ ἐσθθή-
σεται ἡ βασιλεύα αὐτοῦ· καὶ ἔδωκε ἐν βεελζε-
βούλ ἐβάντες τὰ δαιμόνια· οἱ υἱοὶ ἱμῶν ἐν π-
νὶ ἐκβάλλουσιν· ἀλλ' αὐτοῦ· αὐτοὶ κριταί εἰσιν
ταῖς ἱμῶν· καὶ ἔδωκε ἐν πνὶ θῦ ἐβάντες τὰ δαι-
μόνια· ἀλλ' ἐφθασεν ἐφ' ἡμᾶς ἡ βασιλεύα τοῦ
θῦ· καὶ πῶς δύναται τις εἰσελθεῖν εἰς τὴν οἰκίαν
τοῦ ἰσχυροῦ· καὶ παρῆλθεν αὐτοῦ ἀρπάσαι· ἐ-
ὰν μὴ πρῶτον δῇσιν τὸν ἰσχυρόν· καὶ τότε τῶν οἰ-
κίαν αὐτοῦ ἀρπάσῃ· ὁ μὲν ὡς μετέμωυ κατέμωυ

ἔτι· καὶ οὐκ ἔγνω μετὰ μου σκοπίσαι· τὴ δὲ τὴν ἐ
ὡ καὶ ῥῶ ἐκ ῥῶ· προσήλθον τῷ αὐτῷ γραμμῇ || καὶ
τοῖς καὶ φαρίσαιοι λέγοντες· διδάσκαλε· θέλωμεν
ἀπὸ σοῦ σημεῖον ἰδεῖν· ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπε πρὸς
τοῖς· γε με ἀπομνησθε καὶ μοι χαλῖς· σημεῖον ἐπὶ
ζητῆς· καὶ σημεῖον οὐ δοθήσεται αὐτῇ· ἥ τοι σημεῖον
Ἰωάννου προφήτου· ὡς περ γὰρ ἐγένετο Ἰωάννης
ὁ προφήτης ἐν τῇ κοιλίᾳ τοῦ κτήτορος τρεῖς ἡμέρας
καὶ τρεῖς νύκτας· οὕτως ἔσται καὶ οἶκος τοῦ ἀνθρώπου
ἐν τῇ καρδίᾳ τῆς γλῶττης τρεῖς ἡμέρας καὶ τρεῖς νύκτας·
ἀνδρῶν ἡμερῶν ἵτα ἀναστήσονται ἐν τῇ κρίσει με
τὰ τῆς γλῶττης αὐτῆς καὶ κατὰ κρινοῖς αὐτῶν·
ὅτι μετένοησαν εἰς τὸ κηρύγμα Ἰωάννου· καὶ ἰ
δοὺ πλῆθος Ἰωάννου ἐδεδουλοῦντο αὐτοῦ ἐλθεῖν
σθαι ἐν τῇ κρίσει μετὰ τῆς γλῶττης αὐτῆς· καὶ κα
τὰ κρινοῖς αὐτῶν ὅτι ἦλθεν ἐκ τῶν περάτων τῆς
γλῶττης αὐτοῦ σοφίαν σοφὸν κῆρυγμα· ὅ
τι ἀντὶ τοῦ ἀκαθάρτου πνεύματος ἐξελθὴν ἀπὸ τοῦ
ἀνθρώπου ἐξ ἑλθὴν ἀνθρώπων τῶν πᾶν· ζητοῦν ἀνα
παισιν καὶ οὐ χάρις καὶ· τότε λέγει πρὸς τοὺς οἰκο
νομοὺς ἐπὶ τῇ ἐξουσίᾳ ἐξήλθον· καὶ ἐλθὼν ἀ
ρίσκει σχολάζοντες καὶ σεσάρωμένον κεκοσμη
μένον· τότε πορεύεται καὶ παραλαμβάνει με
τὰ αὐτοῦ ἐπὶ τὰ ἔτερα πνεύματα· πομνηρώτερα
ἐαυτοῦ· καὶ εἰσελθόντα καὶ τοὶ κῆρυγμα καὶ γίν
εται τὰ ἑλθόντα τοῦ ἀνθρώπου ἐκ τῶν· χάρων αὐτῶν πῶ
των· οὕτως ἔσται καὶ τῇ γλῶττῃ πομνηρώτερα αὐτῆς·

τῇ· ἐ· τῇς· ἐ· κατὰ ματθαίον
ὡ καὶ ῥῶ ἐκ ῥῶ· λελοῦτος τοῦ αὐτοῦ τοῖς ὅλοις·

ἰδοὺ ἡ μήρ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ εἰσῆλθον ἐξωστῆ
τοῦτες λαλῆσαι αὐτῷ· ἔπειτα δὲ τίς αὐτῷ· ἰδοὺ ἡ μήρ
σου καὶ οἱ ἀδελφοί σου ἐστὲν αὐτῷ· ἐξωστῆ τοῦτες αὐ
τοῦ· ὁ δὲ ἀπὸ κρήνης εἶπε· τῷ λαλῶντι αὐτῷ·
τίς ἐστὶν ἡ μήρ μου καὶ τίς τῶν ὄντων οἱ ἀδελφοί μου·
καὶ ἐκ τῆς τῶν χειρῶν αὐτοῦ ἐπὶ τοῖς μαθηταῖς αὐ
τοῦ εἶπεν· ἰδοὺ ἡ μήρ μου καὶ οἱ ἀδελφοί μου· ὅτις
γὰρ ἂν ποιῇ τὸ θέλημα τοῦ πατρὸς μου τοῦ ἐν οὐρανοῖς·
αὐτός μου καὶ ὁ ἀδελφός καὶ ἡ ἀδελφή καὶ ἡ μήρ τῶν
ἐνδοξῶν τῶν υἱῶν· ἐκ γὰρ ἐξελθόντες τὰς οἰκίας·
ἐκάθητο παρά τινι θαλάσῃ· καὶ συνήχθησαν
πρὸς αὐτὸν ὄχλοι πολλοί· ὥστε αὐτὸν ἄρᾳ πλοῖον ἐκ
βάλλειν καθεύδειν· καὶ πᾶς ὁ ὄχλος ἐπὶ τὸν αἰγί
αλόν ἐκίθη· καὶ ἐλάλουν αὐτοῖς πολλὰ ἐν π
ραβολαῖς· τὴν παρὰ τῆς ἐκκλῆς κατὰ μαθητῶν

Κὶ περὶ τῆς παραβολῆς ταύτης· ἰδοὺ ἐξηλθ
ὁ ἀσκήρων τοῦ ἀσκήρει· καὶ ἐν τῷ ἀσκήρει αὐτόν·
ὡς ἐπὶ τῇ παραβολῇ οὗ· καὶ ἐλθόντα ταῖς
πετρίταις τοῦ οὐρανοῦ ἐφάσαν αὐτῷ· ἅμα δὲ ἐπ
σερῶν τὰ πετρώδη ὅπου οὐκ ἔστιν ὕδατος·
καὶ ὡς ἐξήρκετο τὸν διάβολον ἔκρινεν ὕδατος·
ἡ λίου δὲ ἀνὰ τὴν τὸν οὐρανὸν ἐκάλυψε· καὶ οὕτως
τὸν ἐκρίνεν· ἐξηρκετο· ἅμα δὲ ἐπ
ἐπὶ τὰς ἀκάρθας καὶ ἀνέβη θῆραι ἀκάρθαι
καὶ ἀπέπριξαν αὐτὰ· ἅμα δὲ ἐπ
τῶν γλῶττων καλῶν· καὶ ἐδίδου καρπὸν· ὁ μὲν
ἐκατόν· ὁ δὲ ἐξήκοντα· ὁ δὲ τριακόντα· ὁ ἐ
χωρῶντα ἀκούει ἀκούει τῷ· καὶ προσελθόντες
ἐμαθηταὶ ἔπ
ον αὐτῷ· διὰ τὴν παραβολαῖς λαλῶν

39
λείσ αὐτοῖς + ὁ δὲ ἀποκριθεὶς ἔπεναυτοῖς· ὅτι ὑ
μῖν δέδωται γνῶναι τὰ μυστήρια τοῦ βασιλείας
τῶν οὐρανῶν· ἐμὲ οὐκ ἔστιν ἐν παραβολαῖς + ὅς τις
γὰρ ἔχει δόθῃσθαι αὐτῷ καὶ περισυεθῇσθαι· ὅς τις
δὲ οὐκ ἔχει· καὶ ὁ ἔχει ἀρθῇσθαι ἀπ' αὐτοῦ· ~

σαῦβω εἰ κατὰ ματθαῖον·

Καὶ ἔκρινεν αὐτοῖς τὸν παραβολὴν· ἡ δὲ ῥαμὸν κα
θήκον ἐπὶ τὸ τέλος· καὶ λέγει αὐτῷ· ἀκο
λούθησθε μοι + καὶ ἀμαρτῶν ἡ κολούθησεν αὐτῷ + καὶ
ἔλθῃτε αὐτοῦ ἀμαρτῶν ἐν τῇ οἰκίᾳ· καὶ
ἰδοὺ πολλοὶ τελῶναι καὶ ἀμαρτωλοὶ ἔρχονται
πρὸς αὐτὸν καὶ τῷ Ἰησοῦ καὶ τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ +
καὶ ἰδοὺ τὸι φαρισαῖοι ἐῖπον τοῖς μαθηταῖς
αὐτοῦ + διὰ τί μετατῶν τελωνῶν καὶ ἀμαρτωλῶν
ἐσθίει οὐδὲ πιίνει καὶ οὐκ ἔρχονται πρὸς αὐτὸν· ὁ δὲ ἰσχυρῶς
ἀπεκρίθη αὐτοῖς· οὐκ ἔχοντες οἱ ἰσχυροὶ τὸ
ἰατρικόν· ἀλλ' οἱ κακῶς ἔχοντες + πορεύονται
πρὸς αὐτὸν μαθεύειν· ἐλθόντες δὲ οὐκ ἐσθίει
οὐ γὰρ ἦλθον φαγεῖν καὶ πίνειν· ἀλλὰ μαθεύειν
τῶν ἀμαρτωλῶν· ~

κίρια κή· εἰ κατὰ ματθαῖον·

Καὶ ἔκρινεν αὐτοῖς τὸν παραβολὴν· ἡ δὲ ῥαμὸν κα
θήκον ἐπὶ τὸ τέλος· καὶ λέγει αὐτῷ· ἀκο
λούθησθε μοι + καὶ ἀμαρτῶν ἡ κολούθησεν αὐτῷ + καὶ
ἔλθῃτε αὐτοῦ ἀμαρτῶν ἐν τῇ οἰκίᾳ· καὶ
ἰδοὺ πολλοὶ τελῶναι καὶ ἀμαρτωλοὶ ἔρχονται
πρὸς αὐτὸν καὶ τῷ Ἰησοῦ καὶ τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ +
καὶ ἰδοὺ τὸι φαρισαῖοι ἐῖπον τοῖς μαθηταῖς
αὐτοῦ + διὰ τί μετατῶν τελωνῶν καὶ ἀμαρτωλῶν
ἐσθίει οὐδὲ πιίνει καὶ οὐκ ἔρχονται πρὸς αὐτὸν· ὁ δὲ ἰσχυρῶς
ἀπεκρίθη αὐτοῖς· οὐκ ἔχοντες οἱ ἰσχυροὶ τὸ
ἰατρικόν· ἀλλ' οἱ κακῶς ἔχοντες + πορεύονται
πρὸς αὐτὸν μαθεύειν· ἐλθόντες δὲ οὐκ ἐσθίει
οὐ γὰρ ἦλθον φαγεῖν καὶ πίνειν· ἀλλὰ μαθεύειν
τῶν ἀμαρτωλῶν· ~

ἡ δὲ ῥαμὸν κα
θήκον ἐπὶ τὸ τέλος

πολλῶν βοσκομένων· οἱ δὲ δαίμονες παρεκα-
 λουν αὐτοὺς λέγοντες· εἰς ἀβάλῃσιν ἡμῶν· ἐπὶ
 τρεφον ἡμῖν ἀπελθόντες τὴν ἀέλιον τῶν χοίρων·
 καὶ ὅτε περ αὐτοῖς· ὑπάγετε· οἱ δὲ ἐξελθόν-
 τες· ἀπῆλθον τὴν ἀέλιον τῶν χοίρων· καὶ ἰ-
 δοὺς ὥρμησεν πᾶσαι ἡ ἀέλιον τῶν χοίρων κατὰ
 τοῦ κρημνοῦ τὴν θάλασσαν· καὶ ἀπέθανον
 ἐν τοῖς ὕδασι· ἡ δὲ βοσκομένης ἐφύγον·
 καὶ ἀπελθόντες τὴν πόλιν· ἀπήγγελλον παν-
 τὰ κατὰ τῶν δαιμονισμένων· καὶ ἰδοὺ πᾶς
 ἡ πόλις ἐξῆλθεν τὴν ἀντίσιν τῇ ἰού· καὶ ἰ-
 δοὺς αὐτοὺς παρεκάλεσαν ὅπως μετὰ βλή-
 ἀπὸ τῶν ὀρίων αὐτῶν· καὶ ἐμὲ βαῖς τὴν πλοῖ-
 ον δι' ἐπέραισε καὶ ἦλθεν τὴν ἰδίαν πόλιν·

τῇ β' τοῦ 5' αὐτοῦ κατὰ ματ

Καὶ ὡς οὕτως ἐκείνῳ· προσελθόντες οἱ μαθη-
 ται τῷ ἰού ὅπου αὐτῶ· διὰ τί ἐν παραβολαῖς
 λαλᾷς τοῖς ὄχλοις· ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν
 αὐτοῖς· ὅτι ὑμῖν δέδοται γινώσκειν τὰ μυστήρια
 ταύτης βασιλείας τῶν οὐρανῶν· ἐκείνους δὲ ἐν
 παραβολαῖς· ὅς τις γὰρ ἐχθρὸς θῆσθαι αὐτῷ
 καὶ περισάθῃσθαι· ὅς τις δὲ οὐκ ἐχθρὸς· καὶ
 ὁ ἐχθρὸς ἀρθῇσθαι ἀπ' αὐτοῦ· διὰ τοῦτο ἐν
 παραβολαῖς λαλῶ αὐτοῖς· ἵνα βλέποντες
 μὴ βλέπωσιν· καὶ ἀκούοντες, μὴ ἀκούω-
 σιν· μὴ δὲ συνώσιν· καὶ μήποτε ἐπὶ τῆς ἡμέρας· καὶ τό-
 τε πληρωθῇσθαι αὐτοῖς ἡ προφητεία ἡ σάϊ-
 ου· ἡ λέγουσα· ἀκοὴ ἀκούσῃ τε καὶ οὐκ ἰδὼν
 τε· καὶ βλέπων τε καὶ οὐκ ἰδὼν·

ἐπαχύνθη ἡ καρδία τοῦ λαοῦ τούτου· καὶ τοῖς ὤ-
σιν βαρέως ἤκουσαν· καὶ τοῖς ὀφθαλμοῖς αὐτῶν ἐ-
καρμυσαν + μὴ ποτε ἴδωσιν τοῖς ὀφθαλμοῖς· καὶ
τοῖς ὤσιν ἀκούσονται· καὶ τῇ καρδίᾳ (ωῶσι· καὶ ἐ-
πί τῇ ψυχῇ καὶ ἰάσωμαι αὐτοὺς + ὑμεῖς δὲ μα-
καριοὶ οἱ ὀφθαλμοί, ὅτι βλέπεσθε· καὶ τὰ ὠταὺ
μῶν, ὅτι ἀκούετε + ἀμὲν γὰρ λέγω ὑμῖν· ὅτι
πολλοὶ προφῆται καὶ δυνάσται ἐπεθύμησαν ἰδεῖν,
ἀφλέπετε καὶ οὐκ ἔδον· καὶ ἀκούσαι, αἱ ἀκούε-
ται, καὶ οὐκ ἤκουσαν + ὑμεῖς οὖν ἀκούσατε τὴν
παρὰβολὴν τοῦ σπειραντοῦ· παντὸς ἀκούοντος
τοῦ λόγου τῆς βασιλείας, καὶ μὴ (ωῶσι) ἐν τῷ
ῥηταίῳ πομῆρος καὶ αἰρῶντος ἐσπασμένον ἐν τῇ
καρδίᾳ αὐτοῦ· οὗτος ἐστὶν ὁ παρὰ τὴν ὁδὸν σπείρων +
ὁ δὲ ἐπὶ τὰ πετρώδη σπείρων· οὗτος ἐστὶν ὁ τὸν
λόγον ἀκούων· καὶ ἀθέως μετὰ χαρὰς δέχμενος
καὶ λαμβάνων αὐτόν· οὐκ ἔχουσιν ῥίζαν ἐν ἑαυτῷ·
ἀλλὰ πρόσκαιρός ἐστι + ἡ νομενικὸς δὲ θλίψεται
διὰ τοῦ δόξατον λόγον· ἀθίως σκαρδαλίξεται·
ὁ δὲ ἔσται τὰς ἀκαρπῆς σπείρων· οὗτος ἐστὶν ὁ τὸν λό-
γον ἀκούων· καὶ ἡ καρδία τοῦ αἰῶνος τούτου·
καὶ ἡ ἀπάτη τοῦ πλοῦτος συμπρίσσει τὸν λόγον
καὶ ἀκαρπὸς γίνεται + ὁ δὲ ἐπὶ τὴν γῆν τὴν κα-
λὴν σπείρων· οὗτος ἐστὶν ὁ τὸν λόγον ἀκούων καὶ
(ωῶν)· ὁ δὲ ἡ καρποφορεῖ καὶ ποιεῖ + ὁ μὲν ἐ-
κατόν· ὁ δὲ ἑξήκοντα· ὁ δὲ τριάκοντα + ὁ ἔ-
χων ὠταὺς ἀκούειν ἀκούει τῶν τῆς γῆς αἰ-
μάτων

Γὁ περὶ τῆς παραβολῆς ταύτης· καὶ ματ-
θαῖος ἀποστόλος καλὸν σπέρμα ἐν τῷ ἁγίῳ αὐτοῦ.

Εἰδὼ τὸ καθ' αὐτὸν τοῖς ἀνθρώποις· ἦλθεν αὐτοῦ ὁ ἄγγελος
καὶ ἔσπειρεν ζιζάνια ἀναμίστων τοῦ σίτου καὶ αἱ
πῆλθεν· ὅτε δὲ ἐβλαστήσεν ὁ κόρυθος καὶ καρπὸν
ἔποιησεν· τότε ἐφάνη καὶ τὰ ζιζάνια· προσ-
ελθόντες δὲ οἱ δούλοι τοῦ οἰκοδεσπότου εἶπον αὐτῷ·
κὲ· οὐχὶ καλὸν σπέρμα ἔσπειρες ἐν τῷ ἀγρῷ· πό-
θεν οὖν ἔχοντα ζιζάνια· ὁ δὲ ἔφη αὐτοῖς· Ἐχθρὸς
ἄνθρωπος τοῦτο ἔποιησεν· οἱ δὲ δούλοι ἔειπον· θελήσ-
οιμι ἀπελθόντες, ἐκχένησμεν αὐτὰ· ὁ δὲ ἔφη·
οὐ· μήποτε σὺ χέετε τὰ ζιζάνια· ἐκρίζωσον
τὰ ἄμα αὐτοῖς τὸν σῖτον· ἀφετέτωσαν ξάμε-
θα ἀμφώτεραι μέχρι τοῦ θερισμοῦ· καὶ ἐν καιρῷ
τοῦ θερισμοῦ ἐρώτοις θερισαῖς· ἐκχένατε πρῶ-
τον τὰ ζιζάνια· καὶ δήσατε αὐτὰ ἥδε ὁρμαῖς, προσ-
τὸ κατὰ καῖσαι αὐτὰ· τὸν δὲ σῖτον ὥσπερ ἄλγχε

Εἰς τὴν ἀποδύκω μου· τῇ δὲ τῇ σ' εἰ
Ἡ ἵπερ οὐκ ἐπὶ παραβολῇ ταύτῃ· ἡ γὰρ ματ-
θαιοῖς ἐστὶν ἡ βασιλεὺς οὐρανῶν κώκω ὡς ἀπε-
ως· οὐρανῶν ἄνθρωπος ἔσπειρεν ἐν τῷ ἀγρῷ αὐτοῦ·
ὁ μικρότερον μὲν ἐστὶ πάντων τῶν σπερμάτων·
ὅταν δὲ αὐξήσῃ, μέγαν ποσὺν λαχάνων ἐστὶ καὶ ἱ-
μβαιδένδρον· ὥς τε ἐλθόντα πετρεῖα τοῦ οὐρανοῦ
καὶ κατὰ σκηνοῦ ἐν τοῖς κλάδοις αὐτοῦ· ἄλλω
παραβολῇ ἐλάλησεν αὐτοῖς· ὁμοίαι ἐστὶν ἡ
βασιλεὺς οὐρανῶν ζύμη ὡς λαβθεῖσα γυνὴ ἔ-
κρηψεν εἰς ἀλεύρου σατράναι· ἔως οὗ ἐζῆ-
μύθη ὅλον· ταῦτα πάντα ἐλάλησεν οἱς
ἐν παραβολαῖς τοῖς ὅλοις· καὶ χωρὶς παρα-
βολῆς οὐκ ἐλάλη αὐτοῖς· ὅπως πληρωθῇ τὸ ρη-

θεοδότη του προφίτου λεβοντος· ανοιξαίνετο
 βολαίς το στομα του· ἐρῶ ξομαι κέ κρυμμένα
 ἀπὸ κατὰ βολήν κόσμου· τότε ἀφίς τοῖς ὀχλοῖς
 ἔλθετε πλὴν οἰκίαν αὐτοῦ· ~ τῇ ἐπιστολῇ ἡμῶν

Καὶ ἔκρινεν· ἐλθόντι τῷ ἱερεὶ τὴν οἰκίαν
 αὐτοῦ· προσήλθον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· λε-
 γοντες· φασομένη μὲν τὴν παραβολὴν τῶν ζι-
 ζαριῶν τοῦ ἀγροῦ· ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπε
 αὐτοῖς· ὁ ἀσφύρον τὸ κεφάλον ἀπὸ κεφαλῆς· εἰς
 ἡνὸς τοῦ ἀνθρώπου· ὁ δὲ ἄσφρος ἐστὶν ὁ κρεῖσσος· τὸ
 δὲ κεφάλον ἀπὸ κεφαλῆς· οὗτοι γοῖν· οἱ υἱοὶ τῆς βα-
 σιλεῖας· ταὶ δὲ ζιζανίαι γοῖν· οἱ υἱοὶ τοῦ πο-
 νηροῦ· ὁ δὲ ἐχθρὸς ὁ ἀσφύρας αὐτῶν εἰς ἡνὸς δι-
 αβολος· ὁ δὲ θείας κρεῖσσος (ὡς τελεῖται αἰῶνος εἰ-
 σὶν· οἱ δὲ θείας αἰῶνος γοῖν· ὡς περὶ ὧν
 σὺ μέγεται τὰ ζιζανία καὶ περὶ καί ται· οὕ-
 τως εἶσαι ἐν τῇ (ὡς τελεῖται αἰῶνος τοῦτου +
 ἀποστελεῖ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου τοῖς ἀγγέλοις αὐτοῦ
 καὶ συλλέξουσιν ἐκ τῆς βασιλεῖας αὐτοῦ παρ-
 τατα σκαρδαλα· καὶ τοῖς ποιῶντας πλὴν α-
 νομίαν· καὶ βαλοῦσιν αὐτοὺς ἐκ τῆς κἀμινος
 τοῦ πυρός· ἐκ εἶσαι ὁ κλαυθμὸς καὶ ὁ βρυγ-
 μὸς τῶν ὁδόντων· τότε οἱ δὲ καὶ οἱ σελάμφοι
 σὶν ὡς ὁ ἥλιος ἐν τῇ βασιλεῖα τοῦ πρὸς αὐτῶν +
 ὁ ἔχων ἄπαν ἀκούσθαι κουνέτω· ~ τῇ παρὰ τῆς

Καὶ ἔκρινεν· ὁμοίαν ἐστὶν ἡ βασιλεῖα τῶν οὐρανῶν θι-
 σαυρῶν κρυμμένων ἐν ἄρῳ· ὁ ἐὺρὼν αὐτὸς
 ἐκρυψε· καὶ ἀπὸ τῆς χάριτος αὐτοῦ παθεῖ

[illegible]

(ωγαγὴ αὐτῶν : ^{ἄρχοντες} σαμβά 5 ἢ ματ
 ὡκαιρῶ ἐκείνῳ προσελθὼν τῷ ὄντι προσε
 κύνει αὐτὰ λῶν . ὅτι ἡ θύγατή μου ἄρτι ἐ
 πλάπυσεν . ἀλλὰ ἀπελθὼν ἐπίθω τὴν
 χθρᾶ σου ἐπαῖπλὺ καὶ ζήσθαι + καὶ ἐχ

θεῖς ὁ ἴσ' ἠκολούθησεν αὐτῷ καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ·
καὶ ἰδοὺ γυνὴ αἰμορροῖσα δύνει καὶ ἐτι· προσελ-
θοῖσα ὅτι ἴσ' ἠΐψατο τοῦ κρασέδου τοῦ ἱμα-
τίου αὐτοῦ· ἔλεγε γὰρ ἐν ἑαυτῇ· εἰ μόνον
ἄψωμαι τοῦ ἱματίου αὐτοῦ σωθήσομαι· ὁ
δὲ ἴσ' εὐφραίνεται καὶ εἰδὼν αὐτὴν ἔπεμ· θάρσει
θύγατερ· ἡ πίστις σου σε σώσει· καὶ ἐσώθη ἡ γυ-
νὴ ἀπὸ τῆς ἡμέρας ἐκείνης· καὶ ἐλθὼν ὁ ἴσ' ἔ-
τι τὴν οἰκίαν τοῦ ἀρχόντου· καὶ ἰδὼν τοὺς αὐλῆ-
τάς καὶ τὸν ὄχλον θορυβούμενον λέγει αὐτοῖς·
ἀναχωρετε· οὐ γὰρ ἀπέθανε τὸ κοράσιον· ἀλλὰ
καθεύδει· καὶ κατεγέλων αὐτοῦ· ὅτε δὲ ἔξε-
βλήθη ὁ ὄχλος καὶ ἔσπελθων ἐκράτησε τὴν χεῖρα
αὐτῆς· καὶ ἠγγέθη τὸ κοράσιον· καὶ ἐξήλθεν
ἡ φήμη αὐτῆς ὅτι τὴν γυνὴν ἐκείνην· ~

μερικὴ 5 κατὰ ματθαῖον:

Καὶ αὐτὴν ἐκείνην· ἐμβὰς ὁ ἴσ' εἰς πλοῖον δι-
πέρασε καὶ ἦλθεν εἰς τὴν ἰδαμ πόλιν· καὶ ἰδοὺ
προσφέρον αὐτῷ παραλιπτικὸν ἐπὶ κλινῆς βε-
βλημένον· καὶ ἰδὼν ὁ ἴσ' τὴν πίσιν αὐτῶν· εἶ-
πεν τῷ παραλιπτικῷ· θάρσει τέκνον· ἀ-
φείονταί σοι αἱ ἁμαρτίαι σου· καὶ ἰδοὺ τινὲς
τῶν γραμματέων ἔπον ἐν ἑαυτοῖς· οὗτος
βλασφημεῖ· καὶ ἰδὼν ὁ ἴσ' τὰς ἐν θυμῷ σεῖς αὐ-
τῶν εἶπεν· ἰνατί ὑμεῖς ἐν θυμῷ ἔχετε πορνεῖαν
ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν· πῶς ἐστὶν ἀκοπῶ-
τερον εἰπεῖν· ἀφείονταί σου αἱ ἁμαρτίαι; ἢ εἰπὴν
ἔγχε καὶ περιπατεῖ· ἰνα δὲ εἴδατε ὅτι ἔξου-
σίαν ἔχει ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐπὶ τῆς γῆς ἀφείναι

ἄλλ
ἐν τῷ ἴσ' πᾶ
αἱ

αμαρτίας· τότε λήσ' τῷ παραλιπίῳ· ἐνθ' ἔθ' ἄφρονσου τὴν κλίμην καὶ ὑπάστ' ἔθ' τοῦ οἴκου σου· καὶ ἐνθ' ἔθ' ἀπ' ἡλθευθ' τὸν θῆκορ αὐτοῦ· ἰδὼν τε δ' οἱ ὄχλοι ἐθαύμασαν καὶ ἐδόξασαν τὸν θῆ· τὸν δ' ἔθ' ζοισί' ἀντοὶ αὐτῷ τοῖς ἀντοῖς·

τῇ β' τῆς 3 Δαμ' κατὰ ματθ' αἰον·

Καὶ ἔθ' ἔθ'· ἡλθευθ' ἔθ' τὴν πατρίδα αὐτοῦ· καὶ ἐδόξασεν τοῖς ὄχλοις ἐν τῇ συναγωγῇ αὐτῶν· ὥς τε σ' ἐπλήσθη αὐτοῖς καὶ λεγῶν· πόθεν οὗτω ἡ σοφία αὐτῇ καὶ αἱ δυνάμεις· οἱ γὰρ οὗτος ἐστὶν ὁ τοῦ τέκτορος υἱός· οὐχὶ ἡ κτ' αὐτοῦ λέγεται μαθή· καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ ἁπῶς καὶ ἰωάννης καὶ σίμων καὶ ἰούδας· καὶ αἱ ἀδελφαὶ αὐτοῦ· οὐχὶ πᾶσαι πρὸς ἡμᾶς ἔσονται· πόθεν οὖν παρταύται· καὶ ἐσκαρδαλίζοντο ἐναυτῷ· ὁ δ' ἔθ' ἔθ' περ αὐτοῖς· οὐκ ἐστὶν προφῆτης ἀτίμος, ἢ μὴ ἐν τῇ πατρίδι αὐτοῦ· καὶ ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτοῦ· καὶ οὐκ ἐποίησεν ἐκθ' δυνάμεις πολλὰς δ' ἁπλῶς ἀπίστ' αὐτῶν·

τῇ γ' τῆς 3 Δαμ' κατὰ ματθ'·

Καὶ ἔθ' ἔθ'· ἡκοισεν ἡ ῥῶδισ' ὅτε τραχυνότις ἀκολὺν ἴσ'· καὶ ἔθ' περ τοῖς πείσιν αὐτοῦ· οὗτος ἐστὶν ἰωάννης ὁ βαπτιστής· αὐτὸς ἡλθ' ἀπὸ τῶν μερῶν· καὶ δ' ἀπὸ τοῦ αἰδυνάμης ἐμεργισὶν ἐναυτῷ· ὁ γὰρ ἡ ῥῶδισ' κρατήσας τὸν ἰωάννην ἐδόξεν αὐτὸν καὶ ἐδόξεν ἐν τῇ φυλακῇ· διαίρῳ δ' ἀδελφῶν γυναικ'· φιλίππου τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ· ἔλεγε γὰρ αὐτῷ ὁ ἰωάννης· οὐκ ἐξ ἐσσοῦ ἔχθ' αὐτῷ· καὶ θέλων αὐτὸν ἀποκτεῖναι· ἐφο

βίβη τον ὄχλον ὅτι ὡς προφήτῳ αὐτὸν ἔχον· καὶ ἦν
 σίμων δὲ ἀγορεύων τοῦ ἡρώδου· ὁρμήσας τοῦ θιγατῆ
 τῆς ἡρώδιδος ἐν τῷ μέσῳ· καὶ ἦρθε τῷ ἡρώδῃ· ὁ
 θεσπεθόρου αἰολόγησεν αὐτῇ δοῦναι ὅ ἐὰν αὐτῇ
 σήται· ἡ δὲ πρόβῃ αὐτῇ ὑπὸ τῆς κρῆς αὐτῆς·
 δδὲ μοι φησὶν ἐπὶ πίνακί τινι κεφαλῇ ἰωάννου
 τοῦ βαπτιστοῦ· καὶ ἐλύπηθ' ὁ βασιλεὺς· καὶ ὁ
 δὲ τοῖς ὄρκοις καὶ τοῖς συναναγκασμένοις ἐκέλευ
 σεν δοθῆναι· καὶ πέμψας ἀπέκεφαλῶσεν τὸν
 ἰωάννην ἐν τῇ φυλακῇ· καὶ ἡ μέχθη κεφαλῇ
 αὐτοῦ ἐπὶ πίνακί· καὶ ἐδώθη τῷ κορασίῳ· καὶ
 ἡμεγεντή μερὶ αὐτῆς· καὶ προσελθόντες οἱ
 μαθηταὶ αὐτοῦ ἤραν τὸ σῶμα· καὶ ἐθαψαν
 αὐτὸ· καὶ ἐλθόντες ἀπήγγελλον τῷ ἰησοῦ· καὶ ὁ
 κοίτας· οἱ δὲ ἀνελώρησεν ἐκείθεν ἐν πλοίῳ·
 καὶ ἔρημον τόπον κατὰ δίαν· καὶ ἀκούσαν
 τες οἱ ὄχλοι ἠκολούθησαν αὐτῷ περὶ ἀπὸ τῶν
 πόλεων· ὅτι ἡ πῆθος ἦν μεγάλη· καὶ ματ
 ὡκαιρῶ ἐκείνῳ ἐπὶ γόνυ τῶ τον ἰησοῦ οἱ ἄνθρωποι
 τῆς γῆς γυνήσασθε· ἀπεσγλαγγῶσ' ὅλῳ τῷ π
 ρίχωρον ἐκείνῳ· καὶ προσήνεγκαν αὐτῷ πάν
 τας τοὺς κακῶς ἔχοντας· καὶ παρεκάλουν αὐ
 τὸν ἰησοῦ καὶ μόνον ἀφῶνται τοῦ κρασπέδου
 τοῦ ἱματίου αὐτοῦ· καὶ ὅσοι ἤψαντο δῆξ' ἐσώθησαν
 τότε προσέρχονται πῶς οἱ ἀπὸ ἱεροσολύμων γα
 ρματεῖς καὶ φαρισαῖοι· λέγοντες· διὰ τί οἱ μαθη
 ταί σου παραβαίνοσι τὴν παράδοσιν τῶν προ
 βυτέρων· οὐ γὰρ νίπτονται τὰς χεῖρας αὐτῶν ὁ
 πᾶν ἄρτον ἐσθίουσιν· ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπε·



αὐτοῖς· διὰ τὴν καὶ ὑμεῖς παραβαίνετε τὴν ἐντο-
 λὴν τοῦ θ' οὐδ' ἀπὸ τῆς παράδοσιν ἱμεῶν· ὅρα ἄρ' ὅς
 ἐν τῇ λατρίᾳ· τίμα τὸν πατέρα καὶ τὴν μητέρα·
 καὶ ὁ καιρολογῶν πατέρα ἡμεῶν· θαυμάτω· τελευτάτω·
 ὑμεῖς δὲ λήθαι· ὅς ἀν' ὅπου τῷ πατρὶ ἢ τῇ μητρὶ δῶρ
 ὅς ἀν' ἐξ ἐμοῦ ὡφελήθης· καὶ οὐκ ἔτι μῆσει
 τὸν πατέρα αὐτοῦ ἢ τὴν μητέρα αὐτοῦ· καὶ ἡ κερῶσα
 τε τὴν ἐντολὴν τοῦ θ' οὐδ' ἀπὸ τῆς παράδοσιν ἱμεῶν
 ἐπὶ κριταὶ· καλῶς προέφύτασεν περὶ ἱμεῶν
 ἡσαΐας λέγων· ἀγγέλοι ὄλθ' οὗτος τῷ σο-
 ματί αὐτῶν· καὶ τοῖς χηλωμένοι τῇ καρδίᾳ· ἡ δὲ
 καρδία αὐτῶν πόρρω ἀπέχθη ἀπ' ἐμοῦ· μάτην
 δὲ σάρονταί με· διδάσκοντες διδάσκαλίας
 ἐν ταγμασιν ἡμεῶν· καὶ προσκαλομένους
 τὸν ὄχλον ὅπως αὐτοῖς· ἀκούετε καὶ συνίετε· οὐ
 τὸ ὅς ἐρχόμενον ἡς τοῦ σώματος κοινοὶ τὸν ἄνθρωπον·
 ἀλλὰ τὸ ἐξ ἐρχόμενον ἐκ τοῦ σώματος τοῦτο
 κοινοὶ τὸν ἄνθρωπον· ~ τῇ ἐ τῆς ἡμετέρας

ὡς καιρῶ ἐκείνῳ· προσήλθον ἡμεῖς κατὰ ματ-
 οῖμαθ' ἡται τῷ ἱσὶ καὶ ὅπου αὐτῷ· οἱ δὲ αὖ οἱ
 Φαρισαῖοι ὡς καρδία θύσαν· ἀκούσαντες
 τὸν λόγον· ὁ δὲ ἀποκριθεὶς ὅπως· πάσαι
 φυγαὶ ἡμεῶν οὐκ ἐφύτασεν ὁ πῆρμος ὁ οὐκ ὡς
 ἐκρίβωθήσεται· ἀφετε αὐτοῖς· ὁ δὲ καὶ ὅς τῷ
 φλοῖ τῷ φλῶν· τῷ φλῶν δὲ τῷ φλῶν ἐὰν ὁ δὲ καὶ ὅς
 φότεροι, ἡς βόθιον πρὸς αὐτῶν· ἀποκριθεὶς δὲ
 ὅπως τὸς ὅπως αὐτῷ· φάσκον ἡμεῖς τὴν παραβο-
 λὴν πάντων· ὁ δὲ ἰσὶ ὅπως· ἀκμὴ καὶ ἡμεῖς
 ἀσώε τοῖς ἐς· οὐκ ἔστιν· ὅτι πάντες εἰς πορεύ-

μενον δὲ τὸ σῶμα δὲ τῶ κοιλία χωρὶς· καὶ δὲ ἅ
φειδρόμας ἐβαλῆται + τὰ δὲ ἐκ πορρόμενα, ἐκ
τοῦ σώματος· ἐκ τῆς καρδίας ἐξέρχεται· καὶ ἡ
κοινοὶ τὸν ἄνθρωπον + ἐκ γὰρ τῆς καρδίας ἐξέρχ^{ον}
ται δόλοισι μοι πονηροὶ· φόβοι· μοιχῶν· πορ
νήν· κλοπῆν· ψευδομαρτυρίαν· βλασφημίαν·
πάντα ἐς τὰ κοινοῦται τὸν ἄνθρωπον + καὶ ἐξελθὼν
ἐκ ἡθελον ὁ ἴσ' ἀνεχώρησεν δὲ τὰ μέρη τύρου καὶ
σιδῶνος· ~ τῇ παρὰ τὴν ζ' καὶ κατὰ ματ

ὡς καὶ ῥῶ ἐκ ἡμῶν· ἦλθεν οὖν πρὸς τὴν θάλασσαν
 τῆς γαλιλαίας· καὶ ἀναβὰς εἰς τὸ ὄρος ἐκάθη
 τοῦ ἐκεί· καὶ προσήλθον αὐτῷ ὄχλοι πολλοί· ἐ-
 χοντες μεθ' αὐτῶν· χωλοῖς· τυφλοῖς· κωφοῖς·
 κύλῳ· καὶ ἑτέροις πολλοῖς· καὶ ἑρρίψαντες
 τοὺς παρὰ τοῖς πόδας τοῦ Ἰησοῦ καὶ ἐθεράπευσαν
 αὐτοὺς ὡς τε τοῖς ὄχλοις θαυμάσαι· βλέποντας
 κωφοῖς καὶ ἀκούοντας· ἀλάλοισι λαλοῦντας·
 κύλῳ ὑγιείς· χωλοῖς περὶ πατοῦντας· καὶ
 τυφλοῖς βλέποντας· καὶ ἐδόξασαν τὸν θῆ-
 ῖον Ἰσραὴλ· ~ σάββατον ἔστιν κατὰ ματ.

ἡ ψευδοῦς· ὁ φίλῳν πρᾶ ἡμῶν ὑπὲρ ἐμῶν οὐ
 κ' ἐστὶ μου ἄξιος· καὶ ὁ φίλῳν υἱοῦ ἡ θύγατρός αὐ
 τῶν ἐμῶν οὐκ ἐστὶ μου ἄξιος· καὶ ὁ οὐ λαμβάνει
 τὸν σπλῆν αὐτοῦ καὶ ἀκολουθεῖ ὀπίσω μου·
 οὐκ ἐστὶ μου ἄξιος· ὁ δ' ἄρῳν τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἀ
 πόλυσσά τινι· καὶ ὁ ἀπολώσας τὴν ψυχὴν αὐ
 τοῦ ἐν κενέ μου ἀρήσσει τινι· ὁ δεχόμενος
 ὑμᾶς, ἐμὲ δεῖχθαι· καὶ ὁ ἐμὲ δεχόμενος, δε
 χεται τὸν ἀποστέλλαντά με· ὁ δεχόμενος προ

εω ζ ιχ πα
β

φήτω εἰς ὄνομα προφήτου μιάθου προφήτου λή-
ψαι + καὶ ὁ δέχόμενος δὲ καὶ ὁ δὲ ὄνομα δὲ καίου
μιάθου δὲ καίου λήψαι + καὶ ὁ εἰς αὐτὸν ποτίσει
ματῶν μίκρων τούτων ποτήριον ψυχροῦ μόρου.
ὅς ὄνομα μαθήτου + ἀμὲν λέγω ὑμῖν· οὐ μὴ ἀπο-
λῶν τὸν μιάθου αὐτοῦ + καὶ εἰς τὸ ὅτι ἐτέλε-
σε οἱ δὲ διατάσσων τοῖς δώδεκα μαθηταῖς αὐτοῦ.
μετὰ τὴν ἐκθέρου τοῦ διδάσκου καὶ κηρύσσου ἐν

ταῖς πόλεσιν αὐτῶν· ὡς καὶ ἔγραψεν·
ὡ καιρὸς ἐγγύς· παρὰ ὄντι τῷ ἰσχυρῷ καὶ ματ-
ηκολούθησαν αὐτῷ δὲ τῷ φλοὶ κράζοντες καὶ λέγον-
τες· ἐλέησον ἡμᾶς ἰησοῦ δαδ· ἐλθόντες δὲ εἰς
τὴν οἰκίαν προσήλθον αὐτῷ οἱ τῷ φλοὶ καὶ λέγοντες
τοῖς οἱ δὲ πῖσάτε· ὅτι δὴ αὐτῶν τοῦτο ποιῆσαι·
λῆροισιν αὐτῶ· καὶ καὶ· τότε ἔφατο τῶν ὀφθαλμῶν
αὐτῶν· λέγων· κατὰ τὴν πίστιν ὑμῶν γένηται
ὑμῖν + καὶ ἀνέωχθησαν αὐτῶν οἱ ὀφθαλμοὶ καὶ
ἐνεβρίμην αὐτοῖς οἱ δὲ λέγων· ὁράτε καὶ δεῖτε
γινώσκετε· οἱ δὲ ἐξελθόντες· διέφηνισαν αὐ-
τῶν τὴν γῆν ἐγγύς· αὐτῶν δὲ ἐξερχομένων· ἰ-
δοὺ προσήνεκα αὐτῷ ἄνθρωπον κωφον δαιμονιζόμε-
νον + καὶ ἐβλήθη ἐκ τοῦ δαιμονίου ἐλάλησεν
ὁ κωφός + καὶ ἐθαύμασαν οἱ ὄχλοι λέγοντες· ὅ-
τι οὐδέποτε ἐφάνη οὕτως ἐν τῷ ἰσχυρῷ + οἱ δὲ φαρι-
σαῖοι ἐλέγον· ἐν τῷ ἀρχοντὶ τῶν δαιμονίων ἐμβα-
λῶν τὰ δαιμόνια + καὶ περὶ ἡμῶν οἱ δὲ τὰς πόλεις
πάσας καὶ τὰς κώμας· διδάσκων ἐν ταῖς συνα-
γωγαῖς αὐτῶν· καὶ κηρύσσων τὸ εὐαγγέλιον τοῦ
βασιλείας + καὶ θεραπέων πᾶσαν νόσον καὶ

πάσα μαλακία ἐν τῷ λαῷ· ἡ γὰρ τῆς ἡμετέρας

καὶ αὐτῶν ἐκείνων· προσελθόντες δὲ κατὰ

τῷ Ἰουδαίῳ οἱ καὶ σαδδουκαῖοι πειράζοντες·

ἐπερώτησαν αὐτὸν σημεῖον ἐκ τοῦ οἴνου ἐπὶ

δῆξαι αὐτοῖς· ὁ δὲ ἀποκριθεὶς ἔπερσεν αὐτοῖς·

οὐ ψάλλουσιν ἐν ἡμῶν ἀδύναμι· πῦρά βλαστῶ

οἴνου· καὶ πρῶτον ἡμετέρας χυμῶν· πῦρά βλαστῶ

χυμῶν οἴνου· ὑποκριταί· τὸ μὲν προσω

πον τοῦ οἴνου γινώσκετε διακρίνοντες· τὰ δὲ ση

μεῖα τῶν καιρῶν· οὐ δύνασθαι γινώσκει· γενε

ὰ ποιεῖτε καὶ μοιχαλῖς· σημεῖον ἐπὶ τῆς ἡμετέρας

σημεῖον οὐ δοθήσεται αὐτῇ· ὅτι τὸ σημεῖον ἰσ

χυμῶν τοῦ προφήτου· καὶ κατὰ λίπῶν αὐτοῖς

ἀπὸ ἡλθεν· καὶ ἐλθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ

εἰς τὸ πέραν· ἐπελάθοντο ἄρτοις λαβῆναι· ὁ δὲ

ἰσχυρῶς ἔπερσεν αὐτοῖς· ὁρᾶτε καὶ προσέχετε· ἀπὸ

τῆς ὕλης τῶν φαρισαίων καὶ σαδδουκαίων·

ἡ γὰρ τῆς ἡμετέρας κατὰ ματ

ἡμετέρας τοῖς ἑαυτοῦ μαθηταῖς· ὁρᾶτε

καὶ προσέχετε ἀπὸ τῆς ὕλης τῶν φαρισαίων

καὶ σαδδουκαίων· οἱ δὲ ἐδύελογίζοντο ἐν

ἑαυτοῖς· λέγοντες· ὅτι ἄρτοις οὐκ ἐλάβω

μεν· γινώσκοντες δὲ οἱ ἑαυτοῖς· τί δὲ ἀλο

γίζετε ἐν ἑαυτοῖς· ὀλιγόπιστοι· ὅτι ἄρτοις οὐ

κτελεῖτε· οὐπω μοῖτε· οὐδὲ μνημονεύετε·

τοῖς πάντεσσι ἄρτοις τῶν πεντακισχιλίων·

καὶ πόσοις κοφίμοις ἐλάμβανετε· οὐδὲ τοῖς

πταῖς ἄρτοις τῶν τετρακισχιλίων· καὶ πό

σοις αὐρίδας ἐλάβετε· πῶς οὐκ ἐπε

τε

ὅτι οὐ περὶ ἑαυτοῦ ἔπος ὑμῖν προσέειπεν· ἀλλὰ ἀπο-
τίς ὑμῶν τῶν φαρισαίων καὶ σαδδουκαίων· τότε
ἐπεὶ ἔειπεν ὅτι οὐκ ἔπειν προσέειπεν ἀπὸ τίς ὑμῶν τοῦ
ἑαυτοῦ· ἀλλὰ ἀπὸ τίς διδάχῃ τῶν φαρισαίων καὶ
σαδδουκαίων· ~ τῇ δὲ τῆς ἡ ^{ἀμ} ἡ ^{ματθαῖ}

Καὶ ῥῶν ἐκείνῳ· διὲς ἔλατο οὗτος τοῖς μαθη-
ταῖς αὐτοῦ· ἵνα μὴ δυνάμωσιν· ὅτι αὐτὸς ἐστὶν ἰσ-
χύς· ἀπὸ τότε ἤρξατο οὗτος διδάσκειν τοῖς μαθη-
ταῖς αὐτοῦ· ὅτι δὲ αὐτὸν ἀπελθόντος ἱεροσόλυμα·
καὶ πολλὰ παθὼν ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων καὶ ἁρ-
χιερέων καὶ γραμματέων· καὶ ἀποκταθῆναι
καὶ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἐγερθῆναι· καὶ προσελθόν-
τος αὐτοῦ πάλιν ἤρξατο ἐπὶ τὴν αὐτὴν
λῆναι· ἰλεώσασθαι· οὐκ ἔσταις τοῦτο· ὁ δὲ
εὐφρανθεῖς εἶπεν τῷ πέτρῳ· ὑπάγε ὀπίσω μου
ταρῶν· σκαμνίζομαι ὧς· ὅτι οὐ φρονεῖς ταύτης
θῆ· ἀλλὰ τῶν ἀνθρώπων· τότε οὗτος ἔπειν τοῖς
μαθηταῖς αὐτοῦ· ἵνα τίς θέλῃ ὀπίσω μου ἐλθόν
ἀπαρνησάσθαι ἑαυτὸν καὶ ἀράτω τὸν σταυρὸν
αὐτοῦ καὶ ἀκολουθήτω μοι· ~ τῇ δὲ τῆς ἡ ^{ἀμ}

Καὶ περὶ οὗτος τοῖς ἑαυτοῦ μαθηταῖς· ~ ἡ ^{ματ}
ἵνα τίς θέλῃ ὀπίσω μου ἐλθόν ἀπαρνησάσθαι ἑ-
αυτὸν καὶ ἀράτω τὸν σταυρὸν αὐτοῦ καὶ ἀκολου-
θήτω μοι· ὅς γὰρ θέλῃ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ σώ-
σαι ἀπολέσθαι αὐτήν· ὅς δὲ ἀπολέσθαι αὐτήν ἐ-
μεκεν ἐμοῦ ἀρῆσθαι αὐτήν· τί γὰρ ὠφελεῖται
ἄνθρωπος· ἐὰν τὸν κόσμον ὅλον κερδίῃ, τὴν δὲ
ψυχὴν αὐτοῦ ζημιώσῃ· ἢ τί δώσῃ ἄνθρωπος ἅπαντα
μακροῦ ψυχῆς αὐτοῦ· μέλλει γὰρ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου

Ερχάθαι εὐθύδωξιν τοῦ πρὸ αὐτοῦ μετὰ τῶν ἀγγέ-
λων αὐτοῦ· καὶ τότε ἀποδώσει ἐκάστῳ κατὰ τὴν
πράξιν αὐτοῦ + ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν· ὅσι τῇ
μῆτι τῶν ὁδῶν ἐστὶν ὁδοὶ τῶν οὐκ ἐκείνων· οὐκ ἐκείνων
μαρτυρῶς ἀλλ' ἰδοὺσι τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου ἐρχόμε-
νον ἐν τῇ βασιλείᾳ αὐτοῦ· ~ τῇ παρὰ τῆς ἡγε-
μονίας

Καὶ ῥῶ ἐκείνῳ· ἐπιρρώτισαμ· καὶ ματ
τὸν ἱνὸς μαθηταὶ αὐτοῦ λέγοντες· τί οἱ γραμμα-
τοὶς λέγοισιν· ὅτι ἡλίας ἀνδεῖ ἐλθεῖν πρῶτον· ὁ δὲ
ἰσ' ἀποκρίθη· ὅτι περ αὐτοῖς· ἡλίας μὲν ἐρχέται
πρῶτον καὶ ἀπὸ κατὰς ἡσέι πάντα· λέγω δὲ ὑ-
μῖν· ὅτι ἡλίας ἦδε, ἦλθεν καὶ οὐκ ἐπέγνωσαν
αὐτόν· ἀλλ' ἐποίησαν ἐν αὐτῷ ὄφρα θείλῃσαν· οὐ-
τως καὶ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου μέλλει πάσχειν ἐπ' αὐτῶν +
τότε συνήκαν οἱ μαθηταὶ ὅτι περὶ Ἰωάννου τοῦ βα-
πτιστοῦ εἶπερ αὐτοῖς· καὶ ἐξήθον τῶν αὐτῶν πρὸς
τὸν ὄχλον· προσήλθεν αὐτῷ ἄρσος γομύπε τῶν
αὐτῶν καὶ λέγων· κἔ ε' λήυσον μου τὸν υἱόν
ὅτι σε λιμὶν ἄβεται καὶ κακῶς πάσχει· πολλαίς
γὰρ πίπτει εἰς τὸ πῦρ καὶ πολλαῖς γὰρ τὸ ἕδωρ +
καὶ προσήρμασεν αὐτῶν τοῖς μαθηταῖς σου· ἢ
οὐκ ἐδωκὴν αὐτὸν θεραπεύσαι + ἀποκρι-
θὲν δὲ ὁ ἰσ' εἶπερ· ὡς ἔστιν ἀπίστος καὶ δὲ ἔ-
σραμ· ἐν ἡ + φέρταί μοι αὐτόν ὡς δε + καὶ ἐπε-
τίμησεν αὐτῷ ὁ ἰσ'· καὶ ἐξήλθεν ἀπ' αὐτοῦ
τὸ δαιμόριον + καὶ ἐθεραπεύθη ὁ παῖς αὐ-
τῷ ἀπὸ τῆς ὥρας ἐκείνης· ~ σὺ ἡ ἡγε-
μονίας

Καὶ περὶ οὗ· ὁ μὴ ἂν μετέμωυ κατὰ μόνον
καὶ ὁ μὴ συνάγων μετέμωυ σκορπίζῃ + διαποῦ

λήω ὑμῖν· πάσα ἁμαρτία καὶ βλασφημία
 ἀφεθήσεται τοῖς ἀνθρώποις· ἡ δὲ τοῦ πνεύματος βλασφημία
 οὐ καφεθήσεται τοῖς ἀνθρώποις + καὶ ὅς ἐστιν
 εἰς πηλόγον κατὰ τοῦ ἵου τοῦ ἀνθρώπου ἀφεθή-
 σεται αὐτῷ· ὁ δὲ δαίμων ἔστι κατὰ τοῦ πνεύματος τοῦ ἁ-
 γίου, οὐ καφεθήσεται αὐτῷ, οὔτε ἐν τῇ νῦν
 αἰῶνι οὔτε ἐν τῇ μέλλουσι· ἡ ποιεῖτε τὸ
 δένδρον καλὸν καὶ τὸν καρπὸν αὐτοῦ καλόν·
 ἡ ποιεῖτε τὸ δένδρον σαπρὸν καὶ τὸν καρπὸν
 αὐτοῦ σαπρὸν + σὺ γὰρ τοῦ καρποῦ τοῦ δέν-
 δρου γινώσκῃ· γενηθήτω ἡ καρδία σου ὡς
 δύναται ἀγαθὰ λαλεῖν, πομῆροὶ οὐκ ἔσονται + σὺ
 γὰρ τοῦ περισεύματος τῆς καρδίας τοῦ σοφῆ
 λαλῇ· ὁ ἀγαθὸς ἄνθρωπος, σὺ τοῦ ἀγαθοῦ θησαυ-
 ροῦ, σὺ βάλλῃς ἀγαθὰ + καὶ ὁ πομῆρος ἄνθρωπος
 σὺ τοῦ πομῆρου θησαυροῦ, σὺ βάλλῃς πομη-
 ρὰ + λέγω δὲ ὑμῖν· ὅτι πᾶν ῥήμα ἄρ-
 γον ὅ ἐσθ' ἀληθῆς σιμῶν ἄνθρωποι ἀπὸ δόξης
 σὶ περὶ αὐτοῦ λόγον ἐν ἡμέραις κρίσεως +
 σὺ γὰρ τῶν λόγων σου δύναις αἰσθῆσαι· καὶ ἡ
 τῶν λόγων σου κατὰ δίκην αἰσθῆσαι·

κρίανη 15

κατὰ ματθαίον:

411
 εω 5 11 12

καὶ ὡς αἰρῶ ἐκείνῳ· εἶδε γὰρ οἱ πολλὸν ὄχλον
 καὶ ἐσπλαγχνίσθη ἐπ' αὐτοῖς· καὶ ἐθερῶν
 πάσε τοῖς ἀνθρώποις αὐτῶν· ὁ φῶς δὲ γνο-
 μένῃς· προσήλθον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ
 λέγοντες· ἔρημός ἐστιν ὁ τόπος καὶ ἡ ὥρα
 ἡ δὲ παρήλθεν + ἀπόλυσον τοῖς ὄχλοις ἵνα
 ἀπελθόντες διὰ τὰς κώμας ἀγοράσωσιν ἐ-

αὐτοῖς βρωμαται· οὐδ' ἴσ' ἔπειτα ποῖ· οὐδε γὰρ
 εἰχοισιν ἀπὸ θ'· ὁ δὲ ταῦτο· οὐκ ἔστι φαδ'· οἱ δὲ
 λεγοῖσιν αὐτῷ· οὐκ ἔστιν αὐτῷ· ἡ μὲν περὶ τὰς
 καὶ τοῖς θύσας· οὐδ' ἔπειτα· φέρτε μοι αὐτοῖς
 δὲ· καὶ κελεύσας τοῖς ὄχλοις ἀνακλιθῆναι ἐπὶ
 τοῖς χορτοῖς· λαβὼν τοῖς περὶ τὰς καὶ
 τοῖς θύσας· ἀναβλέψας δὲ τοὺς οὐρανούς·
 λόγησεν· καὶ κλάσας ἐδίδκεν τοῖς μαθηταῖς
 τοῖς ἀρτοῖς· οἱ δὲ μαθηταὶ τοῖς ὄχλοις· καὶ ἐ-
 φαθον πάντες καὶ ἐχορτάσθησαν· καὶ ἦσαν το
 περιστάσεων τῶν κλάσας· ὡς δὲ καὶ φησὶ
 πλήρης· οἱ δὲ ὁδοιποροῦντες· ἡ ἀνὰ ὁδὸν αἰσέ-
 ποντα κισσὶ λίθοι· χωρὶς γινώσκοντες καὶ παιδῶν
 καὶ ἀθέως· ὡς ἀμαρτάνουσιν τοῖς μαθηταῖς ἐμ-
 βῆναι δὲ τὸ πλῆθος· καὶ προαχθὲν αὐτὸν εἰς τὸ
 πέραν· ἕως οὗ ἀπολίσθη τοῖς ὄχλοις· ἡ γὰρ

Καὶ αὐτῶν κέρων· προσελθὼν δὲ τῷ Ἰησοῦ· ἡ μὲν
 τῶν μαθητῶν· τίς ἀρτιμῶν
 ἐστὶν ἐν τῇ βασιλείᾳ τῶν οὐρανῶν· καὶ προσ-
 καλεσάμενος· ὁ ἴσ' παιδίον· ἐσηύδα αὐτὸ ἐν
 μέσῳ αὐτῶν· καὶ ἔπειτα· ἀμὲν λέγει· ἡ μὲν
 ἐάν τις ἀγαθῆται καὶ γεννηθῇ ὡς τὰ παιδία·
 οὐ μὴ εἰσέλθῃ εἰς τὴν βασιλείαν τῶν οὐρανῶν·
 ὅς τις οὖν ταπεινωσθῇ αὐτὸν ὡς τὸ παιδίον· τὸ
 οὗτο· ἔστιν ὁ κῆρυξ ἐν τῇ βασιλείᾳ τῶν οὐρανῶν·
 καὶ ὅς ἐάν τις ζητῇ παιδίον τοιοῦτον· ἐ-
 πί τῷ ὀνόματι μου· ἐμὲ δεῖχται· ὅς δ' ἀνὴρ
 δακρύων· ἀπὸ τῶν μικρῶν τούτων τῶν πίστεον
 τῶν δὲ ἐμὲ· σὺ μὲν φέρῃς αὐτῷ· ἵνα κερμαθῇ

μύλος ὁρικός δὲ τὸν τραχιλομαίτου· καὶ κατ'
πονηθῇ ἐν τῷ πελαγειτικῷ θαλάσῳ· οὐ αἰ
τῷ κόσμῳ ἀπὸ τῶν σκαρδαίων· ἀραγὴ γὰρ
ἐν ἐλθόντα σκαρδαίον· πλὴν οὐ αἰτῶν
ἐκ μὲν· δι' οὗ τὸ σκαρδαίον ἐρχεται· ἡ δὲ ἐν
χείρ σου ἐν ὁποῖον σκαρδαίον ἔχεις· ἐκ κοφον
αὐτὰ καὶ βαλεῖς ἀπὸ σου· καλὸν σοι ἐστὶν εἰσελ
θόν δὲ τῷ ζώῳ· χαλὸν ἢ κύλον· ἡ δὲ κοφασὶς ἐν
το ποδὸς ἐχόνται· βληθῆναι δὲ τὸ πῦρ τοῦ αἰω
νίου· καὶ ἡ δὲ φθαλμοῦ σκαρδαίον ἔχεις· ἐξε
λε αὐτὸν καὶ βαλεῖς ἀπὸ σου· καλὸν σοι ἐστὶν ὁμο
φθαλμοῦ δὲ τῷ ζώῳ ἀπελθόν· ἡ δὲ κοφασὶς ἐν
το ποδὸς ἐχόνται· βληθῆναι δὲ τῷ μέσῳ τοῦ
πύρου· ὁρᾶτε μὴ κατὰ φωνήσιν τε ἐν οὐρανῶν
μικρῶν τούτων· λέγω γὰρ ὑμῖν· ὅτι οἱ ἄγγελοι
αὐτῶν ἐνοῦντο· διὰ παντὸς βλέποσιν τὸ προ
σωπὸν τοῦ πρὸς μου τοῦ ἐνοῦντος· ἡ δὲ κοφασὶς
οἷός τοῦ ἀνθρώπου· σῶσαι τὸ ἀπολωλός·

τῇ γ' τῆς θ' εὐ' κατὰ ματ
Καὶ περὶ τοῖς ἑαυτοῦ μαθηταῖς· ἀμὲν λέ
γω ὑμῖν· ὁ (ὡς ἀνδρῶν) ἐπὶ τῷ γίῳ· ἐσθλὸς
ἀμὲν ἐν τῷ οὐρανῷ· καὶ ὁ (ὡς ἀνδρῶν) ἐπὶ
τῷ γίῳ· ἐσθλὸς ἐν τῷ οὐρανῷ· καὶ
παλὶν ἀμὲν λέγω ὑμῖν· ὅτι ἑαυτοῦ ὑμῶν
συμφωνήσωσιν ἐπὶ τῷ γίῳ· περὶ παντὸς
πράγματος· οὐ ἐὰν αἰτήσονται· γνῆσθαι
αὐτοῖς παρὰ τοῦ πρὸς μου τοῦ ἐνοῦντος· οὐ
γὰρ ἡ σὺν ὁ (ὡς ἀνδρῶν) δὲ τὸ ἐμὸν ὁ
ρομα· ἐκ δὲ ἐμὲ ἐν μέσῳ αὐτῶν· τότε πρὸς

Ελθὼν αὐτῷ ὁ πῆτρος, ἔπερ· καὶ· ποσαὶ κῖς αὐ-
 κας τῆς θ' εἰς ἐμὲ ὁ ἀδελφός μου, καὶ ἀφῆκε αὐτῷ
 ἕως ἐπὶ τὰ κῖς· λέγει αὐτῷ οἷος· οὐ ληΐσοι ἕως ἐ-
 πὶ τὰ κῖς· ἀλλ' ὡς ἐβόδιον κορτακίς ἐπὶ τὰ· το-
 τε προσελθὼν αὐτῷ παιδίαν· ἱματὰς χάρας θῆ-
 θῇ αὐτοῖς καὶ προσάξῃται· οἱ δὲ μαθῇται ἐπὶ τῇ
 μετὰ αὐτοῖς· ὁ δὲ ἰὸς ἔπεν· ἀφείλετα παῖδ' αὐ-
 καὶ μὴ κλύετε αὐτῶν· ἐλθόντες πρὸς μετὰ τῶν ζαροῖ
 οὕτων ἐπὶ τῇ βασιλῆα τῶν οὐρανῶν· ~ Τῇ δὲ τῇ θ'

Γ· ἱπερὸς τῶν παραβολῶν· καὶ ματ-
 ταίῳ· ὡμοιωθῇ τῇ βασιλῆα τῶν οὐρανῶν ἀρῶν
 κοδωνότῃ· ὅς τις ἐζητήσεν ἀμαπρωῖ κῖς αὐτοῦ
 εἰς τὰς ἐργαίας θ' τὸν ἀμπελῶνα αὐτοῦ· συμ-
 φωνῇ (ὡς ἐμὲ τῶν ἐργαίων, εὐδην καρίου
 καὶ τῆς μερῶν· ἀπεσῆλθεν αὐτοῖς θ' τὸν ἀμπελῶ-
 να αὐτοῦ· καὶ ἐξελθὼν περὶ τριτῆς ὥρας·
 εἶδε πολλοὺς ἐστῆτας ἐν τῇ χώρα αὐτοῦ· καὶ ἐ-
 κήρυξεν ἔπειτα· ὑπαγε καὶ ἔμειθε τὸν ἀμπελῶ-
 να· καὶ ὁ ἔαρ ἡ δὲ καιὸν, δώσω ὑμῖν· οἱ δὲ ἀ-
 πηλθον· παλὶν ἐξελθὼν περὶ ἑκτῆς καὶ ἐ-
 νάτης ὥρας· ἐποίησε νῆος αὐτῶς· περὶ δὲ
 τῆς ὀκτατῆς ὥρας ἐξελθὼν· εὗρε πολλοὺς
 αἰώτας ἀρτοῖς· καὶ λέγει αὐτοῖς· τί ὧδε ἐσθίετε
 πολλοὶ τῆς ἡμέρας αὐτοῦ· λέγουσιν αὐτῷ, ὅτι
 οὐδεὶς ἡμᾶς ἐμίσθωκετο· λέγει αὐτοῖς· ὑ-
 παγε καὶ ἔμειθε τὸν ἀμπελῶνα· καὶ ὁ ἔ-
 αρ ἡ δὲ καιὸν, ληψάμενοι· ὅφιας δὲ ἔχουσιν ἐν
 τῇ οἰκίᾳ τοῦ ἀμπελῶνος τῷ ἐπὶ τῇ τῶν αὐτοῦ·
 καὶ λῶσιν τοὺς ἐργαίας, καὶ ἀποδοῦν αὐτοῖς τὸν μῆ-

αὐτὸν· ἀρξάμενος ἀπὸ τῶν ἐσχάτων· ἐκ τῶν
πρώτων· καὶ ἐλθόντες οἱ περὶ τὴν ἐνδεκάτην
ῥαββί· ἐλάβον ἀναδύναριον· ἐλθόντες δὲ οἱ
πρώτοι· ἐνομίσαντο πλῆθον αὐληφόρται· καὶ
ἐλάβον καὶ αὐτοὶ ἀναδύναριον· λαβόντες δὲ
ἐξομύζον κατὰ τοῦ οἰκοδομοῦ τοῦ λεγόντες· ὅ
τι οὗτοι οἱ βίχαιοι μετ' ὧραν ἐποίησαν· καὶ
σοὺς ἐμὴν αὐτοῖς ἐποίησας· τοῖς βασιλεῦσι
το βασιλεὺς τίς ἤμελλας καὶ τὸν καίσιμα· ὁ δὲ ἀ
ποκρίθης ἔπεν ἐν αὐτῶν· ἐταρε· οὐκ ἀδύνα
σε· οὐκ ἀδύναριον (ὡς φωνησάσ μοι; ἀφ' οὗ τὸ σὸν
καὶ ὑπαγε· δέλω δὲ τούτω τῷ ἐσχάτῳ· δίδωαι
ὡς καὶ σοὶ· ἡ οὐκ ἐξήμι μοι ποιῆσαι ὅθελαι ἐν
τοῖς ἐμοῖς· καὶ ὁ ὀφθαλμός σου πορνεύσῃ
ὅτι ἐγὼ ἀσάθεος ἤμει· οὕτως ἐσομεταί οἱ βίχα
τοι πρώτοι· καὶ οἱ πρώτοι ἐσχάτοι· πολλοὶ ἄ
ρσιν· οἱ λίγοι δὲ ἐκλεκτοί· τῇ ἐκ τῆς θείας
καὶ αὐτῶν ἐκ τῶν ἀναβαίνων· καὶ μετ'
ὁ ἰσθρὶ ἐροσολυμα· παρέλαβεν τοὺς δίδεκα
καθητάς κατὰ δίαρ ἐν τῇ ὁδῷ· καὶ ἔπεν αὐ
τοῖς· ἰδοὺ ἀναβαίνω μετ' ἐροσολυμα
καὶ οἱ ὅς τοῦ ἀφ' οὗ παρὰ δόθηκε τοῖς ἀρχι
εὐρατοῖς καὶ γραμματέσι· καὶ κατὰ κρινόισιν
αὐτὸν θαλάττω· καὶ παρὰ δὲ σοιστὶν αὐτὸν τοῖς
ἐθνεσίν· ἔς τὸ ἐμπαῖξαι· καὶ μασιγῶσαι
καὶ τρώσαι· καὶ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἀναστῆσαι·
ποτε προσήλθεν αὐτῷ ἡ μερτῶν ἡ ὡρὴ βέβαι
ου· μετ' αὐτῶν ἡ ὡρ αὐτῆς· πρόσκειναι καὶ
αὐτοῖς παρ' αὐτοῦ· ὁ δὲ ἔπεν αὐτῇ· τιθε

λης· λήθη αὐτῶ· ἡ πᾶν ἡ καθήσων οὗτοι οἱ δὲ
 ἡ οἱ μου· ἡ εὐδεξιῶν σου καὶ ἡ εὐεργετικῶν
 ἐν τῇ βασιλείᾳ σου + ἀποκριθὲς οἱς ἡ πεν· οὐ
 κοῖδατε τί αὐτῇ + δὴ αὐτῇ ποιεῖν τὸ ποτήριον ὃ ἡ
 μελωπικῶν ἐπὶ τὸ βάπτισμα ὃ ἡ βαπτίζομαι βαπτί
 αθῆναι· λήθοισιν αὐτῶ· δὴ αὐτῇ + καὶ λήθη αὐτοῖς
 τὸ ποτήριον μου πίωδε· καὶ τὸ βάπτισμα ὃ ἡ
 βαπτίζομαι βαπτισαθήσθε· τὸ δὲ καθῆσαι εὐδεξι
 ῶν μου καὶ εὐεργετικῶν· οὐκ ἐστὶν ἐκὼν δοῦναι· ἀ
 λλοῖς ἡ τοιμαθῆναι ἐπὶ τοῦ πρῶτου + καὶ ἀκούσαν
 τῶ οἱ δὲ καὶ· ἡ γὰρ κησάν περιπὼν δὴ αὐτῶ
 φῶν· ὃ δὲ ἡ προσκαλεσάμενος αὐτοῖς ἡ πεν +
 οἱ δαπερ οἱ οἱ δοκίμους ἀρχῶν τῶν ἐθνῶν καὶ
 κερδανοῖν αὐτῶν + καὶ οἱ μετὰ οἱ κατεξοισα
 νοῖσιν αὐτῶν· οὐκ οὐτος δὲ ἐστὶν ἐν ἡμῖν· ἀλλ' οὐ
 ἐστὶν θελὼν ἐν ἡμῖν μετὰ ἡμῶν· ἐστὶν ἐκὼν
 αἰμορρῶν + καὶ ὅς ἐστὶν θελὼν ἐν ἡμῖν ἡμῶν πρῶτος·
 ἐστὶν ἡμῶν δουλός + ὡς περὶ ἡ τοῦ ἀγίου οὐκ ἡ
 θεοῦ διακορυφήναι· ἀλλὰ διακορυφήναι + καὶ δὴ
 τῶν ψυχῶν αὐτοῦ λύτρον αὐτῶν· ὡς τῇ παρὰ τῶν
 ὡ καὶ ἡ ἐκ ἡμῶν· ἡ σὺ δὲ νοῖς ἡ εὐεργετικῶν ἡ
 τοῖς ἡ τοῦ θύ· καὶ ἐξεβαλεν παρὰ τῶν πω
 λοῦντας καὶ ἀγῶνιζοντας ἐν τῷ ἡμῶν· καὶ τὰς
 τραπέζας τῶν κορυβιστῶν· κατέστρεψεν + καὶ
 τὰς καθέδρας τῶν πολυμένων τὰς περιστερὰς·
 καὶ λήθη αὐτοῖς· γέγραπται· οἱ οἱ κόσμου· οἱ οἱ
 πρὸς ἀχλὺς κληθήσονται + ἡμῶν δὲ αὐτῶν ἐπὶ
 ἡσάτε σπηλαιοληστῶν + καὶ προσήλθον αὐτῶ
 χολοὶ καὶ πύφλοι ἐν τῷ ἡμῶν καὶ ἐθεράπευσεν

αὐτοῖς· καὶ κατὰ ληπὼν αὐτοῖς ἐξῆλθεν ἐξω/ης
 πολὺς θέβηθαρίας καὶ ὑλίας ἐκ/ης· ^{πῶ} ^θ
 ὡ καὶ ῥα ἐκ/ης· πρόσθε (φίμνοσ' αὐτ' ^{πῶ} ^θ ^{αὐτ'}
 οἱ τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ ἔπειν· ἀπολαύζομαι ἐ
 πί τοῦ ὄχλου· οὐ γὰρ ἔμελλεν τρεῖς πρόσθεν οἱ τοῖς
 καὶ οὐκ ἔμελλεν τί φάσιν· καὶ ἀπολίσσαι αὐτοῖς μετ'
 οὐδεὶς· μηποτέ ἐλθῶσιν ἐν τῷ ὄθῳ + καὶ ληφθῶ
 σιν αὐτοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· πόθεν ἡμῖν ἐνεργεῖ
 ἄρτοι τοσοῦτοι· ὥς τε χορτάσαι αὐτοῖς τοσοῦτον + καὶ
 ληφθῶσιν οἱ τοῖς· ποσὶς ἄρτοις ἐχέτω· οἱ δὲ ἔπειν·
 ἐπ' αὐτῶν· καὶ ὀλίγα ἰχθυῖα + καὶ ἐκέλευεν τοῖς
 ὄχλοις ἀναπαύσασθαι ἐπὶ τῷ γῆ + καὶ λαβῶν τοῖς ἐ
 πί αὐτῶν καὶ τοῖς ἰχθυῖας· ἀγαθίστησεν ἐκλασθῶν·
 καὶ ἐδίδου τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ + οἱ δὲ μαθηταὶ αὐ
 τοῦ· καὶ ἐφθον πάντες· καὶ ἐχορτάσθησαν + καὶ
 ἦσαν τὸ περὶ τὰ ὄντα κλάσματος ἐπ' αὐτοῖς ῥίδας
 πληρῆς + οἱ δὲ ὁρίοντες ἦσαν τετρακισχίλιοι
 ἄνδρες· χωρὶς γυναικῶν καὶ παιδῶν + καὶ ἀπο
 λίσας τοῖς ὄχλοις ἀνέβη εἰς τὸ πλοῖον· καὶ ἦλθεν
 εἰς ταύριαν καὶ θάλασσαν· + κεριακή ^θ

96 λ π δ ε ω θ
 ΗΧ

ὡ καὶ ῥα ἐκ/ης· ἡρακασεν οἱ οὐκ ἀταμάτ
 τοις μαθηταῖς ἐκ/ης αὐτῶν· καὶ προῆλθεν
 αὐτοῖς εἰς τὸ περὶ· ὥς οὐ ἀπολίσσεται ὄχλοις +
 καὶ ἀπολίσας τοῖς ὄχλοις ἀνέβη εἰς τὸ ὄρος καὶ πρὸς
 αὐτὸν προσῆλθατο· ὅφρα δὲ γινώσκοντες· μόμος
 ἦν· καὶ τὸ δὲ πλοῖον ἦν ἐκ/ης τῆς θαλάσσης ἦν·
 βασανίζοντες ὑπὸ τῶν κύματων· ὡς γὰρ ἐν ἄν
 τισι οὐκ ἔμελλεν· τεταρτὴ δὲ φύλας τῆς νύκτος·
 ἀπῆλθεν πρὸς αὐτοῖς περὶ πατῶν ἐπὶ τῆς θα

λαοὺς καὶ ἰδόντες αὐτοὺς οἰμαθῆναι ὅτι τινὲς θα-
 λασσα περὶ πατοῦνται· ἔταραχθησαν λέγοντες
 ὅτι φάρμακοί εἰσι· καὶ ἀπο τοῦ φόβου ἐκράζοντες
 εὐθεὶς δὲ ἔλθουσιν αὐτοῖς οἱ τοῖς λεγόντες θάρ-
 σάτε· ἡγήμην φόβου· ἀποκριθῆς δὲ αὐτῷ
 πέτρῳ ἥ πεν· καὶ ἡοῦ· καὶ ἡλῶσονται προσὰς
 ἔλθον ὅτι τὰ ὕδατα· οὐδὲ ἥ πεν· ἐλθέ· καὶ
 τὰ βάθρα ἀπο τοῦ πλοίου· ὁ πέτρῳ· περὶ ἐπαύσε-
 ὅτι τὰ ὕδατα· ἔλθον πρὸς τὸν ἴν· βλέπων δὲ
 τὸν ἄνεμον ἰσχυρόν· ἔφοβηθη· καὶ ἀρξάμενος
 καταπονήσας· ἐκράζει λέγων· κἰ σῶσόν με·
 εὐθεὶς δὲ οἱ σὺ τῶν ἁσὶν τῶν ἁρῶν· ἐπελάμβαν-
 αὐτοῦ· καὶ λέγει αὐτῷ· ὀλιγοπίστ· ὅτι ἐλῶσ·
 καὶ ἐμβάτωρ αὐτῶν εἰς τὸ πλοῖον· ἐκὸ πασσεν ὁ ἀ-
 νερὸς· οἱ δὲ ἐν τῷ πλοίῳ ἐλθόντες πρὸς ἐκείνῳ
 σαρ αὐτοὺς λέγοντες· ἀληθὺς θύειός ἐστι καὶ οὐ
 ἀπερῶσάντες ἤλθον εἰς τὴν γλῶσσην ἡμεῖς· τῇ ἡ-
 ῶ καὶ ῶ ἡμεῖς· ἔπαυσαν δὲ τῆς τῆς ἡμεῖς
 οἱ τοῖς ῶ τῶ πολὺν· ἔπερασεν· καὶ ἰδὼν συκὴν
 μίαν ἐπιτήσας οὐδὲν ἤλθεν ἐπ' αὐτῶν· καὶ οὐδὲν
 ἔρεν ἐν αὐτῇ ῶ ἡμεῖς ἡμεῖς· καὶ λέγει αὐτῇ·
 ῶ ῶ ῶ ῶ σου καρπὸς ῶ ῶ ῶ ῶ τὸν αἰῶνα· καὶ
 ἐξήρανθαι παραχρῆμα ἡοῦ καὶ καὶ ἰδὼν
 οἱ μαθῆναι ἐθαύμασαν λέγοντες· πῶς παρα-
 χρῆμα ἐξήρανθαι ἡοῦ καὶ ἀποκριθῆς δὲ οἱ τοῖς
 ἐῖ πεν αὐτοῖς· ἀμὲν λέγει ἡμεῖς· ἐὰν ἔχητε πί-
 στήν καὶ μὴ δὲ ἀκριβῆτε· οὐκ ὀρθόν τὸ τίς σὺ καὶ
 ποιῶσαι· ἀλλὰ καὶ τῷ ὅρει τοῦτω ῶ ῶ ῶ· ἄρ' ἔστι
 καὶ βλήθητι εἰς τὴν θάλασσαν ῶ ῶ ῶ καὶ παρ

ὁ (αὐτὸς αἰτήσας) ἐν τῇ προσέλει πείσαντες ἄλλοι
ἦσαν: ~ πῇ γὰρ τίς τ' αὐτὸ κατὰ ματ'

Πρὸς αὐτὸν ἐκείνῳ· προσήλθον τῷ ἰωάννου δαδασκου (αὐτοῦ)
ἀρχιερεῖς καὶ οἱ πρεσβύτεροι τοῦ λαοῦ λέγοντες· ἐν
ποῖα ἐξοισαίτα ποιῆς· καὶ τίς σοι ἐδωκεν
τὴν ἐξουσίαν ταύτην; ἀποκριθεὶς οἱ εἶπεν
αὐτοῖς· ἐρωτήσω ὑμᾶς καὶ ὑμεῖς, λόγον εἶναι· οὐ
ἀνδρῶν ἐστέ· καὶ ὑμεῖς μὲν ἐγὼς ἐποίησα ἐξοισαί
τα ποιῶ· τὸ βᾶπτισμα ἰωάννου, ποθεῖν ἡ
ζούω· καὶ ἐξ αὐτῶν· ὅς τ' ἐξέλογίζοντο παρ
αὐτοῖς λέγοντες· ἐὰν ἡ πωμεν ὁ ἐξ οὐνοῦ, ἐργ
ῆμεν· ὅτι οὐκ οὐνοῦ καὶ πείσαντες αὐτῶν· ἐὰν δὲ
εἴπωμεν ἐξ αὐτῶν, φοβούμεθα τὸν ὄχλον· πάν
τες γὰρ ἐξοισοῦν τὸν ἰωάννου ὡς προφήτην· καὶ
ἀποκριθεὶς τῷ ἰωάννου ἡ πω· οὐκ οἶδα μὲν· ἐφ' αὐ
τοῖς καὶ αὐτοῖς· οὐδὲ ἐγὼ λέγω ὑμῖν ἐποίησα ἐξου
σίαν ταύτην ποιῶ: ~ πῇ γὰρ τίς τ' αὐτὸ κατὰ ματ'

Επεὶ οὖν τὴν παραβολὴν ταύτην· ἀνὰ τίς εἶ
πεν τεύχεον· καὶ προσελθὼν τῷ πρώτῳ ἡ πω·
τεύχεον· καὶ παρ' ἐσθ' ἐφρονέον· ἐξ αὐτοῦ ἀμπελῶν
μου· ὁ δὲ ἀποκριθεὶς ἡ πω· οὐ θέλω· ἵνα γινώσκῃς
μετὰ μελῶν ἀπῆλθεν· καὶ προσελθὼν τῷ δευ
τέρῳ ἡ πω ὡς αὐτῶς· ὁ δὲ ἀποκριθεὶς ἡ πω· ἐ
γὼ μὲν· καὶ οὐκ ἀπῆλθεν· τίς ἐκ τῶν δύο εἶποι
ἦσαν τὸ θέλημα τοῦ πρῶτου· λέγουσιν αὐτῶν· ὁ πρῶτος
λέγει αὐτοῖς οἱ οἱ· ἀμὲν λέγουσιν· ὅτι οἱ τελῶν
καὶ αἱ πόρναι προσέβοισιν ὑμᾶς ὡς πῶν βασιλεῖς
τοῦ θ'· ἡλθεν γὰρ πρὸς ὑμᾶς ἰωάννου ὁ δὲ οὐκ
οἶδεν· καὶ οὐκ ἐπείσαντες αὐτῶν· οἱ δὲ τελῶν

καὶ αἱ πόρραι· ἐπίστασαν αὐτῷ· ἡμεῖς δὲ ἰδοὺ
περὶ οὐ μετὰ μελήθητε ἵερον τοῦ πῖσθαι αὐτῷ·

Κὶ περὶ αὐτῶν πρὸς τοὺς ἐληλυθῶτας αὐτῷ ἐπὶ τῷ
προσάιτον ἰουδαίοις· λέγων ὑμῖν· ὅτι ἀρθῆσθαι αὐ
φύμων ἡ βασιλεία τοῦ θ· καὶ δοθῆσθαι ἔθνη ποι
σοῦσι τοὺς καρποὺς αὐτῶν· καὶ ὁ πτωχὸς ἐπὶ τὸν
λίθον τοῦτον· σωθλαθήσεται· ἐφ' ὃν δὲ ἔμπροσθεν
λικμίσθαι αὐτὸν· καὶ ἀκούσαντες οἱ ἀρχιερεῖς
καὶ οἱ γραμματεῖς τὰς παραβολὰς αὐτοῦ, ἐγίνωσκον
ὅτι περὶ αὐτῶν λέγει· καὶ ζητοῦντες αὐτὸν κρυπ
τῆσαι· ἐφοβήθησαν τοὺς ὄχλους· ἐπὶ δὲ ὡς
προφήτῳ αὐτῶν εἶχον· τῇ παραβολῇ τῇ ἐκείνῃ·

Καὶ ῥῶ ἐκείνῳ· προσήλθον τῷ ἰῦσα δδου καὶ οἱ
λῆγοντες μὴ ἴσθαι ἀμαρτῶν· καὶ ἐπὶ ῥῶ τῶν
αὐτῶν λῆγοντες· διδάσκαλε· μῶς τίς ἔπεν· ἐ
γὼν τις ἀποθάνῃ μετ' ἐχόν τέκνον· ἐπὶ γὰρ βρά
σθ' ἀδελφὸς αὐτοῦ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ καὶ ἀγα
πῆσθαι αὐτὴν καὶ τὸ ἀδελφὸν αὐτοῦ· ἡσάμδ' ἐπαρ
μὴν ἐπὶ τῶν ἀδελφῶν· καὶ ὁ πρῶτος γαμήσας, ἀελά
τισεν· καὶ μετὰ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, ἀφ' ἡς ἐκ τῆς
καὶ αὐτοῦ τῶ ἀδελφῶ αὐτοῦ· ὁμοίως καὶ ὁ δεύτε
ρος· καὶ ὁ τρίτος ἐως τῶν ἐπ' αὐτῶν· ἡμεῖς δὲ
πάντων· ἀπεθάρην καὶ ἡ γυναῖκα· ἐν τῇ οὐκ ἀγα
πάσει, τῆς τῶν ἐπ' αὐτῶν ἐστὶν ἡ γυναῖκα· πάντες γὰρ
ἐχόντες αὐτῶν· ἀπὸ κριθῆς δὲ οἱ εἶπεν· πλα
μαθε· μὴ ἴδωτε τὰς γραφὰς· μετὰ τὴν δὲ
μὴν τοῦ θ· ἐν γὰρ τῇ ἀμαρτῇ, οὔτε γαμοῖσιν
οὔτε ἐξάμειζονται, ἀλλ' ὡς ἄλλοι τοῦ θ ἐνόησαν
εἶσιν· περὶ δὲ τῆς ἀμαρτίας ἐως τῶν μετὰ τῶν

οὐκ ἀνέγνωτε τὸ ρηθὲν ὑμῖν ὑπὸ τοῦ θυλάκου τοῦ
 ζωῆς τοῦ ἀνδραγαθῆ· καὶ ἰσάακ· καὶ ὁ θεὸς ἰακώβ.
 οὐκ ἔστιν ὁ θεὸς μετὰ ὑμῶν, ἀλλὰ ζομπῶν· καὶ ματ
 θῶ καὶ ρωῆ κήρυ· προσήλθοι τὰ δίδραχμα
 λαμβάνοντες τῷ πέτρῳ· καὶ εἶπον· ὁ δίδας
 καλὸς ὑμῶν οὐτελεῖ τὰ δίδραχμα; λήσ· ματ· καὶ
 ὅτε ῥηθὲν ῥηθὲν οἱ κί· αμ· προέφθασεν αὐτὸν
 ὁ ἰσ· λήσ· τί σοι δοκῶσι μῶν· οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς
 ἀποτίμων λαμβάνουσιν τέλη· ἐκώσων· ἀπὸ τῶν
 υἱῶν αὐτῶν· ἢ ἀπὸ τῶν ἀλλοτρίων· λήσ· αὐτῶ
 πέτρος· ἀπὸ τῶν ἀλλοτρίων· εἶ· φη αὐτῷ ὁ ἰσ·
 ἄρα με ἐλάθεοί ῥηθὲν οἱ υἱοὶ· ἴ· να δὲ μή σκαρδα
 λήσω μεν αὐτοῖς· πορὰ θῆς ῥηθὲν ἀλασταρ, βῶ
 λε ἀγκίστρον· καὶ τὸν ἀναβαίνοντα πρῶτον
 ἰχθυῖ· ἄρον· καὶ ἀνοίξας τὸ σόμα αὐτοῦ, δι
 ρήσῃς σατῆρα· ἐκθρον λαβῶν· δὸς αὐτοῖς, ἀντι
 εἰμοῦ καὶ σου· ἐνεκθῆν τῇ ὥρᾳ προσήλθοι
 μαθηταὶ τῷ ἰσ· λήσ· οἱ τῆς ἀράς ῥηθὲν ῥηθὲν
 ῥηθὲν βασιλεῶν οὐκ ὦν· καὶ πρὸς καλεσάν
 μενος ὁ ἰσ· παιδῶν· ῥηθὲν αὐτὸ ἐν μέσῳ αὐτῶν·
 καὶ ῥηθὲν· ἀμὲν λέγει ἡμῖν· εἴ· ῥηθὲν ῥηθὲν
 καὶ ῥηθὲν ὡς τὰ παιδῶν· οὐκ ῥηθὲν ῥηθὲν ῥηθὲν
 βασιλείαν τῶν οὐκ ὦν· ~ κεριακή τ κατὰ
 ῥηθὲν καὶ ρωῆ κήρυ· ἀπὸ τῆς προσήλθε· κατὰ
 τῷ ἰσ· ῥηθὲν αὐτὸν καὶ λήσ· εἶ· ῥηθὲν ῥηθὲν
 τὸν ἰσ· ὁ πῶς ἐλθῆναι καὶ κακῶς πάσχει·
 πολλαῖς γὰρ πί· πῶς εἰς τὸ πῶς καὶ πολλαῖς
 εἰς τὸ ῥηθὲν· καὶ προσήμεκα αὐτὸν τοῖς μα
 θῆταῖς σου· καὶ οὐκ ῥηθὲν ῥηθὲν αὐτὸν δεξα

ἰχ· α· εἰωτ

βασιλείαν τῶν οὐκ ὦν : ~ κεριακή τ κατὰ
 ῥηθὲν καὶ ρωῆ κήρυ· ἀπὸ τῆς προσήλθε· κατὰ
 τῷ ἰσ· ῥηθὲν αὐτὸν καὶ λήσ· εἶ· ῥηθὲν ῥηθὲν
 τὸν ἰσ· ὁ πῶς ἐλθῆναι καὶ κακῶς πάσχει·
 πολλαῖς γὰρ πί· πῶς εἰς τὸ πῶς καὶ πολλαῖς
 εἰς τὸ ῥηθὲν· καὶ προσήμεκα αὐτὸν τοῖς μα
 θῆταῖς σου· καὶ οὐκ ῥηθὲν ῥηθὲν αὐτὸν δεξα

πάσαι + ἀποκριθεὶς δὲ οἷς εἶπεν· ὦ Ἰησοῦ ἀπὸ
σοῦ καὶ δι' ἐγχαρμίσιν· ἕως ποῦ τε ἐδοῦμαι μεθ' ὑ
μῶν· ἕως ποῦ τε ἀνέξομαι ὑμῶν· φέρετέ μοι αὐ
τὸν αὐτὸν + καὶ ἐπιτίμις ἐν οἷς· καὶ ἐξήλθεν αὐ
τοῦ τοῦ δαίμονος· καὶ ἔθερα πάλιν οὐκ αὖτις
ἀπὸ τῆς αἵρας ἐκ ἡμῶν + τότε προσελθόντες οἱ
μαθηταὶ τῷ Ἰησοῦ διὰ τὸν ὅτι· εἶπον· διὰ τί ἡμεῖς οὐ
κὴν δυνάμεθα ἐμβαλεῖν αὐτὸν + ὁ δὲ ἰσθ' ἔπεν αὐτοῖς·
διὰ τί ὑμεῖς ἀπιστεῖτε ὑμῶν + ἀλλ' οὐ γὰρ λέγουσιν·
ἔὰν ἐχέτε πίστιν ὡς κόκκον σινάπεως· ἐρεῖτε
τῷ ὄρει τοῦτο + ἔστω βυθὸς ἐν τῷ ὄρει καὶ ἐ
ταῖς βυσσίναις + καὶ οὐδὲν ἀδυνατήσῃ ὑμῖν· τοῦ
τοῦ δὲ τοῦ ἡνός· οὐκ ἐκ πορὰς αὐτῶν· ἡμεῖς ἐν προ
σάκῃ καὶ ρητείᾳ + ἀλλ' ἀσφρόμενοι ὡς αἰτῶν
ἐν τῇ χαλιδίᾳ· ἔπεν αὐτοῖς οἷς· μέλλοι ὅ
ς τοῦ ἀνθρώπου παραδίδοσθαι ὑμῶν αἵματι καὶ
ἀποκτενοῖσιν αὐτόν· καὶ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἐ
γερθῆσθαι· τῇ β' τῆς τα' κατὰ ματ
ἔπεν οὖν ἐπὶ τοῖς ἐληλυθότας πρὸς αὐτὸν
Ἰουδαίους· οὐαὶ ὑμῖν γραμματεῖς καὶ φαρι
σαῖοι· ὑποκρίσθαι· ὅτι κατεθέτε τὰς οἰκίας τῶν
ἡρώων· καὶ προφάσεις μακρὰν προσαχόμενοι·
διὰ τοῦτο λήψαθε περισσότερον κρῖμα + οὐαὶ ὑ
μῖν γραμματεῖς καὶ φαρισαῖοι· ὑποκρίσθαι· ὅτι
κλείετε τὴν βασιλείαν τῶν οὐρανῶν ἐκ προαφέν
τῶν ἀνθρώπων· ὑμεῖς γὰρ οὐκ ἐστέρχασθε· οὐδὲ τοῖς
δοῦλοισι ἀφ' ἑστέρας ἐλθόν + οὐαὶ ὑμῖν γρ
αμματεῖς καὶ φαρισαῖοι· ὑποκρίσθαι· ὅτι πε
ρί ἀβελιπῶν θάλασσαν καὶ τὴν ξηρὰν· ποιῆσαι

Δημόσια Κεντρική Βιβλιοθήκη Βέροιας

πρώτον τὸ ἐν τοῦ τοῦ πόλεως καὶ τῆς παροφίδος· ἡ
 μαζήνεται καὶ τὸ ἐν τοῦ αἰτῶν καθαρόν· οὐαὶ ὑ
 μῖν γραμματεῖς καὶ φαρισαῖοι ὑποκριταί· ὅτι προ
 μοιᾶτε τὰ φοῖς καὶ κορίθμους· οἱ τίνες ἐξ ὧ
 θεν μενφαίνονται ὡραῖοι, ἐσωθεν δὲ γεμίοντες
 ὅς ἐσιν κερῶν· καὶ πάσης ἀκαθαρσίας· οὕτως
 καὶ ἡμεῖς ἐξ ὧθεν μενφάνεσθε τοῖς ἀνθρώποις δύναιο· ἐ
 σωθεν δὲ γεμίοντες ὑποκριταί ὡς κηλὶς καὶ οὐκ ἔστιν
 τί ὅτι πᾶς ὁ κόσμος κατὰ ματ

Κὶ πενὸν ὑπὸς τοῦ ἐλευθέρου πρὸς αἰτορίου
 δαίσις· οὐαὶ ὑμῖν γραμματεῖς καὶ φαρισαῖοι ὑ
 ποκριταί· ὅτι οἱ κοδομήτε τοὺς τὰ φοῖς τῶν προ
 φητῶν· καὶ κοδομήτε τὰ μνηστῆρα τῶν δίκαιων
 καὶ λέγετε· ὁ ἡμεῖς ἐν ταῖς ἡμέραις τῶν πρώτων ἡμε
 ρῶν οὐκ ἄν ἡμεῖς κοίμωμοι αὐτῶν· ἐν τῷ αἵματι τῶν
 προφητῶν· ὥς τε μαρτυρήτε ἑαυτοῖς· ὅτι ὑμεῖς
 ἐστέ τῶν φορὰς ἀνθρώπων τοῦ προφήτου· καὶ ἡμεῖς
 πληρώσατε τὸ μέτρον τῶν πρώτων ἡμεῶν· ὁ φθός
 ἡμεῶν καταχέδνται· πῶς φύγετε ἀπὸ τῆς κρι
 σῆς τοῦ θεοῦ· διαποῦτοι δοῦν ἡμεῖς ποσὴ
 μω πρὸς ὑμᾶς· προφήτας καὶ σοφοὺς· καὶ γρ
 αμματεῖς· καὶ ἐξ αὐτῶν ἀποκτενεῖτε καὶ σφύσε
 τε· καὶ ἐξ αὐτῶν μαρτυροῦντες ἐν ταῖς (ἡμεῖς γὰρ
 ἡμεῖς· καὶ δύνωμεν ἀπὸ πολλῶν ἄνθρωπων· ὅπως
 ἐλθὲν εἰς ὑμᾶς παρὰ μαρτυρίαν ἐκ χειρὸς μενο
 ἐπὶ τῆς γλῶσσης ἀπὸ τοῦ αἵματος αἱ ἐλ τοῦ δικαιο
 ου· ὡς τοῦ αἵματος βαπτισμοῦ ἡοὺ βαπτισμοῦ· ὅν
 ἐφάρσατε μετὰ τὸν τοῦ μαρτυρίου καὶ τοῦ θωσίου
 ρίου· ἀλλ' ὡς λέγει ὑμῖν· ὅτι ἡμεῖς πάντα παύ

τω ἀποτλήσκειται πῦρ· ἱεροσολῆμ· ἱερου
σαλῆμ· ἡ ἀποκτῆνοισαι τοὺς προφῆτας· καὶ
δοξολοῖσαι τοὺς ἀπεσταλμένους πρὸς αὐτὸν·
ποσάκις ἠθέλησαν ἐπιβῆσαι αὐτὸν· ὅτι
οὐκ ἔστιν ἐπὶ αὐτὸν ὁρμίστα μορτίαι ἐαυτοῦ·
ὑποτασσέμενοι αὐτῷ· καὶ οὐκ ἠθέλησαν· ἰδοὺ αὐ
φίται ἡμῶν οἱ κοσμήτορες· ἀλλὰ οὐκ ἔστιν
ἐν ἡμῶν· οὐκ ἔστιν ἰδοὺτε ἀπαρτί· ἕως ἄν ἔπητε·
εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος ἐν ὀνόματι κυρίου· καὶ
ἐξελεύμενος· ἐπορεύσεται ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ· καὶ
πρὸς ἡλδομ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· ἐπὶ δὲ ἔξαι αὐ
τῶν οἱ κοδομαὶ τοῦ ἱεροῦ· ὁ δὲ ἰσχυρὸς περ
αὐτοῖς· οὐ βλέπετε ταῦτα πάντα· ἀλλὰ
ζωῶν· οὐκ ἔστιν ἀφ' ἧς ὁ δὲ λείδοις ἐπὶ λείδοις·
οὐκ ἀπαλυνθήσεται· τῇ ἑστῇ ἰατρικῇ·
ἡ πενὴς τοῖς ἐαυτοῦ μαθηταῖς· οὐκ ἔστιν
μαρτυρία τέλος· οὐκ ἔστιν σωθήσεται· καὶ κηρύχθη
σθαι τοῦτο τὸ ἀγαθὸν τῆς βασιλείας ἐν
λητῇ οἰκουμένη· ἡ μαρτυρία ἰσχυρὸν πᾶσι τοῖς
θμεσί· καὶ τότε ἔξαι τὸ τέλος· ὅταν οὐκ ἔ
δητε τὸ δέλεμα τῆς ἐρημώσεως· τὸ ἡθελῶ
αὐτὸν ἡλ τοῦ προφήτου· ἕως ἐν τῷ πωρῷ· ὁ
αὐτὸς ἡρώσιμων μορτίω· τότε οἱ ἐν ἡιουδαίᾳ
φάματι θρῆναι οὐκ ἔστιν· ὁ ἐπὶ τοῦ δώματος·
μὴ κατὰ βαιμῶν αὐτῶν οἱ κτήσασαί αὐτοῦ·
καὶ ὁ ἐν τῷ ἁγίῳ· μὴ ἐπὶ τῇ ἁγίᾳ πίστω· αὐ
ραι ταῖς μαρτυρίαις αὐτοῦ· οὐκ ἔστιν ταῖς ἐν
ἐρημώσεσι· καὶ ταῖς θηλαζούσαις· ἐν ἐρημώσεσι
ταῖς ἡμέραις· προσὰ ἡμέρας δὲ ἡμαρτίαν

τὸν ἵον τοῦ ἀνδρὸς ἐρχόμενον ἐπὶ τῶν μεφελῶν
 τοῦ οἴκου, μετὰ δυνάμει καὶ δόξῃ μεγάλῃ·
 καὶ ἀποστέλλει τοὺς ἀγγέλους αὐτοῦ μετὰ σαλπί-
 γος φωνῆς μεγάλης· καὶ ἐπιφωνοῦσιν τοῖς
 σκλάβοις αὐτοῦ, ἐν τῶν τε αὐτῶν ἀνέμων·
 ἀπακρυνομένων, ἕως ἀκρυνάσθων· ἀποδέ-
 σθαι σὺν κίβητι· μαθὲν τὴν παραβολὴν· ὅτι ἀνὴρ
 οὐκ ἔδωκεν ἀπαιτῆσαι ἀπαλός· καὶ ταφυμα-
 σκεφύη, γιγνοσκέτι ὅτι ἐγγὺς τοῦ θένος· οὕτως
 καὶ ἡμεῖς· ὅτι ἀνὴρ ἰδοὺ ταῦτα παρτα, γιγνοσ-
 κετι· ὅτι ἐγγὺς εἰν ἐπιθύραις· γρηγορεῖτε οἶον
 ὅτι οὐκοῦν ἴδατε ποῖα ὥραν οὐκ ἐμὴν ἐρχεται· ἐ-
 κδημὸς γιγνοσκετι· ὅτι ἡ δὲ οὐκ ὁδεσπο-
 ποῖα φύλακῃ οὐκ ἐπὶ τῆς ἐρχεται, ἐγρηγορή-
 αμ· καὶ οὐκ ἀσθενήσονται τὴν οἰκίαν
 αὐτοῦ· δεῖ αὐτοῦ καὶ ἡμεῖς, γιγνοσκετι μοι·
 ὅτι ἡ ὥρα οὐκ ἔστι, οἷός τοῦ ἀνδρὸς ἐρχεται·
 τίς ἀρνεῖται εἰν ὁπισθὸν δούλος καὶ φρονημὸς·
 οὐκ ἔστιν ὁ σκλάβος αὐτοῦ ἐπὶ τῆς θεραπείας
 αὐτοῦ· τοῦ δὲ δοῦναι αὐτοῖς τὴν τροφὴν ἐν
 καιρῷ· μακάριος ὁ δούλος ἐκεῖνος, ὃν ἐλ-
 θὼν οὐκ αὐτοῦ, ἀρνήσεται ποιοῦντα οὕτως· ἂν
 μὴ λέγω ὑμῖν· ὅτι ἐπὶ πάνσι τοῖς ἐπαρχοῦ
 σὶν αὐτοῦ κατὰ στήθεα αὐτοῦ· ἔα δὲ ἄνθρωπος
 οὐκ ἔστι δούλος ἐκ γένους ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ· ἀρ-
 μήξθ' οὐκ ἐμὸν ἐλθόν, καὶ ἀρξήται τύπην τοῦ
 σκλάβου· ὡς εἶδ' καὶ πύργον ἀπὸ τῶν με-
 θυόρων, ἡξεί οὐκ ἐμὸν δούλου ἐκ γένους, ἐν ἡμέ-
 ρῃ οὐ προσδοκᾷ· καὶ ἐν ὥρᾳ ἣ οὐ γινώσκ'·

κ̅ ρ̅
 κ̅ ρ̅ ι̅ α̅ ἡ̅ χ̅ ρ̅ ε̅ ω̅ ι̅ α̅

αὐτὸν καὶ τὸν ἄρμονον· ἡ δὲ πενθερὰ σὺν ἑαυτῇ
 κατέκρητο πρῶτον· καὶ ἀθέως λέγουσιν αὐτῇ
 τὴν περὶ αὐτῆς· καὶ προσελθὼν· ἡμίρην αὐτῇ
 κρατήσας τῆς χειρὸς αὐτῆς· καὶ ἀφῆκεν αὐ-
 τὴν ὁ πύργος ἀθέως· καὶ διηκουσι αὐτοῖς·
 ὅψια δὲ γενομένης ὅτε ἐδύσθη ἡλιος· ἔφερον
 πρὸς αὐτοὺς πάντα τοὺς κακῶς ἔχοντάς· καὶ
 τοὺς δαιμονιζομένους· καὶ ἡ πόλις ὅλη· ἐπι-
 λυσσάμενος νόσῳ πρὸς τὴν θυγατέρα· καὶ ἐθεράπευ-
 σεν πολλοὺς· κακῶς ἔχοντάς· ποικιλὰς νόσους·
 καὶ δαιμονία πάντα· ἔξελθεν· καὶ οὐκ
 ἦν ἄλλαντα δαιμονία ὅτι ἡ δὲ (ἄρμονον)
 ἀπεπρωτὶς ἐν νεοφυλίᾳ· ἀμασάς ἐξηλθεν·
 καὶ ἀπῆλθεν οἱ ἴσθες ἐρημον τοπὸν· καὶ ἡ
 προσήλυτος· τὴν πατέρα τῆς ἰβ. αὐτῆς· ἡ μαρ-
 τὴ καὶ ῥωτῆς· ἡ (ἄρμονον) μαθηταὶ τῶ ἄρμονον
 καὶ οἱ τῶν φαρισαίων ῥησάου τε· καὶ ῥ-
 χονταὶ καὶ λεγοσὶν αὐτῇ· διὰ τί οἱ μαθη-
 τὰί τῶ ἄρμονον καὶ οἱ τῶν φαρισαίων ῥησάου
 σὶν· οἱ δὲ σοὶ μαθηταὶ οὐ ῥησάουσι· καὶ ἡ
 πεναι τοῖς οἷς· καὶ διὸν αὐταὶ οἱ υἱοὶ τοῦ μὲν
 μεφωρός· ἐν ᾧ οὐ μόνον μετὰ αὐτῶν ἐστὶν ῥη-
 σάου· ὅσον ἱερονομεῖ ἀντὶ τῶν ἐχούστων
 μὲν μόνον οὐδὲν αὐταὶ ῥησάου· ἐλά-
 σον δὲ ἡμεῖς· ὅταν ἀπαρθῇ ἀπὸ τῶν οὐ
 μφίος· καὶ τοτε ῥησάουσι· ἐνεκὸν αὐταῖς
 ἡμεῖς αὐτοὶ· καὶ οὐδὲν ἐπὶ βλάμῳ αὐτοῖς
 αὐτοὶ φρονεῖ πρὸς αὐτῇ· ἐπὶ ἡμαρτῇ παλαι-
 ᾷ· ἡ δὲ μὲν· αὐτοὶ τὸ πληρωμαὶ αὐτοῦ τοῦ καὶ

μον του παλαιου· και χηροισι μαρτυρειν·
και ουδ' εσ' αλληλοις μορμυρον· εσ' ασκοις παλαι
οις· εδ' εμνη· ρησθ' ο οϊμος ο νεος τοις ασκοις·
και ο οϊμος συχηται· και οι ασκοι αποχοιω
ται· αλλοι μορμυρον εσ' ασκοις και νεοις υλη
τε ορ· ~ σπ ιβ κ' ματ

Και ρωε κηρω· συ πορδομεν τουτου αυ
ποιεριχα η κολουθησεν αυτω οχλος πολιος·
και ιδου δεστυφλοι καθημενοι παρα πλυ οδου
ακουσαρτες· οτι ισ παραζει εγραξαν λεγον
τις· ελεησον ημας· κε· υιοσ δαδ· και εσ
οις· εφωρυσεν αυτοις και επεν· τι θελετε ποι
ησω υμιν· λεγοισιν αυτω· κε· ινα ανοιχθωσιν
ιμων οι οφθαλμοι· σπλαχνη θεισ' εσ' οις· ι
φατο των οφθαλμων αυτων· και εθεωσ' ανε
βδεν· φανεν αυτοις οι οφθαλμοι· και η κολουθησεν

κρια η ιβ κ' ματθαι· εν αυτω· ~

Και ρωε κηρω· μεαρισκος τις προσηλθε
τωτου· ροιπε των αυτων και λεγων· διδασκ
λεγαθε· τι εαυτον ποιησω· ινα εχω ζωην αιω
νιον· οδε επεν αυτω· τι με λεγεις εαυτον·
ουδ' εσ' εαυτου· εμνη εις οθς· εδ' εδελισθσει
εμνη εις τω ζωην· τηρησοντας εντολας· λεγ
αυτω· ποιας· οδε ισ επεν· το ου φονεω εσ·
ου μοιχευω εσ· ου κλεψω εσ· ου ψευδομαρτυρ
ω εσ· τιματον πρην και τωμην· και αβλαπη
σθστον πλησιον σου ως εαυτον· λεγθαυτω
ο μεαρισκος· παρτα ταυτα εφ' υλαξαμεν
εν μεο τη τωσμου· τις τι υερω· εφ' αυτω

αλ
εω α ιχ ρ

οἱ οὖν· εἰδελέγετε λόγος εἶναι· ἔπαυσε πῶλησόντα
 τὰ ὑπάρχοντα καὶ δὸς πτωχοῖς· καὶ ἐξείσθη
 ταυρὸς ἑνὸς αὐτῶν· καὶ δάρο ἀκολούθησεν· ὁ
 κοῖτα δὲ ὄνειαριστος τοῦ λόγου· ἀπῆλθεν
 λιποῦμενος· καὶ γὰρ ἐχρημάτισεν πολλὰ·
 οὐδὲ ἴσ' ἔπειτα τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· ἀμὲν λέ-
 γουσιν· ὅτι δὲ σκολωσπλοῖστος ἔσεται· ἔσται
 εἰς τὴν βασιλείαν τῶν οὐρανῶν· παλὶν δὲ λέγω
 ὑμῖν· ἀνοπώτερον ἐστὶ· καὶ ἰσχυρότερη ἀπρὶς
 ματος· ῥαφιδὸς δὲ ἐλθῆν· ἐπὶ πλοῖον γε τὴν
 βασιλείαν τοῦ θυ ἔσεται· ἀκούσαντες δὲ
 οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· ἔξε πλῆτον τοσφ' ἔσαν
 λέγοντες· τίς ἄρα δύναται σωθῆναι· καὶ
 ἐμβλεῖς δὲ τῷ ἰσ' ἔπειτα αὐτοῖς· παρὰ ἀρχαῖς
 τούτου· ἀδυνατοῦν ἐστὶ· παρὰ δὲ τῷ παντὶ
 δυνατὸν ἐστὶν····· τῇ β' τῆς 17' ἐν' ἡ' μαρ· καὶ

Π ὡς αἰρῶν ἡμῶν· σὺμβούλιον ἐποίησαν· ὅτι
 φάρισαιο κατὰ τοῦ ἰουδαίου τῶν ἡρώδων·
 ὅπως αὐτὸν ἀπαλεσώσιν· καὶ οἱ οὖν ἀνέχοντες
 τὰς αἰτῶν μαθητῶν αὐτοῦ πρὸς τὴν θάλασσαν·
 καὶ πολὺ πλῆθος ἀπὸ τῆς γαλιλαίας ἠκολούθη-
 σε αὐτῷ· καὶ ἀπὸ τῆς ἰουδαίας· καὶ ἀπὸ ἱε-
 ροσολυμῶν· καὶ ἀπὸ τῆς ἰδουμαίας· καὶ πε-
 ραι τοῦ ἰορδάνου· καὶ οἱ περὶ τυρῶν καὶ σί-
 δωναι πλῆθος πολὺ· ἀκούσαντες ὅτι αὐτὸς
 ἐκῆλθεν πρὸς αὐτόν· καὶ ἔπειτα τοῖς μαθη-
 ταῖς αὐτοῦ· ἵνα πλοῖον πρὸς κατὰ τὴν ἑρῶν
 ἀποστείλῃ· ἵνα μὴ λιβώσιν αὐτόν· πολλοὶ γάρ
 ἐθεράπευσεν· ὥστε ἐπὶ πῖπτον αὐτῷ· ἵνα

δύναται σαταράσ· σαταράρ εἰβάλεν· καὶ ἔδωκε
 βασιλείαν ἐφ' αὐτὴν μεριάθῃ· οὐ δύναται σαθῆ-
 ραίη βασιλεία ἐκείνη· καὶ εἰς αὐτοὺς οἰκίαν ἐφ' ἧν
 αὐτὴν μεριάθῃ, οὐ δύναται σαθῆ· ραίη οἰκία ἐ-
 κείνη· καὶ ὁ σαταράρ ἀρεστὴν ἐφ' αὐτὸν
 καὶ μεμψίσαι· οὐ δύναται σαθῆναι· ἀλλὰ τέχος
 ἔχει· οὐδὲς δύναται πᾶσα ἡ πόλις τοῦ ἰσχυροῦ εἰσελ-
 θεῖν· ὅτι οἱ κίονες αὐτοῦ διαρπάσαι· εἰς ἡμῶν
 πρῶτον τὸν ἰσχυρὸν ὀλοῖται· καὶ τὸ τέτις οἰκίαν
 αὐτοῦ διαρπάσει· ~

Περὶ οὗτο· ἀμὲν λέγει ἡμῖν· ὅτι πάντα
 ἀφ' ἐθ' ὄντα τὰ ἀμαρτηματα τοῖς υἱοῖς
 τῶν ἀνθρώπων· καὶ βλασφημίαι ὅσας ἀνβλ-
 σφημίσωσιν· ὅς δ' αὖν βλασφημίσῃ ὁ ἄνθρωπος
 πρὸς τὸ ἅγιον, οὐκ ἔχει ἄφεσιν ἕως τοῦ αἰῶνα·
 ἀμενοχός ἐστὶν αἰῶνίου κρίσεως· ὅτι ἐλθόν,
 πῦρ ἀκαθάρτου ἔχει· ἐρχονται οὖν οἱ ἀδελφοί
 καὶ ἡ μήρ αὐτοῦ, καὶ ὁ ξωζῶν τις· ἀπέστειλεν
 πρὸς αὐτὸν· φωνοῦντες αὐτὸν· εἰ ποιοῦντα
 τῷ· ἰδοὺ ἡ μήρ σου καὶ οἱ ἀδελφοί σου καὶ αἱ ἀ-
 δελφαὶ σου ὁ ξωζήτοισιν αὐτὰς· καὶ ἀπεκρίθη
 αὐτοῖς λέγων· τίς ἐστὶν ἡ μήρ μου καὶ οἱ ἀδελ-
 φοί μου· καὶ περὶ βλεψάμενος κενὴ καὶ
 τοῖς πρὸς αὐτὸν καθήμενοις, λέγει· ἰδοὺ ἡ μήρ
 μου καὶ οἱ ἀδελφοί μου· ὅς γὰρ αὐτοὶ ποιήσῃ
 τὸ θέλημα τοῦ θ'· οὗτος ἀδελφός μου καὶ
 μήρ ἐστίν· ~

Καὶ ἔτι εἰς τὸν αἰῶνα· ἤρξατο οὖν ὁ δίδασκαλος
 πρὸς αὐτοὺς λέγων· καὶ ὡς ἔχθη πρὸς αὐτὸν ὁ λόγος

πολὺν, ὡς τε αὐτὸν ἐμβαρταίης τὸ πλοῖον· καθή-
δουσαν τῇ θαλάσῃ· καὶ πᾶς ὁ ὄχλος προστήν-
θαλασσαν ἐπὶ τῷ γησίν· καὶ ἐδίδασκεσαν
τοῖς ἐν παραβολαῖς πολλὰ· καὶ ἔλθον αὐ-
τοῖς ἐν τῇ διδασκίᾳ αὐτοῦ· ἀκούετε· ἰδοὺ ἐξῆλ-
θεν ὁ ἀσθεὶς τὸν ἀσθεῖσαι· καὶ ἐγένετο ἐν τῷ
ἀσθεῖρι· ὁ μὲν ἐπὶ πρὸς παράτην ὁδὸν· καὶ ἦλ-
θεν τῷ πετρώει· καὶ κατέφασεν αὐτὸ· ἄλλο
δὲ ἐπὶ πρὸς ὁπὶ τὸ πετρώει, ὅπου οὐκ ἔχεν γῆν
πολλήν· καὶ ἐβλήθη ἐξ ἀμέτρου λευδίᾳ τὸ μὴ ἐ-
χθρὸ βάθος γῆς· ἡ λίου δὲ ἀνατείλαντος ἐκασ-
ματίᾳ· καὶ διὰ τὸ μὴ ἐχθρὸν ῥίζαν, ἐξηρανθῆ·
καὶ ἄλλο ἐπὶ πρὸς ἐπὶ τὰς ἀκάνθας· καὶ ἀνέ-
βησαν αἱ ἀκάνθαι καὶ συνέπριξαν αὐτὸ, καὶ
καρπὸν οὐκ ἔδωκεν· καὶ ἄλλο ἐπὶ πρὸς ἐπὶ τῷ
γῆν τῷ καλῷ· καὶ ἐδίδου καρπὸν ἀναβαίνον-
τα· καὶ αὐξάνοντα· καὶ ἐφθέρην ἐν τριᾶκον-
τα, καὶ ἐν ὁξήκοντα, καὶ ἐν εκατόν· καὶ ἐ-
λθον· ὁ ἐχθρὸς τὰ ἀκούειν ἀκούειν· ~

ὡ καὶ ῥῶϊ ἐκ γῆ· σὺμβούλιον ἐλάβον πάντες
οἱ φαρισαῖοι κατὰ τοῦτο ὅπως αὐτὸν παρῆλ-
θωσιν ἐν λόγῳ· καὶ ἀπὸ σέλλοισιν αὐτῷ τοῖς μα-
θηταῖς αὐτῶν μετὰ τῶν ἡρώδων λήγοντες· δι-
δάσκαλε· οἶδαμεν ὅτι ἀληθεῖς εἶ καὶ τῷ ὁδὸν
τοῦ θῦ ἐναληθῆ διδασκαλῆς· καὶ οὐ μέλει σοι
περὶ οὐδεμὸς· οὐ γὰρ βλέπεις εἰς πρόσωπον
ἀνθρώπων· ἀλλ' ἐπὶ οὐκ ἔστιν ἡμῶν πίστις δοκῇ· ἐξ ἑστῆν δὲ
μακρὸν καὶ σαρὶ· ἡ οὐ· γινώσκεις οἱ σὺ τῷ
πονηρίᾳ αὐτῶν, εἶπεν· τί με πηγάς ἔχεις

ὑποκριταί· ἐπιδείξατέ μοι τὸ νόμισμα τοῦ κυ-
 σου· οἱ δὲ προσήνεγκαν αὐτῷ δηράριον· καὶ
 ἔλαβ' αὐτοῖς· τίμωσι δὲ κῶν αὕτη καὶ ἡ ἐπιγραφὴ·
 λήγουσιν αὐτῷ· καὶ σαρος· τὸ τελεῖται αὐτοῖς· αἱ
 πόδες οὖν τὰ καὶ σαρος· καὶ σαρί· καὶ τὰ τοῦ
 θῦ· τῷ θῷ· καὶ αἰκον' σαρτις ἐθαύμασαν·
 καὶ ἀφ' ἐν τῷ αὐτοῦ ἀπήλθον·

Θ' 11
 εὐ β' η' χ' δ'

ἰ περὶ οὗ τῆς παραβολῆς ταύτης·
 ἀποσπείλει οἱ κοδωνόπης· ὅς τις ἐφύτασεν ἀ-
 μπελώνα καὶ φάσμα αὐτῷ περὶ ἔθηκεν· καὶ ὡ-
 ρυξεν ἐν αὐτῷ ληνόν· καὶ ἀκοδμήσεν πύργον·
 καὶ ἐξέδοτο αὐτὸν γεωργοῖς· καὶ ἀπεδήμησεν·
 ὅτε δὲ ἤγγισεν ὁ καιρὸς τῶν καρπῶν· ἀ-
 πέστειλεν τοῖς δούλοις αὐτοῦ πρὸς τοὺς γεωργούς·
 λαβὴν τοῖς καρποῖς αὐτοῦ· καὶ λαβόντες οἱ γεωρ-
 γοὶ τοῖς δούλοις αὐτοῦ· ὄρμεν' ἔδωκαν· ὁ δὲ ἀπέ-
 κτηναν· ὁ δὲ ἐλίθοβολησαν· πάλιν ἀπέστει-
 λεν ἄλλους δούλους πλείονας τῶν πρώτων· καὶ ἐ-
 ποίησαν αὐτοῖς ὡς αὐτῶς· ἕτερον ἀπέστειλεν
 πρὸς αὐτοὺς τὸν υἱὸν αὐτοῦ λέγων· ἐντραπήσου
 ται τὸν υἱόν μου· ὁ δὲ γεωργοὶ ἰδόντες τὸν υἱ-
 ὸν· εἶπον ἐν ἑαυτοῖς· οὗτός ἐστιν ὁ κληρονομῶν·
 δάτε ἀποκτενέμεν αὐτόν· καὶ κατὰσχόμεν
 αὐτοῦ τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ· καὶ λαβόν-
 τες αὐτόν ἐξέβαλον ἐξω τοῦ ἀμπελώρου· καὶ ἀ-
 πέκτειναν· ὅταν οὖν ἔλθῃ ὁ κύριος τοῦ ἀμ-
 πελώρου· τί ποιήσει τοῖς γεωργοῖς ἐκ τῶν λήγουσιν
 αὐτῷ· κακοῖς κακῶς ἀπολέσει αὐτοὺς· καὶ τὸν
 ἀμπελώνα ἐδώσεται ἄλλοις γεωργοῖς· οἱ τὴν δὲ

ἀποδώσουσιν τοῖς καρποῖς ἐν τοῖς καιροῖς αὐτῶν·
λάβει αὐτοῖς ὁ ὁ· οὐδέποτε ἀνέγραψε ἐν ταῖς γρα-
φαῖς· λίθον οὐκ ἀπεδοκίμασαν οἱ οἱ κοδομοῦντες·
οὗτος ἐβλήθη εἰς κεφαλὴν γονίᾳς· παρὰ αὐτοῦ ἐχέ-
ρητο αὐτή· καὶ ἐστὶν θανάσιμος ἐν ὀφθαλμοῖς ἡμῶν·

ὦ καιρῶ ἐκείνῳ· καὶ ἐπὶ τῇ ἐκείνῃ καὶ ἐπὶ τῇ καὶ ἐπὶ τῇ
προσῆλθον οἱ μαθηταὶ τῷ Ἰωάννῃ κατὰ μόνας καὶ ἡρώ-
τισαν αὐτοὺς περὶ αὐτοῦ (ὡς τοῖς δώδεκα καὶ τὴν π-
ραβοχὴν καὶ ἐλάβον αὐτοῖς· ἡμῖν δὲ δοταὶ γνῶναι
τὸ μυστήριον τῆς βασιλείας τοῦ θύ· ἐκείνοις δὲ
τοῖς ἐξω ἐν παραβολαῖς τὰ πάντα γίνεσθαι· ἵνα
βλέποντες βλέπωσι· καὶ ἀκούοντες ἀκούωσι,
καὶ μὴ συνῶσι· μήποτε ἐπίσρῃψοσι καὶ ἀφε-
θῇ αὐτοῖς τὰ ἀμύτηματα· καὶ λαβὼν αὐτοῖς· οὐ-
κοῖδατε τὴν παραβολὴν ταύτην· καὶ πῶς πα-
σαι τὰς παραβολὰς γνῶσεσθε· ὁ σείρων τὸν
λόγον σείρει· οὗτοι δὲ γοῖν οἱ παραπλῆξοντες· ὅτι
σπέρνεται ὁ λόγος· καὶ ὅταν ἀκούωσιν· ἀθέως
ἐρχεται ὁ σατανᾶς καὶ αἰρεῖ τὸν λόγον τὸν σπέρ-
μενον ἐν ταῖς καρδίαις αὐτῶν· καὶ οὗτοι γοῖν
ὁμοίως· οἱ ἐπὶ τὰ πετρώδη σπέρνόμενοι· οἱ ὅ-
ταν ἀκούωσι τὸν λόγον· ἀθέως μεταχάρως
λαμβάνουσιν αὐτόν· καὶ οὐκ ἔχουσιν ῥίζαν ἐν
ἐαυτοῖς· ἀλλὰ πρὸς καιροὺς γοῖν· ἔταιγενεομε-
νης θλίψως· ἡ δὲ ὀσμὴ τοῦ λόγου· ἀθέως
σκαρδαλίζονται· καὶ οὗτοι γοῖν οἱ εἰς τὰς ἀ-
καρπῆς σπέρνόμενοι· οἱ τὸν λόγον ἀκούοντες
καὶ ἀμείψονται τὸν αἰῶνα τοῦτου· καὶ ἡ ἀπά-
τη τοῦ πλοῦτου· καὶ αἱ πρὶ τὰ λοιπὰ ἐπὶ θυμῷ

ὅς πορεύμεναι, συμπρίγοις τὸν λοῦρον καὶ ἄ-
 καρπος γίνεσθαι· καὶ οὗτοι ἔσιν· ὁ ἐπὶ τῇ
 γῇ τῇ καλῇ ἀναρῶν· οἱ τὴν ἀκούοις τὸν
 λόγον, καὶ παραδέχονται, καὶ καρποφοροῦσιν·
 ἐν τριάκοντα, καὶ ἐν ἑξήκοντα, καὶ ἐν ἑκατὸν,
 καὶ ἐλθὲν αὐτοῖς· μή τι ὀλίγον εἶχαι· ἴνα
 ὑπὸ τὸ μὲν δῶν τεθῇ, ἢ ὑπὸ τῇ γῇ· οὐχ ἴνα ἐ-
 πὶ τῇ γῇ ἀντί τεθῇ· οὐ γὰρ ἐστὶν τι κρυπτόν, ὃ
 ἔσται μὴ φανερόν· οὐδὲ ἐκρύβτε ἀπὸ κρυφού,
 ἀλλ' ἴνα ὅς φανερόν ἐλθῇ· εἰπερ ἐλθὼν ταῦτα
 κούφην ἀκούει· τὰ ἐν τῇ γῇ·

Κὶ πενὸς τοῖς ἐκ τούτου μαθηταῖς· βλέπετε πᾶ-
 ντες· ἐν ὧν μέτρον μετρήτε, μετρηθήσεται ὑμῖν·
 καὶ προστεθήσεται ὑμῖν τοῖς ἀκούοις· ὅς γὰρ
 ἂν ἐχει δέσθῃσθαι αὐτῷ, καὶ ὅς οὐ μέλει καὶ ὃ ἐ-
 χει ἀρθῇσθαι ἀπ' αὐτοῦ· καὶ εἰλεγε· οὕτως
 ἐστὶν ἡ βασιλεία τοῦ θύ· ὅς ἐάν τις βάλῃ τὸν
 σόρον ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ καθάσθῃ καὶ ἐκείρῃ
 κύματα καὶ ἡμέραν· καὶ ὁ σόρος βλαστᾷ καὶ
 μέλει, ὥς οὐκ ἔδεν αὐτός· αὐτομάτη γὰρ
 ἡ γῆ καρποφορεῖ· πρῶτον χορτόν, ἔπειτα σάχιν,
 ἔπειτα πλήρη σίτον ἐν τῷ σάχιν· ὅταν δὲ παρ-
 δῶ ὁ καρπός, ἀθῶς ἀπὸ σέλι τοῦ δρέπαρον ὅτε
 παρέστηκεν ὁ θερισμός· καὶ ἐλθόν· τίμιον
 μοιῶσιν τῇ βασιλείᾳ τοῦ θύ· ἡ ἐν ποί-
 ἀ παραβολῇ παραβάλλωμεν αὐτῇ· ὥς κό-
 κκον (ὡς ἄπεως· ὅς ὅταν ἀναρῇ ἐπὶ τῆς
 γῆς· μικρότερος πάντων τῶν σπερμάτων
 ἐστὶν τῶν ἐπὶ τῆς γῆς· καὶ ὅταν ἀναρῇ·

ἀραβαίνει καὶ γίνεσθαι πάντων τῶν λαχάρων κί-
 ζων· καὶ ποιεῖν ἡγάδιον μέγαλον· ὡς τε δύναιτο
 πὸ τὴν σκίαν αὐτοῦ τὰ πετρήματα τοῦ οὐνοῦ κατὰ
 σκηνοῦν· καὶ τοιαύταις παραβολαῖς πολλαῖς
 ἐλάλει αὐτοῖς τὸν λόγον καθὼς ἐδύνατο αὐτοῦ
 εἰπεῖν· χωρὶς δὲ παραβολῆς οὐ κηλεύει αὐτοῖς· κα-
 τὰ δὲ τὴν ἐκ τῆς 103 ἀμ. **Κ**αὶ ἐπὶ δὲ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ ἀπέλυσεν πάντας·
 καὶ ἵπεν ὅτι τοῖς ἐκ τῆς 103 ἀμ. μαθηταῖς· καὶ ἵπεν ὅτι
 ὁ δὲ δὴν εἰς τὸ πέραν καὶ ἀφέντες τὸν ὄχλον·
 παραλαμβάνουσιν αὐτὸν ὡς ἦν ἐν τῷ πλοίῳ· καὶ
 ἄλλα δὲ πλοῖα ἦν μετ' αὐτοῦ· καὶ γίνεσθαι λα-
 λαί ἀρέμου μέγαλη· τὰ δὲ κύματα· ἐπε-
 βαλλεν δὲ τὸ πλοῖον· ὡς τε αὐτὸ ἦδη κινεῖσθαι
 καὶ ἦν αὐτὸς ἐπὶ τῇ πρύμνῃ· ἐπὶ τὸ προσε-
 φάλαγον καθέδων· καὶ διερχομένους αὐτὸν·
 καὶ λήγουσιν αὐτῷ· δίδας καλε· οὐ μέλθοσι· ὅτι
 ἀπολύμεθα· καὶ διερχομένους ἐπετρήματα
 τῷ ἀρέμῳ καὶ εἶπεν τῇ θαλάσσῃ· σιῶπα·
 πεφίμασο· καὶ ἐκόπασεν ὁ ἀρέμος· καὶ ἐγέ-
 νετο γαλήνη μέγαλη· καὶ ὁ περ αὐτοῖς· τίθει
 λοι ἐσεόντως· πῶς οὐκ ἔχθε πίστιν· καὶ ἐφο-
 βήθησαν φόβον μέγα· καὶ ἔλθον πρὸς αὐ-
 τὸν· τίς ἄρα οὗτος ἐστὶν ὅτι καὶ ὁ ἀρέμος
 καὶ ἡ θάλασσα ὑπακούουσιν αὐτῷ· **Κ**αὶ ἐπὶ τῇ 103 ἀμ.
Καὶ ῥῶς ἐκείνῳ· ἦλθεν οὖν ὁ πέραν καὶ ἦν μετ' αὐ-
 τῇ θαλάσσῃ· δὲ τὴν χώραν τῶν γαδαρηνῶν· καὶ
 ἐξελθόντι αὐτῷ ἐκ τοῦ πλοῖου δι' ἐξωσπλήντη
 σεν αὐτῷ ἐκ τῶν μετ' αὐτῶν ἀνδρῶν· ἐν πρὶ αὐ-
 καθάρτω· ὅς τιν' κατόικησιν ἔχεν ἐν τοῖς μετ'

μασίμ· καὶ οὐτε ἀλίστοισι οὐδεὶς ἰδὼν αὐτὸν
δῆσαι· διὰ τοῦ αὐτοῦ πολλάκις πέδαις καὶ ἀλίστοϊ
δεδεσθαι· καὶ διέσπασθαι ἀπ' αὐτοῦ τὰς ἀλίστας καὶ
τὰς πέδας σιντεπρίφθαι· καὶ οὐδεὶς αὐτὸν ἰσχύει
δαμάσαι· καὶ διὰ παρτοῦ ρυκτοῦ καὶ ἡμῶς
ἐν τοῖς ὄρεσι καὶ ἐν τοῖς κρημασίμιν· κρᾶζων καὶ
κατακόπτων ἐξ αὐτοῦ λίθοισ· ἰδὼν δὲ τὸν ἱὺν αὐ-
τὸ μακρόθεν ἐδραμὴν καὶ προσεκίνησεν αὐ-
τῷ· καὶ κρᾶζας φωνήμα ἅλ' εἶπεν· τί ἐμοὶ
καὶ σοὶ ἱὺ ἱὺ τοῦ θυτοῦ ἡφίστου· ὀρκίζω σε τὸν θυ-
μή με βασανίσῃς· εἰπεν γὰρ αὐτῷ· ἐξέλ-
θε τὸ πρῶτον ἀναθάρτον σὺ τοῦ ἀνδρός· καὶ ἐπιρῶ-
ται αὐτὸν πειρίσσομαι· καὶ ἀπεκρίθη λέγων· λε-
γὼν ὄνομα μοί· ὅτι πολλοὶ ὄντες· καὶ παρεκα-
λεῖ αὐτὸν πολλὰ· ἵνα μὴ αὐτοῖς ἀποστείλῃ ἐξωτὴς
χωρᾶς· ὡς δ' ἐκὼς πρὸς τῶν ὄρει ἀγέλη χοίρων
μεγαλὴ βοσκομένη· καὶ παρεκαλεσάμενος αὐτὸν
πάντες οἱ δαίμονες ἄφροντες· πέμψον ἡμᾶς
εἰς τοὺς χοίρους· ἵνα ἡμεῖς αὐτοῖς ὁσέλθωμεν·
καὶ ἐπέτρεψεν αὐτοῖς ἀβέως οἷός· καὶ ἐ-
ξελθόντα τὰ πρῶτα τὰ ἀναθάρτα, ὅσιν ἔλ-
θεν ἡμεῖς τοὺς χοίρους· καὶ ὀρέμεσαν ἡ ἀγέλη καὶ
τὰ τοῦ κρημνοῦ ἡ πῶν θαλάσσης· ἡσαν δὲ ὡς
δύο χίλιοι· καὶ ἐπνίγοντο ἐν τῇ θαλάσσῃ· οἱ
δὲ βόσκοντες τοὺς χοίρους ἐφύγον· καὶ ἀνήγα-
γαν εἰς τὴν πόλιν εἰς τοὺς ἀγροῖς· καὶ ἐξήλθον
ἰδεῖν πῶς ἐστὶ τὸ γεχνοός· καὶ ἔρχονται πρὸς τὸν
ἱὺν· καὶ θεωροῦσι τὸν δαίμονιζόμενον καθήμε-
νον καὶ ἱματισμένον καὶ σωφρονοῦντα·

τὸν ἰσχυρότατον λεγέμεναι, καὶ ἐφοβήθησαν·
διηγήσαντο δὲ αὐτοῖς οἱ ἰδόντες, πῶς ἐγένετο
τῷ δαιμονιζομένῳ· καὶ περὶ τῶν χοίρων· καὶ
ἤρξαντο παρακαλεῖν αὐτὸν, ἀπελθεῖν ἀπὸ τῶν
ὀρίων αὐτῶν· καὶ ἐμβαῖντος αὐτοῦ εἰς τὸ πλοῖ
ον, παρεκάλεσεν αὐτὸν ὁ δαίμων ἰαθεῖν ἵνα ἔμβαιεν
αὐτοῦ· ὁ δὲ ἴσ' οὐ καθήκεν αὐτόν· ἀλλὰ λέγει
αὐτῷ· ὕπαγε εἰς τὸν οἶκόν σου πρὸς τοὺς σοῖς,
καὶ ἀνάγγειλον αὐτοῖς ὅσα σοι οὕτως ἐποίησεν·
καὶ ἠλέησέν τε· καὶ ἀπῆλθεν· καὶ ἤρξατο
κηρύσσειν ἐν τῇ δεκαπόλει, ὅσα ἐποίησεν αὐ
τῷ ἴσ', καὶ πάντες ἐθαύμαζον· ^{ἐκ τῆς παρακλήσεως}
Καὶ ῥῶϊ ἐκείνῳ· ἔρχεται πρὸς τὸν ^{ἐκ τῆς παρακλήσεως} ^{καὶ}
ἵνα εἰς τῶν ἀρχόντων οὐνοῦ ματῖ ἁῖρος· καὶ ἰδὼν
αὐτὸν πίπῃ πρὸς τοὺς πόδας αὐτοῦ καὶ παρε
κάλῃ αὐτὸν πολλὰ λέγων· ὅτι τὸ θυγατρίον
μου ἐσχάτως ἐχθρὸν· ἵνα ἐλθὼν ἐπιθῇς αὐτῇ τὰς
χεῖρας, ὅπως σωθῇ καὶ ζῆσθαι· καὶ ἀπῆλθεν
μετ' αὐτοῦ· ἃ αὐτοῦ λαλοῦντος· ἔρχομαι ἀπὸ τοῦ ἀφ' ὧν
ῥῶϊ λέγοντες ὅτι ἡ θυγατρί σου ἀπέθανεν· τί ἐ
τίσκει μὲν τὸν δίδας καλόν· ὁ δὲ ἴσ' ἀθέως
αἰοῖσας τὸν λόγον λαλούμενον· λέγει τῷ ἀρχί
συνάγωγῳ· μή φοβῶν· μόνον πίστευε· καὶ
οὐ καθήκεν οὐδέ μιν αὐτῷ συνακολουθεῖν,
ἡμιπέτρον· καὶ ἰακώβον· καὶ ἰωάννην τὸν
ἀδελφὸν ἰακώβου· καὶ ἔρχεται εἰς τὸν οἶκον
τοῦ ἀρχισυνάγωγου· καὶ θεωρεῖ θορῶν καὶ
οντάς καὶ ἀλαλάζοντάς πολλὰ· καὶ εἰσὶν ἡ
θῶν λέγει αὐτοῖς· τί δορυβήσατε καὶ κλαίετε·

τὸ παιδίον οὐ καπέθαρσεν· ἀλλὰ καθάδην· καὶ
κατεγέλατο αὐτοῦ· ὁ δὲ ἐμβαλὼν πάντας·
παραλαμβάνει τὸν πρῶτον τοῦ παιδίου καὶ πλύνει
κεφαλὴν καὶ τοὺς μετὰ αὐτοῦ· καὶ ὅς πορεύεται ὅπ-
λιν τὸ παιδίον ἀναισθημένον· καὶ κρατήσας
τῆς χειρὸς τοῦ παιδίου λήγει αὐτὴν· ταλιθὰ, κού-
μι· ὅ ἐστι μεθελών δόμενον· τὸ κοράσιον· σὺ γὰρ ἐχθρὸς· ἡ δὲ ἀνέ τοῦ κοράσι-
ου περιεπάτη· ὡς γὰρ ἐτῶν δώδεκα· καὶ ἐξέστησαν
ἐν σαύῃ μεφάλη· καὶ ὁ γένετο αὐτοῖς πολλὰ ἰ-
μακὴ δέ οἱ γνώοντο· καὶ ὁ περὶ δόδῃναι αὐτῆς
φαγεῖν· καὶ ἐξηλθεν ἐκθῆν· καὶ ἦλθεν εἰς
πλὴν πρίδαν αὐτοῦ· καὶ ἀπολουθοῖσιν αὐτῷ (9)
μαθηταὶ αὐτοῦ· ~ ^{σὺ γὰρ} ^{τὸν} ^{κατὰ} ^{μὲν}

Π ὡς καιρῷ ἐκθῆν· ἐλάλησεν οἱ τοῖς ὄχλοις καὶ
τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ λέγων· ἐπὶ τῆς μὲν ἰσοῦς
καθέδρας ἐκάθισαν οἱ γραμματεῖς καὶ οἱ φα-
ρισαῖοι· πάντες οὖν ὅσα ἔσθῃ ἢ πωσὶν ἡμῶν
τηρεῖν· τηρεῖτε καὶ ποιεῖτε· κατὰ δὲ τὰ ἔργα
αὐτῶν μὴ ποιεῖτε· λέγοντες γὰρ καὶ οὐ ποιοῦ-
σιν· δόκοντες γὰρ φορτίαν βαρεῖαν καὶ δὲσφας
συνέτα· καὶ ἐπὶ τιθείασιν ἐπὶ τοῖς ὤμοισιν αὐ-
τῶν· τῷ δὲ δακτύλῳ αὐτῶν, οὐ θέλοισιν κί-
νῃσαι αὐτὰ· πάντες δὲ τὰ ἔργα αὐτῶν ποιοῦ-
σιν πρὸς τὸ δεσφῆναι τοὺς ἄνθρωποις· πλατύνου-
σιν δὲ τὰ φύλακῃν αὐτῶν καὶ μεγαλύνουσι
τὰ κράτος ἐδὰ πῶν ἱματίων αὐτῶν· φιλοῦσι
δὲ πλὴν πρωτοκλίσαν ἐν τοῖς δειπνοῖς· καὶ τὰς
πρωτοκαθεδρίας ἐν ταῖς (σωαῖ) γαῖς· καὶ ποῖον
ἀσπασμόν ἐν ταῖς ἡμέραις· καὶ καλεῖσθαι

ὑπὸ τῶν ἀνῶν· ράββι· ράββι· ἡμῶς δὲ μὴ κη
 θήτε ράββι· εἰς γὰρ ἐν ἡμῶν ὁ καθηγὴ τῆς ὁχρῆ·
 πάντες δὲ ἡμῶς ἀδελφοί εἰτε· καὶ πρῶτον καλέσῃτε
 ἡμῶν ὅτι τῆς γλῶσσης· ἡ γὰρ ἐστὶν ὁ πῦρ ἡμῶν ὁ ἐν τοῖς
 οὐνοῖς· μὴ δὲ κηθῇτε καθηγῇται· ἡ γὰρ ἐστὶν
 ἡμῶν ὁ καθηγὴ τῆς ὁχρῆ· ὁ δὲ κηβρὸν ἡμῶν· ἔσται
 ἡμῶν δι' αἰῶνος· ὅς τις δὲ ὑψώσει ἑαυτὸν, ταπει
 νωθήσεται· καὶ ὅς τις ταπεινώσῃ ἑαυτὸν, ὑψω

ἄλ
 εὐ ρ ἡ χ α

θήσεται· ~ κίρια κη τῶν κατὰ ματθαί·
 ἡ πενθὸς τῶν παραβολῶν ταύτων· ὡμοιωθὴ ἐν
 βασιλείᾳ τῶν οὐρανῶν ἀπὸ βασιλεῖ· ὅς τις ἐποίη
 σεν γάμοισιν τῶν υἱῶν αὐτοῦ· καὶ ἀπέστειλε τοῖς
 δούλοισιν αὐτοῦ καλέσαι τοὺς κεκλημένους ἡς τοῖς
 γάμοισιν· καὶ οὐκ ἠθέλοντες εἰσελθεῖν· παλὴν αὖ
 πέστειλεν ἄλλοις δούλοις λέγων· εἴπατε τοῖς
 κεκλημένοις· ἰδοὺ τὸ ἀριστόν μου ἡ πόμασα·
 ὁ ταύροι μου καὶ τὰ σίτινά τε θύμηναι· καὶ
 πάντα ἔτοιμα· ὁ δὲ ἡς τοῖς γάμοισιν· ὁ δὲ
 ἀμελήσαντες ἀπῆλθον· ὁ μὲν ἡς τὸν ἰδὸν
 ἄγρον· ὁ δὲ ἡς τὴν ἐμπορῆν αὐτοῦ· οἱ δὲ λοι
 ποὶ κρατήσαντες τοῖς δούλοις αὐτοῦ ὑβρίσαν
 καὶ ἀπέκταναν· καὶ ἀκούσας ὁ βασιλεὺς
 ἐκρήμοσεν· ὡρμήθη· καὶ πέμφας τοὺς στρατεύμα
 τας αὐτοῦ ἀπώλωσεν τοὺς φωνεῖς ἐκείνους· καὶ
 τὴν πόλιν αὐτῶν ἐνέπρησεν· τότε λέγει τοῖς
 δούλοις αὐτοῦ· ὁ μὲν γάμος ἔτοιμος ἐστὶν·
 ὁ δὲ κεκλημένοι οὐκ ἔρχονται· ἀξιοί· πορὰ καθε
 οὐν ἐπὶ τὰς διεξόδους τῶν ὁδῶν· καὶ ὁ θῶς
 αὐτὸν εὐρήτε· καλέσατε ἡς τοῖς γάμοισιν· καὶ εἰ

ξελαθόντες οἱ δούλοι ἐκόντοι εἰς τὰς ὁδοὺς (ὡς) γὰρ
 ἔχον πάντας ὅσοις ἄνθρωπον, πορνείοι τε καὶ ἀγα-
 θοὶ· καὶ ἐπληθύνθη ὁ γαίμος ἀναγκασμένων· εἰς
 ἁλθὼν δὲ ὁ βασιλεὺς θεάσασθαι τοὺς ἀναγκασ-
 μένους· ἔδεν ἐκ τῶν ἀνθρώπων οὐκ ἐνδεδυμένον ἐνδυ-
 γάμον· καὶ λέγει αὐτῷ· εἰταίρω· πῶς ἔσθ' ἔλθεις
 ὡδὲ· καὶ ἔχων ἐνδυγάμον· ὁ δὲ ἐφίμωθ'·
 τότε λέγει ὁ βασιλεὺς τοῖς δούλοις· δισσάμετες
 αὐτοῦ πόδας καὶ χθῆρας· ἀρατε αὐτὸν καὶ βάλε-
 τε ἔσθ' ὅσμοις ποσὶ ἐξώτερον· ἐνδύσαι οὐκ αὐθιγῶς
 καὶ ὁ βρυχιστὴς τῶν ὁδόντων· πολλοὶ γὰρ ἔσιν
 κλητοὶ, ὀλίγοι δὲ σκελετοὶ· ὡς τὴν βίβλιν τῆς
 ἱστορίας καὶ τῶν ἐκόντων· ἡκολούθησάν τῳ ὄχλῳ πο-
 λίσ· καὶ (ὡς) θλίβον αὐτὸν· καὶ γινώσκουσιν
 ἐνρίσει αἷματος ἐν τῇ δεξιᾷ· καὶ πολλὰ πα-
 θήσονται ὑπὸ πολλῶν ἰατρῶν καὶ δαπανήσονται
 παρ' αὐτῆς πάντας· καὶ μὴ δύνωφι ληθῆναι, ἀ-
 μάμαχον εἰς τὸ χθῆρον ἐλθεῖν· ἀκούσασα πε-
 ρὶ τοῦ ἱματίου αὐτοῦ· ἐλθοῖσα ἐν τῷ ὄχλῳ, ὅπως
 τοῦ ἱματίου αὐτοῦ· ἔλεγε γὰρ ὅτι καὶ
 τῶν ἱματίων αὐτοῦ ἀφῶμαι, σωθήσωμαι· καὶ
 ἀθῶς ἐξηράνθη ἡ πηγὴ τοῦ αἵματος αὐτῆς·
 καὶ ἔγνω τὸ σῶμα τῆς, ὅτι ἵσταται ἀπὸ τῆς μα-
 σίχου· καὶ ἀθῶς ἐπὶ χροῖσιν ἐν αὐτῷ πῶς
 ἐξ αὐτοῦ δυνάμειν ἐλθοῖσαν· ἐπίγραφει
 ἐν τῷ ὄχλῳ ἔλθῃ· τίς μου ἦφατο τῶν ἱματι-
 ῶν· καὶ ἔλεγον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ·
 βλέπεισ τὸν ὄχλον (ὡς) θλίβοντα· καὶ λέγει
 τίς μου ἦφατο· καὶ περιεβλέπετο ἰδὼν τὸν

τοῦτο ποιήσασαν· ἰδὲ ἡμῶν φοβηθῆσα καὶ τρέμοις·
ἡ δὲ αὖτις ἐπαύτη· ἦλθεν· καὶ πρὸς ἑπόμεν
αὐτῶ· καὶ ἔπειτα αὐτὰ πάσαν τὴν ἀλήθειαν· ὁ
δὲ εἶπεν αὐτῇ· θύγατερ· ἡ πίστις σου σέσωκενά σε·
ὑπάγε εἰς τὴν οἰκίαν σου· καὶ ἐθέλει ἡμεῖς ἀπὸ τῆς μάστιγος·
τῇ δὲ τῆς ἡμέρας· καὶ ἡμεῖς· καὶ ἡμεῖς· καὶ ἡμεῖς·

Καὶ ὡς κήρυξε· ἦλθεν οὖν εἰς τὴν πόλιν αὐτοῦ·
καὶ ἀκολουθοῦσιν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· καὶ ἡγο-
μένου (αββαίου, ἡρξάτο ἐν τῇ (κατωτέρῃ δὲ δασκῶν·
καὶ πολλοὶ αἰσούοντες ἐξέπλησαν τὸ λήγοντες· πο-
θεν τοῦτο ταῦτα· καὶ τίς ἡ σοφία ἡ δοθῆσα αὐτῷ·
καὶ δυνάμεις τοῦ αὐτοῦ, ὧς αὐτῶν χηρῶν αὐτοῦ γί-
νονται· οὐχ οὐτός ἐστιν ὁ τέκτων οὗτος μαρτίας·
ἀδελφὸς δὲ Ἰακώβου· καὶ ἰωσή· καὶ ἰούδας καὶ σί-
μων· καὶ οὐκ ἔστιν αὐτῶν ἀδελφὴ αὐτοῦ ὡς πρὶν
ἡμεῖς· καὶ ἐσκανδαλίζοντο ἐν αὐτῷ· ἔλε-
γεν δὲ αὐτοῖς οὗτος· ὅτι οὐκ ἔστιν προφήτης ἀπὸ τοῦ
ἡμῶν ἐν τῇ πόλει αὐτοῦ· καὶ ἐν τοῖς σιγῆσι· καὶ
ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτοῦ· καὶ οὐκ ἐδύνάτο ἐκδοῦν
μὴ ἀρδύναμιν ποιῆσαι· ἡ μὲν οὐκ ἔστιν ἀρρώστια
ὅτι θύγατερ· ἡ δὲ αὖτις ἐπείσεν· καὶ ἐθαύμα-
ζον δὲ αὐτῶν ἀπιστίαν αὐτῶν· καὶ περὶ ἡμέ-
ρας κώμας κύκλω, διδάσκων· καὶ προσκαλεῖ-
ται τοῖς δώδεκα· καὶ ἡρξάτο αὐτοῖς ἀποστέλλειν
δύο δύο· καὶ ἐδίδου αὐτοῖς ἐξουσίαν τῶν πᾶν
πᾶν ἀκαθάρτων· τῇ δὲ τῆς ἡμέρας· καὶ ἡμεῖς· καὶ ἡμεῖς·
Καὶ ὡς κήρυξε· πρὸς καλεσάμενος οὗτος τοὺς
δώδεκα· καὶ ἡρξάτο αὐτοῖς ἀποστέλλειν δύο δύο·
καὶ ἐδίδου αὐτοῖς ἐξουσίαν τῶν πᾶν τῶν ἀκα-

θάρ τω^ν· καὶ παρήγγειλεν αὐτοῖς· ἵνα μὴ δύναι
 ρωσῇν ἑς ὁδὸν· ἢ μὴ ραῖδον μόνω· μὴ πῆραν· μὴ
 ἀρτομ· μὴ ἑς τὴν ζώνην χαλκόν· ἀλλ' ὑποδεδεμένους
 σαρκὰ ἰα· καὶ μὴ ἐνδύσασθε δρόχι τῶρασ· καὶ
 ἐλθετε αὐτοῖς· ὅπου ἔσθ' ἡ ἐλθὴτε ἑς τὴν οἰκίαν
 ἀρκούντες ἕως αὐτῶν ἐξέλθῃτε ἐκ ἐκεῖ· καὶ ὅ
 σοι αὐτὴν μὴ δέξονται ὑμᾶς· μὴ δὲ ἀκούσωσιν ὑμῶν·
 σὺ πορεύμενοι ἐκείθεν· σὺ τιναίξατε τὸν χεῖρ
 τὸν ὑποκάτω τῶν ποδῶν ὑμῶν· ἑς μαρτύριον αὐ
 τοῖς· ἀμὲν λέγω ὑμῖν· ἀρκετότερον ἔσται
 σοδομοῖς ἐξ ἡμερῶν ἐκείνων ἢ τῆς
 πόλεως ἐκείνης· καὶ ἐξελθόντες ἐκ ἡριῶν· ἵ
 να μετανοήσωσιν· καὶ δαιμόνια πολλὰ ἐξέβα
 λον καὶ ἡλεφον ἐλαίῳ πολλοῦ ἀρρώστους καὶ ἐθε
 ράπαον· ~ τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἐκείνῃ· καὶ μαρ^{μαρ}
 τῶν καιρῶν ἐκείνων· συνάγονται οἱ ἀπόστολοι πρὸς τὸν
 Ἰη· καὶ ἀπήγγειλαν αὐτῷ πάντα· καὶ ὅσα ἐ
 ποίησαν· καὶ ὅσα ἐδέξατο· καὶ ἡ πένθος αὐτοῖς·
 δάτε ὑμῶς αὐτοὶ κατιδύαν· ἑς ἕρμιν τοῦ πορ·
 καὶ ἀναπαύσασθε ὀλίγον· ἡ σαρκαὶ οἱ ἐρχό
 μενοι καὶ οἱ ὑπάγοντες πολλοί· καὶ οὐδὲ φαγεῖν
 οὐ καίρου· καὶ ἀπῆλθεν εἰς ἕρμιν τοῦ πορ τῷ
 πλοῖῳ κατιδύαν· καὶ ἦδον αὐτοῖς ὑπάγοντας·
 καὶ ἐπέγνωσαν αὐτὸν πολλοί· καὶ περὶ ἀποπ
 σῶν τῶν πόλεων συνέδραμον ἐκεῖ· καὶ προσῆλ
 θον αὐτοῖς· καὶ συνῆλθον πρὸς αὐτὸν· καὶ ἐξελ
 θὼν ἦδον οἱ πολλοὶ ὄχλον· καὶ ἐσπλαγχνίσθη
 ἐπ' αὐτοῖς· ὅτι ἡσαν ὡς πρόβατα μὴ ἔχοντα
 ποιμένα· καὶ ἤρξατο διδάσκειν αὐτοὺς πολλά·

καὶ ἡ δὴ ὥρα πολλὴ γινόμενη· προσελθόντες αὐτῷ
 ἠμαθῆται αὐτοῦ λέγουσιν· ὅτι ἔρημος ἐστὶν ὁ τόπος·
 καὶ ἡ δὴ ὥρα πολλή· ἀπολίσσον αὐτοῖς ἵμας ἀπελθόν-
 τες ἄς τοῖς κύκλω ἄρτοις καὶ κώμας· ἀφ' ὧρα σὺν
 αὐτοῖς ἄρτοις· τί φάσιν οὐκ ἔχουσιν· ὁ δὲ ἀ-
 ποκριθεὶς, εἶπε αὐτοῖς· ἴδτε αὐτοῖς ὕμεις φαεῖν·
 καὶ λήξουσιν αὐτῷ· ἀπελθόντες ἀφ' ὧρα μενδύμα-
 ρίων καὶ αὐσίων ἄρτοις, καὶ δώμεν αὐτοῖς φαεῖν·
 ὁ δὲ λέγει αὐτοῖς· πόσους ἄρτους ἔχετε· ὑπαίβετε
 καὶ ἴδετε· καὶ γινόμενες λέγουσιν· πέντε καὶ δύο
 ἰχθύας· καὶ ἐπέταξεν αὐτοῖς ἀνακλῖναι πάν-
 τας, οὐκ ὁποῖα οὐκ ὁποῖα· ἐπὶ τῷ χλωρῷ χορ-
 τῷ· καὶ ἀνέπτωον πρασίαι πρασίαι· ἀνακλῖναι
 καὶ ἀναψυτήκοντα· καὶ λαβὼν τοὺς πέντε
 ἄρτους καὶ τοὺς δύο ἰχθύας· ἀναβλέψας δὲ τὸν
 οὐρανόν, εὐλόγησεν· καὶ κατέκλασεν τοὺς ἄρτους
 καὶ ἐδόδον τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ, ἵνα παραθῶσιν
 αὐτοῖς· καὶ τοὺς δύο ἰχθύας· καὶ ἐμέρισεν πᾶσιν·
 καὶ ἔφαθον πάντες καὶ ἔχοις πᾶσιν· καὶ
 ἦσαν κλασμάτων δώδεκα κοφίμοις πλήρεις, καὶ
 ἀπὸ τῶν ἰχθύων· καὶ ἦσαν οἱ φαδόντες τοὺς ἄρ-
 τούς, πεντακισχίλιοι ἄνθρωποι· καὶ ἀθέως ἐ-
 νάγκασεν τοὺς μαθητάς αὐτοῦ ἐμφῆναι ἄς τὸ
 πλοῖον· καὶ προἄγειν ἄς τὸ πέραν πρὸς βηθσαι-
 ἰδαμ· ἕως αὐτοῦ ἀπολίσσει τὸν ὄχλον·

τῇ παρὰ τῆς ἱερατικῆς κατὰ μαρ-
 τῆ καὶ ῥωμῆ· ἡ νάγκασεν οὖν τοῖς μαθηταῖς
 αὐτοῦ ἐμφῆναι ἄς τὸ πλοῖον· καὶ προἄγειν ἄς τὸ
 πέραν πρὸς βηθσαιῖδαμ· ἕως αὐτοῦ ἀπολίσσει

τὸν ὄχλον + καὶ ἀποταξάμενος αὐτοῖς ἀπῆλ-
 θεν εἰς τὸ ὄρος πρὸς εἰς ἕσθαι + καὶ ὁψίας γενομέ-
 νης· ὡς τὸ πλοῖον εὐ μέτω τῆς θαλάσσης· καὶ
 αὐτὸς μόνος ἐπὶ τῆς γῆς + καὶ εἶδεν αὐτοῖς
 βασανιζομένοις ἐν τῷ ἐλαύνειν· ὡς γὰρ ὁ ἄ-
 ρεμος ἐν ἄρτιος αὐτοῖς + καὶ περὶ τετάρτῃ
 φυλακῇ τῆς νύκτος· ἔρχεται πρὸς αὐτοῖς π-
 रिπατῶν ἐπὶ τῇ θαλάσσῃ· καὶ ἤθελεν παρελθὼν
 αὐτοῖς + οἱ δὲ ἰδόντες αὐτὸν περὶ πατοῦνται
 ἐπὶ τῇ θαλάσσῃ· ἔδξαν φάρτασμα εἶναι +
 καὶ ἀνέκραζαν· πάντες γὰρ αὐτὸν εἶδον καὶ ἐ-
 παραχθίσαν + καὶ αἰθῶς ἐλάλησεν μετὰ
 τῶν· καὶ λέγει αὐτοῖς· θαρσείτε· ἐγὼ ἔμει· καὶ
 φοβήσθε + καὶ ἀνέβη πρὸς αὐτοὺς εἰς τὸ πλοῖον·
 καὶ ἐκόπασεν ὁ ἄρεμος + καὶ λίαν ἐπερίσ-
 σου ἐν αὐτοῖς ἐξίσταντο καὶ ἐθαύμαζον +
 οὐ γὰρ ᾤκνῃ καὶ ἐπὶ τοῖς ἄρτοις· ὡς γὰρ αὐτῶν
 ἡ καρδία πεπορωμένη + καὶ διαπεράσαν-
 τες ἦλθον ἐπὶ τῇ γῇ γῆνησά τε· ὡς γὰρ
 αὐκαὶ ῥῶ ἐκ ῥῶ· προσήλθον τε κατὰ ματ-
 οῖ μαθηταὶ τῶ Ἰησοῦ ἐπὶ δεῖξαι αὐτῷ τὰς οἰκοδομὰς
 τοῦ ἱεροῦ + ὁ δὲ ἰὼς εἶπεν αὐτοῖς· οὐ βλέπετε
 ταῦτα πάντα + ἀμὲν λέγω ὑμῖν· οὐ μὲν
 ἀφεθῇ ὁ λίθος ἐπὶ λίθου ὃ οὐ καταλυθήσεται +
 καθιμενόντος αὐτοῦ ἐπὶ τοῦ ὄρους τῶν ἐλαιῶν·
 προσήλθον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ κατὰ διαμλεχόντες +
 εἰ πῶς ἢ μὴ πότε ταῦτα ἔσται· καὶ τί τὸ σημεῖον
 τῆς οὐσίας παρουσίας· καὶ τῆς μετελείας τοῦ αἰ-
 ῶρος + καὶ ἀποκριθεὶς ὁ ἰὼς εἶπεν αὐτοῖς +

βλέπτε· μή τις ὑμᾶς πλανήσῃ· πολλοὶ γάρ ε-
 λθοῦνται ἐν τῷ ὀνόματι μου λέγοντες· ἐγὼ εἰμὶ
 ὁ χς· καὶ πολλοὶ πλανήσοισι· μελήσεται δὲ ἡ
 κοίτην πολέμοιο καὶ αἰσᾶς πολέμων· ὁράτε,
 μή θροῖσθε· δεῖ γάρ πάντα γενέσθαι, αἰχλὺν πο-
 σὶ τὸ τέλος· ἐξῆρθήσθαι γάρ ἐθνος, ἐπὶ ἐθνος·
 καὶ βασιλείαν, ἐπὶ βασιλείαν· καὶ ῥοῦνται χιμῶ-
 καὶ λοικοὶ, καὶ σφεκοὶ κατὰ πόλιν· πάντα δὲ
 ταῦτα ἀρχὴ ὠδῶν· τότε παραδώσοισιν ὑ-
 μᾶς εἰς θλίψιν· καὶ ἀπὸ κτενέοισιν ὑμᾶς· καὶ ἐ-
 σταθεμίσουσιν οἱ ὑπὸ πάντων ἐθνῶν διὰ τὸ ὀ-
 νομαίον· καὶ τότε σκαρδαλίθουσιν πολλοὶ
 καὶ ἀγγέλοις παραδώσοισι· καὶ μίσθίσουσιν αἰ-
 κήλοισι· καὶ πολλοὶ ψαδὸς προφήται ἐκέρθι-
 σονται· καὶ πλανήσοισι πολλοὶ· καὶ διὰ τὸ
 πληθυνθῆναι τὴν ἀνομίαν, ψιγήσεται ἡ χά-
 ρις τῶν πολλῶν· ὁ δὲ ὑπομέμνησθε τὸ τέλος οὗ-
 τοσ σωθῆσθαι· ~ κυριακή 19 ἡ' ματ

125 A 11
 HX πβ εω δλ

αὐαὶ ῥῶ ἐκέρω· μοιῖκος τις προσήλθεν τῷ
 ἱὺ πειράζων αὐτὸν καὶ λέγων· δίδασκαλε· ποί-
 ας ἐν τῇ μεφάλῃ ἐν τῷ νόμῳ· ὁ δὲ ἰσ' ἔφη αὐ-
 τῷ· ἀγαπήσεις κ' τὸν θ' σου ἐν ὅλῃ καρδίᾳ σου·
 καὶ ἐν ὅλῃ ψυχῇ σου· καὶ ἐν ὅλῃ τῇ δ' ἀνομίᾳ σου·
 αὕτη ἐστὶν πρώτη καὶ μεφάλη ἐν τῇ· δε-
 τερά δὲ ὁμοία αὕτη· ἀγαπήσεις τὸν πλησίον
 σου ὡς σεαυτὸν· ἐν ταύταις ταῖς διόσιν ἐν τῷ
 λαῷ, ὅλος ὁ νόμος καὶ οἱ προφῆται κρέμαται·
 ἐκωκισένων δὲ τῶν φαρισαίων ἐπὶ πρώτην αὐ-
 τοῖς οἷον λέγων· τί ὑμῖν δοκεῖ περὶ τοῦ χς· τί ὅς

ἵσος ἐστὶν + λέγοισιν αὐτῷ· τοῦ δαδ + λέγει αὐτοῖς· π
 οῦ δαδ ἐν πῇ· κῆ αὐτὸν καλεῖ λέγων + εἶπε
 οὗς πῶ κῶ μου καθου ἐδεξιῶν μου· ἕως ἀνδῶ
 ποῖς ἐχθροῖς σου ὑπο πόδιον τῶν ποδῶν σου + ὅσῳ
 δαδ καλῶ αὐτὸν κῆ· πῶς ἵσος αὐτοῦ ἐστὶν + καὶ
 οὐδὲν εἰδῶ αὐτῷ ἀποκριθῆναι λόγον· οὐ
 δὲ ἐτόλμη σεντίς ἀπεκνήλωθις ἡμέρας εἶπε
 ρωτῆσαι αὐτὸν οὐκέτι :- τῇ θ' τῆς 15

Καὶ αὐτῷ ἐκείνῳ· ἐξελθόντι αὐτοῦ καὶ μαρ
 τῶν τοῦ σατοῦ πλῆθους· ἀδελφῶς ἐπὶ γινώσκοντες αὐτὸν + π
 ριδραμόντες ὅλῳ τῷ περὶ χορον ἐκείνῳ· ἡρξάμετο
 ἐπὶ τοῖς κρᾶββάτοις τοῖς κακῶς ἔχοντασ πρὶ
 φέρῃ· ὅπου ἐκόνον ὅτι ἐκείνῳ + καὶ ὅπου
 ἀνδρῶς ἐπορεύετο εἰς κῶμας ἢ πόλεις ἢ ἀγροῖς· ἐν
 ταῖς ἀγροῖς ἐτίθει τοῖς ἀδελφοῖς τας· καὶ παρθε
 καλοῖ αὐτὸν· ἵνα καὶ τοῦ κρᾶσι δὲ τοῦ ἵματι
 οὐ αὐτοῦ ἀφῶνται + καὶ ὅσοι ἀνήπτοντο αὐτοῦ· ἐσώ
 ζοντο + καὶ ὡσφονται πρὸς αὐτὸν (ἡ φαρισαῖοι)
 καὶ τῖνές τῶν γραμματέων· ἐλθόντες ἀπὸ ἱε
 ροσολύμων + καὶ ἰδόντες τίνας τῶν μαθητῶν αὐτοῦ·
 κοινῶς χειρὶ· τοῦτέστιν ἀνέπτοις ἐσθίοντας ἀρτοῖς·
 ἐκείνῳ αὐτοῦ + ὅτι φαρισαῖοι καὶ πάντες ὅ
 ἰουδαῖοι· ἐκείνῳ πημῇ ἵφονται τὰς χεῖρας· οὐ
 ἐκείνῳ· κρατοῦντες τῶν παραδόσιν τῶν πρὸ
 βυτέρων + καὶ ἀπὸ ἀγῶρας ἐκείνῳ βαπτίσων
 ται· οὐκ ἐκείνῳ + καὶ ἄλλα πολλαῖς ἐστὶν αἱ π
 ρέβαλον κρατεῖν + βαπτίσκω ποτῆριον· καὶ ξε
 στῶν· καὶ χαλκίων καὶ κλινῶν + ἐπὶ πᾶσι πε
 ρωτῶσιν αὐτὸν (ἡ φαρισαῖοι) καὶ οἱ γραμματεῖς·

Διὰ τί οἱ μαθηταὶ σου οὐ περὶ πατοῦ σὶ κατὰ τὴν
παράδοσιν τῶν πρῶτον βυτέρων· ἀλλὰ ἀρίπτοις
χερσὶν ἐαδίουσιν τὸν ἄρτον· ὁ δὲ ἀποκριθεὶς
εἶπε αὐτοῖς· ὅτι καλῶς προέφητ' ἐν ἡσάϊ-
ας περὶ ὑμῶν τῶν ὑποκριτῶν ὡς γέγραπται· οὐ-
τος ὁ λαὸς· τοῖς χηλέσι με τίμα· ἡ δὲ καρδία
αὐτῶν πόρρω ἀπέχει ἀπὸ ἐμοῦ· ματῖν δὲ σέ-
βονται με· διδάσκοντες διδασκαλίαν ἐν ταῖς
ματαῖς αὐτῶν· ἀφ' ἐν τες γὰρ τὴν ἐν πολλῷ τοῦ θ'.

 Κρατῆτε τὴν παράδοσιν τῶν ἀνῶν· Τῆς Τῆς Τῆς
καὶ καὶ ἐκ γινώ· ἐπ' ἡρώτησαν αὐτὸν καὶ μα-
θηταὶ οἱ γραμματεῖς καὶ φαρισαῖοι τὸν ἰὺν· διὰ τί οἱ μαθη-
ταὶ σου οὐ περιπατοῦσιν κατὰ τὴν παράδοσιν τῶν
πρῶτον βυτέρων· ἀλλὰ ἀρίπτοις χερσὶν ἐαδίουσιν
τὸν ἄρτον· ὁ δὲ ἀποκριθεὶς ἔπεν αὐτοῖς· ὅτι
καλῶς προέφητ' ἐν ἡσάϊας περὶ ὑμῶν τῶν ὑπο-
κριτῶν ὡς γέγραπται· οὗτος ὁ λαὸς· τοῖς χηλέσι με
τίμα· ἡ δὲ καρδία αὐτῶν πόρρω ἀπέχει ἀπὸ ἐμοῦ·
ματῖν δὲ σέβονται με· διδάσκοντες διδασκαλίαν
ἐν ταῖς ματαῖς αὐτῶν· ἀφ' ἐν τες γὰρ τὴν ἐν πολλῷ
τοῦ θ'· κρατῆτε τὴν παράδοσιν τῶν ἀνῶν· βα-
πτισμοὺς ξυζῶν καὶ ποτηρίων· καὶ ἅμα παρ' ὁ-
μοίαι τοιαῦτα πολλὰ ποιῆτε· καὶ ἔλαθεν
αὐτοῖς· καλῶς ἀδετῆτε τὴν ἐν πολλῷ τοῦ θ'·
ἱνα τὴν παράδοσιν ὑμῶν τηρήσῃτε· μωῦ-
σής γὰρ εἶπεν· τίμα τὸν πρῶτον σου καὶ τὴν κτῆ-
ν σου· καὶ ὁ κακολογῶν πρῶτον ἡμῶν θαυμάτω τελευ-
τῶν· ἡμῶς δὲ λέγει· Ἐὰν ἔπῃ ἄνθρωπος πρὶν ἢ
τὴν κτῆν κορβαίν· ὁ ἐστὶ δῶρον ὁ ἐκ ἐξ ἐμοῦ ὡφεί-

ληθῆς· καὶ οὐκ ἐπὶ ἀφίετε αὐτὸν οὐδὲν ποιῆσαι τῷ
 πρὶ αὐτοῦ ἢ τῇ κτὶ αὐτοῦ· ἀκίρουντες τὸν λόγον
 τοῦ θύ, τῇ παραδόσει μὲν ἢ παραδώκατε· καὶ
 παρόμοιοι αὐτὰ πολλὰ ποιῆτε + καὶ πρὸς
 καλῶμενος πάντα τὸν ὄχλον ἐλάβη αὐτοῖς·
 ἀκούετε μου πάντες καὶ (συνίετε + οὐδὲν ἐστὶν
 ἐξωθεν τοῦ ἁγίου εἰς πορθέμενον εἰς αὐτὸν· ὁ
 δὴν αὐτὸν κοιμῶσαι + ἀλλὰ τὰς ἐκ πορθέμε
 ναὶ ἀπ' αὐτοῦ ἐκθρῆν τὰ κοιμῶνται τὸν ἁγόν·
 ἅτις ἐχθρῶτα ἀκούειν αἰνεῖται· τῇ δὲ τῆς 15 ἐκ

Τὴν αὐτὴν ἑκθρῶ· πρὸς καλεσάμεν + καὶ κατ'
 οἷον πάντα τὸν ὄχλον· ἐλάβη αὐτοῖς· ἀκούετε
 μου πάντες καὶ (συνίετε· οὐδὲν ἐστὶν ἐξωθεν τοῦ
 ἁγίου εἰς πορθέμενον εἰς αὐτὸν· ὁ δὴν αὐτὸν
 τὸν κοιμῶσαι + ἀλλὰ τὰς ἐκ πορθέμενα ἀπ' αὐ
 τοῦ ἐκθρῆν τὰ κοιμῶνται τὸν ἁγόν + εἴ
 τις ἐχθρῶτα ἀκούειν αἰνεῖται· καὶ ὅτε δὲ ἦλ
 θεν εἰς οἶκον ἀπὸ τοῦ ὄχλου ἐπὶ ῥῶτων αὐτοῦ· ὁ
 μαθηταὶ αὐτοῦ περὶ τῆς παραβολῆς + καὶ λέγει
 αὐτοῖς· οὕτως καὶ ὑμεῖς ἀσυνετοὶ ἐστέ· οὐ μὲν
 γὰρ οἶτε πᾶν τὸ ἐξωθεν εἰς πορθέμενον εἰς τὸν
 ἁγόν· οὐ δὴν αὐτὸν κοιμῶσαι + ὅτι οὐ
 κείσ' πορθέται αὐτοῦ εἰς τὴν καρδίαν· ἀλλ' εἰς
 τὴν κοιλίαν· καὶ ὅς τὸν ἀφεδρῶναι ἐκ πορθέ
 ται· καθαρίζων πάντα τὰ βρώματα + ἐλε
 γχευδ' ὅτι τὸς ἐκ τοῦ ἁγίου ἐκ πορθέμενον·
 ἐκθρῶ κοιμῶν τὸν ἁγόν + ἐσωθεν γὰρ ἐκ
 τῆς καρδίας τῶν ἁγίων· οἱ δὲ ἀλογισμοὶ οἱ κακοὶ·
 ἐκ πορθεύονται + μοιχεύει· πορνείαι· φόροι·

σιδῶνος· καὶ τῇ ἐποῇ 15 ^{ἐκ} ^{καρ}
 ὡκαὶ ῥῶ ἐκείνῳ· ἦλθεν οἱ σὺ δὲ τὰ μεθόρι αὐτοῦ
 ῥου καὶ σιδῶνος· καὶ εἰσελθὼν ἤϊ τὴν οἰκίαν
 οὐδὲν αὐτῇ δέλεον γινῶμαι· καὶ οὐκ ἔδωκεν ἀπολαβὴν
 ἀκούσασα γὰρ γυνὴ περὶ αὐτοῦ· ὥς ἔχεν τὸ θυγα-
 τριον αὐτῇ σὺ πρῶτα ἀνάδαγον· ἐλθοῖσα πρὸς
 ἐπὶ πρὸς τοῖς πόδας αὐτοῦ· ὡς δὲ ἡ γυνὴ·
 ἐλθὼν δὲ σύρα· φοινίκια στατῶν γένῃ· καὶ ἡ ῥῶτα
 αὐτὸν· ἵνα τὸ δαιμόνιον ἐκβάλῃς ἐκ τῆς θυγα-
 τρος αὐτῆς· ὁ δὲ ἰσθίει πρὸς αὐτήν· ἀφῶ πρῶ-
 τον χορτασθῆναι τὰ τέκνα· οὐ γὰρ καλονέσι
 λαβῆναι τὸν ἄρτον τῶν τέκνων· καὶ βαλὼν τοῖς
 κύων ἀρίοις· ἔξ δὲ ἀπεκρίθη καὶ λέγει αὐτῷ· ἡαί
 καί· καὶ γὰρ τὰ κύων ἀρία ὑποκάτω τῆς πρᾶπ-
 τῆς ἐσθίει ἀπὸ τῶν ψιχίων τῶν παιδῶν· καὶ εἰ-
 πὼν αὐτῇ· ὅρα τοῦτο τὸν λόγον· ὑπάγε· ἐξελή-
 λυθεν τὸ δαιμόνιον ἐκ τῆς θυγατρὸς αὐτοῦ· καὶ
 ἀπελθοῖσα ἤϊ τὸν οἶκον αὐτῆς· εὗρεν τὸ
 δαιμόνιον ἐξελθὼν ἐκ τῆς θυγατρὸς αὐ-
 τῆς· καὶ τὴν θυγατέρα
 βεβλημένην ἐπὶ τῆς ἐλπίδος καὶ τὸ δαιμόνιον ὅτι ἐλ-

Δημόσια Κεντρική Βιβλιοθήκη Βέροιας

πῖτον ὄχλον ὅτι ἡδὴ ἡμέραι τρεῖς προσέβηνοι σίμοι·
 καὶ οὐκ ἔροισι πὶ φάτωσι καὶ ἐξ ἧ ἀπολίω αὐτοῖσιν
 εἰς εἰς οἶκον αὐτῶν· ἐκλυθῆσονται ἐν τῇ ὁδῷ· τινὲς
 γὰρ αὐτῶν μακρόθεν ἦκοισι· καὶ ἀπεκρίθησαν αὐτῷ
 οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· πόθεν τοῦτο ὀμιλεῖται τίς ὁδὸς
 κορπᾶσαι ἄρτον, ἐπεὶ ἡμῶν· καὶ ἐπύρωται αὐτοῖς·
 πόσοις ἐχέτω ἄρτοις· οἱ δὲ ἔπον· ἐπταὶ καὶ παρῇ
 μεῖνεν τῷ ὄχλῳ· ἀραπτόσιν ἐπὶ τῆς γῆς· καὶ λαβὼν
 τοῖς ἐπτα ἄρτοις καὶ εὐχαριστήσας ἐκέλασεν· καὶ ἐ-
 δίδου τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ, ἵνα παραδώσιν· καὶ π-
 ρέθησαν τῷ ὄχλῳ καὶ ἔχοντες ἔδωκαν οἱ ὅλοι· καὶ ἄλλο
 γήσας ἔπειν παραθήναι καὶ αὐταῖς· ἐφάβον δὲ
 καὶ ἐχορτασθῆσαν· καὶ ἦσαν περιστάματα κλασ-
 μάτων· ἐπταὶ σὺν ῥύδασι· ἦσαν δὲ οἱ φαδύρες·
 ὥς τε τρακίσχλιοι καὶ ἀπέλιπον αὐτοῖς· καὶ
 ἄθως ἐμβὰς εἰς τὸ πλοῖον μετὰ τῶν μαθητῶν
 αὐτοῦ· ἦλθεν δὲ τὰ μερὴ δαλμαρον θάλασσαν·

Καὶ περὶ ὧν τοῖς ἐκ τοῦ μαθηταῖς· πᾶσι 15· καὶ κατ-
 ἀριθμῶν λέγει ἑμὴν· οὐ μὴ παρέλθῃ ἡ γῆ καὶ αὐτῇ·
 ἕως πάντα ταῦτα γένηται· ὁ οὐρανὸς καὶ ἡ γῆ
 παρελθούσιν· οἱ δὲ λόγοι μου οὐ μὴ παρέλθωσιν·
 περὶ δὲ τῆς ἐκείνης ἐκείνης καὶ ὥρας· οὐδὲ οἶδεν·
 οὐδὲ οἱ ἀγγέλοι τῶν οὐρανῶν· ἡ μὲν ὁ πατήρ μου μόνος·
 ὡς πρὸς αὐτὰς ἡμέραι τούτων· οὕτως εἶσαι καὶ ἡ παρού-
 σια τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου· ὡς πρὸς ἡσάν ἐν ταῖς
 ἡμέραις ταῖς προτοῦ κετα κλῆς μου· πρῶτον τῶ·
 καὶ πῖνον τῶ· γαμοῦν τῶ καὶ ἔχοντες τῶ·
 ἀχρί τῆς ἡμέρας ἡσάν θεν μῶν δὲ τῶν κῆβω τῶν· καὶ
 οὐκ ἔγνωσαν ἕως ἡλθεν ὁ κατὰ κλῆς μου καὶ ἵς

ρεν ἅπαντας· οὕτως ἔσαι καὶ ἡ παροισία τοῦ υἱοῦ
 τοῦ ἀνθρώπου· πότε δὲ ἔσονται ἐν τῷ ἀγῶ· ὁ δὲ
 παραλαμβάνεται· καὶ ὁ εἶς ἀφίεται· δὲ ἀνέθου
 σαι ἐν τῷ μύλῳ, μία παραλαμβάνεται καὶ μία ἀ-
 φίεται· γρηγορήτε οὖν ὅτι οὐ κοίδατε ποῖα ὥρα ὁ
 υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐρχεται· ἐκ νῦν δὲ γινώσκετε· ὅτι ἐν
 δευτέρῳ οἶκῳ δαυὶδ· ποῖα φυλακὴ ὁ υἱὸς ἐρχεται·
 ἐρηγόρησεν αὐτὸν· καὶ οὐκ ἀνείασεν δι' ὀργὴν αὐτοῦ
 οἱ κῆρυκες αὐτοῦ· διὰ τοῦτο καὶ ὑμεῖς γινώσκετε ἔτοι-
 μοι ὅτι ἡ ὥρα οὐδὲ κεῖτε ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐρχεται·

ἸΧ ΠΤ ἑω ε



κερίαν 15 κατὰ ματθαῖον·

ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου παραβολὴν ταύτην· ἀνὴρ τις ἀπὸ
 θυμῶν ἐκάλεσεν τοὺς ἰδίους δούλους· καὶ παρέ-
 δωκεν αὐτοῖς τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ· καὶ ὡς
 ἐδωκεν πέντε ταλάντα· ὡδὲ δύο· ὡδὲ ἓν·
 ἐκάστη κατὰ τὴν ἰδίαν δυνάμιν· καὶ ἀπεδίμη-
 σεν αὐτοὺς· πορευθεῖς δὲ ὁ τὰ πέντε τάλαν-
 τα λαβὼν· ἐργάσατο ἐν αὐτοῖς· καὶ ἐποίησεν
 ἄλλα πέντε τάλαντα· ὡς αὐτῶς καὶ ὁ τὰ
 δύο· ἐκέρδησεν καὶ αὐτὸς ἄλλα δύο· ὁ δὲ τὸν
 ἓν λαβὼν ἀπελθὼν ἄρρυξεν ἐν τῇ γῇ· καὶ ἀπέκρυψεν
 τὸ ἀργύριον τοῦ κυρίου αὐτοῦ· μετὰ δὲ χρόνον πο-
 λὺν· ἐρχεται ὁ κύριος τῶν δούλων ἐκείνων· καὶ ρω-
 ρεῖ μετὰ τῶν λόγων· καὶ προσελθὼν ὁ τὰ πέντε
 τάλαντα λαβὼν προσήνεγκεν ἄλλα πέντε τάλ-
 λαντα λέγων· κύριε πέντε τάλαντα μοι δέ-
 δωκας· ἰδὲ ἄλλα πέντε τάλαντα ἐκέρδησα ἐ-
 πάτητο· ἐφ' ἣ δὲ αὐτῷ ὁ κύριος αὐτοῦ· εὖ δούλε ἀγαθὲ
 καὶ πίστις· ἐπὶ ὀλίγα ὡς πῖσος, ἐπὶ πολλῶν ἂν

καταστήσω· ἴσσελθε εἰς πλὴν χαρὰν τοῦ κυρίου· πρὸ
σελθῶν δὲ καὶ ὁ ταύρος ταλαρταλαβὼν εἶπεν·
καὶ ὁ ταλαρταμοῦ παρέδωκας· ἴδε ἄλλα ὁ ταύ-
λαρτα εἰκέρθησας ἐπαύται· εἶφη αὐτῷ οὕτως αὐ-
τοῦ· ἀδούλῳ γὰρ καὶ πίσι· ἐπὶ ὀλίγῳ ἴσ-
πίσος· ὅτι πολλὰ ἐκαταστήσω· ἴσσελθε εἰς
πλὴν χαρὰν τοῦ κυρίου· προσελθῶν δὲ καὶ ὁ το-
εὐταλαρτομὸς ἡλφῶς· εἶπεν· καὶ ἄρῳνα εἶ
πίσι κληρὸς γὰρ· θερίζων οὐκ ἐσθῆρας·
καὶ (ὡς αὐτὸς οὐκ ἐσθῆρας) πῆρας· καὶ φοβή-
θησ' ἀπελθὼν ἐκρήψατο τὸ ταλαρτοῦ σου ἐν τῇ
γῇ· ἴδε ἔχῃς τὸ σὸν· ἀποκριθὲς δὲ οὕτως αὐτοῦ·
ἔπεν αὐτῷ· πομῆρ ὁ δούλε καὶ ὁ κηρ ὁ· ἰδὲ εἰς
ὅτι θερίζων οὐκ ἐσθῆρας· καὶ (ὡς αὐτὸς οὐκ ἐ-
σθῆρας) πῆρας· εἶδον σε βαλὼν τὸ σὸν ἔργον
οὐκ ἐσθῆρας πῆρας· εἶδον σε βαλὼν τὸ σὸν ἔργον
οὐκ ἐσθῆρας πῆρας· καὶ ἐλθὼν ἐγὼ
κομισάμην ἀπὸ τοῦ ἐμοῦ (ὡς τὸ τόκον)· ἀραπε-
δῶν ἀπ' αὐτοῦ τὸ ταλαρτομ· καὶ ὁ δὲ τὸ ἔχοντι
τὰ δὲ κατὰ λαρτα· τῷ γὰρ ἔχοντι παρτί-
δοθήσεται καὶ περισσάσθῃσιν· ἀπὸ δὲ τοῦ μὲν
ἔχοντος· καὶ ὁ ἔχων ἔσθῃσιν ἀπ' αὐτοῦ· καὶ τὸν
ἀχρῆον δούλον ἐβάλεε εἰς τὸ σκότος τὸ ἐξώ-
τερον· ἐκ δὲ εἶσαι ὁ κληρὸς καὶ ὁ βρυγμὸς
τῶν ὁδόντων·

σαύρατον ἴσσελθε· κατὰ ματθαίου·
ἴπεν οὕτως πλὴν παρὰ βολὴν ταύτην· ὁμο-
ῶθι βασιλεία των οὐρανῶν δὲ καὶ παρθένους·
αἱ τῆς λαβούσας τὰς λαμπάδας αὐτῶν εἰ-
σέλθουσιν εἰς ἀπαντήσιν τοῦ κυρίου·

περὶ τε δὲ ἴσαν ἐξ αὐτῶν φόρη μοι, καὶ αἱ πρὶν
 τε μωραὶ + αἱ τῖβες μωραὶ λαβοῦσαι τὰς λα-
 μπάδας αὐτῶν, οὐκ ἐλάβον μεθ' αὐτὸν ἐλαι-
 ον + αἰδοὺ φόρη μοι ἐλάβον ἐλαίον ἐν τοῖς
 ἀγρίοις αὐτῶν, μετὰ τῶν λαμπάδων αὐτῶν +
 χρορίζοντο σὺν τοῦ ρυμφίου. ἐρύσαξαν παύ-
 σαι καὶ ἐκάθισαν + μετὰ τὸ δὲ ρυμφίον κρα-
 νήγοντες. ἰδοὺ ὁ ρυμφίος ἐρχεται. ἐξέρ-
 χεται δὲ ἀπ' ἀντιστήναι αὐτοῦ + τότε ἐπερ-
 σαρπάσαι αἱ παρθένοι ἐκείναι καὶ ἐκόσμη-
 σαρ τὰς λαμπάδας αὐτῶν + αἱ δὲ μωραὶ ταῖς
 φρονίμοις εἶπον. δότε ἡμεῖς αὐτοῦ ἐλαίου
 ἱμῶν ὅτι αἱ λαμπάδες ἡμῶν σφενώται +
 ἀπεκρῆθησαν δὲ αἱ φόρη μοι λέχοισαι. μή πο-
 τε οὐκ ἀρκέσει ἡμῖν καὶ ἱμῖν. πορεύεσθαι μά-
 χον προσ τοὺς πωλοῦντας καὶ ἀγῶρασαι ἐ-
 σῆταις + ἀπερχομένων δὲ αὐτῶν ἀγῶρᾶσαι,
 ἐλθεν ὁ ρυμφίος. καὶ αἱ ἐποιμολόγησαν θο-
 μετὰ αὐτοῦ εἰς τοὺς γάμοις. καὶ ἐκλήθη ἡ θυ-
 ρα + ἵκερον δὲ ἐρχονται καὶ αἱ λοιπαὶ τῆς
 θένου λέχοισαι. καὶ ἐπ' αἰοῖξον ἡμῖν + ὁ δὲ
 ἀποκριθεὶς εἶπεν. ἀμὲν ἀμὲν λέγω ἡμῖν,
 οὐκοῦν δαίμας + γρηγορεῖτε οὖν ὅτι οὐκοῦν
 δατε τὴν ἡμέραν οὐδέ τὴν ὥραν ἐν ᾗ οὐ-
 ρὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐρχεται. ~

Ἐρμηνεύς. ὅτι αἱ λοιπαὶ τοῦ μαζαροῦ δαίμας ἀρα-
 νώσκοντες τὴν ἡμέραν καὶ τὴν ὥραν τοῦ λόγου καί.



ἀρχὴ τῶν καθ' ἡμερῶν
 ἀδελφίων τοῦ λουκᾶ· δέον γινώσκειν
 ὅτι ἀρχαῖοι τοῦ καὶ ἀναπύρωσθε ἀπο
 τὴς κεριακῆς μετὰ τὴν ἡμέραν· τὸ τε γὰρ καὶ ἡ
 ἰσχυρὴ ἡμέρα ὅτι καὶ ἡμεῖς ἐποιοῦμεν τῇ βουλῇ αὐτοῦ
 ὡς καὶ ἡμεῖς· ἐλπίσμενος ἡρώδης ὅτι τῇ
 χυλῇ περὶ ἡρώδους τῆς γυναικὸς τοῦ ἀδελ
 φοῦ αὐτοῦ· καὶ περὶ πάντων αὐτῶν ἐποίησεν
 πονηρῶν ὅτι ἡρώδης· προσέθηκεν καὶ τοῦ
 τοῦ ἐπὶ πάντων· καὶ κατέχευεν τὸν ἰωάννην
 ἐν τῇ φυλακῇ· ἐξέκοτε ἐν τῷ βαπτί
 σμῳ καὶ ἀπαρτατομλαῶν· καὶ ἰωβηπτιθεῖν
 τοῦ καὶ προερχομένου αὐτῶν ἡμεῖς τὸν οὐ
 ρανον· καὶ καταβῆναι τὸ πᾶν τὸ ἄγιον·
 σωματικῶς δὲ, ὡς περιστερὰν ἐπαίον·
 καὶ φωνῇ ἐξ ὧν οὐ μετὰ θάλασσαν· σὺ
 εἰς ὃς μου ἀγαπῶντος ἐν σοὶ ἀδύνησα·

τῇ γ τῆς α εὐ κατὰ λουκᾶ·
 ὡς καὶ ἡμεῖς· ἰω ἰσχυρὴ τῶν τριακον
 τα· ἀρχόμενος αὐτῶν· ὡς ἐνομιζέσθαι ὅτι ἰω
 σὴφ· τοῦ ἡλῆ· τοῦ ματθαί· τοῦ λαί·
 τοῦ μέλχ· τοῦ ἰάκωβ· τοῦ ἰωσὴφ· τοῦ
 ματθίου· τοῦ ἀμώ· τοῦ μαρκοῦ· τοῦ
 βάλει· τοῦ ματθαί· τοῦ ματθαί· τοῦ ματ
 θίου· τοῦ ἐξ μέλ· τοῦ ἰωσὴφ· τοῦ ἰούδα·
 τοῦ ἰωάννου· τοῦ ῥῆσα· τοῦ βορῶ βάβελ·

τοῦ σαλαθιήλ· τοῦ νῆρεϊ· τοῦ μελλή· τοῦ ἀδελεί·
 τοῦ κωσαί· τοῦ ἐλμωδαί· τοῦ ἡρ·
 τοῦ ἰωσή· τοῦ ἐλίζερ· τοῦ ἰωρείμ· τοῦ ματ
 θαι· τοῦ λαί· τοῦ συμεών· τοῦ ἰούδα· τοῦ
 ἰωσήφ· τοῦ ἰωμάρ· τοῦ ἐλῖακίμ· τοῦ με
 λεί· τοῦ μαϊμάρ· τοῦ ματταθαί· τοῦ μά
 θαρ· τοῦ δαδ· τοῦ ἰεσσαί· τοῦ ἰωβήδ·
 τοῦ βοόζ· τοῦ σαλμών· τοῦ μααααών· τοῦ
 ἀμιναδαί· τοῦ ἄραμ· τοῦ ἰωαραμ· τοῦ
 ἰωρὼμ· τοῦ φάρεις· τοῦ ἰούδα· τοῦ ἰα
 κώμ· τοῦ ἰσαάκ· τοῦ ἀβραάμ· τοῦ θάρ
 τοῦ μαχώρ· τοῦ σέροχ· τοῦ ράμ· τοῦ φα
 λήχ· τοῦ ἐβέρ· τοῦ σαλαί· τοῦ καϊμάρ·
 τοῦ ἀρφαδάξ· τοῦ σὴμ· τῶν ὡκ· τοῦ λα
 μεχ· τοῦ μαδοῦσαλα· τοῦ ἐνώχ· τοῦ ἰά
 ρεθ· τοῦ μελεέηλ· τοῦ καϊμάρ· τοῦ ἐ
 μώσ· τοῦ σὴθ· τοῦ ἀδάμ· τοῦ θῦ + ἰσὶ δε
 πρόσθιου πλήρης ἐπέσρεψεν ἀπὸ τοῦ ἰορδα
 νου· καὶ ἦν ὁ σὺν τῷ πρὶ εἰς τὴν ἐρήμον·

τῇ θ' τῆς α' αὐτῆς κατὰ λόγῳ.

ὡς καὶ ὡς ἐκείνῳ· ἐπέσρεψεν οἱ σὺν ἀπὸ τοῦ ἰ
 ορδανου· καὶ ἦν ὁ σὺν τῷ πρὶ εἰς τὴν ἐρήμον·
 ἐκείνῳ περὶ ἀκούοντα πᾶρα βορένοσ· ὑπὸ τοῦ
 οὐ διαβόλου + καὶ οὐκ ἐφάπτετο οὐδέ ἐπιεν ἐν
 ταῖς ἐκείναις ἐκείναις + καὶ (ὡς τελεωθῶσιν
 αὐτῶν· ἔπειτα ἐπὶ πᾶσιν + καὶ ἔπειτα αὐτῷ
 ὁ διάβολος· ὁ ἰσὶ εἰς τοῦ θῦ· ὁ πᾶσι λίθου
 τῷ· ἵνα γένηται ἄριστος + καὶ ἀπεκρίθη ὁ ἰσὶ
 πρὸς αὐτὸν λέγων· γέγραπται ὅτι οὐκ ἐπάρτω

μόνω ζῆσθαι ἄνθρωπος, ἀλλ' ἐπὶ παντὶ ῥῆματι τοῦ
 καὶ ἀναβάντων αὐτὸν ὁ δὲ ἀβόλος ἡ δ' ὄρος ἵψη λον +
 ἔδωκεν αὐτῷ πᾶσας τὰς βασιλῆας τοῦ οἴκου
 μένιος· ἐν σὶ γὰρ χρόνῳ + καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ
 ἀβόλος· σοὶ δώσω τὴν ἐξουσίαν ταύτην ἅπα
 σαν· καὶ τὴν δόξαν αὐτῶν· ὅτι ἐμοὶ παραδέδο
 ται· καὶ ὅτι ἂν θέλω δίδωμι αὐτῷ + σὺ οὖν
 ἔσθ' ἂν πρὸς κυνέσις ἐν ὠπτιόν μου· ἔσθαι σου
 πᾶσα + καὶ ἀποκριθεὶς αὐτῷ ἡ πένος +
 γέγραπται· πρὸς κυνέσις ἐν τὸν θῆν σου καὶ αὐ
 τὸ μόνω λατρεύς + καὶ ἡ γὰρ αὐτὸν εἰς
 ἰλήμ + καὶ ἔστησεν αὐτὸν ἐπὶ τὸ πτερύγι
 ον τοῦ ἱεροῦ· καὶ εἶπεν αὐτῷ· ἡ γὰρ τοῦ
 τοῦ· βάλεσέ αὐτὸν ἐν τὰ ἔθνη καὶ τῶν γέγραπται
 γὰρ· ὅτι τοῖς ἀγγέλοις αὐτοῦ ἐντελείται περὶ
 σοῦ· τοῦ δὲ ἀφ' ὧν ἔλαβες· καὶ ἐπὶ χερσὶν αὐτοῦ
 στήναι· μήποτε προσκόψῃς πρὸς λίθον τον
 πόδας σου + καὶ ἀποκριθεὶς ἡ πέν αὐτῷ ὁ
 ἴσ'· ὅτι εἴρηται· οὐκ ἐκ πηγάσις ἐν τὸν θῆν
 σου + καὶ ὡς τέλει πᾶντα πηγάσις ἐν ὁ
 ἀβόλος· ἀπέστη ἀπ' αὐτοῦ ἀρχὴ καιροῦ +
 καὶ ὑπέστρεψεν ὁ ἴσ' ἐν τῇ δυνάμει τοῦ πρὸς ἡς
 τὴν χαλιλαίαν + καὶ φήμ' ἐξ ἡλθεν καθόλις
 τῆς περιχώρου περὶ αὐτοῦ + καὶ αὐτὸς ἐ
 δίδασκεν ἐν ταῖς συνάγωγαῖς αὐτῶν· δόξα βό
 μενος ὑπὸ πάντων· — πῆ ἐ τῆς αὐτῆς

ὡς καιρῶν ἐκείνων· ἡλθεν ὁ ἴσ' αὐτῶν
 εἰς τὴν ναζαρέθ· οὐκ ἦν τεθραμμένος· καὶ ἡ
 ἡλθεν κατὰ τὸ ἑωθὸς αὐτῷ ἐν τῇ ἡλικίᾳ τῶν σαβ

βαπτῶν· ὁ δὲ τὴν (σωαζω)ν· καὶ ἀνέστη ἀναγνῶναι·
 καὶ ἐπεδύθη αὐτῷ βιβλίον ἡσαΐου τοῦ προφή-
 του· καὶ ἀναπύξας τὸ βιβλίον εἶπεν τὸν το-
 πον· οὐκ ἔγραμμενον· πρῶτον ἐπέμψεν·
 οὐκ ἔμελλεν εἰσελθεῖν· ἀναγγεῖλαι
 πτωχοῖς· ἀπὸ σαρκὸς ἐμῆ· ἰάσασθαι τοῖς (σω-
 τε)ρι μενόντων τὴν καρδίαν· κηρύξαι αἰχ-
 μαλώτοις ἀφροῖν· καὶ τυφλοῖς ἀναβλε-
 ψῆν· ἀποστείλας τε θρασυμένους ἐναφύσει·
 κηρύξαι ἐν ἑαυτῷ καὶ ἐν τῷ· καὶ πτύξας
 τὸ βιβλίον ἀποδώστω ὑπὲρ τῆς· ἐκάθισεν·
 καὶ πάντων ἐν τῇ (σωαζω)ν οἱ ὀφθαλμοὶ ἦσαν
 ἀτενίζοντες αὐτῷ· ἤρξατο δὲ λέγειν πρὸς αὐ-
 τοῖς· ὅτι σήμερον πεπλήρωται ἡ γραφή αὐτῆς
 ἐν τοῖς ὤσιν ὑμῶν· καὶ πάντες ἐμαρτυ-
 ροῦν αὐτῷ καὶ ἐθαύμαζον ἐπὶ τοῖς λόγοις τῆς
 χάριτος τοῖς ἐκ ποταμοῦ ἐκ τοῦ στόματος αὐτοῦ·
 τῇ παρὰ τῆς αἰωνίου καὶ λού.

ὦ καιρῷ ἐκείνῳ· ἐθαύμασαν οἱ ὄχλοι ἐ-
 πὶ τῇ χάριτι τοῖς ἐκ ποταμοῦ ἐκ τοῦ στόμα-
 τος αὐτοῦ· καὶ ἔλεγον· οὐχ οὗτος ἐστὶν ὁ υἱὸς ἡ-
 σαΐφ· καὶ εἶπεν πρὸς αὐτοῖς· πάντως ἐγγί-
 τε μοι τὴν παραβολὴν ταύτην· ἰατρὲ· θύρα
 πρόσον ἅς αὐτὸν· ὅσα ἐκοίσαμεν ἡμεῖς
 ἐν τῇ καπερναούμ,· ποίησον καὶ ἐδὲ ἐν τῇ
 πατρίδ σου· εἶπεν δὲ ἀμὲν ἀμὲν λέγων ἡ-
 μῖν· ὅτι οὐδεὶς προφήτης δεκτός ἐστιν ἐν τῇ
 πατρίδι αὐτοῦ· ἐπαληθεύσας δὲ λέγων ἡμῖν·
 ὅτι ποταμοὶ ἦσαν ἐν ταῖς ἡμέραις ἡλίου

ὡς καὶ ῥῶ ἐκείνῳ· καὶ σάββατον αἰ κ' τοῦ
 ἦλθεν οὖτος εἰς καπερναοὺμ· πολλὴν τῆς βα-
 λιλαιᾶς· καὶ ὡδιδάσκων αὐτοῖς ἐν τοῖς σα-
 ββάσι· καὶ ἐξεπλήσσοντο ἐπὶ τῇ διδα-
 χῇ αὐτοῦ ὅτι ἐνεξοισία ὡς λόγος αὐτοῦ· καὶ
 ἐν τῇ συναγωγῇ ἡν' αὐτὸς ἔχων πρῶτον δαιμονίου
 ἀκαθάρτου· καὶ ἀνέκραξεν φωνῇ μεγάλῃ λέ-
 γων· ἔα· πῆμιν καὶ σοὶ· τὸ ναζαρενέ· ἦλ-
 θες ἀπολέσαι ἡμᾶς· οἱ δὲ αὖτε εἶ· ὁ ἄγιος τοῦ
 θύ· καὶ ἐπετίμυσεν αὐτῷ οὖτος λέγων· φι-
 μώθητι καὶ ἐξέλθε ἀπ' αὐτοῦ· καὶ ῥίψας
 αὐτὸν τὸ δαιμόνιον εἰς μέσον· ἐξῆλθεν
 ἀπ' αὐτοῦ· μὴ δὲν βλάψας αὐτὸν· καὶ
 ἐζήτω θάμβος ἐπὶ πάντας καὶ συναγά-
 γου πρὸς ἀλλήλους λέγοντες· τίς ὁ λόγος

οὗτος· ὅτι ἐν ἐξουσία καὶ δυνάμει ἐπιτασθε τοὺς
ἀμαθάρ τοις πῦρ σὶν καὶ ἐξέρχονται·

Κερίαν ἡ αὐτὴ κατὰ μαρτυροῦν
ὡκαί ρω ἐκόνω· ἐπὶ δὲ οὗτος παρατήλῃ κελύβιν
ρησαίετ· Εἶδεν δὲ πλοῖα ἐσώτα παρατήλῃ
κελύβιν· ὁ δὲ ἀγίθε ἀποβάιντες ἀπάντων, ἀπὲ
πλησυντὰ δίκτυα· ἐμβασθε δὲ ἐν τῶν πλοῖ
ων ὁὖν τοῦ σίμωνος, ἡρώτησεν αὐτὸν· ἐπὶ τῆς
μὲς ἐπαραγαθῆν ὀλίγον· καὶ καθίσας ἐδί
δασκεν αὐτὸν τοῦ πλοίου τοῖς ὀχλοῖς· ὡς δὲ ἐπαύ
σατο λαλῶν, εἶπεν πρὸς τὸν σίμωνα· ἐπαύλα
μεῖς τὸ βάθος· καὶ χαλάσατε τὰ δίκτυα ὑμῶν εἰς
ἄβυσσον· καὶ ἀποκριθεὶς ὁ σίμων εἶπεν αὐτῷ· ἐ
πίσταται· διὸ ὅτι τὸς ῥυτίκος κοπίσας αὐτὸν, οὐ
δὲν ἐλάβομεν· ἐπὶ δὲ τῶν ῥημάτων σου χαλάσω τὸ
δίκτυον· καὶ τοῦτο ποιήσαντες σὺν ἐκχυσαν
πλῆθος ἰχθύων πολὺν· διερρήγνυτο δὲ τὸ δίκτυ
ον αὐτῶν, ὥστε μὴ δύνασθαι ἀρᾶσθαι αὐτόν·
καὶ κατέρυσαν τοῖς μετόχοις τοῖς ἐν τῷ ἐτέρῳ
πλοίῳ, τοῦ ἐλθόντος (ἐλάβεσθαι αὐτοῖς· καὶ
ἐλθον καὶ ἐπλησαν ἀμφοτέρω τὰ πλοῖα, ὥς
τε βυθίζεσθαι αὐτὰ· ἰδὼν δὲ οἱ σίμων πέτρος
προσέειπε τοῖς γονασὶν ἰσχυρῶν· ἐξέλθε αὐ
τὸν· ὅτι ἄρτι ἀμαρτωλὸς ἡμῶν· θάρσ
ναι γὰρ περιέχεσθαι αὐτόν· καὶ πάντας τοὺς ἐν
αὐτῷ, ἐπὶ τῇ ἀβυσσῶν ἰσχυρῶν· ἡ (ὡς ἐλάβον·
ὁμοίως δὲ καὶ ἰακώβον καὶ ἰωάννην υἱοῦ ζε
βεδαίου, ὁ ἡσυχαιοῦντο πᾶσι μὲν· καὶ
εἶπεν πρὸς τὸν σίμωνα ὁ ἰσ· μὲς φοβοῦ·

ἀπὸ τοῦ νῆυ· αὐτοῖς ἐσιζῶσιν· καὶ καταβα-
νόντες τὰ πλοῖα ἐπὶ τὴν χθὺν· ἀφ' ἑνὸς ἀπα-
τα· ἡ κολούθη (αὐτῶν)· τῇ β πρὸς β ^{Δημ.} ^{εὐ}
ὡ καιρῷ ἐκείνῳ· ἦλθεν οὖτος· καὶ ^{αὐτῶν} ^κ ^{αὐτῶν} ^{αὐτῶν}
εἰς τὴν οἰκίαν τοῦ κῆρος· πενθερά δὲ τοῦ σι-
κῆρος ἐν (σωχομένη) πυρρῷ μεθάλῳ· καὶ ἐ-
ράτησαν αὐτὸν περὶ αὐτοῦ + καὶ ἐπὶ τῶν ἐ-
παρ' αὐτοῦ· ἐπετίμησεν τῷ πυρρῷ, καὶ
ἀφ' ἡκεν αὐτῷ + παραχρῆμα δὲ ἀμαρτῶσαι,
δι' ἡκούει αὐτοῖς + δῶκεν τοῖς δὲ τοῦ ἡλίου παρ-
τῶν ὅσων εἶχον ἀφ' αὐτοῦ τὰς ῥοσσὶς ποικίλαις·
ἐλάβον αὐτοῖς πρὸς αὐτὸν + ὁ δὲ ἐνὶ ἑκάστῳ
αὐτῶν τὰς χῆρας ἐπὶ θεῖς ἐθεράπευσεν αὐ-
τοῖς + ἐξήρχατο δὲ καὶ δαίμονιαι ἀπὸ πολλῶν
κράζονται καὶ λήγονται· ὅτι σὺ ἡ δὲ οὐχὶ οὐχὶ
τοῦ θῦ + καὶ ἐπὶ τῶν· οὐκ εἰς αὐτὰ λα-
λεῖν· ὅτι ἡ δὲ σαρ τὸν χθὺν αὐτὸν εἶναι + ἔ-
νομεν ἐκ δὲ ἡ μεθ' αὐτοῦ· ἐξελθὼν ἐπορεύθη εἰς
ἐρήμον τόπον + καὶ οἱ ὄχλοι ἐπεβήτησαν αὐ-
τὸν καὶ ἦλθον ἐπὶ αὐτοῦ· καὶ κατήχον αὐτὸν,
τοῦ μὴ πορεύεσθαι ἀπ' αὐτοῦ + ὁ δὲ εἶπε
πρὸς αὐτοῖς· ὅτι καὶ ταῖς ἐτέραις πόλεσιν
ἀσπείλισαθαί με δεῖ πρὸς βασιλείαν τοῦ θῦ +
ὅτι εἰς τούτο ἀπέσταλμαι + καὶ ἐνὶ κηρίων
ἐν ταῖς (σωφωγαῖς) πλὴν χαλιδάσ· τῇ γ πρὸς
ὡ καιρῷ ἐκείνῳ· ἐν τῷ ἐν κηρίῳ β ^{Δημ.} ^{εὐ} ^{αὐτῶν} ^κ ^{αὐτῶν}
τῶν πόλεων· καὶ ἰδοὺ ἀνὴρ πλήρης λέπρας +
καὶ ἰδὼν τὸν ἱὸν πρῶτον ἐπὶ πρόσωπον· ἐδὲ ἐ-
βη αὐτοῦ λέγων + κέ· ἐξ ἧς θέλω δῶσάί με

καθαρίσαι· καὶ ἐκ τῆς τῆς τῆς χεῖρας, ἡ ψατο
αὐτοῦ εἰ πῶν· θέλω καθαρίσθαι· καὶ δὲ θέωσ
ἡ λέπρα ἀπὸ τῆς αὐτοῦ· καὶ αὐτὸς πα
ρῆναι αὐτῷ μὴ δὲ νῆξ πῶν· ἀλλὰ ἀπελθὼν
δείξοναί αὐτὸν τῷ ἱερεῖ· καὶ προσέμεγε
περὶ τοῦ καθαρίσμοισιν καθὼς προσέταξε
μωυσῆς, ὅς μαρτύριον αὐτοῖς· διὲρχετο
δὲ μαίμονόλογος περὶ αὐτοῦ καὶ (ὡς) ἔρχοτο
ὄχλοι πολλοί· ἀκούοντες καὶ θεραπεύεσθαι
πάντων· ἀπὸ τῶν αἰσθητῶν αὐτῶν· αὐτὸς
δὲ ὡς ἐπὶ χωρῶν ἐν ταῖς ἐρήμοις καὶ προσά
χόμενος· Τῇ δὲ τῆς β ^{ἀντ} καὶ ^{ἐκ} τοῦ

Π ὡς καὶ ἐκείνῳ· προσελθὼν περὶ τῷ ἱσφ
ρισαίῳ· εἶπον αὐτῷ· Ματίοι μαθηταὶ ἱσφ
ρησάδοις πύκναι· καὶ δὲ ἡσείσ ποιῶνται· ὁ
μοῖωσ καὶ οἱ τῶν φαρισαίων· οἱ δὲ σόδοι, ὡδ
οἱ καὶ πύκνοι· οἱ δὲ ἡσείσ προσ αὐτοῖς· καὶ
δύνασθε τοῖς υἱοῖς τοῦ νυμφώρος· ἐν ὧ οὐκ
φίος μετὰ τῶν ἐπὶ· ποιῆσαι ἡσείσ· ἐλά
σσονται δὲ ἡμέραι· καὶ ἀπαρθῇ ἀπὸ τῶν ὁ
νυμφίος· τότε ἡσείσ· ἐν κείνῳ ταῖς
ἡμέραις· ἔλεγε δὲ καὶ παραβολὴν πρὸς
αὐτοῖς· ὅτι οὐδεὶς ἐπὶ βλήματι ματίου και
ροῦ· ἐπὶ βλήματι ἐπὶ ματίον παλαιόν· ὃ
δὲ μέγε· καὶ τὸ καιρὸν χίλξ· καὶ τῷ παλαιῷ
οὐ σὺ μφανῇ τὸ ἀπὸ τοῦ καιροῦ· καὶ οὐ
δεῖς μαλὶς οἰκονομῆσαι· ὅς ασκῶς παλαιῶς·
ὃ δὲ μέγε· ῥήξθ' ὁ μέος οἶκος τοῦ ασκῶς καὶ
αὐτὸς ἐκ κείνῳ θήσεται· καὶ οἱ ασκοὶ ἀπολοῦνται·

ἀλλὰ οἱ νεότεροι ἤσαν σοφώτεροι καὶ νομίζοντες ἑλπίστον
 καὶ ἀμφοτέρωθεν συζητοῦνται· καὶ οὐδέ τις πῶς
 ὡς παλαιὸν ἀθέως θέλην νέον· λέγει γὰρ ὁ π
 λαὸς ἀρχαιότερον ἔστιν· τῇ ἐκείνου βίῃ
 καὶ ρώῃ ἐκείνῳ· ἐξῆλθεν οὖτος· καὶ τοῦ
 προσερχομένου· καὶ τὸν διακρινόμενον ἐν τῇ πρ
 αχῇ τοῦ θύ· καὶ ὅτε ἐγένετο ἡμέρα προσε
 φώνησεν τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· καὶ ἐκλεξά
 μενος ἀπ' αὐτῶν δώδεκα· οἷον καὶ ἀποστόλους
 ὀνόμασεν· σίμων· ὃν καὶ ὀνόμασεν
 πέτρον· καὶ ἀνδρέαν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ·
 ἰάκωβον καὶ ἰωάννην· φίλιππον καὶ βαρ
 θολομαῖον· ἰακώβον τὸν τοῦ ἀλφαίου·
 καὶ σίμωνα τὸν καλούμενον ζηλωτὴν· ἰού
 δακ ἰακώβου· καὶ ἰούδακ ἰσκαριώτην· ὃς
 καὶ ἐγένετο προδότης· καὶ καταβὰς με
 ταίτων· ἔστιν ἐπὶ τοῦ πεδίου· καὶ ὄχλος
 μαθητῶν αὐτοῦ καὶ πλῆθος πολὺ τοῦ λαοῦ·
 ἀπὸ πάσης τῆς ἰουδαίας καὶ ἰλῆμ· καὶ
 τῆς παραλίου τύρου καὶ σιδῶνος· οἱ ἔλ
 θον ἀκοῖσαι αὐτοῦ· καὶ ἰαθεῖναι ἀπὸ τῶν νό
 στων αὐτῶν· καὶ οἱ ὀχλούμενοι ἀπὸ πρῶν ἀ
 καθάρτων· καὶ ἐθεραπεύοντο· καὶ πᾶς ὁ
 ὄχλος ἐζήτει ἀπτεῖσθαι αὐτοῦ· ὅτι διῶα κίς
 παρ' αὐτοῦ ἐξήρχετο· καὶ ἰάτω πάντας·

τῇ παρὰ τὸν ἑαυτοῦ καὶ τοῦ
 καὶ ρώῃ ἐκείνῳ· ἐξῆλθεν οὖτος ἐπὶ τὸ πεδίου
 καὶ ὄχλος μαθητῶν αὐτοῦ καὶ πλῆθος πολὺ τ
 λαοῦ· ἀπὸ πάσης τῆς ἰουδαίας καὶ ἰλῆμ
 καὶ τῆς παραλίου τύρου καὶ σιδῶνος· οἱ ἔλ
 θον ἀκοῖσαι αὐτοῦ· καὶ ἰαθεῖναι ἀπὸ τῶν νό
 στων αὐτῶν· καὶ οἱ ὀχλούμενοι ἀπὸ πρῶν ἀ
 καθάρτων· καὶ ἐθεραπεύοντο· καὶ πᾶς ὁ
 ὄχλος ἐζήτει ἀπτεῖσθαι αὐτοῦ· ὅτι διῶα κίς
 παρ' αὐτοῦ ἐξήρχετο· καὶ ἰάτω πάντας·

καὶ τῆς παραλήου πυρου καὶ σιδώροσ· οἱ λιχθον
 ἀκοῖσαι αὐτοῦ· καὶ ἰαθῆναι ἀπὸ τῶν νόσων
 αὐτῶν· καὶ οἱ ὀχλούμενοι ἀπὸ πνῶν ἀκαθάρ
 των· καὶ ἐθεραπεύοντο· καὶ πᾶς ὁ ὄχλος
 ἐζήτε· ἀπτεσθαι αὐτοῦ· ὅτι δυνάμις παρ' αὐτοῦ
 ἐξήρχετο· καὶ ἰάτω πάντας· καὶ αὐτὸς ἐ
 παρὰ τοῖς ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ ἦτο τοῖς μαθητῶν
 αὐτοῦ ἔλθεν· μακάριοι οἱ πτωχοί· ὅτι ἐ
 μτίρ' αὐτοῖς ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν· μακα
 ριοι οἱ πνηγνῶν περὶ νῦν· ὅτι χορτασθήσονται·
 μακάριοι οἱ κλαίοντες νῦν· ὅτι μελαστήσεται·
 μακάριοι ἐστε ὅταν μισήσωσιν ὑμᾶς οἱ ἄνθρωποι·
 καὶ ὅταν ἀφορίσωσιν ὑμᾶς καὶ ὀργώσιν·
 καὶ σὺ βάλλωσι τὸ ὄνομα ὑμῶν ὡς πορνη
 ρον· ἐνεκεν τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου· χαρή
 τε ἐνεκεν τῆς ἡμέρας καὶ σκιρτήσατε· ἰδοὺ
 γὰρ ὁ μισθὸς ὑμῶν πολὺς ἐν τῷ οὐρανῷ·

σαμβατον β

κατὰ Λουκᾶν·

Καὶ αὐτὴν ἡμέραν· ἰδὼν δὲ τὰς συναγωγὰς οὖσας· καὶ ἰ
 σάσαν καθήμενοι φαρισαῖοι· καὶ νομοδιδά
 σκαλοι· οἱ ἡσάν ἐληχθότες ἐπὶ πάντι καὶ
 ἐπὶ τῇ σαλιλαίᾳ· καὶ ἰουδαίᾳ· καὶ ἰχθῆς·
 καὶ δυνάμις καὶ ἰσχύς τοῖς ἀσθενέσιν αὐτοῖς· καὶ
 ἰδοὺ ἄνθρωποι φέροντες ἐπὶ κλίνῃς ἀνδρῶν·
 ὅς τινι παραλεχόμενος· καὶ ἐξήτοιμα αὐτῶν
 εἰσενεγκεῖν· καθεῖναι ἐνώπιον αὐτοῦ· καὶ
 μὴ ἄρῶντες ποῖαν εἰσενεγκώσιν αὐτῶν
 διὰ τὸν ὄχλον· ἀναβάντες ἐπὶ τὸ δένδρον
 διὰ τῶν κερᾶν καθεῖναι αὐτὸν (ὡς τῷ

κληροδοῦν τὸ μέγεθος ἐμπροσθεν τοῦ ἰϥ· καὶ
 ἰδὼν τὴν πίσιν αὐτῶν· ἔπεν αὐτῷ· ἄρτι·
 ἀφίενταί σοι αἱ ἁμαρτίαι σου· καὶ
 ἔρξαι ποδὶ ἀλογίζεσθαι οἱ γραμματεῖς καὶ
 φαρισαῖοι λέγοντες· τίς ἐστὶν οὗτος· ὃς
 λαλεῖ βλασφημίας· τίς δύναται ἀφίεναι
 ἁμαρτίας· ἢ μὴ μόνος ὁ θεὸς· ἐπὶ μὲν οὖν
 οἱ τοιοῦτοι κοῖοι αὐτῶν· ἀποκριθεὶς ἐ-
 πεν πρὸς αὐτοὺς· τίς ἀλογίζεσθαι ἐν ταῖς
 καρδίαις ὑμῶν· τίς ἐστὶν ὁ κοπάτωρ ἢ
 πείν· ἀφίενταί σοι αἱ ἁμαρτίαι σου· ἢ
 ἢ πείν· ἐγείρε καὶ περιπατεῖ· ἰσχυρὸν
 εἶπε ὅτι ἐξουσίαν ἔχει ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου· ἐ-
 πὶ τῆς γῆς ἀφίεναι ἁμαρτίας· ἔπεν τῷ
 παραλελυμένῳ· σὺ λέγεις· ἐγείρε· καὶ ἄ-
 ρας τὸ κληρίδιόν σου· πορεύου εἰς τὸν οἶ-
 κόν σου· καὶ παραχρῆμα ἄρσενος ἐ-
 νῶ πῖον αὐτῶν· ἄρας ἐφ' ᾧ κατέκειτο· ἀπήλ-
 θεν εἰς τὸν οἶκόν αὐτοῦ· δέξασθαι τὸν θεόν·
 καὶ ἐκείνους ἐλάβεν ἅπαντας καὶ ἐ-
 δέξαζον τὸν θεόν· καὶ ἐπλήθυνον φόβου
 λέγοντες· ὅτι ἔδοξεν παραδοῖν σήμερον·

-Αἱ
 ἐω χ ἡ χ β

κεραιή β· κατὰ λουκᾶν·
 Ἰππερὸς· καθὼς θέλει τεῖναι ποιῶσιν ὑ-
 μῖν οἱ ἄνθρωποι· καὶ ὑμεῖς ποιῆτε αὐτοῖς ὁμοί-
 ως· καὶ ἡ ἀγάπη τε τοῖς ἀγαπῶντας ὑ-
 μᾶς· ποῖα ὑμῖν χάρις ἐστὶν· καὶ γὰρ οἱ ἁ-
 μαρτωλοὶ τοῖς ἀγαπῶντας αὐτοὺς ἀγα-
 πῶσι· καὶ ἐξ ἧς ἀγαθοποιεῖτε τοὺς

λαθοποιῶντας ἑμάς, ποῖα ὑμῖν χάρις ἐστίν·
καὶ γὰρ οἱ ἁμαρτωλοὶ τὸ αὐτὸ ποιοῦσιν· καὶ
ἐὰν δαμάσῃτε παρ' αὐτῶν ἐλπίζετε ἀπολαβῆναι,
ποῖα ὑμῖν χάρις ἐστίν· καὶ γὰρ οἱ ἁμαρτωλοὶ
ἁμαρτωλοῖς δαμάζουσιν· ἵνα ἀπολάβωσι τὰ
ἴσα· πλὴν, ἀπατάτε τοὺς ἐχθροὺς ὑμῶν καὶ
ἀλαθοποιῆτε· καὶ δαμίζετε μηδὲν ἀπελπίζον-
τες, καὶ ἐστὶ ὁ μισθὸς ὑμῶν πολὺς· καὶ ἐστὶ θε-
οῦ ἰσοψύχου· ὅτι αὐτὸς χρηστὸς ἐστίν ἐπὶ τοῖς ἁ-
χαρίστοις καὶ πονηροῖς· ἡμεθεῶν οἱ κτήρ μο-
νὰς ἡμετέρας καὶ ὁ πῦρ ὑμῶν οἱ κτήρμων ἐστίν·

τὴ β' πλὴν τ' οὐκ καὶ λού·

Κὶ περὶ αὐτῶν πρὸς τοὺς ἐληλυθῶτας πρὸς αὐτοῦ τοῦ
δαίον· οὐαὶ ὑμῖν τοῖς πλοῖσι οἱς, ὅτι ἀπέχτε τὴν
παρακλῆσιν ὑμῶν· οὐαὶ ὑμῖν οἱ θηπεπλῆ-
μενοί, ὅτι πηγάσατε· οὐαὶ ὑμῖν οἱ γελοῦ-
τες ῥῖν, ὅτι περ θήσεται καὶ κλαύσεται· οὐαὶ
ὅταν καλῶς ἑμάς εἰπώσιν οἱ ἄνθρωποι· καὶ ταῦτα
γὰρ ἐποίησεν τοῖς ψαλοῦντες προφῆταις οἱ πρῶτοι
αὐτῶν· ἀλλ' ἀκούετε τὴν φωνὴν τοῦ ἀκούουσιν· ἀπα-
τάτε τοὺς ἐχθροὺς ὑμῶν· καλῶς ποιῆτε τοῖς
μισοῦσιν ὑμᾶς· ἀλογεῖτε τοὺς καταρωμέ-
νοὺς ὑμῶν· προσάρατε ἀπὸ τῶν ἐπηρθε-
ντων ὑμῶν· τῷ πῦρ πῦρ πῦρ ἐπὶ τὴν σῖαν-
τα, παρέχε καὶ τὴν ἀγνῶν· καὶ ἀπὸ τοῦ
αἵρου τοῦ σου τὸ ἱμάτιον, καὶ τὸν χιτῶνα
μικροῦς· παρτίδ' αὐτοῦ πια-
θῶν· καὶ ἀπὸ τοῦ αἵρου τοῦ πασσαλίου
ἀπείκεται·

τῇ γ' τῆς γ' αὐτῆς κατὰ λουκᾶν·
 Ἰπὲρ οὐκ ἐμὴ κρίνετε καὶ οὐκ ἐκρίθητε· μή
 καταδικάζετε, καὶ οὐκ ἐκ καταδίκης ἀπο
 κρίνεται, καὶ ἀποκρίσεται· δίδετε, καὶ δοθήσεται
 ὑμῖν· μέτρον καλὸν πεπίθμενον, καὶ σά
 σαλα μένον· καὶ ὑπερῶν ἡμιόμενον· δόσου
 σὶν εἰς τὸν κόλπον ὑμῶν· τὰ γὰρ αὐτῶ με
 τρῶ, ὡς μετρεῖτε, ἀντὶ μετρήσεται ὑμῖν·
 εἰ πενδὲ παραβολὴν αὐτοῖς· μή τι δύναιται
 φλῶς τῷ φλῶν ὁδῆσαι, οὐχὶ ἀμφοτέροις ῥέβο
 θισον ἐμπεσοῦνται· οὐκ ἐστὶ μαθητὴς ὑ
 πὲρ τοῦ διδάσκαλου αὐτοῦ· κατὴρ πίσιμενος
 δὲ πᾶσι· ὡς ὁ διδάσκαλος αὐτοῦ· τίδε
 βλεπέτω καρφὸς τῷ ἐν τῷ ὀφθαλμῷ τοῦ ἀδελφοῦ
 σου· τί δὲ δοκὸν τῷ ἐν τῷ ἰδίῳ ὀφθαλμῷ, οὐ
 κατὰ νοεῖς· ὡς πῶς δύναιται χεῖν τῷ ἀ
 δελφῷ σου· ἀδελφε· ἄφω σὺ βάλε τὸν καρφόν
 τῷ ἐν τῷ ὀφθαλμῷ σου, αὐτὸς τῷ ἐν τῷ ὀφθαλ
 μῷ σου δοκόν, οὐ βλέπων· ὑποκριτὰ· σὺ
 βάλε πρῶτον τὸν τῷ δοκόν ἐκ τοῦ ὀφθαλμοῦ σου,
 καὶ τότε δευτέρως σὺ βάλε τὸν καρφόν τῷ ἐν
 τῷ ὀφθαλμῷ τοῦ ἀδελφοῦ σου· οὐ γὰρ ἐστὶ
 δρῦν δρον καλόν, ποιοῦν καρπὸν σαπρόν· οὐ
 δὲ δένδρον σαπρόν, ποιοῦν καρπὸν καλόν·
 ἕκαστον γὰρ δένδρον ἐκ τοῦ ἰσθμοῦ καρποῦ δι
 γνώσκεται· οὐ γὰρ ἐξ ἁκανθῶν σῦμμι
 χοισκούμενα· οὐδὲ ἐκ βάτου, τρυγώσι σαφύ
 λην· ἀγαθὸς ἄνθρωπος, ἐκ τοῦ ἁθροῦ θησαι
 ροῦ τῆς καρδίας αὐτοῦ προφέρει τὸ ἁθρόν·

καὶ ὁ πονηρὸς ἄνθρωπος· αὐτοῦ πονηροῦ θησαυροῦ
τῆς καρδίας αὐτοῦ· προσφέρει τὸ πονηρὸν + καὶ
γὰρ περιδύματα τῆς καρδίας· λαλεῖ τὸ σὸ
μα αὐτοῦ· ~ τῇ δ' ἡσυχίᾳ κατὰ λουκᾶν·

Κὶ πένοντες τί με καλεῖτε καὶ ἐγὼ· καὶ οὐ ποιεῖτε
ἀλλ' ἔγωγε· πᾶς ὁ ἐρχόμενος πρός με καὶ ἀκού
ων τῶν λόγων καὶ ποιῶν αὐτοῖς· ὑποδείξω ἑμὶν·
τί γὰρ ἐστὶν ὁμοίος + ὁμοίος ἐστὶν ἄνθρωποι κοδμοῦ
τι οἰκίαν· ὅς τις αἰψὺ καὶ ἀβάνωσεν καὶ ἐθ
κεν θεμελίον ἐπὶ τῇ πέτρᾳ + πλημμέλεις
δέξιν αὐτοῦ· προσέρρηξεν ὁ ποταμὸς πρὸς οἰ
κίαν ἐκείνην· καὶ οὐκ ἴσμεν σαλῶσαι αὐτήν +
τε θεμελίω τῇ γὰρ ἐπὶ τῇ πέτρᾳ + ὁ δὲ ἄ
κοῖσας καὶ μὴ ποιήσας· ὁμοίος ἐστὶν ἄνθρω
ποι κοδμησάμενοι οἰκίαν ἐπὶ τῇ γῇ χωρὶς
θεμελίου + ἐπὶ προσέρρηξεν ὁ ποταμὸς· καὶ
ἀπείχετο ἐπὶ πῶς· καὶ ἐκείνη τὸ ῥῆμα τῆς
οἰκίας ἐκείνης μέγα + ἐπὶ δὲ ἐπλήρω
σε πάντα τὰ ῥήματα αὐτοῦ· εἰς τὰς ἀκο
ὰς τοῦ λαοῦ ἐξῆλθεν ὁσὲν ἀπερναοῖς· ~

τῇ δ' ἡσυχίᾳ κατὰ λουκᾶν·
Καὶ ὡς ἐκείνῳ· ἐξῆλθεν ὁ λόγος τοῦ ἰωάννου
ἐν τῇ ἰουδαίᾳ περὶ αὐτοῦ· καὶ ἐν πάσῃ τῇ
περιχώρῳ + καὶ ἀπήγγελλαν ἰωάννην ὁμαθί
ται αὐτοῦ· περὶ πάντων τούτων + καὶ πρὸς
καλεσάμενος διότι νῦν ἄσπετος μαθητῶν
αὐτοῦ οἱ ἰωάννης· ἐπεμψεν πρὸς τὸν ἰω
άννην· οὐ γὰρ ἐρχόμενος· ἐπὶ ἄλλον πρὸς
δοκίμην + παραβέβηκεν οἱ δὲ πρὸς αὐτ

(4) αὐτοὶ εἶπον· ἰωάννης ὁ βαπτιστὴς ἀπέ-
 σταλκεν ἡμᾶς προαγγέλλων· σὺ γὰρ ἐρχόμενος·
 ἢ ἄλλον προσδοκῶμεν· ἐν αὐτῇ δὲ τῇ ὥρᾳ ἐ-
 θεράπευσεν πολλοὺς ἀπὸ νόσων καὶ μαστιγῶν·
 καὶ τυφλοῖς πολλοῖς ἐχαρίσατο τὸ βλέπειν·
 καὶ ἀποκριθεὶς ὁ ἰσὶς εἶπεν αὐτοῖς· πορευθέν-
 τες ἀπαγγέilate ἰωάννη αὐτὸ ἵδτε καὶ ἠκούσα-
 τε· ὅτι τυφλοὶ ἀναβλέποισιν· χωλοὶ περι-
 πατοῦσιν· λεῖπροι καθαρίζονται· κωφοὶ ἀ-
 κούουσιν· νεκροὶ ἐγείρονται· πτωχοὶ ἀαγέ-
 λίζονται· καὶ μακάριοι εἰσιν ὅς ἐσμεν
 σκαρδαλιαθῆ ἐνεκεν· ἀπελθόντων δὲ τῶν
 ἀγγέλων ἰωάννου· ἤρξατο λέγειν τοῖς ὄχλοις
 περὶ ἰωάννου· τί ἐξηλθατε εἰς τὴν ἔρη-
 μον διαβάσαι· καὶ λαμβάνειν τὸ ἀνέμου σπ-
 λαόμενον· ἰδοὺ ἐνι ματίς μου εὐδὲξω καὶ
 τρυφῇ ὑπάρχοντες· ἐν τοῖς βασιλεῦσι ῥοῖν·
 ἀλλὰ τί ἐξηλλύθατε ἰδοὺ· προφήτῃ· καὶ
 λέγω ὑμῖν· καὶ περισσότερον προφήτου· οὐ-
 τὸς εἰσιν περὶ οὗ γέγραπται· ἰδοὺ ἐγὼ ἀπο-
 στέλλω τὸν ἀγγέλόν μου προπορεύσασθαι·
 ὃς κατὰ σκασσει τὴν ὁδὸν σου· λέγω ὑμῖν·
 μήλων ἐν γεννῇ τοῖς γυναικῶν προ-
 φητῆς ἰωάννου τοῦ βαπτιστοῦ, οὐδεὶς ἐστίν·
 ὁ δὲ μικρότερος ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ θυ· μέ-
 γιστος αὐτοῦ ἐστίν· καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἀκούσας
 καὶ οἱ τελῶναι ἐδίδουσαν τὸν θῦ· βα-
 πτισθέντες τὸ βάπτισμα ἰωάννου· οἱ δὲ φα-
 ρισαῖοι καὶ οἱ ρωμαῖοι τὴν βουλὴν τοῦ θυ ἢ θε-

ἀλλὰ τί ἐξηλ-
 λυθατε ἰδοὺ
 ὁ μαλακοῖς ἰ-
 ματίοις ἐμφι-
 σκεμένον·

22
τησαν εἰς ἑαυτοὺς μὴ βαπτισθέντες ὑπ' αὐτοῦ·

τῇ παρὰ τῆς ^{ἐκ} ^{κατὰ} ^{λου}

Εἰπεν οὖν περὶ ὧν ὁμοιωσάτω τοῖς ἀφ' οὗ πῶς ἐγενή-
σασταί τῆς· καὶ περὶ ὧν ὁμοιοί· ὁμοιοί εἰ-
σοιπαὶ τοῖς ^{ἐκ} ^{κατὰ} ^{λου} καθημένοις· καὶ πρὸς
φωροῖσιν ἀγγέλοις καὶ λέχοισιν· ὑψίστα μὲν
ἐμὴν· καὶ οὐκ ἀρχήσατε· Ἐλήλυθεν γὰρ ἡ
ἀρχὴ τοῦ βαπτισμοῦ· μήτε ἀφ' τοῦ ὁσίου μήτε
οἴκου πύλων· καὶ λέγετε δαιμόνιον ἔχον· Ἐ-
λήλυθεν οὖν τοῦ ἀφ' οὗ ὁσίου καὶ πύλων· καὶ
λέγετε· ἰδοὺ ἀφ' οὗ φάρος καὶ οἶκος πότις· φίλος
τελωνῶν καὶ ἀμαρτωλῶν· καὶ ἐδὴ καὶ
θηήσομεθα· ἀπὸ τῶν τέκνων αὐτοῦ πατρὶν·

σαββατοῦ ^{κατὰ} ^{λου}

Εὐκαὶρῶν ἐκείνῳ· παρὰ τῶν οὗτων ἐθεάσατο τε-
λῶν καὶ ὁρματὶ λαὸν καθημένον ἐπὶ τὸ πτε-
ρυχόριον· καὶ εἰπεν αὐτῷ· ἀκολούθει μοι· καὶ
καταλιπὼν ἅπαντα· ἀραγὰς ἠκολούθησεν
αὐτῷ· καὶ ἐποίησεν δοχλὸν μεθ' αὐτοῦ λαῖς
αὐτοῦ· ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτοῦ· καὶ ἦν ὄχλος τε-
λωνῶν πολλὸς· καὶ ἄλλων· οἳ ἦσαν μετὰ αὐτῶν·
κατακείμενοι· καὶ ῥόγνυζον οἰζυράματα
τοῖς αὐτῶν καὶ οἱ φαρισαῖοι πρὸς τοῖς μαθη-
ταῖς αὐτοῦ λέγοντες· διατί μετὰ τῶν τελο-
νῶν καὶ ἀμαρτωλῶν ἐσθίετε καὶ πίνετε·
καὶ ἀποκριθεὶς ὁ ἰσχυρὸς εἰπεν πρὸς αὐτοὺς·
οὐκ ἔχοντες ἔχοισιν οἱ υἱαὶ μου τὰς ἰατρὰς·
ἀλλ' οἱ καθὼς ἔχοντες· οὐκ ἐλήλυθα καλε-
σαι δὲ καὶ οὐκ ἄλλα ἀμαρτωλοὺς ῥέμειναι μετὰ μοι·

ἡ ρ ι α κ ῆ ρ καὶ λουκαρ.
 ὡ καιρῶ ἐκείνῳ· ἔπορεύθη δὲ εἰς πόλιν
 καλουμένην μαῖν· καὶ συνεπορεύοντο αὐ-
 τῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἱκανοί· καὶ ὄχλος πο-
 λὺς· ὡς δὲ ἤγγισεν τῇ πόλει· ἔκλεισε· καὶ
 ἰδοὺ ἐξέκομίζοντο νεκροί· ἵσσοι μοιροῦντες τῇ
 κυρίῳ αὐτοῦ· καὶ αὐτῇ ἡ χήρα· καὶ ὄχλος τῶ
 πόλεως ἱκανὸς συνῆλθε· καὶ ἰδὼν αὐτὴν ὁ
 ἰησοῦς ἐπαύσατο· καὶ ἔειπεν αὐτῇ·
 μή κλαίς· καὶ προσελθὼν ἥψατο τῆς σωροῦ·
 οἱ δὲ βασάζοντες· ἔστησαν· καὶ ἔειπεν· νεανί-
 σκε· σοὶ λέγω· ἔγερθη· καὶ ἀνεκλήθη
 σενὸν νεκρὸς· καὶ ἤρξατο λαλεῖν· καὶ ἔδωκεν
 αὐτὸν τῇ κυρίῳ αὐτοῦ· ἔλαβεν δὲ φόβος ἅ-
 παντας καὶ ἐδόξαζον τὸν θεὸν λέγοντες· ὅ-
 τι προφήτης μέγας ἐγέρθη ἐν ἡμῖν· καὶ
 ὅτι ἐπεσκέψατο ὁ θεὸς τὸν λαόν αὐτοῦ·

τῇ β π η ρ ρ κατὰ λουκαρ.
 ὡ καιρῶ ἐκείνῳ· ἦρψαντες τῶν φαρισαίων τὸν
 ἱμῖνα φάσμα αὐτοῦ· καὶ προσελθὼν εἰς τὴν οἰ-
 κίαν τοῦ φαρισαίου· ἀνεκλήθη· καὶ ἰδοὺ
 γυνὴ ἐν τῇ πόλει· ἡ τῆς ἡμαρτωλοῦ· καὶ
 ἐπιγνῶσα ὅτι ἀνέκειται ἐν τῇ οἰκίᾳ τοῦ
 φαρισαίου· κομίσασα ἀλάβαστρον μύρου
 καὶ ἔκασα πρὸς τοὺς πόδας αὐτοῦ ὀπίσω· καί
 οἶσεν ἡρξατο βρέχειν τοὺς πόδας αὐτοῦ τοῖς δά-
 κρυσι· καὶ ταῖς θριξίτις κεφαλῆς αὐτῆς ἐξέ-
 μασεν· καὶ κατεφίλει τοὺς πόδας αὐτοῦ καὶ
 εἰληφεν πᾶν ῥῶμα· ἰδὼν δὲ ὁ φαρισαῖος ὁ κα-

λέσας αὐτὸν· εἶπεν ἐνέ αὐτῷ λέγων· οὗτος
ἔγω προφήτης· ἐγίνωσκεν ἄν τις καὶ ποταπήλι
γυνή· ἢ τις ἀπὲς αὐτοῦ· ὅτι ἁμαρτωλὸς ἐστὶ
καὶ ἀποκριθεὶς ὁ ἴσ' εἶπεν πρὸς αὐτὸν· σι
μῶν· ἔχω σοί τίς ἔπειν· ὁ δὲ θηοῖν· διδάσκ
λε· ἔπε· νόχρεο φηλέται ἡσανδα ρισή τινι
ὁ ἔς· ὁ φηλεν δὲ νάρι αὐ πενταμόσια· ὁ δὲ ε'
περὸς πεντήκοντα· μὴ ἔχοντων δὲ αὐτῶν
ἀποδοῦναι· ἀμφοτέροισ' ἔχαριθτο· τίς οὖν
αὐτῶν ἔπε· πλείον αὐτὸν ἀγαπήσθ'· ἀποκρι
θεὶς δὲ ὁ σίμων ἔπεν· ὑπὸ λαμβάνω· ὡς το
πλῆθον ἔχαριθαστο· ὁ δὲ εἶπεν αὐτῷ· ὁρ
θῶς ἐκρίνας· καὶ γραφεῖς πρὸς τὴν γυναι
κα· τῷ σίμωνι ε' φη· βλέπῃς ταύτην τὴν γυ
ναῖκα· ἡσθλθον σου εἰς τὴν οἰκίαν· ὕδωρ ε'
πὶ τοῖς πόδαί μου οὐκ ἐδώκας· αὕτη δὲ
τοῖς δούλοις ἐβρεξέν μου τοῖς πόδας· καὶ
ταῖς θριξί τῆς κεφαλῆς αὐτῆς ἐξέμαξεν·
φίλημά μοι οὐκ ἐδώκας· αὕτη δὲ ἀφ' ἧς ἡσθλ
θον οὐδέ ἐλιπεν καταφίλοισά μου τοῖς πό
δας· ἐλαίω τὴν κεφαλὴν μου οὐκ ἔλειψας·
αὕτη δὲ μέρω ἢ λειψέ τοῖς πόδαί μου· οὐχ ἁ
ρὶν λέγω σοι· ἀφίονται αἱ ἁμαρτίαι αὐτῆς αἱ
πολλαί· ὅτι ἡγάπησε πολὺ· ὡς δὲ ὀλίγον ἀ
φίται· ὀλίγον ἀγαπᾷ· εἶπεν δὲ αὕτῃ·
ἀφίονται σοὶ αἱ ἁμαρτίαι· καὶ ἤρξατο
ἔτι ἀνακείμενοι λέγων ἐνέ αὐτοῖς· τίς οὗτ
ἐστιν· ὃς καὶ ἁμαρτίας ἀφίησιν· εἶπεν δὲ
πρὸς τὴν γυναικα ἡπίστατος σε σωκέναι·
ζοποροῦς δὲ ἡρώλω· ~

^{τῇ γ' τῆς δ' εὐ' η' λου:}
Καὶ ῥῶ ἐκέρω· ἐπορεύθη οὖν κατὰ πόλιν καὶ
κώμην· κηρύσσων καὶ δαήμενος τὴν βα-
σιλείαν τοῦ θ'· καὶ οἰδύμενος αὐτῷ + καὶ
ζηλοῦντες αὐτὸν αἵ ἦσαν τεθεραπευμένοι, αἱ
πρὸ πρῶν πορνικῶν καὶ ἀσθενειῶν + μαρτίαν
ἡ καλουμένη ματθαίην· ἀφ' ἧς δαιμόνια ἐ-
παύθη ἐκλήθη + καὶ ἰσχυρῶς αὐτῷ χεῖρας
ἐπιτίθου ἡρώδου + καὶ σοῦ σαμνα· καὶ ἕτεροι
πολλοί· αἱ τινὲς δὲ κέκονον αὐτοῖς ἀπὸ τῶν
ὑπαρχόντων αὐταῖς· ~ ^{αὐτῶν γὰρ φωνή} τῇ ε' τῆς δ' εὐ' η' λου:

Καὶ ῥῶ ἐκέρω· ἀνέβη οὖν κατὰ λου-
κὴν πλοῖον· καὶ οἰμαθῆναι αὐτοῦ· καὶ ἔπεν
πρὸς αὐτοῖς· διελθώμεν εἰς τὸ πέραν τῆς
λίμνης· καὶ ἀνήχθησαν + πλεόντων δὲ αὐ-
τῶν ἀφύπνωσεν· καὶ κατέβη λαίλαψ ἀνέμῃ
εἰς τὴν λίμνην· καὶ πληροῦντο καὶ ἐκί-
νωσαν + προσελθόντες δὲ ἡγήσαντο αὐτὸν λέ-
γοντας· ἐπίσταται ἐπίσταται· ἀπομύμεθα +
ὁδὸν ἐγρηθῶς· ἐπετίμησεν τῷ ἀνέμῳ· καὶ
τὸ κλύδωνι τοῦ ὕδατος· καὶ ἐπαύσατο· καὶ ἐ-
γένετο γαλήνη + εἶπεν δὲ αὐτοῖς· ποῦ ἐστὶν ἡ
πίσις ἱμῶν + φοβούμενοι δὲ ἐθαύμασαν
λέγοντας πρὸς ἀλλήλους + τίς ἄρα οὗτος ἐ-
στίν· ὅτι καὶ τοῖς ἀνέμοις ἐπιτάσῃ καὶ τῷ ὕ-
δατι· καὶ ὑπακούουσιν αὐτῷ· ~ τῇ ε' τῆς δ' εὐ' η' λου:

Καὶ ῥῶ ἐκέρω· καὶ τῆς δ' εὐ' η' λου·
ἵκοισιν ἡρώδης ὅτε τράρχῃς τὰ γινόμενα
ὑπὸ τοῦ ἱ'· πάντα καὶ διηπόρει· διατρίβεται

ὑπὸ τῶν ὁπ' ἰωάννης ἐκίχεται σὺν κερῶν·
ὑπὸ τῶν δὲ ὁπ' ἡλίας ἐφάνη· ἄλλων δὲ ὁπ'
προφήτης εἰς τῶν ἀρχαίων ἀνέστη· καὶ εἰ
πενήρῳδης· ἰωάννης· ἡρώδης ἀπέκεφαλίσαι·
τίς δὲ ἐστὶν οὗτος· περὶ οὗ ἐγὼ ἀκούω τοιαύ-
ται· καὶ ἐζήτησεν αὐτὸν ἰδεῖν· καὶ ἰπὸς ῥε-
φάρτες Θ' ἀπὸ σολομηνί (αὐτὸ αὐτῷ ὅσα ἐ-
ποίησαν· καὶ παραλαβὼν αὐτοῖς ὑπεχώ-
ρησεν κατιδίαν εἰς τὸ πονεῖν· πόλεως
καλουμένης βοθησαῖδα· Θ' δὲ ὄχλοι γυν-
τες· ἡ κολούθησαν αὐτῷ· καὶ δεξάμενος αὐ-
τοῖς· ἐλάλθαι τοῖς περὶ τῆς βασιλείας τοῦ
θ'· καὶ τοῖς ἐργάζοντο θέραιαν ἀσίου·

τῇ παρὰ τῆς ὁπ' ἡλίας·

Καὶ αἰρῶ ἐκείνῳ· προσελθόντες τῷ ἰωάννῳ
καμαθῆται εἰπὸν αὐτῷ· ἀπόλυσον τὸν ὄ-
χλον ἵνα ἀπελθόντες εἰς τὰς κώμας
καὶ τοῖς ἀγροῖς κατακλίσωσι· καὶ ἀρωσίν ἐ-
πίσπευσεν· ὅτι ὡς ἐνέριμω τὸ πῶς ἐκείν· ἡ
πενδὲ πρὸς αὐτοῖς· ὁ δὲ αὐτοῖς ὑμῶς φασεῖν·
οἱ δὲ εἶπον· οὐκ ἔσιν ἡμῖν πλῆθον ἢ πέντε ἄρτοι·
καὶ ἰχθύες δύο· ἡμῖν τι πορᾶθῃτες ἡμεῖς αἰώ-
ρασθαι πάντα τὸν λαὸν τοῦτον βρώματ·
ἡ σαργὰ· ὡς ἡ ἀνδρῶν πεντακισχίλιοι· εἶπεν
δὲ πρὸς τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ· κατακλίματ
αὐτοῖς κλισίας ἀρα πεντήκονται· καὶ ἐποίησ-
άν· οὕτως· καὶ ἀνέκλινεν ἅπαντας· λαβὼν δὲ
τοὺς πέντε ἄρτους καὶ τοὺς δύο ἰχθύας· ἀναβλε-
ψας εἰς τὸν οὐρανὸν εὐλόγησεν αὐτοῖς· καὶ κα-

τέκλασεν· καὶ ἐδίδου τοῖς μαθηταῖς παρατιθεῖ
καὶ τῷ ὄχλῳ· καὶ ἐφάθον καὶ ἐχορτάσθησαν
πάντες· καὶ ἦρθ· τὸ περιστάσαν αὐτοῖς, κλας
ματῶν κοφίνοι δώδεκα· καὶ ἐζήνυτο ἐν τῷ ἔθναι
αὐτὸν προσερχόμενον κατὰ μόνας· (ὡν ἦσαν αὐ
τῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ)· ~ σάββατον δ'

Καὶ ἦν ἐκείνῳ· ἐπορεύετο δὲ ἰσὺ κατὰ λουίαν·
τοῖς σάβμασι θανάτων ασορίμων· καὶ ἐτίχον οἱ
μαθηταὶ αὐτοῦ τῷ σάχυσ καὶ ἡθιον· φάρον
τῶν ταῖς χερσὶν· τίνας δὲ τῶν φαρισαίων εἰ
πορ αὐτοῖς· τί ποιῇτε οἱ οὐ κέξεσιν ποιεῖν ἐν
τοῖς σάβμασι· καὶ ἀποκριθὲς πρὸς αὐτοῖς·
εἰπὲν ὁ ἰσὺ· οὐδὲ τούτο ἀνέγνωτε ὅτι ἐποίησεν
δὰδ· ὁ πότε ἐπάρασεν αὐτὸς καὶ μετ' αὐτοῦ
οἱ τέσσαρες εἰσῆλθεν εἰς τὸν οἶκον τοῦ θυ· καὶ
τοῖς ἄρτοις τῆς προθέσεως ἐλάβεν καὶ ἐ
φάσεν· καὶ ἐδώκεν καὶ τοῖς μετ' αὐτοῦ· οἷον
οὐ κέξεσιν φαεῖν· ἡ μὲν μόνον τοῖς ἱερεῶσι·
καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· ὅτι κέ ἐστὶν ὁ ἰσὺ τοῦ ἁγίου
καὶ τοῦ σαβμάτου· ἐγὼ γὰρ τοῦδε καὶ ἐν ἐπεί
ρω σαββάτω εἰσῆλθὼν αὐτὸν εἰς τὴν σινάτω
τὴν καὶ διδάσκων· καὶ ἡ ἐκείνῳ ἄρτος καὶ ἡ χῆρ
αὐτοῦ ἡ δεξιὰ· τὴν ζηνὰν· παρετήρου δὲ οἱ
γραμματεῖς καὶ οἱ φαρισαῖοι· ἡ ἐν σαββάτω
θεραπεύσῃ ἵνα ἐύρωσι κατηγορεῖν αὐτοῦ· αὐ
τὸς δὲ ἤδει τοῖς δαυλοῖς μοῖς αὐτῶν· καὶ εἰπὼν
τῷ ἁγίῳ τῷ ζηνὰν· ἔχον τὴν τὴν χῆραν· ἐγὼ γὰρ καὶ
σηθὶ εἰς τὸ μέτρον· ὁ δὲ ἀναστὰς ἔστη· εἰπὼν οὖν ὁ
ἰσὺ πρὸς αὐτοῖς· ἐπερωτήσω ὑμᾶς τί ἐξεστὶ τοῖς

σάμβασι· ἀβασθοποιῆσαι· ἢ κδοποιῆσαι·
 ψιχλῶσῶσαι ἢ ἀποκτεῖναι· καὶ περὶ
 βλεψάμενος πάντας αὐτοὺς εἶπεν
 αὐτῷ· εὐτειμον ἦν χεῖράσου· ὁ δὲ εὖ
 ποίησεν· καὶ ἀπεκατεσάθη ἡ χεὶρ αὐτοῦ
 ὡς ἡ ἀλλή· ~

τὸ παρ' αὐτῷ ἐν χεῖρσιν αὐτοῦ.

σάμβατον θ' καὶ λουκα

Καὶ ῥῶ ἐκ ῥῶ· πορδομένου τοῦ
 ἐν τῇ ὁδῷ· εἶπεν γὰρ πρὸς αὐτόν· ἀκο
 λουθήσω σοι ὁ πονεῖς ἀπὸ πέρχληκε + καὶ
 εἶπεν αὐτῷ ὁ ἴσ· αἰαλὼ περὶ φωλεοῖς
 ἔχοισι· καὶ ταπεινὰ τοῦ οὐνοῦ καὶ
 τασκηνώσει· ὁ δὲ ἵστος τοῦ ἄρου οὐκ ἔχει
 πού τι καφαλὴν καὶ ἡμῶν + εἶπεν δὲ πρὸς
 ἑτέρον· ἀκολουθήτω· ὁ δὲ εἶπεν· κε
 ἐπιτρέψω μοι πρῶτον ἀπελθεῖν καὶ
 θάψαι τὸν πατέρα μου + εἶπεν δὲ αὐ
 τῷ ὁ ἴσ· ἀφ' ὧν τοῖς μεκροῖς· θάψαι τοῖς
 ἑαυτῶν μεκροῖς· σὺ δὲ ἀπελθὼν δια
 γέχετι τὴν βασιλείαν τοῦ θ' + εἶπεν
 δὲ καὶ ἑτέρος· ἀκολουθήσω σοι κε· πρῶ
 τον δὲ ἐπιτρέψω μοι ἀπὸ ταύξασθαι
 τοῖς εἰς τὸν οἶκόν μου + εἶπεν δὲ ὁ
 ἴσ πρὸς αὐτόν· σὺ δὲ εἰς ἐπὶ βαλὼν
 τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἀπ' αἰρώτρον καὶ
 σφραγεῖς εἰς τὰ ὀπίσω· ἄθετός ἐ
 σιν εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ θ'· ~

καὶ λουκαῖον.
 Ἡ πενὸς τὴν παραβολὴν ταύτην. Ἐξήλ-
 θεν ὁ ἀσείρων, τοῦ ἀσείραι τοῦ ἀσέρον
 αὐτοῦ· καὶ ἐν τῷ ἀσείρῳ αὐτοῦ. Ὁ
 μὲν ἐπεσεν παρὰ τὴν ὁδὸν καὶ κατε-
 πατήθη. καὶ τὰ πετεῖρα τοῦ οἴνου
 κατέφαγεν αὐτῷ· καὶ ἕτερον ἐπε-
 σεν ἐπὶ τὴν πέτραν. καὶ φύεν ἐξ-
 ῥαβθὴν διὰ τὸ μὴ ἔχειν ἰκμάδα· καὶ
 ἕτερον ἐπεσεν ἐν μέσῳ τῶν ἀκαρθῶν.
 καὶ σὺμφυεῖσαι αἱ ἀκαρθαὶ ἀπέπρι-
 ξαν αὐτῷ· καὶ ἕτερον ἐπεσεν εἰς
 τὴν γλῶττιν ἀγαθὴν. καὶ φύεν ἐποι-
 ῆσεν καρπὸν· ἐκατομτα πλασίωμα·
 ἐπηρώται μὲν αὐτὸν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ,
 λέγοντες· τίς ἐστὶν ἡ παραβολὴ αὐ-
 τή· ὁ δὲ εἶπε· ὑμῖν δέδοται γινῶναι
 τὰ μυστήρια τῆς βασιλείας τοῦ θυ· τοῖς
 δὲ λοιποῖς ἐν παραβολαῖς· ἵνα βλέπον-
 τες, μὴ βλέπωσιν· καὶ ἀκούοντες, μὴ
 σιωπῶσιν· ἐστὶν δὲ αὕτη ἡ παραβολή·
 ὁ ἀσέρος ἐστὶν ὁ λόγος τοῦ θυ· οἱ δὲ πα-
 ρατὴν ὁδὸν εἰσὶν, οἱ ἀκούοντες· εἶτα
 ἐρχεται ὁ διάβολος καὶ αἶρει τὸν λό-
 γον ἀπὸ τῆς καρδίας αὐτῶν· ἵνα μὴ
 πισθῶσαν τὰ σωθῶσιν· οἱ δὲ ἐπὶ
 τῆς πέτρας, οἱ ὅτε μὴ ἀκούσωσι τὸν λό-
 γον, μετὰ χαρὰς δέχονται· καὶ οὐ τοι-
 ρίζαν οὐκ ἔχουσιν· οἱ πρὸς καιρὸν πί-

σταλοῖσιν· καὶ ἐν καιρῷ πειρασμοῦ ἀφί-
σανται· τὸ δὲ εἰς τὰς ἀνάμθας πεισῶν·
οὗτοί εἰσὶν οἱ ἀκούσαντες· καὶ ὑπὸ μερί-
μνῶν καὶ πλούτου· καὶ ἡδονῶν τοῦ κίου
πορδόμενοι· σὺμπριγονται· καὶ οὐτε-
λὼ φοροῖσιν· τὸ δὲ ἐν τῇ καλῇ γῇ· οὐ-
τοί εἰσιν· οἱ τὴν ἐν καρδίᾳ καλῇ καὶ
ἀγαθῇ ἀκούσαντες τὸν λόγον· κατέχου-
σιν καὶ καρποφοροῖσιν ἐν ὑπομονῇ· ταῦ-
τα κερῶν ἐφάκει· ὁ ἔχων ὧτα ἀκούειν
ἀκούετω· τὴν βίβλιν εἰσελθὼν καὶ τοῦ

Καὶ ρῶ ἐκ τῶν· ἐγένετο ἐν τῷ εἶναι
τοῦ ἱμ̄ προσευχόμενον κατὰ μόνας· σὺ-
νήσαρ αὐτῶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· καὶ ἐ-
πειρῶν τῶν σεν αὐτοῖς· λέγων· τίνα με-
λέτοισιν οἱ ὄχλοι εἶναι· οἱ δὲ ἀποκριθεὶς
πρὸς εἶπον· ἰωάννης τὸν μαθητήν·
ἀλλοι δὲ ἡλίαν· ἀλλοι δὲ ἐνατῶν προφη-
τῶν· καὶ ὅτι προφητῶς τις τῶν ἀρχαι-
ων ἀνέστη· εἶπεν δὲ αὐτοῖς· ἡμεῖς
δὲ τίνα μελέτεται εἶναι· ἀποκρι-
θεὶς δὲ ὁ πέτρος εἶπεν· τὸν χῆν τοῦ θυ-
οῦ· ὁ δὲ ἐπὶ τὴν κήσας αὐτοῖς παρήγγειλε·
μὴ δεῦν λέγειν τούτῳ· εἰπὼν· ὅτι οὗ-
τον υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου πολλὰ παθεῖν· καὶ
ἀποδοῦναι μαρτυρεῖν ἀπὸ τῶν ἀρχιερε-
ων καὶ πρὸς βυτέρων καὶ γραμματέων·
καὶ ἀποκτενθῆναι· καὶ τῇ τρίτῃ ἡ-
μέρᾳ ἐγερθῆναι·

τῆς τῆς ἐξουσίας καὶ τοῦ λόγου·

Καὶ πενὸς τοῖς ἐαυτοῦ μαθηταῖς· εἴ
τις θέλει ὀπίσω μου ἔρχεσθαι· ἀπαρνη
σάτω ἑαυτὸν· καὶ ἀράτω τὸν σταυρὸν ἑ
αυτοῦ· καὶ ἀκολουθήτω μοι· ὅς γάρ
ἀν' ὁ δὲ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ σῶσαι, ἀπο
λέσει αὐτήν· ὃς δ' ἂν ἀπολέσει τὴν ψυ
χὴν αὐτοῦ· ὥσπερ ἐμοῦ, οὗτος σώσει
αὐτήν· τί γὰρ ὠφελεῖται ἄνθρωπος κερ
δήσας τὸν κόσμον ὅλον· ἑαυτὸν δὲ ἀ
πολέσας· ἢ ἕξει μισθὸν· ὅς γάρ ἀρε
παίσκειν θέλει· καὶ τοῖς ἐμοῖς λόγοις·
τοῦτον οὖτος τοῦ ἀνθρώπου ἐπαίσκειν θέ
λει· ὅταν ἔλθῃ ἐν τῇ δόξῃ αὐτοῦ· καὶ
τοῦ πρὸς καὶ τῶν ἁγίων ἀγγέλων· λε
γούσης αὐτῶν ἀληθὺς· εἰσὶ τινες τῶν ὧν
ἐστὼτων· οἱ οὐ μὴ γεύσονται θανά
του· ἕως ἄν' ἰδῶσι τὴν βασιλείαν τοῦ θύ·
Καὶ πενὸς τοῖς ἐαυτοῦ καὶ τῆς τῆς ἐξουσίας καὶ τοῦ λόγου·
μαθηταῖς· θεαθεὺς μέγας εἰς ταῦτα ταῦτα·
τοῖς λόγοις τούτοις· ὁ Ἰησοῦς τοῦ ἀνθρώπου μέγας πρὸς
ἐλθεῖν εἰς χεῖρας ἀνθρώπων· ὅθεν ἡγνώσκει τὸ ρήμα
τοῦτο· καὶ ὡς παρακαλεῖται μετὰ πάντων· ἵνα
μὴ αἰσθάνεται αἶπο· καὶ ἐφοβοῦντο ἐρωτῆσαι
αὐτὸν πρὶ τοῦ ρήματος τούτου· καὶ ἡσυχάζοντες
ἀλογίζετο ἐν αὐτοῖς· τὸ τίς ἀνείλε μὲν αὐ
τῶν· ὁ δὲ ἰσίδων τὸν διάλογον τῆς καρδίας
αὐτῶν· ἐπιλαβόμενος παιδείας· ἔειπεν αὐ
τὸ παρ' αὐτοῦ· καὶ ἡ πεν αὐτοῖς· ὅς ἐάν τις

ξηται τοῦτο τὸ παιδίον ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου, ἐμε-
 δέχεται + καὶ ὁς ἐὰν ἐμεδέξηται, δέχεται τὸν
 ἀποστείλαντά με + ὁ γὰρ μικρότερος ἐν πά-
 σιν ἡμῶν ὑπάρχων· οὗτος ἐστὶ μεθ' αὐ-
 θῆς δὲ οἱ ἰωάννης ἔπεν· ἐπίσταται· ἡδὲ μέν τι-
 ναι ἐπὶ τῷ ὀνόματί σου ἐβάλλονται δαιμόνι-
 α, καὶ ἐκολίσταμεν αὐτὸν· ὅτι οὐκ ἄκοχουθῆ-
 μεθ' ἡμῶν + καὶ εἶπεν πρὸς αὐτὸν ὁ ἰσ· μή
 κωλύτε· ὁ γὰρ οὐκ ἐστὶ καθ' ἡμῶν ὑπερ' ἡμῶν ἐστίν· ~
 τῇ ἑ τῆς ἑ καὶ λου καὶ·

Καὶ ῥῶ ἐκρήνω· προσελθόντες τῷ ἰσ εἰς τῶν
 μαθητῶν αὐτοῦ· ἔπεν αὐτῷ + ἐπίσταται· ἡδὲ
 μέν τινα ἐπὶ τῷ ὀνόματί σου ἐβάλλονται
 δαιμόνια, καὶ ἐκολίσταμεν αὐτὸν· ὅτι οὐκ ἄ-
 κοχουθεῖ μεθ' ἡμῶν + καὶ εἶπεν πρὸς αὐτὸν
 ὁ ἰσ· μή κωλύτε· ὁ γὰρ οὐκ ἐστὶ καθ' ἡμῶν ὑ-
 περ' ἡμῶν ἐστίν + ἔπειτα δὲ ἐν τῷ σὺμπλη-
 ροῦσθαι πάσῃ ἡμέρᾳ τῆς ἀναλήψεως αὐτοῦ· καὶ
 αὐτὸς τὸ πρὸς ὡπὸν αὐτοῦ ἐστῆριζε· τοῦ πο-
 ράσθαι εἰς ἰλῆμ + καὶ ἀπέσχετο αἰτέλοις
 πρὸ προσώπου αὐτοῦ· καὶ πορεύσας εἰς
 ἦλθον εἰς κώμην σαμαρῆτων· ὡς ἐποιμαῖσαι
 αὐτῷ· καὶ οὐκ ἐδέξατο αὐτὸν· ὅτι τὸ πρὸς ὡπὸν
 αὐτοῦ ἦν πορεύμενον εἰς ἰλῆμ + ἰδὼν τὰ
 δὲ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἰακώβος καὶ ἰωάννης εἶπ' +
 κέ· θέλεις εἰπῶμεν· πῦρ κατὰ βῆναι ἀπὸ τοῦ
 οἴωός σου καὶ ἀναλῶσαι αὐτοὺς, ὡς καὶ ἡλίας ἐ-
 ποίησεν + γραφῆς δὲ· ἐπετίμησεν αὐ-
 τοῖς· καὶ ἐπορεύθησαν εἰς ἑτέρας κώμης· ~

ἰσ καὶ λου καὶ
 τοῦ αἰσ καὶ λου καὶ

τῇ παρὰ τοῦ Θεοῦ καὶ δουκῶν.
ὡ καιρῶ ἐκείνῳ· ἀνέδραξεν οὖν καὶ ἑτέροις
ἐβδόμηκον τα· καὶ ἀπέστρεψεν αὐτοῖς ἀναδύο
πρὸ προσώπου αὐτοῦ εἰς πάσαν πόλιν καὶ τὸ
πορὸν ἐμμενεν αὐτὸς ἐρχάθαι· ἐλθόντων
πρὸς αὐτοῖς· ὁ μὲν θείρις μὲν πολλὸς, οἱ δὲ ἐρ
γαταὶ ὀλίγοι· δέηθι τε οὖν τοῦ κυρίου τοῦ Θε
οῦ· ὅπως σὺ βάλλῃς ἐργάτας εἰς τὸν θείριον
αὐτοῦ· ὑπάγετε· ἰδοὺ ἐγὼ ἀποστέλλω ὑμᾶς,
ὡς ἄρνας ἐν μέσῳ λύκων· μὴ βασάζετε βαλα
τίον μὴ πήραν· μὴ δὲ ὑποδήματα· καὶ μὴ δέ
μα κατὰ τὴν ὁδὸν ἀσπασαθε· εἰς ἰωδαὴν οἰκί
αν εἰς ἐρχαθε· πρῶτον λέγετε· εἰρήνη τῷ οἴκῳ
τούτῳ· καὶ εἰ μὴ ἐκείνῳ εἰρήνη· ἐπαρα
παύσετετε ἐπ' αὐτὸν ἢ εἰρήνη ὑμῶν· εἰ δὲ μήτε·
ἐφύμας ἀνακάμψα· ἐν αὐτῇ δὲ τῇ οἰκίᾳ μέ
νετε· ἐσθίοντες καὶ πίνοντες τὰ παρ' αὐτῶν· ἄ
ξιός γάρ ἐστις τοῦ μίσθου αὐτοῦ ἐστίν· καὶ
μεταβαίετε ἐξ οἰκίας εἰς οἰκίαν· καὶ εἰς
αὐτὴν πόλιν ἀπέρχασθε, καὶ δέχονται ὑμᾶς· ἐ
σθίετε τὰ παρατιθέμενα ὑμῖν· καὶ θρασυάγε
τε ἐν αὐτῇ ἀσθενεῖς· καὶ λέγετε αὐτοῖς ἡ γῆ
κεν ἐφύμας ἢ βασιλεία τοῦ Θεοῦ· εἰς ἰωδαὴν
πόλιν ἀπέρχασθε, καὶ μὴ δέχονται ὑμᾶς· ἐ
ξελθόντες εἰς τὰς πλατῆας αὐτῆς εἰπάτε· καὶ
τὸν κορυὸν τὸν καλὸν ἐν ταῖς μέναις τῆς πόλε
ως ὑμῶν, ἀπομαρτύρομαι ὑμῖν· πλὴν τοῦ
το γινώσκετε· ὅτι ἡ γῆ κεν ἐφύμας ἢ βασιλεί
α τοῦ Θεοῦ· λέγω ὑμῖν· ὅτι σοδομοὶς ἐν τῇ ἡμέρᾳ

Εὐχόμενοι, ἀρετὴν περὶ ἐξαιρῆσαι τῇ πόλει εὐχόμενοι, οὐ
αἰσοιχωρᾶμεν, οὐ αἰσοιβηθοῦμεν, οὐ πῖνεν
τῷ καὶ σὶ δὴ νῦν ἐχέμεν το αἰδωαῖς αἰζυνοῖς
καὶ ἐν ὑμῖν + παλαιὰν ἐν σαρκὶ καὶ σποδὶ
καθήμενοι μετενόησαν + πλὴν τῷ καὶ σὶ δὴ
νῦν ἀρετὴν περὶ ἐξαιρῆσαι ἐν τῇ κρίσει. ἵς ὑμῖν +
καὶ σὺ καπερναοῦμεν ἡ ἐὼς τοῦ οὐνοῦ ἡφωθῆσαι.
ἕως ἂν καταβῇ βασιλεὺς :

Καὶ ῥῶ εὐχόμενοι. ἡσυχάζοντες οἱ ἱσ^ο καὶ τοῦ
εἰς καπερναοῦμεν. ἑκατόνταρχος δὲ τίμος δού
λος κακῶς ἔχων. ἔμελλεν τελευτᾶν. ὁ δὲ αὐ
τῷ ἐντίμος + ἀκούσας δὲ περὶ τοῦ π^ρ ἀπέει
λεν πρὸς αὐτὸν πρῶτον τῶν ἰουδαίων.
Ἐρωτᾷ αὐτὸν. ὅπως ἐλθὼν διάσωσιν τοῦ δού
λου αὐτοῦ + οἱ δὲ παραγενομένοι πρὸς τὸν ἱ^σ
παρεκαλοῦν αὐτὸν σπουδαίως λέγοντες. ὅ
τι ἀξιοῦσιν ὅ παρὶς τοῦτο + ἀγαπᾷ αὐτὸν
ἔθνος ἡμῶν. καὶ τὴν συναγωγὴν αὐτοῦ αἰ
νοδοῦμεν ἐν ἡμῖν + ὁ δὲ ἱσ^ο ἐπορεύετο (ὡς αὐ
τοῖς + ἡ δὲ δὴ αὐτοῦ οὐ μακρὰν ἀπέχον
τος ἀπὸ τῆς οἰκίας + ἐπεμψεν πρὸς αὐ
τὸν ὁ ἑκατόνταρχος φίλοις λέγων αὐτῷ +
καὶ μὴ σκύλον. οὐ γὰρ ἡμεῖς καυνοῦμεν ὑ
πὸ τῷ σέβει σου εἰσελθεῖς. διό οὐδὲ ἐμαὶ
τὸν ἡξίωσα πρὸς σέ εἰλθεῖν + ἀλλὰ πέλομαι
καὶ ἰαθῆσθαι ὁ παῖς μου + καὶ γὰρ ἐγὼ ἀν
θρώπος ἡμῖ ὑπὸ ἐξουσίαν ταυτόμενος. ἔ
χων ὑπὲρ αὐτὸν στρατιώτας. καὶ λέγω τοῦτο
πορεύθητι, καὶ πορεύου + καὶ ἄλλω. ἔρχου.

αὐτὸς ὁ
πλοῖτος
τοῦ λαζάρου
ἐκείνου
ταῖς ἐξουσίαις

καὶ ἐρχάται· καὶ τῷ δούλῳ μου· ποίησον τούτο·
καὶ ποιῶ· ἀκούσασθε ταῦτα ὅτι· ἐθαύμα
σεν αὐτὸν· καὶ σφραγίσ τῷ ἀκούλουθῶντι αὐ
τῷ ὅχλῳ εἶπεν· λέγω ὑμῖν· οὔτε ἐν τῷ ἡλ
τοσαύτῃ πίστιν ἔχον· καὶ ὑπὸ σφέτερες
οἱ πεμφέντες εἰς τὸν οἶκον· ἔχον τὸν ἀθενοῦν
παῖδον ἡμαῖνον ται· ~ κερία κη Ε

Καὶ πάλιν· ἀκούσας τὴν παραβολὴν καὶ τοῦ
το πορφυράν καὶ βίατον ἀφραιμόμενος κα
θ' ἡμέραν λαμπρὸς· πτωχοὶ δέ τις ἐν ὀνόματι
λαζάρου· ὃς ἐβέβητο πρὸς τὸν πύλωνα αὐτοῦ
ἐλθόμενος· καὶ ἐπὶ θυμῶν χορτασθῆναι αὐ
τῶν ψυχῶν τῶν πτωχῶν ἀπὸ τῆς τρα
πέζης τοῦ πλοῖτου· ἀλλὰ καὶ οἱ κύνες ἐρχό
μενοι ἀπέλθον τὰ ἐλκεῖ αὐτοῦ· ἐλθόντες δέ
ἀπὸ θανάτου πτωχόν· καὶ ἀπενεχθῆναι αὐ
τὸν ὑπὸ τῶν ἀδελφῶν· εἰς τὸν κοίπον αἰσῶντος·
ἀπέθανεν δὲ καὶ ὁ πλοῖτος· καὶ ἐταύφη·
καὶ ἐν τῷ ἁδὲ ἐπάρας τοῖς ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ·
ὕπαρχων ἐν βασιανοῖς· ὁρᾶτον Ἀβραάμ ἀπὸ
μακρόθεν καὶ λαζάρου ἐν τοῖς κολποῖς αὐτοῦ·
καὶ αὐτὸς φωνήσας εἶπεν· πέρ' Ἀβραάμ· ἐ
λέησόν με· καὶ πέμφον λαζάρου ἵνα βάψῃ
τὸ αἶμα τοῦ δακτύλου αὐτοῦ ὕδατος· καὶ
καταψύξῃ τὴν γλῶσσαν μου· ὅτι ὀδυνῶ
μαι ἐν τῇ φλογὶ ταύτῃ· εἶπεν δὲ Ἀβραάμ·
τέκνον· μήθῃ τί ὅτι ἀπέλαβες σὺ τὰ
ἀγαθά σου ἐν τῇ ζωῇ σου· καὶ λαζάρου ὁμοίως

τὰ κακὰ· καὶ οὐδὲ ὧδε παρακαλεῖται, οὐδὲ ὁδυνά-
σαι· καὶ ἐπὶ πᾶσι τοῖσι μεταξὺ ἡμῶν καὶ
ὑμῶν χάς· καὶ μέγα ἐστὶν ῥίηται· ὅπως οἱ θέλοντες
διαβῆναι εἰς θέν προσ ὑμᾶς, μὴ δύνονται· μὴ
δὲ οἱ εἰσθέν προσ ἡμᾶς διαπερῶσιν· εἶπεν
δὲ ἔρω τῷ οὐναεπέρ· ἵνα πέμψω αὐτὸν εἰς
τὸν οἶκον τοῦ πρόμου· ἔχω γὰρ πέντε ἀ-
δελφοὺς ὅπως διαμαρτύρηται αὐτοῖς ἵνα
μὴ καὶ αὐτοὶ ἔλθωσιν εἰς τὸν τόπον τοῦτον τῆς
βασίλειου· λέγει αὐτῷ αὐτῶν· ἔχουσιν ἡμῶς
καὶ τοὺς προφῆτας, ἀκοῖσάτωσαν αὐτῶν·
οὐδὲ εἶπεν· οὐχὶ πέρ αὐτῶν· ἀλλ' ἄρτις
ἀπὸ τῶν νεκρῶν πορεύθη προσ αὐτοὺς, με-
τανοήσοισιν· εἶπεν δὲ αὐτῷ· ἡμῶς τίς
καὶ τῶν προφητῶν οὐκ ἠκούσαν; οὐδὲ ἔαν-
τις ἐκ νεκρῶν ἀναστῇ παρήσονται· ~

τῆς β. τῆς 5 αὐτῆς καὶ λου.
Επερὸς· πάντα μοι παρεδόθη ὑπὸ τοῦ πρῶ-
του· καὶ οὐδεὶς γινώσκων τίς ἐστὶν ὁ υἱός, ἡμεῖς
ὁ πατήρ· καὶ τίς ἐστὶν ὁ πατήρ, ἡμεῖς ὁ υἱός· καὶ ὧς
ἐὰν βούληται ὁ υἱός ἀποκαλύψαι· καὶ γρα-
φῇ πρὸς τοὺς μαθητάς· κατὰ δὲ ἄρ εἶπεν·
καταρτιστοὶ οἱ ὀφθαλμοὶ οἱ βλέποντες αὐτὸν βλέπτε·
λέγω γὰρ ὑμῖν ὅτι πολλοὶ προφῆται καὶ βασι-
λεῖς· ἠθέλησαν ἰδεῖν αὐτὸν καὶ βλέπτε, καὶ οὐ
ἔσθον· καὶ ἀκοῖσαι αὐτὸν ἀκούετε, καὶ οὐκ ἠκούσαν·
Τὴν αἰρῶν ἐκ γένω· καὶ τῆς 5 αὐτῆς καὶ λου.
 ἐγένετο ἐν τῷ εἶναι τὸν ἱὸν ἐν τῷ τόπῳ τῆς προσ-
α-
χόμενον· ὡς ἐπαύσατο· ἡ πέν τις τῶν μα-

θη τῶν αὐτοῦ πρὸς αὐτὸν· καὶ δίδασκον ἡμᾶς προ-
 σαχῆσθαι· καθὼς καὶ ἰωάννης ἐδίδασκε τοὺς
 μαθητὰς αὐτοῦ· εἶπεν δὲ αὐτοῖς· ὅταν πρὸς
 σαχῆσθε, λέγετε· πατὴρ ἡμῶν ὁ ἐν τοῖς οὐ-
 ρανοῖς· ἡγιασθήτω τὸ ὄνομα σου· ἐλθέτω
 ἡ βασιλεία σου· ἡγιασθήτω τὸ θέλημα σου·
 ὡς ἐν οὐρανῷ καὶ ἐπὶ τῆς γῆς· τὸν αὖτε τὸν ἡ-
 μῶν τὸν ἐπί οὐσίον· δίδου ἡμῖν τὸ καθὲρ
 μέρα· καὶ ἀφῶ ἡμῖν τὰς ἁμαρτίας ἡ-
 μῶν· καὶ γὰρ αὐτοὶ ἀφίεμεν παρ' ἑαυτῶν
 τὰ ἡμῶν· καὶ μὴ ᾔσμεν ἡμᾶς εἰς πηρασ-
 μόν· ἀλλὰ ρίψαι ἡμᾶς ἀπὸ τοῦ πονηροῦ·
 καὶ ἔπεν πρὸς αὐτοὺς· τίς ἐξ ὑμῶν ἐξ ἑφί-
 λον· καὶ πορεύσεται πρὸς αὐτὸν μετορὺ κτίου·
 καὶ ἔπη αὐτῷ· φίλε· χρῆσόν μοι τῆς ἀρετῆς·
 ἐπὶ ἡμεῖς φίλος παρεγένετο ἐξ ὁδοῦ πρὸς με· καὶ
 οὐκ ἔχω ὅπως ἀποδοῦν αὐτῷ· κακίαν δὲ ἔσωθην
 ἀποκριθεὶς ἔπη· μή μοι κόποι παρέχε· ἵ-
 δι ἡ θύρα κέκληται· καὶ τὰ παιδία μου με-
 ταμοῦ εἰς τὴν κοίτην ἔσιν· οὐδὲν ἔχω ἀ-
 ναστᾶς δοῦν αἰσοῖ· λέγω ὑμῖν· ἡ καὶ οὐδὲν
 οὐ αὐτῷ ἀναστᾶς διὰ τὸ εἶναι αὐτοῦ φίλον·
 διὰ τὴν ἀρετὴν αὐτοῦ· ἐμερθῆς δώσει
 αὐτῷ ὅσον χρεῖ· κατ' ὅσον λέγω· αἰτεῖ-
 τε καὶ δοθήσεται ὑμῖν· ζητήτε καὶ ἀρήσεται·
 κρούετε καὶ ἀνοιχθήσεται ὑμῖν· ὡς τὴν ἑρμηνείαν
 ἔπειτα· ἔπειτα ὡς τοῖς ἐκ αὐτοῦ μαθηταῖς· καὶ κατ' ἑαυ-
 τὸν αὐτὸν καὶ δοθήσεται ὑμῖν· ζητήτε καὶ ἀρή-
 σεται· κρούετε καὶ ἀνοιχθήσεται ὑμῖν· πᾶσι γάρ

καὶ ἡ τῆς ἐκ τῆς αὐτοῦ τῆς αὐτοῦ τῆς αὐτοῦ

ὁ αἰ τῶν λαμβάνει· καὶ ὁ ζῆ τῶν ἀρίστων· καὶ
 τῶ κρούοντι· ἀροισθήσεται· πῖνα δὲ ὑμῶν
 τὸν πῖνα· αἰτίσιν δὲ ἵδου ἄρτον· μή λήθου ἐπιδώ-
 σει αὐτῷ· ἡ καὶ ἰχθύν· μή ἀρτίῃ ἰχθύος· ὅφιν
 ἐπιδώσει αὐτῷ· ἡ καὶ εἰς αἰτίσιν ὧν· μή
 ἐπιδώσει αὐτῷ σκορπίον· ζῶν ὑμῶν πομ-
 ροὶ ὑπάρχοντες· οἶδατε δόματα ἀγαθὰ διδ-
 ναι τοῖς τέκνοις ὑμῶν· πόσω μάλλον ὁ πῖρ ὁ
 ἐξ οὐνοῦ δώσει πῖνα ἄξιον τοῖς αἰτιοῖσιν αὐτῶν·

τῇ εἰς τὴν 5 εἰς καὶ λου:

¶ ὁ καιρὸς ἐκέρχῃ· ἡ ἰσχυρὰ βαλὼν δαιμόνιον·
 καὶ αὐτὸ ἡνωφόν· ἐξήντο δὲ τοῦ δαιμονί-
 ου ἐξελθόντος· ἐλάλησεν ὁ κωφός· καὶ ἐ-
 θαύμασαν οἱ ὄχλοι· πῖνες δὲ ἐξ αὐτῶν εἶ-
 πον· ἐν βεελζεβούλ ἀρχῶν τῶν δαιμονίων ἐ-
 βάλλετὰ δαιμόνια· ἑτέροι δὲ παράζοντες
 σημεῖον παρ' αὐτοῦ ἐζητοῦν ἐξ οὐνοῦ· αὐ-
 τὸς δὲ ἰδὼς αὐτῶν τὰ διαρρήματα εἶπεν
 αὐτοῖς· πᾶσα βασιλεία ἐφ' ἑαυτὴν δι' αἰ-
 ριαθῆσα· ἐρηκνύται· καὶ οἶκος ἐπὶ οἶκον πι-
 πτει· ἡ δὲ καὶ ὁ σατανας ἐφ' ἑαυτὸν δι' ἐμερί-
 αθῃ· πῶς σταθῇ ἡ βασιλεία αὐτοῦ· ὅτι λέ-
 γεται ἐν βεελζεβούλ ἐβάλλετὰ δαιμόνια·
 αὐτὸς δὲ ἐγὼ ἐν βεελζεβούλ ἐβάλλω τὰ δαι-
 μόνια· ὑοὶ ὑμῶν ἐν τῇ ἐκβαλμοσίᾳ· διὰ
 τοῦτο· κριταὶ ὑμῶν αὐτοὶ ἐσοῦνται· ἡ δὲ ἐν
 δακτύλῳ θῷ ἐβάλλω τὰ δαιμόνια· ἀρα ἐφθα-
 σεν ἐφ' ὑμᾶς ἡ βασιλεία τοῦ θῷ· ὅταν ὁ ἰσχυ-
 ρὸς καθωπλισμένος φύλασῃ πῶς ἐαυτοῦ αὐχλῶ·

ἐν ἡμέρῃς ἐστὶν τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ· ἐπὶ
δὲ οἱ χιρρότεροί αὐτοῦ ἐπαρτηθῶν κήσονται
τὸν· τὴν παροπλίαν αὐτοῦ αἶρε· ἐφ' ἣ πε
ποίθῃ καὶ τὰ σκύλα αὐτοῦ διὰ δόξης· ὁ μὴ
ὦν μετέμω· κατέμω ἐστὶ· καὶ ὁ μὴ (σω) αἶων
μετέμω σκορπίζει· τὴν παρὰ τοῦ ^ἑ ^ἑ

Κὶ πενὸς· ὁ μὴ ὦν μετέμω ^ῃ κατὰ λόγῃ·
κατέμω ἐστὶ· καὶ ὁ μὴ (σω) αἶων μετέμω σκορ
πίζει· ὅταν τὸ ακαθαρτόν πρῶτον ἐξέλθῃ
ἀπὸ τοῦ ἁγίου· δι' ἐρχάαι δ' αὐτοῦ τὸ πάρι
ζήτοιον ἀναπαισίν· καὶ μὴ ἀρίσκων λέγει·
ἐπίστροφον εἰς τὸν οἶκόν μου ὁ δὲ ἐξήλθον·
καὶ ἐλθὼν εὐρίσκει βαρυνμένον καὶ κεκοσ
μημένον· τότε πορεύεται καὶ παραλαβ
βαίνει ἐπ' αὐτὰ τέρα πρῶτα πομνηρότερα
ἐαυτοῦ· καὶ ἐλθόντα κατὰ οἶκόν· καὶ γί
νονται τὰ ἐσχατά τοῦ ἁγίου ἐκ κρημνῶν· χαί
ρορατῶν πρῶτων· ἐγὼ το δὲ ἐν τῷ λέγειν
αὐτὸν ταῦτα· ἐπ' αὐτὰς γινώσκων
ἐν τοῦ ὄχλου εἶπεν αὐτῷ· μακαρία ἡ
κοιλία ἡ βασάσασα· καὶ μαστοί· οἷον ἐ
δήλασας· σάμβατον ^ῃ κατὰ λόγῃ·

Κὶ πενὸς· οὐδεὶς λήκον ἀφ' αὐτῶν καλὴ πτῆσ αὐτῶν
σκέψ· ἡ ὑποκάτω τίθησιν· ἀλλ' ἐπὶ λυγρίας
ἐπὶ τίθησιν· ἵνα οἱ δὲ πορδόμενοι βλέ
πωσὶ τὸ φῶς· οὐ γὰρ ἐν κρυπτοῦ οὐ φαμερόν γε
γίνεσθαι· οὐδὲ ἀπὸ κρυφόν οὐ γνωθῆσθαι· καὶ
εἰς φαμερόν ἐλθῇ· βλέπετε οὖν πῶς αἰκούε
τε· ὅς γὰρ αὐτὸς ἐχθρὸς δόξης (ἐστὶν αὐτῷ) καὶ ὅς αὐτῷ

ἔχεν· καὶ ὁ δὲ καὶ ἔχον· ἀρθῆσθαι ἀπ' αὐτοῦ· π
 ρεχένον τοδὲ προσ αὐτὸν ἡμῆρ καὶ διαδελφῶσαι αὐτόν·
 καὶ οὐκ ἰδὼν αὐτοῦ (ὡς τὴν αὐτὸν δ' αὐτὸν ὅλον·
 καὶ ἀπὸ γῆλ' αὐτῶ λεγόντων· ἡμῆρ σου καὶ οἱ ἀ
 δελφοί σου· ἐξ ἡ κασὶν ἐξω ἰδῶν αὐτὸν θέλοντες· ὁ δὲ
 ἀποκριθεὶς εἶπεν πρὸς αὐτοῖς· ἡμῆρ μου καὶ οἱ ἀ
 δελφοί μου οὗτοι εἰσιν· οἱ τοῦ λόγον τοῦ θ' αὐτοῦ οὐκ
 καὶ ποιῶντες αὐτόν····· καὶ ἡμεῖς 5

29 λ 41
 ΗΧ ΠΒ ΕΩ Α

Καὶ ἡμεῖς ἐκείνῳ· ἐλθόντι κατὰ λουκῶν·
 πῶ ἰδὼν εἰς τὴν χώραν τῶν γαλιλαίων· ἡ τίς ἐστὶν πε
 ρεχένον τοδὲ προσ αὐτόν· ἐξελθόντι δὲ αὐτῷ ἐ
 πί τῶν γῆλ' ὑπὸ πᾶσι αὐτῷ ἀνὴρ τίς ἐστὶν πόλε
 ως· ὁ δὲ εἶχεν δαίμονια· ἐχθρόν ἡμῶν· καὶ ἡ
 ματίον οὐκ ἐκείνῳ· καὶ ἐνοίκῃ αὐτοῦ ἐκείνῳ·
 ἀμὲν τοῖς ἡμεῖς κασὶν· ἰδὼν δὲ τὸν ἴν'· καὶ ἀ
 μαρῶν αὐτῷ προσέειπεν αὐτῷ· καὶ φωνήεν αὐτῷ
 εἶπεν· τί ἐμοὶ καὶ σοὶ· ἰὺ ἡ ἐκ τοῦ θ' τοῦ ἡμεῖς
 δόμαί σου καὶ ἐξελθόντι δὲ αὐτῷ· παρήγγιλεν ἡ
 τῷ πρὶ τῷ ἀκαθάρτῳ ἐξελθόντι ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ· πο
 λλοῖς γὰρ χρόνοις (ὡς ἡ πᾶσι αὐτόν καὶ ἐδῶκει
 το ἀλίστοι καὶ πέδαις φυλασσόμενος· καὶ δὲ ἀρ
 ρήσων τὰ δόμα· ἐλαύντο ὑπὸ τοῦ δαίμο
 νος εἰς τὰς ἐρήμους· ἐπὶ πρῶτον δὲ
 αὐτόν οἱ σ' λέγων· τί σοι ἐστὶν ὁμοίαν· ὁ δὲ
 εἶπεν· λεγόν· ὅτι δαίμονια πολλὰ εἰσὶν ἔ
 λθον εἰς αὐτόν· καὶ παρεκάλεσεν αὐτόν ἡ
 καὶ ἐπὶ τῇ αὐτοῖς εἰς τὴν ἀβυσσὸν ἀπελθόν·
 ὡς δὲ ἐκ ἀβύσσου χοίρων ἡμῶν· βοσκομένων
 ἐν τῷ ὄρει· καὶ παρεκάλεσεν αὐτόν ἡ καὶ

τρέψεν αὐτοὺς ὥς ἐκ κρημνῶν ὄψελθόν· καὶ ἐπε-
 τρέψεν αὐτοὺς + ἐξελθόνται δὲ τὰ δαιμόνια
 ἀπὸ τοῦ ἄνθρωπου, ὥσπερ ἔλθον ὥς τοῖς χοίροις· καὶ
 ὤρμησεν ἡ ἀγέλη κατὰ τοῦ κρημνοῦ εἰς τὴν
 λίμνην, καὶ ἀπεπνίγη· ἰδόντες δὲ οἱ βόσ-
 κοι τὸ μέγαν κέντρον, ἐφύγον· καὶ ἀπήγα-
 γαν εἰς τὴν πόλιν καὶ εἰς τοὺς ἀγρούς + ἐ-
 ζήλθον δὲ ἰδόντες τὸν κέντρον καὶ ἤλθον πρὸς τὸν
 ἴον + καὶ ἄρουν καθήμενον τὸν ἄνθρωπον, ἀφ' οὗ τὰ
 δαιμόνια ἐξελλύθη· ἱματισμένον καὶ σω-
 φρονοῦντα παρατοῖς πόδας τοῦ ἰού, καὶ ἐφο-
 βήθησαν + ἀπὸ τῆς φωνῆς αὐτοῦ καὶ οἱ ἰδόν-
 τές, πῶς ἐσώθη ὁ δαίμονιαιθεὶς + καὶ ἡρώτη-
 σεν αὐτὸν ἅπαν τὸ πλῆθος τῶν περικύρου
 τῶν γαδαρηνῶν, ἀπελθόντες ἀπ' αὐτῶν· ὅτι
 φόβω μεγάλῳ συνήχοντο + αὐτοὺς δὲ ἐμ-
 βάς ὥς τὸ πλοῖον, ὑπέστρεψον + εἰς τὸ πλοῖον
 αὐτοῦ ὁ ἄνθρωπος· ἀφ' οὗ ἐξελλύθη τὰ δαιμόνια
 αὐτοῦ, ἔμεινεν αὐτῷ + ἀπέλιπον δὲ αὐτὸν οἱ
 ἰσχυροὶ· ὑπέστρεψον ὥς τὸν οἶκόν σου· καὶ
 διήκουσάν σου ἐποίησες μοῖρᾳ αὐτοῦ + καὶ ἀπὸ
 θέν καθόλου τὴν πόλιν κυρία των ὄσων ἐποί-
 ησεν αὐτῷ ὁ ἰός· ὡς καὶ β. π. 5. 17. 18. 19.

Καὶ ὡς ἐκ κρημνῶν ἐπαθροισμένων τῶν ὀ-
 χλῶν, ἤρξατο λέγειν· ἡ γενεὰ αὕτη πορνι-
 ραὶ ἔστι· σημεῖον ἐπιζητῆ, καὶ σημεῖον οὐδὲ
 θήσεται αὐτῇ· ἡ μὲν τὸ σημεῖον ἰωάννου
 προφήτου + καθὼς γὰρ ἐγὼ τοῖς ἰωάννου
 σημεῖον τοῖς μυριάταις, οὕτως ἔσται καὶ

οὐχὸς τοῦ ἀνδρὸς τῇ γενεᾷ ταύτῃ· βασιλεία
 γὰρ τοῦ ἐγερθῆσθαι ἐν τῇ κρίσει μετὰ τῶν ἀνδρῶν
 τῷ γενεᾷ ταύτῃ· καὶ κατὰ κρίνει αὐ
 τοῦ· ὅτι ἦλθεν ἐκ τῶν περὶ τῶν τῷ γένε
 αἰοῖσαι τῷ σοφίᾳ σοφολόμοσ· καὶ ἰδὼ
 πλῆθον σοφολόμοσ αἰδῶ· ἀνδρῶν γὰρ· ἀρα
 γήσκονται ἐν τῇ κρίσει μετὰ τῷ γενεᾷ ταύτῃ·
 καὶ κατὰ κρίνει αὐτοῦ· ὅτι μετενόησαν
 εἰς τὸ κῆρυμα ἰωάν· καὶ ἰδὼ πλείον ἰω
 ἰω αἰδῶ· οὐδεὶς δὲ λῆχρον ἄφασ· εἰς κρυπτόν
 τίθησιν· οὐδὲ ἰπὸ τοῦ μόθου· ἀλλὰ πῖ τῷ λυ
 χρίαν· ἵνα οἱ δὲ πορεύμενοι τὸ φέγγος βλέ
 πωσι· πῆ γὰρ τῷ γένε αἰοῖσαι τῷ σοφίᾳ
 ἵπεν οὗ· ὁ λῆχρος τοῦ σώματος ἐστὶν ὁ ὀφθαλ
 μός· ὅταν οὖν ὁ ὀφθαλμός σου ἀπλοῖσῃ·
 καὶ ὅλον τὸ σῶμα σου φωτῇ· ἐπὶ αὐτῷ
 δὲ πορεύσῃ· καὶ τὸ σῶμα σου σκοτεινόν·
 σκοπεῖ· μὴ τὸ φῶς τὸ ἐν σοὶ σκοπεῖ·
 γὰρ τὸ σῶμα σου ὅλον φωτῇ· μὴ ἔχοντι
 μέρος σκοτεινόν· ἔσται φωτῇ ὅλον· ὥς ὅ
 ταν ὁ λῆχρος σὴ ἀστραπὴ φατίξῃ· ἐν δὲ
 τῷ λαλήσει· ἡρώτα αὐτὸν φαρισαῖος τις· ὅ
 πως ἀρίστησιν παραπτώ· εἰσελθὼν δὲ ἀνέ
 πτεσεν· ὁ δὲ φαρισαῖος ἰδὼν ἐθαύμασεν·
 ὅτι οὐ πρὶν εὐβαπτίσθαι προ τοῦ ἀρίστου·
 εἶπεν δὲ πρὸς αὐτόν· νῦν ὑμεῖς οἱ φαρισαῖ
 οὶ τὸ ἐξωθεν τοῦ ποτηρίου καὶ τοῦ πίνακος
 καθαρίζετε· τὸ δὲ ἐσωθεν ἱμῶν μέμη ἀρπα
 γῆ καὶ πορνεία· ἀφροε· οὐχὸς ποιήσ

τὸ ἐξωθεν· καὶ τὸ ἐσωθεν ἐποίησεν· πλὴν
τὰ ἐνὸρτα δότε ἐλεημοσύνην· καὶ ἰδοὺ πάν
τα καθαρὰ ὑμῖν ἔσται· τῇ ᾧ τῆς ^{ἀμ} ^{ἐμ}
Εἰπεν οὖν πρὸς τοὺς ἐληλυθώτας κατὰ τοῦ
πρὸς αὐτὸν ἰουδαίους· οὐαὶ ὑμῖν τοῖς φα
ρισαῖοις· ὅτι ἀποδεκατοῦτε τὸ ἡδύοσμον· καὶ
τὸ πηγυρον· καὶ πᾶν λάχαρον· καὶ παρέρχε
σθε τὴν κρίσιν καὶ τὴν χάπην τοῦ θυ· ταῦτα
ἐδὲ ποιῆσαι· καὶ ἄλλα μὴ ἀφίστασθαι· οὐαὶ
ὑμῖν τοῖς φαρισαῖοις· ὅτι ἀβυσσοῦν τὴν πρὸς
καθεδρίαν ἐν ταῖς βωταῖς· καὶ τοῖς αἰσπασ
μοῖς ἐν ταῖς ἡωραῖς· οὐαὶ ὑμῖν γραμμα
τοῖς· καὶ φαρισαῖοι ὑποκριταί· ὅτι ἐς ἐξ ὧς
τὰ μνημεῖα τῶν ἀδελφῶν· καὶ οἱ ἄνθρωποι περὶ πα
νοῦτες ἐπὶ πᾶσι οὐκ οἶδασιν· ἀποκριθεὶς
δὲ τις τῶν νομικῶν λέγει αὐτῷ· διδάσκαλε·
ταῦτα λέγων καὶ ἡμεῖς ὑβρίζομεν· ὁ δὲ εἶ
πεν· καὶ ὑμῖν τοῖς νομικοῖς οὐαὶ· ὅτι
φορτίζετε τοὺς ἄνθρωποις φορτίαν βίας βαρύνετε
καὶ αὐτοὶ ἐν τῶν δεκτύλων ὑμῶν οὐ πρὸς
φύσιν τοῖς φορτίοις· τῇ ᾧ τῆς ^{ἀμ} ^{ἐμ}
Εἰπεν οὖν πρὸς τοὺς ἐληλυθώτας κατὰ τοῦ
πρὸς αὐτὸν ἰουδαίους· οὐαὶ ὑμῖν ὅτι οἰκοδο
μεῖτε τὰ μνημεῖα τῶν προφητῶν· οἱ δὲ πρὸς
ὑμῶν ἀπέκτειναν αὐτοὺς· ἄρα μαρτυρεῖτε
καὶ βωδικοῦτε τοῖς ἔργοις τῶν πρώτων ὑμῶν· ὅ
τι αὐτοὶ μὲν ἀπέκτειναν αὐτοὺς· ὑμεῖς δὲ οἰκο
δομεῖτε αὐτῶν τὰ μνημεῖα· διὰ τοῦτο καὶ ἡ
σοφία τοῦ θυ εἶπεν· ἀποσέλω θὲς αὐτοὺς

προφήτας καὶ ἀποστόλους· καὶ ἐξ αὐτῶν ἀπο-
 κτενοῖσιν καὶ σὺ δ' ὠξοῖσιν· ἵνα σε ζητηθῇ τὸ
 αἷμα πάντων τῶν προφητῶν· τὸ σὺ χυνόμε-
 νο αὐτῶν καταβολὴς κόσμου· ἀπὸ τῆς γεν-
 εᾶς ταύτης· ἀπὸ τοῦ αἵματος αἰῶν· ἕως
 τοῦ αἵματος βαχαρίου· τοῦ ἀπολομένου μετὰ
 ξὺ τοῦ θισιασίου, καὶ τοῦ οἰκου· καὶ λέγω
 ὑμῖν σε ζητηθήσεται ἀπὸ τῆς γενεᾶς ταύτης·
 οὐ αἱ ὑμῖν τοῖς νομικοῖς· ὅτι ἤρατε πῶς κρεί-
 δαι τῆς γνώσεως· αὐτοὶ οὐκ ἐσθλὰτε, καὶ τοῖς
 ἰσχυρομένοις ἐκολλήσατε· λέγοντες δὲ αὐ-
 τοῦ ταῦτα προσ αὐτοῖς· ἤρξαντο οἱ γραμμα-
 τοὶ καὶ οἱ φαρισαῖοι δεινῶς ἐνέχον καὶ ἀποσο-
 ματίζον αὐτὸν περὶ πλεόνων ἐνεδράοντες
 αὐτὸν· ζητοῦντες θηράσαι πῶς τοῦ σώματος
 αὐτοῦ, ἵνα καταγορήσωσιν αὐτοῦ· ἐνόησαν ἐ-
 πί (σωαθῶσιν τῶν μεριμνῶν τοῦ ὄχλου· ὡς
 τε κατὰ πατρὸς ἀγγέλοις· ἤρξατο λέγειν
 πρὸς τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ· πρῶτον προσέ-
 χε εἰς αὐτοὺς ἀπὸ τῆς ὕλης τῶν φαρισαί-
 ων, ὡς τίς ἐστὶν ὑπόκρισις· — τὴν παρὰ τὸν ^{ἀν-}
Εἵπεν οὖν· οὐδὲν οἷμαι καχυμνεῖν οὐκ ἔστιν·
 ἐστὶν, ὃ οὐκ ἀποκαλύφθῆσεται· καὶ κρυπτόν, ὃ
 οὐ γνωσθήσεται· ἀνθρῶπος ἐν τῇ σκοτί-
 ᾳ ἔπαυε, ἐν τῷ φασίᾳ κρυφθήσεται· καὶ ὃ
 πρὸς τὸ οἶον ἐλάλησατε ἐν τοῖς ταμίοις, καὶ
 ῥυχθήσεται ἐπὶ τῶν δομάτων· λέγω δὲ ὑ-
 μῖν τοῖς φίλοις μου· μὴ φοβηθῆτε ἀπὸ τῶν ἀ-
 ποκτενοῦντων τὸ σῶμα· καὶ μετὰ ταῦτα

μη ἐχόντων περισσότερον τί ποιῆσαι· ὑποδὲ
ζωδὲ ὑμῖν τίνα φοβήθητε· φοβήθητε τὸν με
τὰ τὸ ἀποκτεῖναι ἐξουσίαν ἔχοντα ἐμβω
λῶν δὲ τὴν γένεσιν· καὶ λέγω ὑμῖν· τοῦτον
φοβήθητε· οὐχὶ πεντήσρου θιά· πωλῶν τε ἀ
σαρτίων δυνά· καὶ ἐν ἐξ αὐτῶν οὐκ ἐστὶν ἐπίλε
λυσμένος ἐνώπιον τοῦ θυ· ἀλλὰ καὶ αἱ τρίχο
τὸς κεφαλῆς ὑμῶν πᾶσαι ἡρίθμωται· μή
οὖν φοβῆσθε· πολλῶν σρουθίων δυνά φέρει· λέ
γω δὲ ὑμῖν· πᾶς ὁσ' ἀνὸ μολογήσῃ ἐν ἐμοὶ ἐμ
προσθεν τῶν ἀνῶν· καὶ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνῶ οὐ μολο
γήσῃ ἐν αὐτῷ· ἐμπροσθεν τῶν ἀγγέλων τοῦ θυ·
ὁ δὲ ἀρνησάμενός με ἐνώπιον τῶν ἀνῶν· ἀ
παρνηθήσεται ἐνώπιον τῶν ἀγγέλων τοῦ θυ·
καὶ πᾶς ὁσ' ἐργάζομαι εἰς τὸν υἱὸν τοῦ ἀνῶ· ἀ
φεθήσεται αὐτῷ· τὸ δὲ εἰς τὸ γίον πᾶν βλασ
φήμησартί· οὐ καφεθήσεται· ὅτι ἅνδ' προσ
φέρωσιν ὑμᾶς ἐπὶ τὰς ζωαγωγάς· καὶ τὰς
ἀρχὰς· καὶ τὰς ἐξουσίας· μὴ μεριμνάτε·
πῶς ἢ τί ἀπολογησάθε· ἢ τί εἶπτε· τὸ βαρ
αῖον πᾶν δὲ δάξῃ ὑμᾶς ἐν αὐτῇ τῇ ὥρᾳ· ἃ
δεῖ ὑμῶν· ~· σάμβατον ἔ· κατὰ λουκᾶν·

Καὶ αἰρῶ ἐκείνῳ· σημαλεσάμενος οἱσ' τοῖς
δώδεκα· ἔδωκεν αὐτοῖς δυνάμειν καὶ ἐξου
σίαν ἐπὶ πάντα τὰ δαιμόνια· καὶ νό
σοις θεραπεύειν· καὶ ἀπέστειλεν αὐτοῖς κη
ρίσθην τὴν βασιλείαν τοῦ θυ· καὶ ἴ· ἀάθαι τοῖς
αἰσθενούουσιν· καὶ ἔ· πεν πρὸς αὐτοῖς· μή
δὲν αἰρεῖτε δὲ τὴν ὁδὸν· μήτε ράβδον· μήτε πήραν·

μήτε ἀργύριον· μήτε ἀργύριον· μήτε ἀραδιόχιτῶ
 νας ἔχον· καὶ ὅς κ' αὐτὸν πόλιν ἢ οἰκίαν ἢ σελ
 θήτε· ἐκὼ μὲν τε· καὶ ἐκὼθεν ἐξέρχασθε· καὶ ὅ
 σοι ἀνδ' ἐξορταίμασ· ἐξέρχόμενοι ἀπὸ τῆς πό
 λεως ἐκ γῆς· καὶ τὸν κοριόρτον ἀπὸ τῶν πο
 δῶν ὑμῶν ἀποτίναξάτε ὡς κάρτιριον ἐ
 παύτω· ἐξέρχόμενοι δὲ δι' ἡρχούτο κατὰ
 πᾶσιν ἡμέραις· ἀσπείζοντες καὶ θεραπεύον
 τὸν παρταχόν· καὶ ἡμεῖς κατὰ

ἡχ πτ εω β

 ὡς καὶ ἐκείνῳ· ἀπὸς τις προσήλθε· χ' λουκᾶν·
 τῷ ἰῷ ὡς ὁμοματὶ ἀδελφὸς καὶ αὐτὸς ἀρχων τῆς
 (ὡς ἀδελφὸς) ὑπείρχεν· καὶ πῶν παρατὼ πο
 δᾶς τοῦ ἰῷ· παρεκάλει αὐτὸν ἢ σελθῆν ἢ τὸν οἶ
 κον αὐτοῦ· ὅτι θυγάτηρ μονογενὴς κ' αὐτῷ· ὡς
 ἐτῶν δώδεκα· καὶ αὐτὴ ἀπέθνησκεν· ἐν
 δὲ τῷ ὑπάγειν αὐτὸν οἱ ὄχλοι (ὡς ἐπὶ γομ αὐτῷ)
 καὶ γυνὴ οἶσα ἐνρίσει αἷμα ποσὶ ἀπὸ ἐτῶν
 δώδεκα· ἐς τὴν ἰατροῖς πρὸς ἀμαλῶσασα ὅλον
 τὸν βίον· οὐκ ἔσχισεν ὑποῦδενος θεραπα
 θῆναι· προσελθοῖσα, ὅπιαθεν ἤφατο τοῦ
 κρᾶσιδος τοῦ ἱματίου αὐτοῦ· καὶ παρα
 χρήματι ἔστη ἡρίσις τοῦ αἵματος αὐτοῦ· καὶ
 εἶπεν ὁ ἰσ· τίς ὁ αἰσθόμενός μου· ἀρμου
 μένων δὲ πάντων· εἶπεν ὁ πέτρος καὶ ὁ
 ματῆαυτοῦ· ἐπιστάτω· οἱ ὄχλοι (ὡς ἐχοιμή
 σε καὶ ἀποθλίβοισιν· καὶ λέγεις τίς ὁ αἰσθ
 μένός μου· ὁ δὲ ἰσ εἶπεν· ἐξέλασθαι μου
 τίς· ἡμεῖς γὰρ ἐτῶν· δύνάμεν ἐξελθοῖσα
 ἀπὸ τοῦ· εἰδοῖσα δὲ ἡ γυνὴ ὅτι οὐκέτι

θεν τρέμωσα ἤλθεν καὶ πρὸς πεσοῦσα αὐ-
τῷ, διὼ αἰτίαν ἡφαιστοῦ· ἀπὴν ἤλθεν
αὐτῷ εὐώπιον παρὰ τὸ τοῦ λαοῦ, καὶ ὡς ἰ-
άθη παραχρῆμα· ὁ δὲ εἶπεν αὐτῇ· θάρσθη
θύγατερ, ἡ πίστις σου σέσωκεν σε· πορεύου εἰς
ἑρῆμω· ἐπὶ αὐτοῦ λαλοῦντος· ἔρχεται
τὸ παρὰ τοῦ κυρίου σου λέγων αὐτῷ· ὅτι τέ-
θνηκεν ἡ θύγάτηρ σου, μὴ σκύλε τὸν διδασ-
καλον· ὁ δὲ ἰσάκοισα ἀπεκρίθη αὐτῷ λέ-
γων· μὴ φοβοῦ· μόνον πίστε καὶ σωθήσεται·
ἐλθὼν δὲ εἰς τὴν οἰκίαν· οὐκ ἔφηκεν εἰσελ-
θεῖν οὐδένα· ἤ μὴ πέτρων καὶ ἰακώβου καὶ
ἰωάννου· καὶ τὸν πρῶτον τῶν παιδῶν καὶ τὴν
μετὰ· ἐκλαίοντες παύτες καὶ ἐνόησαν τοῦ
αὐτοῦ· ὁ δὲ εἶπεν· μὴ κλαίετε· οὐκ ἀπέθα-
νεν, ἀλλὰ καθεύδει· καὶ κατεγέλωται αὐτοῦ· ὅδ'
πᾶς ὅτι ἀπέθανεν· αὐτὸς δὲ ἐβραχύνετο·
πάντας· καὶ κρατήσας τῆς χειρὸς αὐτοῦ, ἐ-
φώρνησε λέγων· ἡ παῖς· ἐγέρου· καὶ ἐπέ-
στρεψε τὸ πρῶτον αὐτοῦ καὶ ἀνέστη πρὸς αὐτὴν
καὶ διέταξεν αὐτῇ δοθῆναι φαγῆν· καὶ ἐ-
ξέστησαν οἱ γονοῖς αὐτοῦ· ὁ δὲ παρήγειλεν
αὐτοῖς μὴ δεῦν ἄλλο πὸν γονοῦ· ὡς τῇ βηθσέ

Καὶ ῥῶ ἐκείνῳ· διδάσκοντες αὐτὸν καὶ τοῦ
πᾶσι ὅτι αὐτῷ ἐκ τοῦ ὄχλου· διδάσκοντες
ὅτι τῷ ἀδελφῷ μου μερίσασθαι μετ' ἐμοῦ τὴν
κληρονομίαν· ὁ δὲ εἶπεν αὐτῷ· ἄγε· τίς
με κατέστησεν διδασκῶν ἢ μεριστῶν ἐφ' ἐμᾶς·
εἶπεν δὲ πρὸς αὐτοῖς· ὁράτε καὶ φυλάσσετε

ἀπὸ τῆς πλεοναξίας· ὅτι οὐκ ἐν τῷ περιστάσει
 πύρι· ἡ ζωὴ αὐτοῦ ἐν τῶν ὑπαρχόντων αὐτοῦ ἐ-
 σίν· διὰ τοῦτο ὑμῖν λέγω· μὴ μεριμνάτε τῆς
 ψυχῆ ὑμῶν· τί φάσκει· μὴ δὲ τῷ σώματι· τίς ἐν-
 διστάθε· ἡ γὰρ ψυχὴ πληροῦ ἐστὶ τῆς τροφῆς·
 καὶ τὸ σῶμα τοῦ ἐνδύματος· καταροήσ-
 τε τοῖς κόραια· ὅτι οὐκ ἀσφροῖσιν οὐδὲ θερί-
 ζοῖσιν οἷοι οὐκ ἐστὶ ταμεῖον, οὐδὲ ἀποθήκη· καὶ
 ὁ θεὸς τρέφει αὐτοὺς· πόσω μάλλον ὑμεῖς δι-
 αφέρεσθαι τῶν πτηνῶν· τίς δὲ ἐξ ἔμψων
 μεριμνῶν· δύνάται προσθεῖναι ἐπὶ τῇ ὀψί-
 λικίᾳ αὐτοῦ πῆχυν εἶνα· ἔσθω οὔτε ἐλα-
 χιστον δύνάθε· τί περὶ τῶν λοιπῶν μερι-
 μνάτε· καταροήσατε τὰ κρίνα, πῶσαι
 ξανά· οὐ κοπιᾷ οὐδὲ μένη· λέγων δὲ ἡμεῖς· οὐ
 δεσπολῶν ἐν πάσῃ τῇ δόξῃ αὐτοῦ· περὶ ἐ-
 βάλλετο ὡς ἐν τούτων· ἔδετον χορτον ἐν τῷ
 αἰρώσῃ μερον ὄνται, καὶ αὐριοκ εἰς κλίβα-
 νον βαλλόμενον· ὁ θεὸς οὕτως ἀμφὶ ἐν ῥωσὶ·
 πόσω μάλλον ἡμεῖς ὀλίγοί ποιοι· καὶ ὑμεῖς
 μὴ ζητεῖτε τί φάσκει ἢ τί πίνει· καὶ μὴ με-
 τεωρίζεσθε· ταῦτα γὰρ πάντα, τὰ ἐθέλει
 ἐπιβῆτα· ἡμεῖς δὲ ὅτι οἶδεν, ὅτι χρεῖζε-
 τε τούτων· πλὴν ζητεῖτε τὴν βασιλείαν τοῦ
 θεοῦ· καὶ ταῦτα προστεθήσονται ὑμῖν·

τῇ γ' τῆς δ' ἡ εὐκ' κατὰ λόγον
 Ἡ πενὸς τίς ἀφαιρῶν ὁ πῖς οὐκ οἰκονόμος
 ὁ φόρτος· οὐκ καταστῆσι οὐκ ἐπὶ τῆς δε-
 ραπτάσ αὐτοῦ· τοῦ δύναι ἐν καιρῷ τοῖς

σιτομέτριον· μακάριος ο δούλος ἐκός οὐ ἐλθὼν
 οὐκ αὐτοῦ ἀρήσει ποιοῦντα οὕτως· ἀληθὺς
 λέγω ὑμῖν· ὅτι ἐπὶ πάσι τοῖς ὑπαρχοῦσιν αὐτοῦ
 καταστήσει αὐτὸν· Ἐὰν δὲ ἅπλοος ἐκεί-
 νος ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ· χρονίζῃ οὐκ ἐμὲ εἴχε-
 ραι· καὶ ἄρξεται τύπειν τοὺς παῖδας καὶ τὰς
 παιδίους· ἐαθίζετε καὶ πίνετε καὶ μεθύ-
 κεσθε· ἡ ἐξουσία τοῦ δούλου ἐκός ἐν ἐ-
 μέραις οὐ πρόσδεκα· καὶ ἐν ὥραις οὐ γίνω-
 σκει· καὶ διχοτομήσεται αὐτὸν· καὶ τὸ μέρος
 αὐτοῦ μετὰ τῶν ἀπίστων θήσεται· Ἐκός
 δὲ οὐδὺλος ὁ γινώσκων τὸ θέλημα τοῦ κυρίου ἐ-
 αὐτοῦ· καὶ μή ἐτοιμάσας· μή δὲ ποιήσας πρὸς
 τὸ θέλημα αὐτοῦ, δαρήσεται πολλὰς· ὁ δὲ
 μη γινώσκων· ποιήσας δὲ ἄξια πληγῶν, δαρήσε-
 ται ὀλίγας· παντὶ δὲ ὅ ἐδόθη πολὺ, πολὺ
 ζητηθήσεται παρ' αὐτοῦ· καὶ ὅ παρ' ἐθέτο πολὺ,
 περισσότερον αἰτήσοισιν αὐτὸν· ὡς τῇ
 ἡ πενὸς παρτὶ ὅ ἐδόθη· ὡς τῇ δὲ αὐτοῦ
 πολὺ, πολὺ ζητηθήσεται παρ' αὐτοῦ· καὶ ὅ
 παρ' ἐθετο πολὺ, περισσότερον αἰτήσοισιν
 αὐτὸν· πῦρ ἤθον βαλὼν ἄς πῦρ γῆν· καὶ
 τί θέλω, ἢ ἡδὴ ἀνήφθη· βαπτισμα δὲ ἐ-
 χωβαπτισθῆναι· καὶ πῶς ἰστέχομαι ἐξ ὅτου
 τελευτῇ· δοκῇτε ὅτι ἡρήμην παρασέ-
 μοί με δίδωαι ἐν τῇ γῇ· οὐχὶ λέγω ὑμῖν·
 ἀλλ' ἡ διάμερις μόν· ἔσονται γὰρ ἀπὸ τοῦ
 γῆν πέντε ἐν οἴκῳ ἐν ᾧ διάμερις μένοι·
 τρεῖς ἐπὶ δύοισι, καὶ δύο ἐπὶ τρισί· διαμε-

ριαθῆσθαι πῆρ' ἐπὶ ἰγῶ· καὶ ἰγὸς ἐπὶ πρῖ +
κρῖ ἐπὶ θυγατρὶ· καὶ θυγατὴρ ἐπὶ κρῖ + πεν
θερὰ ἐπὶ τῷ κύμφῳ αὐτῆς· καὶ κύμφη
ἐπὶ τῷ πενθερᾷ αὐτῆς + ἔλεγε δὲ
καὶ τοῖς ὄχλοις· ὅτι αὐτὶ δὴ τε τῷ κυφέλῳ ἀ
νατέλλοισαν ἀποδοσκῶν· ἀθῶς λέγει· ὅ
τι κέρος ἐρχεται· καὶ γίνεσθαι οὕτως + καὶ ὅταν
μὲν οὖν πνέοντα λέγει ὅτι καί σκονέσαι· καὶ
γίνεσθαι + ἀποκριταί· τὸ πρόσωπον τῷ
κρῖ καὶ τοῦ οὐνοῦ οἶδατε δοκιμάζειν· τὸν δὲ
καιρὸν τοῦτον, πῶς οὐ δοκιμάζειτε + τίδ' ἐ
καὶ ἀφ' αὐτῶν οὐ κρίνεται τὸ δίκαιον· ὡς
γὰρ ἐπάγγελσεν μετὰ τοῦ ἀντιδίκου σου ἐπαρ
χοντα· ἐν τῇ ὁδῷ δὲ ἐργασίαν ἀπηλλάχθαι
ἀπ' αὐτοῦ + μή ποτε κατασύρησθε πρὸς τὸν
κριτὴν· καὶ ὁ κριτὴς σε παραδῶ τῷ πρά
κτωρ· καὶ ὁ πρᾶκτωρ σε βάλῃ εἰς φυλακὴν +
λέγω σοι· οὐ μὲν ἐξέλθεις ἐκ ἐκεῖ· ἕως οὗ
καὶ τὸν ὄχλον λέγοντα ἀποδώσῃ·

τῇ ἐκείνῃ ἢ αὐτῇ κατὰ λόγον

Καὶ ῥῶ ἐκείνῳ παρήσαντι νῆς ἀπα
πέλοντες τῷ ἰσχυρῷ περὶ τῶν γαλιλαίων· ὡς
τὸ αἶμα· πῖλᾶτος ἐμίζε μετὰ τῶν θυσιῶν
αὐτῶν + καὶ ἀποκριθὲς οἶσ' ἦ πεν αὐτοῖς·
δοκῆτε· ὅτι οἱ γαλιλαῖοι οὗτοι, ἀμαρτωλοὶ
παραπάντας τοὺς γαλιλαίους ἐγένοντο·
ὅτι τοιαῦτα πεπνυθασίν + οὐχὶ λέγω ὑμῖν·
ἀλλ' ἐὰν μὴ μετανοήτε· πάντες ὡς αὐτὸς
ἀπολείθε· ἵνα ἐκ γένος οἱ δεκά καὶ ὀκτώ

ἔφ' οὖν ἔ' πῶς ἐν ὀπύρῳ ἐν τῷ σιλῶνι καὶ αὐ
 πικτῆν ἐν αὐτοῖς. ὁ δὲ καὶ τὸ ὅτι οὗτοι ὁ φηλέ
 ται ἐλθόντο παρὰ πάντας ἀρσῶ τοῖς καὶ
 τοῖς κοῦπτασ ἐν ἰλῆϊ + οὐχὶ λέζω ἰμῖν. ἀλλέ
 ἀρμὴ μετὰ ὅτε πάντες ὁμοίως ἀπολῆσθαι
 ἔλεγε. οὐδὲ ταύτην τὴν παραβολὴν + οὐκ ἐν
 εἶχεν τίς ἐν τῷ ἀμπελώνι αὐτοῦ πεφυτὰ μέ
 ρων. καὶ ἦλθεν ζῆτῶν καρπὸν ἐν αὐτῇ, καὶ
 οὐκ ἔβρεν + ἔπειτα οὐδὲ πρὸς τὸν ἀμπελοργόν
 ἰδοῦ τρία ἔτι ἐρχομαι ζῆτῶν καρπὸν ἐν τῇ
 οὐκ ἐταύτη, καὶ οὐκ ἐκρίσκει + ἔκκοψον αὐ
 τὴν, ἱερατὶ καὶ τὴν γῆν καταρτίζει + ὁ δὲ αὐ
 ποκριθῆς λέγει αὐτῷ + κέ. ἀφ' ὧ αὐτὴν καὶ
 τοῦτο τὸ ἔτος. ἔως ὅτου σιμῶ περὶ αὐ
 τὴν. καὶ βάλω κόπρια + καὶ μεν ποιήσοι
 καρπὸν, ἔδὲ μή με φέ το μέλλον ἐν κόψῃ
 αὐτῇ. ~ τῇ παρὰ τῆς τῆς αὐτοῦ κατὰ λόγον.
 ὡ καὶ ῥῶ ἐκείνῳ. προσήλθον τί καὶ τῶν
 φαρισαίων λέγοντες τῷ Ἰησοῦ. ἔξελθε καὶ πορεύου
 ἐν ταύτῃ, ὅτι ἡ ῥῶ δὲ θέλῃς ἀποκτεῖναι +
 καὶ εἰπεν αὐτοῖς. πορεύεσθαι ἔπαυσε τίς
 ἀλλὰ περὶ ταύτην ἰδοῦ σε βάλω δαιμόνια,
 καὶ ἰάσῃς. ἐπὶ τελευτῇ σήμερον καὶ αὔριον,
 καὶ τῇ τρίτῃ τελευτῇ καὶ πλὴν δὲ σήμε
 ρον καὶ αὔριον, καὶ τῇ ἐχόμενῃ πορεύεσθαι
 ὅτι οὐκ ἐνδέχεται προφήτῃ ἀπολέσθαι.
 ἔξω ἰλῆϊ + ἰλῆϊ ἰλῆϊ, ἡ ἀποκτείνου
 σαι τοῖς προφήταις, καὶ λιθοβολοῦσαι τοῖς
 ἀπὸ σαλμάνοιο πρὸς αὐτὴν + ποσάκις

ἦθέλῃσαι ἐπιβῆαι τὰ τέκνα σου· ὃν πρό-
πον ὅρμισ τῶν ἐκ τῆς μοῦσας ὑπὸ τὰς πτέρυ-
γας, καὶ οὐκ ἐθέλῃσαι· ἰδοὺ ἀφίεται ἡμῖν
ὁ οἶκος ὑμῶν· λέγω δὲ ἡμῖν· ὅτι οὐκ ἔμελλε
τε· ἕως αὖ ἥξῃ ὅτι ἔπητε, ἀλογημένος ὁ
ἐρχόμενος ἐνομόματις· ~ σάμφορ ἡ

Καὶ ῥῶ ἐκ ῥῶ· κατελθόν τῶ ἱού καὶ λού-
σας τὸν ὅρον· (ὡς ἡ τῆς ἐκ τῆς αὐτῆς ὄχλος πολίς·
καὶ ἰδοὺ ἀνὴρ ἀπὸ τοῦ ὄχλου ἀνέβη σὺν λέγων·

Βασιλεῦ· δόμαί σου ἐπίβλεψαι ἐπὶ τὸν
ἵόν μου, ὅτι μοι γενῆς ἐστίν μοι· καὶ ἰδοὺ
πῶς λαμβάνει αὐτόν· καὶ ἐξέφυκε κραδί, καὶ
σασαράσει αὐτόν μετὰ ἀφροῦ· καὶ μόγις ἀπὸ
χωρὶς αὐτοῦ, (ὡς τρίβον αὐτόν· καὶ ἐδέξ-
θην τῶν μαθητῶν σου, ἵνα σὺ βάλῃς αὐτόν·
καὶ οὐκ ἐδέξατο· ἀποκριθεὶς δὲ ὁ ἴσ' εἶ-
πεν· ὡς γὰρ ἀπίστος καὶ διεστραμμένος·
ἕως πότε ἔσομαι πρὸς ἡμᾶς, καὶ ἀρέξο-
μαι ὑμῶν· προσάγει τὸν ἵόν σου ὡς δὲ· ἐ-
πὶ δὲ αὐτοῦ προσάχοντος· ἔρρηξεν αὐτόν
τὸ δαιμόνιον, καὶ (ὡς σασαράσεν· ἐπὶ τῇ
μῆτι δὲ ὁ ἴσ' τῶ πρὶ τῶ ἀκαθάρτου καὶ ἰάσα-
το τὸν παῖδα, καὶ ἀπέδωκεν αὐτόν τῶ πρὶ
αὐτοῦ· ἔξεν πλάστον τοῦ δὲ πάντες ἐπὶ τῇ
μεγαλότητι τοῦ θ'· ~ κριακή ἡ

Καὶ ῥῶ ἐκ ῥῶ· ρομικός τις καὶ λού-
σας τὸν ὅρον· πειράζων αὐτόν καὶ λέγων· δὲ
βασιλεῦ· τί ποιήσας, (ὡς αἰώριον κληρονο-
μήσω· ὁ δὲ εἶπεν πρὸς αὐτόν· σὺ τῶ νόμῳ

ἡχ πλ εωρ

τί ἔγραπται· πῶς ἀναιμῶς κείσθῃ· ὁ δὲ ἀπὸ κρῖ
 θεὸς εἶπεν· ἀπαπήσεις κῆτόν θῆ σου· ἐξόλιω
 τὴν καρδίαν σου· καὶ ἐξόλιω τὴν ψυχὴν σου·
 καὶ ἐξόλιω τὴν ἰσχύον σου· καὶ ἐξόλιω τὴν διάνοιαν
 σου· καὶ τὸν πλησίον σου ὡς ἐαυτὸν· εἶπεν
 δὲ αὐτῷ· ὀρθῶς ἀπεκρίθης· τοῦ τοποῖν καὶ ῥήσιν·
 ὁ δὲ θέλων δίκαιον ἐαυτοῦ, εἶπεν πρὸς τὸν ἴν·
 καὶ τίς ἐστίν μου πλησίον· ὑπόλαβὼν δὲ ὁ ἴσθ' ἔπει
 ἀπὸ τῆς κατέβαινον ἀπὸ ἰλῆς εἰς ἱερὶ χῶ· καὶ
 λησταῖς περὶ ἐπέστη· οἱ καὶ ἐξέδισαν αὐτὸν·
 καὶ πληγαῖς ἐπιθεν τῷ· ἀπὸ λῆθρον ἀφέντω
 ἡμίθρον ἢ τῆ χαίρονται· κατὰ σὺν μερίαν δὲ ἰε
 ράσπης κατέβαινον ἐν τῇ ὁδῷ ἐκ γῆ· καὶ ἰδὼν
 αὐτὸν, ἀντίπαρῆλθεν· ὁμοίως δὲ καὶ λαίτλιος
 γενόμενος κατὰ τὸν τόπον· ἐλθὼν καὶ ἰδὼν,
 ἀντίπαρῆλθεν· σαμαρῆτις δὲ τῆς ὁδοῦ ἦλθεν
 κατὰ τὸν· καὶ ἰδὼν αὐτὸν, ἐὼλ αἰσχύνη· καὶ
 προσελθὼν κατέδραε τὰ τραύματα αὐτοῦ, ἐπι
 χέων ἐλαιὸν καὶ οἶνον· ἐπιβίβασας δὲ αὐτὸν
 ἐπὶ τὸ ἵδιον κτήνος· ἤγαγεν αὐτὸν εἰς πανδοχεί
 ον· καὶ ἐπιμελήθη αὐτοῦ· καὶ ἐπὶ τὴν αὔρι
 ον ἐξελθὼν ἐβαλὼν δίδωκεν αἶμα, δέδωκεν τῷ
 πανδοχεί· καὶ εἶπεν αὐτῷ· ἐπιμελήθητι αὐ
 τοῦ· καὶ ὅτι ἂν πρὸς δαπανήσεις ἐγὼ ἐν τῷ ἐ
 παμέρχεται με ἀποδώσω σοι· τίς οὖν τούτων τῶν
 τριῶν, πλησίον δοκεῖ σοι γεγονέναι τοῦ ἐμπεσόν
 τος εἰς τὸ ὠλισθᾶν· ὁ δὲ εἶπεν· ὁ ποιήσας τὸ
 ἐλεος μετὰ αὐτοῦ· εἶπεν οὖν αὐτῷ ὁ ἴσθ'· πο
 ράου καὶ σὺ ποίει ὁμοίως· ~

τῇ β' πλὴ θ' πλὴ θ' εὐ' κατάλουκαρ

Ω καιρῷ ἐκείνῳ· εἰσῆλθον οἱ δὲ οἱ κοντι-
 ροὶ τῶν ἀρχόντων καὶ φαρισαίων σαββάτω φα-
 γείν ἄρτον· καὶ ἔλεγε τῷ κληνικῷ τὸ αὐτοῦ· μὴ φά-
 γει τοῖς φίλοις σου· μὴ δὲ τοῖς ἀδελφοῖς σου· μή-
 δὲ τοῖς σιγγληθῆς σου· μὴ δὲ γέτομας πλεισίους·
 μὴ ποτε καὶ αὐτοὶ σε ἀντίκαλέσωσι· καὶ γένη-
 ταί σοι ἄρτα πόδου· ἄλλ' ὅτ' ἀνποιλὲς δοχῶν·
 καλῇ τοῖς πτωχοῖς· ἀραπήροισι· χυλοῖς· τυφλοῖς·
 καὶ μακάριος ἔσῃ· ὅτι οὐκέτι οἰσὶν ἄρτα πόδου
 μασοῖ· ἀρταποδοθήσεται γάρ σοι ἐν τῇ ἀρα-
 σάσει τῶν δοκίμων· ἀκούσας δὲ τῆς τῶν (ἐν)
 ἀναιδμενῶν ταῦτα· ἦ περ αὐτῷ· μακά-
 ριος ὁσφάτται ἄρτιον ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ θ'·

τῇ γ' πλὴ θ' εὐ' κατάλουκαρ

Ω καιρῷ ἐκείνῳ· (ὡς πορεύοντο τῷ ἰσὺ ὄχλοι)
 πολλοί· καὶ γραφεῖς ἦ περ πρὸς αὐτοῖς· ἦ τις
 ἐρχεται πρὸς με καὶ οὐκ ἰσθ' τὸν πρῶτον αὐτοῦ
 καὶ τὴν μητέρα· καὶ τὴν γυναῖκα καὶ τὰ τέ-
 κνα· καὶ τοῖς ἀδελφοῖς καὶ τὰς ἀδελφὰς·
 ἐπὶ δὲ καὶ τὴν ἑαυτοῦ ψυχὴν· οὐ δύναται
 μου μαθεῖν τὴν ἀλήθειαν· καὶ ὁσ' τις οὐ βασι-
 λ' ἔχον τὸν σπῶν αὐτοῦ· καὶ ἐρχεται ὀπίσω μου·
 οὐ δύναται εἶναι μου μαθεῖν τὴν ἀλήθειαν· τίς γάρ ἐ-
 ξ' ἡμῶν ὁ θέλων πύργον οἰκοδομῆσαι· οὐχὶ πρῶ-
 τον καθίσας· καὶ φέβει τὴν δαπάνην· καὶ ἐρχεται
 εἰς ἀπαρτίς μου· ἴνα μὴ ποτε θέντος αὐτοῦ
 θεμέλιον· καὶ μὴ ἰσχύοντος αὐτοῦ σῶτελέ-
 σαι· πάντες οἱ θεωροῦντες ἀρξονται

ἐμπέζην αὐτῷ λεγόντες· ὅτι οὗτος ὁ ἄνθρωπος ἤρ-
ξατο οἱ κοδομήν, καὶ οὐκ ἴσχυεν σὺτελίσαι· καὶ
τὸ βασιλεὺς πορεύμενος σὺμβαλὼν ἐτέρῳ
βασιλεὺς ἐξέπολεμον· οὐκ ἐκαθίσας πρῶτον βου-
λάται ἐδωκεν ἀποσέειν, ἐν δὲ καρχηλιασὶν ἀπαρ-
τήσιν, τῷ μετὰ ἡκοσὶ χιλιάδων ἐρχομένῳ ἐπὶ
τὸν· ἐξ δὲ μετὰ· ἐπὶ τὴν πόρῳ αὐτοῦ οὐκ ἔσται· πρῶ-
τον ἀποσέλας ἐξῆλθεν πρὸς εἰρήνην· οὗ-
τος οὖν πᾶς ἐξ ἡμῶν οὐκ ἀποτάσσεται πᾶσι
τοῖς ἐαυτοῦ ὑπαρχοῖσιν, οὐδὲν αὐταί μου εἴ-
ναι μαθητὴς· καλὸν τὸ ἄλῃ· εἰ μὴ τὸ ἄ-
λῃ μερῶν θῆ, ἐν τῇ ἀρτῇ θῆσθαι· οὔτε εἰς
γῆν οὔτε εἰς κοπρίαν ἀθετομένην, ἐξω-
βαλοῖσιν αὐτό· οὐκ ἔχων ὧτα ἀκούειν ἀκούειν·

· τῇ δὲ τῆς θ' αὐτῆς κατὰ λουκᾶν
Καὶ τῷ καιρῷ ἐκείνῳ· ἦσαν ἐγγίζοντες τῷ Ἰω-
πάννῃ οἱ τελῶναι καὶ οἱ ἀμαρτωλοὶ ἀκούειν
αὐτοῦ· καὶ δὲ ἐγγίζον οἱ φαρισαῖοι καὶ
ὁ γραμματεὺς λέγοντες· ὅτι οὗτος ἄμαρ-
τωλὸς πρὸς δέχεται, καὶ (σωεσθῆς αὐτοῖς·
εἶπεν δὲ πρὸς αὐτοὺς τὴν παραβολὴν ταύ-
την λέγων· τις ἄνθρωπος ἐξ ἡμῶν ἔχων ἐκα-
τὸν πρόβατον· καὶ ἀπολέσας ἐν ἐξ αὐτῶν·
οὐ καταλείπει τὰ ἐν ἐνέκοντα ἐν ῥέσσει
τῇ ἐρήμῳ; καὶ πορεύεται ἐπὶ τὸ ἀπολωλός,
ἕως εὕρη αὐτό· καὶ εὕρων ἐπὶ τῇ θῆσιν
ἐπὶ τοῖς ὅμοις ἐαυτοῦ χαίρων· καὶ εἰ-
θὼν ἐξ τῶν οἰκονόμων (ἡμεῖς τοῖς φίλοις καὶ
τοῖς γείτονας λέγων αὐτοῖς· σιχαί· τέ μοι).

ὅτι εὖρον τὸ πρόβατόν μου τὸ ἀπολωλὸς +
 λέγω ἡμῖν· ὅτι οὕτως χαρὰ ἔσται ἐν τῷ οὐνῶ
 ἐπὶ ἐνὶ ἁμαρτωλῶ μετανοοῦντι· ἢ ἐπὶ ἐ-
 νεμήκονται ἐν ἐκείνῳ οἱ οἰοῦντες· οἱ τῇ μὲν οὐχ ἔχοντες
 εἰς οὐκ ἔχουσιν μετανοίας + ἢ τίς μὲν δραχμὰς εἰ-
 χουσα δέκα· εἰ μὲν ἀπολέσῃ δραχμὴν μίαν· οὐ
 χὶ ἀπὸ τῆς λήχης· καὶ ἄρα οἱ τῶν οἰκίων· καὶ ἡ
 τεῖ ἐπὶ μελῶς· ἕως οὗτου αἵρε· καὶ ἀρῶν
 οὐ μαχίται τὰς φίλας καὶ τὰς μετονομαστέ-
 ρισα· σὺ χαρήται μοι· ὅτι εὖρον τῶν δρα-
 χμῶν ἢ ἀπολῶσα + οὕτως λέγω ἡμῖν· χα-
 ρὰ γίνεσθαι ἐν ὧ πῶν τῶν ἀγγέλων τοῦ θῆ· ἐπὶ
 ἐνὶ ἁμαρτωλῶ μετανοοῦντι· ~ πῆ ἐπὶ θ

Πενὸς ἐπὶ τῶν παραβολῶν π ^{αὐτῶν} ^{τῶν} ^{αὐτῶν} ^{τῶν} ^{αὐτῶν}
 ταῖς· ἀπὸ τίς ἢ πλοῖοις· ὅς ἔχεν οἰ-
 κονόμον· καὶ οὗτος δὲ ἐβλήθη αὐτῷ· ὡς δὲ α-
 σκὸς πίλων τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ· καὶ φω-
 νήσας αὐτὸν εἶπεν αὐτῷ· τί τοῦτο ἀκούω
 περὶ σοῦ· ἀπόδος τὸν λόγον τῆς οἰκονομίας
 σου· οὐ γὰρ διωθήσῃ ἐπὶ οἰκονομῆν + εἶπεν
 δὲ ἐνὶ αὐτῷ ὁ οἰκονόμος· τί ποιήσω ὅτι ὁ
 κῆ μου ἀφαιρῇται τῶν οἰκονομῶν ἀπὸ ἐμοῦ·
 σκαπτήν μου κίχην· ἐπαίτην αἰσχυρομαι· εἰ-
 γνων τί ποιήσω· ἴνα ὁ τὰς μετὰ ταῦτα θῶ τις
 οἰκονομίας· δέξονται μὲν ἄρα τοῖς οἰκισαῖς αὐτῶν +
 καὶ πρὸς καλεσάμενος ἐναίκατον τῶν ἑ-
 οφάλετῶν τοῦ κῆ αὐτοῦ· ἔλεγε τῷ πρῶ-
 τῳ· πόσον ὁ φάλεξ τῷ κῆ μου + ὁ δὲ ἔπεν·
 ἑκατὸν βάτοις ἐλαίου· καὶ ἔπεν αὐτῷ·

δέξαι σου τὸ γράμμα· καὶ καθίσας ταχέως
 γράψον πεντήκοντα· ἐπεὶ ταῦτ' ἔγραψεν·
 οὐδὲ πόσον ὀφείλῃς· ὁ δὲ εἶπεν· εὐα
 τὸν κόρον σίτου· καὶ εἶπεν αὐτῷ· δέξαι
 σου τὸ γράμμα· καὶ γράψον ὁδοήκοντα·
 καὶ ἐποίησεν ὡς τὸν οἰκονόμον τῆς ἀδύ
 κίας· ὅτι φορέμωσ' ἐποίησεν· ὅτι οἱ υἱοὶ
 τοῦ αἰῶνος τούτου· φρονιμώτεροι ἐπὶ
 τοῖς υἱοῖς τοῦ φωτός· ἢ τῶν γενεῶν τῶν ἐ
 αὐτῶν ἦσιν· καὶ ἡ ἐμὴ λέγω· ποιήσα
 τε ἑαυτοῖς φίλους· ἐκ τοῦ μαμωνᾶ τῆς ἀ
 δικίας· ἵνα ὅταν σκλήπητε δέξονται ὑ
 μᾶς ἢ τὰς αἰωνίους σκηρὰς· ἡ παρὰ τοῦ
 ἱπενόως πρὸς τοὺς ἐλιλυθῶτας· ^{ἡ δὲ} καὶ
 πρὸς αὐτοὺς ἰουδαίους· ὅμως ἐς τοὺς οἰκιστοὺς
 τῶν ἑαυτοῦ· ἐνώπιον τῶν ἀνθρώπων· ὁ δὲ θεί
 ῃ ῥώσκει τὰς καρδίας ἡμῶν· ὅτι τὸ ἐν ἀνθρώ
 πῳ ἡλόν· βδελύσκει ἐνώπιον τοῦ θύ· ὁ νό
 μος καὶ οἱ προφῆται ἕως ἰωάννου· ἀπὸ
 τότε ἡ βασιλεία τοῦ θύ διατελεῖται· καὶ
 πᾶς ἢ αὐτὴν βιάζεται· ἀκοπώτερον δέ
 ἐστιν· τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν παρελθόν· ἐκ
 τοῦ νόμου μίαν κεραίαν πῶς· πᾶς ὁ
 ἀπολύων τὴν γῆν καὶ αὐτοῦ· καὶ γαρῶν
 ἐτέραν· μοιχάει· καὶ πᾶς ὁ ἀπολε
 λυμένος ἀπὸ ἀνδρὸς γαρῶν μοιχάει·
 εἶπεν δὲ πρὸς τοὺς μαθητάς· ἀμείνων ἐστὶν
 ἡ πόσις ἐλθόντων σκαρδαλῶν· οὐ αἰδέ
 οἱ οὐδέχεται· λίσσεται αὐτῷ· ἡμεῖς οὐ

ρίκος περίκειται περί τὸν τραχηλον αὐτοῦ· καὶ
 ἐρριπταῖσθ' ἐπὶ τὴν θάλασσαν· ἢ ἰνα συναρδα
 λίσσιν αὐτῶν μὴ κρῶν τοῦτων· προσέχεται ἑ
 αυτοῖς + εἰ μὴ δὲ ἀμαρτήματα ὁ ἀδελφός
 σου· ἐπιτίμησον αὐτῷ· καὶ εἰ μὴ μετα
 νοήσῃ, ἀφώστω αὐτῷ + καὶ εἰ μὴ ἐπ' αἰσ
 θησὶς ἡμέρας ἀμαρτήματά, καὶ ἐπ' αἰσθησὶς
 ἡμέρας ἐπιστρέψῃ λέγων, μετάνοῶ· ἀφί
 σθαι αὐτῷ· ~ κατὰ λαὸν

τὴν θ' ὅτι πρὸς
 τὴν θ' ὅτι πρὸς
 ἐν τῇ λαῷ

Εἶπεν οὖν τὴν παραβολὴν ταύτην· ἀκούτι
 μοσ πλοισίου ἀφόρησεν ἡ χώρα + καὶ οὐκ ἔ
 λογίσθησεν αὐτῷ λέγων· τί ποιήσω ὅτι οὐ
 κέχω πού (ω) αἶξω τὸν καρπὸν μου + καὶ εἶπεν·
 τοῦτο ποιήσω· καθελῶ μου τὰς ἀποθήκας·
 καὶ μέζονας οἰκοδομήσω + καὶ (ω) αἰζώσκει
 πάντα τὰ κτήνη ματαμου, καὶ τὰ θάλασσαν·
 καὶ ἐρῶ τὴν ψυχὴν μου· ψυχὴ· ἔχθρ' πολλὰ αἰ
 ματὰ κέμενα ἄς ἔτι πολλά· ἀμαρτανου·
 φάσε· πῖε· ἀφραΐμου + εἶπεν δὲ αὐτῷ ὁ
 θεός· ἀφ' οὐ· ταῦτα τῇ ῥύκτι, τὴν ψυχὴν αὐ
 ἀπαιτοῖσιν ἀπὸ σοῦ· ἀλλ' ἡ ποιμασαστί
 μί εἶται + οὕτως ὀθνησαυρίζων· ἑαυτῶν, καὶ
 μὴ εἰς θεὸν πλουτῶν· πάντα λέγων ἐφ' ὃ· ὁ ἐχρῶν τ' ἀκούει

Τὴν καιρὸν ἐκαίρω· ἐπερωτῶ δὲ οἱς· ~ ἀκούετω· ~
 ὑπὸ τῶν φαρισαίων, ποτε ἐρχεται ἡ βασιλεία
 τοῦ θεοῦ + ἀπεκρίθη καὶ εἶπεν· οὐκ ἐρχεται εἰς
 βασιλείαν τοῦ θεοῦ μετὰ παρατηρήσεως + οὐ
 δὲ ἐροῖσιν ἰδοὺ ὡδε· ἢ ἰδοὺ ἐκεῖ· ἰδοὺ γὰρ εἰς
 βασιλείαν τοῦ θεοῦ, ἐν τοσούτοις ἐστὶν + εἶπεν

τῇ β' τῆς τ' αὐτῆς κατὰ λαὸν

δὲ πρὸς τοῖς μαθηταῖς· ἔλθουσιν ταῖς ἡμέραις
ὅτε ἐπεθυμήσατε μίαν τῶν ἡμερῶν τοῦ υἱοῦ
τοῦ ἀνθρώπου· καὶ οὐκ ὄψαθε· καὶ ἐ-
ροῦσιν ὑμῖν· ἰδοὺ ὧδε, ἰδοὺ ἐκεῖ· μὴ ἀπέλθῃ-
τε, μὴ δὲ διώξητε· ὡς περ γὰρ ἡ ἀστραπή,
ἡ ἀστράπτουσα ἐν τῇ σκοτίᾳ· οὕτως ὁ υἱὸς τοῦ
ἀνθρώπου ἐστὶν· οὕτως ἔσται καὶ ὁ υἱὸς τοῦ
ἀνθρώπου ἐν τῇ ἡμέρᾳ αὐτοῦ· πρῶτον δὲ δεῖ αὐ-
τὸν πολλὰ παθεῖν· καὶ ἀποδοκιμασθῆναι
ἀπὸ τῶν γερεῶν ταύτης· ~

Καὶ πάλιν ἔειπεν· ἰπενόως καθὼς ἐγένετο καὶ ἐπὶ τοῦ υἱοῦ
ἐν ταῖς ἡμέραις τούτοις· οὕτως ἔσται καὶ ἐν ταῖς
ἡμέραις τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου· ἡ ἄθλιον· ἐπι-
πνον· ἐγείμω· ἐγαμίζοντο· ἀχρὶ τοῦ ἡμέρας
ὅσην θένω· ὅς τινος κῆρυγος· καὶ ἡλθεν ὁ κα-
τακλῆσμος καὶ ἀπόλωεν ἅπαντας· ὁ
μοίως καὶ ὡς ἐγένετο ἐν ταῖς ἡμέραις τούτοις
ἡ ἄθλιον· ἐπινον· ἡ γόραζον· ἐπώλου· ἐ-
φύλαγον· ὡκοδόμω· ἡ δὲ ἡμέρα ἐξηλθε
λατ ἀποσοδόμων· ἔβρεξε πῦρ καὶ θῆον
ἀπὸ οὐρα, καὶ ἀπόλωεν ἅπαντας· καὶ
ταῦτα ἔσται· ἡ ἡμέρα τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου ἀπο-
καλύπτεται· ἐνεκάνη τῇ ἡμέρᾳ· ὅς ἔσται ἐ-
πὶ τοῦ οὐρανοῦ· καὶ τὰ σέλας αὐτοῦ ἐν τῇ
οὐρανῷ· μὴ κατὰ βάττω εἶναι αὐτὰ· καὶ
ὁ ἐν τῷ ἄρῳ· ὁμοίως μὴ ἐπίστρεψάτω εἰς
τὰ ὀπίσω· μη μόνον ἀλλὰ καὶ τὴν ζωαίαν
λατ· ὅς ἐάν ζητήσῃ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ σώσει·
ἀπολέσθαι αὐτήν· καὶ ὅς ἐάν ἀπολέσθαι αὐτήν,

ζωογονήσονται + λέγω ὑμῖν· ταῦτα τῇ νυνὶ
 ἔσονται δύο ἐπὶ κλίνῃ μιᾷ· ἃ παραλί-
 φθήσεται· καὶ ὁ ἑτέρος ἀφεθήσεται + δύο ἔ-
 σονται ἀλήθοιοι ἐπὶ τὸ αὐτό· μία παρα-
 λίφθήσεται καὶ ἡ ἑτέρα ἀφεθήσεται + καὶ
 ἀποκριθεὶς πᾶς λόγιος τῶν αὐτῶν· ποῦ κε· ὁ δὲ
 εἶπεν αὐτοῖς· ὅπου τὸ σῶμα· ἐκείνη α-
 χθήσονται οἱ αἱετοί· ~ τῇ ᾗ τῆς τῆς

Καὶ ῥῶ ἐκείνῳ· προσέφερον αὐτῷ τοῦ
 πῶ ἰδοὺ τὰ βρέφη ἡμῶν αὐτῶν ἀπῆλθαι· ἰδοὺ τ
 δεοίμασθαι· ἐπετίμησεν αὐτοῖς + ὁ δὲ
 ἰσ· πρὸς καλῶς μενος αὐτὰ εἶπεν· ἀφε-
 τε τὰ παιδία ἐρχάσθαι πρός με· καὶ μὴ κο-
 λύβειν αὐτά· τῶν γὰρ ποιούτων ἐστὶν ἡ βα-
 σιλεία τοῦ θῦ + ἀμὲν λέγω ὑμῖν· ὁ δὲ
 αὐτῷ δέξεται τὴν βασιλείαν τοῦ θῦ ὡς παι-
 δῶν· οὐ μὴ ᾗ σελθῇ γὰρ αὐτῷ + εἶπον δὲ οἱ
 ἀκούσαντες· καὶ τίς δύναται σωθῆναι + ὁ
 δὲ εἶπεν· πᾶς ἀδύνατα παρὰ τοῖς ἀνθρώποις·
 δυνατὰ παρὰ τῷ θῷ + ἃ πέντε δὲ πρὸς· ἰ-
 δοὺ ἡμεῖς ἀφῆκαμεν πάντα· καὶ ἡ κολουθη-
 σαι μενέοι + ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· ἀμὲν λέ-
 γω ὑμῖν· ὅτι οὐδεὶς ἐστὶν· ὁ δὲ ἀφῆκεν οἱ κί-
 αρ· ἡ γονὴς· ἡ ἀδελφῶν· ἡ γυναικα· ἡ
 τέκνα· ἐν ἐκείνῳ βασιλείας τοῦ θῦ + ὁ δὲ
 οὐ μὴ ἀπολάβῃ πολλαπλασίονα ἐν τῷ και-
 ρῷ τούτῳ· καὶ ἐν τῷ αἰῶνι τῷ ἐρχομένῳ
 ζωὴν αἰῶνιον· ~

τῇ ἐποῇ τῇ ^α καὶ λουκᾷ.

Καὶ ῥῶ ἐκρήνω· παραλαβὼν ὁ ἰσὶ τοῖς δούδε
καμαθῆναι αὐτοῦ εἶπεν πρὸς αὐτοῖς· ἰδοὺ
ἀναβαίνομεν εἰς ἱεροσόλυμα· καὶ τελεσθῆ
σθαι πάντα τὰ γεγραμμένα ἀδ' αὐτῶν προ
φητῶν· τῷ ἡμῶν τοῦ ἀνθρώπου· παραδθήσε
ται γὰρ τοῖς ἔθνεσιν· καὶ ἐμπαιχθήσεται·
καὶ ὑβρισθήσεται· καὶ ἐμπιπθήσεται· καὶ μ
στίζωσάντες ἀποκτενοῦσιν αὐτόν· καὶ τῇ ἑ
μέραι τῇ τρίτῃ ἀναστήσεται· καὶ αὐτοὶ οὐδεὶς
τούτου βυνήκαν· καὶ ἡ πόρῃ ματοῦτο· κε
κρυμμένον ἀπ' αὐτῶν· καὶ οὐ κεκρύβασκων
τὰ λήγοντα· τῇ παρὰ τῇ ^α καὶ λουκᾷ.

Καὶ περὶ οὗ τῷ παραβολῇ ταύτῃ· ἀνθρώπῳ
ἀρχεῦν ἐπορεύθη εἰς χώραν μακρὰν· λα
βὼν αὐτῷ βασιλείαν· καὶ ὑποστρέψαι· κα
λέσας δὲ δέκα δούλους ἑαυτοῦ· ἔδωκεν αὐ
τοῖς δέκα μνᾶς· καὶ ἔπεν πρὸς αὐτοῖς·
πραγματῶσασθε ἕως ἐρχομαι· οἱ δὲ πο
λίται αὐτοῦ· ἐμίσουν αὐτόν· καὶ ἀπέστῃ
σαν πρὸ βῆαν ὀπίσω αὐτοῦ λέγοντες· οὐ
θέλωμεν τούτον βασιλεύσαι ἐφ' ἡμᾶς· καὶ
ἐγένετο ἐν τῷ ἐπαγελθῆναι αὐτόν· λαβόν
τα τῇ βασιλείαν· καὶ εἶπεν φωνηθῆναι
αὐτῷ τοὺς δούλους τούτους· οἱ δὲ ἔδωκεν τὸ ἀρ
γύριον· ἰμῶν ὡς τις τίδ' ἐπραγματῶσατο·
παρεγένετο δὲ ὁ πρῶτος λέγων· κέ· ἡ μνᾶ
σου· προσήργασατο δέκα μνᾶς· καὶ εἶπεν
αὐτῷ· ὦ ἀγαθέ δούλε· ὅτι ἐν ἐλαχίστῳ πιστός

ἔλθου· ἰαθὶ ἐξουσίαν ἔχων ἐπαυρὲς ἀπόλεων·
 καὶ ἦλθεν ὁ δεύτερος λέγων· κέ· ἡ μράσου ἐποίη-
 σεν πέντε μῶας· καὶ τοῦτο δὲ εἶπεν· καὶ σὺ γί-
 μου ἐπαυρὲς πέντε πόων· καὶ ἔτερος ἦλθε
 λέγων· κέ· ἰδοὺ ἡ μράσου ἡ εἰχὼν ἀπὸ κρη-
 μῶς σου δαρίω· ἐφοβούμην γάρ εἰ ὅτι ἄνθρω-
 αὶ τῆς ῥῆς· αἶρῃς οὐ κέθικας· καὶ θερίξῃς οὐ
 κέ ἀσθῆρας· λέγει αὐτῷ· ἐν τοῦ σώματος σου
 κρημῶς ἐπονηρὲς δούλε· ἦδῃς ὅτι ἡ μράσου αὐ-
 τῆς ῥῆς κί· αἶρων οὐ κέθικας· καὶ θερίξῃς οὐ
 οὐ κέ ἀσθῆρας· καὶ διὰ τὸ οὐ κέδωκας τὸ ἀργύρι-
 οῦ μου ἐπὶ τράπεζαν· καὶ ἐγὼ ἐλθὼν (ὡς τὸ
 κωὰν) ἐπραξα αὐτό· καὶ τοῖς παρεστῶσιν
 εἶπεν· ἀράτε ἀπὸ τοῦ τῆς μῶας· καὶ δό-
 τε τῷ τῶς δέκα μῶας ἔχοντι· καὶ ῥῆς ποῦ αὐ-
 τῷ· κέ· ἔχῃ δέκα μῶας· λέγει γὰρ ἱμῖν·
 ὅτι παντὶ τῶς ἔχοντι· δοθήσεται· ἀπὸ δὲ τοῦ
 μὴ ἔχοντος· καὶ ὁ ἔχων ἀρθήσεται ἀπὸ αὐτοῦ·
 πλὴν τοῖς ἐχθροῖς μου ἐχθροῖς ἐκείνοις·
 τοῖς μὴ θελήσαντας με βασιλεύσαι ἐπὶ αὐ-
 τοῖς· ἀγαθὰ ὦδε, καὶ κατὰ σφάξτε ἐν
 προαφείμῳ· καὶ ῥῆς πᾶν ταῦτα· ἐπορεύε-
 το ἐμπροσθεν ἀναβαίμων εἰς ἱεροσόλυμα·

σαμβατον τὸ κατὰ λουκαῖν·

εἶπεν ὁ κέ· τοῖς ἐαυτοῦ μαθηταῖς· ἰδοὺ δίδω-
 μὶ ἱμῖν τῆς ἐξουσίας τοῦ πατεῖν ἐπαυρὸς
 φεων καὶ σκορπίων· καὶ ἐπὶ πᾶσαν τῆς
 θυνάμειν τοῦ ἐχθροῦ· καὶ οὐδὲν ἡμῶς οὐ
 μὴ ἀδίκησθ· πλὴν ἐν τούτῳ μὴ χαίρετε,

καὶ ταῦτα λόγοντος αὐτοῦ· κατήλθοντο πάν-
τες οἱ ἀντὶκείμενοι αὐτῷ· καὶ πᾶς ὁ ὄχλος
ἔχαιρεν, ἐπὶ πᾶσι τοῖς ἐνδόξοις τοῖς μέ-
γλημένοις ὑπ' αὐτοῦ· ~ τῇ β' τῆς τὰ ²⁵εὐ

Τῷ καιρῷ ἐκείνῳ· ἐγίγοντος ²⁵καταλόου.
τοῦ ἰὺ πρὸς τὴν καταβάσιν τοῦ ὄρου τῶν ἐλαιῶν.
ἦρξατο ἀπαρτὸ πλῆθος τῶν μαθητῶν· χαίρον-
τες· αἰμῶν τὸν θῆν φωνή μεγάλη· περί πασῶν
ῶν ἰδόντων αὐτὸν λέγοντες· ἀλογημένος
ὁ ἐξ ἡμέρας ^{κασιγὰς} ἐνομόματις· ἡγήνη ἐν οὐρανῷ·
καὶ δόξα ἐν ἡμέραις· καὶ τίμες τῶν φαρισαί-
ων ὑπὸ τοῦ ὄχλου ἥ που πρὸς αὐτὸν· διδάσκον-
τες· ἐπὶ τίμῃ σου τοῖς μαθηταῖς σου· καὶ ἀ-
ποκριθῶς ἔπεν αὐτοῖς· λέγων· ὅτι ἐ-
αυτοὶ σιωπήσωσιν· οἱ λίθοι κεκραύζον-
ται· καὶ ὡς ἡγήσεν ἰδὼν τὴν πόλιν· ἐκλα-
σεν ἐπάνω λέγων· ὅτι ἔγνωσ καὶ σὺ·
καὶ με ἐν τῇ ἡμέρᾳ σου ταύτῃ· τὰ πρὸς ἡρώην
σου· νῦν δὲ ἐκρύβη ἀπὸ τῶν ὀφθαλμῶν
σου· ὅτι ἤξοισιν ἡμέραι ἐπὶ αὐτῇ· καὶ περὶ
βαλοῖνοι ἄδριοι σου χάραι· καὶ περικύ-
κλωσόντες· καὶ ῥωέξοισιν αὐτὸν παύτοθεν·
καὶ ἐδαφιοῖσιν σε· καὶ τὰ τέκνα σου ἐν σοὶ·
καὶ οὐ καθήσοισιν ἐν σοὶ λίθον ἐπὶ λίθῳ·
ἀνθρώπων οὐκ ἔγνωσ τὸν καιρὸν τῆς ἐπίσκο-
πίας σου· ~ τῇ γ' τῆς τὰ ²⁵εὐ καταλόου.

Τῷ καιρῷ ἐκείνῳ· εἰσελθὼν ὁ ἰσὺς τὸ ἱε-
ρὸν ἦρξατο ἐμβαλεῖν τοῖς πολοῦντας ἐν αὐτῇ
καὶ ἀθροάζοντας· λέγων ἐν αὐτοῖς· μέγα

πται· ὁ δὲ κόσμος, κόσμος πρὸς ἀχλὺς ἐστίν· ἡμεῖς
δὲ αὐτὸν ἐποιήσαμεν ὡς λαὸν ἡλιθίων· καὶ ἡμεῖς
διδάσκοντες τὸ καθ' ἡμέραν ἐν τῷ ἱερῷ· οἱ δὲ
ἀρχιερεῖς καὶ οἱ γραμματεῖς, ἐζήτουν αὐτὸν
ἀπολῦσαι· καὶ οἱ πρῶτοι τοῦ λαοῦ, καὶ οὐ
χάριστον, τὸ τί ποιήσωσιν· ὅλας γὰρ αἱ
πᾶς ἐξεκρέματο αὐτοῦ ἀκούων· ~ τῇ δὲ τῆς ἱε-

Ρα καὶ ἡμεῖς ἐκείνῳ· διδάσκοντες ^{αὐτὸν} ^{κατὰ} ^{τὸν} ^{λαόν}·
τῷ ὅτι τοῦ λαοῦ ἐν τῷ ἱερῷ καὶ ἀναγέλιζόμε-
νον· ἐπέστησαν οἱ ἱερεῖς καὶ οἱ γραμματεῖς
αὐτοῖς πρεσβυτέροις, καὶ ἔποντο πρὸς αὐτὸν·
λέγοντες· ἡ πᾶσι μὲν ἐν ποίᾳ ἐξουσίᾳ ταύ-
την ποιῇς· καὶ τίς ἐστὶν ὁ δίδωσός τινι ἐξουσίαν ταύ-
την· ἀπεκρίθη δὲ ἔπεν πρὸς αὐτοὺς·
ἐρωτήσω ὑμᾶς ἐναλόγον, καὶ ἡπατέ μοι·
τὸ βάπτισμα ἰωάννου, ἐξ οὐοῦ ἢ ἐκ
ἐξ ἁνῶν· οἱ δὲ συνελομήσαντο πρὸς
αὐτοὺς λέγοντες· ὅτι ἐὰν ἔπωμεν ἐ-
ξ οὐοῦ· ἐρεῖ· ὅτι οὐκ ἐπιστάσατε αὐτῷ·
ἐὰν δὲ ἐκ ἁνῶν, πᾶς ὁ λαὸς κα-
τὰ λίθασιν ἡμᾶς· πεπῆκε γὰρ ἐκείν-
ος ἰωάννου προφήτην εἶναι· καὶ ἀπεκρίθη-
σαν μὴ εἶναι πόθεν· καὶ ὁ ἴσ' ἔπεν αὐτοῖς·
οὐδὲ ἡμεῖς λέγω ὑμῖν ἐν ποίᾳ ἐξουσίᾳ ταύ-
την ποιῶ· ~ τῇ δὲ τῆς ἱε- ^{κατὰ} ^{τὸν} ^{λαόν}

Τῇ πενθῇ τῇ παρ' αβελὼ ταύτην· ἀφ' ὅ-
τις ἐφύτρετο ἀμπελῶνα· καὶ ἐξέδο-
το αὐτὸν γεωργοῖς· καὶ ἀπεδήμησεν εἰς
ἡρόδοτον ἱεροῖς· καὶ ἐν καιρῷ ἀπέστειλε

πρὸς τοὺς γεωργοὺς δούλους· ἵνα ἀπὸ τοῦ καρ-
 ποῦ τοῦ ἀμπελώρου δώσιν αὐτῷ· οἱ δὲ γεω-
 ροὶ, δῆρα ἄρτες αὐτὸν· ἐξ ἀπέστηλαν κενὸν +
 καὶ πρὸς ἐθέτο πέμψαι ἕτερον δούλον· οἱ δὲ
 καὶ ἄλλον δῆρα ἄρτες καὶ ἀπὸ μαῖσαρ τῶς, ἐξ ἀ-
 πέστηλαν κενὸν + καὶ πρὸς ἐθέτο πέμψαι
 καὶ τρίτον· οἱ δὲ καὶ τοῖον τραυματίσαν
 τῶς ἐξέβαλον + εἶπεν δὲ ὁ υἱὸς τοῦ ἀμπε-
 λώρου· τί ποιήσω· πέμψω τὸν υἱόν μου
 τὸν ῥάβδην· ἵσωσ τούτον ἰδόντες εὐζα-
 πήσουται + ἰδόντες δὲ αὐτὸν οἱ γεωργοί·
 δι' ἐλόγισον το πρὸς ἑαυτοῖς λέγοντες· οὗ-
 τὸς ἔστιν ὁ κληρονόμος· δάτε ἀποκτείνωμεν
 αὐτὸν· ἵνα ἡ μαὶν γένηται ἡ κληρονομία +
 καὶ σέβαλον τῶ αὐτὸν ἐξ αὐτοῦ ἀμπελώ-
 ρου, ἀπέκτεναν + τί οὖν ποιήσῃ αὐτοῖς
 ὁ κύριος τοῦ ἀμπελώρου + ἐλάσθαι καὶ
 ἀπολέσῃ τοὺς γεωργοὺς τοῦτο· καὶ δώσι
 τὸν ἀμπελῶνα ἄλλοις + ἀκούσαντες δὲ
 εἶπον· μὴ γένοιτο + ὁ δὲ ἐμβλέψας αὐ-
 τοῖς εἶπεν· τί οὖν ἐστὶ τὸ γεγραμμένον
 , τούτο + λίθον οὐκ ἀπεδοκίμασαν οἱ οἰκοδο-
 , μοῦντες, οὗτος ἐγενήθη εἰς κεφαλὴν γωνί-
 , ας + πᾶς ὁ πτόων ἐπὶ κήρυτον τὸν λίθον,
 αὐθλασθήσεται· ἐφ' οὗ δὲ πτόλην κινήσῃ
 αὐτόν· ~ τῇ παρὰ τῆς γῆς καὶ τοῦ

ὦ καιρῷ ἐκέρω· ἐβήτου οἱ ἀρχιερεῖς
 καὶ οἱ γραμματεῖς ἐπὶ βαλεῖν ἐπ' αὐτόν τὰς
 ῥάβδους ἐν αὐτῇ τῇ ᾧ, καὶ ἐφοβήθησαν +

ἔγνωσαν γάρ ὅτι πρὸς αὐτοῖς τὴν παραβο
 λὴν ταύτην ἔπεν· καὶ παρατηρήσαντες
 ἀπέστησαν ἡμαθί τοις ὑποκρινομένοις ἐ
 αὐτοῖς ὅτι καὶ οἱ ἡμαθὶ ἐπὶ λαβόνται αὐ
 τοῦ λόγου· ὅτι τὸ παραδοῦναι αὐτὸν τῇ ἀρχῇ
 καὶ τῇ ἐξουσίᾳ τοῦ ἡγεμῆτος· καὶ ἐ
 πηρώτησαν αὐτὸν λέγοντες· διδάσκαλε·
 οἴδαμεν ὅτι ὀρθῶς λέγεις καὶ διδάσκεις· καὶ
 οὐ λαμβάνεις πρόσωπον· ἀλλ' ἐπάλ' ἔθας τὴν
 ὁδὸν τοῦ θ' διδάσκεις· ἐξέστην ἡμῶν καὶ σα
 ρίφόρον δοῦναι· ἢ οὐ· κατὰ νόμον δὲ αὐτῶν
 τὴν παρουσίαν· ἔπεν πρὸς αὐτοῖς· τί με
 πηράζετε· ἐπιδέξατέ μοι δὴ ἄριον· τί μου ἐ
 χθρὸν καὶ ἐπιγραφὴν· ἀποκριθεὶς τ
 οῦ δὲ εἶπεν· καὶ σαρὸς· ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς·
 ἀπόδοτε τοῖς κυρίαις καὶ σαρὸς καὶ σαρὶ· καὶ
 τὰ τοῦ θ' παῖδι· καὶ οὐκ ἔσχισαν ἐπὶ λα
 βῆσαι αὐτοῦ τὸ ῥήμα· ἐν ἀντίστοιχον τοῦ λαοῦ·
 καὶ θαυμάσαντες ἐπὶ τῇ ἀποκρίσει αὐ
 τοῦ ἐσίγησαν· ~ σάββατον τῶν καὶ
 ἔπεν ὁ κς· μὴ φοβούτο μικρὸν χελοῦ
 ποιμνιον· ὅτι ἄδύνησεν ὁ πῆρ ὑμῶν δοῦ
 ναι ἡμῶν τὴν βασιλείαν· πολλήσατε τὰ
 ὑπαρχόντα ὑμῶν καὶ δότε ἐλεῆμο (ὡς)·
 ποιήσατε ἐαυτοῖς βαλάντια· μὴ παλαι
 ούμενα· θησαυρὸν ἀνέκκλητον, ἐν τοῖς
 οὐνοῖς· ὅπου κλέπτῃς οὐ κέκλιξαι· οὐ
 δὲ οὐκ ἀφθάρει· ὅπου γὰρ ἐστὶν ὁ θησαυ
 ρὸς ὑμῶν· ἐκὼ καὶ ἡ καρδία ὑμῶν ἐστει·

λῆσται
 πρὸ πρῶν

ἔσωσαν ὑμῶν αἰδοσφύες περιέζωσμέναι· καὶ
 οἱ λῆντοι καὶ οἱ μενοὶ + καὶ ὑμῶν ὁμοιοῦσιν ὁ
 δεχομένους τὸν κύριον αὐτῶν· πότε ἀναχίσει
 τῶν γάμων· ἵνα ἐλθόντος καὶ κροίσαντος αὐ
 θεῶς ἀνοίξωσιν αὐτῶν + μακάριοι οἱ δούλοι ἐ
 κέμοι· οἷον ἐλθὼν ὁ κύριος ἡρῶσι τῶν ἡγορούντων +
 αἰνῶ λέγουσιν· ὅτι περιζώσθαι καὶ ἀναχι
 μεῖν αὐτοῖς· καὶ παρελθὼν διακονῆσαι αὐτοῖς +
 καὶ εἰς ἐλθὼν ἐν τῇ δευτέρᾳ φυλακῇ· καὶ ἐν
 τῇ τρίτῃ φυλακῇ ἐλθὼν καὶ εὐρησώμεθα· καὶ
 μακάριοι ὅσοι οἱ δούλοι ἐκέμοι + τοῦτο δὲ γινώσ
 κετε· ὅτι ἡ ἰδέα ὁ οἰκοδομησώμενος· ποῖ αὐτῶν ὁ
 κλέπτης ἐρχεται· ἐρηγόρησεν αὐτὸν· καὶ οὐκ
 φηκεν διόρυγῇ τὴν οἰκίαν αὐτοῦ + καὶ ὑ
 μέισι οὖν γινέσθαι ἐτοιμοὶ ὅτι ἡ ὥρα οὐδὲ
 γινώσκται οἱ ἰσοῦ τοῦ αἵματος ἐρχεται· καὶ ἡ
 πένθος τὴν παραβολὴν καὶ τοῦ λουκαῖ
 οῦ παύσω· ἀποδοτέ τις ἐποίησεν δὲ πρὸν μέγα·
 καὶ ἐκάλεισεν πολλοὺς· καὶ ἀπέστειλε τὸν
 δούλον αὐτοῦ τῇ ὥρᾳ τοῦ δὲ πρὸν· ἡ πείν
 τοῖς κεκλημένοις· ἐρχέσθαι ὅτι ἡ ὥρα ἐτοιμ
 ἐστὶ πάντα + καὶ ἡρξάντο ἀπὸ μιᾶς πα
 ραιτίδα παύσαι + ὁ πρῶτος εἶπεν αὐ
 τῷ· ἀπὸν ἡ γόρᾳσα· καὶ ἔχω ἀνάστημι ἐ
 ξελεθῆναι καὶ ἰδεῖν αὐτόν· ἐρωτῶν· ἔχετε
 παρητιμένον + καὶ ἕτερος εἶπεν· ἰδοὺ
 ἡ βοὴν ἡ γόρᾳσα πέντε καὶ πορτομαὶ δὲ
 μάσαι αὐτὰ· ἐρωτῶν· ἔχετε παρητιμέ
 νον + καὶ ἕτερος εἶπεν· γινώσκαι ἔχοντα

100
 τὸ πρῶτον

καὶ διὰ τοῦ το οὐδὲν αἰσῶμαι εἰσθῆναι· καὶ παρ-
γερόμενος ὁ δούλος ἐκῆμος· ἀπὴν γὰρ ἐπὶ τῶν
αὐτοῦ ταῦτα· τότε ὁ ῥήϊαθρὸς ὁ οἰκοδότης
τίς· εἶπεν τῷ δούλῳ αὐτοῦ· ἐξελθε ταχέ-
ως εἰς τὰς πλατῆας καὶ ῥύμας τῆς πόλεως·
καὶ τοῖς πτωχοῖς καὶ ἀραπῆροις· καὶ χολοῖς
καὶ τυφλοῖς· ὅσοι βασιλεῦσσι καὶ ὁ πένος δού-
λος· καὶ μένοντες ἐπέταξας· καὶ ἐπὶ το-
ποῖς ἐστὶν· καὶ ὁ πένος εἰς πρὸς τὸν δούλον· ἐ-
ξελθε εἰς τὰς ὁδοὺς καὶ φαρμὰς, καὶ ἀνὰ μα-
σοὺς εἰσελθόν· ἵνα μετὰ θῆ ὁ οἶκος μου· λέ-
γων γὰρ ὁ μὲν· ὁ πένος θρὸς τῶν ἀνδρῶν ἐκῆμων
τῶν κεκλημένων, γὰρ βαί μου τοῦ δὲ πρὸς
πτοχοὶ γὰρ ὅσοι κεκλητοὶ ὀλίγοι δὲ σὺ λεῖπτοι· ~

της β της 1β $\frac{2\alpha}{\epsilon\alpha}$ κατά λον.

καὶ ἔρχονται πρὸς ἐλθόντες τῷ Ἰησοῦ
 τῶν σαδδουκαίων· οἱ ἀρτιλέγοντες καὶ ἡμαῖ
 νάσασιν· ἐπιρώτησαν αὐτὸν λέγοντες· δι
 δασκαλε· μὴ ἰσθῇς ἐγγραφὴν ἡμῖν· ἐὰν τι
 ἄνθρωπος ἀποθάνῃ· ἡμεῖς γινώσκουμεν· καὶ οὗ
 τοις ἀπὸ νεκρῶν ἀποθάνει· ἡμεῖς δὲ οὐκ ἴσμεν
 αὐτὸν· τίς γινώσκει· καὶ ἐξαπατήσῃς ἡμᾶς
 τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ· ἐπὶ αὐτῷ οὖν ἀδελφοὶ ἱ
 σάβηθ· καὶ ὁ πρῶτος λαβὼν γινώσκουμεν· ἀπέ
 θανεν ὁ ἀπὸ νεκρῶν· καὶ ἐλάβεν ὁ ἀδελφὸς τῷ
 γινώσκουμεν· καὶ οὗτος ἀπέθανεν ὁ ἀπὸ νεκρῶν·
 καὶ ὁ τρίτος ἐλάβεν αὐτὸν ὡς αὐτὸς· ὡς
 αὐτὸς δὲ καὶ οἱ ἐπὶ αὐτῷ οὐ κατέλιπον τέκνα·
 καὶ ἀπέθανον· ἵνα γινώσκουμεν πάντων ἀπέθανον·

μεν καὶ ἡ ψυχή· ἐν τῇ οὖν ἀφασάσει τίμος αὐτῶν
 γίνεσθαι ψυχή· οἱ γὰρ ἐπὶ αὐτὸν αὐτὴν γινώσκουσι
 καὶ ἀποκριθεὶς αὐτοῖς οἷον· οἱ υἱοὶ τοῦ
 αἰῶνος τοῦτου, χαμοῖσι καὶ ἀχαμίσκουται·
 οἱ δὲ κατὰ ξίωθον τῶν αἰῶνος ἐκείνου τυ-
 χῶν· καὶ τῆς ἀφασάσεως τῆς ἐκείνων· οὐ
 τε χαμοῖσιν, οὔτε ἀχαμίσκουται· οὔτε γὰρ ἀ-
 ποθαρεῖν ἐπὶ τὴν αὐτῶν, ἰσαγγελοὶ γὰρ ἔσονται·
 καὶ υἱοὶ ἑσὶ τοῦ θύτης ἀφασάσεως οὐτε υἱοὶ·
 ὅτι δὲ ἐχθροὶ οἱ ἐκείνοι· καὶ μαῖον ἐ-
 κείνους ἐπὶ τῆς βαπτύσεως· ὡς λέγει· ἡμεῖς τὸν θῆ-
 ἀβραάμ· καὶ τὸν θῆ· ἰσαάκ· καὶ τὸν θῆ· ἰα-
 κώβ· θῆ δὲ οὐκ ἐστὶν ἐκείνων, ἀλλὰ ζώντων·
 παρ' ἑσὶ γὰρ αὐτῶν ζῶσι· ἀποκριθεὶς δὲ
 τίμες τῶν γραμματέων ἡμῶν· διδάσκαλε·
 καλῶς ἔπασ· οὐκ ἐπὶ τὴν ἐπὶ τῶν ἐπερωτῶν
 αὐτὸν οὐδὲν· εἶπεν δὲ πρὸς αὐτοὺς· πῶς
 λέγουσιν τὸν χῆν, υἱὸν δαδὲ εἶναι· καὶ αὐτὸς
 δαδὲ λέγει ἐν βίβλῳ ψαλμῶν· εἶπεν δὲ
 ὡς τῷ κῶμου κῆθου ἐκδέξιόν μου· ἕως
 ἀνθρώποις ἐχθροῖς σου ὑποπόδιον τῶν πο-
 δῶν σου· δαδὲ οὖν ἡμεῖς αὐτὸν καλῶν, καὶ πῶς
 υἱὸς αὐτοῦ ἐστίν· ~ τῇ Γ τῆς Γβ εἰ κατὰ τὴν ἡμετέραν
 εἶπεν ὡς τοῖς ἐκείνου μαθηταῖς· ἡμεῖς οὖν
 προσέχμεν ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων· ἐπιβαλοῖσιν ἐφ' ἡ-
 μᾶς τὰς χεῖρας αὐτῶν καὶ διώξουσιν· παρὰ
 διδόντες δὲ τῆς ζωαγωγίας καὶ φυλακῆς· ἀπο-
 μένοισι ἐπὶ βασιλείᾳ καὶ ἡγεμονίᾳ· ἐνε-
 κεν τοῦ ὀνόματός μου· ἀποβήσεται δὲ ἡμεῖς

Εἰς μαρτύριον· θεοφωτισθὲ τὰς καρδίας ὑ-
μῶν· μὴ προμελετᾶν ἀπολογηθῆναι· ἔγω-
γὰρ δόσω ὑμῖν σοφίαν καὶ σοφίαν· ἡ οὐδυνή-
σονται ἀντὶ τῆς πῆλ οὐδὲ ἀντιστῆναι· πάντες
οἱ ἀντὶ κήμενοι ὑμῶν· παραδοθήσεσθε δὲ
καὶ ὑπογονέων καὶ συγγενῶν καὶ φίλων· καὶ
ἀδελφῶν· καὶ θαυμάσιοισιν ἐξ ὑμῶν· καὶ
ἐσέσθε μισούμενοι ὑποπάντων· καὶ θρήνη-
τής κεφαλῆς ὑμῶν οὐ μὴ ἀπόληται· ἐν τῇ ὑ-
πομονῇ ὑμῶν κτήσασθε τὰς ψυχὰς ὑμῶν·

τῇ δ' οὗτος ἰβ' εἰς κατὰ λουκᾶν:

Καὶ ῥῶς ἐκάρω· λέγοντων τινῶν τῷ ἰσὺ περὶ
τοῦ ἱεροῦ· ὅτι λίθοις καλοῖς καὶ ἀγαθήμα-
σι κεκοσμηται· ἔπεν· ταῦτα ἄθεωρότε·
ἐλθούσιν αἱ μέραι· ἐν αἷς οὐκ ἀφελήσεται
λίθος ἐπὶ λίθον· ὃς οὐ καταλύθησεται· ἐ-
πιράτυσαν δὲ αὐτὸν λέγοντες· διδάς καλε-
πότε οὕτως ταῦτα εἶναι· καὶ τί τὸ σημεῖον ὅ-
τι ἀνέληται ταῦτα γίνεσθαι· ὃ δὲ εἶπεν·
βλέπετε μὴ πλανηθῆτε· ἐκερθήσεται
ἔθνος ἐπὶ ἔθνος· καὶ βασιλείαι ἐπὶ βασι-
λείαι· σεις μοί τε μεγάλοι κατὰ τόποις·
καὶ λιμοὶ καὶ λοιμοὶ ἔσονται· φόβησάτε
καὶ σιμῆα μεγάλα· ἀπὸ κυρίου εἶναι· ὅ-
τι ἀνέστητε κύκλου μένιν ὑποστρατοπέδων
πρὸς ἰλημ· τότε γράψτε· ὅτι ἡ γῆ κεν ἢ ἐρῆ-
μωσὶς αὐτῆς· τότε οἱ ἐν τῇ ἰουδαίᾳ
φανερώσονται εἰς τὰ ὄρη· καὶ οἱ ἐν μέσῳ
αὐτῆς, ἐκχωρήσονται· καὶ οἱ ἐν ταῖς χώ-

1
ραις· μή εἰσερχέσθωσαν γὰρ αὐτῶν· ὅτι ἡμέ-
ραι εὐδὶ κήσας αὐταὶ ἔσιν· τοῦ πληθύναι
πάντα τὰ γεγραμμένα· οὐαὶ δὲ ταῖς ὀ-
γαστρὶ ἐχούσαις· καὶ ταῖς θηλαζούσαις· ἐν ἡ-
μέραις ταῖς ἡμέραις· ἔσται γὰρ ἀνάγκη
μεγάλῃ ἐπιπλεῖν· καὶ ὀργῇ ἐκπύλασθαι
τοῦτο· καὶ πρὸσώπται σόματι μαχαίρας·
καὶ αἰχμαλωτίζήσονται εἰς πάντα τὰ
ἔθνη· καὶ ἰλὴμ, ἔσται πατούμενη ὑπὸ ἐ-
θνῶν ἄχρι πληρωθῶσιν καιροὶ ἐθνῶν· ~

π. ε. τ. σ. ιβ. ε. κατὰ του καιρ.

Καὶ πενὸς τοῖς ἑαυτοῦ μαθηταῖς· ἀνακύ-
ψατε καὶ ἐπάσθε τὰς κεφαλὰς ὑμῶν, διό-
τι ἐγγίξει ἡ ἀπολύτρωσις ὑμῶν· καὶ ἔπειτα
παραβολῶν αὐτοῖς· ἴδετε τὴν οὐκύν· καὶ
πάντα τὰ δένδρα· ὅταν προβάλωσιν ἡ
δύνη· βλέποντες ἀφ' αὐτῶν γινώσκετε· ὅ-
τι ἡ δὴ ἡμέρα τὸ θέρος ἐστίν· οὕτω καὶ ἡμεῖς· ὅ-
ταν ἴδωτε ταῦτα γινόμενα· γινώσκετε
ὅτι ἐγγὺς ἐστὶν ἡ βασιλεία τοῦ θ· ἀμὲν λέ-
γω ὑμῖν ὅτι οὐκ ἔτι παρήλθῃ ἡ ἡμέρα αὕτη, ἔ-
ως ἀν' πάντα γένηται· ~ τῇ παρὰ τῆς ιβ. ε.

Καὶ καιρῶ ἐκείνῳ· ἡ δὲ δόξα κατὰ τοῦ
οἶον ἐν μιᾷ ἡμέρᾳ τῶν ἡμέρας· τὰς δὲ μυριάδας
ἐξέρχόμενος ἡνελίξας εἰς τὸ ὄρος τὸ καλού-
μενον ἑλαιῶν· καὶ πᾶς ὄλαος ὄρθριζε
πρὸς αὐτὸν ἐν τῷ ἑρῶ· ἀκούειν αὐτοῦ· ἡ
γῆ δὲ ἡ ἑορτὴ τῶν ἀγγέλων· ἡ λεγομένη
πάσχα· καὶ ἐξήτοιμασαν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ ἱερεῖς

μματείς το πῶς ἀνέλασιν αὐτὸν· ἐφοβοῦντο
γὰρ τὸν λαόν· εἰσῆλθεν δὲ σαταμαῆς υἱοῦ
δαυ τὸν ἐπίκαλόν μεν οὐκ ἀγαπῶν, οὐ
τα εἰπὸν ἀριθμοῦ πᾶν δώδεκα· καὶ ἀ-
πελθὼν συνελάλησε τοῖς ἀρχιερεῶσι καὶ τοῖς
γραμματεῖς, τὸ πῶς αὐτὸν παραδῶ αὐτοῖς,
καὶ ἐχάρησαν· καὶ συνέθεντο αὐτῷ ἀργύ-
ριον δοῦναι· καὶ συνεξομολόγησεν· καὶ ἐ-
ζήτησεν καιρίαν τοῦ παραδοῦναι αὐτὸν
αὐτοῖς, ὥστε ὅχλου· ἦλθεν δὲ ἡ ἡμέρα
τῶν ἀζύμων, ἐν ᾗ ἐδόθη βάψαι τὸ πάσχα·
καὶ ἀπέσχηκεν πέτρος καὶ ἰωάννης ὁ ἀρνὴν ἑσπών·
πορεύσιντες ἐτοίμασαντες ἡμῖν τὸ πάσ-
χα, ἵνα φαῖνται· ~ σαμβατον ἱβ·

Καὶ περὶ αὐτῶν παραβολῶν κατὰ λόγον·
ταῦτ' αὖ· ὁμοίαν ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν κο-
κκῷ (ὡς ἀπεῖπεν· οὐ λαβὼν ἄριστον ἐβάλεν εἰς
κίον αὐτοῦ καὶ ἠύξησεν, καὶ ἐξῆλθεν εἰς
ὄρεον μέγα· καὶ παύει τὴν αὐτοῦ οὐνοῦ
κατεσκεύωσεν ἐν τοῖς κλάδοις αὐτοῦ·
παλὶν ἔπεν· ὁμοίαν ἐστὶν ζύμην λαβοῖσα γῆ
μὴ· ἐνέκρυπτεν εἰς ἀλεύρου σάτα τρία· ἐ-
ως οὗ ἐζύμωθη ὅλον· καὶ δὲ πορεύσας
κατὰ πόλιν καὶ κώμας, δῆδαςκων καὶ πο-
ρεύσας ποιούμενος εἰς ἡλὴν· εἶπεν δὲ τίς
αὐτῷ· κέ· ἡλίγοι οἱ σωζόμενοι· ὁ δὲ εἶ-
πεν πρὸς αὐτοῖς· ἀγνοεῖτε ὅτι ἐλθὲν δὲ
αὐτοῦ σκευὴ πύλης· ὅτι πολλοὶ λέγω ἡμῖν
ζητήσοισιν ἐλθόν, καὶ οὐ κίχουσιν·

πῶς μοι ὡσπερ
βασιλείαν τῶν οὐρανῶν

ἀφ' οὗ αὖ ἐκέρθη ὁ οἶκος τῆς πόλεως· καὶ ἀπὸ κλέ-
σιν τῶν θυρῶν· καὶ ἄρξασθε ἔξω ἐσθῆται· καὶ
κρούετε τὰς θυρὰς λέγοντες· κἄν· κἄν· ἀνοιξο-
ν ἡμῖν· οὐκοῦν δαίμας πόθεν ἐστὶν· τότε ἄρ-
ξασθε λέγοντες· ἐφάγομεν ἐν ὁπίῳ σου καὶ ἐ-
πίομεν· καὶ ἐν ταῖς πλατείαις ἡμῶν ἐδί-
δαξας· καὶ ἐν τῇ λέγει ἡμῖν· οὐκοῦν δαί-
μας πόθεν ἐστὶν· ἀποστῆτε ἀπὸ μου πάν-
τες οἱ ἐργαζόμενοι τῶν ἀνομιῶν· ἐκεῖ
ἐστὶν ὁ κλαυθμὸς καὶ ὁ βρυγμὸς τῶν ὀδόντων·
ὅταν ὁ Ἰσραὴλ αἰσθῆται καὶ ἰσάσῃ καὶ ἰαυῶν
καὶ πάντας τοὺς προφῆτας ἐν τῇ βασιλεί-
ᾳ τοῦ θ'· ὑμεῖς δὲ ἐν βαλλομένοις ἔξω·
καὶ ἡξοισὶν ἀπὸ ἀνατολῶν καὶ δυσμενῶν καὶ
βορρᾶ καὶ νότου· καὶ ἀνακληθήσονται ἐν
τῇ βασιλείᾳ τοῦ θ'· ~

καριακή 1β καὶ λουκαῖν·

Καὶ ῥωμῶν καὶ ἡρώδης ἀρχιερέως τοῦ ἱεροῦ
καὶ ἡμῶν· ἀπηνέστησαν αὐτῷ δὲ καὶ ἐπὶ αὐ-
τῷ· οἱ ἐστῆσαν πόρρωθεν· καὶ αὐτοὶ ἤσαν
φωρῶν λέγοντες· ἰὺ ἐπιστάτα· ἐλέησον
ἡμᾶς· καὶ ἰδὼν ἔπεν αὐτοῖς· πορ-
θεύετε ἐπὶ δάξατε ἐαυτοῖς τοὺς ἱερᾶς·
καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ὑπάδειν αὐτοῖς· ἐκαθε-
ρίσθησαν· εἰς δὲ ἐξ αὐτῶν ἰδὼν ὅτι ἰα-
θῆν· ὑπέστρεψεν μετὰ φωνῆς μεγάλης δοξα-
ζὼν τὸν θ'· καὶ ἐπῶεν ἐπὶ πρόσωπον
παρὰ τοῖς πόδας αὐτοῦ ἀγαριστῶν αὐτῷ·
καὶ αὐτὸς ἰωσαφάτης· ἀποκριθεὶς

ἡχ' δ' εὐ' ε'

ἡχ' δ' εὐ' ε'

δὲ οὗτος εἶπεν· οὐχοὶ δὲ καὶ καθαρίσθησαν·
 οἱ δὲ ἐν νύκτι· πού· οὐχ ἁρτίσθησαν ὑποστρέ-
 φαντες· δδῶναι δόξαν τῷ θῷ· ἡμῶς ὁ ἀλλογε-
 ρὴς οὗτος· καὶ εἶπεν αὐτῷ· ἀφασῶ πο-
 ράου· ἡ πίστις σου σέσωκεν σε· τῇ β' τῆς 15
 ὡ καὶ ῥῶ ἐκείνῳ· ἔλθον ^{Δμδ'} κατὰ μαρ-
 τῆς **Φ**αρισαῖοι πρὸς τὸν Ἰησοῦν· καὶ ἤρξαντο συζητῆν
 αὐτῷ· ζητοῦντες παράπτου σημεῖον ἀπο τοῦ
 οὐνοῦ· πειράζοντες αὐτόν· καὶ ἀφασεμά-
 ξας τῷ πρῶτῷ αὐτοῦ λέγει· τίς ἡ γενεὰ αὐτῆς·
 σημεῖον ἐπιζητῶ· ἀμὲν λέγω ὑμῖν· εἰ
 δοθῇ σῶται τῇ γενεᾷ ταύτῃ σημεῖον· καὶ ἀ-
 φῆς αὐτοῖς· ἐμβὰς πάλιν εἰς πλοῖον ἀπῆλ-
 θεν· ἡ δὲ πλοῖον· καὶ ἐπελάθοντο λαβῆναι
 ἄρτους· καὶ ἡμῶς ἐμαρτυροῦν· οὐκ ἔχοντες
 θέαντων ἐν τῷ πλοίῳ· καὶ δι' ἐξέλεος αὐ-
 τοῖς λέγων· ὁράτε βλέπτε· ἀπὸ τῆς ζύ-
 μης τῶν φαρισαίων· καὶ τῆς ζύμης ἡ
 ῥῶδου· καὶ δι' ἐλογίζοντο πρὸς ἀλλήλους
 λέγοντες· ὅτι ἄρτοις οὐκ ἔχομεν· καὶ
 ἡμῶς οὗτος λέγει αὐτοῖς· τί δι' αἰολογίθετε· ὅ-
 τι ἄρτοις οὐκ ἔχετε· οὐπω μοι εἶπε οὐδέ τι
 ἔτε· εἴ τι πεπορωμένῳ ἔχει τὴν καρδίαν
 ἀνθρώπων· ὁφθαλμοῖς ἔχοντες, οὐ βλέ-
 πτε· καὶ ὦτα ἔχοντες, οὐκ ακούετε·
 καὶ οὐκ ἠμενημονάτε· ὅτι τοῖς πέντε ἄρ-
 τοῖς ἐκλασα εἰς τοῖς πεντακισχιλίοις,
 πόσοις κοφίμοις πλήρως κλασματῶν ἤρα-
 τε· λέγουσιν αὐτῷ· δύο δὲ καὶ ὅτε δὲ τοῖς

Εἴπαι εἰς τοὺς τετρακισχίλιους πόσων
σπυρίδων πληρώματα κλασμάτων ἤρα
τε· οἱ δὲ ᾄδον· Εἴπαι· καὶ εἴλεχεν
αὐτοῖς πῶς οὐ συνίτε· τίς γὰρ τῆς ἰσχυρίας
αὐτοῦ· καὶ εἴλεχεν· Εἴλεχεν κατὰ μαρ
οῖς εἰς βῆθσαϊδαν· καὶ φέροισιν αὐτῷ τὴν
φλὸν· καὶ παρακαλοῖσιν αὐτὸν· ἵνα αὐτοῦ
αἴψῃται· καὶ ἐπιλαβόμενος τῆς χήρας
τοῦ τῷ φλὸν· ἐξήγαγεν αὐτὸν ἐξω τῆς κώ
μης· καὶ πῖσας τὰ ὄμματα αὐτοῦ· ἐ
πίθεισας τὰς χήρας αὐτοῦ· ἐπὶ ῥῶτα αὐτὸν·
ἵτις βλέπει· καὶ ἀναβλέψας εἴλεγεν· βλέ
πω τοὺς ἄνθρωποις· ὅτι ὡς δένδρα ὁρῶ περὶ πα
νοῦντας· εἶπα πάλιν ἐπέθηκεν τὰς
χεῖρας ἐπὶ τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ καὶ ἐ
ποίησεν αὐτὸν ἀναβλέψαι· καὶ ἀποκατε
στάθη· καὶ ἀνέβλεψεν τηλαυγὲς ἀπαντας·
ἀπέστρεψεν αὐτὸν εἰς οἶκον αὐτοῦ λέγων·
μὴ δὲ γὰρ τὴν κώμην εἰσελθῆς· μὴ δὲ εἴ
πῃς τίς ἐν τῇ κώμῃ· καὶ ἐξῆλθεν οἱ
καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· εἰς τὰς κώμας καὶ
σαρῆας· τῆς φιλιππου· τίς γὰρ τῆς ἰσχυρίας

αὐτοῦ· καὶ εἴλεχεν· Εἴλεχεν κατὰ μαρ
οῖς τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ ἵνα μὴ δὲ νὶ λέγωσι
περὶ αὐτοῦ· καὶ λήξατο διδάσκων αὐτοὺς· ὅτι δὲ
τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου πολλὰ παθεῖν· καὶ ἀποδοκι
μασθῆναι ἀπὸ τῶν πρῶτον βυτέρων καὶ τῶν ἀρ
χιερέων· καὶ τῶν γραμματέων· καὶ ἀπο
κταθῆναι· καὶ μετὰ τριῶν ἡμερῶν ἀναστῆναι·

καὶ παρρησίᾳ τὸν λόγον ἐλάλη· καὶ προσλα-
βόμενος αὐτὸν ὁ πέτρος· ἤρξατο ἐπὶ τῶν
αὐτῶν· ὁ δὲ ἐπὶ γραφῶν καὶ ἰδὼν τοὺς μα-
θητάς αὐτοῦ· ἐπετίμησεν τῷ πέτρῳ λέγων·
ὑπάξει ὁ πίσω μου σαταῖα· ὅτι οὐ φοβῆς τὰ τοῦ
θῦ, ἀλλὰ τὰ τῶν ἀνθρώπων· καὶ προσκαλεσάμε-
νος τὸν ὄχλον (ὡς τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ εἰ πῦν
αὐτοῖς)· ὅστις θέλῃ ὁ πίσω μου εἰλθεῖν, ἀπαρ-
νησάτω ἑαυτὸν, καὶ ἀρπάτω τὸν σταυρὸν αὐ-
τοῦ καὶ ἀκολουθήτω μοι· ~ τῇ ἑποσὶς τοῦ

Καὶ ῥῶ ἐκῆν· ἐκράτησαν ἡ κατὰ μαρ-
τὸν ἑαυτὸν οἱ μαθηταὶ τὸν λόγον τοῦ ἰησοῦ
ζητοῦντες, τίς ἔστι τὸ σῆμα κρῖν ἀναστῆναι·
καὶ ἐπὶ τῶν αὐτῶν λέγοντες· ὅτι λέγου-
σιν οἱ γραμματεῖς· ἡ λῖα ἀνδρὶ εἰλθεῖν πρῶτον·
ὁ δὲ ἀποκριθὲς εἰπὲν αὐτοῖς· ἡ λῖα σῶς
εἰλθεῖν, πρῶτον, ἀποκαθίστα πάντα, καὶ
πῶς γέγραπται ἐπὶ τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου· ἵνα
πολλὰ πάθῃ καὶ ἐξουδενωθῇ, ἀλλὰ λέγω ὑ-
μῖν· ὅτι καὶ ἡ λῖα εἰλήλυθεν, καὶ ἐποί-
ησα αὐτῷ ὄψα (ἡ θέλησα). καθὼς γέγραπται
ἐπ' αὐτόν· καὶ εἰλθὼν πρὸς τοὺς μαθητάς·
ἔδεν ὄχλον πολὺν περὶ αὐτοῦ· καὶ γραμ-
ματεῖς οὗ ζητοῦντες αὐτοῖς, καὶ ἀθέως πᾶς
ὁ ὄχλος ἰδὼν αὐτόν, ἐξεθαμβήθη· καὶ προ-
σέχοντες ἡσυχάζοντο αὐτόν· καὶ ἐπὶ τῶν
τησεν τοῖς γραμματεῖς, τίς οὗτος; τίς πρὸς
ἐαυτοῖς· ~ τῇ παρὰ τῆς ἑποσὶς τοῦ

Καὶ ῥῶ ἐκῆν· ἔλθεν οὖν καὶ οἱ μαθηταὶ

αὐτοῦ εἰς καπερναοὺν· καὶ ἐν τῇ οἰκίᾳ γε-
 ρόμενος ἐπιρώται αὐτοῖς· τί ἐν τῇ ὁδῷ
 πρὸς ἑαυτοὺς διελογίζεσθε· οἱ δὲ ἐσιώπων·
 πρὸς ἀλλήλους γὰρ διελέχθησαν ἐν τῇ ὁδῷ· τίς
 μὴ ῥων· καὶ καθίσας ἐφώνησε τοῖς δώδεκα·
 καὶ λέγει αὐτοῖς· ἥτις θέλει πρῶτος εἶναι,
 πάντων ὄψατος καὶ πάντων δι' αὐτοῦ· καὶ
 λαβὼν παιδίον· ἐτίθει αὐτὸ ἐν ἰσχυροῖς αὐτῶν·
 καὶ ἐγκαθισάμενος αὐτὸ ἔπεν αὐτοῖς· ὅς ἐ-
 στί ἐν τῶν τοιοῦτων παιδίων δέξεται ἐπὶ τῷ ὀ-
 νόματί μου· ἐμε'δέχεται· καὶ ὅς ἐὰν μὴ
 δέξεται· οὐκ ἐμε'δέχεται· ἀλλὰ τὸν ἀποστέλλει
 τὰς· ἀπεκρίθη δὲ αὐτῷ ἰωάννης λέγων·
 διδάσκαλε· ἡδομὲν πῦρ· τῷ ὀνόματί σου ἡ
 βάλαντα δαιμόνια· ὅς οὐκ ἀνολουθήμεν·
 καὶ ἐκώλισταμεν αὐτὸν· ὅτι οὐκ ἀνολουθή-
 μεν· ὁ δὲ ἰσ' ἔπεν· μὴ κωλύετε αὐτὸν· οὐδὲ γὰρ
 γὰρ εἶναι· ὅς ποιήσει δυνάμειν ἐπὶ τῷ ὀνόματί
 μου· καὶ διωθήσεται τὰ χυκακολογήσαίμεν·
 ὅς γὰρ οὐκ ἐστὶ καθ' ἑμῶν· ὑπὲρ ἑμῶν εἶναι· ὅς
 γὰρ αὖ ποτίσει ὑμᾶς ποτήριον ὕδατος ἐν ὀ-
 νόματί μου, ὅτι χυ' ἐστὶ· ἀμὲν λέγει ἡμεῖς·
 οὐ μὴ ἀπολέσθαι τὸν μίσθον αὐτοῦ· ~

σαββάτων· εἰς εὐαγγ. κατὰ λουκᾶν·

Καὶ ἔρχεται εἰς κῆρυ· ζήτησεν οὖν ἰσ' εἰς οἰκον τῆ
 νος τῶν ἀρχόντων τῶν φαρισαίων· σαββάτων·
 φαγεῖν ἄρτον· καὶ αὐτοὶ ἔσαν παρατηροῦν-
 τες αὐτὸν· καὶ ἰδοὺ ἄνθρωπος λίω ὑδροπικῶς
 ἐμ'προσθεν αὐτοῦ· καὶ ἀποκριθὼς ἰσ' εἶ-

πεν πρὸς τοῖς νομιμοῖς καὶ φαρισαίοις, λέγων·
 εἰ ἐξ ἑτὶ τῷ σαββατῷ θεραπεύει, οἱ δὲ ἐξου-
 χασαυ· καὶ ἐπὶ λαβόμενος ἰάσατο αὐτὸν
 καὶ ἀπέλυσεν· καὶ ἀποκριθὲς πρὸς αὐτοὺς
 εἶπεν· τίμος ὑμῶν ἦν ὁ ἴβρις, ὃς φρέαρ
 ἐμπεσεῖται· καὶ οὐκ ἐνθέως ἀρασσάσει
 αὐτὸν ἐν τῇ κίβρα τοῦ σαββάτου· καὶ οὐκ ἐ-
 χύσαμ ἀνταποκριθῆναι αὐτῷ πρὸς ταῦτα·
 ἐλθόντες δὲ πρὸς τοῖς κεκλημένοις παραβολὴν·
 ἐπέχων· πρὸς τὰς πρωτοκλισίας ἐξελέγχετο·
 λέγων πρὸς αὐτοὺς· ὅταν κληθῆσθε ὑπό τιμος
 εἰς γάμιον· μὴ κατὰ κληθῆσθε ὅτι πρῶτο
 κλισίαν· μή ποτε ἐν τιμωτέρου σου ἢ κτε-
 ρημένους ὑπαίτου· καὶ ἐλθὼν ὁ αὐτὸς καὶ αὐ-
 τὸν καλεῖσθαι· ἐρεῖ· σὺ, δὸς τούτῳ τόπον·
 καὶ τότε ἀρξήσιν αἰσχύνῃς, τὸν ὄχλον τὸ
 πον κατέχειν· ἀλλ' ὅταν κληθῆς· πορευ-
 θῆς ἀνὰ πρῶτον ὅτι τὸν ὄχλον τὸ πον· ἴνα
 ὅταν ἐλθῇ ὁ κεκληκώσας, ἔπῃσιν· φίλει, πρῶ-
 τὰ ἀναβῇ ἰσχυρότερον· τότε ἔσαι σοι δόξα·
 ἐνώπιον τῶν συνανακειμένων σοι· ὅτι
 πᾶς οὐκ ἔφη αὐτὸν ταπεινωθήσθαι· ὁ δὲ
 ταπεινῶν ἐαυτὸν ὑψώθησθαι·

ὡς α' π' ε' ω' χ'

κερὶ δὲ τῆς ἐκείνου κατὰ λόγους

ὡς καιρῷ ἐκείνῳ· ἀπὸ τῶν προσήλθε τῷ
 Ἰησοῦ πηράζων αὐτὸν καὶ λέγων· διδάσκαλε
 ἀγαθέ· τί ποιήσας, ζωὴν αἰώνιον κληρονο-
 μέσω· εἶπεν δὲ αὐτῷ ὁ ἰσ· τί με λέγεις ἀ-
 γαθόν· οὐδεὶς ἀγαθός, ἢ μὴ εἰς ὁ αὐτὸς· πᾶς

ἐντολὰς οἶδας· μὴ μοιχᾶσθαι· μὴ φονεῖσθαι·
 μὴ κλέψαι· μὴ ψεῦδος μαρτυρῆσαι· τίμα
 τὸν πατέρα σου καὶ τὴν μητέρα σου· ὁ δὲ εἶπεν·
 ταῦτα πάντα ἐφύλαξα ἐν καρδίᾳ μου·
 ἀκούσας δὲ ταῦτα ὁ ἰσχυρὸς· εἶπεν αὐ-
 τῷ· ἔξουσὸν λήψω πάντα ὅσα ἔχεις πώλη-
 σον· καὶ δώσω σοι πτωχοὺς· καὶ ἔξουσθαι σου οὐρανὸν
 ἐν ὀνόματι· καὶ δούλοισί σου· ὁ δὲ ἀκού-
 σας ταῦτα, περίλυπος ἐγένετο· ὡς γὰρ πλού-
 σιος σφόδρα· ἰδὼν δὲ αὐτὸν ὁ ἰσχυρὸς περίλυ-
 πον γενόμενον, ἔπεν· πῶς δύσκολος οἱ τὰ
 χρήματα ἔχοντες, ὅτε λείπονται ὅτι τὴν βα-
 σιλείαν τοῦ θύ· ἀπὸ πῶτερον γὰρ ἐστὶ κάμηλον
 διατρέματι ἀσφαλίᾳ ὅτε λθῇ· ὡς πλοῖον
 ὅτι τὴν βασιλείαν τοῦ θύ· ὅτε λθῇ· εἶπον δὲ
 οἱ ἀκούσαντες· καὶ τίς δύναται σωθῆναι·
 ὁ δὲ εἶπεν· τὰ ἀδύνατα παρὰ τοῖς ἀνθρώποις,
 δυνατὰ παρὰ τοῦ θύ· ἡ γὰρ ἐκ τῶν ἐν ἐμοὶ καὶ ἐν
 ἡμῶν τῶν πτωχόντων ὅς ἐστι καλὸν ἐστὶν
 κάμηλον, ὅτι περὶ κρητὶς λίθος μύλικός περὶ
 τοῦ τραχήλου αὐτοῦ· καὶ βέβληται ὅς
 τὴν θάλασσαν· καὶ ἐκάρκαρδα λί-
 θος ἡ χάρου, ἀποκοφὸν αὐτῷ· καλὸν ὅσον
 ἐστὶν κύμα ὅς τὴν ζωὴν δὲ ἐλθῇ· ὡς τὰς θύ-
 χους ἔχοντες ἀπελθῇ εἰς τὴν γέεν-
 ναν· ὅς τὸ πῦρ τὸ αἰώνιον· ὅπου ὁ σκώ-
 λος αὐτῶν οὐ πελατᾷ· καὶ τὸ πῦρ οὐ σβέν-
 νεται· καὶ ἐὰν ὁ ποῖός σου σκαρδαλί-

ζησε· ἀπό κοῦρον αὐτὸν· καλὸν ἐστὶν αὐτῷ ὅτι ἐλ-
θὲν εἰς τὴν ζωὴν χαλὸν· ἡ τοῦ δυνάστη
ἔχοντα· βληθὲν αὐτὸν ἐκ τῆς ἐκείνου εἰς τὸ
πῦρ τὸ ἀσβεστον· ὅπου ὁ σκώληξ αὐτῶν οὐ
τελευτᾷ· καὶ τὸ πῦρ οὐ σβέννυται· καὶ
ἐὰν ὁ ὀφθαλμὸς σου σκαρδαλίξηται· ἐμβα-
λε αὐτὸν· καλὸν σοι εἶναι μόνον ὀφθαλμον ὅτι ἐλ-
θεῖν εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ θύ· ἡ δὲ ὀφθαλ-
μοῦ ἔχοντα· βληθὲν αὐτὸν ἐκ τῆς ἐκείνου τοῦ
πῦρος· ὅπου ὁ σκώληξ οὐτελευτᾷ· καὶ τὸ πῦρ
οὐ σβέννυται· πᾶς γὰρ πρὸς ἀγιασθῆναι
καὶ πᾶσα θυσία· ἀλλ' ἀγιασθῆναι· καλὸν
τὸ ἅλας· ἐὰν δὲ τὸ ἅλας ἀράχον γένηται·
ἐν τῇ αὐτῇ ἀρτύσει· ἔχεται ἐν αὐτοῖς
ἅλας· καὶ εἰρημὴ γίνεται ἀλλήλοισ· καὶ
ἐκ τῆς ἀραχῆς ἐρχεται εἰς τὰ ὅρια τῆς ἰ-
ουδαίας· διὰ τοῦ πέρας τοῦ ἰορδάνου· καὶ
ὡς πορεύονται πάλιν ὄχλοι πρὸς αὐτὸν·
καὶ ὡς ἐγένετο παλιν ἐδιδάσκεν αὐτοὺς·

τῇ γ' τῆς 109 εὐκ' κατὰ λέαν·

Καὶ ἔπειτα· ὡς αὐτὸν· προσελθόντες οἱ φαρισαῖ-
οι ἐπὶ τῇ τῆς αὐτοῦ· ἡ ἐξέτιν αὐτοῖς γῆ-
ραι καὶ ἀπολίσαι· πειράζοντες αὐτὸν· ὁ
δὲ ἀποκριθεὶς ἔπεν αὐτοῖς· τί ὑμῖν ἐν-
τέλεστο μωῖσῃ· οἱ δὲ ἔπον· μωῖσῃς ὁ
πέτριψεν· βιβλίον ἀποστασίης γράψαι· καὶ
ἀπολίσαι· καὶ ἀποκριθεὶς ὁ ἰσ' εἶπεν
αὐτοῖς· πρὸς τὴν σκληροκαρδίαν ὑμῶν·
ἐγὼ γὰρ ἔμην τὴν ἐντολὴν ταύτην· ἀπὸ

107
δὲ αὖ χλὺς ἐτίθετο ἄρσεν καὶ θύλη ἐποίησεν
αὐτοῖς ὡς ὁ θεὸς ἐνεκεν τούτου· κατελήφει
ἄρσος τὸν πρῶτον αὐτοῦ καὶ τὴν μετὰ· καὶ πρόσκο
ληθήσεται πρὸς τὴν γαῖαν αὐτῆς αὐτοῦ· καὶ ἐ
σπορῶνται οἱ δύο εἰς σὰρκα μίαν· ὅς τε οὐκέ
τι ἔσονται δύο ἀλλὰ μία σὰρξ· ὁ ὁμοῦ ὁ θεὸς ὡς ἐλά
ζειν· ἄρσος μὴ χωριζέτω· καὶ ἐν τῇ οἰκίᾳ πά
λιν οἰμαθήσεται αὐτοῦ· περὶ τοῦ αὐτοῦ ἐπε
ρώτησαν αὐτὸν· καὶ λέγει αὐτοῖς· ὅς ἐστέ ἄν
θρωποι ὡς ἡ γαῖα αὐτῆς· καὶ γαμήσει
ἄλλω· μοιχάται ἐπ' αὐτήν· καὶ ἐστέ ἄνθρω
ποι ὡς ἡ γαῖα αὐτῆς· καὶ γαμήσει ἄλλω· μοι
χάται ἐπ' αὐτήν· καὶ ἐστέ ἄνθρωποι ὡς ἡ γαῖα
αὐτῆς· καὶ γαμήσει ἄλλω· μοιχάται ἐπ' αὐτήν·

Καὶ περὶ οὗτο· ὅς ἐστέ ἄνθρωποι ὡς ἡ γαῖα
αὐτῆς· καὶ γαμήσει ἄλλω· μοιχάται ἐπ' αὐτήν·
καὶ ἐστέ ἄνθρωποι ὡς ἡ γαῖα αὐτῆς· καὶ γαμήσει
ἄλλω· μοιχάται ἐπ' αὐτήν· καὶ ἐστέ ἄνθρωποι ὡς ἡ
γαῖα αὐτῆς· καὶ γαμήσει ἄλλω· μοιχάται ἐπ' αὐτήν·
καὶ προσέφερον αὐτῶν παῖδας· ἵνα
μαρτυρηθῶσιν αὐτῶν· οἱ δὲ μαθήσονται· ἐπετίμη
τοῖς προσφερόσι· ἰδὼν δὲ οἱ ἄλλοι· ἡ γὰρ
ἐκτίσεν· καὶ εἶπεν αὐτοῖς· ἀφ' ἑτέρας πα
ιδῶν ἐρχέσθαι πρός με· μὴ κωλύετε αὐτά·
τῶν γὰρ τοιούτων ἐστὶν ἡ βασιλεία τοῦ θεοῦ·
ὡς παῖδες· οὐ μὴ ἔσονται εἰς αὐτὴν· καὶ ἐναγκα
λισάμενος αὐτά· τίθει τὰς χεῖρας ἐπ' αὐτά· ἀλόγι
αὐτά·

Καὶ αὖτε· ὡς ἡ γαῖα αὐτῆς· καὶ γαμήσει ἄλλω·
μοιχάται ἐπ' αὐτήν· καὶ ἐστέ ἄνθρωποι ὡς ἡ γαῖα
αὐτῆς· καὶ γαμήσει ἄλλω· μοιχάται ἐπ' αὐτήν·
καὶ ἐστέ ἄνθρωποι ὡς ἡ γαῖα αὐτῆς· καὶ γαμήσει
ἄλλω· μοιχάται ἐπ' αὐτήν· καὶ ἐστέ ἄνθρωποι ὡς ἡ
γαῖα αὐτῆς· καὶ γαμήσει ἄλλω· μοιχάται ἐπ' αὐτήν·

μῶν εἶς καὶ γοῦ πετήσας αὐτὸν· ἐπηρώτω
αὐτὸν· διδάσκαλε ἀγαθε· τί ποιήσω· ἵμνα
ζῶν αἰώνιον κληρονομήσω· ὁ δὲ ἰὼ εἶπεν
αὐτῷ· τί με λέγεις ἀγαθόν· οὐδέ τίς ἀγαθός·
ἡμεῖς ὅθι· τὰς ἐντολάς οἶδας· μή μοι χα
σθῆς· μή φονεύθῃς· μή κλέψῃς· μή ψάδ
μαρτύρῃς· μή ἀποστρέψῃς· τίμα τὸν πρῶ
τον καὶ τὴν μητέρα· ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐ
τῷ· διδάσκαλε· πάντα πάντα ἐφύλα
ξάμενος ἐν ἐνότητι τοῦ μου· ὁ δὲ ἰὼ ἐμβλέ
ψας αὐτῷ, ἢ γὰρ πνεύματι αὐτοῦ, καὶ εἶπεν αὐτῷ·
ἐν σοὶ ἔστι· ἵπαγε ὅτε ἔχῃς πώλησον·
καὶ δὸς πτωχοῖς· καὶ ἔξῃ θησαυρὸν ἐν οὐρανῷ,
καὶ δάρο ἀπολούθη μοι, ἄρας τὸν σπῶν· ὁ
δὲ συγγράσας ἐπὶ τῷ λόγῳ, ἀπῆλθεν λιπούμε
νος· ὡς γὰρ ἔχων κτήματα πολλὰ· καὶ π
ρὶ βλεψάμενος ὁ ἰὼ λέγει τοῖς μαθηταῖς αὐ
τοῦ· πῶς δύσκολος οἱ τὰ χρήματα ἔχον
τες· εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ θυ εἰσελεύσονται·
οἱ δὲ μαθηταὶ ἐθαμβοῦντο ἐπὶ τοῖς λόγοις
αὐτοῦ· ὁ δὲ ἰὼ πάλιν ἀποκριθεὶς λέγει αὐτοῖς·
πῶς δύσκολον ἐστὶ τοῖς πεποιθότας ἐπὶ χρή
μασιν· εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ θυ εἰσελθεῖν· ἀ
κοπώτερον ἐστὶν· κάμνον διά τῆς πρὸς μαλίας
τις ραφίδος εἰσελθεῖν· ἢ πλούσιον εἰς τὴν βα
σιλείαν τοῦ θυ εἰσελθεῖν· οἱ δὲ περιγῶς
ἐξεπλήσαντο λέγοντες πρὸς ἐαυτοὺς· καὶ
τίς δύναται σωθῆναι· ἐμβλέψας δὲ αὐτοῖς
ὁ ἰὼ λέγει· παρά ἀνθρώπου ἀδύνατον, ἀλλ' οὐκ



ρὰ θῶ· πάντα γὰρ δυνάταί ἐστιν παρὰ τῷ θῶ· ~
τῇ παρὰ τῆς τοῦ ^{αὐτοῦ} κατὰ μαρτυρίαν·
Εἰ πενὸς· πῶς δὲ σκόλωσ οἱ τὰ χρήματα ἔ-
χοντες· ὅς τινι βασιλείᾳ τοῦ θῦ εἰσελάσσονται·
οἱ δὲ μαθηταί· ἐθαμβοῦντο ἐπὶ τοῖς λόγοις αὐ-
τοῦ· ὁ δὲ ἰὼ παλὶν ἀποκριθεὶς λέγει αὐτοῖς·
πῶς δὲ σκολοῦ ἐστὶ· τοῖς πεποιθότασ ἐπὶ τὰ
χρήματα ἡ τινὲς βασιλείᾳ τοῦ θῦ εἰσελθῶν· ἀ-
κοπὴν τεροῦν ἐπὶ καμνηλομδὴ ατρημαχιασθῆσθαι·
φίδοσ εἰσελθεῖν ἐπὶ πλοῖστον ὅς τινι βασιλείᾳ
τοῦ θῦ εἰσελθῶν· οἱ δὲ περισῶσ ἐξεπλή-
σσοντο λέγοντες πρὸς ἑαυτοῖς· καὶ τίς δύνα-
ται σωθῆναι· εἰβλέψας δὲ αὐτοῖς ὁ ἰὼ· λέ-
γει· παρὰ αὐτοῖς ἀδυνατον· ἄλλου παρὰ τῷ·
πάντα γὰρ δυνάταί ἐστιν παρὰ τῷ θῶ· ~
ἰδὲ οὐκ ἐπὶ τὸς λέγει αὐτῷ· ἰδὲ ἡμεῖς ἀφ᾽ ἡ-
καμεν πάντα καὶ ἡ κολουθήσασμεν σοι·
ἀποκριθεὶς ὁ ἰὼ ἔπεν· ἀμὲν λέγω ὑμῖν· οὐ
δεῖός ἐστιν· ὅς ἀφ᾽ ἡμεῖς οἱ κίαν· ἡμεῖς αἱ καὶ· ἐπὶ
τέκνα· ἡ ἀγροῖς· ἐν ἐκείνῳ· καὶ ἐν ἐ-
κείνῳ τοῦ ἀστέλιου· εἰς ἡμῶν λάβῃ· ἑκάστον
ταπλάσιον αὐτῶν ἐν τῷ καιρῷ τοῦ τῶ· οἱ
κίαν· καὶ ἀδελφοῖς· καὶ ἀδελφὰς· καὶ μητράς·
καὶ τέκνα· καὶ ἀγροῖς· μετὰ δὲ τῶν· καὶ
ἐν τῷ αἰῶνι τῷ ἐρχομένῳ· ζωὴν αἰῶνιον·
πολλοὶ δὲ ὄνται πρῶτοι· ὄχλοισι· καὶ οἱ
ὄχλοισι· πρῶτοι· ἡσαν δὲ ἐν τῇ ὁδῷ ἀ-
ναβαίροντες εἰς ἱεροσόλυμα· καὶ ἰὼ προ-
αἰτῶν ὁ ἰὼ· καὶ ἐθαμβοῦντο· καὶ ἀκολουθοῦν
ἐθαμβοῦντο· ~

σαύρατον ἰσὶ κατὰ λού.

Εἰ πενὸς· ὁ πιστὸς ἐν ἐλαχίστῳ· καὶ ἐν πο
λῷ πιστὸς ἔστιν· καὶ ὁ ἐν ἐλαχίστῳ ἀδίκος·
καὶ ἐν πολλῷ ἀδίκος ἔστιν· ὁ δὲ ἐν τῷ ἀ
δίκῳ μαμωνά· πιστοῦ κατένευθε· τὸ ἀ
ληθινὸν πῖς ἡμῖν πῖσάσει· καὶ ὁ ἐν τῷ ἀ
μοιρίῳ· πιστοῦ κατένευθε· τὸ ἡμέτερον πῖς
ἡμῖν δώσει· οὐδὲς οὐκ ἐτήσθη αἰναιδοῖ
κερίσθου λάειν· ἡ γὰρ τὸν ἐν αἰμοσύνῃ·
καὶ τοῦ ἡμέτερον ἀσάπλῃσι· ἡ ἐν ὅσῳ ἀνθέξε
ται· καὶ τοῦ ἡμέτερον κατὰ φρονήσῃ· οὐδὲ
μαθεθῶ δουλάειν καὶ μαμωνά· ἡ κου
οὐδὲ ταῦτα πάντα καὶ οἱ φαρισαῖοι· φῖ
λάρ τῆροι ὑπαρχόντες· καὶ ἐξ ἐμὴ ἀτήρι
ζομαίτον· καὶ εἰ πεν αὐτοῖς· ἡμεῖς ἐστὲ
οἱ δὲ καὶ οὐκ ἐστὲ αὐτοῖς ἐν ὅσῳ πῖς τῶν ἀνῶν·
ὁ δὲ θῆξιν ὡς καὶ τὰς καρδίας ἡμῶν· ὅτι τὸ
ἐν αὐτοῖς ἡμεῶν· ὁ δὲ λῆμα ἐν ὅσῳ πῖς τῶν
θῶ ἔστιν· ~ κεριακή ἰσὶ κατὰ λού καμ:

ἡχ πβ εω θ

Εὖ καὶ ῥῶ ἐκείνῳ· ἐστὲν ἐν τῷ ἐπὶ ἡμέ
τῶν ἡμῶν εἰς ἡμεῖς· τυφλὸς πῖς ἐκείνῳ
παρατῶ ὁ δὲ προσάι τῶν· αἰνοῖσας δὲ
ὁ δὲ διὰ ἀπορρομένην· ἐπὶ ὡς αὐτῶ· πῖ
ἡ τοῦτο· ἀπὴ γὰρ λαμβάνει αὐτῶ· ὅτι ἰσὶ ὁ
μαμωνά οὐκ ἐστὶν· καὶ ὁ δὲ ὡς λῆμα
ἡ· ἡ δὲ αὐτῶ· ἐλέησόν με· καὶ οἱ προῶ
χόντες ἐπὶ τῶν αὐτῶ ἡμεῶν πῖς·
αὐτὸς δὲ πολλὰ μάμον ἐκράζει· ἡ δὲ αὐτῶ
ἐλέησόν με· σταθεῖς δὲ οἱ· ἐκείλῳ

αὐτὸν ἀχθῆναι πρὸς αὐτὸν· ἤμισαν τοὺς δὲ
αὐτοῦ· ἐπὶ ῥῶτισιν αὐτὸν λέγων· τί σοι
θέλης ποιῆσω· ὁ δὲ εἶπεν· κἔ· ἵνα ἀνα-
βλέψω· καὶ ὁ ἴσ' εἶπεν αὐτῷ· ἀνάβλε-
ψον· ἡ πίστις σου σέσωκεν σε· καὶ παρὰ
τῆς ἀνάβλεψης· καὶ ἡ κολούθη αὐτῷ·
δοξάζον τὸν θῆ· καὶ πᾶς ὄλαος ἰδὼν· ἐ-
δωκεν αἶνον τῷ θῷ· ὡς τῷ ἱερωτάτῳ· καὶ μαρ-

Καὶ ῥῶ ἐκῆν· ἐκ ποταμοῦ τοῦ ἰού
ἀπὸ ἱερὶχ· καὶ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ· καὶ ὁ
χλου ἱκαροῦ· ὁ ἴσ' οὐκ ἔμελλεν· μαρτίμην
ὅτι τυφλὸς ἐκείνη το παρὰ τὴν ὁδὸν· προσαι-
τῶν· καὶ ἀκοῖσας ὅτι ἴσ' ὁραζωραῖος
ἐστίν· ἤρξατο κράζειν καὶ λέγειν· ὁ ἴσ' ὁ δαδ
ἐλέησόν με· καὶ ἐπετίμων αὐτῷ πο-
μοῖ· ἵνα σιωπήσῃ· ὁ δὲ πολλῶ μάλλον ἐ-
κραζεν· ἵε δαδ ἐλέησόν με· καὶ εἰς
ὁ ἴσ'· εἶπεν αὐτὸν φωνηθῆναι· καὶ φωνῶν
σὺν τὸν τυφλὸν λέγοντες αὐτῷ· θάρσει· ἐ-
γὼ γὰρ φωνεῖς· ὁ δὲ ἀπὸ βαλῶν τοῖς μα-
τίον αὐτοῦ· ἀναστὰς ἦλθεν πρὸς τὸν ἴν·
καὶ ἀποκριθὲς λέγει αὐτῷ ὁ ἴσ'· τί θέλεις
ποιῆσω σοι· ὁ δὲ τυφλὸς· εἶπεν αὐτῷ·
ραββουῖ· ἵνα ἀναβλέψω· ὁ δὲ ἴσ' εἶ-
πεν αὐτῷ· ὑπάγε· ἡ πίστις σου σέσωκεν
σε· καὶ ἀθέως ἀνέβλεψεν· καὶ ἡ κο-
λούθη τῷ ἴν ἐν τῇ ὁδῷ· ὡς τῷ ἱερωτάτῳ· καὶ μαρ-

Καὶ ῥῶ ἐκῆν· εἰσῆλθον γὰρ καὶ μαρ-
ὁ ἴσ' εἰς ἱεροσόλυμα εἰς τὸ ἱερόν· καὶ π

ριβλεψάμενος πάντα· ὁφίαις ἤδ' ἐκείνοις
τῆς ὥρας· ἐξῆλθεν δὲ βῆθαρ ἅμην μετὰ
τῶν δώδεκα· καὶ τῇ ἑπάρριον ἐξελ-
θόντων αὐτῶν ἀποβῆθαρ ἅμην, ἐπὶ μαστῶν
καὶ ἰδὼν σου κλῖν ἀπὸ μακρόθεν· ἔχουσαν
φύμα· ἐλθὲν δ' ἄρα ἀρῆσει τίς ἐν αὐτῇ·
καὶ ἐλθὼν ἐπ' αὐτῇ· οὐδὲν ἄρ' ἐν, εἰ
μὴ φύμα· οὐ γὰρ κλῖν καιρὸς σὺ κωμ· καὶ
ἀπὸ κριθαῖς οἷσ' ἔπεν αὐτῇ· μὴ κ' ἐπὶ τίς
σοὺ δὲ τὸν αἰῶνα μὴ δέισ' καρπὸν φά-
ροι· καὶ ἡ κοινονοί μαθῆται αὐτοῦ·
καὶ ἐρχονται δὲ ἱεροσόλυμα· καὶ εἰ-
σελθὼν οἷσ' δὲ τὸ ἱερόν· ἐξέλατο ἐμβώ-
λην τοῖς πολλοῖς τὰς καὶ ἀγοράζοντας ἐν
τῷ ἱερῷ· καὶ τὰς τραπέζας τῶν κολλυ-
βιστῶν· καὶ τὰς καθέδρας τῶν πολλοῖς
τῶν τὰς περιστρεφῶν, κατέστρεψεν· καὶ
οὐκ ἔφισεν ἱματισ δ' ἐνέμνη σκὰος δ' ἅς
τοῦ ἱεροῦ· καὶ ἐδίδασκεν λέγων αὐτοῖς·
οὐ μέγα πταί· ὅτι ὁ οἶκος μου, οἶκος προ-
σαχλῆς κληθήσεται πᾶσι τοῖς ἐθνεσὶ·
ὑμεῖς δὲ ἐποιήσατε αὐτὸν σπήλαιον κλη-
στῶν· καὶ ἡ κοινονοί γραμματεῖς καὶ
οἱ ἀρχιερεῖς, καὶ ἐβήτωσαν, πῶς αὐτὸν
ἀπωλέσωσιν· ἐφοβοῦντο γὰρ αὐτὸν
ὅτι πᾶς ὁ ὄχλος, ἐξεπλήσθητο ἐπὶ
τῇ διδασκίᾳ αὐτοῦ· καὶ ὅτε ὁ ἄθ' ἐγγύς
ἐξεπορεύετο ὅξω τῆς πόλεως· καὶ πρῶ-
τοι παραπορεύμενοι; ἔδοξε τῷ σου κλῖν ἐ-

ξηραμένῳ ἐκρίβω· καὶ ἀφ' ἀμνηστῆς
 ὁ πέτρος λέγει αὐτῷ· ραββί· ἰδεὶ σὺ κλέων
 κατηράσω; ἐξήραται· καὶ ἀποκριθεὶς
 ὁ ἰσλὲς γει αὐτοῖς· ἔχετε πίστιν θυ· ἀμὲν
 γὰρ λέγω ὑμῖν· ὅτι ὅς ἂν ἔπη τῷ ὄρφ τοῦ
 τω; ἀρθῇ τι καὶ βλήθῃ τι εἰς τὴν θάλασσαν·
 καὶ μὴ διακριθῇ ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ· ἀλλὰ
 πισθῶσι ὅτι ἀλέσθ' ἔγινται· ἔσται αὐτῷ ὁ
 εἰς ἄν' ἔπη· ~ τῇ ὁ πῆς τε ^{ἀμ} κατὰ μαρ

Πενόης· ἔχετε πίστιν θυ· ἀμὲν γὰρ λέ
 γω ὑμῖν· ὅτι ὅς ἂν ἔπη τῷ ὄρφ τοῦ τω; ἀρ
 θῇ τι καὶ βλήθῃ τι εἰς τὴν θάλασσαν· καὶ
 μὴ διακριθῇ ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ· ἀλλὰ
 πισθῶσι ὅτι ἀλέσθ' ἔγινται· ἔσται αὐτῷ ὁ
 εἰς ἄν' εἴπη· διατοῦτο λέγω ὑμῖν· πάν
 ται ὅσα ἂν προσάχόμενοι, αἰτεῖσθε;
 πισθάτε ὅτι λαμβάνετε· καὶ ἔσται ὑμῖν·
 καὶ ὅταν σῇ κατὰ προσάχόμενοι, ἀφίε
 τε ὅτι ἔχετε κατατίμος; ἴνα καὶ ὁ πῆρ
 ἡμῶν ὁ ἐν τοῖς οὐνοῖς, ἀφῇ ὑμῖν πάντα
 ραπτώματα ὑμῶν· ~ τῇ ὁ πῆς τε ^{ἀμ}

Καὶ ῥῶ ἐκέρω· ἔχοντες ὅς ^{ἀμ} κατὰ μαρ
 παλιν ἔς ἐξοσλύμα· καὶ ἐν τῷ ἱερῷ περι
 πατοῦτος αὐτοῦ· ἔχονται πρὸς αὐ
 τὸν οἱ ἀρχιερεῖς· καὶ οἱ γραμματεῖς· καὶ
 οἱ πρῶ βύτεροι· καὶ λέγουσιν αὐτῷ· ἐν ποί
 α ἐξοισία ταῦτα ποιῶ· καὶ τίς σοι τὴν
 ἐξοισίαν ταύτην ἔδωκεν; ἴνα ταῦτα ποι
 ῷς· ὁ δὲ ἰσ ἀποκριθεὶς ἔπειν αὐτοῖς·

ἔπερωτήσω ὑμᾶς καὶ ἄνθρωπον ἐν αὐτοῖς, καὶ ἀ-
 ποκριθεῖτέ μοι· καὶ ἐρῶ ὑμῖν, ἐν ποίᾳ ἐ-
 ξοισία ταῦτα ποιεῖ· τὸ βάπτισμα ἰω-
 ἀνου, ἐξ οὐνοῦ ἢ, ἢ ἐξ ἀνθρώπων· ἀποκρι-
 θεῖτέ μοι· καὶ ἐλογίζοντο πρὸς ἑαυτοὺς
 λέγοντες· Ἐὰν ἄπωμεν ἐξ οὐνοῦ, ἐρ-
 ῶν οὐκ ἐπιστάμεθα αὐτῷ· ἄλλ' ἄπωμεν
 ἐξ ἀνθρώπων· ἐφοβοῦντο τὸν λαόν· ἅπαν-
 τες γὰρ ᾔχον τὸν ἰωάννην, ὅτι οὕτως προ-
 φητίᾳ ἦν· καὶ ἀποκριθεὶς λέγει οἱ
 τῷ ἰωάννῃ, οὐκ οἶδαμεν· καὶ λέγει αὐτοῖς·
 οὐδὲ ἐγὼ λέγω ὑμῖν ἐν ποίᾳ ἐξοισία ταῦ-
 τα ποιεῖ· τῇ παρὰ τοῦ ἁγίου κατὰ μαρ-
 τυρίαν ἵπεν οὕτως τὸ παραβολικὸν ταῦτον· ἄν-
 πελώριον ἐφύτασεν ἄνθος, καὶ περὶ ἐθ-
 νων φαεινόν· καὶ ὠρύξεν ὑπολήριον, καὶ
 ὠκοδόμησεν πύργον· καὶ ἐξέδωκε αὐτὸν γε-
 ωργοῖς, καὶ ἀπεδήμησεν· καὶ ἀπέστει-
 λε πρὸς τοὺς γεωργοὺς τὰ καιρῷ δούλους·
 ἵνα παρὰ τῶν γεωργῶν λάβῃ, ἀπὸ τοῦ καρ-
 ποῦ τοῦ ἀνπελώριου· οἱ δὲ λαβόντες
 αὐτὸν, ἐδάραν καὶ ἀπέσθλαρ κενόν·
 καὶ παλὶν ἀπέστειλεν πρὸς αὐτοὺς, ἄλλον
 δούλον· καὶ κείνον λιθοβολήσαντες, ἐκεφα-
 λώσαν· καὶ ἀπέσθλαρ λίτρωμένον· καὶ
 παλὶν ἄλλον ἀπέσθλεν, καὶ κείνον ἀπέκτα-
 ναν· καὶ πολλοὺς ἄλλους· τοῖς μὲν δέροντες,
 τοῖς δὲ ἀποκταίμεντες· ἔτι οὖν ἄνθρωπον
 ἔχον ἄσπιτον αὐτοῦ· ἀπέστειλεν καὶ αὐ-

τὸν πρὸς αὐτοῖς ὄχλον λέγων· ὅτι οὗτοι
 πείσονται τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου· ἐκείνοι δὲ οἱ γεωρ-
 γοὶ· εἶπον πρὸς ἐαυτοῖς· ὅτι οὗτος ἐστὶν ὁ
 κληρονόμος, ὃς ἀποκτείνωμεν αὐτόν·
 καὶ ἡμῶν ἔσται ἡ κληρονομία· καὶ λαβόν-
 τες αὐτὸν ἀπέκτεναν· καὶ ἐξέβαλον ἐξ
 τοῦ ἀμπελώρου· τί οὖν ποιήσῃς τοῦ
 ἀμπελώρου· ἐλάσθαι καὶ ἀπολέσθαι τοῖς
 γεωργοῖς· καὶ δώσει τὸν ἀμπελῶνα ἄλλοις·
 οὐδὲ τίς γραφὴ ταύτην ἀνέγνωτε; λίθον οὖν
 ἀπεδοκίμασαν οἱ οἰκοδομοῦντες· οὗτος ἐ-
 γερήθη ὡς κεφαλὴ γωνίας· παρ' αὐτοῦ ἐγένε-
 το αὕτη· καὶ ἐστὶν θαυμαστὴ ἐν ὀφθαλμοῖς
 ἡμῶν· καὶ ἐζητοῦν αὐτὸν κρατῆσαι, καὶ
 ἐφοβήθησαν τὸν ὄχλον· ἐγινωσαν γάρ,
 ὅτι πρὸς αὐτοῖς τίς παραβολὴν εἶπεν·
 καὶ ἀφέντες αὐτὸν ἀπήλθον·

σαύρατον γὰρ κατὰ Λουκᾶν·
 ἵπεν οὖν· προσέχαι δαυτοῖς· εἰ δὲ ἄ-
 μαρτυρεῖτε ὁ ἀδελφοῦς, ἐπετίμησον
 αὐτῷ· καὶ εἰ μὲτανοήσῃ, ἄφες αὐτῷ·
 καὶ εἰ ἐπτάκις τις ἡμέρας ἀμαρτῇ
 εἰσὶν· καὶ ἐπτάκις τῆς ἡμέρας ἐπιστρέ-
 ψῃ λέγων, μετανοῶ· ἀφήσεις αὐτῷ·
 καὶ εἶπον οἱ ἀπόστολοι τῷ κυρίῳ· πρόσθε
 ἡμῶν πίστις· εἶπεν δὲ ὁ κύριος· ὅτι ἔχετε πί-
 στιν ὡς κόκκον σῖνός πεως· ἐλέγετε αὐ-
 τῇ σῖκα μὲν ταύτη· ἐκρίζωθήτι καὶ φύ-
 τήθῃ τις ἐν τῇ θαλάσσῃ· καὶ ὑπήκουσεν

ἀν' ὑμῶν + τίς δὲ ἐξ ὑμῶν· δούλον ἔχων
 ἀροτριῶνται, ἢ ποιμένοντα· οὗ εἰσελθόν
 τίς ἐκ τοῦ ἀγροῦ· ἐρᾷ αὐθιγὰς, παρελθὼν
 ἀράπεσε· ἀλλ' οὐχὶ ἐρᾷ αὐτῷ· ἐτοίμασον
 τὶ δὲ πνήσω + καὶ περιβώσας μενος δ' ἀκό
 ρημοι, ὥς φάγω καὶ πίω + καὶ μετὰ ταῦτα φά
 γωαι καὶ πίωαι σὺ· μὴ χάριν ἔχῃ τῷ δούλῳ
 ἐκ ἡμῶν, ὅτι ἐποίησε τὰ δ' ἀπαχθέντα,
 οὐδὲ κῶ + οὕτως καὶ ἡμεῖς· ὅτι ἂν ποιήσῃ
 τε πάντα τὰ δ' ἀπαχθέντα ἡμῶν λέγεται·
 ὅτι δούλοι ἀχρεῖοι ἐσμὲν· ὅτι ὁ φέλομεν
 ποιήσαι, πεποιήκαμεν·

95 Λ ΑΙ
 ΗΧ ΠΤ ΕΩ Τ



κατὰ λαὸν καὶ κατὰ
 καὶ ῥῶ ἐκ ἡμῶν· δι' ἣν ἤρξατο οἷον πλὴν ἱερὸν καὶ
 καὶ ἰδὼν αὐτὸν ὀνόματι καλούμενος Ζαῦχαί
 ος· καὶ αὐτὸς ἰὼν ἀρχιτελώνης + καὶ οὗτος
 ἰὼν πλοῦτος· καὶ ἐζήτησεν ἰδεῖν τὸν ἴν' τίς ἐ
 στί, καὶ οὐκ ἔδυνάτο ἀπὸ τοῦ ὄχλου· ὅτι
 τῇ ἡλικίᾳ μετ' αὐτὸς ἰὼν + καὶ πρὸς δραμῶν
 ἐμπροσθεν· ἀνέβη ἐπὶ σὺνομορραῖαν·
 ἵνα ἴδῃ αὐτὸν, ὅτι ἐκ ἡμῶν ἐμελλε διε
 ρχθῆναι + καὶ ὡς ἐλθὼν ἐπὶ τὸν πόπον· ἀ
 μαβλέψας οἷον εἶδεν αὐτὸν· καὶ εἶπεν
 πρὸς αὐτὸν + Ζαῦχαί σ'· ἀσάσας κατὰ
 βῆθι· σήμερον γὰρ ἐν τῷ οἴκῳ σου δέμε
 μέναι + καὶ ἀσάσας κατέβη· καὶ ὑπε
 δέξατο αὐτὸν χαῖρων + καὶ ἰδόντες πάν
 τες δ' ἐγὼ γινώσκοντες λέγοντες· ὅτι παῖρ αὐ
 μαρτωλῶ ἀνδρὶ ἐσθλῷ ἐγενήθη κατὰ λίσαι +

σαθείς δὲ ζαχαρίας εἶπεν πρὸς τὸν κύριον· ἰδού τα
 ἡμίση τῶν ἐπαρχόντων μου καὶ δίδωμί τοις
 πτωχοῖς· καὶ ἔτι νόστιμὸν ἐσὺ κοφάρτησαι, ἀπο
 δίδωμί τετραπλοῦν· εἶπεν δὲ πρὸς αὐτὸν ὁ
 κύριος· ὅτι σήμερον στήναι τῷ οἴκῳ τοῦ πατρὸς σου· κα
 θὸς τί καὶ αὐτὸς υἱὸς ἀβραάμ ἐστιν· καὶ ἔλθου γὰρ
 ὁ υἱὸς τοῦ ἀφ᾽ οὐ· ζῇ τῆσαι καὶ σώσαι τὸ ἀπολωλός·

Τῇ β' τῆς 15' κατὰ μαρκον.

Καὶ ῥῶ ἐκῆν· ἀποστέλλοι πρὸς τὸν κύριον τῶν
 τῶν φαρισαίων καὶ τῶν ἱεροδωμάτων· ἵνα αὐτὸν
 ἀρᾶσω σιλόγω· οἱ δὲ ἐλθόντες λέγουσιν αὐ
 τῷ· διδάσκαλε· οἶδαμεν ὅτι ἀληθὺς ἔσθαι οὗ
 μέλλοις περιούδενός· οὐ γὰρ βλέπεις, εἰς πρὸ
 σωπον ἄνθρωπον· ἀλλ' ἐπ' ἀληθείας τὴν ὁδὸν τοῦ θ
 διδάσκεις· ἐξεστὶ κήρυξον καὶ σαριδοῦναι·
 ἡ οὐ· δώμεν; ἡ μὴ δώμεν; ὁ δὲ ἀδύσ αὐτῶν
 τὴν ὑπόκρισιν· ἔπεν αὐτοῖς· τί με πειράζετε·
 φέρτε μοι δηνάριον· ἵνα ἰδῶ· οἱ δὲ ἤνεγκαν
 καὶ λέγουσιν αὐτοῖς· ἀπόδοτε τὰ καὶσαρος· καὶ θ
 ρί· καὶ τὰ τοῦ θ
 τῷ θ
 καὶ ἐθαύμασαν
 ἐπαιτῶν·

Τῇ γ' τῆς 15' κατὰ μαρκον.

Καὶ ῥῶ ἐκῆν· ἐρχονται σαδδουκαῖοι πρ
 τοῦ κύριου· οἱ τὴν β
 λέγουσιν ἀράσασθαι μὴ εἶναι·
 καὶ ἐπηρώτησαν αὐτὸν λέγοντες· διδάσκα
 λε· μὴ ἰσθῇς ἐγραφεν ἡμῖν· ὅτι ἐάν τις τοσ
 ἀδελφὸς ἀποθάνῃ· καὶ καταλήπῃ τὴν γυναῖκα
 καὶ τέκνῃ αὐτῆς· ἵνα λάβῃ τὸ ἀδελφὸς αὐ
 τοῦ τῶν γυναικαὶ αὐτοῦ· καὶ ἐξαγαγῇ αὐ
 αὐτὴν τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ· ἐπὶ τὰ ἀδελφοί

ἦσαν· καὶ ὁ πρῶτος ἐλάβεν ἡμίαντα· καὶ ἀπο
θνήσκων· οὐκ ἀφῆκεν σπέρμα· καὶ ὁ δεύτε
ρος ἐλάβεν αὐτῷ· καὶ ἀπέθανεν· καὶ οὐδὲ
αὐτὸς ἀφῆκεν σπέρμα· καὶ ὁ τρίτος ὡς αὐ
τὸς· καὶ ἐλάβον αὐτῷ οἱ ἐπὶ αὐτῷ· καὶ οὐκ
ἀφῆκεν σπέρμα· ὅχα ἅτι πάντων ἀπέθανεν
καὶ ἡ ἡμίαν· ἐν τῇ ἀμασῶσι ὅταν ἀμασῶσι·
τίμος αὐτῷ ἐσταίῃ· οἱ γὰρ ἐπὶ αὐτῷ αὐτῷ
ἡμίαντα· καὶ ἀπεκρίθη ὁ ἰσ' εἰπὼν αὐτοῖς
οὐδὲ αὐτοῦτο πλαγιάσει· μή ἔδωκες τὰς γραφὰς
μὴδὲ τὴν δυνάμειν τοῦ θύ· ὅταν γὰρ ἐνεκρῶν
ἀμασῶσιν· οὔτε γαμοῖσιν οὔτε γαμίσκονται·
ἀλλ' ὡς ἄγγελοι (9) ἐν τοῖς οὐρανοῖς· περὶ δὲ
τῶν νεκρῶν ὅτι ἐγγόρονται· οὐκ ἀνέγνωτε ἐν τῇ
βίβλῳ μεσέως ἐπὶ τοῦ βάρου· ὡς ἔπεν αὐτῷ
ὁ θεὸς λέγων· ἦ ὁ θεὸς Ἀβραάμ· καὶ ὁ θεὸς Ἰσαάκ·
καὶ ὁ θεὸς Ἰακώβ· οὐκ ἔστιν ὁ θεὸς νεκρῶν· ἀλλὰ θεὸς ζών
των· ἡμεῖς οὖν πολὺ πλαγιάσει· ~ τῇ δ' τῆς 15

Καὶ ὡς ἐκείνῳ· προσελθὼν κατὰ μαζ'
εἰς τῶν γραμματέων τῷ ἰσ'· ἀκούσας αὐτῶν οὐ
ζητοῦντων· ἔδωκεν ὅτι καλῶς αὐτοῖς ἀπεκρίθη·
ἐπὶ ῥῶτισιν αὐτῶν· ποία ἐστὶ πρώτη πάντων
ἐν πολῇ· ὁ δὲ ἰσ' ἀπεκρίθη αὐτῷ· ὅτι πρῶ
τη πάντων τῶν ἐν πολῇ· ἀκούει ἡλ· καὶ ὁ θεὸς
ἡμῶν· καὶ εἰς ἐστίν· καὶ ἀγαπᾷ σε ἐν τῷ
θρόνῳ· ἐξ ὅλης τῆς καρδίας σου· καὶ ἐξ ὅ
λης τῆς ψυχῆς σου· καὶ ἐξ ὅλης τῆς διακρί
σεως σου· καὶ ἐξ ὅλης τῆς ἰσχύος σου· αὕτη
πρῶτη ἐν πολῇ· καὶ ἡ δαπτέραι ὁμοίαι αὐτῇ.

ἀγαπήσεις τὸν πλησίον σου ὡς ἑαυτόν· καὶ
 ζῶν τούτων· ἄλλῃ ἐν πολλῇ οὐκ ἔστιν· καὶ εἰ
 περ αὐτῷ ὁ γραμματεὺς· καλῶς δὲ δάσκαλος
 ἐπ' ἀληθείας ἔπει· ὅτι ἄς ἔστιν· καὶ οὐκ ἔ
 σιν ἄλλος· πλὴν αὐτοῦ· καὶ τὸ ἀσπαρ αὐ
 τὸν ἐξ ὅλης τῆς καρδίας· καὶ ἐξ ὅλης τῆς
 σιωείας· καὶ ἐξ ὅλης τῆς ψυχῆς· καὶ ἐ
 ξ ὅλης τῆς ἰσχύος· καὶ τὸ ἀσπαρ τὸν πλη
 σίον ὡς ἑαυτόν· πλείον ἔστιν πάντων τῶν
 ὁλοκαυτωμάτων καὶ θυσῶν· καὶ οἱ οὗτοι
 δὲ αὐτὸν ὅτι μου κεχῶς ἀπεκρίθη· εἰ
 περ αὐτῷ· οὐ μαρὰν ἔαπὸ τῆς βασιλεί
 ας τοῦ θύ· καὶ οὐδεὶς ἐτόλμα αὐτὸν ἐ
 ἔπερωτήσαι· καὶ ἀποκριθῶς οἱ ἔλεγον
 διδάσκων ἐν τῷ ἱερῷ· πῶς λέγουσιν οἱ γραμμα
 τες· ὅτι οὐκ ἔστιν ἰσχυρὸς· αὐτὸς γὰρ δαδὲ
 εἰπεν ἐν πνίγι· λέγει οὐκ ἐν τῷ κώμῳ καὶ
 θουκδέξιόν μου· ἐὼς ἀνθῶ τοῖς ἐχθροῖς
 σου ὑποπόδιον τῶν ποδῶν σου· αὐτὸς
 οὐκ δαδὲ λήθαι αὐτὸν κῆρ· καὶ πόθεν ἦν αὐτοῦ
 ἔστιν· καὶ ὁποῖος ὄχλος ἴκουσιν αὐτοῦ ἡ δέωσ·

τῇ ἐ τῆς 15 αὐτῆς κατὰ μαρ
 ἰπεν οὐκ· βλέπτε ἀπὸ τῶν γραμματέων
 τῶν θελομένων ἐν σοχαῖς περιπατεῖν· καὶ αὐ
 τασμοῖς ἐν ταῖς ἀγῶραις· καὶ πρωτοκα
 θεδρίας ἐν ταῖς βωαγωγαῖς· καὶ πρωτο
 κλισίας ἐν τοῖς δειπνοῖς· οἱ κατεσθίον
 τες τὰς οἰκίας τῶν κληρῶν· καὶ προφάσεις μα
 κρά προσεχόμενοι· οὗτοι λήφονται περισσ

1
περομνήμα + καὶ καθύλας ὁ ἰσὺς κατέμα
πὶ τοῦ γαβοφύλακτος. ἐθεώρη πῶς ὁ ὅλος
βαλλειχαλκὸν δὲ τὸ γαβοφύλακτον + καὶ πο
λλοὶ πλοῖοι εἰς βαλλον πολλὰ + καὶ ἐλθού
σαι μίαι χῆραι πτωχῇ, εἰς βαλλον λεπτὰ ἰδού.
ὅτι κοδραντίς + καὶ πρὸς καλθαί με
ρος τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ. λέγει αὐτοῖς, ἀ
μὲν λέγω ὑμῖν. ὅτι ἡ χῆρα αὕτη ἡ πτωχῇ,
πλείον πάντων βέβληκεν, τῶν βαλλον
των εἰς τὸ γαβοφύλακτον + πάντες γὰρ
ἐκ τοῦ περισσίου τοῖς αὐτοῖς εἰς βαλλον. αὐ
τὴ δὲ ἐκ τῆς ὑστερήσεως αὐτῆς, πάντα ὅ
σα ἔχεν εἰς βαλλον, ὅλον τὸν βίον αὐτῆς +
ταῦτα λέγων ἔφη. ὅτι οὐκ ἔστι ἀκούειν ἀκούειν.
τῇ παρὰ τῆς 15 εἰς κατὰ μαρκον

Καὶ αὐτὴ εἰρήνη. ἐκ πορδομένου τοῦ
ἰσὺς ἐκ τοῦ ἱεροῦ. λέγει αὐτῇ δὲ τῶν μαθη
τῶν αὐτοῦ + δίδασκαλε. ἰδὲ ποταποὶ
λίθοι καὶ ποταπαὶ οἱ κοδομαί + καὶ ὁ ἰσὺς
ἀποκριθεὶς ἔπεν αὐτῇ. βλέπεις ταῦτα
τὰς μεγάλας οἱ κοδομαί; οὐ μὴ ἀφελῇ
λίθος ἐπὶ λίθῳ, ὃς οὐκ καταλυθῇ + καὶ κα
θιμένου αὐτοῦ εἰς τὸ ὄρος τῶν ἐλαιῶν,
κατέσται πῖ τοῦ ἱεροῦ, ἐπὶ ῥώτων αὐτοῦ
κατὰ δόξαν. πέτρος καὶ ἰακώβος καὶ ἰωάν
νης καὶ ἀνδρέας + ἔπεν ἡμῖν πότε ταῦ
τα ἔσται. καὶ τί τὸ σημεῖον ὅταν μέλλῃ
πάντα ταῦτα συντελεῖσθαι + ὁ δὲ ἰσὺς
ἀποκριθεὶς αὐτοῖς, ἔρξατο λέγειν. βλέ

πετε μή τις ἡμᾶς πλανήσῃ· πολλοὶ γὰρ ἔ-
 λθουσιν ἐπὶ τῷ ὀνόματι μου λέγοντες·
 ὅτι ἐγὼ εἰμι· καὶ πολλοὶ πλανήσοισιν·
 ὅ τ' αὖ δὲ ἀκούσητε πολέμοιο καὶ ἀκούσας πο-
 λέμων· μὴ θορύβῃθε· δεῖ γὰρ γενέσθαι· ἀ-
 λλοῦ πῶ τὸ τέλος· ἐγερθήσεται γὰρ ἔθνος
 ἐπὶ ἔθνος· καὶ βασιλεία ἐπὶ βασιλείᾳ·
 καὶ ἔσονται σεισμοὶ κατὰ τόποις· καὶ ἔ-
 σονται λιμοὶ καὶ ταραχαί· ἀρχαὶ ὠδύνων
 ταῦτα· ~ σαμφατορ 15 κατὰ λουκᾶν·

Κ ἡ περὶ οὗς τὴν παραβολὴν ταύτην· κρῖ-
 τής τις ἡ ἐν τῇ πόλει· τὸν θῦν μὴ φοβούμε-
 νος· καὶ ἄνθρωπον μὴ ἐν τρεπόμενον· χήρᾳ δὲ
 ἡ ἐν τῇ πόλει ἐκείνῃ· καὶ λίγχοι πρὸς αὐ-
 τὴν λήγουσα· ἐν δὲ κησόμεν ἀπὸ τοῦ ἀντι-
 δίκου μου· καὶ οὐκ ἔβλησεν ἐπὶ χρόνον·
 μετὰ δὲ ταῦτα· εἰ πενέμεν αὐτῷ· εἰ καὶ
 τὸν θῦν οὐ φοβούμαι· καὶ ἄνθρωπον οὐκ ἐν-
 τρωμαι· διὰ μέντοι παρέχοντες κόπον τῇ χή-
 ραν ταύτην· ἐν δὲ κησώ αὐτῷ· ἵνα μὴ
 εἰς τέλος ἐρχομένη ὑποπιάξῃ με· εἰ.
 πενδὲ ὅς· ἀκούσατε τί ὁ κριτής τῆς ἀ-
 δικίας λέγει· ὁ δὲ θεὸς οὐ μὴ ποιήσῃ τὴν
 ἐν δὲ κησὶν τῶν ἐλεεινῶν αὐτοῦ· τῶν βο-
 ῶντων πρὸς αὐτὸν ἡμέρας καὶ νύκτος·
 καὶ μαυροθύμων ἐπ' αὐτοῖς· λέγω ὑ-
 μῖν· ὅτι ποιήσῃ τὴν ἐν δὲ κησὶν αὐτῶν
 ἐν ταχέι· ~

15 τοῦ τελευτῆ καὶ τοῦ φαρισαίου ἑλίου·
 ἵπεν ὁ υἱὸς τῶ παραβολῶν ταύτων· ἄνθρωποι
 δὲ ἀνέβησαν εἰς τὸ ἱερὸν προσάξασθαι
 ὁ εἷς φαρισαῖος· καὶ ὁ ἕτερος τελῶνης·
 ὁ φαρισαῖος σάβηε προσέειπεν αὐτὸν ταῦτα
 προσήχθη· ὁ δὲ ἀπεκρίθη· ὅτι οὐκ ἔγωγε
 ὡς περ οἱ λοιποὶ τῶν ἀνθρώπων· ἄρπαγες· ἀδικίαι·
 μοιχοί· ἃ καὶ ὡς οὗτος ὁ τελῶνης· μη
 δὲ ὡς οὗτος τοῦ σαββάτου· ἀπὸ δεκατῶ πάν
 τα ὁσαυτῶμαι· καὶ ὁ τελῶνης μακ
 ρόθεν ἐστὼς· οὐκ ἠθέλησεν οὐδέ ποτε ὁ
 φθαλμὸς εἰς τὸν οὐρανὸν ἐπάρας· ἀλλ' ἐ
 πύπτεν εἰς τὸ στήθος αὐτοῦ λέγων· ὁ δὲ ἰλα
 ρητί μοι τῷ ἀμαρτωλῷ· λέγων ὁ μὲν
 κατέβη οὗτος δεδύκαί μενος εἰς τὸν οἶκον
 αὐτοῦ· ἡ γὰρ ἐκδήμιος· ὅτι πᾶς ὁ υἱὸς
 αὐτοῦ ταπεινωθήσεται· ὁ δὲ ταπεινῶν
 αὐτὸν υἱωθήσεται· ~ πηⲥⲱⲓⲥ ⲓⲥ ⲁⲩⲓ
 ἵπεν ὁ υἱὸς τοῦ εἰσαγγεῖα κατὰ μαρ
 μαρταῖς· βλέπετε δὲ ὑμεῖς εἰς αὐτοὺς· π
 ραδῶσοις γὰρ ὑμᾶς εἰς βωδῖαι καὶ εἰς ὕ
 μαλῶν δαρήσεσθε· καὶ ἐπὶ ἡγεμόνων
 καὶ βασιλέων· σάβηεσθε ἐνεκεν ἐμοῦ εἰς
 μαρτύριον αὐτοῖς· καὶ εἰς πάντα τὰ
 ἔθνη ὅτι πρῶτον κηρύχθη τὸ εὐαγγέλιον·
 ὅτι ἂν δὲ ἀβήσωσιν ὑμᾶς παραδιδόντες μὴ
 προσμεριμᾶτε τί λαλήσητε· καὶ δε μελε
 τᾶτε· ἀλλ' ἐκδοθήτω ὑμῖν ἐνεκὴ τῆς ὥρας·
 τοῦτο λαλήτε· οὐ γὰρ ἐστὶ ὑμεῖς οἱ λαλοῦντες·

ἀλλὰ τὸ πᾶν τὸ αἶψον + παραδώσει δὲ ἀδελφὸς
ἀδελφὸν εἰς θάνατον· καὶ πῦρ τέκνον + καὶ
παράσῃσονται τέκνα ἐπὶ γονεῖς· καὶ θανα-
τώσουσιν αὐτοὺς· καὶ ἐμίσησύνενοι ὑπὸ πάν-
των διὰ τὸ ὄνομα μου + ὁ δὲ ὑποκείμενος εἰς τὸ
λῶσ· οὗτος σωθήσεται· ~ τῇ γ' τοῦ 18 ^{ἀν} ^{ἐν}

Κ ἵπεν οὖν· ὅταν ἴδωτε τὸ ^α κατὰ μαρ.
βδέλγμα τῆς ἐρήμιας· τὸ ῥῆθ' ἐν ὑπόδα-
μῇ τοῦ προφήτου· ὡς ὅπου οὐδεὶς· ὁ ἀ-
ναβιβῶν κωμροεῖτω + τότε οἱ ἐν τῇ ἰουδαίᾳ
φάγετωσαν εἰς τὴν ἐρήμion + ὁ δὲ ἐπὶ τοῦ δῶ-
ματος· μὴ καταβάτω εἰς τὴν οἰκίαν + μή-
δ' εἰσελθὼν εἶναι τίς ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτοῦ +
καὶ ὁ εἰς τὸ ἀγρὸν ὦν· μὴ ἐπιστρέψατω εἰς
τὰ ὀπίσω· εἶναι τὸ ἱματίον αὐτοῦ + οὐ αἰ-
δέταις ἐν γαστρὶ ἐχθίσαις· καὶ ταῖς θηλα-
ζούσαις ἐν ἐκθήναις ταῖς ἡμέραις + προσά-
χθετε δὲ ἵνα μὴ γένηται ἡ φυγὴ τῶν χε-
μῶρος + ἔσονται γὰρ αἱ ἡμέραι ἐκείναι
θλίψεις· οἳ αὐτοὺς γέγονεν τοιαύτη ἀπαρχὴ
κρίσεως· ὡς ἐκτίσεν ὁ ^π· ἕως τοῦ νῦν·
καὶ οὐ μὴ γένηται + καὶ ἡμεῖς ἐκλόβω-
σεν τὰς ἡμέρας· οὐ καὶ ἐσώθη πᾶσα
σαρξ· ἀλλὰ διὰ τοὺς σκελετοὺς οἷον ἐξε-
λέξατο· ἐκλόβωσεν τὰς ἡμέρας + καὶ
τότε εἰς τὴν ἐρήμιν ἔπη· ἰδοὺ αὖτε ὁ ^π· ὡς
ἰδοὺ ἐκ· μὴ πείσασθε· ἐγέρθησονται γὰρ
ψαλμοὶ καὶ ψαλμοὶ προφήται· καὶ δο-
σοῦν σημεῖα καὶ τέρατα· πρὸς τὸ ἀπὸ

πλαγᾶν· ἔδωκεν ἀπὸν καὶ τοῖς σιλεπτοῖς· ὑ-
μεῖς δὲ βλέπετε· ἰδοὺ πρὸ ἔρηκα ὑμῶν παρ-
τα· ~ τῇ ὁ τῆς ἰζ αὐτῆς κατὰ μαρ-

Κ ἵπεν ὁ κς τοῖς ἐαυτοῦ μαθηταῖς· ἐν ἑ-
κταταῖς ταῖς ἡμέραις, μετὰ τὴν θλίψιν ἐκ ἡ-
μερῶν· ὁ ἥλιος σκοτιάσεται· καὶ ἡ σελήνη
οὐδώσει τὸ φέγγος αὐτῆς· καὶ οἱ ἀστέρων τοῦ
οὐανοῦ, ὥσπερ ταῖς ἐπίπτοντες· καὶ αἰδνωμένοι
αἱ ἐν τοῖς οὐανοῖς, σαλεύσονται· καὶ τότε
φανταῖται τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου ἐρχόμενον ἐν
νεφέλαις, μετὰ δυναμὸς πολλῆς καὶ δόξης·
καὶ τότε ἀποστέλει τοῖς ἀγγέλοις αὐτοῦ· καὶ
ἐπιτίθειν ἅξιν τοῖς σιλεπτοῖς αὐτοῦ, σιτῶν
τεσσάρων ἀνέμων· ἀπ' ἀκρουρίου ἕως ἀ-
κρου οὐανοῦ· ἀπὸ δὲ τῆς οὐρανίου μαθή-
την παραβολὴν· ὅταν αὐτῆς ὁ κλάδος ἡ
διὰ παλὸς γένηται, καὶ σφύηται φύλλα·
γινώσκετε ὅτι ἐγγὺς τὸ θέρος ἐστὶν ἐπιθύ-
ραις· ἀμὲν λέγω ὑμῖν· ὅτι οὐ μὴ παρελ-
θῇ ἡ γενεὰ αὕτη, μέχρις οὗ ταῦτα πάντα
γένηται· ὁ οὐρανὸς καὶ ἡ γῆ παρελθούσιν·
οἱ δὲ λόγοι μου, οὐ μὴ παρέλθωσιν· ~

Κ τῇ ὁ τῆς ἰζ αὐτῆς κατὰ μαρ-
ἵπεν ὁ κς τοῖς ἐαυτοῦ μαθηταῖς· ὁ οὐρανὸς
καὶ ἡ γῆ παρελθούσιν· οἱ δὲ λόγοι μου οὐ μὴ
παρέλθωσιν· περὶ δὲ τῆς ἡμέρας ἐκεῖ-
νης καὶ ὥρας, οὐδεὶς οἶδεν· οὐδὲ οἱ ἀγγέ-
λοι οἱ ἐν οὐανῷ· οὐδὲ ὁ υἱὸς, ἢ μὴ ὁ πατήρ·
βλέπετε· ἀγρυπνεῖτε· καὶ προσεύχετε·

οὐ κοῖδατε γὰρ ποτε οὐκ αἰρούσθητε· ὡς ἄνθρωπος
 ἀπόδημος, ἀφείσθη τῶν οἰκίαν αὐτοῦ· καὶ δώσω
 τοῖς δούλοις αὐτοῦ τὴν ἐξουσίαν· καὶ ἐκεί-
 σω τὸ ἔργον αὐτοῦ· καὶ τῷ θυρωρῷ συνετεί-
 λατω ἰνα γρηγορή· γρηγορεῖτε οὖν· οὐκοῖ-
 दाτε γὰρ ποτε ὅς τις οἰκίαν εἰσέλθῃ· ὅψα-
 ῖ' μυστονύκτιον, ἢ ἀλετοροφονίας, ἢ πρῶτον
 μὴ ἐλθὼν ἐξαίφνης ἀρῇ ὑμᾶς καθάδου-
 τας· ἀλλ' ἐμὴν λέγω· πᾶσιν λέγω· γρηγο-
 ρήτε· ὡς δὲ τὸ πάσχα καὶ τὰ ἄζυμα μετὰ
 δύο ἡμέρας· καὶ ἐξήτοιμα οἱ ἀρχιερεῖς καὶ
 οἱ γραμματεῖς πῶς αὐτὸν ἐν δόλῳ κρατήσου-
 ντες ἀποκτείνωσιν· ἐλέγον δὲ· μὴ ἐν
 τῇ ἑορτῇ, ἵνα μὴ θόρυβος ᾖ τοῦ λαοῦ·

τῇ παρὰ τῆς 18 εὐ' κατὰ μαρκον·

Καὶ ἰδοὺ ἐκείνῳ ὅντος τοῦ Ἰησοῦ ἐν θανά-
 τῳ, ἐν τῇ οἰκίᾳ σίμωνος τοῦ λεπρού· κατ'
 ἡμέραν αὐτοῦ· ἦλθεν γυνὴ, ἔχουσα
 ἀλάβαστρον μύρου· μάρδον πίστεως πο-
 λυτελοῦς· καὶ συντρίψασα τὸ δαύβασ-
 τρον, κατέχευεν αὐτοῦ κατὰ πῆλιν κεφαλῆς·
 ἡσαν δὲ τίμες ἀγαπαιτούντες πρὸς ἐ-
 αὐτοῖς καὶ λέγοντες· εἰς τί ἡ ἀπόληψις
 αὕτη τοῦ μύρου γέγονεν· ἡ δὲ ἀποστὰς
 τοῦτο πρὸς αὐτὴν ἐπαύω τριακοσίων δι-
 ναρίων, καὶ δώθῃναι τοῖς πτωχοῖς· καὶ
 ἐν ἐβριμῶντο αὐτῇ· ὁ δὲ ἰὸς εἶπεν· ἀ-
 φῆτε αὐτῇ· τί αὐτῇ κόποις παρέχετε·
 καλὸν ἔργον ἡρῆσατο ἐν ἐμοί· πάντοτε

1
Γὰρ τοῖς πτωχοῖς ἔχοντες μεθ' αὐτῶν· καὶ ὅτι αὐ-
θελήται, δὴν αὐτοῖς εἰποιῖν· ἐμε-
δ' οὐ πάντοτε ἔχον· ὅτι οὐκ αὐτὴ, ἐποι-
ησεν· προέλαβεν μερῆσαι μοι τὸ σώμα,
εἰς τὸν σὺν ταφιασμοῦν· ἀλλ' ὡς λέγω ὑ-
μῖν· ὅπου ἐὰν κηρύχθῃ τὸ εὐαγγέλιον τοῦ-
το εἰς ὅλον τὸν κόσμον· καὶ ὅς ἐποιήσεν
αὕτη λαλῆθ' ὅτι εἰς μνημόσυνον αὐτῆς·

σαύβατον 18. κατὰ χουκὰν.
Εἶπεν ὁ κύριος τοῖς ἐκ τοῦ μαθηταῖς· προσέ-
χεν ἀπὸ τῶν γραμματέων τῶν θελούντων
περιπατεῖν ἐν σοταῖς + καὶ φίλοις των ἀ-
σπασμοῖς ἐν ταῖς ἀγῶραις· καὶ πρωτοκα-
θεδρίαις ἐν ταῖς (σωαγωγαῖς· καὶ πρωτοκλι-
σίαις ἐν τοῖς δέιπνοις + οἱ κατεσθίοντες
οἰκίαις τῶν χηρῶν· καὶ προφάσει μακρὰ
προσεύχονται· οὗτοι χήφονται περισσότε-
ρον κρημα + ἀναβλέψας δ' εἶδεν τοῖς
βάλλοντας τὰ δῶρα αὐτῶν εἰς τὸ λαβοφύ-
λακτον· πλοιοῖσι + εἶδεν δέ τινα καὶ
τήραν πενιχρὰν βάλλουσαν ἐν δόλο
πταῖ + καὶ εἶπεν· ἀληθῶς λέγω ὑμῖν· ὅ-
τι ἡ χήρα ἢ πτωχὴ αὕτη, πλῆθον πάντων ἐ-
βαλεν + ἅπαντες γὰρ οὗτοι ἐκ τοῦ περι-
σσεύοντος αὐτοῖς ἐβάλλον εἰς τὰ δῶρα
τοῦ θ'· αὕτη δ' ἐκ τοῦ ὑπερήματος αὐτῆς
ἅπαντα τὸν βίον αὐτῆς ἐβαλεν +
ταῦτα λέγων ἐφώνει· ὁ ἔχων ὦτα
ἀκούειν ἀκούετω·

κυρία μὲν πρὸς τὴν ἀπόλυσιν τοῦ αἵματος καὶ λουκαῖον.
 ἔπειθ' οὕτως τὴν παραβολὴν τράπτεν. ἀπὸ τῆς
 ρεῖχεν δὲ νομοῖο· καὶ εἰπεν ὁ νεώτερος αὐ-
 τῶν τῷ πρῶτῳ + πτερ' ὁδός μοι τὸ ἐπιβαλόν με-
 ρὸς τῆς οἰκίας· καὶ δι' εἰλεν αὐτοῖς τὸν βίον·
 καὶ μετ' οὗτο πολλὰς ἡμέρας. (σωαβαγῶν ἀπαν-
 τα ὁ νεώτερος ἦτο· ἀπεδήμησεν εἰς χώραν
 μακρὰν· καὶ ἐκὼς δὲ σκορπίσεν τὴν οἰκίαν
 αὐτοῦ ζῶν ἀσπίτως + διαπαρήσαντο σὺν
 αὐτοῦ πάντα· ἐγένετο λίμνη ισχυρὸς, κατὰ
 τὴν χώραν ἐκέντη· καὶ αὐτὸς ἤρξατο τοῦ
 ἐκτερεῖν + καὶ ποταθεῖς ἐκολλήθη ἐν
 τῶν πολιτῶν τῆς χώρας ἐκέντης· καὶ ἐπε-
 μψεν αὐτὸν εἰς τοὺς ἀγροὺς αὐτοῦ, βοὺς καὶ
 χοῖροι + καὶ ἐπεθύμασεν γεμίσαι τὴν κοι-
 λίαν αὐτοῦ ἀπὸ τῶν κερατίων ὧν ἡθιον
 οἱ χοῖροι· καὶ οὐδεὶς ἐδίδου αὐτῷ + εἰς
 ἐαυτὸν δὲ ἐλθὼν εἶπεν· πόσοι μίσθιοι
 τοῦ πρῶτου περιστάσειν ἀρτῶν, ἐγὼ
 δὲ λιμῶ ἀπόλλυμαι· ἀναστὰς πορεύ-
 σομαι πρὸς τὸν πρῶτον· καὶ ἐρῶ αὐτῷ·
 πτερ' ἡμερτον εἰς τὸν οἶκόν σου καὶ ἐν ὧπι-
 ὀν σου· οὐκ ἐτίθμι ἀξίως κληθῆναι
 ἡτοῦ σου· ποίησον μεὺς ἐν αὐτῶν μίσθι-
 ὶ σου· καὶ ἀναστὰς ἐλθεν πρὸς τὸν
 πρῶτον αὐτοῦ· ἐπὶ δὲ αὐτοῦ μακρὰν ἀ-
 πέχοντος· ἤδεν αὐτὸν ὁ πρῶτος αὐτοῦ, καὶ
 ἐσολαχνίαθη· καὶ δραμῶν ἐπέσεν ἐ-
 πί τὸν τραχήλον αὐτοῦ, καὶ κατεφίλησεν

1
αὐτὸν· εἶπεν δὲ αὐτῷ ὁ υἱὸς· πῆρ· ἵμαρ
τοῦ ἔξω τοῦ οἴκου καὶ ἐνώπιόν σου· καὶ οὐ
κί τίς με ἀξιοσκηθῆναι υἱό σου· εἶπεν
δὲ ὁ πῆρ αὐτοῦ πρὸς τοὺς δούλους αὐτοῦ·
ἐξενέματε τὴν σολῶν τὴν πρώτην, καὶ
ἐνδύσατε αὐτὸν· καὶ δότε δατύλιον εἰς
τὴν χεῖρα αὐτοῦ· καὶ ὑποδήματα εἰς τοὺς
πόδας· καὶ ἐνέματε τῷ τὸν μόσχον τὸν
σῆτάτον, θύσατε· καὶ φαγόντες ἀφ' αὐ-
θώμεν· ὅτι οὗτος ὁ υἱός μου, μεκρὸς ἐγὼ
καὶ ἀνέβησεν· καὶ ἀπολωλὸς καὶ ἠρέθη·
καὶ ἤρξαντο ἀφραίμεσθαι· ὡς δὲ ὁ υἱὸς
αὐτοῦ ὁ πρεσβύτερος ἐναβρῶ· καὶ ὡς ἐρ-
χόμενος ἤγγισεν τῇ οἰκίᾳ· ἡ κοίτης αὐ-
τοῦ ἐφονίασεν καὶ χωρῶν· καὶ προσκαλεσα-
μένος ἐστὶν αὐτῶν παίδων· ἐπὶ τῷ θανά-
τῳ τῶν ταύτων· ὁ δὲ ἔπεν αὐτῷ· ὅτι ὁ ἀ-
δελφός σου ἡ κεῖ· καὶ ἐθίσεν ὁ πῆρ σου τὸν
μόσχον τὸν σῆτάτον, ὅτι ἡγίασεν αὐτὸν
ἀπελαβεν· ὡς γὰρ ἡ δὲ καὶ οὐκ ἔλθον
ἔσθαι ἐκείν· ὁ οἶκος πῆρ αὐτοῦ ἐξελθὼν π-
ρὸς αὐτὸν· ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν
τῷ πῆρ· ἰδοὺ τοσαῦτα ἔτι δουλεύω σοι·
καὶ οὐδέποτε ἐν τολῶ σου παρήλθον·
καὶ ἐμοὶ οὐδέποτε ἐδωκας ἔριφον· ἵνα
μετὰ τῶν φίλων μου εὐφρανθῶ· ὅτε δὲ
ὁ υἱὸς σου οὗτος· ὁ καταφαγῶν σου τὸν
βίον μετὰ πορνῶν ἔλθον, ἐθίσας αὐτῷ
τὸν μόσχον τὸν σῆτάτον· ὁ δὲ εἶπεν

αὐτῷ· τίμωρον· σὺ πάντοτε μετὰ μου εἶ· καὶ
 πάντα ἐμὰ σάβη· δ' ἐφάρθην αὖτε καὶ
 χαρῆναι ἐ'δ'· ὅτι ὁ ἀδελφός σου οὗτος· με
 πρὸς ἡμῶν καὶ ἀνέβησεν· καὶ ἀπολωλὸς ἡμῶν καὶ
 εὐρέθη· ~ τῇ β' τῆς ἀποκρί· κατὰ μαρ
 τῶν καιρῶν ἐκείνων· ἡγίστου οἷο' δ' ἐξ Ἱερουσαλὴμ
 καὶ ἦλθεν εἰς βηθανίαν καὶ βηθανίαν πρὸς τὸ
 ὄρος τῶν ἐλαιῶν· ἀποστέλλει δὲ τῶν μαθη
 τῶν αὐτοῦ· καὶ λέγει αὐτοῖς· ὑπάγετε εἰς τὴν
 κώμην τὴν κατ' ἐναντίον ὑμῶν· καὶ ἀθέως
 εἰς πόρον μένου εἰς αὐτὴν· ἀρήσθε πῶλον
 δεδεμένον· ἐφ' οὗ οὐδεὶς ἀνὴρ κεκαθικέν·
 λίσσασθε αὐτὸν ἀσάτετε· καὶ ἐ'άν τις ὑ
 μῖν εἴπῃ· τί ποιεῖτε τοῦτο; ἀπατεῖτε ὅτι ὁ
 κύριος αὐτοῦ χρειὰν ἔχει· καὶ ἀθέως αὐ
 τὸν ἀποστέλλει· ἀπ' ἡλθον δὲ καὶ ἔ
 ρον πῶλον δεδεμένον πρὸς τὴν θύραν· ὅξω
 ἐπὶ τοῦ ἀμφόδου· καὶ λύοισιν αὐτὸν· καὶ
 τὴν τῶν ἐκείνων ἐσηκότων· ἐ'λέγον αὐτοῖς·
 τί ποιεῖτε· λύοντες τὸν πῶλον; οἱ δὲ εἶ
 πομεν αὐτοῖς· καθὼς ἐνετέλλετο οἷο'· καὶ
 ἀφῆκαν αὐτοῖς· καὶ ἤγαγον τὸν πῶλον
 πρὸς τὸν ἵν· καὶ ἐπέβαλον αὐτῷ τὰ ἱ
 ματῖα αὐτῶν· καὶ ἐκάθισεν ἐπ' αὐτῷ·
 πολλοὶ δὲ τὰ ἱματῖα αὐτῶν ἐσώσαν εἰς
 τὴν ὁδόν· ἄλλοι δὲ σοιβάδας ἐ'κοπτον ἐκ
 τῶν δένδρων· καὶ ἐσώριον εἰς τὴν ὁδόν·
 καὶ οἱ προάγοντες καὶ οἱ ἀκολουθοῦντες
 ἐ'κραζον λέγοντες· ὡς ἀνὰ· ἀ'λοσημε

5
ρος ἐν ὀνόματι αὐτοῦ· ἀλοφύμεν ἡμεῖς ἐρχομένη
βασιλεία ἐν ὀνόματι κυρίου τοῦ πατρὸς ἡμῶν
δαδὴ· καὶ ἐξῆλθεν εἰς ἱεροσόλυμα οὗτος
καὶ εἰς τὸ ἱερόν· καὶ περιβλεψάμενος
πάντα· ὁψίας ἦδη οἷοις τῆς ὥρας, ἐ-
ξῆλθεν εἰς βηθαρίαν μετὰ τῶν δώδεκα·

τῇ Γ τῆς ἀποκρῆς κατὰ μαρ.

Καὶ ὡς ἔκειτο· ἰούδας οἰσκὰριώτης εἰς
τῶν δώδεκα· ἀπῆλθεν πρὸς τοὺς ἀρχιερεῖς·
ἵνα παραδῷ τὸν ἱὸν αὐτοῦ· οἱ δὲ ἀκούσαν-
τες ἐχάρησαν· καὶ ἀπηγγέλαν το αὐτῷ·
ἀγγέριον δοῦναι· καὶ ἐζήτησεν πῶς αὐκαίρως
αὐτὸν παραδῷ· καὶ τῇ πρώτῃ ἡμέρᾳ τῶν
ἄζυμων· ὅτε τὸ πάσχα ἔθυσον· λέγουσιν
αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· ποῦ θέλεις ἀπελ-
θόντες ἐτοιμάσωμεν· ἵνα φάγησιν τὸ
πάσχα· καὶ ἀποσέμνησιν τῶν μαθητῶν
αὐτοῦ· καὶ λέγει αὐτοῖς· ὑπάγετε εἰς τὴν
πόλιν· καὶ ἀπαρτήσεται ὑμῖν ἄρτος κερὰ
μῖον ὕδατος βασάνων· ἀκολουθήσατε
αὐτῷ· καὶ ὅπου ἐὰν εἰσελθῇ, εἴπα-
τε τῷ οἰκοδεσπότῃ· ὅτι ὁ δὲ δαύκας λέγει
λέγῃ· ποῦ ἐστὶ τὸ κατάλυμα, ὅπου τὸ
πάσχα μετὰ τῶν μαθητῶν μου φάγω·
καὶ αὐτὸς ὑμῖν δείξῃ· ἀμώσαι οὐ μέγα
ἐσθωμένον ἐπιμορ· ἐκθῆτε ἐτοιμάσα-
τε ἡμῖν· καὶ ἐξῆλθον οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ·
καὶ ἦλθον εἰς τὴν πόλιν· καὶ ἔβρου καθὼς
εἶπεν αὐτοῖς· καὶ ἦτοίμασαν τὸ πάσχ^α

καὶ ὁ ψίας γενομένης ἐρχεται μετὰ τῶν δώ-
 δεκα· καὶ ἀρακὴς μένων αὐτῶν καὶ βοθιόν-
 των· εἶπεν οὖτος· ἀμὲν λέγω ὑμῖν· ὅτι εἰς
 ἐξ ὑμῶν παραδώσει με, ὁ βωθίων μετ' ἐμοῦ·
 οἱ δὲ ἤρξαντο λιπεῖσθαι καὶ λέγειν αὐτῷ· ἦ κα-
 θῆς, μή τίς ᾄδῃ; καὶ ἄλλος, μή τίς ᾄδῃ;· ὁ δὲ ἄ-
 ποκριθεὶς ἔπεν αὐτοῖς· εἰς ἐκ τῶν δώδεκα·
 ὁ ἐμβαπτόμενος μετ' ἐμοῦ εἰς τὸ πρυβλίον·
 ὁ μὲν ἰδὼς τοῦ ἀφ' οὗ ὑπάγει καθὼς γέγραπται
 περὶ αὐτοῦ· οὐαὶ δὲ τῷ ἀφ' οὗ ἐκθήνω, διότι
 ὁ ἰδὼς τοῦ ἀφ' οὗ παρὰ δίδοται· καλὸν γὰρ αὐ-
 τῷ ἵ' οὐ κε γενηθήσεται ἀφ' οὗ ἐκθήνω· καὶ βο-
 θιόν των αὐτῶν· λαβὼν οὖτος ἄρτον, εὐλο-
 γήσας· ἔκλασεν, καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς· καὶ
 εἶπεν· λάβετε φάγετε· τοῦτο ἐστὶ τὸ σῶμα
 μου· καὶ λαβὼν τὸ ποτήριον ἀχαριστήσας
 ἔδωκεν αὐτοῖς, καὶ ἔπιον ἐξ αὐτοῦ πάν-
 τες· καὶ εἶπεν αὐτοῖς· τοῦτο ἐστὶ τὸ αἷμα
 μου τὸ τῆς καινῆς διαθήκης τὸ περιπο-
 λῶν ἐκχυνόμενον· ἀμὲν δὲ λέγω ὑμῖν·
 ὅτι οὐκέτι οὐ μὴ πίνω ἐκ τοῦ γενηθήματος
 τῆς ἀμπελῆς, ἕως τῆς ἡμέρας ἐκθήσεως·
 ὅταν αὐτὸ πίνω καινὸν, ἐν τῇ βασιλείᾳ
 τοῦ θεοῦ· καὶ ὑμεῖς ὅταν ἐξηλθομεν εἰς τὸ
 ὄρος τῶν ἐλαιῶν· καὶ λέγει αὐτοῖς οὖτος·
 ὅτι πάντες σκαρδαλιθήσεσθε· ὅτι γέγρα-
 πται· πατάξω τὸν ποιμένα καὶ διάσκορ-
 πίσθήσεται, τὰ πρόβατα· ἀλλὰ μετὰ τὸ ἐ-
 γερθῆναι με, προάξω ὑμᾶς εἰς τὴν γαλιλαίαν·

ὁ δὲ πρὸς ἑφ' αὐτῷ· καὶ ὅ πάντες σκαρδαλι-
αθίσονται· ἀλλοῦ κ' ἔγωγε· καὶ λέγει αὐτῷ ὁ ἴσ-
αμὲν λέγουσι· ὅπου σήμερον ἐν τῇ νύκτι ταύ-
τη· πρὶν ^{δε} ἁλέκτωρα φωνῆσαι· τρεῖς ἀπαρ-
νήσημε· ὁ δὲ πρὸς σὺ περιαιτοῦ ἐλέγεν
μάλλον· εἴ μιν δέ τι βλαποθαρήσοι· οὐ μὲν
σε ἀπαρνήσωμαι· ὡς αὐτῷ δὲ καὶ πάντες
ἐλθόν· καὶ ἔρχονται εἰς χοροῖον· οὐ τὸ ὄνο-
μα μεθόμιμαρ· καὶ λέγει τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ·
καθίσαντες ὧδε· ἕως πρὸς ἄξωμαι· καὶ πα-
ραλαμβάνει τὸν πέτρον καὶ ἰακώβον καὶ ἰωάννην
μεθ' αὐτοῦ· καὶ ἤρξατο σκῆμα βῆθαι καὶ ἀδελ-
φοποιεῖν· καὶ λέγει αὐτοῖς· περίλυπός ἐστιν ἡ ψυ-
χή μου ἕως θανάτου· μέγα πτε ὧδε καὶ γρη-
γορήτε· καὶ προσελθὼν μετ' αὐτῶν ἐπέσεν ἐπὶ
τὴν γῆν· καὶ προσκύχθησιν αὐτῷ αὐτομόν ἐστι
παρέλθῃ ἀπ' αὐτοῦ ἡ ὥρα· καὶ ἔλεξεν· ἀββὰ
ὁ πῦρ· πάντα δυνάσαιοι· παρένεγκε τὸ
ποτήριον ἀπὸ τοῦ πατρὸς· ἀλλοῦ τί θέλω,
ἀλλ' αὐτίς· καὶ ἔρχεται καὶ ἀνίσταται αὐτοῖς
καθεύδοντας· καὶ λέγει τῷ πέτρῳ· σίμων,
καθάδεις; οὐκ ἔσθης μίαν ὥραν γρηγο-
ρεῖσαι· γρηγορήτε καὶ προσάχθε, ἵνα
μὴ εἰσελθῇτε εἰς πειρασμόν· τὸ μεν πρῶτον
πρόθυμον· ἡ δὲ σαρκὶς ἀδυνατῇ· καὶ πάλιν
ἀπελθὼν προσκύχεται· τὸν αὐτὸν λόγον ἔπων·
καὶ ὑποστρέψας ἔρχεται αὐτοῖς πάλιν καθάδον-
τας· ὡς ἂν γὰρ οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν βεβαρύν-
μενοι· καὶ οὐκ ἔδυσαν τί αὐτῷ ἀποκριθῶσι·

καὶ ἔρχετο τὸ τρίτον· καὶ λέγει αὐτοῖς· καθά-
 δακτοι ποὺ καὶ ἀναπαύεσθε· ἀπέχε· ἐλ-
 θεν ἡ ὥρα· ἰδοὺ παραδίδωται οὗτος τοῦ
 ἀνθρώπου διὰ τὰς χεῖρας τῶν ἁμαρτανῶν· εἰς
 ῥάθει ἄγωμεν· ἰδοὺ ὁ παραδίδω με ἡ γῆ·

τῇ δὲ τῆς ἀποκρίσεως κατὰ μαρτυρίαν·

Καὶ ῥῶς ἐκείνῳ· λαλοῦντος τοῦ ἰού προσ-
 ποῖς μαθητῶν· παραγίνεται ἰούδας διὰ τῶν
 τῶν δώδεκα· καὶ μετὰ αὐτοῦ ὄχλος πολὺς, με-
 ταμαχαίρων καὶ ξύλων παρὰ τῶν ἀρχιερέων·
 καὶ τῶν γραμματέων· καὶ τῶν πρῶτον πτερόων·
 δεδωκεν δὲ ὁ παραδίδω αὐτὸν σὺν ἁγίῳ
 αὐτοῖς λέγων· ὃν ἂν φιλήσω, αὐτὸς ἐστίν· κτλ
 πλίσσατε αὐτὸν· καὶ ἀπαλάγετε ἀσφαλῶς·
 καὶ ἐλθὼν ἀθέως προσελθὼν αὐτῷ, λέγει
 αὐτῷ· ραββί· ραββί· καὶ κατεφίλησεν
 αὐτὸν· εἰς δὲ τῶν παρεστηκότων· σπῶ-
 σάμενος τὴν μαχαίραν· ἐπαίει τὸν δού-
 λον τοῦ ἀρχιερέως, καὶ ἀφῆκεν αὐτοῦ το-
 ῦτον· καὶ ἀποκριθεὶς οὗτος· εἶπεν αὐ-
 τοῖς· ὡς ἐπλήσθην ἐξῆλθε μετὰ μαχαί-
 ρων καὶ ξύλων· ὁ μαρτύρησεν· καὶ ἡμεῖς
 ραββί· ἡμεῖς προσκύμας ἐν τῷ ἱερῷ δίδασκε·
 καὶ οὐκ ἐκρατήσατέ με· ἀλλ' ἵνα πληρω-
 θῶσιν αἱ γραφαί· καὶ ἀφέντες αὐτὸν
 πάντες ἐφύγον· καὶ διὰ τὴν νεαρίσκοσ
 ἡκολούθησεν αὐτῷ· περιβεβλημένος σιν-
 δόνα ἐπὶ γυμνοῦ· καὶ κρατοῖσιν αὐτὸν
 οἱ νεαρίσκοι· ὁ δὲ κατὰ λιπῶν τῶν σιν

ὁδὸν αὐτῶν ἐφύγον ἀπάντων· καὶ ἀπῆλ-
θον τὸν ἵππον πρὸς τὸν ἀρχιερέα· καὶ (ὡς ἐρχο-
νται αὐτῶ πάντες οἱ ἀρχιερεῖς· καὶ οἱ πρῶτοι βύ-
τεροι καὶ οἱ γραμματεῖς· καὶ ὁ πᾶς πρὸς αὐ-
τὸ μακρόθεν ἠκολούθησεν αὐτῶ ἕως ἔσ-
τει τὴν αὐλήν τοῦ ἀρχιερέως· καὶ ἐὼς (ὡς
καθήμενος μετὰ τῶν ὑπηρέτων· καὶ θερμῶς
ρόμβος πρὸς τὸ φῶς· οἱ δὲ ἀρχιερεῖς καὶ ὁ
λόγος τὸ (ὡς ὄριον· ἐξήτοιμα κατὰ τοῦ ἱεροῦ μαρτυ-
ρίαν τὸ θαυμάσιον αὐτὸν· καὶ οὐχ ἕρις κορυ-
ποιοὶ γὰρ εἶδον μαρτύρου κατὰ τοῦ· καὶ
ἴσαι αἱ μαρτυρίαι οὐκ ἴσασιν· καὶ τίνες
ἀφασάντες· εἶδον μαρτύρου κατὰ τοῦ
λέγοντος· ὅτι ἡμεῖς ἠκούσαμεν αὐτοῦ λέ-
γοντος· ὅτι ζῶ κατὰ λίσσιν τὸν ναὸν τοῦ
τοῦ τοῦ χειροποιήτο· καὶ διὰ τριῶν ἡμε-
ρῶν· ἄλλον ἀχειροποιήτον οἰκοδομήσω· καὶ
οὐδὲ οὕτως ἴση ἡ μαρτυρία αὐτῶν· καὶ αὐ-
μασὰς ὁ ἀρχιερεὺς εἰς μέσσην· ἐπὶ ῥώτῃ
σεν τὸν ἵππον· οὐ καποκρίνη οὐδὲν·
πρὸς τοῖς καταμαρτυροῖσιν· ὁ δὲ ἐστὶ
ὡπα· καὶ οὐδὲν ἀπεκρίνατο· παλὶν ὁ
ἀρχιερεὺς ἐπὶ ῥώτῃ αὐτὸν· καὶ λέγει αὐ-
τῷ· οὐκ ὄχι οὐδὲν τοῦ ἀλογητοῦ· ὁ δὲ ἰσ-
εῖπεν· ζῶ ὁ θεὸς· καὶ ὅψαθε τὸν ἵππον τοῦ
ἀποῦς ἐξ ἡμῶν καθήμενον τῆς δυνάμε-
ως· καὶ ἐρχόμενον μετὰ τῶν νεφελῶν
τοῦ οὐρανοῦ· ὁ δὲ ἀρχιερεὺς διὰ ῥήξας
τοῖς χιτῶνας αὐτοῦ λέγει· τί ἐπὶ χράσαν

ἔχομεν μαρτύρων· ἡ κοίσατε τὸ βλασφη
 μίας· τί μὴ φαίνεται· οἱ δὲ πάντες
 κατέκριναν αὐτὸν· εἶναι ἐνόχον θανά
 του· καὶ ἤρξαντο τῖμες ἐμπύδην αὐ
 τῷ· καὶ περικαλύπτειν τὸ πρόσωπον αὐ
 τοῦ· καὶ κολαφίζειν αὐτὸν καὶ λέγειν αὐτῷ·
 προφήτᾳ σου· καὶ οἱ ὑπηρεταὶ ῥάπισμα
 σὶν αὐτὸν ἔβαλον· καὶ οὕτως τοῦ πα
 τρός ἐν τῇ αὐλῇ κατώ· ἔρχεται μίαν τῶν
 παιδισκῶν τοῦ ἀρχιερέως· καὶ ἰδοὺσα
 τὸν πέτρῳ θερμαιρόμενον· ἐμβλέψα
 σα αὐτῷ· λέγει· καὶ σὺ μετὰ τοῦ μαζαρη
 νοῦ ἰϋ ἦθας· ὁ δὲ ἔρμήσατο λέγων·
 οὐκοῦν οὐτε ἐπίσταμαι τί σὺ λέγεις· καὶ
 ἐξηλθεν ἔξω εἰς τὸ προαύλιον· καὶ ἁ
 λέκτωρ ἐφώρῃσεν· καὶ ἡ παιδίσκη ἰ
 δοὺσα αὐτὸν πάλιν· ἤρξατο λέγειν τοῖς π
 ρεσβυτοῖς· ὅτι οὗτος ἐξ αὐτῶν ἐστίν· ὁ
 δὲ πάλιν ἔρμήπτω· καὶ μετὰ μικρὸν πα
 λιν οἱ παρεστῶτες ἔλεγον τῷ πέτρῳ· ἁ
 ληθῶς ὁξαὶ τῶν εἰ· καὶ γὰρ Σαλιλαῖος εἶ·
 καὶ ἡ λαλῖα σου ὁμοιάζει· ὁ δὲ ἔρξατο
 ἀναθεματίζειν καὶ ὀμῦναι· ὅτι οὐκοῦ
 ν οὐκ ἔγνω· τοῦτο μὲν λέγετε· καὶ σὺ
 δατέρου ἁλέκτωρ ἐφώρῃσεν· καὶ ἐ
 μνήσθη ὅπερ πρὸς τὸ ῥήμα ὃ ᾗ πεν αὐτῷ
 οἶσ· ὅτι πρὶν ἁλέκτορα φωρῇσαι δὲ· αἱ
 παρμήσκειν τρεῖς· καὶ ἐπὶ βαλὼν ἔκλει
 σεν· καὶ ἀθέως ἐπὶ τῷ πρῶτῳ· ἁμβού

1
λιον ποιήσαντες οἱ ἀρχιερεῖς μετὰ τῶν πρῶ-
των βιτέρων καὶ γραμματέων καὶ ὅλον τὸ συνέ-
δριον· δέσαντες τὸν Ἰὺ ἀπὸ κεισάν καὶ
παρέδωκαν τῷ πλάτῳ· καὶ ἐπὶ τῷ ἀποκρί-
σῳ καὶ ῥῶ ἐκόνῳ· σύμβουλιον καὶ μαρ-
τύρους· οἱ ἀρχιερεῖς μετὰ τῶν πρῶτων βι-
τέρων καὶ γραμματέων καὶ ὅλον τὸ συνέδρι-
ον· δέσαντες τὸν Ἰὺ ἀπὸ κεισάν καὶ πα-
ρέδωκαν τῷ πλάτῳ· καὶ ἐπὶ τῷ ἀποκρί-
σῳ καὶ ῥῶ ἐκόνῳ· οὐδὲ πλάτος· οὐδὲ βασιλῆος τῶν ἰ-
ουδαίων· οὐδὲ ἀποκριθεὶς εἰπὺν αὐτῷ· οὐ
λέγων· καὶ κατηγόρου αὐτοῦ οἱ ἀρχιε-
ρεῖς πολλοὶ· οὐδὲ πλάτος· πάλιν ἐπὶ τῷ
ἀποκρίσῳ καὶ ῥῶ ἐκόνῳ· οὐκ ἀποκρίνῃ οὐδὲν·
ἰδὲ πόσας καταμαρτύροισιν· οὐδὲ ἰσ-
τοῦ κέ τῷ οὐδὲν ἀπεκρίθη· ὡς τε θαυμάζον-
τες τὸν πλάτον· κατὰ δὲ ἔορτῃ· ἀπε-
λυσεν αὐτοὺς ἐν αὐτοῖς· οὐ περὶ τοῦτο·
ὡς δὲ ὁ λεγόμενος βαρὰββας μετὰ τῶν συ-
γαστῶν δεδεμένους· οἱ τῶν ἐν τῇ σά-
σῃ φόνον πεποιήκασι· καὶ ἀναβόης
ὁ ὄχλος· ἤρξατο αἰτεῖσθαι καθὼς ἂν ἐπὶ
ταῖς αὐτοῖς· οὐδὲ πλάτος ἀπεκρίθη αὐτοῖς
λέγων· θέλω ἀπολύσω ὑμῖν τῶν βασι-
λέων ἰουδαίων· ἐξήνωσκεν γὰρ ὅτι δι-
αφθόμον παραδεδώκεισαν αὐτὸν οἱ ἀρχι-
ερεῖς· οἱ δὲ ἀρχιερεῖς ἀνέσεισαν τὸν ὄ-
χλον ἵνα μάχον τὸν βαρὰββαν ἀπολύ-
σιν αὐτοῖς· οὐδὲ πλάτος ἀποκριθεὶς πᾶ-

λιν εἶπεν αὐτοῖς· τί οὖν θέλετε ποιήσω· οὐδέ γε
 τε βασιλέα τῶν ἰουδαίων· οἱ δὲ παλὶν ἐκράζαν·
 σπῶσον αὐτὸν· οὐδὲ πῖλᾶτος ἐλέειν αὐτοῖς· τί
 γὰρ κακὸν ἐποίησεν· οἱ δὲ περισσὸ τέρωσ ἐ-
 κράζαν, σπῶσον αὐτὸν· οὐδὲ πῖλᾶτος βουλόμε-
 νος τῷ ὄχλῳ· τὸ ἱκανὸν ποιῆσαι· ἀπέλυσεν αὐ-
 τοῖς τὸν βαρᾶββαν· καὶ παρέδωκεν τὸν Ἰησοῦν
 ἡρώδῃ ἱμασπώθῃ· τῇ παρὰ τοῦ ἀποδ' καὶ καρ'.

Καὶ αὐτῷ ἐκείνῳ· οἱ στρατιῶται λαβούτες τὸν Ἰη-
 σοῦν αὐτὸν ἱμασπῶσαν αὐτὸν· καὶ φέρου-
 σιν αὐτὸν ἐπὶ γολγοθᾶν τὸ ποῦν, ὅ ἐστι μεθερμει-
 νωδόμενον, κραρίου τόπος· ὡς δὲ ὦρα τρίτη
 καὶ ἐσπῶσαν αὐτὸν· καὶ γενομένης ὥρας ἐκ-
 τῆς, σκοτὸς ἐγένετο ἐφ' ὅλην τὴν γῆν ἐὼς ὥρας
 ἑννάτης· καὶ τῇ ὥρᾳ τῇ ἐννάτῃ· ἐβόησεν ὁ
 ἴσ' φωνῇ μεγάλῃ λέγων· Ἐλωὶ· Ἐλωὶ· ληψα-
 σαβαθαρί· ὅ ἐστι μεθερμεινωδόμενον· ὁ θς μὲν
 ὁ θς μου, εἰς τί με ἤκατέλιπες· καὶ τί νῦν
 τῶν παρεστηκότων αἰμοῖσάν τῳ ἔλθον· ἰδοὺ
 ἡλίου φωνῇ· δρακῶν δὲ ἤς· καὶ γεμίσας αὐ-
 τὸν ὄξος περιθείς τε καλᾶμν, ἐπότιζεν
 αὐτὸν λέγων· αἴψα εἰδόμεν, ἔρχεται ἡλί-
 ος καθελεῖν αὐτόν· οὐδὲ ἴσ' ἀφείσ' φωνῇ
 μεγάλην, ἐξέπρασεν· καὶ τὸ καταπέτασ-
 μαί τοῦ μαοῦ ἐσχίσθη εἰς δύο, ἀπὸ ἀνωθεν
 ἐὼς κάτω· ἰδὼν δὲ ὁ κεντυρίων ὁ παρεστη-
 κὼς ἐξεναντίας αὐτοῦ· ὅτι οὕτως κράζας ἐ-
 ξέπρασεν, εἶπεν· ἀληθῶς ὁ ἄρ' οὗτος,
 ἰδοὺ ἡ θύ· ἴσαρ δὲ καὶ γινώσκω ἀπὸ μα-

κρόθεν θεωροῦσαι· ἐν αἷς λίῃ καὶ μαρὶ αἷμα
γαλήνη· καὶ μαρὶ αἷμα τοῦ ἰακώβου καὶ ἰω
σημήρ· καὶ σαλώμη· αἱ καὶ ὁ τε λίῃ ἐν τῇ γα
λιλαίᾳ· ἡ κολούθου αὐτῶ καὶ δὴ κορόου αὐ
τῶ· καὶ ἄλλαι πολλαὶ αἱ (σωαφάσαι αὐτῶ
εἰς ἱεροσόλυμα· ~ σῶ τῆς ἀπολ' καὶ λουκαῖ·

Εἰ πενὸς· βλέπετε μὴ πληρηθῆτε· πολλοὶ
γὰρ ἐλάσσονται ἐν τῷ ὀνόματί μου λέγοντες·
ὅτι ζώμεν· καὶ ὁ καιρὸς ἤγγικεν· μὴ οὖν πο
τραθῆτε ὅπισθ' αὐτῶν· ὅτι ἄρ' ἀκούσητε
πολέμοιο καὶ ἀνατασασίας· μὴ πτωθῆτε·
δεῖ γὰρ ταῦτα γενέσθαι πρῶτον· ὅλ' οὐ καὶ θεῶς
τὸ τέλος· καὶ ἔσται σημεῖα ἐν ἡλίῳ καὶ σε
λήνῃ καὶ ἀστροῖς· καὶ ἐπὶ τῆς γῆς (σωοὶ ἔθνων·
ἐναπορίαι ἡ χοῖσις θαλάσσης· καὶ σάλου, ἀ
ποφυγόντων ἀνθρώπων· ἀπὸ φόβου καὶ προσδοκίας
τῶν ἐπερχομένων ἐν τῇ οἰκουμένῃ· αἱ γὰρ
διωκόμενοι τῶν οὐρανῶν σαλευθήσονται· καὶ το
τεόφονται τὸν ἱόν τοῦ ἀπὸν ἐρχόμενον ἐν ἐ
φέλῃ μετὰ διωκέως καὶ δόξης πολλῆς· ὁ οὐρανὸς
καὶ ἡ γῆ παρελάσσονται οἱ δὲ λόγιοι μου οὐ μὴ πα
ρελθωσὶν· προσέχετε δὲ ἑαυτοῖς μὴ ποτε βα
ρυνθῶσιν ὑμῶν αἱ καρδίαι· ἐν κρεπάλῃ καὶ
μέθῃ· καὶ μερίμναις βιωτικαῖς· καὶ αἱ φνί
διος ἐφ' ὑμᾶς ἐπίσῃ ἡ ἡμέρα ἐκέρμη· ὡς
παῖς γὰρ ἐπελάσεται ἐπὶ πάντα τοὺς καθε
μένους· ἐπὶ πρόσωπον πάντες τῆς γῆς· ἀγρὺ
πρὶν τεοῖω ἐν παντὶ καιρῷ δεόμενοι· ἵνα κατα
ζωθῆτε σὺ φγεῖν πάντα τὰ μέλλοντα γένεσθαι·

καὶ σταθῆναι ἐμπροσθεν τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου· ~
 κυρία ἐκ τῆς ἀποκρίσεως· κατὰ Λουκᾶν·
 ἡ πεντέκωστή· ὁ πατέρας ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐν τῇ δό-
 ξῃ αὐτοῦ· καὶ πάντες οἱ ἅγιοι ἀγγέλοι μετὰ
 τοῦ· τότε καθίσθαι ἐμπροσθεν αὐτοῦ· καὶ ὅτι
 καὶ (ὡς ἀκούσθαι ἐμπροσθεν αὐτοῦ· πάντα
 τὰ ἔθνη· καὶ ἀφορίσθαι αὐτοῖς ἀπαλλήλων·
 ὡς περὶ ποιμὴν ἀφορίζεται τὰ πρόβατα ἀπὸ
 τῶν ἐρίφων· καὶ ποιήσει τὰ μὲν πρόβατα·
 ἐκ δεξιῶν αὐτοῦ· τὰ δὲ ἐρίφια ἐξ ἐξουρύνων·
 τότε ἔρχεται ὁ βασιλεὺς τοῖς ἐκ δεξιῶν αὐτοῦ· λέ-
 γοντες· οἱ δούλοί σου· κληρονομή-
 σατε τὴν ἡγεμονίαν ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ
 πατρὸς καὶ τοῦ υἱοῦ· καὶ ἐπείνασαν καὶ
 ἐδίωκον· ἐδίωκον καὶ ἐποτί-
 σατέ με· ξένος ἡμῶν· καὶ (ὡς γὰρ ἐμεῖς· γυ-
 μνῶς· καὶ περιέβαλετέ με· ἡλθόντες·
 καὶ ἐπεσκέψατέ με· ἐν φυλακῇ ἡμῶν· καὶ
 ἦλθατε πρός με· τότε ἀποκριθήσονται αὐ-
 τῶν οἱ δούλοι λέγοντες· καὶ πότε σε ἔδομεν
 πηνῶντα καὶ ἐθρέψαμεν· ἡ δὲ φωνή αὐτῶν
 ἐποτίσαμεν· πότε σε ἔδομεν ξένον καὶ (ὡς
 γὰρ ἐμεῖς· ἡ γυμνῶν καὶ περιέβαλον· πότε
 σε ἔδομεν ἀδελφὴν καὶ ἐν φυλακῇ καὶ ἦλθον
 πρὸς σε· καὶ ἀποκριθὲς ὁ βασιλεὺς ἐρᾷ αὐτοῖς·
 ἀμὲν λέγω ὑμῖν· ἐφ' ὅσον ἐποιήσατε ἐν τῶν
 τῶν ἀδελφῶν μου τῶν ἐλαχίστων· ἐμοὶ ἐ-
 ποιήσατε· τότε ἔρχεται καὶ τοῖς ἐξ ἐξουρύνων·
 πορεύσθε ἀπέμωσθε καὶ κατηραμένοι εἰς τὸ πῦρ

τὸ αἰώνιον· τὸ ἡτοιμασμένον τῷ διαβόλῳ καὶ
 τοῖς ἀγγέλοις αὐτοῦ· ἐπῆμασα γὰρ, καὶ οὐκ
 ὤκατέ μοι φαγεῖν + ἐδίψησα, καὶ οὐκ ἐποτί-
 σατέ με + ξένος ἦ μιν, καὶ οὐκ ἐνυγείρετέ με +
 γυμνός, καὶ οὐκ ἐπέβαλετέ με + ἀσθενὴς καὶ
 ἐν φυλακῇ, καὶ οὐκ ἐπέκλειψατέ με + τότε ἀ-
 ποκριθήσονται καὶ αὐτοὶ λέγοντες· ἔκ· πότε ἔ-
 ῥοδμεν πληγὰς· ἡ δὲ ψυχή· ἡ ξένος· ἡ γυμνός·
 ἡ ἀσθενὴς· ἡ ἐν φυλακῇ, καὶ οὐδὲν κορίσαι μέ-
 σοι· τότε ἀποκριθήσεται αὐτοῖς λέγων· ἀμὲν
 λέγω ὑμῖν· ἐφ' ὅσον οὐκ ἐποιήσατε ἐν ταύταις
 τῶν ἐλαχίστων, οὐδὲ ἐμοὶ ἐποιήσατε + καὶ ἂν
 πελάσσονται οὗτοι ὅς κ' ἐλάσσιν αἰώνιον, οἱ δὲ
 δίκαιοι ζήσονται αἰώνιον· ~ τῇ β' τῆς περὶ φαυλότητος·

Καὶ οὕτως ἐκείνῳ· ὡς ἡγήσεν ἑαυτὸν κατὰ λόγον·
 οἷός τις βησφαγῇ καὶ βηθαρίαν πρὸς τὸ ὄρος τὸ
 καλούμενον ἐλαιῶν· ἀπέστειλε δὲ αὐτῶν
 μαθητὰς αὐτοῦ ἑπτὰ· ὑπάγετε εἰς τὴν κα-
 τὰ μαρτίαν· ἐν ἧς πορεύμενοι εἰ-
 ρησάτε πᾶλον δεδεμένον, ἐφ' ὃν οὐδέ τις πώπο-
 τε ἀνῶν ἐκαθίσεν· λίσσασθε αὐτὸν, ἀ-
 γάγετε· καὶ εἰς τὴν ὑμῶν ἐρωτὰ διατίλύ-
 τε· οὕτως ἐργάζεσθαι αὐτῷ, ὅτι ὁ κ' αὐτοῦ χρεῖαν
 ἔχει· ἀπελθόντες δὲ οἱ ἀπεσταλμένοι εἰ-
 ροκαθῶς ἔπεν αὐτοῖς + λυόντων δὲ αὐτῶν τὸν
 πᾶλον· ἔποντο οἱ κίριοι αὐτοῦ πρὸς αὐτοῖς· τί λύ-
 τε τὸν πᾶλον, οἱ δὲ ἔποντο· ὅτι αὐτοῦ χρεῖαν ἔ-
 χει· καὶ ἡγάγον αὐτὸν πρὸς τὸν ἵν' πορεύ-
 μενος δὲ αὐτοῦ ὑπεσώρυσεν τὰ ἰμάτια

~ καὶ ἐπὶ ῥίψαντες ἐαυτὰ ἰμάτια ἐπὶ τὸ πόλον ἐπεβίβασαν τὸν

αὐτῶν ἐν τῇ ὁδῷ· ἐγίγοντο δὲ αὐτοῦ ἡ δὴ πρὸς
 τὴν καταβάσει τοῦ ὄρους τῶν ἐλαιῶν· ἤρξατο
 ἅπαν τὸ πλῆθος τῶν μαθητῶν· καὶ ῥομφαίαι μὲν
 τὸν θῦν· μεγάλη φωνὴ περὶ πασῶν ὧν ἴδων διωά-
 μων λέγοντες· ἀλογημένος ὁ ἐρχόμενος βασι-
 λεὺς ἐν ὀνόματι κυρίου· ἡρῶν ἐν οὐνῷ· καὶ ὁ δὲ
 ἐν ὑψίστοις· καὶ τὴν τῶν φαρισαίων ὑπὸ τοῦ
 ὄχλου· ἤκουον πρὸς αὐτὸν· διδάσκαλε· ἐπετίμη-
 σον τοῖς μαθηταῖς σου· καὶ ἀποκριθεὶς εἶπεν
 αὐτοῖς· λέγω ὑμῖν ὅτι εἰς οὗτοισί ωπλήσωσιν·
 οἱ λίθοι κεκράξονται· ἡ θύρα δὲ ἡ ἡμερῶν ἡ
 ζύμων ἐν ἧ ἐδύναται τὸ πάσχα· καὶ ἀπέσπ-
 λεν πέτρῳ καὶ ἰωάννῳ ἡπῶν· πορευθέντες
 ἐποιμάσατε ἡμῖν τὸ πάσχα ἵνα φαγῶμεν·
 οἱ δὲ ἤκουον αὐτῷ· πού θέλῃς ἐποιμάσωμεν·
 ὁ δὲ ἔπεν αὐτοῖς· ἰδοὺ εἰσελθόντων ὑμῶν εἰς
 τὴν πόλιν· (ὧσαρτίσει ὑμῖν ἄνθρωπος κεράμιον
 ὕδατος βασάνων· ἀκολουθήσατε αὐτῷ εἰς τὴν
 ἡμέραν οὗ ἃς πορεύεσθαι· καὶ ἐρῇτε τῷ οἰκοδε-
 σπότι τῷ οἰκίᾳ· λέγέτε οὖν διδάσκαλος· πού
 ἐστὶ τὸ κατάλυμα, ὅπου τὸ πάσχα μετὰ τῶν
 μαθητῶν μου φάγω· κακῆρος ὑμῖν δέξῃ, ἀνώ-
 γαιον μέγα ἐστρωμένον· ἐκ δὲ ἐποιμάσατε·
 ἀπελθόντες δὲ ἔθρονον καθὼς ἔρηκεν αὐτοῖς·
 καὶ ἡ τοίμασαν τὸ πάσχα· καὶ ὅτε ἐγένετο
 ἡ ὥρα· ἀνέπνευ· καὶ οἱ δὲ καὶ ἀπόστολοι
 ὧσαυτῷ· καὶ ἔπεν πρὸς αὐτοῖς· ἐπιθύμι-
 α· ἐπεθύμησα τοῦτο τὸ πάσχα φαγεῖν μεθ' ὑ-
 μῶν προ τοῦ μετ' παθεῖν· λέγω γὰρ ὑμῖν· ὅτι

οὐ κἄτι οὐ μὴ φάσω ἐξ αὐτοῦ, ἕως τοῦ πληρωθῆ-
ναι τῇ βασιλείᾳ αὐτοῦ θυ· καὶ δεζόμενος πο-
τήριον· ἀχαριστήσας εἶπεν· λάβετε τούτο·
καὶ δὴ ἀμερίσατε ἑαυτοῖς· λέγω γὰρ ὑμῖν·
ὅτι οὐ μὴ πῶ ἀπὸ τοῦ γενήματος τῆς ἀμπέ-
λου, ἕως ὅτου ἡ βασιλεία αὐτοῦ θυ ἔλθῃ· καὶ
λαβὼν ἄρτον, ἀχαριστήσας· ἔκλασε καὶ ἔ-
δωκεν αὐτοῖς λέγων· τούτο ἐστὶ τὸ σῶμα μου
τὸ ὑπὲρ ὑμῶν δοδόμενον· τούτο ποιεῖτε ὡς
ἐμὲ ἀνὰ ἀμνησίαν· ὡς αὐτὸς καὶ τὸ
ποτήριον μετὰ τὸ δεῖν πρὸς αἰχλῶν· τούτο
τὸ ποτήριον, ἡ καὶ νῦν διὰ θύκης ἐν τῷ αἵμα-
τί μου· τὸ ὑπὲρ ὑμῶν ἐκχυνόμενον· πλην
ἰδοὺ ἡ χεὶρ τοῦ παραδίδόντος με μετὰ μοῦ ἐ-
πὶ τῆς τραπέζης· καὶ ὁ μερῆς τοῦ ἁγίου
πορεύεται κατὰ τὸ ὠρισμένον· πλην οὐαὶ
τῷ ἁγίῳ ἐν ἡμῶν, διὸ παραδίδεται· καὶ
αὐτοὶ ἐρξάντο συζητεῖν πρὸς ἑαυτοὺς·
τὸ τίς ἄρα ἔστι ἐξ αὐτῶν, ὁ τούτων μέλων
πράσσειν· ἐγένετο δὲ καὶ φιλονεικία ἐν
αὐτοῖς, τὸ τίς αὐτῶν δοκῇ εἶναι μείζων· ὁ
δὲ εἶπερ αὐτοῖς· οἱ βασιλεῖς τῶν ἐθνῶν,
κυριεύουσιν αὐτῶν· καὶ οἱ ἐξουσιάζοντες
αὐτῶν, ἀεργεῖται καλοῦνται· ὑμεῖς δὲ
οὐχ οὕτως· ἀλλ' ὁ μείζων ἐν ὑμῖν, γενέσθω
ὡς ὀνεώτερος· καὶ ὁ ἡγούμενος, ὡς ὁ δῖος
κονὼν· τίς γὰρ μείζων, ὁ ἀρρακείμε-
νος; ἢ ὁ δῖος κονὼν· οὐχὶ ὁ ἀρρακείμενος;
ὧν δὲ ὧς μὴ ἐν μέσῳ ὑμῶν ὡς ὁ δῖος κονὼν;

ἤμεις δὲ ὅτι οἱ δῖοι ἀμενηνότες μετὰ μοῦ ἐν
 ποῖσ' ἡρώεσσιν ἐμῶν· καὶ γὰρ δὴ ἀπὶ θεοῦ
 μῖν, καθὼς δὴ ἐθέτο μοι ὁ πῆρ' μου βασιλείαν·
 ἵνα ἐθέτω καὶ πίνετε ἐπὶ τῆς τραπέζης μου,
 καὶ καθίσετε ἐπὶ θρόνων κρίνοντες τὰς
 δώδε φυλάς τοῦ Ἰσραὴλ· εἶπεν δὲ ὁ κς.
 σίμων σίμων· ἰδοὺ ὁσαυτὰς ἐζητήσα
 τοῦ μαθ· τοῦ σωῖν ἡμᾶς ὡς τὸν σίτον· ἐ
 γὼ δὲ ἐδέχθην περισσοῦ, ἵνα μὴ ἐλάττω
 γῆς σου· καὶ σὺ ποτε ἐπιστρέψας ἡρίξῃς τοῖς
 ἀδελφοῖς σου· ὁ δὲ εἶπεν αὐτῷ· κέ· μετὰ
 σοῦ ἔτοιμός ἐμὲ καὶ εἰς φυλακὴν καὶ θά
 νατον πορεύεσθαι· ὁ δὲ εἶπεν· λέγω σοι πέ
 τρε· οὐ μὴ φωνήσῃ σήμερον ἀλέκτωρ· πρὶν
 ἢ τρίς ἀπαρνήσῃ μὴ ἄδέναι με· καὶ ἄ
 πεν αὐτοῖς· ὅτε ἀπέστειλεν ἡμᾶς ἄτερ βα
 μαρτίου καὶ πῆρας καὶ ὑποδήματων, μή
 τί μος ὑπερήσατε· οἱ δὲ εἶπον· οὐδεὶς.
 εἶπεν οὖν αὐτοῖς· ἀλλὰ νῦν ὁ ἔχων βα
 μάτιον· ἀράτω ὁμοίως καὶ πῆραν· καὶ
 ὁ μὴ ἔχων πολήσῃ τὸ ἱμάτιον αὐτοῦ, καὶ
 ἀβράσει μάχαιραν· λέγω γὰρ ἡμῖν· ὅ
 τι ἐπὶ τοῦ τοῦ γεγραμμένου, δεῖ τελεσθῆ
 ναι ἐν ἐμοί· τὸ καὶ μετὰ ἀνθρώπων ἐλο
 γήθη· καὶ γὰρ τὰ περὶ ἐμοῦ τέλος ἔχον·
 οἱ δὲ εἶπον· κέ· ἰδοὺ μάχαιρα ὠδεδόξ· ὁ
 δὲ εἶπεν αὐτοῖς· ἰκαρόμεσθιν· καὶ ἐξελ
 θὼν ἐπορεύθη κατὰ τὸ ἔθος εἰς τὸ ὄρος τῶν
 ἐλαιῶν· ἡκολούθησαν δὲ αὐτῷ καὶ οἱ μαθη
 τὰι αὐτοῦ·

τῇ γ' τῆς προφάσου. κατὰ λουκᾶν·
Καὶ ῥῶ ἐκείνῳ· ἐξελθὼν ὁ ἰσ' ἐπορεύθη
κατὰ τὸ ἔθος· ὅτι τὸ ὄρος τῶν ἐλαιῶν· ἡ κο
λούθησαν δὲ αὐτῷ καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ·
γεγρόμενος δὲ ἐπὶ τοῦ τόπου εἶπεν αὐτοῖς·
προσέχονταί μὴ εἰσελθεῖν εἰς πηρασμὸν·
καὶ αὐτὸς ἀπὸ σάαθι ἀπαύτων· ὡς ἡ λίθου
βολῇ· καὶ θῆσ' τὰ γόνατα προσήυχτο
λέγων· καὶ ἀρασάσ' ἀπὸ τῆς προσόχης· ἔλ
θῶν πρὸς τοὺς μαθητὰς· ἔρκεν αὐτοῖς κοιμώ
μενοι ἀπὸ τῆς λύπης· καὶ εἶπεν αὐτοῖς·
τί καθάδετε· ἀρασάμετες προσέχετε· ἵ
να μὴ εἰσελθῆτε εἰς πηρασμὸν· ἐπὶ δὲ αὐ
τοῦ λαλοῦντος· ἰδοὺ ὄχλος· καὶ ὁ λεγόμενος
ἰούδας εἰς τῶν δώδε καὶ· προήρχετο αὐτοῖς·
καὶ ἠγγίσεν τῷ ἰϋφίλησαι αὐτῷ· ὁ δὲ ἰσ'
εἶπεν αὐτῷ· ἰούδα φιλήματί τὸν ἵσον
τοῦ ἀγίου παραδώσῃ· ἰδόντες δὲ οἱ πε
ριαυτῶν τὸ ἐσόμενον εἶπον αὐτῷ· κέ· ἃ
παταίξομεν ῥ' μαχαίραι· καὶ ἐπάτα
ξεν εἰς τίς ἐξ αὐτῶν τὸν δούλον τοῦ ἀρχιε
ρέως· καὶ ἀφῆλκεν αὐτοῦ τὸ οἶσ' τὸ δεξι
ον· ἀποκριθεὶς δὲ ὁ ἰσ' ἔπεν· εἰπάτε·
ἐως τοῦ του· καὶ ἀφάμενος τοῦ ὡπίου
ἰάσατο αὐτόν· εἶπεν δὲ ὁ ἰσ' πρὸς τοὺς
παραγενομένους ἐπ' αὐτόν· ἀρχιερεῖς
καὶ στρατηγοὶ τοῦ ἱεροῦ καὶ πρεσβυτέρους·
ὡς ἐπὶ λυσὶν ἐξεληλύθατε μετὰ μα
χαρῶν καὶ ξύλων· καθ' ἡμέραν οὐτως

μου μεθ' ὑμῶν ἐν τῷ ἱερῷ· οὐκ ἐξέπηκατε τὰς
 χεῖρας ἐπὶ μέ· ἀλλὰ αὐτὴ ὑμῶν ἐστὶν ἡ ὥ-
 ρα καὶ ἡ ἐξοισία τοῦ σκοποῦ + σὺ μά-
 βοντες δὲ αὐτὸν ἠγάγον· καὶ εἰς ἠγάγον αὐ-
 τὸν εἰς τὸν οἶκον τοῦ ἀρχιερέως + ὁ δὲ πέ-
 πρὸς ἡ κολούθη μακρόθεν· ἀφ' αὐτῶν δὲ πύρ-
 ρι μίσω πῆσ αὐλῆς + καὶ σὺ καθαῖσαν
 τῶν αὐτῶν ἐκάθη τοῦ πέπρὸς ἐν μίσω αὐτῶν +
 ἰδοῦσα δὲ αὐτὸν πεδίον κητὶς καθήμενον
 πρὸς τὸ φῶς· καὶ ἀτενίσασα αὐτῷ εἶπεν·
 καὶ οὗτος (ὡς αὐτῷ λίω + ὁ δὲ λίρ μὴ ἀπολέγω·
 γίνωαι· οὐκ οἶδα αὐτόν + καὶ μετὰ βραχὺ ἐ-
 τεροσὶ δὴ αὐτόν ἐφη καὶ σὺ ἐξ αὐτῶν εἰς·
 ὁ δὲ πέπρὸς εἶπεν· ἄγε· οὐκ ἔγωγε + καὶ δι-
 ατάσῃς ὡς ὁ ὥρας μεῖας· ἀλλ' ὅς τις δῖος
 χυρὶ ζατολέμων· ἐπαληθείας καὶ οὗτος με-
 ταίτου λίω· καὶ γὰρ γαλιλαῖός ἐστιν + εἶπεν
 δὲ ὁ πέπρὸς· ἄγε· οὐκ οἶδα ὀλέμις· καὶ π-
 ραχρῆμα· ἐπὶ λαλοῦντος αὐτοῦ, ἐφώμη-
 σεν ἀλέκτωρ + καὶ σφαιρεῖς οὐκ ἀνέβλε-
 ψεν τῷ πέπρῳ· καὶ ὑπεμνήσθη ὁ πέπρὸς
 τοῦ λόγου τοῦ κῦ, ὡς εἶπεν αὐτῷ· ὅτι
 πρὶν ἀλέκτορα φωνῆσαι· ἀπαρμήσῃ με-
 τρίς + καὶ ἐξελθὼν ἐξω ὁ πέπρὸς ἐκλα-
 σεν πικρῶς + καὶ οἱ ἄνδρες οἱ (ὡς έχον-
 τες τὸν ἴν' ἐρέ παιζον αὐτῷ· δέροντες +
 καὶ περὶ καλῖσαντες αὐτόν· ἐπὶ πῶς
 αὐτοῦ τὸ πρόσωπον· καὶ ἐπὶ ῥώτῳ αὐ-
 τὸν λέγοντες· προφήτας μὲν τις ἐστὶν

ὁπαίεσασθε· καὶ ἐπεραπομὰ βλασφημοῦντες
ἐλέγον δὲ αὐτὸν· καὶ ὡς ἐγένετο ἡ μέρα, συ-
νήχθη τὸ πρῶτον βυτίριον τοῦ λαοῦ ἀρχιερεῖς καὶ
γραμματεῖς· καὶ ἀνέγαγον αὐτὸν ὅς τὸ συνέ-
δριον αὐτῶν λέγοντες· ὁ σὺ εἶ ὁ χεῖρ; ἢ πᾶσι μὲν
εἶπεν δὲ αὐτοῖς· ἐὰν ἐμὲν ἢ παρ' οὐ μὴ πί-
σασθε τε· ἐὰν δὲ καὶ ἐρωτήσω, οὐ μὴ ἀπο-
κριθῇτέ μοι, ἢ ἀπολίσητε· ἀπὸ τοῦ νῦν
ἐστὶν οὖτος τοῦ ἀνθρώπου, καθήμενος ἐὰν δεξιῶν
πῶς δὴ ἀνέστη τοῦ θύ· εἶπον δὲ αὐτῷ παρ-
πῶ· σὺ οὖν εἶ οὖτος τοῦ θύ; ὁ δὲ πρὸς αὐτοὺς
εἶφεν· ὑμεῖς λέγετε, ὅτι ἐγὼ εἰμὶ· οἱ δὲ εἶ-
πον· τί ἐστὶ πῆχρά γε ἐχομεν μαρτυρίας· αὐ-
τοὶ γὰρ ἡκοῖσά μεν ἀπὸ τοῦ σώματος αὐ-
τοῦ· καὶ ἀρας ἀν' ἀπαρ τὸ πλῆθος αὐ-
τῶν, ἡγάγον αὐτὸν ἐπὶ τὸν πῖλᾶτον·

τῇ ἐκ τῶν προφᾶτων· καὶ λουκᾶν·
καὶ ῥωμ. κ. κ. α. ἀπὸ τῆς γαλ. τ. κ. α. οἱ ἀρχι-
ερεῖς καὶ οἱ γραμματεῖς καὶ οἱ πρῶτον βυτί-
ροι τοῦ λαοῦ· ἔβησαν το κατὰ βυτίριον αὐτοῦ λέγον-
τες· τοῦτον εὐρομεν δὲ ἀσρέφοντα τὸ ἐ-
θνος καὶ κολύοντα καὶ σαρεῖ φόροις διδόν-
ται· λέγοντα ἐαυτὸν χυ βασιλέα εἶναι· ὁ
δὲ πῖλᾶτος ἐπρωτίστη αὐτὸν λέγων· σὺ
εἶ ὁ βασιλεὺς τῶν ἰουδαίων; ὁ δὲ ἀποκρι-
θὼς αὐτῷ εἶφεν· σὺ λέγεις· ὁ δὲ πῖλᾶτος
εἶπεν πρὸς τοὺς ἀρχιερεῖς καὶ τοὺς ὄχλους·
οὐδὲν ἀρίστω αἰτίον ἐν τῷ ἄνθρωπῳ τοῦτω· οἱ
δὲ ἐπὶ σῆχος λέγοντες, ὅτι ἀρας εἶ τὸν λα-

ὁρ δὲ διδάσκων καθ' ὅλην τὴν ἰουδαίαν· ἀρχά-
 μενος ἀπὸ τῆς γαλιλαίας ἕως ᾧ δεῖ πηλά-
 τος δὲ αὐκίσας γαλιλαίαν· ἐπηρώτησε μ-
 ῦθ' ἄνθρωπος γαλιλαῖος ἐστὶν· καὶ ἐπὶ ἡρώδης
 τίς ἐστὶν ἐξ οἰσίων ἡ ῥώδης ἐστὶν· ἀνέπεμ-
 ψεν αὐτὸν πρὸς ἡρώδην, ὅντα αὐτὸν ἐν ἱε-
 ροσολύμοις, ἐν ταύταις ταῖς ἡμέραις· ὁ
 δὲ ἡρώδης ἰδὼν τὸν ἴν', ἐχάρη λίαν· ὡς γὰρ
 θέλων ἐξ ἱκανοῦ ἰδεῖν αὐτὸν· διὰ τὸ ακοῦ-
 ῖν πολλά περὶ αὐτοῦ· καὶ ἤλπιζέ τι μῦθον
 ἰδεῖν ὑπ' αὐτοῦ γινόμενον· ἐπηρώτων δὲ
 αὐτὸν ἐν λόχοις ἱκανοῖς· αὐτὸς δὲ οὐδὲν
 ἀπεκρίνατο αὐτῷ· ἥτις κείσας αὐτὸς οἱ ἀρχί-
 ερς καὶ οἱ γραμματεῖς, ἀτόκως κα-
 τηγορεύουσιν αὐτοῦ· ἐξουθενήσας δὲ
 αὐτὸν ὁ ἡρώδης (ὡς τοῖς στρατεύμασιν αὐτοῦ·
 καὶ ἐμπαίξας περιβαλὼν αὐτὸν ὠθήτα
 λαμπράν, ἀνέπεμψεν αὐτὸν πᾶσι πηλά-
 τω· ἐλθόντο δὲ φίλοι ὅτε πηλάτος καὶ
 ἡρώδης ἐν αὐτῇ τῇ ἡμέρᾳ μετὰ χιλήων·
 προῦπῆρχον γὰρ ἐν ἐχθραὶς οὐκ ὄντες πρὸς
 αὐτοῖς· πηλάτος δὲ σὺγκαλεσάμενος
 τοὺς ἀρχιερεῖς καὶ τοὺς ἀρχοντας καὶ τὸν λαόν·
 εἶπεν πρὸς αὐτοῖς· προσκείμετέ μοι τὸν ἄν-
 θρωπον τοῦτον, ὡς ἀποστέφοντα τὸν λαόν·
 καὶ ἰδοὺ ἡμεῖς ἐν ὧπιον ἡμῶν ἀνακρίνας οὐδὲν
 εἶρον ἐν τῷ ἄρῳ τοῦτω αἵτιον· ὥς κατηγο-
 ρῆτε κατ' αὐτοῦ· ἄλλ' οὐδὲ ἡρώδης· ἀνέ-
 πεμψεν γὰρ ἡμᾶς πρὸς αὐτόν· καὶ ἰδοὺ οὐ

δὲν ἄξιον θανάτου ἐστὶ πεπραγμένον αὐτῷ·
παιδάσασθαι αὐτὸν ἀπολίσσω· ἀνάγκη
δὲ εἶχεν ἀπολύειν αὐτοῖς κατὰ τὴν ἐορτὴν εἶ-
ναι· ἀνέκραξαν δὲ παμπληθῆ ἄλλοι τε· αἰ-
ρε τοῦτον· ἀπολίσσον δὲ ἡμῖν βαρβαρῶν· ὅς
τις ἴω, δῖα δασὺν τῖναι· γενομένης τῇ πόλει καὶ
φόνου, βεβλημένους εἰς φυλακὴν· παλὶν
οὖν ὁ πῖλᾶτος προσεφώνησε θέλων ἀπολίσσαι
τὸν ἱν· οἱ δὲ εἰς πεφώνου λέγοντες· σταύ-
ρωσον σταύρωσον αὐτόν· ὁ δὲ τῖτον ἤπεν
πρὸς αὐτοῖς· τί γὰρ κακὸν ἐποίησεν οὗτος·
οὐδὲν αἰτίον θανάτου ἔχον ἐναυτῷ· παι-
δάσασθαι αὐτὸν ἀπολίσσω· οἱ δὲ ἀπέκρη-
το φωναῖς μεγάλαις, αἰτούμενοι αὐτὸν σταύ-
ρῆναι· καὶ κατίσχυον αἱ φωναὶ αὐτῶν καὶ
τῶν ἀρχιερέων· ὁ δὲ πῖλᾶτος, εἰς πέριγε
γενέσθαι τὸ αἴτημα αὐτῶν· ἀπέλειπε δὲ
τὸν δῖα δασὺν καὶ φόνον βεβλημένον εἰς
τὴν φυλακὴν, ὃν ἡ τοῦτο· τὸν δὲ ἱν πα-
ρέδωκεν τῷ θελήματι αὐτῶν· καὶ ὥς ἀπὸ
γαζον αὐτόν· ἐπιελαβόμενοι σιμῶνος τῖρος
κηρυαίου, ἐρχομένου ἀπαγροῦ ἐπέθ-
καν αὐτῷ τὸν σταυρόν, φέρειν ὅπιαθεν τοῦ
ἱν· ἡ κολούθῃ δὲ αὐτῷ πολὺ πλῆθος τοῦ λα-
οῦ· καὶ γυναικῶν αἰκαὶ ἐκόπτοντο καὶ
ἐθρήνου αὐτόν· γραφεῖς δὲ πρὸς αὐτὰς
ὁ ἴσ' εἶπεν· θύγατέρες ἰληίμ, μὴ κλαίετε
ἐπὶ μέ· πλὴν ἐφ' ἐαυτὰς κλαίετε, καὶ ἐ-
πὶ ταῖς καυῶν· ὅτι ἰδοὺ ἐρχονται

ἡμέραι, ἐναὶς ἐρῶσι· μακάριαι αἱ σῆραι, καὶ
 κοιλίαι αἱ οὐκ ἐγέρνησαν· καὶ μαστοὶ οἱ οὐκ ἐ
 θήλασαν· τότε ἄρξονται χεῖρ τοῖς ἰσχυροῖς·
 πῶς τε ἐφ' ἑμᾶς, καὶ τοῖς βουλοῖς· καὶ λυθή
 τε ἑμᾶς, ὅτι ἐν τῷ ἄρῳ ξύλω ταῦτα ποιού
 σιν, ἐν τῷ ξηρῷ τίμηνται· ἤχοντο δὲ καὶ
 ἑτέροι οἱ κακοῦργοι, (ὡς αὐτῷ ἀνέρεθῆναι)
 καὶ ὅτε ἀπῆλθον ἐπὶ τὸν τόπον τοῦ καλοῦ
 μένου κρατίον, ἐκθ' ἐστῶσαν αὐτὸν· καὶ
 τοῖς κακοῖς· ὅν μὲν ἐδέξιντο, ὅν δὲ ἐ
 ξαριστέρων· ὁ δὲ ἰσ' ἔλεγεν· πῆρ' ἀφ' ὧν αὐ
 τοῖς, οὐ γὰρ οἶδας τί ποιοῦσιν· ἵν' οὐδ' ὥσθ
 ὥρα ἐστὶ· καὶ σκόποσ' ἐγένετο ἐφ' ὅλῳ τῷ
 γῆν, ἕως ὥρας ἐνναήτης· καὶ ὅσοι πᾶσι
 ὁ ἥλιος· καὶ ὅχι ἀπὸ τοῦ καταπέτασμά του
 μαοῦ μέσον· καὶ φωνήσας φωνὴ μεγάλη
 οἱσ' εἶπεν· πῆρ' εἰς χεῖράς σου παραθή
 σομαι τὸ πρᾶγμα· καὶ ταῦτα ὅπῃν ἐ
 ξέπρασεν· ἰδὼν δὲ ὁ ἐκατόνταρχος τὸ
 γινόμενον, ἐδδ' ἔλασε τὸν θυμὸν λέγων· ὅντως
 ὁ ἄρτος οὗτος, δὴ καὶ οὐκ ἴν'· καὶ πάντες
 οἱ οὐκ ἐκ τῶν ἐκείνων οἱ ὄχλοι ἐπὶ τῇ δε
 ωρίᾳ ταύτῃ, θεωροῦντες τὰ γινόμε
 να, τίπτοντες αὐτῶν τὰ σήθη ὑπέστρε
 φον· ὅς τ' ἐκείνοις ἀνδρῶν πάντες οἱ γνωστοὶ
 αὐτῷ μακρόθεν· καὶ γῆν αἰκῶ αἱ (ὡς ἀπο
 λουθήσασαι αὐτῷ ἀπὸ τῆς γαλιλαίας) ὁ
 ρῶσαι ταῦτα· καὶ ἰδοὺ ἀνὴρ ὀνόμα
 τί ἰωσήφ· βουλευτὴς ὑπαρχὼν ἀνὴρ ἀγαθός

καὶ δὲ καὶ οὗτος οὐκ ἔστιν ἡμαρτατηθῆναι οὐ
 τῇ βουλῇ καὶ τῇ πράξει αὐτῶν· ἀπὸ ἀριμαθαί-
 ας· ἡ πόλεως τῶν ἰουδαίων· ὃς καὶ πρὸς ἐ-
 δέχετο καὶ αὐτὸς τὴν βασιλείαν τοῦ θῦ· οὐ-
 τοσ προσελθὼν τῷ πῖλᾶτῳ ἡτήσατο τὸ σῶ-
 μα τοῦ ἰῦ· καὶ κατελὼν αὐτὸ· ἐν ἐκτύλινον
 αὐτὸ σὺν δόμῳ· καὶ ἐθέκεν αὐτὸ ἐν μνημείῳ
 λαζαρίῳ· οὐ οὐκ ἔστιν οὐδέ πω οὐδέ τις ἐκ μένος·
 καὶ ἡμέρα ἡ παρασκευῇ, σάββατον ἐπέ-
 φωσκε· κατακολουθήσασαι δὲ ζωαὶ καὶ
 αἱ τὴν ὥσιν ἡσαν βωλελυθήαι αὐτῷ ἐν τῇ βα-
 λιλαιᾷ, ἐθεάσαντο τὸ μνημεῖον, καὶ ὡς
 ἐτίθη τὸ σῶμα αὐτοῦ· ὑποσέφασαι δὲ ἐν
 τοίμασιν ἀρώματα καὶ μύρα· καὶ τὸ μὴ
 σάββατον ἡσυχάσαν κατὰ τὴν ἐντολήν·

^{συνεβάν· τὴν προφῆαν ἡ ματ·}
Κἵπεν οὖν· προσέχετε τὴν ἐλεημοσύνην ὑ-
 μῶν μὴ ποιῆτε ἐμπροσθεν τῶν ἀνθρώπων, πρὸς
 τοθεαθῆναι αὐτοῖς· ἀλλ' ἐκ μὲν· μεθοῦν οὐκέτι
 τε παρὰ τῷ πρὶ ἡμῶν τῷ ἐν τοῖς οὐνοῖς· ὃ
 παρ' οὐνοποιῆς ἐλεημοσύνη, μὴ σαλπτήσῃς
 ἐμπροσθέν σου· ὡς περ οἱ ὑποκριταὶ ποιοῦ-
 σιν· ἐν ταῖς βωλεῖται καὶ ἐν ταῖς ρύμαις,
 ὅπως δοξαθῶσιν ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων· ἀμὲν λέ-
 γω ὑμῖν· ἀπέχοις τὸν μεθοῦν αὐτῶν· σοὺ
 δὲ ποιοῦντος ἐλεημοσύνη· μὴ γράτω ἐν
 ἀριστεράσου· τί ποιῇ ἡ δεξιὰ σου· ὅπως ἴ-
 σου ἡ ἐλεημοσύνη ἐν τῷ κρυπτῷ· καὶ ὁ πῆρ
 σου ὁ βλάπτων ἐν τῷ κρυπτῷ, αὐτὸς ἀποδο-

ὅπως ἡσουλὲ ἐλεημοσύνη ἐν τῷ κρυπτῷ· καὶ
 ὁ πῆρ σου ὁ βλέπων ἐν τῷ κρυπτῷ· αὐτοὺς ἀ-
 ποδώσῃσι ἐν τῷ φανερῷ· καὶ ὅταν προ-
 σάχῃ οὐκέτι ὡς περὶ ὑποκριτῶν· ὅτι φι-
 λῶσιν ἐν ταῖς βραγυγαῖς καὶ ἐν ταῖς γω-
 ραῖς τῶν πλατειῶν· ἐς ὧτε προσάχθαι·
 ὅπως αὐφανεώσι τοῖς ἀνθρώποις· ἀμὲν λέγω
 ὑμῖν· ὅτι ἀπέχουσιν τὸν μίσθον αὐτῶν·
 οὐδὲ ὅταν προσεύχῃ· εἰσελθε γὰρ τὸ τῆς
 μαίοντος· καὶ κλῆσας τὴν θύραν σου προ-
 σευξαι τῷ πρῶ σου τῷ ἐν τῷ κρυπτῷ· καὶ ὁ
 πῆρ σου ὁ βλέπων ἐν τῷ κρυπτῷ· ἀποδώ-
 σει σοι ἐν τῷ φανερῷ· προσευχόμενοι
 δὲ μὴ βαρτολογήσῃτε ὡς περὶ ἐθνικοὶ·
 δοκῶσιν γὰρ ὅτι ἐν τῇ πολυλογίᾳ αὐτῶν· εἰ-
 σακοιθίσονται· μὴ οὖν ὁμοιωθῇτε αὐ-
 τοῖς· οἶδεν γὰρ ὁ πῆρ ὑμῶν ὅσον ἔχετε
 τε· προτοῦ ὑμᾶς αἰτῆσαι αὐτόν· οὕτως
 οὖν προσευχαθε ὑμεῖς· καὶ περὶ ὑμῶν ὁ
 ἐν τοῖς οὐρανοῖς· ἁγιάσθητω τὸ ὄνομα σου·
 ἔλθέτω ἡ βασιλεία σου· γενηθῇ τὸ θέ-
 λημά σου· ὡς ἐν οὐρανῷ καὶ ἐπὶ γῆς· τὸν
 αἵμα τῶν ὑμῶν τὸν ἐπιούσιον δὲ ἡμῖν σήμε-
 ρον· καὶ ἀφ᾽ οὗ ἡμῖν τὰ ὀφειλήματα ὑ-
 μῶν· ὡς καὶ ὑμεῖς ἀφίετε τοῖς ὀφειλέ-
 ταις ὑμῶν· καὶ μὴ εἰσεγένηται ἡμᾶς γὰρ
 πειρασμὸς· ἀλλὰ ρίψαι ἡμᾶς ἀπὸ τοῦ
 πονηροῦ· ὅτι σοὺ ἐστὶν ἡ βασιλεία καὶ ἡ δύ-
 ναμις καὶ ἡ δόξα εἰς τοὺς αἰῶνας ἀμήν· ~

^{κατὰ ματθ. α. 23}
 ἰπεν οὗτος· εἰ μὴ ἀφήτε τοῖς ἄνθρωποις τὰ πα-
 ραπτώματα αὐτῶν, ἀφήσει καὶ ἐμὴν ὁ
 πατήρ ὑμῶν ὁ οὐρανός· εἰ μὴ δὲ μὴ ἀφήτε
 τοῖς ἄνθρωποις τὰ παραπτώματα αὐτῶν, οὐ
 δέ ὁ πατήρ ὑμῶν ἀφήσει τὰ παραπτώματα
 ὑμῶν· ὅταν δὲ καθήμεν ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ
 ὡς περ οἱ ὑποκριταὶ σκυθροὶ· ἀφανί-
 ζοις γὰρ τὰ πρόσωπα ἑαυτῶν· ὅπως ἀν-
 φανῶσιν τοῖς ἄνθρωποις καὶ ἑαυτοὺς ἀμει-
 γῶν ὑμῶν· ὅτι ἀπέχουσι τοῦ μέθρον αἰμάτων·
 σὺ δὲ καὶ ἑαυτὸν ἀλάττεις καὶ κεφαλὴν
 καὶ τὸ πρόσωπόν σου μύλον· ὅπως μὴ φα-
 νῶσιν τοῖς ἄνθρωποις καὶ ἑαυτοὺς ἀμει-
 γῶν ὑμῶν· καὶ ὁ πατήρ σου ὁ βλέπων
 ἐν τῷ κρυπτῷ, ἀποδώσει σοι ἐν τῷ φανερῷ·
 καὶ ὁ θησαυρίζετε ὑμεῖς θησαυροὺς ἐν τῇ γῇ·
 ὅπου σὴς καὶ βρώσις ἀφανίζεται, καὶ ὅπου κλέπται
 διαφθορα τοῦ σώματος καὶ κλέπτουσι· οὐ θησαυρίζετε δὲ
 ὑμεῖς θησαυροὺς ἐν οὐρανῷ· ὅπου οὐτε σὴς οὐτε
 βρώσις ἀφανίζεται, καὶ ὅπου κλέπται οὐ διαφθο-
 ρα τοῦ σώματος· ὅπου γὰρ ἐστὶν ὁ θησαυ-
 ρὸς ὑμῶν ἐκεῖ ἐστὶ καὶ ἡ καρδιά ὑμῶν· ~

^{κατὰ ματθ. α. 23}
 ἀποκρίσας· καὶ πάλιν λέγει· καὶ ὁ πατήρ σου ὁ βλέπων
 ἐν τῷ κρυπτῷ, ἀποδώσει σοι ἐν τῷ φανερῷ· καὶ ὁ
 θησαυρίζετε ὑμεῖς θησαυροὺς ἐν τῇ γῇ· ὅπου σὴς καὶ
 βρώσις ἀφανίζεται, καὶ ὅπου κλέπται διαφθορα τοῦ
 σώματος· οὐ θησαυρίζετε δὲ ὑμεῖς θησαυροὺς ἐν οὐρανῷ·
 ὅπου οὐτε σὴς οὐτε βρώσις ἀφανίζεται, καὶ ὅπου κλέπται
 οὐ διαφθορα τοῦ σώματος· ὅπου γὰρ ἐστὶν ὁ θησαυ-
 ρὸς ὑμῶν ἐκεῖ ἐστὶ καὶ ἡ καρδιά ὑμῶν· ~

ψ_{mat}

Ἔπειτα ὁ ἄνθρωπος ἐπὶ τὴν ἐκκλησίαν ἔλκει τοὺς ἰσχυροὺς.

ἡ σὺ πρὸς τὸ φαν. τῇ δ' ἐς

$\pi\sigma^{\alpha} \chi_{\eta} \bar{\pi}\beta$ ελέγχον οὐθ' ἔτι τὰ μύ· στί ἐπὶ πλοίου παλ'.

ἵπεν οὕτως· ἔχετε πίστη κυρίου· ἀμὲν· κατὰ μαρτυρίαν
 γὰρ λέγω ὑμῖν· ὅτι ὅσα ἀνέστη πρὸς τοῦτο
 ἀρθῇτι καὶ βλήθῃτι εἰς τὴνθάλασσαν· καὶ
 μὴ διακριθῇ ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ· ἀλλὰ πιστά
 σφόδρὰ λέγεται· εἶναι αὐτῷ· ὅτι ἐγὼ
 εἶπην· διὰ τοῦτο λέγω ὑμῖν· πάντα ὅσα
 ἀνέπροσευχόμενοι αἰτεῖσθε πιστά· ὅτι
 λαμβάνετε καὶ εἶναι ὑμῖν· καὶ ὅταν
 σήκητε προσευχόμενοι ἀφίετε· εἰπὶ ἔχε
 τε κατὰ τὸν νοῦν· ἵνα καὶ ὁ πατήρ ὑμῶν ὁ οὐ
 ποιοῖ σιωπῶν· αἰφῇ ὑμῖν τὰ παραπτώματα
 ὑμῶν· αἰτεῖτε καὶ δοθήσεται ὑμῖν· ζητεῖτε
 καὶ ἀρήσεται· κρούετε καὶ ἀνοίγησεται ὑμῖν·
 πᾶς γὰρ ὁ οὐρανὸς λαμβάνει· καὶ ὁ ζῶντων
 εὐρίσκει· καὶ τὸ κρούον τι ἀνοίγησεται· ~

$\tau \hbar \in \mathbb{R} \quad \pi \rho^{\alpha} \quad \chi_{\tau} \quad \overline{a_2} \quad \epsilon \omega \sigma \rho \kappa \epsilon' \tau \omicron \nu \lambda \alpha \sigma \nu \alpha \delta:$

$\epsilon\pi\iota$ προ $\acute{\alpha}$ ξ η ς $\kappa\epsilon$ κ ρ αζω μ αι: ~ κατὰ χ $\omicron$ υ κα $\acute{\iota}$

ἢ πένοντες· αἰτῆτε καὶ δοθήσεται ὑμῖν· ὅτι τῇ ὁμοιότητι ὑμῶν
πρὸς αὐτοὺς αὐτὸν αἶτον· - τῇ παρὰ ἐς

$\pi \gamma^0 \cdot \frac{1}{4} \cdot \overline{\gamma}$
 $\epsilon \psi \phi \gamma \theta \gamma \sigma \epsilon \gamma \gamma' \kappa \alpha \iota : \epsilon \gamma \gamma' \epsilon \iota \sigma \alpha \iota \sigma \omega \mu$

ὁ Ἰησοῦς φωνῆς: κατὰ τὸ ἀρχαῖον:

Ἡ περὶ αὐτῶν ζωὴ καὶ ἡ ἀρετὴ αὐτῶν :

καὶ γενέσθαι ἡμῶν: ~ ἡ γὰρ ἡμεῶν ἀδελφῶν ἡμῶν
ἡμεῶν μέσον:

ⲄⲚⲉⲣⲁⲧⲟⲛ ⲁⲓ ⲧⲉⲛⲛⲓⲥⲧⲓⲟⲛ

καὶ τοῦ Ἀ^{δδ}μ^{δδ}α^{δδ}ρ^{δδ} τ^{δδ}π^{δδ}ρ^{δδ}α^{δδ}· κατὰ μάρτυρον
 ὡ καὶ ῥῶ ἐκ^{δδ}ρ^{δδ}ω· ἐπορεύετο ὁ ἰσ^{δδ} τοῖς σαύ
 β^{δδ}ρασί διαπ^{δδ}ων σαορίμων· καὶ ἤρ^{δδ}ξαν το
 θ^{δδ}μαθ^{δδ}ηται αὐτοῦ ὁ δὲ ποι εἶν^{δδ} τί μ^{δδ}λον τ^{δδ}ω
 τοῖς σαύ^{δδ}ιασ^{δδ} + καὶ οἱ φ^{δδ}αρισαῖοι ἐλέγον
 αὐτῷ· ἰδ^{δδ} τί ποιοῦσιν ἐν τοῖς σαύ β^{δδ}ρασί^{δδ} οὐ
 κ^{δδ} ἐβ^{δδ}η^{δδ} + καὶ αὐτὸς ἐλέγεν αὐτοῖς· οὐδ^{δδ}
 ποτε ἀρέγνωτε· τί ἐ^{δδ} ποίησε δ^{δδ}αδ^{δδ}, ὅτε κ^{δδ}ρ^{δδ}
 ἀρέσχε καὶ ἐπ^{δδ}ήρασεν· αὐτὸς καὶ οἱ μετ^{δδ} αὐ
 τοῦ· πῶς εἰσ^{δδ}ήλθεν εἰς τὸν οἶκον τοῦ θυ^{δδ}
 ἐ^{δδ} π^{δδ}ι Ἀβ^{δδ}τ^{δδ}αθα^{δδ}ρ τοῦ ἀρχ^{δδ}ιέρ^{δδ}εως· καὶ τοῖς
 ἀρ^{δδ}ποι^{δδ}ς τ^{δδ}ης προθέ^{δδ}ας ἐφ^{δδ}ασεν, οἷον οὐκ^{δδ}
 ξεστ^{δδ}ιν φαγεῖν· εἰ με^{δδ} τοῖς ἰ^{δδ}ε^{δδ}ρασί· καὶ ἐ^{δδ}δ^{δδ}ω^{δδ}
 καὶ τοῖς (ὡ αὐτῷ οἰοῖ^{δδ} + καὶ ἐλέγεν αὐτοῖς· το
 σαύ β^{δδ}ρατον; διαπ^{δδ}ων ἄμ^{δδ}ον ἐ^{δδ}μέν^{δδ}το· οὐχ^{δδ} ἄμ^{δδ}ος
 διαπ^{δδ}ων σαύ β^{δδ}ρατον· ὡς τε κ^{δδ}ς ἐ^{δδ}σιν οἱ υἱοὶ τοῦ
 ἀμ^{δδ}ου καὶ τοῦ σαύ β^{δδ}ρατου· καὶ εἰσ^{δδ}ήλθ^{δδ}
 εἰς τὴν (ὡ αὐτῷ καὶ τὴν ἐ^{δδ}μ^{δδ} ἄμ^{δδ}ος ἐ
 ζ^{δδ}η^{δδ}ρα μ^{δδ}έν^{δδ}η ἐ^{δδ}χ^{δδ}ων τὴν χ^{δδ}εῖρα + καὶ π^{δδ}
 ρετήρ^{δδ}ω αὐτὸν εἰς τοῖς σαύ β^{δδ}ρασί θε^{δδ}ρα
 πάσει αὐτὸν· ἵνα κατη^{δδ}γορήσω σ^{δδ}ιν αὐτοῦ·
 καὶ λέγει πῶ ἄμ^{δδ}ω πῶ ἐ^{δδ}ξ^{δδ}η^{δδ}ρα μ^{δδ}έν^{δδ}η ἐ^{δδ}χ^{δδ}ον
 τί τὴν χ^{δδ}εῖρα· ἐ^{δδ}γειρε^{δδ}ς τὸ μέ^{δδ}σον· καὶ λε
 γει αὐτοῖς· ἐ^{δδ}ξεστ^{δδ}ι τοῖς σαύ β^{δδ}ρασί^{δδ} ἀ^{δδ}αδο ποι
 ἦσαι; ἢ κακο ποι ἦσαι + μ^{δδ}χ^{δδ}λ^{δδ}ω σῶσαι; ἢ
 ἀποκ^{δδ}τεῖναι· οἱ δ^{δδ} ἐ^{δδ}σ^{δδ}ι ὡ π^{δδ}ων· καὶ πε
 ρὶ β^{δδ}λε^{δδ} φα^{δδ}μενος αὐτοῖς μετ^{δδ} ὁ ρ^{δδ}γ^{δδ}ης· σὺ μ^{δδ}

[illegible]

σαμβάω ὃ πῶρ' ἡστῶν· κατὰ μαρτυρίαν·
 ὦ καιρὼ ἐκείνῳ· ἀπῆλθεν ὁ ἰσὺς εἰς ἐρή-
 μον τὸ ποῦ· καὶ ἐκ' ἐκείνου ἦν ἡσυχία· καὶ κα-
 τεδείωξαν αὐτὸν οἱ σίμων καὶ οἱ μετ' αὐτοῦ·
 καὶ ἄλλοι τινες αὐτὸν λέγουσιν αὐτῷ· ὅτι
 πάντες ζητοῦσί σε· καὶ λέγει αὐτοῖς· ἄγω
 μεν εἰς τὰς ἐρημίνας ἀπομακρύνειν ἵνα
 καὶ ἐκκενρῶμαι· ὅτι τοῦτο γὰρ ἐλήλυθα·
 καὶ ἰωκριαστῶν ἐνταῖς (ἡ αἰσῶται) αὐ-
 τῶν εἰς ὅλην τὴν γαλιλαίαν· καὶ τὰ δαι-
 μόνια ἐβάλλων· καὶ ἐρχέται πρὸς αὐ-
 τὸν λέγων παρακαλῶν αὐτὸν καὶ ῥοῦ-
 πε τὴν αὐτὴν· καὶ λήγων αὐτῷ· ὅτι ἐὰν θέ-
 λης, ἐδυνασάμεθα καθαρίσαι· ὁ δὲ ἰσὺς
 ἀπολαχρύθηνος ἐπεὶ μαρτυρῶν αὐτῷ ἡ ψα-
 λμοῦ αὐτοῦ καὶ λέγει αὐτῷ· θέλω καθαρίσθαι
 τί· καὶ εἰ πότος αὐτοῦ ἀθῶς ἀπῆλθεν
 ἀπ' αὐτοῦ ἡ λέπρος· καὶ ἐκαθαρίσθη·
 καὶ ἐμβριμῶσα ἄμβροτος αὐτῷ· εὐθέως ἐ-
 ξέβαλεν αὐτὰρ· καὶ λέγει αὐτῷ· ὄρα· μη-
 δὲν εἶπες· ἀλλ' ὕπαγε σὺ αὐτὸν δείξον ὧς
 ἵερὸν· καὶ πρὸς ἐνέθε περὶ τοῦ καθαρίσμε-
 σου· ἀπρὸς ἐταξεν αὐτὸς εἰς μαρτυρίαν
 ὧς αὐτοῖς·

ὅτι τῶν ῥησιῶν· κατὰ μαρτυρίαν·
ὡς καὶ ῥῶς ἐκείνῳ· εἰσῆλθεν οὖτος εἰς καπερ
μασίαν· καὶ ἠκούσθη ὅτι εἰς οἶκον ἐστὶ·
καὶ ὁ θεὸς ἐκλήθησαν πολλοὶ ὡς περὶ κέ
τι χωρὶς μὴδὲ ταπρὸς τὴν θύραν· καὶ ἐ
λάλει αὐτοῖς τὸν λόγον· καὶ ἔρχονται πρὸς
αὐτὸν παραλυτικὸν φέροντάς αὐρόμβρον
ὑπὸ τεσσάρων· καὶ μὴ δυνάμενοι προσε
γίσθαι αὐτῷ διὰ τὸν ὄχλον· ἀπεστέγασαν
τὴν στέγην ὅπου ἦν· καὶ ἐξορύξαντες· χα
λῶσιν τὸν κρᾶββατον ἐφ' ᾧ ὁ παραλυτικὸς
κατέκειτο· ἰδὼν δὲ ὁ ἰσχυρὸς τὴν πίστιν αὐτῶν
λέγει τῷ παραλυτικῷ· τέκνον· ἀφέονται
σοι αἱ ἁμαρτίαι σου· ἦσαν δὲ τινες τῶν
γραμματέων ἐκεῖ καθημένοι· καὶ διαλο
γίζοντο ἐν ταῖς καρδίαις αὐτῶν· ποῦ
τοῦτο, οὕτως λέγει βλασφημία· τίς δύ
ναται ἀφιεῖν αἱμαρτίας, ἢ μη εἰς ὁ
τός; καὶ ὁ θεὸς ἐπὶ γυνὸς οὗτος τῷ πνί
αὐτοῦ ὅτι οὕτως αὐτοὶ διαλογίζονται ἐν
ἑαυτοῖς· εἶπεν αὐτοῖς· τί ταῦτα διαλο
γίζεσθε ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν; τί ἐστὶν
ὁ κοινὸς περὶ ἐπὶ τῷ παραλυτικῷ· ἀφέ
ονται σοι αἱ ἁμαρτίαι; ἢ εἶπεν· ἔγει
ρε καὶ ἄρον τὸν κρᾶββατόν σου καὶ περι
πάτει· ἵνα δὲ εἰδῇτε ὅτι ἐξουσία ἐ
στὶν τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου ἐπὶ τῆς γῆς ἀφιεῖν αἱ
μαρτίας· λέγει τῷ παραλυτικῷ· σὺ λέ
γῃ· ἔγειρε· καὶ ἄρον τὸν κρᾶββατόν σου

καὶ ἵπαι· εἰς τὸν οἶκόν σου· καὶ ἡ ἔρθη αὐθι-
 ως· καὶ ἄρας τὸν κράββατον ἐξῆλθεν· ὡ-
 στήτων πάντων· ὥς τε ἐξίσταται πάντες
 καὶ δόξαζον τὸν θν' λέγοντας· ὅτι οὐδέποτε
 οὕτως ἴδμεν· ~ ^{πρὸς} τῶν ἡγετῶν καὶ μαρ-

Καὶ ἦν ἐκεῖ· παρά τὸν οἶκόν· εἶδε δὲ αὐτὸν
 τοῦ ἀλφαίου καθήμενον ἐπὶ τὸ τέλειον·
 καὶ λέγει αὐτῷ· ἀκολουθή μοι· καὶ ἀνασας
 ἡκολούθησεν αὐτῷ· καὶ ἐγένετο ἐν τῷ α-
 νὰ κείσθαι αὐτὸν ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτοῦ· καὶ πο-
 λλοὶ τελῶναι καὶ ἁμαρτωλοὶ (ὡς ἀνέκην το-
 ῦτο) καὶ τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· ἔταρχον
 πολλοὶ· καὶ ἡκολούθησαν αὐτῷ· καὶ οἱ γρα-
 μματεῖς καὶ οἱ φαρισαῖοι ἰδόντες αὐτὸν
 βωθίοντα μετὰ τῶν τελωνῶν καὶ ἁμαρτω-
 λῶν· ἐλέγον τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· τί ὅτι
 μετὰ τῶν τελωνῶν καὶ ἁμαρτωλῶν ἐκθίει
 καὶ πίνει ὁ διδάσκαλος ἡμῶν· καὶ ἀκού-
 σασ ὁ ἴσ' λέγει αὐτοῖς· οὐ χρεῖα μέχοισιν οἱ
 ἰσχυροὶτες ἰατρῶν· ἀλλοὶ κακῶς ἔχοντες·
 οὐκ ἔλθον καλεῖσθαι δι' καί οὖς· ἀλλὰ ἁμαρτω-
 λούς· εἰς μετάνοιαν· ~ ^{πρὸς} τῶν ἡγετῶν καὶ μαρ-

Καὶ πενὸς· ὅς τις θέλῃ ὀπίσω μου· καὶ μαρ-
 ῶν ἐλθεῖν· ἀπαρνησάτω ἑαυτὸν· καὶ ἄρα-
 στω τὸν σταυρὸν αὐτοῦ καὶ ἀκολουθήτω μοι·
 ὅς γὰρ ἂν θέλῃ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ σῶσαι·
 ἀπολέσει αὐτήν· ὅς δ' ἂν ἀπολέσῃ τὴν
 αὐτοῦ ψυχὴν ἔρεκεν ἐμοῦ καὶ τοῦ ἀγα-
 λίου· οὗτος σώσει αὐτήν· τί γὰρ ὧ φησὶ

ἄνθρωπος ἐὰν κερδήσῃ τὸν κόσμον ὅλον· καὶ ζημιώθῃ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ· ἢ τί δώσει ἄνθρωπος ἀντὶ ματαίᾳ τῆς ψυχῆς αὐτοῦ; ὃς γὰρ ἀνέπαυσχεν ἡμεῖς καὶ τοῖς ἐμοῖς λόγοις ἐν τῇ γενεᾷ ταύτῃ τῇ μοι χαλιδὴ καὶ ἀμαρτωλῷ· καὶ οὐκ ὅς τοῦ ἀνθρώπου ἐπαισχυνθῆσθαι αὐτὸν· ὅταν ἔλθῃ ἐν τῇ δόξῃ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ μετὰ τῶν ἀγγέλων τῶν ἁγίων· καὶ ἐλέγξῃ αὐτοὺς· ἀμὲν λέγω ὑμῖν· ὅτι ὅσοι τῶν τούτων ἐσκόπων οἱ τῶνδε οὐκ ἐμὴν λαοὺς παιδαγωγοῦσιν ἕως ἄν ἰδῶσιν τὴν βασιλείαν τοῦ θύου· ἡλυθῆσαν ἐν δυνάμει: ~ ^{σω} / ὅ τῶν κηρύττει

Καὶ ῥῶς ἐκεῖνον· ἐξελθὼν κατὰ μαῶν· οἷός τε τῶν ὀρίων τύρου καὶ σιδωνίου· ἦλθε πρὸς τὴν θάλασσαν τῆς γαλιλαίας· ἀνακρίβουσαν τῶν ὀρίων δεκαπόλεως· καὶ φέρονσιν αὐτῷ κοφὸν μοσιλῶλον· καὶ παρακαλῶσιν αὐτὸν ἵνα ἐπιθῇ αὐτῷ τὴν χεῖρα· καὶ ἐπιλαβόμενος αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ ὄχλου κατήδραν· ἐβάλετο τὸν δακτύλῳ αὐτοῦ εἰς τὰ ὦτα αὐτοῦ· καὶ πτίσας ἤψατο τῆς γλώσσης αὐτοῦ· καὶ ἀνὰ βλέφας ἔειπεν τὸν οὐρανόν· ἐγένετο καὶ λέγει αὐτῷ· ἐφφάθα· ὅ ἐστι διάνοήθητι· καὶ ἀθέωσεν ὅτι ἐνοήθησαν αὐτοῦ αἱ ἀκοαὶ καὶ ἐλύθη ὁ δεσμός τῆς γλώσσης αὐτοῦ καὶ ἐλάλει ὀρθῶς· καὶ διέσηλατο αὐτοῖς ἵνα μηδενὶ εἰπώσιν· ὅσον δὲ αὐτοῖς διέσηματο μαῖμον περισσόπερον ἐκίριον καὶ ὑπερπερισσόν

ἔξεπλήσοντο· λέγοντες καλῶς πάντα πε-
 ποιήκε καὶ τοῖς κοφοῖς ποιῆσαι αὐτοὺς καὶ τοῖς
 ἀλάλοισι λαλεῖν· ὃ δὲ τῶν μνηστῶν ἕνα μαρτυροῦν·
 ὦ καιρῷ ἐκείνῳ· ἀμὸς τις προσήλθε τῷ ἰού-
 ρου πετῶν αὐτῷ καὶ λέγων· διδάσκαλε ἡμε-
 ρα τὸν ἰούριον μου πρόσθε· ἔχοντα πρῶτον αἰ-
 λον· καὶ ὁ ποναὶν αὐτὸν κατὰ λάβη· ῥῆσθ
 αὐτὸν καὶ ἀφρίζῃ καὶ τρίξῃ τοῖς ὀδόντασιν αὐ-
 τοῦ καὶ ξηραίνει· καὶ ὁ πον τοῖς μαθηταῖς
 σου ἵνα αὐτὸς ἐβάλωσιν καὶ οὐκ ἐσχίσαν· ὁ
 δὲ ἀποκριθὲς λέγει αὐτῷ· ὦ γε μετὰ ἀπίστον·
 ἕως πότε πρόσθε μὲν ἔσομαι· ἕως πότε ἀ-
 νέξομαι ἱμῶν φέρων αὐτὸν πρόσθε· καὶ ἡ
 μερκαὶ αὐτὸν πρόσθε τὸν ἰού· καὶ ἰδὼν αὐτὸν
 ἀθέως τὸ πρῶτον ἔασαράξεν αὐτὸν· καὶ π-
 σὼν ἐπὶ τὴν γλῶσσαν ἐκλίθη ἀφίζων· καὶ
 ἐπὶ ῥῶτῃσε τὸν πρῶτον αὐτοῦ· πόσος χρόνος
 ἐστὶν ὡς τοῦτο γέγονεν αὐτῷ· ὁ δὲ εἶπε· πῶ-
 ῖόςθεν· καὶ πομάκεις αὐτὸν καὶ ὁ πῦρ ἔβα-
 λε καὶ ὁ ὕδαται ἵνα ἀπολέσῃ αὐτὸν· ἀλλὰ
 τί δύνῃσαι βοήθῃ σου ἡμῖν ἀσλαχρῖα θεῖον
 ἐφ' ἡμᾶς· ὁ δὲ ἰὸς εἶπεν αὐτῷ· τὸ δὲ δύ-
 νασαι πείσασθαι πάντας διωατὰ τῷ πείσασθαι
 τί· καὶ ἀθέως κράξας ὁ πῦρ τοῦ παιδίου
 μετὰ δακρύων ἔλεγε· πείσῃ με· βοήθει
 μου τῇ ἀπίστῃ· ἰδὼν δὲ ὁ ἰὸς ὅτι ἐπὶ τῷ τρέ-
 χει ὁ ὄχλος ἐπετίμησε τῷ πρῶτῳ αὐτοῦ ἀκαθάρ-
 τω λέγων αὐτῷ· τὸ πρῶτον τὸ ἀλάλον καὶ κο-
 φὸν ὥσπερ ἐπὶ τῷ αὐτῷ· ἔξελθε ἀπ' αὐτοῦ

καὶ μὴ ἐκτίθεται εἰς αὐτὸν· καὶ κράξαν
καὶ πολλὰ σπαράξαι αὐτὸν· ἐξῆλθε καὶ ἐ-
γένετο ὡσεὶ νεκρὸς· ὥς τε τοῖς πολλοῖς λέγειν·
ὅτι ἀπέθανεν· ὁ δὲ ἰὸς κρατήσας αὐτὸν
πλεῖ χειρὸς ἢ χειρὸς αὐτοῦ καὶ ἀνέστη· καὶ
εἰσελθόντα αὐτὸν εἰς τὸν οἶκον οἱ μαθη-
ταὶ αὐτοῦ ἐπιράπτωσαν αὐτὸν κατιδίαν· ὅτι
λίμφοι οὐκ ἐδυνήθησαν εὐβαλεῖν αὐτόν· καὶ
εἶπεν αὐτοῖς· ποῦτο τὸ γένος· ἐν ουδενὶ δύ-
ναται ἐξελθεῖν· εἰ μὴ ἐν προσαχῇ καὶ ρυ-
στία· καὶ ἐκῆθεν ἐξελθόντες παρεπο-
ρεύοντο δ' αὐτὸς γαλιλαίᾳ· καὶ οὐκ ἦν θελόν-
τες ἰναπίσιν· ἐδίδασκε γὰρ τοῖς μαθη-
ταῖς αὐτοῦ καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· ὅτι ὁ υἱὸς
τοῦ ἀνθρώπου παραδύδεται ὅς τις αὐτῶν
καὶ ἀποκτενέωσιν αὐτόν· καὶ ἀποκταθὼς
τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἀναστήσεται· (ἄνω' ἐπ' ἡμεῖς)

Καὶ ὡς καιρὸς ἐκείνῳ· ἐξῆλθεν οἱ τὸς καὶ μαθη-
ταὶ αὐτοῦ· εἰς τὰς κύμας καὶ
σαρῆας τοῦ φιλίππου· καὶ ἐν τῇ ὁδῷ ἐ-
πιρῶντα τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ λέγων αὐτοῖς·
πίναμε λέγοισιν οἱ ἄνθρωποι εἶναι· οἱ δὲ ἀ-
πεκρίθησαν· ἰωάννην υἱὸν βαπτιστῶν· καὶ
ἄλλοι ἡλίαν· ἄλλοι δὲ ἐναὶ τῶν προφητῶν·
καὶ αὐτὸς λέγει αὐτοῖς· ὑμεῖς δὲ πίναμε
λέγετε εἶναι· ἀποκριθεὶς δὲ ὅπερ προσέ-
χει αὐτῷ· σὺ εἶ ὁ χεῖς· καὶ ἐπετίμησεν αὐ-
τοῖς ἵνα μὴ δένει λέγουσιν περὶ αὐτοῦ· καὶ
ἦρ' ἀποδίδας κειν αὐτοῖς· ὅτι δέει τὸν υἱὸν

τοῦ αἵματος πολλὰ παθόν· καὶ ἀποδοκιμαθῆναι
ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων καὶ τῶν ἀρχιερέων καὶ
τῶν γραμματέων· καὶ ἀποκταρθῆναι· καὶ
μετὰ τρεῖς ἡμέρας ἀναστῆναι·

κρίσκειν τῶν ῥησιγών· κατὰ μαρτυρίαν·

Καὶ ἔκκει· παραλαμβάνει οἱ τοῦ δώ-
δεκα μαθητῶν αὐτοῦ καὶ ἤρξατο αὐτοῖς λέγειν
τὰ μέλλοντα αὐτῷ συμβαίνειν· ὅτι ἰδοὺ
ἀναβαίνομεν εἰς Ἱεροσόλυμα καὶ οἱ υἱοὶ τοῦ
αἵματος παραδοθήσονται τοῖς ἀρχιερασί καὶ γρα-
μματέσι· καὶ κατὰ κρίνοισιν αὐτὸν θανά-
τω· καὶ παραδοσίοισιν αὐτὸν τοῖς ἔθνεσιν·
καὶ ἐμπίξουσιν αὐτῷ· καὶ μαρτυρώσουσιν αὐ-
τὸν· καὶ ἐμπύσουσιν αὐτῷ· καὶ ἀποκτε-
νοῦσιν αὐτὸν· καὶ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἀναστήσεται·
καὶ πρὸς πόρρονται αὐτῷ ἰσχυρὸς καὶ ἰσχυ-
ρὸς οἱ υἱοὶ ζεβεδαίου λέγοντες· διδάσκαλε·
θέλωμεν ἵνα ὅσα ἡμεῖς ποιήσωμεν ποιήσωσιν ἡ-
μῖν· ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· τί θέλετε ποιήσω ἡμῖν·
οἱ δὲ εἶπον αὐτῷ· δός ἡμῖν ἵνα ἡμεῖς ἐκδεξιωθῶμεν
καὶ ἡμεῖς ἐξαφύμων σου καθίσωμεν ἐν τῷ δό-
ξῳ σου· ὁ δὲ ἰσχυρὸς εἶπεν αὐτοῖς· οὐκ οἶδατε τί
αἰτεῖσθε· δύνασθε πίνειν τὸ ποτήριον ὃ ἐγὼ
πίνω· καὶ τὸ βάπτισμα ὃ ἐγὼ βαπτίζομαι
βαπτισθῆναι· οἱ δὲ εἶπον αὐτῷ· δύνασθε·
ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· τὸ μὲν ποτήριον ὃ ἐγὼ
πίνω, πίνατε· καὶ τὸ βάπτισμα ὃ ἐγὼ βα-
πτίζομαι, βαπτισθήσασθε· τὸ δὲ καθίσαι
ἐκδεξιῶν μου καὶ ἐξαφύμων μου· οὐκ

ἐν ἐμοὶ δοῦναι· ἄλλοις ἢ τοῖς ματαῖς καὶ ἀκού-
σαρτες οἱ δὲ καὶ ἤρξατο ἀφ' ἀμαρτεῖν περὶ ἰακώ-
βου καὶ ἰωάννου· ὁ δὲ ἴσ' πρὸς καλεσάμενος
αὐτοὺς λέγει αὐτοῖς· οἱ δαπερὶ οἱ δοκῶντες
ἀρχεῖν τῶν ἐθνῶν κατὰ κῆρ' ἀγοισὶν αὐτῶν·
καὶ οἱ μεγάλοι αὐτῶν· καπεξοισι ἀγοισὶν αὐ-
τῶν· οὐχ οὕτως δὲ ἔσται ἐν ἡμῖν· ἄλλ' ὅς ἂν θέ-
λη γενέσθαι μέγας ἐν ἡμῖν ἔσται ὑμῖν δ' ἰακώβ'·
καὶ ὅς ἂν θέλῃ ὑμῶν γενέσθαι πρῶτος, ἔστω
πάντων δούλος· καὶ γὰρ οὕτως τοῦ ἀπ' οὐ οὐ
κὴλ θεοῦ ἀκορηθῆναι, ἀλλ' ἀδ' ἀκορηθῆναι· καὶ δού-
λαι τὴν ψυχὴν αὐτοῦ λίτρον ἀντί πολλῶν· —

^{παῖς} ^{τοῦ ἀπ' οὐ οὐ καὶ λαβῶν} ^{κατὰ ἰωάννου}
Καὶ ῥῶς ἐκείνῳ· ἡ τὴν ἀδελφῶν λαβῶρος
ἀπὸ βηθαρίας ἐκ τῆς κώμης μαρίας καὶ μαρ-
θας τῆς ἀδελφῆς αὐτῆς· ἡ δὲ μαρία ἡ αἰλὶ-
ψασα τὸν κῆρ' κέρω καὶ ἐμάχασα τοῖς πό-
ρ' δας αὐτοῦ ταῖς θρηξὶν αὐτῆς ἡ δὲ ἀδελφὸς
λαβῶρος ἡσθένει· ἀπέστ' ἐλαφροῦν αἱ ἀδελφαὶ
πρὸς αὐτὸν· λέγουσαι· κέ' ἴδε οὐ φιλεῖς ἀδελ-
φεῖ· ἀκοῖσας δὲ οἱ ἴσ' εἶπεν· ἡ ἀδελφὴ αὐ-
τῆς, οὐκ ἐστὶ πρὸς θάνατον, ἀλλ' ὑπὲρ τῆς
δούλης τοῦ θυ· ἵνα δόξαθῇ οὕτως τοῦ θυδ' αὐ-
τῆς· ἡ γὰρ παῖς δὲ οἱ τὴν μαρθάν καὶ τὴν
ἀδελφὴν αὐτῆς μαρίαν καὶ τὸν λαβῶρον·
ὡς οὖν ἡ κοιστὴν ὅτι ἀδελφὴ τότε μὲν ἐμε-
ρεν ἐν ὧ ἡ τὸ πᾶν δούλῃ μέρας· ἐπειτα
μετὰ τοῦτο λέγει τοῖς μαθηταῖς· ἄγωμεν ἡ-
μεῖς τὴν ἰουδαίαν πάλιν· λέγουσιν αὐτῷ οἱ μαθη-

ται· ραββι· νῦν ἐξήτοιωσε οἱ ἰουδαῖοι λιθά-
 σαι· καὶ πάλιν ὑπάσθης ἐκθ· ἀπεκρίθη δὲ ὁ ἰσ-
 οῦχι δώδεκα ὥραι ἄσιν τῆς ἡμέρας· εἰς τις
 περιπατῶς ἐν τῇ ἡμέρᾳ, οὐ πρὸς κόπῃ· ὅτι
 τὸ φῶς τοῦ κόσμου τοῦτου βλέπει· εἴτι δὲ
 τις περὶ πατὴρ ἐν τῇ νύκτι, πρὸς κόπῃ· ὅτι
 τὸ φῶς οὐκ ἐστὶν ἐν αὐτῷ· ταῦτα εἶπε· καὶ
 μετὰ τοῦτο λέγει αὐτοῖς· λαζάρου ὁ φίλος ὑμῶν
 κεκοίμηται· ἀλλὰ πορεύομαι· ἵνα ἐξυπνή-
 σω αὐτὸν· εἶπον οὖν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ·
 κέ· εἰ κεκοίμηται σωθήσεται· ἡρῆκει δὲ ὁ ἰσ-
 οῦς περὶ τοῦ θανάτου αὐτοῦ· ἐκεῖνοι δὲ ἐδῶξαν
 ὅτι περὶ τῆς κοιμῆσεως τοῦ ὑπνου λέγει· τότε
 οὖν εἶπεν αὐτοῖς ὁ ἰσ- οῦς παρρησίᾳ· λαζάρου ἀ-
 πέθανε· καὶ χαίρω δι' ἡμᾶς ἵνα πίστεύσῃτε ὅ-
 τι οὐκ ἔμελλεν ἐκθ· ἀλλὰ βίωμεν πρὸς αὐτὸν· εἶ-
 πεν οὖν θάνατος ὁ λεγόμενος διδύμος τοῖς συ-
 νμαθηταῖς· ἀβίωμεν καὶ ἡμεῖς ἵνα ἀποθάμεν
 μετ' αὐτοῦ· ἐλθὼν οὖν ὁ ἰσ- οῦς ἐρευνᾶτον τέσσα-
 ρας ἡμέρας ἡδὴ ἔχοντες ἐν τῷ κεκοίμῳ· ἰὼ
 δὲ ἡ βηθαῖα ἐγγὺς τῶν ἱεροσολύμων· ὡς
 ἀποσταδίων δεκαπέντε· πολλοὶ οὖν ἐκ τῶν ἱ-
 ουδαίων ἐληλύθησαν πρὸς ταῦς περὶ μαρθᾶν
 καὶ μαρίαν ἵνα παραμυθήσονται αὐτὰς πε-
 ρὶ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτῶν· ἡ οὖν μαρθα ὡς ἤκου-
 σεν ὅτι ἰσ- οῦς ἐρχεται ἐπήντησεν αὐτῷ· μαρία,
 δὲ ἐν τῷ οἴκῳ ἐκαθέζετο· εἶπεν οὖν ἡ μαρ-
 θα πρὸς τὸν ἰσ- οῦν· κέ· εἰ κέ ᾤδε· οὐ καὶ ἀπέθα-
 μεν ὁ ἀδελφός μου· ἀλλὰ καὶ νῦν οἶδω ὅτι ἰσ- οῦς

ἀναιτήσι τὸν θῦδω σοιοῦθ'· λέγει αὐτῷ οἷσ'· ἀ-
ναστήσῃ οὐδ' ἀδελφού σου· λέγει αὐτῷ ἡ μαρθα-
οἷδα ὅτι ἀναστήσῃ ἐν τῇ ἀναστάσει ἐν τῇ
τοῦ αὐτοῦ ἡμέραι· εἶπεν οὖν αὐτῷ οἷσ'· ἡμεῖς
ἐκ τῆς ἀναστάσεως καὶ τῆς ζωῆς· ὅτι σὺ γὰρ εἶπες· καὶ
ἀποθάνῃς· καὶ πᾶς ὁ ζῶν καὶ πιστῶν
εἰς ἐμὲ οὐ μὴ ἀποθάνῃς τὸν αἰῶνα· πῶς
εἰς τοῦτο; λέγει αὐτῷ· καὶ κέ· ἡμεῖς πε-
πείσμεθα καὶ ὅτι σὺ ἔχεις οἶον τοῦ θῦ· ὁ γὰρ τὸν κόσ-
μον ἐρχόμενος· καὶ ταῦτα εἰποῖσα αὐ-
τῷ· ἦλθεν καὶ ἐφώνησε μαρίαν τὴν ἀδελφὴν αὐ-
τοῦ· λάβρα εἰποῖσα· ὁ δὲ δάσκαλος παρέ-
στη καὶ φωνῶν· εἰρήνη ὡς ἡ κοίτη ἐγέρ-
ται ταχὺ· καὶ ἐρχέσθαι πρὸς αὐτὸν· οὐπω δὲ
ἐληλύθει οἷσ' εἰς τὴν καμὴν· ἀλλ' ἐν τῷ
τόπῳ ὅπου ὑπῆρτη σεν αὐτῷ ἡ μαρθα· (ἡ)
οὖν ἰουδαῖοι οἱ ὅντες μετ' αὐτῷ ἐν τῇ οἰκί-
ᾳ καὶ παραμυθούμενοι αὐτῷ· ἰδόντες
τὴν μαρίαν ὅτι ταχέως ἀνέστη καὶ ἐξῆλθεν
ἡκολουθήσαν αὐτῇ λέγοντες· ὅτι ὑπάξει
εἰς τὸ μνημεῖον· ἵνα κλαύσῃ ἐκεῖ· ἡ
οὖν μαρία ὡς ἦλθεν ὅπου ἡ οἷσ' ἰδοῖσα
αὐτὸν εἶπεν αὐτῷ γὰρ τοῖς πόδας λέ-
γουσα αὐτῷ· καὶ εἰς ὧν ὡδ' οὐ καὶ ἀπέ-
θανέ μου ὁ ἀδελφός· ἰδοῖσα ὡς εἶδεν αὐ-
τὴν κλαίοντα· καὶ τοῖς συνελθόντας αὐτῇ
ἰουδαῖοι κλαίοντας· ἐνεβρίμην σαποτῶ
πρὶ καὶ ἐτάραξεν ἑαυτὸν καὶ εἶπε· πού-
τε θήκατε αὐτὸν· λέγουσιν αὐτῷ· καὶ ἐρχου

καὶ ἰδε· ἐδάκρυον οἱ ἰουδαῖοι·
 ἰδε πῶς ἐφίλη αὐτὸν· τίνος δὲ ἐξ αὐτῶν ἔπον·
 οὐκ ἠδυνάτο οὗτος ὁ ἀνείξας τοῖς ὀφθαλμοῖς
 τοῦ τυφλοῦ· ποιῆσαι ἵνα καὶ οὗτος μὴ ἀποθάνῃ·
 ἰδὲ οὖν πάλιν ἐμβριμένον σὺν αὐτῷ·
 ἐρχέσθαι εἰς τὸ λην μέσον· ὡς δὲ ἀσὴλαιον καὶ
 λίθος ἐπέκρητο ἐπ' αὐτῷ· λέγει οἱ· ἀράτε
 τὸν λίθον· λέγει αὐτῷ ἡ ἀδελφὴ τοῦ τεθνηκότος·
 μάρθα· κέ ἐξ ὧν ὅτι· τεταρταῖος γάρ ἐστι· λέ-
 γει αὐτῇ ὁ ἰσ· οὐκ εἶπον σοι ὅτι ἐὰν πιστεύσῃς
 ὅψαι τὴν δόξαν τοῦ θυ· ἦσαν οὖν τὸν λίθον
 οὗ ὡς ὅτε θνητῶς κείμενος· ὁ δὲ ἰσ ἤρετο
 ὀφθαλμοῖς αὐτῶν καὶ ἔπε· πῆρ' ἀχαρισῶ σοι
 ὅτι ἠκούσας μου· ἤνδε ἐξ ὧν ὅτι πάντοτε
 μου ἀκούεις· ἀλλὰ διὰ τὸν ὄχλον τὸν περὶ
 σὴν εἶπον ἵνα πιστάσωσιν ὅτι σὺ με ἀ-
 πέστλας· καὶ ταῦτα εἰπὼν φωνῇ με-
 γάλῃ ἐφράδασε· λάξτε δάρυον ἐξω· καὶ ἐ-
 ζήθησεν ὁ τεθνητῶς δεδεμένος τοῖς πόδας καὶ
 ταῖς χερσὶν κειρίαις· καὶ ἡ ὄψις αὐτοῦ σουδαρί-
 περὶ ἐδέδατο· λέγει αὐτοῖς ὁ ἰσ· λίσσατε αὐτὸν
 καὶ ἀφθεύπατε· πολλοὶ οὖν ἐκ τῶν ἰου-
 δαίων οἱ ἐλθόντες προστὴν μαρίαν καὶ θε-
 ασάμενοι αὐτὴν εἰποίησαν ὁ ἰσ ἐπίστασαν εἰς
 αὐτὸν· ὡς τῶν βαίων· εἰς ὅτε πρὸς αὐτὸν
 ἐξομάτοσιν πρὸς τὴν θαλάσσαν· ἐπὶ κέ ὁ αὐτὸς ἦν ὡς θαῦμα·
 ὡς καὶ ὡς ἐκείνῳ· ὅτε ἤγγισεν αὐτὸν ματθαῖος
 ὁ ἰσ εἰς ἱεροθλύμα· καὶ ἤλθεν εἰς βηθσαῖαν
 πρὸς τὸ ὄρος τῶν ἐλαιῶν· τότε ἀπέστειλε·

δύο μαθητὰς λέγων αὐτοῖς· πορεύθητε εἰς τὴν
 κώμην τὴν ἀπέναντι ἱερὴν· καὶ εὐθέως εἰρή-
 σαι ὄμον δεδεμένω καὶ πάλον μετὰ αὐτῆς· λυ-
 σαμετες αἰγάγεταί μοι, καὶ ἐὰν τις ἱερὴν εἴ-
 πητί· ἐρῇ τε ὅτι ὡς αὐτῶν χρειανέχει· εὐθέ-
 ως δεῖ ἀποστέλλει αὐτοῖς· τοῦτο δὲ ὅλον χρόνον
 ἵμα πληρωθῇ τὸ ῥῆθρον διὰ τοῦ προφήτου λέγον-
 τος· εἰπατε τῇ θυγατρὶ σιών· ἰδοὺ ὁ βασιλεὺς
 σου ἐρχεται· σου πραῖς καὶ ἐπιβεβηκὼς ἐ-
 πί ὄμον καὶ πάλον ἵον ὑποζυγίου· πορεύθεν-
 τες δὲ οἱ μαθηταὶ καὶ ποιήσαντες καθὼς ἐ-
 μέταξεν αὐτοῖς ὁ ἰσὺς· ἤγαγον τὴν ὄμον καὶ τὸν
 πάλον· καὶ ἐπέθηκαν ἐπ' αὐτῶν τὰ ἱμά-
 τια αὐτῶν, καὶ ἐκάθισεν ἐπ' αὐτῶν· ὁ
 δὲ πλείους ὄχλος ἐβρῶσαν αὐτῶν τὰ ἱμάτια
 ἐν τῇ ὁδῷ· ἄλλοι δὲ ἐκπομπὴν κλάδων ἀ-
 πό τῶν δένδρων καὶ ἐβρῶν μυρον ἐν τῇ ὁδῷ·
 ¶ ὁ δὲ ὄχλος οἱ προάγοντες καὶ οἱ ἀκολουθοῦν-
 τες ἐκραζον λέγοντες· ὡς ἀμὴν τῷ ἱσ-
 δαῖ· εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος ἐν ὀνόματι
 τοῦ κυρίου ὡς ἀμὴν ἐν τοῖς ὑψίστοις· καὶ εἰς
 ἐλθόντος αὐτοῦ εἰς ἱερόσολυμα εἰσεί-
 αθῃ πάσαι ἡ πόλεις λήθοισα· τίς ἐστὶν οὗτος·
 ¶ ὁ δὲ ὄχλος ἐλέγον· οὗτος ἐστὶν ὁ προφήτης ὁ
 ἀπομαρτυρῶν τῇ γαλιλαίᾳ· ἰδὸν ὅτι
 δὲ οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ γραμματεῖς τὰ θαυ-
 μασία αὐτοῦ ἐποίησε· καὶ τοῖς παιδαγω-
 γοῖς ἐν τῷ ἱερῷ καὶ λέγοντας· ὡς ἀμ-
 η τῷ ἱσδαῖ· ἡ βασιλεία σου ἀμὴν καὶ ἡ πόλις

αὐτῷ· αἰκούσας τοῦ τοι λέγουσιν· ὁ δὲ ἰσχύει
αὐτοῖς· καὶ οὐδέ ποτε ἀνέγνωτε· ὅτι ἐσθλὸν
ποσὴν πίω καὶ θηλαζόντων κατηρτίσω αἶμον·
καὶ κατὰ λιπῶν αὐτοῖς ἐξήλθεν ἔξω τῆς
πόλεως εἰς βιθαρίαν καὶ ὑλίσθη ἐκεῖ·

Τῶν κατὰ τὴν πτωχίαν κατὰ λουκᾶν·

Τῷ καιρῷ ἐκείνῳ· ἐπορεύετο οἷος ἀναβαίνων
εἰς ἱερὸ σόλυμα καὶ ἐγένετο ὡς ἤγγισεν εἰς βιθόφᾶ·

καὶ δόξας ἐν ὑψίστοις· ἦν τῇ βίῃ τῆς τροφᾶς·

Εἰς τὴν λειτουργίαν· κατὰ τὸν αἶμα·

Καὶ ἐξ ἡμερῶν τοῦ πάσχα ἦλθεν ἰσχύς βιθαρί-
αν ὅπου ἠλάζαρος ὁ τεθνηκὼς οὐκ ἤκειρεν·
καὶ κενῶν· ἐποίησαρ οὖν αὐτῷ δειπνέειν·
καὶ ἡ μαρθαδὴν κόρη· ὁ δὲ ἠλάζαρος εἰς τὴν πτωχίαν
ἀνακημένων αὐτῷ· ἡ οὖν μαρία λαβοῦσα
λίτραν μύρου μαρδουπίστεικῆς πολυτίμου· λί-
ληψεν τοῖς πόδας τοῦ ἰσχύ· καὶ ἔξεμαξε ταῖς θρῆ-
ξι· αὐτῆς τοῖς πόδας αὐτοῦ· ἡ δὲ οἰκία ἐ-
πληρώθη σμύτῃς ὁσμῆς τοῦ μύρου· λέγει οὖν
εἰς σμύτῃς μαθητῶν αὐτοῦ ἰοῦδας σίμωνος
ἰσκαρίω τις ὁ μέλων αὐτὸν παραδίδουαι·
διὰ τὸ τοῦτο τὸ μέρον οὐκ ἐπράθη τριακοσί-
ων δηναρίων καὶ ἐδόθη πτωχοῖς· εἰπε δὲ
τοῦτο· οὐχ ὅτι περὶ τῶν πτωχῶν ἐμέλει αὐ-
τῷ· ἀλλ' ὅτι κλέπτειν· καὶ τὸ γλωσσόκομον
εἶχε καὶ τὰ βαλλόμενα ἐβάσταζεν· εἶπεν
οὖν οἷος· ἄφες αὐτῷ εἰς τὴν ἡμέραν τοῦ δι-
ταφιασμοῦ μου τετήρηκεν αὐτὸ· τοῖς πτω-
χοῖς γὰρ πάντοτε ἔχεται μεθ' αὐτῶν· ἐμε'

δέ οὐ πάντοτε ἔχεται· ἐγνωσὶν ὁ ἄλλος πολὺς
 σκῆπτρ' ἰουδαίων ὅτι ἐκείν'· καὶ ἦλθον οὐ
 διατὸν ἴν' μόνον· ἀλλ' ἵνα καὶ τὸν λαβάρον ἰ-
 δώσιν ὃν ἡγεῖται σκῆπτρῶν· ἐβουλεύσαν-
 το δὲ οἱ ἀρχιερεῖς· ἵνα καὶ τὸν λαβάρον ἀπο-
 κτήνωσιν· ὅτι πολλοὶ δι' αὐτὸν ἐπήγον τῶν ἰου-
 δαίων καὶ ἐπίστατον εἰς τὸν ἴν' + τῇ ἐπαύ-
 ριον ὁ ἄλλος πολὺς ὁ ἐλθὼν εἰς τὴν ἑορτήν· ἀ-
 κοίσαρτες ὅτι ἴσ' ἔρχεται εἰς ἱεροσόλυμας·
 λαβόμενα βασιλέων φοιρῆκων καὶ ἐξηλθοῦντες
 ἀπ' ἀντιόχειας αὐτῶ· καὶ ἐκράζοντες ὡς
 ἀντὶ ἀλοφ' ἐκείνου ὁ ἐρχόμενος ἐν ὀνόματι
 τοῦ ὀβασίλαος τοῦ ἰν' + εὐρῶν δὲ οἱ σὺν ἀν-
 ριον ἐκάθισεν ἐπ' αὐτὸ καθὼς ἐστὶ μαγα-
 ρένον· μὴ φοβοῦ θύγατερ σιών· ἰδοὺ ὁ βα-
 σίλαος σου ἔρχεται σοὶ καθήμενος ἐπὶ πύ-
 λου ὁρίου· ταῦτα δὲ οὐκ ἐγνωσάντο οἱ μα-
 θηταὶ αὐτοῦ τὸ πρῶτον· ἄλλοτε ἐδξάαθ' ὁ
 οἶσ'· τότε ἐμνήσθησαν ὅτι ταῦτα ἰὼν ἐ-
 πάντως γεγραμμένα· καὶ ταῦτα ἐποίησαν
 αὐτῶ· ἐμαρτύρησεν ὁ ἄλλος ὁ σὺν μετὰ
 τοῦ ὅτι τὸν λαβάρον ἐφώνησεν σκῆπτρῶν
 κρημείου καὶ ἡγεῖται αὐτὸν σκῆπτρῶν·
 διατὸν καὶ ἐπήντησεν αὐτοῦ ὁ ἄλλος
 ὅτι ἡκοίσαρ τούτο αὐτὸν πεποιηκέναι
 τὸ σημεῖον· ~ Τῇ αὖ καὶ μετ' ὅτι ὁ πρῶτος
 τῇ ἐφοβήθη ἡ σίχας· ἐπ' οὐ φοβερόσθ' ἡ τῆς αὐτῆς σίχας·
 ὡς καὶ ἐκείν'· πρῶτον κατὰ ματ'
 αὐτὸν ἐπ' ἀνὰ τὸν οἶον εἰς τὴν πόλιν ἐπείνασεν.

καὶ ἰδὼν οὐκ ἔμελλεν ἐπὶ τῆς ὁδοῦ· ἦλθεν ἐπαύ-
 τῳ καὶ οὐδὲν ἔβρεν ἐπαύτῃ ἢ μὴ φύλακός
 μου· καὶ λέγει αὐτῇ· μὴ κέ τίς ἐκ σου καρπὸς ἔ-
 ρηται εἰς τὸν αἰῶνα· καὶ ἐξηράνθη παρὰ
 χρῆμα ἡ οὐκὴ· καὶ ἰδόντες οἱ μαθηταὶ αὐ-
 τοῦ ἐθαύμασαν λέγοντες· πῶς παρὰ
 χρῆμα ἐξηράνθη ἡ οὐκὴ· ἀποκριθεὶς δὲ
 οἷός τις εἶπεν αὐτοῖς· ἀμελῶ λέγω ὑμῖν·
 εἴ ἂν ἔχητε πίστιν καὶ μὴ δῶκετε· οὐ-
 μό μου τὸ τίς συκὴς ποιήσεται· ἀλλὰ καὶ
 τῷ ὄρφι του τὰ εἰρητε ἀρθῇ τί καὶ βλήθῃ τίς
 τῷ θαλάσῳ· γενήσεται· καὶ πάντα ὅ-
 σα ἂν αἰτήσητε ἐν τῇ προσευχῇ πίστεον
 τῷ λόγῳ· καὶ ἐλθόντι αὐτῷ ἡσυχία· οἱ
 ἐρῶν προσήλθον αὐτῷ διδάσκοντες οἱ ἀρχι-
 ρεῖς καὶ οἱ πρῶτοι τοῦ λαοῦ λέγοντες·
 ἐν ποίᾳ ἐξοισίᾳ ταῦτα ποιεῖς· καὶ τίς
 σοι ἐδωκεν τὴν ἐξοισίαν ταύτην· ἀπο-
 κριθεὶς δὲ οἷός τις εἶπεν αὐτοῖς· ἐρωτήσω
 ὑμᾶς κατὰ λόγον· ἐν αὐτῷ· οὐκ ἔστιν ἡ
 μοῖ, κατὰ ὑμῖν ἐρῶ· ἐν ποίᾳ ἐξοισίᾳ
 ταῦτα ποιῶ· τὸ βάπτισμα ἰωάννου·
 πόθεν· ἐξ οὐανοῦ· ἢ ἐξ ἀνθρώπων· οἱ δὲ
 διελογίζοντο ἐν ἑαυτοῖς λέγοντες· εἴ
 ἂν εἴπωμεν· ἐξ οὐανοῦ· ἐρῶ ἡμῖν· δι-
 ατί οὐανοῦ καὶ πῶς ἔσονται αὐτῷ· εἴ ἂν δὲ
 εἴπωμεν ἐξ ἀνθρώπων· φοβούμεθα τὸν ὄ-
 χλον· πάντες γὰρ ἔχουσιν τὸν ἰωάννην ὡς
 προφήτην· καὶ ἀποκριθεὶς τῷ ἰωάννῃ·

οὐκ οἶδμεν· ἔφη αὐτοῖς καὶ αὐτὸς· οὐδέ ἐ-
γὼ λέγω ὑμῖν, εὐποία ἐξοισί αὐταῖτα ποιῶ·
τίδ' ὑμῖν δοκεῖ· ἄλλος τίς εἶχεν τέκνον· καὶ
προσελθὼν τῷ πρώτῳ εἶπεν· τέκνον· ἵπα-
γεσὶ μερον ἐρξάβου ἐν τῷ ἀμπελώνῳ μου· ὁ
δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν· οὐθέλω· ἕτερον δὲ με-
τὰ μεληθῆς ἀπήλθεν· καὶ προσελθὼν τῷ
δευτέρῳ εἶπεν ὡς αὐτῷ· ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶ-
πεν· ἐγὼ καί· καὶ οὐκ ἀπήλθεν· πρὸς αὐτῶν
δὲ ἐποίησεν τὸ θέλημα τοῦ πρῶ· λέγουσιν
αὐτῷ, ὁ πρῶτος· λέγει αὐτοῖς ὁ ἰσ· ἀμὲν λέ-
γω ὑμῖν· ὅτι οἱ τελέωναι καὶ αἱ πόρμαι προ-
αἰοῖσιν ὑμᾶς εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ θ· καὶ ἔλ-
θεν γὰρ πρὸς ὑμᾶς ἰωάννης ὁ δῶδ' ἰκαίος (ἰ-
νίς· καὶ οὐκ ἐπίστασθε αὐτῷ· οἱ δὲ πελώ-
ραι καὶ αἱ πόρμαι ἐπίστασαν αὐτῷ· ἡμεῖς
δὲ ἰδοὺντες, οὐ μὲν μελήθητε ἕτερον τοῦ πιστά-
σαι αὐτῷ· ἄλλω παραβολῇ ἀκούσατε·
ἄλλος ἡ οἰκοδόμος· ὅς τις ἐφύλασεν ἀ-
μπελῶνα· καὶ φασμὸν αὐτῷ περὶ ἐθήκεν·
καὶ ὥρυξεν ἐν αὐτῷ λίνον καὶ ὠκοδόμησεν
πύργον· καὶ ἐξέδοτο αὐτὸν γεωργοῖς, καὶ
ἀπεδήμησεν· ὅτε δὲ ἤγγισεν ὁ καιρὸς
τῶν καρπῶν· ἀπέστειλεν τοὺς δούλους αὐ-
τοῦ πρὸς τοὺς γεωργοὺς, λαβόντες τοὺς καρ-
ποὺς αὐτοῦ· καὶ λαβόντες οἱ γεωργοὶ τοὺς
δούλους αὐτοῦ· ὁρμὴν ἔδωκαν· ὁρμὴν αὖ-
πέκτειναν· ὁρμὴν ἔλιθοβόλησαν· πα-
λὴν ἀπέστειλεν ἄλλους δούλους πλείονας·

τῶν πρῶτων· καὶ ἐποίησαν αὐτοῖς ὡς αὐτοὶ
 ἔπεμψαν· ἀπέστειλεν πρὸς αὐτοὺς τὸν υἱὸν αὐ-
 τοῦ λέγων· ἐν τραπεύουσιν τὸν υἱόν μου·
 οἱ δὲ γεωργοὶ ἰδόντες τὸν υἱόν· εἶπον ἐν ἑ-
 αυτοῖς· οὗτος ἐστὶν ὁ κληρονόμος, δάτε αὐ-
 ποκτείνωμεν αὐτόν· καὶ κατασχώμεν τὴν
 κληρονομίαν αὐτοῦ· καὶ λαβόντες αὐτόν·
 ἐξέβαλον ἐξω τοῦ ἀμπελώρου· καὶ ἀπέ-
 κτενον αὐτόν· ὁ πατήρ οὖν ἔλθῃ οὗς τοῦ ἀμπελώ-
 ρου· τί ποιήσει τοῖς γεωργοῖς ἐκείνοις· λέ-
 γουσιν αὐτῷ· κακοῖς κακῶς ἀπολέσει αὐ-
 τοὺς· καὶ τὸν ἀμπελῶνα ἐκδώσεται ἄλλοις
 γεωργοῖς· οἱ τὴν ἐσθλὴν ἀποδώσουσιν ποῖς καρ-
 ποῖς ἐν τοῖς καιροῖς αὐτῶν· λέγει αὐτοῖς
 ὁ ἰσ· οὐδέποτε ἀνέγραψεν ἐν ταῖς γραφαῖς·
 · λίθον οὐκ ἀπέδοκὴν μασσαροὶ οἱ κοδομονῖται·
 · οὗτος ἐγενήθη δὲ κεφαλὴ γυναικός· παρακῶ
 · ἐξέμψεν αὐτή· καὶ ἐγένεθαι μαστὴ ἐνοφθαλ-
 · μοῖς ἑμῶν· διὰ τοῦτο λέγω ὑμῖν ὅτι ἀρθί-
 σθαι ἀφ' ἑμῶν ἡ βασιλεία τοῦ θύ· καὶ δο-
 θήσεται ἔθνη ποιοῦν τί τοῖς καρποῖς αὐτῶν·
 καὶ ὁ πτωὴν ἐπὶ τὸν λίθον τοῦ τρυφῶν θλασθί-
 σθαι· ἐφ' οὗ δὲ πείσῃ· λικμήσει αὐτόν· ~

Εἰς τὴν λειτουργίαν· κατὰ ματθαῖον·

ὦ καιρῶ ἐκείνῳ· καθ' ἡμέραν τοῦ ἰσ ἐπὶ τῶν
 ὄρεισιν τῶν ἐλαιῶν· προσήλθον αὐτῷ οἱ μα-
 θηταὶ αὐτοῦ καὶ διδάσκοντες· εἰ πῶς
 ἔμψεν πότε ταῦτα ἔσται· καὶ τί τὸ σημεῖ-
 ον τῆς οὐσίας παροῖσias καὶ τῆς ζωτικῆς

τοῦ αἰῶνος· καὶ ἀποκριθεὶς οἷς εἶπεν αὐ-
τοῖς· βλέπετε μή τις ὑμᾶς πλανήσῃ· πο-
λλοὶ γὰρ ἐλεύσονται ἐπὶ τῷ ὀνόματι μὲν
λέγοντες· ὅτι ἡμεῖς οἰκοῦμεν καὶ πολλοὺς πλανή-
σοισι· μελλόντα δὲ ἀκούειν πολλέμενοι
καὶ ἀκούσας πολέμων· ὁράτε μὴ θροεῖσθε·
δεῖ γὰρ πάντα γενέσθαι· ἀλλ' οὐπω ἐστὶ τὸ τέ-
λος· ἐγερθήσονται γὰρ ἔθνος ἐπὶ ἔθνος καὶ
βασιλείαι ἐπὶ βασιλείαι· καὶ ἔσονται λι-
μοὶ καὶ λοιμοὶ καὶ σεισμοὶ κατὰ πόλεις· πάν-
τα δὲ ταῦτα ἀρχὴ ὁδῶν· τότε παραδώ-
σουσιν ὑμᾶς εἰς θλίψιν· καὶ ἀποκτενοῦσιν ὑ-
μᾶς· καὶ ἔσεσθαι μισοῦμενοι ὑπὸ πάν-
των τῶν ἐθνῶν ὡς ἀπὸ ὀνομαίμου· καὶ πο-
τε σκαρδαλισθήσονται πολλοὶ καὶ ἀγγέλοις π-
ραδώσουσι· καὶ μίσσησουσιν ἀγγέλοις· καὶ
πολλοὶ φεῦδ' προφήται ἐγερθήσονται καὶ
πλανήσοισι πολλοὺς· καὶ ὡς τὸ πληθυνθῆ-
ναι τὴν ἀνομίαν· φηθήσεται ἡ ἀσάπεια τῶν πο-
μῶν· ὁ δὲ ὑπομείνας εἰς τέλος, οὕτως σωθή-
σεται· καὶ κηρυχθήσεται τοῦτο τὸ εὐαγγέλι-
ον τῆς βασιλείας ἐν ὅλη τῇ οἰκουμένῃ· εἰς
μαρτύριον πᾶσι τοῖς ἔθνεσι· καὶ τότε
ἔξει τὸ τέλος· ὅταν οὖν ἴδῃτε τὸ σημεῖ-
ον ταῦτο ἐρηκώσεως· τότε ἔστω ὁ δόξα δαμνῆναι
τοῦ προφήτου· ἐς ὃς ἐν τῷ πνεύματι· ὁ ἀνα-
γινώσκων νοεῖτω· τότε οἱ ἐν τῇ ἰουδαί-
ᾳ φερέτωσαν ἐπὶ τὰ ὄρη· ὁ ἐπὶ τοῦ
δὲ μαπὸς μὴ καταβαινέτω ἄραι τὰς ἐκ-

τῆς οἰκίας αὐτοῦ + καὶ ὁ ἐν τῷ ἄρῳ μὴ ἔπι
 στρεφάτω ὀπίσω ἄραι τὰ ἱματῖα αὐτοῦ·
 οὐ αἰδέταις ἐν γαστρὶ ἐχοίσεις καὶ ταῖς θηλα
 ζοίσεις ἐν κείναις ταῖς ἡμέραις + προσά
 χθῆταί δὲ ἱνα μὴ γένηται ἡ φυγὴ ἡμῶν χει
 μάρος, μὴ δὲ ἐν σαμβάτῳ + ἔσαι γὰρ τότε
 θλίψις μεγάλη, οἱ αἰοῦντες ἐν ἀπαρχῇ κόσ
 μου ἕως τοῦ νῦν· οὐδὲν μὴ γένησθαι + καὶ ἡ
 μὴ ἐκολοβώθησαν αἱ ἡμέραι ἔκθαι, οὐ
 καὶ ἐσώθη πάσαι σὰρξ + δι' αὐτὸ τοῖς ἐκ
 λεκτοῖς κολοβώθησονται αἱ ἡμέραι ἔκθαι
 ραι + τότε ἔα ἅπτες ἡμῖν εἴ πῃ ἰδοῦ ὧδε ὁ
 χεῖ· ἡ ὧδε, μὴ πῖσάσῃτε + ἐγερθήσονται χ
 ψάδες χριστοὶ καὶ ψάδες προφῆται· καὶ δώσου
 σι σημεῖα καὶ θαύλα καὶ τέρατα, ὥς τε πλαν
 ῆσαι εἰδὼν αὐτὸν καὶ τοῖς ἐκ λεκτοῖς· ἰδοῦ
 προεῖρηκα ἡμῖν + ἔα ὅν ἡ πωσὶν ἡμῖν·
 ἰδοῦ ἐν τῇ ἐρήμῳ ἔσθι, μὴ ἐξέλθῃτε· ἰδοῦ
 ἐν τοῖς παρμερείοις, μὴ πῖσάσῃτε + ὥς περ
 γὰρ ἡ ἀστραπὴ ἐξέρχεται ἀπὸ ἀνατολῶν
 καὶ φαίνεται ἕως δυσμῶν, οὕτως ἔσαι
 καὶ ἡ παρουσία τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου + ὅπου
 γὰρ ἔα ἡ τὸ πῶμα, ἔκθαι (ὡς ἀχθήσου
 νται οἱ αἱετοί + ὡς ὅτε δὲ μεταπλήν θλίψιν
 τῶν ἡμερῶν ἐκείνων· ὁ ἡλῖος σκοπιαθή
 σθαι καὶ ἡ σελήνη οὐ δώσει τὸ φέγγος αὐ
 τῆς + καὶ οἱ ἀστέρες πτωοῦνται ἀπὸ τοῦ
 οὐανοῦ καὶ αἰδωάμενοι πάντοτε αὐτῶν θαυ
 θήσονται + καὶ τότε φανήσθαι τὸ σημεῖον

τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου οὕτως + καὶ τότε κόφου-
ται πάσαι αἱ φύλαί τῆς γῆς· καὶ ὁφονται
τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου ἐρχόμενον ἐπὶ τῶν νε-
φελῶν τοῦ οὐανοῦ, μετὰ δυνάμεως καὶ δό-
ξης πολλῆς + καὶ ἀποστελεῖ τοὺς ἀγγέλους
αὐτοῦ μετὰ σάβητος φωνῆς μεγάλης· καὶ
ἐπὶ τῶν ἀξιοῦσι τοὺς ἐκλεκτοὺς αὐτοῦ ἐκ τῶν
τεσσάρων ἀνέμων· ἀπ' ἀκρῶν οὐρανῶν ἕως
ἀκρῶν αὐτῶν + ἀπὸ δὲ τῆς οὐκίας κἀθετε-
τὴν παραβολὴν· ὅταν ἴδῃ ὁ κλάδος αὐτῆς
γέρνεται ἀπαλός· καὶ τὰ φύλλα ἐκφυῖ;· γί-
νωσκτε ὅτι ἔγγις τὸ θέρος + οὕτως καὶ ὑμεῖς.
Ὅταν ἴδῃ τε ταῦτα πάντες; γίνωσκτε ὅ-
τι ἔγγιστον ἐπὶ θύραις + ἀλλ' ἠέγω ὑμῶν·
οὐ μὴ παρέλθῃ ἡ γενεὰ αὕτη ἕως ἂν πάντα
ταῦτα γένηται + ὁ οὐρανὸς καὶ ἡ γῆ παρελ-
θούσιν· οἱ δὲ λόγοι μου οὐ μὴ παρέλθωσι· ~

πρὸς

τῇ ἀπ' ἐμῆς Γ 95 ὁρθρον· κατὰ μαθηταί·

Καὶ ῥῶς ἐκείνῳ· σύμβουλιον ἔλαβον οἱ
φαρισαῖοι κατὰ τοῦ υἱοῦ ὅπως αὐτὸν παγιδέ-
σωσιν ἐν λόγῳ + καὶ ἀποστελεῖσιν αὐτὸν τοὺς
μαθητάς αὐτῶν μετὰ τῶν ἡρώδ' ἀρῶν λέγον-
τες + διδάσκαλε· οἶδαμεν ὅτι ἀληθεὶς εἶ
καὶ πῶς ὁδοῦ τοῦ θ' ἐν ἀληθείᾳ διδάσκεις·
καὶ οὐ μέμνησοι περὶ οὐδενός· σὺ γὰρ βλέπεις
εἰς πρόσωπον ἀνθρώπων + εἰ πὲρ οὐκ ἔστιν ἡμῶν, τί σοι
δοκεῖ; ἔξεστὶ δίδωαι κλῆσον καί σαρι; ἢ οὐ +
γνοῖς δὲ ὅτι πῶς ποιεῖς ἡμῶν εἰπεῖς·

τί με πειράζει ὑποκριταί· ἐπιδείξατέ μοι τὸ
 νόμισμα τοῦ κινήσου· οἱ δὲ προσήνεσαν αὐ
 τῷ δωάριον· καὶ λέγει αὐτοῖς· τί νοσῶ εἰ
 κὼν αὕτη καὶ ἡ ἐπιγραφὴ· λέγουσιν αὐτῷ·
 καίσαρος· τότε λέγει αὐτοῖς· ἀπόδοτε οὖν
 τὰ καίσαρος καίσαρι, καὶ τὰ τοῦ θυπῶ θῶ·
 καὶ ἀκούσαντες ἐθαύμασαν καὶ ἀφέντες
 αὐτὸν ἀπῆλθον· ἐρεκόμενοι τῇ λέξει προσήλθον
 αὐτῷ (Ἰσίδου καί οἱ)· οἱ λέγοντες μὴ εἶναι ἀνάστα
 σιν· καὶ ἐπὶ τῇ (ἐκ) αὐτοῦ λέγοντες· διδάσ
 κατε· μαῶς ἔστι· εἰς τίς ἀποθάνει μετὰ
 χων τέκνα· ἐπὶ γὰρ βλάσκει ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ
 τὴν γυναῖκα αὐτοῦ καὶ ἀναστήσει σπέρμα
 τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ· ἴσασιν δὲ παρ' ἡμῖν ἐπὶ
 ἀδελφοὶ καὶ ὁ πρῶτος γαμήλας ἐτελεύτησε·
 καὶ μετ' ἔχων σπέρμα· ἀφῆκε τὴν γυναῖκα
 αὐτοῦ τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ· ὁμοίως καὶ ὁ δε
 υτέρος καὶ ὁ τρίτος ἐως τῶν ἐπτα· ὑπερουδῆ
 πάντων ἀπέθανε καὶ ἡ θυγάτηρ· ἐν τῇ οὖν ἀνα
 στασει τί νοσῶν ἐπτα εἶναι γυναῖκα, πάντες
 γὰρ βόχον αὐτῷ· ἀποκριθεὶς δὲ ὁ ἰσὶς εἶπεν αὐ
 τοῖς· πλανᾶσθε μὴ ἰδοῦτες τὰς γραφὰς καὶ δὲ τὴν
 δυνάμειν τοῦ θυ· ἐν γὰρ τῇ ἀνάστασει, οὔτε Γα
 λῶσι οὔτε Ἑβραίοις· ἀλλ' ὅσοι ἐλθοῦσιν
 οὐκ αὐτοῖς εἰσὶ· περὶ δὲ τῆς ἀναστάσεως τῶν νεκρῶν
 οὐ κατέγνωτε τὸ ῥήθιν ὑπὸ τοῦ θυ λέγοντος·
 ἐγὼ ἔμειν ὁ θς· ἀνέστα καὶ ὁ θς· ἰσάακ, καὶ ὁ θς·
 ἰακώβ· οὐκ ἐστὶν οὖν ὁ θς· θεοὶ νεκρῶν, ἀλλὰ
 ζώντων· καὶ ἀκούσαντες οἱ ὄχλοι ἐξε

πλήσασθαι το ἐπὶ τῇ διδασκαλίᾳ αὐτοῦ· οἱ δὲ φαρισαῖοι
αὐκοῦσαντες ὅτι ἐφῆμιν αὐτῷ πῶς σαδδουκαῖοις
ζωήχθισαν ἐπὶ τὸ αὐτὸ· καὶ ἐπιρώτησεν
εἰς ἐξ αὐτῶν νομικὸς πειράζων αὐτὸν καὶ λέγων·
διδάσκου καθε· ποίαι ἐν πολλῇ μεθάλῃ ἐν τῷ νόμῳ·
· ὁ δὲ ἰσὺς ἐφίλει αὐτῷ· ἀγαπήσεις κτὲν τὸν θνήσκει
· ὅλη καρδιά σου καὶ ἐν ὅλῃ τῇ ψυχῇ σου καὶ ἐν ὅλῃ
· τῇ θυγατροί σου· αὕτη ἐστὶν ἡ πρώτη καὶ μεθάλῃ
· ἐν πολλῇ· ἀπὲρ αὐτὸς ὁμοίως αὕτη· ἀγαπήσεις
· τὸν πλησίον σου ὡς σεαυτὸν· ἐν ταύταις ταῖς
· δόξιν ἐν τοιαῖς ὅλος ὁ νόμος καὶ οἱ προφῆται
· κρέμαται· ζωημενὼν δὲ τῶν φαρισαίων
ἐπιρώτησεν αὐτοῖς ὁ ἰσὺς λέγων· τί ὑμῖν δο
· κεί περὶ τοῦ χυ· τίρος ὑδὸς ἑστὶ· λέγουσιν αὐτῷ
· τοῦ δαδός· λέγει αὐτοῖς· πῶς οὐκ οὐδὲς ἐν πῇ
· κτὲν αὐτὸν καλεῖ· λέγων· εἶπεν ὁ ἰσὺς τῷ κωμουκά
· θου ἐκ δεξιῶν μου· ἕως ἀνθῶ πῶς εἰς θροῖόν σου
· ὑποπόδιον τῶν ποδῶν σου· εἰ οὖν αὐτὸν κα
· λῆκν· πῶς ὑδὸς αὐτοῦ ἑστὶ· καὶ οὐδὲς ἰσὺς ἰδὼν
· το αὐτῷ ἀποκριθῆναι λόγον οὐδὲ ἐτόλμησεν
· τις ἀπεκρίναις τῷ ἡμέρας ἐπερωτῆσαι αὐ
· τὸν οὐκέτι· τότε ὁ ἰσὺς ἐλάλησε τοῖς ὄχλοις
· καὶ τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· λέγων· ἐπὶ τῆς κω
· σέως καθέδρας ἐκάθισαν οἱ γραμματεῖς καὶ
· οἱ φαρισαῖοι· πάντα οὖν ὅσα ἐὰν ῥησὶν
· ὑμῖν τηρῆν τηρῆτε καὶ ποιῆται· κατὰ δὲ τὰ
· ἐρῶ αὐτῶν μὴ ποιῆτε· λέγουσιν γὰρ καὶ
· οὐ ποιῶσιν· δεῖς μάλιστα γὰρ φορτία βαρέα
· καὶ δυσβάστακτα· καὶ ἐπὶ τί θέασι μὲ ἐπὶ πῶς

ὡμοῖς τῶν ἀνῶν· τῷ δὲ δακτύλῳ αὐτῶν οὐ θέλου
 σὶν κίρῃσαι αὐτὰ· πάντα δὲ τὰ ἔργα αὐτῶν
 ποιοῖσι πρὸς τὸ δεῖν ἔχειν τοῖς ἀνθρώποις· πλατύνου
 σὶ γὰρ τὰ φύλλα τῆς γῆς αὐτῶν καὶ μεθελύου
 σὶ τὰ κράσπεδα τῶν ἱματίων αὐτῶν· φίλου
 σὶ δὲ τὴν πρωτοκλήσιον ἐν τοῖς δὴ προῖς καὶ
 τὰς πρωτοκαθεδρίας ἐν ταῖς βιβλιοθήκαις·
 καὶ τοῖς ἀποστολοῖς ἐν ταῖς ἀγοραῖς· καὶ κα-
 λῆσθαι ὑπὸ τῶν ἀνῶν ῥάββι ῥάββι· ὑμεῖς δὲ κη-
 κληθῆτε ῥάββι· εἰς γὰρ ἱμῶν ἐστὶ διδασκαλὸς
 ὅχρ'· πάντες δὲ ὑμεῖς ἀδελφοὶ ἐστέ· καὶ πρῶ-
 τὴν καλέσει τῶν ἱμῶν ἐπὶ τῆς γῆς· εἰς γὰρ ἐστὶν
 ὁ πῦρ ἱμῶν ὁ ἐν τοῖς οὐρανοῖς· καὶ δὲ κηθῆτε
 καθῆνται· ἄς γὰρ ἐστὶν ὑμῶν ὁ καθῆνται ὁ
 ὅχρ'· ὁ δὲ καὶ ζων ὑμῶν ἐστὶν ὑμῶν δι' ἀκο-
 ρος· ὅς τις δὲ ὑψώσει ἑαυτὸν ταπεινωθήσεται·
 καὶ ὅς τις ταπεινώσει ἑαυτὸν ὑψωθήσεται·
 οὐαὶ δὲ ὑμῖν γραμματεῖς καὶ φαρισαῖοι ὑ-
 ποκριταί· ὅτι κἀντέθεικε τὰς οἰκίας τῶν
 χηρῶν· καὶ προφάσει μακρὰ πρὸς ἀχόμενοι·
 δι' αὐτοὺς λόγους ἔβαθε περισσὸν κρηῖμα· οὐ-
 αὶ ὑμῖν γραμματεῖς καὶ φαρισαῖοι ὑποκρι-
 ται· ὅτι κλέβετε τὴν βασιλείαν τῶν οὐρανῶν δι' ὅτι
 προαθεν τῶν ἀνῶν· ὑμεῖς γὰρ οὐκ ἐστέ
 ἄθροισμα οὐδὲ ποῖς ἡσυχασμένοις ἀφίετε εἰσελ-
 θῆν· οὐαὶ ὑμῖν γραμματεῖς καὶ φαρι-
 σαῖοι ὑποκριταί· ὅτι περιβάλλετε τὴν θάλα-
 σσαν καὶ τὴν ξηρὰν ποιῆσαι ἐν ἀπροσήλυ-
 τον· καὶ ὅταν γένηται ποιῆτε αὐτὸν ἵδμεν ἐν

δι' ὑπερβολὴν ὧν· οὐ αὖτις ὁ δόξαι τυφλοὶ·
 οἱ λέγοντες ὅτι ἂν ὁ μῶσις ἐν τῷ ναῷ οὐδὲν ἔστιν·
 ὅτι δὲ ὁ μῶσις ἐν τῷ χρυσῷ τοῦ ναοῦ ὁ φείλῃ·
 μαρτοὶ καὶ τυφλοὶ· τίς γὰρ μερίζων ἔστιν· ὁ χρυσὸς
 ἢ ὁ ναὸς ὁ ἁγίαζων τὸν χρυσόν· καὶ ὅτι ἂν ὁ μῶσις
 ἐν τῷ θυσιαστήριῳ οὐδὲν ἔστιν· ὅτι δὲ ὁ μῶσις ἐν
 τῷ δώρῳ τῷ ἐπάνω αὐτοῦ ὁ φείλῃ· μαρτοὶ καὶ τυ
 φλοὶ· τίς γὰρ μερίζων· τὸ δῶρον ἢ τὸ θυσιαστήριον τὸ
 ἁγιάζων τὸ δῶρον· ὁ οὖν ὁ μῶσις ἐν τῷ θυσιαστή
 ριῳ· ὁ μὲν εἰς αὐτὸ καὶ ἐν πάσι τοῖς ἐπάνω
 αὐτοῦ· καὶ ὁ μῶσις ἐν τῷ ναῷ ὁ μὲν εἰ
 ἐν αὐτῷ καὶ ἐν τῷ κατοικίῳ (καὶ τὸ αὐτὸν· καὶ ὁ
 μῶσις ἐν τῷ οὐνῳ· ὁ μὲν εἰς τῷ θρόνῳ τῷ
 θυ· καὶ ἐν τῷ καθημένῳ ἐπάνω αὐτοῦ·
 οὐ αὖτις ὁ δόξαι γραμματεῖς καὶ φαρισαῖοι ὑπο
 κριταί· ὅτι καθαρίζετε τὸ ἐξωθεν τοῦ ποτη
 ρίου καὶ τῆς παροψίδος· ἐσωθεν δὲ γέμοισιν
 ἄρπαγῆς καὶ ἀδικίας· φαρισαῖοι τυφλοὶ·
 καθαρίζετε πρῶτον τὸ ἐν τῷ ποτηρίῳ
 καὶ τῆς παροψίδος· ἵνα γένηται καὶ τὸ
 ἐκ τῶς καθαρῶν· οὐ αὖτις ὁ δόξαι γραμματεῖς καὶ
 φαρισαῖοι ὑποκριταί ὅτι ἀποδεκατοῦτε τὸ ἐν
 δέισμα καὶ τὸ ἄνθος καὶ τὸ κῆρυλλον· καὶ
 ἀφῆκατε τὰ βαρύτερα τοῦ νόμου τὴν κρί
 σιν καὶ τὸν ἔλεον καὶ τὴν πίσιν· ταῦ
 τα ἐδὲ ποιῆσαι κακῶς καὶ ἀφίέναι·
 ὁ δόξαι τυφλοὶ· οἱ δὲ ἔχοντες τὸν κῶνον
 πα· τὴν δὲ καὶ μὴ λοκαταπίμοντες· οὐ
 αὖτις ὁ δόξαι γραμματεῖς καὶ φαρισαῖοι ὑπο

λέγω γὰρ ἡμῖν οὐκ ἴδιόν ἐστιν ἀπ' αὐτοῦ
ἀν' εἰπὴ τε ἀλογημένον ὁ ἐρχόμενος
ἐν ὀνόματι κυρίου καὶ ἐξελθὼν ἐπὶ ῥάβδῳ
ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ καὶ προσήλθων αὐτῷ οἱ
μαθηταὶ αὐτοῦ ἐπιδείξαι αὐτῷ τὰς οἰκο
δομὰς τοῦ ἱεροῦ + ὁ δὲ ἰσ' εἶπεν αὐτοῖς· οὐ
βλέπετε ταῦτα πάντα + ἀλλ' ἰδεὲν ἔχετε·
οὐκ ἔστιν ὧδε λίθος ἐπὶ λίθον ὃς οὐ κατ'

ἔσθαι· ~ ἡ γὰρ ἡμεῖς τὸν γὰρ ἡμεῖς τὸν
ἰπεν ὁ κύριος τοῖς ἐκ τούτου μαθηταῖς· περὶ τῆς
ἡμέρας ἐκείνης καὶ ὥρας οὐδεὶς οἶδεν· οὐ
δὲ οἱ ἀγγέλοι τῶν οὐρανῶν, ἡ δὲ πατὴρ μόνος· ὡς
περὶ αὐτῆς ἡμετέρας τοῦ κυρίου· οὕτως ἔσται καὶ ἡ
παρουσία τοῦ κυρίου τοῦ ἀρχίου + ὡς περὶ γὰρ
ἡσαν ἐν ταῖς ἡμέραις ταῖς προτοῦ κατὰ
κλήσμου + τρώγοντες καὶ πίνοντες· γαριώ
ντες καὶ ἀγαπῶντες ἀλλήλους ἡμέρας, ἀσπλ
νθὲν ὡς εἰς τὴν κίβωτον καὶ οὐ κέκρωσαν ἐ'
ως ἡλθεν ὁ κατακλυσμὸς καὶ ἡρεν ἀπαντας·
οὕτως ἔσται καὶ ἡ παρουσία τοῦ κυρίου τοῦ ἀρχίου +
τότε δύο ἔσονται ἐν τῷ ἀγῶ· ὁ δὲ παραλαμ
βάνται, καὶ ὁ εἰς ἀφίεται + δύο ἀληθεύουσιν
ἐν τῷ κύνῳ· μία παραλαμβάνεται, καὶ
μία ἀφίεται + δύο ἐπὶ κύνῳ ὁ εἰς παρα
λαμβάνεται, καὶ ὁ εἰς ἀφίεται + γρηγορήτε
οὖν ὅτι οὐκ οἴδατε ποία ὥρα ὅτε ὁ κύριος ἐρ
χεται + ἐκ γὰρ οὐκ οἴδατε ὅτι ὁ κύριος οἶκο
δυσπόητος ποίᾳ φυλακῇ οὐκ ἐπὶ τῆς ἐρχεται· ἐ
ρηγορήσεν ἄν καὶ οὐ καὶ εἰς αὐτοὺς δι' ὅτι οὐκ οἶδατε

τὴν οἰκίαν αὐτοῦ· δὲ ἀποῖτο καὶ ἰμὲς γίνεσθαι
 τοιμοί· ὅτι ἡ ὥρα οὐδὲ καὶ τὸ οὐχὸς τοῦ αἵματος ἐρχέ-
 ται· τίς ἄρα ἐστὶν ὁ πῖτος δούλος καὶ φρόνημος,
 ὃν κατέστησεν ὁ κύριός αὐτοῦ ἐπὶ τῆς θεραπείας
 αὐτοῦ· τοῦ διδόναι αὐτοῖς τὴν προφύλιν ἐν και-
 ρῷ· μακάριος ὁ δούλος ἐκείνος· ὃν ἐλθὼν ὁ
 κύριός αὐτοῦ ἐλθήσει οὕτως ποιούμεναι· ἀλλὴν
 λήθω ἑμὶν· ὅτι ἐπὶ πᾶσι τοῖς ὑπαρχοῦσι τῷ
 αὐτοῦ· καταστήσει αὐτὸν· ἐὰν δὲ εἴπῃ ὁ κα-
 κὸς δούλος ἐκείνος ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ· χρο-
 νίζεσθαι οὐκ ἐλθόντα καὶ ἄρξεται τυπτεῖν τοὺς
 συνδούλους αὐτοῦ· ἐπιθήσει δὲ καὶ πῖνεν μετὰ τῶν
 μεθύοντων· ἡξεῖ οὐκ ἐκείνου τοῦ δούλου ἐκείνου· ὃν
 ἰκέμεν αὐτοῦ πρὸς δόξαν· καὶ ἐν ὥρᾳ ἡ οὐ γινώσκει
 καὶ· καὶ διχοτομήσει αὐτὸν· καὶ τὸ μέρος αὐτοῦ
 μετὰ τῶν ὑποκριτῶν θήσει· ἐκὼς ἐσται ὁ κλαυ-
 θμὸς καὶ ὁ βρυγμὸς τῶν ὁδόντων· τὸ τε ὁμο-
 ωθήσεται ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν δέκα παρθέ-
 νοις· αἱ τὶν ὅσων λαβοῦσαι τὰς λαμπάδας αὐ-
 τῶν ἐξῆλθον εἰς ἀπάντησιν τοῦ κυρίου·
 πέντε δὲ ἦσαν ἐξ αὐτῶν φρόνημοι καὶ αἱ πέν-
 τε μωραὶ· αἱ τὶν κενῶν λαβοῦσαι τὰς λα-
 μπάδας αὐτῶν· οὐκ ἔλαβον μετὰ αὐτῶν ἐλ-
 λαιον· αἱ δὲ φόρημοι ἔλαβον ἔλαιον ἐν τοῖς
 αἵματι αὐτῶν μετὰ τῶν λαμπάδων αὐτῶν·
 χρόνιον τοσδε τοῦ κυρίου ἐνύστασαν πάσae
 καὶ ἐκάθισαν· μετὰ δὲ νύκτος κραυγὴ
 γέγονεν· ἰδοὺ ὁ κύριός ἐρχεται· ἐξέρχε-
 σθε εἰς ἀπάντησιν αὐτοῦ· τὸ τε ἡγήθησαν

ὁμο-
 ωθήσεται
 ἡ βασιλεία
 τῶν οὐρανῶν
 δέκα παρθέ-
 νοις

ἡ πρὸς τὴν πρῶτην καὶ τὴν δευτέραν

πάσαι αἱ παρθένοι ἐκῆμαι καὶ ἐκόμισαν
 τὰς λαμπάδας αὐτῶν· αἱ δὲ μεῶν αἱ τὰς φο
 ρήμοισι εἶπον· δότε ἡμῖν σὺ τοῦ ἐλαίου ὕ
 μῶν ὅτι αἱ λαμπάδες ἡμεῶν σβέννυνται·
 ἀπεκρίθησαν δὲ αἱ φόρμιμοι λέγουσαι· μή
 ποτε οὐ καὶ κέσῃ ἡμῖν καὶ ἡμῖν· πορὰ βῆθε
 δὲ μεῶν πρὸς τοῖς παροῦντας καὶ ἀγῶν
 σατε ἑαυταῖς· ἀπερχομένων δὲ αὐτῶν ἀ
 γοράσαι ἦλθεν ὁ κυμφίος καὶ αἱ εἴποιτο
 εἰσηλθόν μετ' αὐτοῦ εἰς τοὺς γαίμοισι· καὶ
 ἐκλήσθη ἐνθύρῳ· ὕστερον δὲ ἔρχονται καὶ
 αἱ λοιπαὶ παρθένοι λέγουσαι· κέ· κέ· ἄφο
 ροὺ ἡμῖν· ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν· ἀμὲν
 λέγω ὑμῖν· οὐκοῦν δαίμας· γρηγορεῖτε
 οὖν ὅτι οὐκοῦν δατεπὶ τὴν ἡμέραν οὐδέ τὴν ὥ
 ραν· ἐν ᾗ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἔρχεται·^π αἶς
 περ γὰρ ἄνθρωπος ἀποδύμενος ἐκάλεισε τοὺς
 ἰδύουσιν δούλους· καὶ παρέδωκεν αὐτοῖς τὰ ὕ
 παρχοντα αὐτοῦ· καὶ ὥρμησεν ἔδωκε πέν
 τε τάλαντα· ὧ δὲ δύο· ὧ δὲ ἐν ἑκατόκῳ
 τὰ πέντε ἰδύοντες αὐτὸν καὶ ἀπεδήμησεν·
 εὐθεὺς δὲ πορεύθεισ ὁ πᾶν πέντε τάλαντα
 λαβὼν· ἤρξατο ἐρᾶν τοῖς καὶ ἐκέρδησεν
 ἄλλα πέντε τάλαντα· ὡς αὐτὸς καὶ
 ὁ πᾶν δύο· ἐκέρδησε καὶ αὐτὸς ἄλλα δύο·
 ὁ δὲ τὸ ἐν λαβὼν ἀπελθὼν ὤρυξεν ἐν τῇ γῇ
 καὶ κατέκρυψεν τὸ ἀργύριον τοῦ κυρίου αὐτοῦ·
 μετὰ δὲ πολλὸν χρόνον ἔρχεται ὁ κύριος τῶν δού
 λων ἐκῆμων· καὶ ζητεῖ λόγον μετ' αὐτῶν·

καὶ προσελθὼν ὁ τὰ πέντε τάλαντα λαβὼν
 προσήνεκεν ἅμα πέντε τάλαντα λέγων·
 κἔ· πέντε τάλαντα μοι παρέδωκας· ἰδοὺ
 ἅμα πέντε τάλαντα ἐκέρδησα ἐπ' αὐτοῖς·
 ἐφ' αὐτῷ ὡς αὐτοῦ· ὧδ' οὐλὲ ἄλλα καὶ πί-
 σις· ἐπὶ ὀλίγῳ ὡς πῖσος, ἐπὶ πολλῶν σε κα-
 τὰς ἡσῶν· ἵστελθε εἰς τὴν χαρὰν τοῦ κυρίου·
 προσελθὼν δὲ καὶ ὁ τὰ δύο τάλαντα λα-
 βὼν εἶπε· κἔ· δύο τάλαντα μοι παρέδω-
 κας· ἰδοὺ ἅμα δύο τάλαντα ἐκέρδησα ἐ-
 π' αὐτοῖς· ἐφ' αὐτῷ ὡς αὐτοῦ· ὧδ' οὐλὲ
 ἄλλα καὶ πίσις· ἐπὶ ὀλίγῳ ὡς πῖσος, ἐπὶ
 πολλῶν σε κατὰς ἡσῶν· εἰσελθε εἰς τὴν χα-
 ρὰν τοῦ κυρίου· προσελθὼν δὲ καὶ ὁ τὸ ἓν
 τάλαντον εἰληφὼς εἶπε· κἔ· ἐγὼ
 σέ ὅτι σκληρὸς ἄνθρωπος· θερίζων ὅπου οὐ
 κἔσπειρας· καὶ ὥσπερ ὁ θένου δι' ὅτι
 πίσας· καὶ φοβηθεὶς ἀπελθὼν ἐκρύ-
 ψα τὸ τάλαντον σου ἐν τῇ γῇ· ἰδοὺ ἐ-
 χὼς τὸ σόν· ἀπὸ κριθεῖς δὲ ὡς αὐτοῦ
 εἶπε καὶ αὐτῷ· πονηρὸς δούλος καὶ ὀκνηρὸς·
 ἰδοὺ σὺ ὅτι θερίζων ὅπου οὐ κἔσπειρας· καὶ
 ὥσπερ ὁ θένου δι' ὅτι πίσας· ἐδύσεσθαι
 βαλὼν τὸ ἀργύριόν μου τοῖς τραπεζίταις·
 καὶ ἐλθὼν ἔγωγε κομισάμην αὐτὸ ἐμὸν
 ὥς τόκον· ἄρα περὶ αὐτοῦ τὸ τάλ-
 λαντον· καὶ δότε τῷ ἐχόντι τὰ δέκα τάλ-
 λαντα· τῷ γὰρ ἐχόντι παρὰ τὸ δοθῆσε-
 ναι καὶ περισσεύει· ἀπὸ δὲ τοῦ μὴ

ἔχοντος· καὶ ὁ ἔχων ἀρθῆσθαι ἀπ' αὐτοῦ·
καὶ τὸν ἀχρῆτον δούλον σὺ βάλαι εἰς τὸ σκό-
πος τὸ ἐξώτερον· ἐκεῖ ἔσται ὁ κλαυθμὸς
καὶ ὁ βρυγμὸς τῶν ὁδόντων· ὅταν δὲ
ἔλθῃ ὁ ἴδιος τοῦ ἀνδρὸς ἐν τῇ δόξῃ αὐτοῦ· καὶ
πάντες οἱ ἅγιοι ἔλθουσιν μετ' αὐτοῦ· τότε κα-
θήσεται ἐπὶ θρόνου δόξης αὐτοῦ· καὶ ζωα-
θήσεται ἐμπροσθεν αὐτοῦ πάντα τὰ ἐθνη·
καὶ ἀφοριεῖ αὐτὸς ἀπ' ἀγγέλων· ὡς περὶ ὅ-
ποι μὲν ἀφορίζει τὰ πρόβατα ἀπὸ τῶν ἐ-
ρίφων· καὶ ποιήσει τὰ μὲν πρόβατα σὺ δε-
ξιῶν αὐτοῦ, τὰ δὲ ἐρίφια ἐξ ἀουρῶν·
τότε ἔρξ' ὁ βασιλεὺς τοὺς σὺ δεξιῶν αὐτοῦ·
ὡς οἱ ἀγγέλοι μενέοι τοῦ πατρὸς κληρονομή-
σατε τὴν ἐκτίομασ μένιν ὑμῶν βασιλείαν
ἀπὸ κατὰ βολῆς κόσμου· ἐπεὶ ματαίᾳ,
καὶ ἐδώκατέ μοι φαγόν· ἐδίψησα, καὶ
ἐποτίσατέ με· ξένος ἦμιν, καὶ σωτηρί-
αί ἐστέ· γυμνός, καὶ περιέβαλάτε με·
κίβδησεν, καὶ ἐπίσκεψαθέ με· ἐν φυ-
λακῇ ἦμιν, καὶ ἦλθετε πρός με· τότε ἀπο-
κριθήσονται αὐτῷ οἱ δούλοι λέγοντες· κέ-
πότε σε ἵδμεν πεινῶντα καὶ ἐθρέψαμεν·
κίβδησεν καὶ ἐποτίσαμεν· πότε σε ἵδ-
μεν ξένον καὶ σωτηρίοις ἡμεῖς γυμνόν καὶ περι-
έβαλομεν· πότε σε ἵδμεν ἀσθενῆ καὶ ἐν φυλα-
κῇ, καὶ ἦλθομεν πρόσσε· καὶ ἀποκριθὲς ὁ βα-
σιλεὺς ἔρξ' αὐτοῖς· ἀμὲν λέγω ὑμῖν· ἐφό-
σομεν ποιήσας ἐν ἡμέραις τῶν ἀδελφῶν μου

τῶν ἐλαχίστων ἐμοὶ ἐποιήσατε· τότε ἔρρει
 καὶ τοῖς ἐξ ἐσωτέρων· πορεύεσθαι ἀπὸ τοῦ
 οἱ κατηραμένοι εἰς τὸ πῦρ τὸ αἰώνιον τὸ ἡ το
 μασκίζον τῷ διαβόλῳ καὶ τοῖς ἀγγέλοις αὐτοῦ·
 ἐπὶ πᾶσα γὰρ, καὶ οὐκ ἐδύνάτε μοι φαγεῖν· ἐ
 δίψησα, καὶ οὐκ ἐπότισά με· ξένος ἐκίμην, καὶ
 οὐκ ἐκάλυψε με· γυμνός, καὶ οὐ περιεβάλτε με·
 ἀσθενὴς καὶ ἐν φυλακῇ καὶ οὐκ ἐπεσκεψάσθε
 με· τότε ἀποκριθήσονται καὶ αὐτοὶ λέγον
 τες· κέ· ποτε σείδμεν πεινῶντα ἢ διψῶντα
 ἢ ξένον ἢ γυμνόν ἢ ἀσθενῆ ἢ ἐν φυλακῇ, καὶ οὐ
 ᾔκηκον ἡμεῖς· τότε ἀποκριθήσεται
 αὐτοῖς λέγων· ἀμὲν λέγω ὑμῖν· ἐφ' ὅσον οὐ
 ἐποιήσατε ἐν τοῦτων τῶν ἀδελφῶν μου τῶν
 ἐλαχίστων, οὐδὲ ἐμοὶ ἐποιήσατε· καὶ αὐ
 τε πελάσσονται οὗτοι εἰς κόλασιν αἰώνιον· οἱ
 δὲ δίκαιοι εἰς ζωὴν αἰώνιον· καὶ ἐγένε
 το ὅτε ἐτέλεσεν ὁ ἰσὺς πάντας τοὺς λόγους
 τούτους· εἶπε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· οἶδα
 τε ὅτι μετὰ δύο ἡμέρας τὸ πασχα γίνεσθαι·
 καὶ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου παραδίδοται εἰς τοὺς ἔ
 ρηθαι· ἡμεῖς δὲ ἔσμεν ὅσοι ἐπὶ τῷ ὄρει· οἱ ἀρχόντες
 καὶ οἱ ἱερεῖς φασὶν ἐνέχουσιν· κατὰ ἰωάννην

ὡς καιρῶς ἐκείνου· ἐμαρτύρει ὁ ὄχλος ὁ ὢν με
 τὰ τοῦ ἰσ. ὅτι τὸν λαβάρον ἐφώρηντο ἐκ τοῦ
 μνημείου καὶ ἤγειραν αὐτὸν ἐκ νεκρῶν· διὰ
 τοῦτο καὶ ἐπήντησεν αὐτῷ ὁ ὄχλος ὅτι ἠκού
 σαυ τοῦτο αὐτὸν πεποιηκέναι τὸ σημεῖον·
 οἱ οὖν φαρισαῖοι εἶπον πρὸς ἐαυτοὺς· θεωροῦν

ὅτι οὐκ ὠφελῖτε οὐδὲν· ἰδεὶ ὁ κόσμος ὅπῃ
 σω αὐτοῦ ἀπῆλθεν· ἦσαν δὲ τινες ἐκ τῶν
 ἀραβιανοῦ των ἵνα προσκυνήσωσιν ἐν τῇ
 ἑορτῇ ἐλπίως· οὗτοι οὖν προσῆλθον φίλι
 ππώ τῳ ἀποβῆθαι ἰδὼν τὴν γαλιλαίαν· καὶ
 ἡρώτων αὐτὸν· λέγοντες· κέ θέλωμεν τὸν
 ἱὸν ἰδεῖν· ἔρχεται ὁ φίλιππος καὶ λέγει τῷ ἀν
 δρῆα· καὶ πάλιν ἀνδρῆας καὶ φίλιππος λέ
 γουσι τῷ ἱῳ· ὁ δὲ ἰὸς ἀπεκρίνατο αὐτοῖς λε
 γων· ἐλήλυθεν ἡ ὥρα ἵνα δοξασθῇ ὁ υἱὸς τοῦ
 ἀνθρώπου· ἀλλὰ ἀλλὰ λέγω ὑμῖν· ἐὰν μὴ ὁ
 κόσμος τοῦ σίτου πτωχῶν ᾗ τὴν γλῶσσαν ἀποθά
 νῃ αὐτὸς μόνος μόνος· ἐὰν δὲ ἀποθάνῃ, πολλὰ
 καρπὸν φέρει· ὁ φίλων τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἀ
 πολέσει αὐτὴν· καὶ ὁ μισῶν τὴν ψυχὴν αὐτοῦ
 ἐν τῷ κόσμῳ τοῦ τῶν ᾗ ζῶντων αἰώνιον φυλά
 ζει αὐτήν· ἐὰν ἐμοὶ τίς διάκομει, ἐμοὶ
 ἀκολουθήτω· καὶ ὅπου ἔμεινεν, ἐκεῖ καὶ
 ὁ διάκομος ὁ ἐμὸς ἔσται· καὶ ἐὰν τίς ἐμοὶ
 διάκομει τίμιός ἐστι αὐτὸν ὁ πατήρ· μὴ ἡ ψυχὴ
 μου πεπαράσθαι· καὶ τί εἶπα· πᾶς ὁ σῶσόν με
 ἐκ τῆς ὥρας ταύτης· ἀλλὰ διὰ τοῦτο ἦλθον
 εἰς τὴν ὥραν ταύτην· ἵνα πᾶς ὁ δόξασόν μου τὸ
 ὄνομα· ἦλθεν οὖν φωνὴ ἐκ τοῦ οὐανοῦ· καὶ ἐ
 δοξασα καὶ πάλιν δοξάσω· ὁ οὖν ὄχλος ὁ ἐ
 σῶς καὶ αἰκούσας ἔλεγε· κροῦ τὴν γαστέρα·
 ἄλλοι ἔλεγον· ἄγγελος αὐτῷ λελάληκεν· ἀ
 πεκρίθη αὐτοῖς ὁ ἰὸς καὶ εἶπεν· οὐδέ με ἡ φω
 νὴ αὕτη γέγονεν, ἀλλὰ διὰ τοῦτο· μὴ κρίσις

τὴν ὥραν
 τοῦ σῶσθαι

εἶπεν οὖν πᾶς ὁ δόξασόν μου τὸ ὄνομα

ἐς τὸν κόσμον τοῦτον· νῦν δ' ἄρχων τοῦ κόσ-
 μου σὺ βλεθῆσθαι ἔξω· καὶ νῦν ἐὰν ἴψωθῶ
 εἰς τὴν γῆν· πάλιν τὰς ἐλπίσιν πρὸς ἐμαυ-
 τόν· τοῦτο δὲ ἔπειτα μαίρων ποίωθ' ἀνάπαι-
 ῖν· ἐμελέσθαι ἀποθνήσκειν· ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ
 ὄχλος· ἡμεῖς ἢ κοίσομεν εἰς τὸν νόμον, ὃ
 τί ὁ χεῖρ ἐκείνη εἰς τὸν αἰῶνα· καὶ πᾶς σὺ λέ-
 γεις δεῖν ἴψωθῆναι τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου· εἶπεν
 οὖν αὐτοῖς ὁ ἰσχυρὸς· ἐπὶ μὲν χρόνον τὸ φῶς ἐν
 ὑμῖν ἐστὶ· περιπατεῖτε ἕως τοῦ φῶς ἔχειτε·
 ἵνα μὴ ἰδοὺ σκοπία ὑμᾶς κατὰ λάβῃ· καὶ ὁ
 περὶ πατέρων ἐν τῇ σκοτίᾳ, οὐ κοῖδε ποῦ ὑπάγει·
 ἕως τοῦ φῶς ἔχειτε, πείσατε ἑαυτοὺς τὸ φῶς· ἵνα ἡ
 οἱ φῶς ἡγήσῃ ^{τε} ταῦτα ἐλάλησεν ὁ ἰσχυρὸς καὶ
 ἀπελθὼν ἐκ τῆς ἀπαύτων· τοσαῦτα δὲ αὐ-
 τοῦ σημεῖα πεποιηκότος ἐμπροσθεν αὐτῶν,
 οὐκ ἐπίστασαν ἑαυτοὺς· ἵνα ὁ λόγος ἡσυχίου τοῦ
 προφήτου πληρωθῇ ὃν εἶπε· καὶ τίς ἐπίστα-
 σε τῇ ἀκοῇ ἡμεῶν· καὶ ὁ βραχίονας πύρι-
 πε καλύφθη· διὰ τοῦτο οὐκ ἠδυνάμην τοπὶ
 εἰπεῖν ὅτι πάλιν εἶπεν ὁ ἡσυχίας· τετύ-
 φλωκεν αὐτῶν τοῖς ὀφθαλμοῖς καὶ ἐπί-
 ρωσεν αὐτῶν τὴν καρδίαν· ἵνα μὴ εἶδω-
 σὶ τοῖς ὀφθαλμοῖς καὶ νοήσωσιν τὴν καρδί-
 α· καὶ ἐπίστραψῶσιν καὶ ἰάσομαι αὐτοὺς·
 ταῦτα εἶπεν ὁ ἡσυχίας ὅτε εἶδε τὴν δόξαν
 αὐτοῦ· καὶ ἐλάλησε περὶ αὐτοῦ· ὁ μωσὴς
 τοι καὶ σὺ τῶν ἀρχόντων πολλοὶ ἐπίστασαν
 εἰς αὐτόν· ἀλλὰ διὰ τοῦ φαρισαίου, οὐκ ἔ-

μολόγου· ἵνα μὴ ἀποβῶ ἀνωγορεύονται·
ἵνα ἄπυσαν γὰρ τὴν δόξαν τῶν ἀνῶν μαίνομ·
ἵπερ τὴν δόξαν τοῦ θύ· ἰσὶ δὲ ἔκραξε καὶ
εἶπε· ὁπιστεύω γὰρ ἐμὲ· οὐ πῖσάει εἰς ἐ-
μὲ· ἀλλ' εἰς τὸν πέμψαντά με· καὶ ὁ θεὸς
ρῶν ἐμὲ· θεωρεῖ τὸν πέμψαντά με· ἐγὼ φῶς
εἰς τὸν κόσμον ἐλήλυθα· ἵνα πᾶς ὁ πῖσάων
εἰς ἐμὲ· ἐν τῇ σκοτεινῇ μὴ μαίνη· καὶ ἐάν-
τις μου ἀκούσῃ τῶν ῥημάτων καὶ μὴ φύλαξι
αὐτὰ· ἄνθρωπος οὐ κρίνω αὐτὸν· οὐ γὰρ ἦλθον ἵ-
να κρίνω τὸν κόσμον· ἀλλ' ἵνα σώσω τὸν κόσ-
μον· ὁ ἄθετῶν ἐμὲ καὶ μὴ λαμβάνων τὰ
ῥήματα μου· ἐχὼ τὸν κρίνοντα αὐτὸν· ὁ λό-
γος οὗ ἐλάλησα· ἐκείνος κρίνει αὐτὸν ἐν τῇ ῥη-
ματι ἡμέραν· ὅτι ἐγὼ ἐξέμαυτοῦ οὐ κλά-
νησα· ἀλλ' ὁ πέμψας με πᾶρ αὐτοῦ μοι ἐν το-
λῇ δέδωκε τί εἶπω καὶ τί λαλήσω· καὶ οἶδας
ὅτι ἡ ἐντολὴ αὐτοῦ· ζωὴ αἰώνιος ἐστίν· ἃ οὐκ
λαλῶ ἄνθρωπος· καθὼς εἶρηκέ μοι ὁ πᾶρ οὕτως λαλῶ·

εἰς τὴν λειτουργίαν· κατὰ ματθαῖον·

 ὦ καιρῷ ἐκείνῳ· τοῦ ἰσχυρομένου ἐν βί-
θαρίᾳ ἐν οἰκίᾳ σίμωνος τοῦ λεπροῦ· προσήλ-
θε καὶ τῇ γυνὴ ἔχουσα ἀλάβαστρον μύρου βαρὺ
τίμου· καὶ κατέχευεν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐ-
τοῦ ἀνακειμένου· ἰδόντες δὲ οἱ μαθηταὶ
αὐτοῦ ἠγαπήκτισαν λέγοντες· γὰρ τί ἡ ἀπώ-
λεια αὕτη· ἡ δὲ ἀπογογὰρ τοῦτο τὸ μύρον
πραθῆναι πολλοῦ καὶ δοθῆναι πτωχοῖς· γούσι δὲ
οἷσ' εἶπεν αὐτοῖς· τί κόποι παρέχετε τῇ γυναικί·

ἔρχομαι γὰρ καλὸν ἀρτῶσατο εἰς ἐμὴ· τοῖς πτωχοῖς
 γὰρ πάντοτε ἔχετε μεθ' αὐτῶν· ἐμεῖ δὲ οὐ πάν
 τοτε ἔχεται· βαλοῖσα γὰρ αὐτὴ τὸ μύρον τοῦτο
 ἐπὶ τοῦ σώματός μου πρὸς τὸ ἐνταφιάσαι
 με ἐποίησεν· ἀμὴν λέγω ὑμῖν· ὅπου ἐ
 ἤκηρυχθῇ τὸ ὄνομα τοῦτο ἐν ὅλῳ τῷ κόσ
 μῳ λαληθήσεται καὶ ὅ ἐποίησεν αὐτὴ εἰς
 μνημόσυνον αὐτοῦ· τότε πορευθεῖς εἰς
 τῶν δώδεκα λεγόμενος ἰούδας ἰσκαριώτης·
 πρὸς τοὺς ἀρχιερεῖς εἶπε· τί θέλετε μοι δοῦ
 ναι· καὶ ὁ ἑὺν παραδώσω αὐτὸν· καὶ ἔστησαν
 αὐτῷ τρία μόντα ἀργύρια· καὶ ἀπο τότε ἐ
 ζήτησεν αὐτοὶ ἵνα αὐτὸν παραδώ· ~ τῇ αὐτῇ
 ἡμέρᾳ ἔρχομαι πρὸς ὑπομάσκειν πᾶν τὸν λαόν· ἐπὶ
 ἐλπίαν αὐτοῦ ἐν ἐλπίᾳ τῷ κεφαλῇ μου· ~ καταλόντες

ἡμεῖς αὐτοὶ ἐκείνῳ· ἡγήσαντο ἡ ἑορτὴ τῶν ἀζύμων
 ἡ λεγόμενη πάσχα· καὶ ἐζήτησαν οἱ ἀρχιε
 ρεῖς καὶ οἱ γραμματεῖς τὸ πῶς ἀνέλωσιν τὸν
 ἵν'· ἐφοβοῦντο γὰρ τὸν λαόν· εἰσὶν ἡμεῖς δὲ ὁ
 σαταναῖος εἰς ἰούδα τὸν καλούμενον ἰσκαρι
 ώτην· οὐ γὰρ ἐκ τοῦ ἀριθμοῦ τῶν δώδεκα· καὶ
 ἀπελθὼν ἐν ἐλπίᾳ τοῖς ἀρχιερεῦσι καὶ γρα
 μματεῦσι καὶ στρατιωτοῖς τὸ πῶς αὐτὸν παρα
 δῶ αὐτοῖς καὶ ἐχάρησαν· καὶ ἐνέθετο αὐτῷ
 ἀργύριον δοῦναι καὶ ἐνεξομολόγησε· καὶ ἐζήτη
 σεν αὐτοὶ τὸ παραδῶναι αὐτὸν αὐτοῖς ἄτερ
 ὅλου· ἦλθεν δὲ ἡ ἡμέρα τῶν ἀζύμων ἐν ἣ
 ἐδεῖ θύεσθαι τὸ πάσχα· καὶ ἀπέστειλεν πρέσβην
 καὶ ἰωάννην τὸν υἱὸν· πορευθέντες ἐποιμάσατε

ἡμῖν τὸ πάσχα ἵνα φάγωμεν· οἱ δὲ ᾗπον
αὐτῷ· ποῦ θέλεις θοιμάσωμεν· ὁ δὲ εἶπεν
αὐτοῖς· ἰδοὺ ἡσεληθόντων ὑμῶν εἰς τὴν
πόλιν· συναρτήσεται ἡμῖν ἄρτος κεράμιον ὃ
δαποσβασάξω· ἀκολουθήσατε αὐτῷ ᾧ τῷ
οἱ κίαν οὐ εἶψ' εἰς πορεύεσθαι· καὶ ἐρῇτε
τῷ οἱ κοδῆσός τη τίς οἱ κίαν· λέγω σοι ὁδὸν δασ-
καλος· ποῦ ἐστὶ τὸ κατάλυμα ὅπου τὸ πάσ-
χα μετὰ τῶν μαθητῶν μου φάγω· καὶ κείνος
ἡμῖν δείξεται ἀνάγειν μέγα ἐστρωμένον· ἐκ γὰρ
τοιμάσατε· ἀπελθόντες δὲ ἄβρον καθὼς εἶ-
ρηκεν αὐτοῖς· καὶ ἡ τοίμασαν τὸ πάσχα· καὶ
ὅτε ἐγένετο ἡ ὥρα· ἀνέπτε· καὶ οἱ δὲ καὶ
ἀπόστολοι (ὡς αὐτῷ· καὶ ᾗπεν πρὸς αὐτοὺς·
Εἰ πίθῳ μίαν ἐπεθύμησα τοῦτο τὸ πάσχα
φαῖν μεθ' ὑμῶν προ τοῦ με παθεῖν· λέγω
γὰρ ὑμῖν ὅτι οὐκέτι οὐ μὴ φάγω ἕξαι τοῦ ἔως
οὐ πληρωθῇ ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ θῦ· καὶ δεξιὰ
μερὸς ποτήριον ἀχαρισήσας εἶπε· λάβετε
τοῦτο· καὶ διψάμερίσατε ἑαυτοῖς· λέγω ᾗ
ὑμῖν· ὅτι οὐ μὴ πίω ἀπὸ τοῦ γενήματος τῆς
ἀμπέλου ἕως ὅτου ἡ βασιλεία τοῦ θῦ ἐλ-
θῇ· καὶ λαβὼν ἄρτον ἀχαρισήσας ἔκλα-
σε καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς λέγων· τοῦ πόσι το
σώματός τοῦ ὑπὲρ ὑμῶν δόμενον· τοῦ
το ποιεῖτε εἰς τὴν ἐμὴν ἀνάμνησιν· ὡς
αὐτὸς καὶ τὸ ποτήριον μετὰ τὸ δεῖπνῆσαι
λέγων· τοῦτο τὸ ποτήριον ἡ καινὴ διαθήκη
ἐν τῷ αἵματί μου τὸ ὑπὲρ ὑμῶν ἐκχυνθέν·

πλὴν ἰδοὺ ἡ χεὶρ τοῦ παραδιδόντος μετὰ
μοῦ ἐπὶ τῆς τραπέζης μου· καὶ ὁ μὲν ὅς
οὗ τοῦ ἀφ' οὗ πορεύεται κατὰ τὸ ὠρεῖ με
νομ· πλὴν αὐτὸς τῷ ἀφ' οὗ ἐκείνου δόου παρα
δίδεται· καὶ αὐτοὶ ἠρξάτο(ν) ζῆτε ἡ πρὸ
ἐαυτοῦ τὸ πῶς ἄρα εἴη ὁ μέλλων τοῦ το πράσ
σειν· ἐξήντο δὲ καὶ φιλονικία ἐν αὐτοῖς
τὸ πῶς αὐτῶν ὁδοὶ εἴρηαι μῆζον· ὁ δὲ εἶπ
αὐτοῖς· οἱ βασιλεῖς τῶν ἐθνῶν κατὰ κερ
'λοιοῖν αὐτῶν· καὶ οἱ ἐξοιστὰς αὐτῶν
ἀεργεῖται καλοῦνται· ἡμεῖς δὲ, οἱ χροῦτος
ἀλλ' ὁ μῆζον ἐν ἡμῖν γενέσθω ὡς ὁ μεῶ τε
ρος· καὶ οἱ χροῦμενος ὡς ὁ δ' ἰακορῶν·
πῶς γὰρ μῆζον, ὁ ἀνακείμενος, ἢ ὁ δ' ἰα
κορῶν· ἐγὼ δὲ ἡμῖν ἐν μέσῳ ἡμῶν ὡς ὁ
δ' ἰακορῶν· ἡμεῖς δὲ ἐπεὶ οἱ δ' ἰαμε μετ' ἡ
κότας μετ' ἐμοῦ ἐν τοῖς πειρασμοῖς μου·
καὶ ὡς ἀπέναντι ἡμῖν καθὼς ὁ δ' ἰακόμοι
ὁ πῆρ μου βασιλεῖα· ἵνα ἐσθίητε καὶ πί
νυτε ἐπὶ τῆς τραπέζης μου ἐν τῇ βασι
λείᾳ μου· καὶ καθίσετε ἐπὶ θρόνων·
κρίνοντες τὰς δώδεκα φυλὰς τοῦ Ἰσλ·
εἶπε δὲ ὁ κς· σὶ μῶν σὶ μῶν· ἰδοὺ ὅσα
ταρὰς ἐξήτησατο ἡμᾶς τοῦ σιμιάσαι ὡς
τὸν σίτον· καὶ ὡς ἐδεήθη περὶ σούϊκα
μὴ ἐλθέτη ἡ πίστις σου· καὶ σὺ ποτε ἐ
πίστρεψας ἐρήριξον τοῖς ἀδελφοῖς σου·
ὁ δὲ εἶπε νῦν αὐτῷ· καὶ μετὰ σοῦ ἐποιμῶς
εἶμι καὶ εἰς φυλάκην καὶ εἰς θάλασσαν

πορεύεσθαι· ὁ δὲ εἶπε· λέγω σοι πέτραι οὐ
 μὴ φωνήσῃ σήμερον ἀλέκτωρ πρὶν ἢ τρεῖς αἰ-
 παρήσῃ μὲν εἰδέναι με· καὶ εἶπεν αὐτοῖς·
 ὅτε ἀπέσγηλα ὑμᾶς ἀπερβαλαμπίου καὶ πη-
 ρας καὶ ὑποδημάτων· μή τίς μου ὑπερήσῃ·
 οἱ δὲ εἶπον· οὐδένος· εἶπεν οὖν αὐτοῖς· ἀ-
 λὰ νῦν ὁ ἔχων βαλαμπίον ἀράτω ὁμοίως
 καὶ πηρά· καὶ ὁ μὴ ἔχων πωλήσει τὸ ἱμά-
 τιον αὐτοῦ καὶ ἀγοράσει μαχαίραν· λέγω
 γὰρ ὑμῖν ὅτι ἐστὶ τοῦτο γὰρ γραμμένον δεῖ τελε-
 αθῆναι· τὸ καὶ μετὰ ἀνόμων ἐλογιάθη·
 καὶ γὰρ τὰ περὶ ἐμοῦ τέλος ἔχῃ· οἱ δὲ εἶ-
 πον· καὶ ἰδοὺ ὧδε μαχαίραι δύο· ὁ δὲ ἔπεν
 αὐτοῖς· ἱκανοὶ ἐστέ· καὶ ἐξελθὼν οἷός ἐπο-
 ράθη κατὰ τὸ ἔθος ὅς τὸ ὄρος τῶν ἐλαιῶν·
 ἡκολούθησαν δὲ αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ·
 πλὴν ἁγία καὶ μετὰ Ἐρμού· ἡ μαθητῶν
 καὶ πενὸς τοῖς ἑαυτοῦ μαθηταῖς· οἵ δα τε ὅτι με-
 τὰ δύο ἡμέρας τὸ πάσχα γίνεσθαι· καὶ ὁ υἱὸς
 τοῦ ἀνθρώπου παρὰ δίδεται εἰς τὸ σπῶθῆναι· τὸ
 τελευτήθησαν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ γραμματεῖς·
 καὶ οἱ πρεσβύτεροι τοῦ λαοῦ εἰς τὴν αὐλήν τῶν
 ἀρχιερέων τοῦ λεγομένου κατὰφα· καὶ
 βουλόσασθαι τοῖς ἡγετοῦν τὸν Ἰουδαϊστικὴν
 σωστικὴν ἀποκτείνωσιν· ἐλέγον δὲ μὴ ἐν
 τῇ ἑορτῇ· ἵνα μὴ θόρυβος γένῃται ἐν τῷ λαῷ·
 ὧς τὸ τοῦ δὲ Ἰουγενόμενου ἐν βηθανίᾳ ἐν
 οἰκίᾳ σίμωνος τοῦ λε προῦ· προσήλθεν
 αὐτῷ γυνὴ ἔχουσα ἀλάβαστρον μύρου βαρυπικ-

Ἐπὶ τῷ μὴ πρὸς
 μὴ σέβει πρὸς
 τὸ φῶς ἢ τῷ



τὸν λαόν
 ἢ τῷ

καὶ κατέχευεν ἐπὶ τῷ κεφαλῷ αὐτοῦ ἀρακί
μένου + ἰδόντες δὲ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἕλθα
ράκτησαν λέγοντες· ἥ τί ἡ ἀπολεία αὐτῇ +
ἐδύνατο γάρ τοῦ τοτὸ μέρου πρᾶθῆναι πο
μοῦ καὶ δοθῆναι πτωχοῖς + ἡμοῖς δὲ οἷσ' εἶπεν
αὐτοῖς· τί κόποις παρέχεται ἡμῶν αὐτῇ· ἐρβον
γάρ καλὸν εἰργάσατο εἰς ἐμὴν + τοῖς πτωχοῖς
γάρ πάντοτε ἔχεται μεθ' ἐαυτῶν· ἐμὴ δὲ οὐ
πάντοτε ἔχεται· βαλοῖσα γὰρ αὐτὴ τὸ μέρου
τοῦτο ἐπὶ τοῦ σώματος μου πρὸς τὸ εὐταφί
σαι με· ἐποίησεν + ἀμὲν λέγω ὑμῖν· ὁ
ποὺ ἐὰν κερυχθῇ τὸ ἀστέλιον τοῦ τοσούτου
τοσούτω λαλῇ θήσεται· καὶ ὁ ἐποίησεν αὐ
τῇ ἥ μνημόσυνον αὐτῆς + τότε πορευθεὶς
εἰς τὴν δώδεκα ὀλεθρόμερον ἰουδαίαν ἰσκαριώ
της πρὸς τοῖς ἀρχιερεῶς εἶπε· τί θέλετέ μοι
δοῦναι, κατὰ ὑμῶν παραδώσω αὐτὸν + οἱ
δὲ ἐστῆσαν αὐτῷ τρία κοῦνται ἀργυρία· καὶ
ἀπὸ τότε ἐζήτει αὐτὴν καὶ ἰδὼν αὐτὸν
παραδῶν + τῇ δὲ πρώτῃ τῶν ἀξυμῶν
προσηλθὼν οἱ μαθηταὶ τῷ ἰσλέγοντες αὐ
τῷ· ποῦ θέλεις ἐτοιμασώμεν σοι φα
γεῖν τὸ πάσχα + ὁ δὲ ἰσ' εἶπεν αὐτοῖς·
ὑπάγετε ἥτις τὴν πόλιν πρὸς τὸν δεῖμα·
καὶ εἶπατε αὐτῷ· ὁ δὲ δὴς καλὸς λῆμι
ὁ καιρὸς μου ἐγγὺς ἐστὶ· πρὸς σέ ποίω τὸ
πάσχα μετὰ τῶν μαθητῶν μου + καὶ ἐποί
ησαν ὡς ἔταξεν αὐτοῖς ὁ ἰσ'· καὶ ἡ τοί
μασαν τὸ πάσχα + ὁ φῖας δὲ ἡγουμένης

ἀνέκρητο μετὰ τῶν δώδεκα· εἰδὼς δὲ ὅτι ὅ
 τι παρ' ταῖς δώδεκα αὐτῷ ὁ πῆρ ἔσται τὰς χεῖρας
 καὶ ὅτι ἀπὸ θῦν ἐξήλθεν καὶ πρὸς τὸν θῦν
 ὑπάγει· ἐκίρεται σι τοῦ δεῖπνου καὶ πι
 θησὶ τὰ ἰματῖα· καὶ λαβὼν λέντιον διέ
 ζωσεν ἐαυτὸν· εἶτα βάλεν ὕδωρ εἰς τὴν
 κρητήρα· καὶ ἤρξατο ρίπτειν τοὺς πόδας
 τῶν μαθητῶν· καὶ σκιάσειν τὰς πόδας
 αὐτῶν μετὰ τοῦ ζώου· ἐρχεται οὖν πρὸς σί
 μωνα πέτρον καὶ λέγει αὐτῷ· ἐκίμοσ· κέ
 σύ μου ρίπτεις τοὺς πόδας· ἀπεκρίθη ἰδοὺ καὶ
 εἶπεν αὐτῷ· ὡς ποίω, σὺ οὐκ οἶδας ἄρτι
 γινώσκεις δὲ μετὰ ταῦτα· λέγει αὐτῷ ὁ πέτρος
 οὐκ ἔχω πόδας μου ὅς τινι αἰῶμαι·
 ἀπεκρίθη αὐτῷ ὅτι· εἰ μὴ ρίψω σε, οὐ
 κέχεις μέρος μετ' ἐμοῦ· λέγει αὐτῷ σίμων
 πέτρος· κέ· μὴ τοὺς πόδας μου μόρον, ἀλλὰ
 καὶ τὰς χεῖρας καὶ τὴν κεφαλὴν· λέγει αὐ
 τῷ ὅτι· ὁ λελούμενος οὐκ ἔχει ἀνάγκη ἢ τοὺς πό
 δας ρίψασθαι· ἀλλ' ἔστι καθαρός ὁλος· καὶ ὑ
 μεῖς καθαροί ἐστε, ἀλλ' οὐκ ἅπαντες· ἵδει γάρ
 τὸν παραδιδόντα αὐτὸν· δι' αὐτοῦ τοῦ εἶπερ, οὐ
 χὶ ἅπαντες καθαροί ἐστέ· ὅτε οὖν ἐμίσησε τοὺς
 πόδας αὐτῶν· καὶ ἔλαβε τὰ ἰματῖα αὐ
 τοῦ ἀναπτύξαι· πάλιν εἶπεν αὐτοῖς· Γινώσκ
 ῃτε τί πεποίηκα ὑμῖν· ὑμεῖς φωνεῖτε
 με ὡς καὶ ὁ δίδας καλὸς καὶ καλῶς λέγετε
 εἰ μὴ γάρ· εἰ οὖν ἐγὼ εὐίφαι ὑμῶν τοὺς πό
 δας ὡς καὶ ὁ δίδας καλὸς καὶ ὑμεῖς ὀφείλατε

ἄν β
 καὶ περιφασθ

πρῶτον κεφαλαίου ὅτι τὸ ἐν ἑνὶ κεφαλαίῳ τοὺς πόδας τῶν μαθητῶν αὐτοῦ· ἡ ἐλπίς

ἀγγέλων ἢ πλεον τοῖς πόδας· ὑπόδειγμα γὰρ
 δέδωκε ἡμῖν ἵνα καθὼς ἐγὼ ἐποίησα ὑμῖν·
 καὶ ὑμεῖς ποιεῖτε· ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν·
 οὐκ ἐστὶ δούλος μείζων τοῦ κυρίου αὐτοῦ· οὐδὲ ἀπό-
 στολος μείζων τοῦ πέμφαντος αὐτὸν· εἰ ταύ-
 ται οἴδατε μακάριοι ἐστὲ εἰ ἂν ποιῇτε αὐτά·
 καὶ ἅδι οὐκ αὐτῶν εἶπεν· ἀμὲν λέγω ὑμῖν·
 ὅτι ἡ ἐξ ὑμῶν παραδώσει με + καὶ λυπού-
 μενοι σφόδρα ἤρξαντο λέγειν αὐτῷ ἐκαστος
 αὐτῶν· μή τίς ἡμεῖς καὶ· ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶ-
 πεν· ὁ ἐμὲ ἀφασ μετὰ μου ἐν τῷ πυβλί-
 ω τῆς χειρός, οὗτος με παραδώσει· ὁ μὲν υἱὸς
 τοῦ ἀνθρώπου ὑπάγει καθὼς γέγραπται περὶ αὐτοῦ·
 οὐαὶ δὲ τῷ ἀνθρώπῳ ἐκείνῳ δι' οὗ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου
 παραδίδεται· καλὸν ἰὺ αὐτῷ· ἡ οὐκ ἐγενή-
 θη ὁ ἀνθρώπος ἐκ μένος + ἀποκριθεὶς δὲ ἰούδας
 ὁ παραδιδούς αὐτὸν εἶπεν· μή τίς ἡμεῖς
 ῥάββι· λέγει αὐτῷ ὁ ἰσ· σὺ εἶπας + ἐὰν τῶν
 τῶν δὲ αὐτῶν λαβὼν ὁ ἰσ τὸν ἄρτον καὶ δι-
 χαρισήσας· ἐκλάσας καὶ ἐδύδου τοῖς μαθη-
 ταῖς καὶ ἦπεν· λάβετε φάγετε, τοῦτο ἐστὶ
 τὸ σῶμα μου· καὶ λαβὼν τὸ ποτήριον
 καὶ διχαρισήσας· ἔδωκεν αὐτοῖς, λέγων·
 πίετε ἐξ αὐτοῦ πάντες, τοῦτο ἐστὶ τὸ αἷμα
 μου τὸ τῆς καινῆς διαθήκης τὸ περιπο-
 λούμενον εἰς ἀφεσὶν ἁμαρτιῶν· λε-
 γὼ δὲ ὑμῖν· ὅτι οὐ μὴ πίω ἄπαρ τῆς τοῦτου
 τοῦ γενήματος τῆς ἀμπελῆς ἕως τῆς ἡμέ-
 ρας ἐκείνης, ὅταν αὐτὸ πίνω μεθ' ὑμῶν

και μὲν ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ πρώτου· καὶ ὑ
μνήσαντες ἐξῆλθον εἰς τὸ ὄρος τῶν ἐλαι
ῶν· τότε λέγει αὐτοῖς ὁ ἰσ'· πάντες ὑ
μεῖς σκαρδαλιαθήσεσθε ἐνέμοι, ἐν τῇ νύ
κτι ταύτῃ· γέγραπται γάρ· πατάξω τὸν
ποιμὲνα καὶ διασκορπίθήσονται τὰ πρό
βατα τῆς ποιμνῆς· μετὰ δὲ τὸ ἐγερθῆναι
μετ' ἐξωμίας εἰς τὴν χαλιαίαν· ἀ
ποκριθεὶς δὲ ὁ πῆτρος εἶπεν αὐτῷ· ἥ καὶ
πάντες σκαρδαλιαθήσονται ἐν σοὶ· ἐγὼ δὲ
οὐδέποτε σκαρδαλιαθῆσομαι· ἐφ' αὐτῷ
ὁ ἰσ'· ἀμὲν λέγω σοι· ὅτι ἐν ταύτῃ τῇ νύκτι
πρὶν ἀλέκτορα φωνῆσαι τρεῖς ἀπαρνήσει
με· λέγει αὐτῷ ὁ πῆτρος· καὶ ἡμεῖς (ὡς
σοὶ ἀποθάρσυν, οὐ μὴ σε ἀπαρνήσομαι· ὁμοί
ως δὲ καὶ πάντες οἱ μαθηταὶ εἶπον· τότε
ἐρχέται μετ' αὐτῶν ὁ ἰσ'· εἰς χωρίον λεγόμενον
γεθσημανῆ· καὶ λέγει τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ·
ἐγὼ σὺ ἀπελθὼν προσάξομαι σε· καὶ πα
ραλαβὼν τὸν πέτρον καὶ τοὺς δύο υἱοὺς ζεβε
δαίου· ἤρξατο λυπεῖσθαι καὶ ἀδύκνειν· τό
τε λέγει αὐτοῖς ὁ ἰσ'· περίλεψόν τιν' ἡ ψυχῆ μου
ἐὼς θαλάτου· μέμνατε ὧδε καὶ γρηγο
ρεῖτε μετέμω· καὶ προσελθὼν μετ' αὐτὸν εἶ
πεν· ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ προσάχόμε
νος καὶ λέγων· πᾶρ μου· ἡδύνατον ἐστὶ πα
ρελθῆναι ἀπὸ μοῦ τὸ ποτήριον τοῦτο· πλὴν
οὐχ ὡς ἐγὼ θέλω, ἀλλ' ὡς σὺ· ὡφθ' δὲ αὐτῷ
ἄγγελος ἀπὸ κυρίου ἐνὶ σχύρῳ αὐτοῦ· καὶ ἰσ' νό

μενοσ' εὐαλόνια εἰπενέπερον προσήχτο· ἐξέ-
 ντο δὲ οἱ δρώσ' αὐτοῦ ὥσει θρόμβοι αἰ μαποσ κατὰ
 βαίμοντ' ἐπὶ πλὴν γλῶτ· καὶ ἀρας αὖ ἀπὸ
 τῆς πρόσδεχης· ἐρχεται πρὸς τοὺς μαθητὰς καὶ
 ἀρίσκει αὐτοῖς καθάδ' ὁμτας· καὶ λήγει τὰ πε-
 τρῶ· οὕτως οὐκ ἴσχεσθε μὲν ἄνθρωποι γρηγορῆσαι
 μετὰ μου· γρηγορεῖτε καὶ πρόσδεχθεί μ' α-
 μὴ εἰσελθεῖτε εἰς πύραυλόν· τὸ μὲν πᾶν
 πρόθυμον, ἡ δὲ σὰρξ ἀθευής· πάλιν εἰς
 δαπέδον ἀπελθὼν προσήγατο λόγων· πέρ-
 μου· εἰ οὐδύνεται τὸ ποτήριον τοῦτο παρ' ἡ-
 θεῖν ἀπ' ἐμοῦ· εἰ μὴ αὐτὸ πίω γενηθήτω
 τὸ θέλημα σου· καὶ ἐλθὼν ἀρίσκει αὐτοῖς πάλιν
 καθάδ' ὁμτας· ἡσαν γὰρ αὐτῶν οἱ ὀφθαλμοὶ βε-
 βαρημένοι· καὶ ἀφείδ' αὐτοῖς ἀπελθὼν πάλιν
 προσήγατο εἰς τρίτον τὸν αὐτὸν λόγον εἰπὼν·
 τό τε ἐρχεται πρὸς τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ καὶ λέ-
 γει αὐτοῖς· καθάδ' ἔτε το λοιπόν καὶ ἀραπαύε-
 αθε· ἰδοὺ ἡ γῆ κεκὴ εὔρα, καὶ οἶκος τοῦ ἀνθρώπου πα-
 ραδίδοται εἰς χεῖρας ἀμαρτωλῶν· ἐκείνους
 ἄνωμεν· ἰδοὺ ἡ γῆ κεκὴ παραδίδοται εἰς χεῖρας
 ἐπὶ αὐτοῦ λαλοῦντος· ἰδοὺ ἰούδας εἰς τῶν δέ-
 δεκα ἦλθε καὶ μετὰ αὐτοῦ ὄχλος πολλὸς, μετὰ κα-
 χαιρῶν καὶ ξύλων· ἀπὸ τῶν ἀρχιερέων καὶ πρ-
 βυτέρων τοῦ λαοῦ· ὁ δὲ παραδίδοις αὐτὸν
 ἐδωκεν αὐτοῖς σημεῖον λέγων· ὁ μὲν φίλη-
 στω· αὐτὸς ἐστὶ κρατήσατε αὐτὸν· καὶ ἀθέ-
 ως προσελθὼν τῷ ἰούδῃ εἶπεν· χαίρε ράββι· καὶ
 κατεφίλησεν αὐτὸν· ὁ δὲ ἰούδας εἶπεν αὐτῷ·

ἔταίρει· ἐφ' ὃ παρή· τότε προσελθόντες ἐ-
πέβαλον τὰς χεῖρας ἐπὶ τὸν ἰν', καὶ ἐκρά-
τησαν αὐτὸν· καὶ ἰδοὺ ἦν τῶν μετὰ ἱού· ἐ-
πείρασεν τὴν χεῖρα ἀπέσπασε τὴν μάχαιραν
αὐτοῦ· καὶ πατάξας τὸν δούλον τοῦ ἀρχιέ-
ρέως, ἀφῆλεν αὐτοῦ τὸ ὦπλον· τότε λήγει
αὐτῷ ὁ ἴσ'. ἀπὸ σφραγίδος σου τὴν μάχαιραν·
εἰς τὸν τόπον αὐτῆς· πάντες γὰρ οἱ λα-
βόντες μάχαιραν ἐν μάχαιρα ἀποθάνου-
νται· ἡ δὲ κηρὸς ὅτι οἰδύναι αἱ ἀρτί παρὰ κα-
λῶσαι τὸν πρῶτον καὶ παραστήσει μοι πλεί-
οισι ἡ δὲ καλεσιώμας ἀγγέλων· πῶς οὖν πλη-
ρωθῶσιν αἱ γραφαί, ὅτι οὕτως δεῖ γινέσθαι· ἐνε-
κήνηται ἡ εὐρα εἴπεν ὁ ἴσ' τοῖς ὄχλοις· ὡς ἐ-
πίλησιν ἐξ ἡλθε μετὰ μαχαιρῶν καὶ ξύλων
σύμβαεῖν με· καθ' ἡμέραν πρὸς ὑμᾶς ἐκ-
δεξόμενος διδάσκων ἐν τῷ ἱερῷ, καὶ οὐ κέ κη-
ρήσατέ με· τοῦτο δὲ ὅλον γέγονεν, ἵνα πλη-
ρωθῶσιν αἱ γραφαὶ τῶν προφητῶν· τότε οἱ
μαθηταὶ πάντες ἀφέντες αὐτὸν ἐφύγον·
ὧ δὲ κρατήσαντες τὸν ἰν', ἀπήγαγον πρὸς
καὶ ἄφραν τὸν ἀρχιέρεα· ὅπου οἱ γραμ-
ματῆς καὶ οἱ πρῶτον βύτεροι συνέχθησαν·
ὧ δὲ πρὸς ἡκολούθη αὐτῷ μακρόθεν, ἕως
τῆς αὐλῆς τοῦ ἀρχιερέως· καὶ εἰσελθὼν
ἔσω ἐκάθητο μετὰ τῶν ὑπηρέτων, ἰδὼν τὸ τέ-
λος· οἱ δὲ ἀρχιερεὺς καὶ οἱ πρῶτον βύτεροι καὶ
ὅλον τὸ συνέδριον ἐζήτουν ψάδω μαρτυρί-
αν κατὰ τοῦ ἱού, ὅπως θανατώσωσιν αὐτόν.

και οὐ χεῖρον· και πολλῶν ψαλμομαρτύρων πρ
 σελθόντων· οὐ χεῖρον· ἴσμερον δὲ προσελθόντες
 δύο ψαλμομαρτῖρες εἶπον· οὗτος ἐφ· δύναι
 μαι κατὰ λίσαι τὸν μαθὲν τοῦ θυ· και δὲ ἀπρί
 ων ἡμερῶν οἰκοδομήσαι αὐτὸν· και ἀφ' αὐτῶν
 ὁ ἀρχιερεὺς εἶπεν αὐτῷ· οὐδὲν ἀποκρίνεις
 πύουτοι σου κατὰ μαρτυροῖσιν· ὁ δὲ ἰσ' ἐπὶ
 πα· και ἀποκριθεὶς ὁ ἀρχιερεὺς εἶπεν αὐ
 τῷ· ἐξορκίζω σε κατὰ τοῦ θυ τοῦ ζώντος· ἴνα
 ἡμῖν εἴπῃς· εἰ σὺ εἶ ὁ χε' οἰκὸς τοῦ θυ· λέ
 γει αὐτῷ ὁ ἰσ'· σὺ εἶπας· πλημλέγω ὑμῖν·
 ἀπάρτι ὅψαθε τὸν ἵον τοῦ ἀφ' οὗ· καθήμενον
 σὶδε ξιών τῶν δυνάμεων και ἐρχόμενον ἐ
 πὶ τῶν νεφελῶν τοῦ οὐανοῦ· τότε ὁ ἀρχιε
 ρεὺς· δὲ ἐρρηξε τὰ ἱμάτια αὐτοῦ· λέγων· ὅ
 τι ἐβλασφήμησε· τί βί' χρεῖα μέχουσιν μαρ
 τύρων· ἰδε μὲν ἡ κοῖσα πετὴν βλασφημίαν
 αὐτοῦ· τί μὲν δὲ εἶ· οἱ δὲ ἀποκριθέντες
 εἶπον· ἐνόχος θανάτου ἐστίν· τότε ἐ
 νέπρισαν εἰς τὸ πρόσωπον αὐτοῦ και ἐκο
 λάφησαν αὐτὸν· οἱ δὲ ἐρράπισαν· λέγον
 τες· προφήτασιν ἡμῖν χε' τίς ἐστὶν ὁ παῖς
 ὅς· ὁ δὲ πέτρος ἐξω· ἐκάθητο ἐν τῇ αὐ
 λῇ· και προσήλθεν αὐτῷ μία παιδὴς κηλῆου
 σα· και σὺ ἡθάρμετα ἰὺ τοῦ γαλιλαίου· ὁ
 δὲ ἡρμήσατο ἐμπροσθεν πάντων λέγων· οὐ
 κοῖσαι τί λέγεις· ἐξελθόντα δὲ αὐτὸν εἰς
 τὸν πύλον· εἶδεν αὐτὸν ἄλλ· και λέγει τοῖς
 ἐκ· και οὗτος ἰὺ μετὰ ἰὺ τοῦ μαζωραίου·

καὶ πάλιν ἠρμήσατο μεθ' ὅρκου ὁ πῶς κοῖδαι
 τὸν ἄνθρωπον· μετὰ μικρόν δὲ προσελθόντες οἱ
 ἑσώτεροι εἶπον τῷ πέντρῳ· ἀληθῶς καὶ σὺ ἐ-
 ξαὐτῶν εἶ· καὶ γὰρ ἡ λαλιά σου δηλοῦσε ποῖ εἶ·
 τὸ τε ἤρξατο κατὰ θεὸν καὶ ὁ μὲν εἶπεν ὅτι
 οὐ κοῖδαι τὸν ἄνθρωπον· καὶ ἀθέως ἀλέκτωρ ἐ-
 φώνησεν· καὶ ἐμνήσθη ὅτι πρὸς τοῦ ῥήματός
 τοῦ ἱεροῦ εἰρηκότο σ' αὐτῷ· ὅτι πρὶν ἀλέκτορα
 φωνῆσαι τρῖς ἀπαρνήσει με· καὶ ἐξελθὼν
 ἐξω ἐκλασε πικρῶς· πρῶτος δὲ μενομε-
 νος· οὐ μβούλιον ἐλάβον πάντες οἱ ἀρχιε-
 ρεῖς καὶ οἱ πρῶτοι βύτεροι τοῦ λαοῦ κατὰ τοῦ
 ἱεροῦ· ὡς τε θανατώσαι αὐτόν· καὶ δῆσαν τὸν
 αὐτὸν ἀπὸ γὰβον· καὶ παρέδωκαν αὐτὸν πορ-
 τῶν πύλων τῶν ἡγεμονῶν· ἡ δὲ ἀρχὴ τῶν

Α

ἀπὸ παλαιῶν τοῦ ἱεροῦ τῶν ἡγεμονῶν κατὰ τὴν ἀρχὴν
 ἡ πενὸς ἐπὶ τοῖς ἑαυτοῦ μαθηταῖς· μὴ ἀδύνατος
 ἦν ὁ ἴσος τοῦ ἀνθρώπου· καὶ ὁ θεὸς ἐδόξασεν ἐν αὐτῷ·
 εἰ ὁ θεὸς ἐδόξασεν ἐν αὐτῷ· καὶ ὁ θεὸς δό-
 ξασεν αὐτὸν ἐν ἐαυτῷ· καὶ ἀθὴν δόξασεν αὐτὸν
 περὶ τῆς ἐκείνου μεθ' ὧν ἡμεῖς ζητεῖτε· καὶ ἡ
 θῶς εἶπον τοῖς ἰουδαίοις· ὅτι ὁ ποιὲν ὧν ἐπα-
 τῶν ἡμεῖς οὐ δύνασθαι εἰσελθεῖν· καὶ ἡμεῖς λέγω
 ἀντί· ἐν πολλῷ καὶ μὴ ἐν ὀλίγῳ· ἵνα ἡ
 γαπατέ ἀγγέλοις· καθὼς ἡγάπησαν ὑμᾶς· ἵ-
 να καὶ ὑμεῖς ἀγαπατέ ἀγγέλοις· ἐν τοῦτω
 γινώσκονται πάντες ὅτι ἐμοὶ μαθηταὶ ἐστέ· ἐ-
 γὼ ἀγαπῶ ἐχέτε ἐν ἀγγέλοις· λέγει αὐτῷ
 σίμων πέντρῳ· καὶ ποῦ ὑπάγεις· ἀπεκρίθη αὐ-

ὁ Ἰησοῦς λέγων· ἵνα ἡμεῖς πάντες
 σπουδάζωμεν ἵνα ἡμεῖς ὁ βῆμα.

τῷ ὁ ἴσ'· ὅπου ἐγὼ ὑπάγω οὐδὲν ἀσέμουν ἰὼν ἀ-
 κολουθήσαι, ἕτερον δὲ ἀκολουθήσεις μοι· λέ-
 γει αὐτῷ ὁ πέτρος· κέ· ὅγαπ' οὐδὲν ἀμαίσοι
 ἀκολουθήσαι ἄρ' τί· πλὴν ψυχῇ μου ὑπὲρ σοῦ
 θήσω· λέγει αὐτῷ ὁ ἴσ'· πλὴν ψυχῇ σου ὑπὲρ
 ἐμοῦ θήσεις; ἀλλὴν ἀλλὴν λέγω σοι· οὐ μὴ ἅ-
 λευται φωνή σου ἕως οὗ ἀπαρνήσῃς τὴν τῆς
 κητάρων ἐξουσίαν καὶ τὴν καρδίαν· πῶς ἂν περὶ τοῦ
 θ'· καὶ εἰς ἐμὲ πῶς ἂν περὶ τοῦ πρῶ-
 μου, μορφαὶ πολλαὶ εἰσὶν· εἶδ' ἐμὴ· εἴ πορ' ἂν ὑ-
 μῖν· πορ' ὁμοίαι εἴ πορ' ἂν μοι· τὸ πορ' ἂν ὑμῖν· καὶ
 εἴ πορ' ἂν μοι καὶ εἴ πορ' ἂν μοι τὸ πορ'· πάλιν
 ἐρχομαι καὶ παραλήψομαι ἑαυτὸν πρὸς ἐμαῦ
 τὸν· ἰναὶ ὅπου εἴ πορ' ἂν ἐγὼ, καὶ ὑμεῖς ἦτε· καὶ ὁ
 πορ' ἐγὼ ὑπάγω οἴδατε καὶ πλὴν ὁδοῦ οἴδατε·
 λέγει αὐτῷ θωμάς· κέ· οὐκ οἶδα μεν πορ' ὑπάγω·
 καὶ πῶς ὁδοῦ ἀγαθὴ πλὴν ὁδοῦ ἔδωκεν· λέγει αὐ-
 τῷ ὁ ἴσ'· ἔγωγε καὶ ὁδοῦ καὶ ἡ ἀλήθεια καὶ ἡ ζωὴ·
 οὐδὲν ἐρχομαι πρὸς τὸν πρῶν ἔγωγε καὶ ἐμὸν· εἴ
 ἐρχομαι τε με· καὶ τὸν πρῶν μου ἐρχομαι τε
 αὖ· καὶ ἀπαρτί γινώσκεις αὐτὸν καὶ ἐω-
 ράκατε αὐτὸν· λέγει αὐτῷ φίλιππος· κέ·
 δεῖξον ἡμῖν τὸν πρῶν καὶ ἀρκῆ ἡμῖν· λέγει
 αὐτῷ ὁ ἴσ'· πορ' ὅπου χρόνον μεθ' ὑμῶν καὶ οὐ
 κέγω καὶ με· φίλιππε· ὅτε ὁρακὼς ἐ-
 με ἐώρακε τὸν πρῶν· καὶ πῶς οὐ λέγεις·
 δεῖξον ἡμῖν τὸν πρῶν· οὐ πῶς ἂν εἰς ὅτι ἔγωγε
 τῷ πρῶν καὶ ὁ πρῶν ἐν ἐμοί ἐστιν· τὰ ῥήματα
 αὐτοῦ ἐλάλῃ ἡμῖν· ἀπὸ ἐμαυτοῦ οὐ λαλῶ· ὁ

δὲ πῆρ' ὅσον μοι μένων αὐτὸς ποιεῖ τὰ ἐρῶν +
 πείσθε μοι ὅτι ἐγὼ ἐν τῷ πρῶτῳ καὶ ὁ πῆρ' ἐνε-
 μοι. ἥδε μὴ διαταῖς ἐρῶν αὐτὰ πείσθε μοι +
 ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν. ὁ πείσων εἰς ἐμὲ
 τὰ ἐρῶν αὐτὸς ποιῶ καὶ ἡμεῖς ποιήσομεν. ὅτι
 ἐγὼ πρὸς τὸν πατέρα μου πορεύομαι + καὶ ὅτι
 - αἱ αἰτήσεις ἐν τῷ ὀνόματί μου τοῦτο ποι-
 ῶσιν, ἵνα ἡδοξασθῇ ὁ πῆρ' ἐν τῷ ἡμῶν καὶ ἐὰν
 - πῆρ' αἰτήσεις ἐν τῷ ὀνόματί μου ἡμῶν ποιήσω +
 Εἰ ἀγαπάτε με, τὰς ἐντολάς μου ἐμὰς
 τηρήσατε. καὶ ἡμῶν ἐρῶ τίσω τὸν πατέρα καὶ
 ἄλλον πατέρα καὶ τὸν δώσω ὑμῖν, ἵνα μένητε
 ἐν ἐμοὶ εἰς τὸν αἰῶνα + τὸ πρῶτον ἀλλο-
 θῆναι ὁ κόσμος οὐ δύναται λαβεῖν. ὅτι οὐδε-
 ωρῆται οὐδέ γινώσκει αὐτό. ἡμεῖς δὲ γινώσκου-
 μεν αὐτό, ὅτι παρ' ἡμῶν μένει + καὶ ἐν ἡμῖν ἔσται +
 οὐ καθήσεται ἐμὰς ὁφθαλμοῖς. ἔρχομαι πρὸς ὑ-
 μᾶς. ἅτι μικρόν, καὶ ὁ κόσμος με οὐκ ἐτίθει
 ρθ'. ἡμεῖς δὲ θεωρεῖτε με ὅτι ἐγὼ ζῶ, καὶ ἡμεῖς
 ζήσεσθε + ἐνεκ' ἡμῶν τῆς ἡμέρας ζωέσθαι ὑ-
 μεῖς ὅτι ἐγὼ ἐν τῷ πρῶτῳ, καὶ ὑμεῖς ἐνεκ' ἡ-
 μῶν ἐν ἡμῖν + ^φ ὁ ἔχων τὰς ἐντολάς μου
 καὶ τηρῶν αὐτάς ἐκ ἡμῶν ἐστὶν ὁ ἀγαπῶν με +
 ὁ δὲ ἀγαπῶν με ἀγαπηθήσεται ὑπὸ τοῦ πα-
 τρός μου. καὶ ἡμῶν ἀγαπήσω αὐτόν καὶ ἐμφανί-
 σω αὐτῷ ἐμαυτόν + λέγει αὐτῷ ἰούδας οὐχ ὅ-
 ἰσκαριώτης. καὶ καὶ τί γε γινώσκον ὅτι ἡμῶν
 μέλλεις ἐμφανίσθαι αὐτόν καὶ οὐχὶ τῷ
 κόσμῳ + ἀπεκρίθη ἰσὺς καὶ εἶπεν αὐτῷ. ἔαν

τοῦ ἀποστό-
 λου
 Εἰ πᾶσι τοῖς
 ἀγαπῶσι τοὺς
 ἡμῶν

τις ἀγαπᾷ με· τὸν λόγον μου τηρεῖ· καὶ ὁ πῦρ
 μου ἀγαπήσει αὐτόν· καὶ πρὸς αὐτὸν ἐλθε
 σόμεθα· καὶ μου ὡς πατέρα ποιήσωμεν·
 ὃ μὴ ἀγαπᾷ με· τοῦ λόγου μου οὐ τηρεῖ· καὶ
 ὁ λόγος οὗ ἀκούετε οὐκ ἐστὶν ἐμὸς· ἀλλὰ τοῦ πα
 τέρους τοῦ μετ' ἐμὸν· ταῦτα λέγει καὶ ἐμὸν
 παρ' ἐμὸν μένων· ὃ δὲ παράκλητος τὸ πρῶτον
 τῷ ἀληθῆος ὅπερ ἐμὸν ἐστὶν ἐν τῷ ὁνόματι
 ἐκέρχεται· ἐμὸς δὲ δάξεται καὶ ὑπομνή
 σει ὑμᾶς πάντα· αἱ εἶπον ἐμὸν· ὁρῶντες
 ἀφ' ἡμῶν· ὁρῶντες τὴν ἐμὴν δόξαν ἐμὴν
 οὐ καθὼς ὁ κόσμος δίδωσιν· ὁρῶντες ἐμὴν
 μὴ παραστῆσαι ὑμῶν ἢ καρδίας· μὴ δὲ δολιὰ
 ὑποτίσαστε ὅτι ὁρῶντες ἐμὸν· ὑπάγω καὶ ἐρ
 χομαι πρὸς ὑμᾶς· εἰ ἀγαπάτε με· ἐχαρήτε
 αὐτῷ· ὅτι εἶπον πορεύομαι πρὸς τὸν πατέρα· ὅτι
 ὁ πῦρ μου μεζών μου ἐστὶ· καὶ νῦν ἔρχομαι
 ἐμὸν πρὶν γενέσθαι· ἵνα ὅταν γένηται· πί
 στασῇται· οὐκ ἐπὶ πολλὰ λαλήσω μεθ' ὑμῶν·
 ἐρχομαι γὰρ ὁ τοῦ κόσμου ἀρχὼν· καὶ ἐν ἐ
 μοὶ οὐκ ἐχειρὸς δύνει· ἀλλ' ἵνα γινώσκῃς ὅτι
 ἀγαπᾷ τὸν πατέρα· καὶ καθὼς ἐνετείλατό μοι
 ὁ πῦρ· οὕτως ποιῶ· ἐγὼ δὲ μὴ ἡμέτερος
 ἢ ἀληθινός· καὶ ὁ πῦρ μου ὁ γεωργός ἐστι· πάν
 τ' ἡμῶν ἐν ἐμοὶ μὴ φέρον καρπὸν· αἶρξαι αὐτό·
 καὶ παρ' τὸν καρπὸν φέρων καθαίρει αὐτό· ἵ
 να πλείονα καρπὸν φέρῃ· ἡ δὲ ἡμετέρα καθα
 ροί ἐστι δὲ ἀπὸ τοῦ λόγου οὗ λελάληκα ἐμὸν· μέ
 νετε ἐν ἐμοὶ· καὶ ἐγὼ ἐν ἐμὸν· καθὼς τὸ ἐχθὲρ

οὐδὲν αἰσιν καὶ πόνος φέρειν ἀφ' ἐαυτοῦ· εἰ μὴ
 μένῃ ἐν τῇ ἀμπελῶν ὅπως οὐδ' ἐμὸς εἰ μὴ
 ἐν ἐμοὶ μένῃτε· ἐγὼ γὰρ ἡ ἀμπελὶς ἐμὸς
 τὰ κλήματα· ὁ μένων ἐν ἐμοὶ καὶ ἐν αὐτῷ
 οὗτος φέρει καὶ πόνος πολὺν· ὅτι χωρὶς ἐμοῦ οὐ
 δύνασθε ποιεῖν οὐδέν· ἐγὼ μὲν τις μένῃ ἐν
 ἐμοὶ· ἐβλήθη ἐξωὸς τοῦ κλήματος καὶ ἐξηράνθη·
 καὶ συνάγοισιν αὐτὰ καὶ ἡ τὸ πῦρ βάλλουσιν καὶ
 αἶψαι· εἰ μὲν μένῃτε ἐν ἐμοὶ· καὶ τὰ κλη-
 ματά μου ἐν ἐμῇ μένῃτε, ὅτι εἰ θέλητε
 αἰτῆσθε, καὶ γενήσεται ἐμῇ· ἐν τούτῳ
 ἐδοξάσθη ὁ πῆρ μου· ἵνα καὶ πόνος πολὺν
 φέρῃτε· καὶ γενήσεται ἐμῇ μαθηταὶ· καθὼς
 ἡ γὰρ πησέμεν ὁ πῆρ, καὶ ἡ γὰρ πησέμεν· με-
 νάτε ἐν τῇ ἀγάπῃ τῇ ἐμῇ· εἰ μὴ τὰς ἐν το-
 λᾶς μου τηρήσῃτε, μενεῖτε ἐν τῇ ἀγά-
 πῃ μου· καθὼς ἐγὼ τὰς ἐντολὰς τοῦ πῆρ
 μου τηρήκα καὶ μενῶ αὐτοῦ ἐν τῇ ἀγά-
 πῃ· ταῦτα λελάλη καὶ ἐμῇ· ἵνα ἡ
 χαρὰ ἡ ἐμὴ ἐν ἐμῇ μένῃ· καὶ ἡ χαρὰ
 ἐμὴ πληρωθῇ· αὕτη ἐστὶν ἡ ἐντολὴ
 ἡ ἐμὴ ἵνα ἀγαπάτε ἀλλήλους, καθὼς ἡ
 γὰρ πησέμεν· μένοντα ταύτης ἀγάπῃ οὐ
 δεῖς ἔχει· ἵνα πῖς τὴν ψυχὴν αὐτοῦ θῇ ὑ-
 πὲρ τῶν φίλων αὐτοῦ· ὁ μὲν φίλος μου
 ἐστὶν· εἰ μὴ ποιῇτε ὅσα ἐγὼ ἐντέλλομαι
 ἐμῇ· οὐκ ἐπὶ ἐμὰς λέξω δούλους· ὅτι ὁ
 δούλος οὐκ οἶδε τί ποιῇ ὁ κύριός αὐτοῦ· ἐμὰς δὲ
 εἶρη καὶ φίλους ὅτι πάντα αὐτῷ ἡκούσαν παρὰ

τοῦ πρῶτον· ἐν ὧν ἔστι ἐμὴν· οὐκ ἔμελλε
 ζελέξασθαι· ἀλλ' ἐγὼ ἐξελέξαμην ὑμᾶς· καὶ
 ἐθέλω ὑμᾶς· ἵνα ὑμεῖς ὑπακούετε, καὶ καρ-
 πὸν φέρετε· καὶ ὁ καρπὸς ὑμῶν μένη· ἵνα
 ὁ πατήρ αἰτιήσῃ τοὺς πρῶτον τῷ ὀνόματί μου.
 Δὴ ἔτι καὶ ^{καὶ} πάντα ἐν τέλει καὶ ἔτι ἵνα ἁβῶ-
 πατε ἀγγέλοις· εἰ ὁ κόσμος ὑμᾶς μίσει· ἱκανὸς
 ἔστι ὅτι ἐμὲ πρῶτον ὑμῶν μεμίσηκεν· εἰς
 τοῦ κόσμου ἥτις· ὁ κόσμος ἀπὸ τοῦ ἰδίου ἐφίλει·
 ὅτι οὐκ ἔγνω τοῦ κόσμου οὐκ ἔσται· ἀλλ' ἐγὼ ἐξελέ-
 ξαμην ὑμᾶς ἐκ τοῦ κόσμου· διὰ τοῦτο μισεῖ ὑ-
 μᾶς ὁ κόσμος· ^{καὶ} μνημονεύετε τοῦ λόγου οὗ
 ἔγωγε· ποιεῖτε· οὐκ ἔστι δούλος μετὰ τῶν τοῦ πα-
 τέρου· εἰ ἐμὲ ἐδύωξαν, καὶ ὑμᾶς διώξου-
 σιν· εἰ τοὺς λόγους μου ἐτήρησαν, καὶ τὸν ὑμε-
 τερον τηρήσουσιν· ἀλλὰ πάντα πάντα
 ποιήσουσιν ἵνα ἔγνων διὰ τὸ ὄνομα ἡμῶν· ὅτι
 οὐκ οἶδασιν τὸν πέμψαντά με· εἰ μὴ
 ἔλθουν καὶ ἐλάλησαν αὐτοῖς, ἀμαρτίαν οὐκ ἔ-
 χον· μὴν δὲ πρόφασί μου ἔχουσιν περὶ τῆς ἀ-
 μαρτίας αὐτῶν· ὅτι ἐμὲ μισῶν καὶ τὸν πρῶ-
 τον μίσει· εἰ τὰ ἐγὼ λέγω ἐποίησαν ἐν αὐ-
 τοῖς· αὐτοὶ οὐδεὶς ἄλλος πεποίηκεν· ἀμαρτί-
 ας οὐκ ἔχον· μὴν δὲ καὶ ἐδράκασιν καὶ με-
 μισήκασιν καὶ ἐμὲ καὶ τὸν πρῶτον· ἀλλ' ἡ
 πληρωθὴ ὁ λόγος ὁ ἔγραψεν ὑμῖν ἐν τῷ νόμῳ
 αὐτῶν, ὅτι ἐμίσησαν με διὰ τὸ ἀ-
 δὲ ἐλθὼν ὁ παρὰ κλητοσ οὐ ἐγὼ πέμψω ὑμῖν
 παρὰ τοῦ πατρὸς, τὸ πρῶτον τῆς ἀληθείας· ὅτι ἡ

ἡ γὰρ ἡμεῖς
 ἐπὶ τῷ κόσμῳ
 ἐπὶ τῷ κόσμῳ
 ἐπὶ τῷ κόσμῳ
 ἐπὶ τῷ κόσμῳ

τοῦ πρὸς ἐμὸν πορεύεσθαι, ἐκείνος μαρτυρήσει
περὶ ἐμοῦ· καὶ ἐμεῖς δὲ μαρτυροῦμεν, ὅ-
τι ἀπ' ἀρχῆς μετ' ἐμοῦ ἔσται· ταῦτα λελά-
λη καὶ ὑμῖν, ἵνα μὴ σκαμδαλιᾷτε· ἀπο-
βουαζώσοις ποιήσοισιν ἡμᾶς· ἀλλ' ἔρχεται
ὥρα, ἵνα πᾶς ὁ ἀποκτείνων ἡμᾶς δόξῃ λη-
τρίαν προσφερόντων ὡς ἡμεῖς· καὶ ταῦτα πο-
λισοῖσιν, ὅτι οὐκ ἐγνώσαν τὸν πρῶτον, οὐδέ ἐμεν·
ἀλλὰ ταῦτα λελάληκα ὑμῖν, ἵνα ὅταν ἔλ-
θῃ ἡ ὥρα μηνύσασθαι αὐτῶν, ὅτι ἔγωγε ἔειπον
ὑμῖν· ταῦτα δὲ ὑμῖν ἐξ ἀρχῆς οὐκ ἔειπον, ὅτι
μεθ' ἡμῶν ἦμεν· νῦν δὲ ὑπάγω πρὸς τὸν πέμ-
ψαντά με· καὶ οὐδεὶς ἐξ ὑμῶν ἐρωτά με
ποῦ ὑπάβεις· ἀλλ' ὅτι ταῦτα λελάληκα ὑμῖν.
ἐλπίη πεπλήρωκεν ἡμῶν τὴν καρδίαν· ἀλλ' ἐ-
γὼ τὴν ἀλήθειαν λέγω ὑμῖν· σὺ μεφ' ἐμῶν.
ἵνα ζωὴ ἀπέλθω· ἐὰν γὰρ ἐγὼ μὴ ἀπέλθω,
ὁ παρὰ κλητὸς οὐ κλείσται πρὸς ἡμᾶς·
ἐὰν δὲ πορεύθω, πέμψω αὐτὸν πρὸς ὑ-
μᾶς· καὶ ὁ ὢν ἐκεῖνος, ἐλέγξει τὸν κόσμον·
περὶ ἁμαρτίας· καὶ περὶ δικαιοσύνης, καὶ πε-
ρὶ κρίσεως· περὶ ἁμαρτίας μὲν, ὅτι οὐ
πίστέωσιν εἰς ἐμεῖς· περὶ δικαιοσύνης δὲ, ὅ-
τι πρὸς τὸν πρῶτον μου ὑπάγω· καὶ οὐκ ἐπιθε-
ωρεῖτέ με· περὶ δὲ κρίσεως, ὅτι ὁ ἀρχὼν
τοῦ κόσμου τοῦτου κέκριται· ἐπὶ πολλὰ
ἔχων λέγειν ὑμῖν· ἀλλ' οὐ δύνασθε βασάζειν
ἄρτι· ὅταν δὲ ἔλθῃ ἐκεῖνος, τὸ πρῶτον τοῦ
ἀληθείας· ὁδηγήσει ὑμᾶς εἰς πάντα μὲν

ἀλήθειαν· οὐ γὰρ λαλήσει ἀφ' ἑαυτοῦ· ἀ-
 λόγῳ αὖ ἀκούσῃ λαλήσει· καὶ τὰ ἐρχόμε-
 να ἀναγγελεῖ ὑμῖν· ἐκεῖνος ἔμελλε δοξάσει· ὅ-
 τι σὺ τοῦ ἐμοῦ λήψῃ καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν·
 πάντα ὅσα ἔχει ὁ πῦρ, ἐμαίεσιν· δι' αὐτοῦ
 το εἶπον, ὅτι σὺ τοῦ ἐμοῦ λαμβάνει καὶ ἀ-
 ναγγελεῖ ὑμῖν· μικρὸν καὶ οὐ θεωρεῖ τέ με·
 καὶ πάλιν, μικρὸν καὶ ὄψεσθέ με· ὅτι ἔπα-
 γω πρὸς τὸν πρῶτον· εἶπον οὖν σὺ ταῦτα
 θητῶν αὐτοῦ πρὸς ἀγγέλους· τί ἐστὶ τοῦτο,
 ὁ λέγει ὑμῖν· μικρὸν καὶ οὐ θεωρεῖ τέ με·
 καὶ πάλιν μικρὸν καὶ ὄψεσθέ με· καὶ ὅτι
 ἐγὼ ὑπάγω πρὸς τὸν πρῶτον· ἐλέγον οὖν
 τοῦτο τί ἐστὶν ὁ λέγει τὸ μικρὸν· οὐ κοῖδα μὲν
 τί λαλεῖ· ἐγὼ οὖν οἶσ' ὅτι ἡ θέλον αὐ-
 τὸν ἐρωτᾶν· καὶ εἶπον αὐτοῖς· περὶ τοῦ
 ζητεῖτε μετὰ ἀγγέλων· ὅτι εἶπον· μικρὸν
 καὶ οὐ θεωρεῖ τέ με· καὶ πάλιν μικρὸν καὶ ὄψε-
 σθέ με· ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν· ὅτι καὶ
 σθε καὶ θρηνησθε ὑμεῖς· ὁ δὲ κόσμος χαρή-
 σθαι· ὑμεῖς δὲ λυπηθῆσθε· ἀλλ' ἡ λύπη ὑ-
 μῶν, εἰς χαρὰν γενήσεται· ἡ γὰρ ὅτι ἂν
 τίς κτη· λύπη ἔχει· ὅτι ἡλθεν ἡ εὐρα αὐτῆς·
 ὅτι ἂν δὲ γενήσεται τὸ παιδίον· οὐκέτι μνη-
 μονάσθης θλίψεως δι' αὐτὴν χαρὰν· ὅτι ἐ-
 γενήθη ἄρ' ὅς εἰς τὸν κόσμον· καὶ ἡμεῖς
 οὖν· λύπῃ μὲν νῦν ἔχete· πάλιν δὲ ὄψο-
 μαί ὑμᾶς καὶ χαρῖσθαι ὑμῶν ἡ καρδία·
 καὶ τὴν χαρὰν ὑμῶν, οὐδεὶς αἶρει ἀφ' ὑμῶν·

καὶ ἐνεκήρυξεν τῇ ἡμέτρᾳ, ἐμὲ οὐκ ἐρωτήσατε οὐ
δὲν + ἀλλὴν ἀλλὴν λέγω ὑμῖν· ὅτι ὅσα
αἱ αἰτήσεις τὸν πρῶτον ἐν τῷ ὀνόματί μου,
δώσει ὑμῖν ἕως ἄρτι + οὐκ ἔστι θεὸς οὐδὲν
ἐν τῷ ὀνόματί μου· αἱ τεῖτε καὶ λήψθε·
ἵνα ἡ χαρὰ ὑμῶν ᾖ πεπληρωμένη + ταύ
τα ἐν παροιμίαις λελάληκα ὑμῖν· ἀ
λλ' ἐρχεται ὥρα· ὅτε οὐκέτι ἐν παροιμίαις
λαλήσω ὑμῖν· ἀλλὰ παρρησίᾳ περὶ τοῦ
πρὸς ἀνατέλω ὑμῖν + ἐνεκήρυξεν τῇ ἡμέτρᾳ
ἐν τῷ ὀνόματί μου αἰτήσατε· καὶ οὐ λέ
γω ὑμῖν· ὅτι ἐγὼ ἐρωτήσω τὸν πρῶτον πε
ρὶ ὑμῶν· αὐτὸς γὰρ ὁ πᾶρ φιλεῖ ὑμᾶς·
ὅτι ὑμεῖς ἐμὲ πεφιλήκατε καὶ πεπιστά
κατε· ὅτι ἐγὼ παρὰ τοῦ θύ ἐξῆλθον +
ἐξῆλθον παρὰ τοῦ πρὸς, καὶ ἐλήλυθα
εἰς τὸν κόσμον· παλὶν ἀφίκεται τὸν
κόσμον καὶ πορεύομαι πρὸς τὸν πρῶτον +
λέγοισιν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· ἴδτε
μὴν παρρησίᾳ λαλεῖς, καὶ παροιμίαν
οὐδὲ μίαν λέγεις + μὴν οἴδαμεν· ὅτι
οἴδατε πάντα, καὶ οὐχ ἔτι ἀνέχουσιν· ἵ
να τίς σε ἐρωτᾷ + ἐν τούτῳ πῶς ἴσμεν
ὅτι ἀπὸ θύ ἐξῆλθες + ἀπεκρίθη αὐ
τοῖς οἷος· ἄρτι πῶς ἴσθε; ἴδου ἐρχεται
ὥρα, καὶ μὴ ἐλήλυθεν; ἵνα σκορπί
σθῇτε ἐκαστος εἰς τὰ ἴδια, καὶ ἐμὲ μόνον
ἀφῆτε· καὶ οὐκ ἔτι μόνος, ὅτι
ὁ πᾶρ μετ' ἐμοῦ ἐστίν + ταύτα λελάλη

καὶ ἰμῶν· ἵνα ἐν ἐμοὶ εἰρήνην ἔχῃτε· ἐν τῷ
 κόσμῳ θλίψιν ἔχῃτε· ἀλλὰ θαυσεῖτε, ἔγωγε
 κενὴ κατὸν κόσμον· ταῦτα ἐλάλη-
 σεν ὁ ἰσὺς καὶ ἐπῆρσεν τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐ-
 τοῦ εἰς τὸν οὐρανὸν καὶ εἶπεν· πᾶρ· ἐλὲ
 λυθὲν ἡ ὥρα· δόξασόν σου τὸν υἱόν, ἵνα
 καὶ ὁ υἱός σου δοξάσῃσιν· καθὼς ἔδωκας
 αὐτῷ ἐξουσίαν πάσης σαρκὸς· ἵνα πᾶν
 ὃ ἔδωκας αὐτῷ, δώσῃ αὐτοῖς ζωὴν αἰώνι-
 ον· αὐτὴ δὲ ἐστὶν ἡ αἰώνιος ζωὴ· ἵνα γινώ-
 κωσιν σὲ τὸν μόμον ἀληθινόν θῆν· καὶ ὁ νῦν
 πέσῃ λαὸς ἰνὴ χν· ἐγώ σε ἐδόξασα ἐπὶ τῆς
 γῆς· τὸ ἔργον ἐτελείωσα ὃ δέδωκάς μοι
 ἵνα ποιήσω· καὶ νῦν δόξασόν με σὺ πᾶρ
 παρασέ αὐτῷ· τῇ δόξῃ ἣ ἐῖχον πρὸ τοῦ
 τὸν κόσμον εἶναι παρασῆ· ἐφανερώ-
 σα σου τὸ ὄνομα τοῖς ἀνθρώποις, οἷς δέδωκάς
 μοι σὺ τοῦ κόσμου· σοὶ ὤσαρ· καὶ ἐ-
 μοὶ αὐτοῖς δέδωκας· καὶ τὸν λόγον σου
 τε τηρήκασι· νῦν ἐγνώκασιν· ὅτι πᾶν
 τα ὃ ὧν δέδωκάς μοι, παρασού ἐστιν· ὅτι
 τὰ ῥήματα αὐτῶν δέδωκάς μοι, δέδωκάς αὐ-
 τοῖς· καὶ αὐτοὶ ἐλάβον· καὶ ἐγνώσαν
 ἀληθῶς, ὅτι παρασού ἐξηλθον· καὶ ἐ-
 πίστευσαν ὅτι σὺ με ἀπέστειλας· ἐγώ
 περὶ αὐτῶν ἐρωτῶ· σὺ περὶ τοῦ κόσμου
 ἐρωτῶ; ἀλλὰ περὶ ὧν δέδωκάς μοι, ὅ-
 τι σοὶ εἶσι· καὶ τὰ ἐμὰ πάντα, σὺ
 ἐστὶ· καὶ τὰ σὰ, ἐμὰ· καὶ δεδόξασμαι

ἐν αὐτοῖς· καὶ οὐκ ἐκίμην ἐν τῷ κόσμῳ·
καὶ οὗτοι ἐν τῷ κόσμῳ ἦσαν καὶ ἐγὼ πρὸς
σὲ ἐρχομαι· πᾶς γὰρ· τήρησον αὐτοὺς
ἐν τῷ ὀνόματί σου, ὡς δέδωκάς μοι· ἵνα
ὡσιν ἐν, καθὼς καὶ ἡμεῖς· ὅτε ἡμεῖς
μετὰ αὐτῶν ἐν τῷ κόσμῳ· ἥντιν ἐτήρουν αὐ-
τοὺς ἐν τῷ ὀνόματί σου· οἷς δέδωκάς
μοι ἐφύλαξαι· καὶ οὐδεὶς ἐξ αὐτῶν ἀ-
πώλετο, ἥ μή οὐχὸς τῆς ἀπολείας· ἵνα
ἡ ἱσχυρὰ φῆ πληρωθῇ· ἡμεῖς δὲ πρὸς σὲ ἐρχο-
μαι· καὶ ταῦτα λαλῶ ἐν τῷ κόσμῳ· ἵνα
ἔχωσιν τὴν χαρὰν τὴν ἐμὴν πεπληρωμέ-
νην ἐν αὐτοῖς· ἐγὼ δέδωκα αὐτοῖς τὸν
λόγον σου, καὶ ὁ κόσμος ἐμίσησεν αὐ-
τοὺς· ὅτι οὐκ ἐκίμην ἐκ τοῦ κόσμου, κα-
θὼς ἐγὼ οὐκ ἐκίμην ἐκ τοῦ κόσμου· οὐκ ἐ-
ρωτῶ ἵνα ἀφῇς αὐτοὺς ἐκ τοῦ κόσμου,
ἀλλ' ἵνα τηρήσῃς αὐτοὺς ἐκ τοῦ πορνικοῦ,
ἐκ τοῦ κόσμου οὐκ ἐκίμην, καθὼς ἥντιν ἐκ
τοῦ κόσμου οὐκ ἐκίμην· ἀγιάσον αὐτοὺς
ἐν τῇ ἀληθείᾳ σου· ὁ λόγος ὅσος· ἀλήθεια
αἰετὶ· καθὼς ἐμὲ ἀπέστειλας εἰς τὸν
κόσμον; καὶ γὰρ ἀπέστειλα αὐτοὺς ἡσὶ τὸν
κόσμον· καὶ ὑπὲρ αὐτῶν ἥντιν ἀγιάζω ἐ-
μαυτόν; ἵνα καὶ αὐτοὶ ὡσιν ἡ γίγασκέ-
νοι ἐν ἀληθείᾳ· οὐ περὶ τοῦ τῶν δέ-
ρωτῶμόνον; ἀλλὰ καὶ περὶ τῶν πῖσαι-
ον τῶν δ' ἀποῦ λόγου αὐτῶν εἰς ἐμὲ·
ἵνα πάντες ἐν ὡσιν, καθὼς οὐ πᾶς

ἐν ἐμοί, καθὼς ἐν σοί· ἵνα καὶ αὐτοὶ ἐν ἡμῖν,
 ἐν ὧσιν· ἵνα ὁ κόσμος πείσῃ, ὅτι σὺ με
 ἀπέστειλας· καὶ ἡμεῖς τὴν δόξαν ἡὲν δέδω-
 κας μοι, δέδωκα αὐτοῖς· ἵνα ὧσιν ἐν,
 καθὼς ἡμεῖς ἐν σοί· ἡμεῖς ἐν αὐτοῖς, καὶ
 οὐ ἐν ἐμοί· ἵνα ὧσιν τετελεσμένοι εἰς
 ἐμὴν· καὶ ἵνα εἴπωσιν ὁ κόσμος, ὅτι σὺ
 με ἀπέστειλας· καὶ ἡ γὰρ ἡγάπη (ἡ) αὐτοῖς, ἡ
 θῶς ἐμὴ ἡ γὰρ ἡγάπη (ἡ)· πᾶρ· οὐ δέδωκας
 μοι· θέλω ἵνα ὅπου εἰμὶ ἐγώ, καὶ ἐμοὶ ὧ-
 σιν μετὰ ἐμοῦ· ἵνα θεωρῶσιν τὴν δόξαν
 τὴν ἐμὴν, ἡὲν δέδωκας μοι· ὅτι ἡ γὰρ ἡγά-
 πης με προκαταβολὴς κόσμου· πᾶρ δὲ
 καὶ· καὶ ὁ κόσμος σε οὐ κέγω, ἡμεῖς δὲ
 σε ἐγνων· καὶ οὐ τοι ἐγνώσαν ὅτι σὺ
 με ἀπέστειλας· καὶ ἐγνώσαν αὐτοῖς
 τὸ ὄνομα σου, καὶ γνωρίσω· ἵνα ἡ ἀ-
 γάπη ἡὲν ἡ γὰρ ἡγάπη (ἡ) με, ἐν αὐτοῖς ἡ, καθὼς
 ἐν αὐτοῖς··· πάντα εἰπὼν οὗτος· ἐξῆλ-
 θεν (ὡς) τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ πέραν τοῦ
 χειμάρου τῶν κέδρων ὅπου ἡὲν ἡ πόσις· εἰς
 ὃν εἰσῆλθεν αὐτὸς καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ·

Εὐαγγέλιον β. κατὰ ἰω.

β.

ἡμεῖς καὶ ὡς ἐκείνῳ· ἐξῆλθεν οὗτος (ὡς) τοῖς
 μαθηταῖς αὐτοῦ πέραν τοῦ χειμάρου τῶν
 κέδρων ὅπου ἡὲν ἡ πόσις· εἰς ὃν εἰσῆλθεν
 αὐτὸς καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ··· ἡμεῖς δὲ
 καὶ ἰούδας ὁ παραδίδων αὐτὸν τὸν τὸ π.
 ὅτι πολλάκις (ὡς) ἤχθη καὶ οὗτος ἐκείνῳ

τῶν μαθητῶν αὐτοῦ + ὁ οὖν ἰοῦδας λαβὼν
τὴν σπειράν καὶ ἐκ τῶν ἀρχιερέων καὶ φα-
ρισαίων ὑπερέτασ· ἐρχέσθαι ἐκθιβαί
φαρῶν καὶ λαμπάδων καὶ ὀπλων + ἰσοῦν
εἰδὼς πάντα τὰ ἐρχόμενα ἐπ' αὐτόν·
ἐξελθὼν εἶπεν αὐτοῖς· τί μαιζήτείτε +
ἀπεκρίθη αὐτῷ· ἵμ' τὸν μαζωραῖον +
λέγει αὐτοῖς οἷς· ἐγὼ γὰρ + εἰσὴκειδὲ
καὶ ἰοῦδας ὁ παραδιδὼς αὐτὸν μετ' αὐτῶν +
ὡς οὖν εἶπεν αὐτοῖς· ὅτι ἐγὼ γὰρ· ἀπῆλ-
θον εἰς ταὶ ὀπίσω καὶ ἐ' πρὸς ὅσον χαρὰι +
παλιν οὖν αὐτοῖς ἐ' πρῶτηα· τί μαιζή-
τείτε· οἱ δὲ εἶπον· ἵμ' τὸν μαζωραῖον +
ἀπεκρίθη ἰσ'· εἶπον γάρ· ὅτι ἐγὼ γὰρ·
εἰ οὖν ἐμέζήτείτε, ἄφετε τοῦ τοῦ
πάσαι· ἵνα πληρωθῇ ὁ λόγος ὃν εἶπεν·
ὅτι οἷός δ' ἐσὶ καὶ μοι, οὐ καὶ πᾶσι ἐξ αὐ-
τῶν οὐδέναι· σίμων οὖν πέ' τ'ρος· ἐ-
χων μάχαιραν, εἰλκισεν αὐτὴν· καὶ ἐ-
παισεν τὸν τοῦ ἀρχιερέως δούλον· καὶ ἀ-
πέκοψεν αὐτοῦ τὸ ὠπὶον τὸ δεξιὸν· ὡς
δὲ ὅμοιαι τῷ δούλῳ, μάλχος + εἶπεν
οὖν οἷς τῷ πέ' τ'ρω· βάλε τὴν μάχαιραν
εἰς τὴν θήκην + τὸ ποτήριον ὃ δὲ δὸς ἐν
μοι ὀπῆρ; οὐ μὴ πίω αὐτό· ὡς οὖν σπει-
ραι καὶ ὀχιλί' αρχος καὶ οἱ ὑπερέται τῶν
ἰουδαίων, συνέλαβον τὸν ἵμ'· καὶ ἐδή-
σαν αὐτόν· καὶ ἀπήγαγον αὐτὸν πρὸς
ἀννα πρῶτον· ὡς γὰρ πρὸς θεροῦ τοῦ

καὶ ἄφα· ὅς τιν' ἀρχιερέας τοῦ ἐν αὐτοῦ ἐκεί-
νου· καὶ δὲ καὶ ἄφας ὁ ἑβραϊσμός τοῖς
ἰουδαίοις· ὅτι σὺ μὲν ἐρῶς ἐν αὐτῷ ἀπό-
λέσθαι ὑπὲρ τοῦ λαοῦ· ἡ κολούθει δὲ τῷ
ἰουδαίων πέτρος· καὶ ὁ ἄλλος μαθητὴς·
ὁ δὲ μαθητὴς ἐκείνος· καὶ γνωστὸς τῷ ἀρχιε-
ρεῖ· καὶ ἐν ἡλθε τῷ ἰουδαίῳ τὴν αὐλὴν τοῦ ἀρ-
χιερέως· ὁ δὲ πέτρος εἰσῆλθε πρὸς τὴν
θύραν ἔξω· ἐξῆλθεν οὖν ὁ μαθητὴς ὁ ἄλ-
λος· ὅς τιν' ἀρχιερέως· καὶ εἶπεν
τῇ θυρωρῷ· καὶ εἰσὶν ἡμεῖς τὸν πέτρον· λέ-
γει οὖν ἡ παιδίον ἡ θυρωρὸς τῷ πέτρῳ·
μή καὶ σὺ ἐν τῶν μαθητῶν εἶ τοῦ ἀμνού-
του; λέγει ἐκείνος οὐκ εἰμὶ· εἰσῆλθε^{αμ}
δὲ οἱ δούλοι καὶ οἱ ὑπηρεταί· ἀνθρακι ἄν-
πε ποιηκό τῷ· ὅτι ψυχὸς τιν' καὶ ἐθερ-
μαίνοντο· καὶ δὲ μετὰ τῶν ὁ πέτρος ἐ-
στῶς καὶ θερμαινόμενος· ὁ οὖν ἀρχι-
ερεὺς· ἐρώτησεν τὸν ἰνὸν περὶ τῶν μα-
θητῶν αὐτοῦ· καὶ περὶ τῆς διδασκαλίας αὐ-
τοῦ· ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ ἰσ· ἐγὼ παρη-
σίᾳ ἐλάλησα τῷ κόσμῳ· ἐγὼ παρ-
τοτε ἐδίδαξα ἐν τῇ συνάγωγῃ καὶ ἐν τῷ ἱ-
ερῷ· ὅπου πάντοτε οἱ ἰουδαῖοι (ἐνέρχον)
καὶ ἐν κρυπτῷ ἐλάλησα οὐδὲν· τί με
ἐπερωτᾶς· ἐπερώτησον τοὺς ἀκηκο-
ότας· τί ἐλάλησα αὐτοῖς· ἰδεοῦτοι οἱ δα-
σῖν· αὐτὸς εἶπον ἡμεῖς· ταῦτα δὲ αὐτοῦ εἶ-
πόμπος· εἰς τῶν ὑπηρετῶν παρεστηκώς·

ἔδωκεν ῥά πρὸς μα τῷ ἴσ· εἰ πῶν· οὕτως ἀπο
κρίνηται ἀρχιερεῖς· ἀπὸ κρίθην αὐτῷ ὁ ἴσ·
εἰ κακῶς ἐλάλησαν· μαρτυρήσουσιν περὶ
τοῦ κακοῦ· εἰ δὲ καλῶς· τί με δέξῃς· ἅ
πέσθην αὐτὸν ὁ ἄνθρωπος δὲ δέ με ἐν οὐ πρῶ
καὶ ἄφαρ τὸν ἀρχιερέα· ἰὼ δὲ σίμων
πέτρος ἐξῶς καὶ θερμαινόμενος· εἰ
πονοῦν αὐτῷ· μή καὶ σὺ ἐν τῶν μαθη
τῶν αὐτοῦ· ἤρμίσσατο οὖν ἐκ ἡμερῶν καὶ
εἶπεν· οὐκ ἔμε· λέγουσιν ἐν τῶν δοῦ
λων τοῦ ἀρχιερέως· σὺ ἤσκησάν σου αὐ
πέκοψεν πέτρος τὸ ὥπιον· ἐγὼ σὲ εἶδον ἐν
τῷ κήπῳ μετ' αὐτοῦ· παλὶν οὖν ἤρμίσσα
το ὁ πέτρος· καὶ ἀθέως ἀλέκτωρ ἐφώρη
σεν· ἄφοισιν οὖν τὸν ἴν' ἀπὸ τοῦ καὶ ἄ
φαι εἰς τὸ πραιτόριον· ἰὼ δὲ πρῶτον· καὶ
αὐτοὶ οὐκ ἐσθλὸν ἦσαν τὸ πραιτόριον· ἴ
μαι μὴ μὴ ἀνθρώπων· ἀλλ' ἴνα φάγωσιν
τὸ πᾶς χά· ~ λατρίον· ^{κατὰ ματθαίον}

Γ ὡς καιρῷ ἐκείνῳ· οἱ στρατιῶται κρατή
σαντες τὸν ἴν'· ἀπήγαγον πρὸς καὶ ἄφ
τὸν ἀρχιερέα· ὅπου οἱ γραμματεῖς
καὶ οἱ πρεσβύτεροι συνέχθησαν· ὁ δὲ πέ
τρος ἠκολούθη αὐτῷ μακρόθεν ἕως τοῦ
αὐλίου τοῦ ἀρχιερέως· καὶ ἔσθλῶν
ἐσὼς ἐκάθη μετ' αὐτῶν ἐπ' ἡμερῶν·
ἰδεῖν τὸ τέλος· **Θ** δὲ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ
πρεσβύτεροι καὶ τὸ συνέδριον ὅλον ἐ
λήπουσαν ψάλλον μαρτυρίαν κατὰ τοῦ ἴσ

ὅπως θαρσύνωσιν αὐτὸν, καὶ οὐ χάρον· καὶ
 πολλῶν ψαλδομαρτύρων προσελθόντων, οὐ
 χάρον· ἴσπερον δὲ προσελθόντες δύο ψα
 δομαρτῦρες εἶπον· οὗτος ἐφ' ἡμῶν
 καταλίσει τὸν μακρὸν τοῦ θυ, καὶ διατριῶν
 ἡμερῶν οἰκοδομήσας αὐτὸν· καὶ ἄμα
 σὰς ὁ ἀρχιερεὺς εἶπεν αὐτῷ· οὐδὲν ἀ
 ποκριθεὶς, τί οὐτοί σου κατὰ μαρτυροῦσιν·
 ὁ δὲ ἰσ' ἐσώπα· καὶ ἀποκριθεὶς ὁ ἀρχι
 ερεὺς εἶπεν αὐτῷ· ὁξορκίῳ σε κατὰ τοῦ
 θυ τοῦ ζώντος, ἴνα ἡμῖν εἴπῃς; ἡσυχῇ
 οὐκ ἔστιν οὗτος τοῦ θυ; λέγει αὐτῷ ὁ ἴσ'· σὺ εἶ
 πας· πλὴν λέγω ἡμῖν· ἀπάρτι ὁ ψα
 δε τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου, καθήμενον ἐκ δεξι
 ῶν τῆς δυνάμεως, καὶ ἐρχόμενον ἐπὶ
 τῶν νεφελῶν τοῦ οὐρανοῦ· τότε ὁ ἀρχι
 ερεὺς διέρρηξε τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, λέγων·
 ὅτι ἐβλασφήμησεν· τί ἐτί χρειαζόμενον
 μαρτύρων· ἰδὲ νῦν ἡκοῖσατε πῶς βλασφη
 μίαν αὐτοῦ; τί ἡμῖν δοκιμὴ; οἱ δὲ ἀποκρι
 θεὶς τῷ εἶπον· ἐμὸς ὁσθατὸς ἐστίν·
 τότε συνέπιψαν εἰς τὸ πρόσωπον αὐ
 τοῦ· καὶ ἐκολάφισαν αὐτόν· οἱ δὲ ἔρρα
 πῖσαν λῆγον τῷ· προφήτασθ ἡμῖν, ἡ
 πῖς ἐστὶν ὁ παῖς αὐτῶν; ὁ δὲ πῆ πρὸς ἐ
 ζωὴν ἐκάθητο ἐν τῇ αὐλῇ· καὶ προσήλθεν
 αὐτῷ μία παιδίσκη λέγουσα· καὶ σὺ
 ἰδοὺ μετὰ τοῦ γαλιλαίου; ὁ δὲ ἡγήσατο
 ἐμπροσθεν αὐτῶν πάντων λέγων·

οὐ κοῖδω τί λείπει· ἐξελθόντα δ' αὐτὸν
εἰς τὸν πύλωνα, εἶδεν αὐτὸν ἄλλην· καὶ
λέγει τοῖς ἑκδ'· καὶ οὗτος ἰὼ μετὰ ἱού του
μαζωραίου· καὶ πάλιν ἤρμηνε αὐτο μεθ' ὅ
κου, ὅτι οὐ κοῖδω τὸν ἄνθρωπον· μετὰ μὲν
κροῦδ'· προσελθόντες οἱ ἑσώτες εἶπον
τῷ πετρω· ἀληθῶς καὶ σὺ ἐξ αὐτῶν εἶ·
καὶ γὰρ ἡ λαλιά σου δηλοῖ σε ποιεῖ· το
τε ἤρξατο κατὰ θεματὶ ζῆν καὶ οὐκ ἔμνη
ὅτι οὐ κοῖδω τὸν ἄνθρωπον· καὶ ἀνθέως ἀλέ
κτωρ ἐφώνησεν· καὶ ἐμνήσθη ὅτι πρὸς
τοῦ ῥήματος ἱού εἰρηκότος αὐτῷ, ὅτι πρὶν
ἀλέκτορα φωνῆσαι, τρεῖς ἀπαρμήσιν μετ'
καὶ ἐξελθὼν ἐξω, ἐκλαίσεν πικρῶς· ~

ον
Α

Διαφύλιον δὲ κατὰ τὸν ἀρμῆν.

Καὶ οὕτως ἐκείνῳ· ἀποστῆναι τὸν ἴν' ἀπὸ τοῦ
καὶ αἶψα εἰς τὸ πραιτόριον· ἰὼ δὲ πραιά·
καὶ αὐτοῖς οὐκ ἐσιλῆθον εἰς τὸ πραιτόριον·
εἶναι μὴ μετὰρθῶσιν, ἀλλ' ἵνα φάγωσιν τὸ
πάσχα· ἐξήλθεν οὖν ὁ πῖλᾶτος πρὸς
αὐτοὺς καὶ εἶπεν· τίνα κατηγορία
φέρτε τοῦ ἀνθρώπου τούτου· ἀπεκρίθησαν
καὶ εἶπον αὐτῷ· εἰ μὲν ἰὼ οὗτος κακο
ποιός, οὐκ ἄν σοι παρεδῶκαμεν αὐτόν·
εἶπερ οὖν αὐτοῖς ὁ πῖλᾶτος· λάβετε
αὐτὸν ἑμεῖς, καὶ κατὰ τὸν νόμον ὁ
μῶν κρίνατε αὐτόν· εἶπον οὖν αὐ
τῷ οἱ ἰουδαῖοι, ἡμῖν οὐκ ἐστιν ἀποκρί
ναι οὐδένα· ἵνα ὁ λόγος τοῦ ἱού πλη

ρωθῇ, ὃν εἶπεν· σημαίνων, ποίωθαι αὐ-
 τῷ ἐμελυσεν ἀποθνήσκειν· εἰσῆλθεν οὖν
 εἰς τὸ πραιτόριον πάλιν ὁ πῖλᾶτος· καὶ
 ἐφώνησε τὸν ἴν καὶ εἶπεν αὐτῷ· σὺ εἶ ὁ
 βασιλεὺς τῶν ἰουδαίων; ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ
 ἴσ· ἀφ' αὐτοῦ σὺ λέγεις, ἢ ἄλλοι σοι εἶπον
 περὶ ἐμοῦ; ἀπεκρίθη ὁ πῖλᾶτος· μή τί
 ἤω ἰουδαῖός ἐστί; τὸ ἔθνος τὸ σὸν καὶ οἱ ἀρ-
 χιερεῖς, παρέδωκαν σε ἐμοί· τί ἐποίησας;
 ἀπεκρίθη ἴσ· ἡ βασιλεία ἡ ἐμὴ, οὐκ ἐστὶν
 ἐν τοῦ κόσμου τούτου· ἡ ἐν τοῦ κόσμου
 τοῦτου ἡ βασιλεία ἡ ἐμὴ· οἱ ὑπάρχοντες
 αὐτοῖς ἐμοί, ἡ γὰρ κρίζοντο, ἵνα μὴ παραδω-
 θῶ τοῖς ἰουδαίοις· νῦν δὲ ἡ βασιλεία ἡ ἐ-
 μὴ, οὐκ ἐστὶν ἐν τούτῳ· εἶπεν οὖν αὐ-
 τῷ ὁ πῖλᾶτος· οὐκοῦν βασιλεὺς εἶ;
 ἀπεκρίθη ὁ ἴσ· σὺ λέγεις, ὅτι βασιλεὺς εἰμὶ.
 ἐγὼ· ἤω εἰς τοῦτο γε γένημαι, καὶ εἰς
 τοῦτο ἐλήλυθα εἰς τὸν κόσμον, ἵνα μαρ-
 τυρήσω τῇ ἀληθείᾳ· πᾶς ὁ ὢν ἐν
 τῇ ἀληθείᾳ, ἀκούει μου τῆς φωνῆς·
 λέγει αὐτῷ ὁ πῖλᾶτος· τί ἐστὶν ἀλήθεια;
 καὶ τοῦτο εἰπὼν πάλιν ἐξῆλθεν πρὸς
 τοὺς ἰουδαίους καὶ λέγει αὐτοῖς· ἐγὼ οὐ
 δεῖν ἂν αἰτίαν ἀρίσκω ἐν αὐτῷ· ἐστὶν
 δὲ ὡς ἡδεῖαι ὑμῖν, ἵνα ἐναὐτῶν ἀπολύ-
 σω ἐν τῷ πάσχει· βούλεθε οὖν ὑμῖν ἀ-
 πολύσω τὸν βασιλέα τῶν ἰουδαίων; ἐ-
 κραύβασαν οὖν πάλιν πάντες λέγοντες·

μη̄ τούτον, ἀλλὰ τὸν βαρᾶββαν. ὡς δὲ ὁ βα-
ρᾶββας ληστὴς, τότε οὖν ἔλαβεν ὁ πῖλᾶ-
τος τὸν ἴν καὶ ἐμασίγωσεν. καὶ οἱ στρα-
τιῶται πλέξαντες ἐφ' αὐτὸν ὅξ' ἀκαρθῶν,
ἐπέθηκα καὶ αὐτοῦ τῇ κεφαλῇ, καὶ ἰμά-
τιον πορφύρεον, περὶ ἐβαλον αὐτὸν, καὶ
ἔλεγον· χαῖρε ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων.
καὶ ἐδίδουν αὐτῷ ραπίσματα. ἐξῆλ-
θεν οὖν παλὶν ἔξω ὁ πῖλᾶτος, καὶ λέγει
αὐτοῖς· ἰδεάτω ἡμῖν αὐτὸν ἔξω· ἵνα γινώ-
τε, ὅτι ἐν αὐτῷ οὐδὲ μία ἀντία ἀνδρίας,
καὶ ἐξῆλθεν οὖν ὁ ἴσ' ἔξω, φορῶν τὸν
ἀκαρθὴν ὅξ' ἐφ' αὐτὸν, καὶ τὸ πορφύρεον
ἰμάτιον, καὶ λέγει αὐτοῖς· ἰδεὶ ὁ ἄνθρωπος.
ὅτε οὖν εἶδον αὐτὸν ὁ ἀρχιερεὺς καὶ ὁ
ὑπὲρ τῆς ἐκείνου σαρλέγοντες, σαρ-
ρωσον σῶσον αὐτόν, λέγει αὐτοῖς ὁ πῖ-
λᾶτος· λάβετε αὐτὸν ἡμεῖς καὶ σαρρώ-
σατε. ἀποκριθεὶς οὐχ ἀντία ἐν αὐτῷ ἀντι-
αρ, ἀπεκρίθησαν οὖν αὐτῷ οἱ Ἰου-
δαῖοι· ἡμεῖς νόμον ἔχομεν, καὶ κατὰ
τὸν νόμον ἡμῶν ὁ φεῖλδ' ἀποθανεῖν.
ὅτι ἐαυτὸν θῦ ἵον ἐποίησεν. ὅτε,
οὖν ἡκοισεν ὁ πῖλᾶτος τοῦτον τὸν λο-
γόν, μάλλον ἐφοβήθη, καὶ εἰσῆλθεν
ἐς τὸ πραιτώριον παλὶν, καὶ λέγει τῷ
ἰν· πόθεν εἰσὺ. ὁ δὲ ἴσ' ἀποκριθεὶς οὐ
κέδωκεν αὐτῷ, λέγει οὖν αὐτῷ ὁ πῖ-
λᾶτος· ἐμοὶ οὐ λαλεῖς; οὐκοῦν ἴσθαι

ὅτι ἐξουσίαν ἔχω στυγρῶσαι σε, καὶ ἐ-
 ξουσίαν ἔχω ἀπολῖσαι σε· ἀπεκρίθη
 ἰσ· οὐκ ἔχω ἐξουσίαν οὐδέ μίαν κατὰ
 μου· ἀλλ' ὡς σοι δέδοκται ἀνωθεν· διὰ
 τοῦτο ὁ παρὰ δὲ δίδω μέ σοί, μείζονα ἀμαρ-
 τία ἔχει· ἐκ τούτου ἐξήτει ὁ πῖλᾶτος
 ἀπολῖσαι αὐτόν· ἦ δὲ Ἰουδαῖοι ἐκραβον
 λόγον τῷ· Ἐὰν τοῦτο ἀπολίσσω, οὐκ εἰ-
 φίλος τοῦ καίσαρος· πᾶς ὁ βασιλεὺς ἐαυ-
 τὸν ποιῶν, ἀντίλεγει τῷ καίσαρι· ὁ οὖν
 πῖλᾶτος ἀκοῖσας τούτων τῶν λόγων, ἵ-
 γασεν ἔξω τὸν ἴν, καὶ ἐκάθισεν ἐπὶ τοῦ
 βήματος· εἰς τὸ πονεζόμενον λιθόστρω-
 τον· Ἐβραῖς γὰρ γὰββαῖ· ἵν δὲ παρα-
 σκεδῆ τοῦ πάσχα· ὥρα δὲ ὡς ἐκτι, καὶ
 λέγει τοῖς Ἰουδαίοις· ἰδὲ ὁ βασιλεὺς ἱμῶν·
 ἦ δὲ ἐκραύγασαν, ἄρον ἄρον στυγρῶσον
 αὐτόν· λέγει αὐτοῖς ὁ πῖλᾶτος, τὸν
 βασιλεὺς ἱμῶν στυγρῶσω· ἀπεκρίθη
 σαρ οἱ ἀρχιερεῖς· οὐκ ἔχομεν βασιλεῖα,
 εἰ μὴ καίσαρα· τότε οὖν παρέδωκεν
 αὐτὸν αὐτοῖς, ἵνα στυγρῶθῃ· ~

Δαθελιον Ε

κατὰ ματθαῖον:

Ε

ἦ δὲ καὶ ῥῶ ἐκείνῳ· ἰδὼν ἰσὺ δας ὁ παρὰ δὲ
 δίδω αὐτόν ὅτι κατεκρίθη· μετὰ μεληθείς,
 ἀπέστρεψεν πατρίαν καὶ τὰ ἀργύρια τοῖς
 ἀρχιερεῶσι καὶ πρὸς βυτέρους λέγων· ἵ-
 μαρ τον παραδίδω αἱμα αὐθῶν· οἱ δὲ
 εἶπον· τί πρὸς ἡμᾶς σὺ ὀφεί; καὶ ῥίψας

τὰ ἀργύρια ἐν τῷ μαῶ· ἀνεχώρησεν· καὶ
 ἀπελθὼν ἀπήγαγον· οἱ δὲ ἀρχιερεῖς λα-
 βόντες τὰ ἀργύρια εἶπον· οὐκ ἔστιν
 βαλεῖν αὐτὰ εἰς τὸν κορβαν· ἐπεὶ
 τίμη αἵματός ἐστιν + σὺμβούλιον δὲ
 λαβόντες, ἡγόρασαν ἐξ αὐτῶν τὸν ἀγρὸν
 τοῦ κεραμέως εἰς ταφὴν τοῖς ξένοις· διὸ
 ἐκλήθη ὁ ἀγρὸς ἐκεῖνος· ἀγρὸς αἵματος·
 ἕως τῆς σήμερον + τότε ἐπληρώθη τὸ
 ρήθες διὰ τῆς ἐντολῆς τοῦ προφῆτου λέγον-
 τος + καὶ ἔλαβον τὰ τρία κοῦντα ἀργύρι-
 αὶ τὴν τίμην τοῦ τετίμημένου, ὃν ἐτί-
 μήσαντο ἀπὸ τῶν ἡνὶ ἡλ· καὶ ἔδωκαν
 αὐτὰ εἰς τὸν ἀγρὸν τοῦ κεραμέως, κα-
 θὰς τὴν ἐπαγγελίαν· ὁ δὲ ἰσ· ἔστη ἐν
 προαθρῶν τοῦ ἡγεμόνος· καὶ ἐπληρώθη
 σεν αὐτὸν ὁ ἡγεμὼν λέγων· σὺ εἶ ὁ βα-
 σιλεὺς τῶν ἰουδαίων, ὁ δὲ ἰσ· ἔφη αὐτῷ,
 σὺ λέγεις + καὶ ἐν τῷ κατηγορεῖσθαι
 αὐτὸν ὑπὸ τῶν ἀρχιερέων καὶ τῶν πρε-
 βυτέρων, οὐδὲν ἀπεκρίνατο· τότε λέ-
 γει αὐτῷ ὁ πῖλᾶτος· οὐ κακοῦ εἰς πόσα
 σου καταμαρτύροισιν; καὶ οὐκ ἀπε-
 κρίθη αὐτῷ πρὸς οὐδὲν ῥῆμα· ὥς τε
 θαυμάζειν τὸν ἡγεμόνα λίαν + κατὰ
 δὲ ἑορτὴν εἰώθει ὁ ἡγεμὼν ἀπολύειν
 ἓν αὐτῷ ὅχλῳ δῶμιον ὃν ἤθελον + εἶχον
 δὲ τότε δῶμιον ἐπίσημον λεγόμενον
 βαρὰββαν + (ὡς ἡμετέρου αὐτῶν,

Εἶπε αὐτοῖς ὁ πῖλᾶτος· τίνα θέλετε ἀπο-
 λίσαι ἡμῖν· βαρᾶββαμ· ἢ ἕν τὸν λεγόμενον
 χυρ· ἡ δὲ ἄρχὴ ἰδὼν αὐτὸν παρέδωκεν αὐτὸν·
 καὶ μετ' αὐτοῦ ἐπὶ τοῦ βήματος·
 ἀπέστειλεν πρὸς αὐτὸν ἡγεμὴ αὐτοῦ λέ-
 γουσαι· μὴ δέν σοι καὶ τῷ δικαίῳ ἐκείνῳ·
 πολλὰ γὰρ ἔπαθον σήμερον κατ' ὄναρ δι' αὐ-
 τόν· οἱ δὲ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ πρῶτον βύτεροι·
 ἔπεισαν τὸν ὄχλον· ἵνα αἰτήσονται τὸν
 βαρᾶββαμ· τὸν δὲ ἡγεμὴ ἀπολύσῃ· ἀπο-
 κριθεῖς δὲ ὁ ἡγεμὴ εἶπε αὐτοῖς· τίνα θέλε-
 τε ἀπὸ τῶν δύο ἀπολίσαι ἡμῖν· ὁ δὲ εἶπεν·
 βαρᾶββαμ· λέγει αὐτοῖς ὁ πῖλᾶτος· τί οὖν
 ποιήσω τὸν ἕν τὸν λεγόμενον χυρ· λέγουσιν
 αὐτῷ πάντες· σταυρωθήτω· ὁ δὲ ἡγεμὴ
 ἔφη· τί γὰρ κακὸν ἐποίησεν· οἱ δὲ περὶ
 σῶς ἐκραζον λέγοντες· σταυρωθήτω· ἰδὼν
 δὲ ὁ πῖλᾶτος, ὅτι οὐδὲν ὠφελεῖ· ἀλλὰ μαῦμον
 θόρυβος εἶναι· λαβὼν ὕδωρ ἀπερίψατο
 πᾶς χεῖρας ἀπὸ τῆς τῆς τοῦ ὄχλου λέγων· ἀ-
 θώος ἡμῖν ἀπὸ τοῦ αἵματος τοῦ δικαίου τού-
 του· ἡμεῖς ὅψατε· καὶ ἀποκριθεῖς πᾶς ὁ
 λαὸς εἶπεν· τὸ αἷμα αὐτοῦ ἐφύμας, καὶ
 ἐπὶ τὰ τέκνα ἡμεῶν· τότε ἀπέλυσεν αὐ-
 τοῖς τὸν βαρᾶββαμ· τὸν δὲ ἡγεμὴ φασγανώσας πα-
 ρέδωκεν ἵνα σταυρωθῇ· τότε ὁ στρατὸς τοῦ
 ἡγεμόνος παραλαβόντες τὸν ἡγεμὴ εἰς
 τὸ πραιτώριον, ὡς ἡγορεῖτο ἔπειτα μόλις
 τὴν ἀσπίδα· καὶ ἐκδύσαντες αὐτὸν·

καὶ ρούφου· ἵνα ἄρῃ τὸν σῶν αὐτοῦ· καὶ φέρῃ
 σὺν αὐτῷ ἐπὶ γολγοθᾶν τόπον· ὅς ἐστι μεθερ-
 μυνδόμενον· κραρίου τόπος· καὶ ἐδὶ-
 δων αὐτῷ πῖεῖν· ὅτι μερυσμένον οἶνον· ὁ
 δὲ οὐκ ἔλαβεν· καὶ σῶσας τες αὐτὸν· διὰ
 μερίζονται τὰ ἱμάτια αὐτοῦ· βαῖμον τῶν
 κλήρον ἐπ' αὐτὰ· τίς τί ἄρῃ· καὶ δὲ ἄρα τρι-
 τι· καὶ ἐσαύρωσας αὐτὸν· καὶ καὶ ἐπὶ
 γραφῇ τῆς αἰτίας αὐτοῦ ἐπίκειραμεν·
 ὁ βασιλεὺς τῶν ἰουδαίων· καὶ (ὡς αὐτῷ
 σταυροῖσιν δύολησας· εὐαγγελιστῶν καὶ ἄλλων
 ἐξ ἀσυνύμων αὐτοῦ· καὶ ἐπληρώθη ἡ γρα-
 φὴ ἡ λέγειν· καὶ μετὰ ἀνόνων ἐλοπάθη·
 καὶ οἱ παραπορόμενοι· ἐβλασφήμουν
 αὐτὸν· κινουῦν τὸ πᾶς κεφαλὰς αὐτῶν καὶ
 λέγοντες· οὐ αὐ· ὁ κατὰ λύων τὸν μαθῶν·
 καὶ τρισὶν ἡμέραις οἱ κοδομῶν· σῶσον σε
 αὐτὸν· καὶ κατὰ βά ἀπὸ τοῦ σῶν· ὁμοί-
 ως καὶ οἱ ἀρχιερεῖς ἐμπάιζοντες πρὸς αὐ-
 τὸν· λέγοντες· μετὰ τῶν γραμματέων ἐλέγον· αὐ-
 τοῖς ἑσώσαν· ἐαυτὸν οὐδὲν αὐταῖς σῶσαι·
 ὁ γὰρ ὁ βασιλεὺς τοῦ ἱηλ· κατὰ βά τῶν ἡ ἀ-
 πό τοῦ σῶν· ἵνα ἴδωμαι καὶ πιάσω μεν
 αὐτῷ· ~ εὐαγγ. ματθαί

Καὶ αὐτῷ ἐκεῖνῳ· ἐλθόντες οἱ σταπῖται εἰς
 τὸν λεγόμενον γολγοθᾶ· ὅς ἐστι λεγόμενος
 κραρίου τόπος· ἐδὼκαρ αὐτῷ πῖεῖν· καὶ
 γὰρ σάμενος· οὐκ ἔθελεν πῖεῖν· σταυρῶ-
 σας τῶ δὲ αὐτὸν· διὰ μερίσας τὰ ἱμάτια

αὐτοῦ βάλλοντες κλήρον· καὶ καθήμενοι ἐ-
τήρουσι αὐτὸν ἐκεῖ· καὶ ἐπέθηκαν ἐπ' αὐ-
τὴν κεφαλὰς αὐτοῦ, τὴν αὖτε ἀπ' αὐτοῦ γεγρα-
μμένην· οὗτος ἦν ἰσὶς ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαί-
ων· τότε συνῆλθον τὰς συναιτῶν δι' ὀλίγηται·
εἰς ἐκδεξιῶν, καὶ εἰς ἐξαωνύμων· οἱ δὲ
παραπορόμενοι, ἐβλασφήμοι αὐτὸν·
κίνοῦντες τὰς κεφαλὰς αὐτῶν καὶ λέγοντες
ὅτι καταλύω τὸν μαθόν· καὶ ἐν τρισὶν ἡμέ-
ραις οἱ κοδομών, σώσουσι αὐτὸν· εἰ ἡ ὁσὶ
τοῦ θύ, κατὰ βηθί ἀπὸ τοῦ ἁγίου· ὁμοίως δὲ
καὶ οἱ ἀρχιερεῖς ἐκπαίζοντες μετὰ τῶν ἱερὰν
ματέων καὶ πρὸς βυτέρων καὶ φαρισαίων ἐλθόν·
ἄλλοις ἐσώσεν, ἐαυτὸν οὐδὲν αὐταὶ σῶσαι·
εἰ βασιλεὺς ἦν ἔστιν· καταβάτω ἡμεῖς ἀπὸ τοῦ
ἁγίου, καὶ πίπτωμεν ἐπ' αὐτῶν· πέποιθεν
ἐπὶ τὸν θύ· ῥισάθω ἡμεῖς αὐτὸν, ἡθέλη αὐ-
τὸν· εἶπεν γὰρ ὅτι θύ ἡμεῖς ἡ ὁσὶ· τὸ αὐτὸ
καὶ ὀλίγηται ὁσὶν συναρῶθεν τὰς αὐτῶν, ὅν ἡ
διζοῦ αὐτὸν· ἀπὸ δὲ ἐκ τῆς ὥρας, σιότος
ἐγένετο ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν, ἕως ὥρας
ἐνάτης· περὶ δὲ τὴν ἐνάτην ὥραν, ἀρε-
βόησεν ὁ ἰσὶς φωνὴ μεγάλη λέγων· ἡλί· ἡλί,
λειμάσα καχθαρί· τοῦ τέστιν, θεοῦ μου θε-
μου, ἱραπὴ με ἐματέλυπες· τινὲς δὲ τῶν
ἐκεῖ ἐσώτων ἀκοίσαρτες ἐλέγον· ὅτι ἡ
λίαν φωνὴ οὕτως· καὶ ἀθέως δραμῶν
εἰς ἐξαίτων καὶ λαβῶν ἀσόντων, πλήσασθε
ὄξω· καὶ περὶ θεῖος καλῶμεν, ἐπὶ τὴν ἐνάτην·

Θὺ δὲ λοιποὶ ἔλεγον· ἀφ' ὧ ἰδόμεν, ἡ ἐρχεται ἡ λή-
 αι σῶσαυ αὐτὸν· ὁ δὲ ἰσὺς πάλιν κράξας φωνῇ
 μεγάλη, ἀφ' ἧς ἐν τὸ πρῶτον· καὶ ἰδὼ τὸ κατὰ
 πέτασμα τοῦ μαοῦ ἐσχίσθη εἰς δύο, ἀπὸ ἄνω
 θέρε' ὡς καὶ τῶ· καὶ ἡ γῆ ἐσείσθη· καὶ αἱ πέ-
 τραι ἐσχίσθησαν· καὶ τὰ μνημεῖα ἡμεῶν ἐχθί-
 σαν· καὶ πολλὰ σώματα τῶν νεκρῶν με-
 ρων ἀγίων ἤγερθη· καὶ ἐξελθόντες ἐν τῶν
 μνημερίων μετακινήσονται αὐτοῦ· εἰσὶν ἄλλοι
 εἰς τὴν ἁγίαν πόλιν, καὶ ἐνεφανίσθησαν
 πολλοί· ὁ δὲ ἐκείνου ταραχος καὶ οἱ μετὰ αὐτοῦ
 τηροῦντες τὸν ἵν· ἰδόντες δὲ τὸν σεισμόν καὶ τὰ
 ἐν ὁρώμενα, ἐφοβήθησαν σφόδρα λέγοντες· ἀλ-
 λ' ὁ θεὸς ἰσὺς ὁ οὗτος·

καὶ ῥῶς καὶ μω· ἦγοντο (ὡς τῶ ἰσὺ καὶ ἐπε-
 ροὶ τοῦ κακοῦ ἔργου, ὡς αὐτῶ ἀνέρεθῆναι· καὶ
 ὅτε ἀπῆλθον εἰς τὸν τόπον τοῦ καλούμενον
 κρανίον, ἐκείθεν εὐαγγέλιον αὐτὸν, καὶ τοῖς
 κακοῦργοις· ὅν μὲν ἐδέξιν, ὅν δὲ ἐξαρτε-
 ρῶν· ὁ δὲ ἰσὺς ἔλεγον· περ' ἄφες αὐτοῖς, οὐ γὰρ
 οἶδασί τί ποιοῦσιν· ὅραμεριζόμενοι δὲ τὰ
 ἱμαῖα αὐτοῦ, ἐβαλλον κλήρον· καὶ ἡσκήθη
 ὁ λαὸς θεωρῶν· ἐξεμεκτήριον δὲ καὶ οἱ ἄρχον-
 τες (ὡς αὐτοῖς λέγοντες· ἄλλοις ἐσώσεν, ἔαν
 τὸν· εἰ οὗτος ἐστὶν ὁ χεῖρ, ὁ τοῦ θεοῦ ἐκλεκτός· ἐνέ-
 παιζον δὲ αὐτῶ καὶ οἱ στρατιῶται προσερχόμενοι
 καὶ ὅσοι προσφέροντες αὐτῶ, καὶ λέγοντες· εἰ
 σὺ εἶ ὁ βασιλεὺς τῶν ἰουδαίων, σῶσον σε αὐτὸν·
 ὡς δὲ καὶ ἐπὶ γραφῇ γεγραμμένον ἐπ' αὐτῶ·

ὁ
 Η

Γράμμασιν ἑλληνικοῖς· καὶ ρωμαϊκοῖς· καὶ
 ἐβραϊκοῖς· οὗτος ἐστὶν ὁ βασιλεὺς τῶν ἰουδαί-
 ων· εἰς δὲ τῶν κρεμασθέντων κακούργων·
 ἐβλασφήμησεν αὐτοὺς λέγων· εἰ σὺ ᾧ ᾔχῃ, σὺ
 σὺν σε αὐτὸν καὶ ἡμεῖς· ἀποκριθεὶς δὲ ὁ ἑ-
 τερος ἐπετίμα αὐτῷ λέγων· οὐδὲ φοβῶ σὺ
 τὸν θῆ· ὅτι ἐν τῷ αὐτῷ κρίματι εἶ· καὶ ἡμεῖς
 μεν δὲ καί ως, ἀξία γὰρ ὡν ἐπράξαμεν ἀ-
 πολαμβάμενοι· οὗτος δὲ, οὐδὲν ἄπο ποινῆς
 ἐπράξε· καὶ ἔλεγε τῷ ἱού, μὴ ἀδικήσῃς με·
 ὅτι ἂν ἐλθὼς ἐν τῇ βασιλείᾳ σου· καὶ εἶπεν
 αὐτῷ ὁ ἰσ· ἀμὲν λέγῃς· σήμερον μετὰ σοῦ
 ἔσται ἐν τῷ παραδείσῳ· ὡς δὲ ὥστε ὥρα ἐκείνη·
 καὶ σκοπὸς ἐγένετο ἐφ' ὅλῳ τῷ γένει· ὥς ὥρα
 ἐμράτῃς· καὶ ἐκοπίαθη ὁ ἥλιος· καὶ ἐσχιάθη
 τὸ καταπέτασμα τοῦ ναοῦ μέσον· καὶ φωμή-
 σασ φωνὴ μεγάλη ὁ ἰσ· εἶπεν· πᾶς· εἰς χεῖρας
 σου παραθήσομαι τὸ πρῶτόν μου· καὶ ταῦτα
 εἰπὼν ἐξέπρασεν· ἰδὼν δὲ ὁ ἑκατόν-
 ταρχος τὸ γερόμενον, ἐδόξασεν τὸν θῆ λέγων·
 ὁμῶς ὁ ἄνθρωπος οὗτος, δὴ καιὸς ὢν· καὶ πάντες
 ὁ ἄνθρωπος οὗτος, δὴ καιὸς ὢν· καὶ πάντες
 ὁ ἄνθρωπος οὗτος, δὴ καιὸς ὢν· καὶ πάντες

Θ

λιλαίαν ὁρᾶσαι ταῦτα· ὁ δὲ ἀστέριον
 ὡς καὶ ὡς ἐκείνῳ· ὁ δὲ καὶ ὡς ἐκείνῳ·
 παρὰ τῷ ἑρῷ τοῦ ἱού ἡμεῖς αὐτοῦ καὶ ἡ ἀδελφὴ

τῆς κρῆσ' αὐτοῦ μαρτίαν ἢ τοῦ κλοπᾶν· καὶ μαρτίαν
 ἢ ματαθλητικῆς· ἴδ' οὖν, ἰδὼν τὴν κρῆσ' καὶ τὸν
 μαθητὴν παρεστῶτα, οὐκ ἠγάπα· λέγει τῇ κρῆσ'
 αὐτοῦ· γύναι, ἰδὼν ὁ ἰσὸς σου· εἶπα λέγει τῷ
 μαθητῇ, ἰδὼν ἢ κρῆσ' σου· καὶ ἀποκρίθης τῆς αὐ-
 ρας· ἔλαβεν ὁ μαθητὴς αὐτῶν εἰς τὰ ἰδίᾳ,
 κρητὸν τοῦ ἰδῶν ὁ ἰσὸς ὅτι πάντα ἤδη τετέλεται·
 ἱραπελῶθῃ ἡ γραφή, λέγει· διψῶ· σκάσομαι
 ἐκ τοῦ ὄξους μεσῶν· ἠδὲ πλήθυντω σόφιστον ὁ
 ξίω· καὶ ἰσὸς πω περιθέντων, προσήνεγγεν αὐ-
 τοῦ τῷ στόματι· ὅτε οὖν ἔλαβεν τὸ ὄξος ὁ ἰσὸς
 εἶπεν, τετέλεται· καὶ κίμας τὴν κεφαλὴν
 παρέδωκεν τὸ πρῶτον· ἠδὲ οὖν ἰουδαῖοι ἱραμὴς
 μέμνηται τοῦ σφῶνται σώματα ἐν τῷ σκεβαί-
 τῳ, ἐπεὶ παρασκεύη· ἡ γὰρ μεμνημένη
 μέρα ἐκείνου τοῦ σκεβαίου· ἡρώτησαν τὸν
 πλάτονα ἵνα κατεαγώσιν αὐτῶν τὰ σκέλη,
 καὶ ἀρθώσιν· ἠλθον οὖν οἱ στρατιῶται· καὶ
 τοῦ μεν πρώτου, κατέαξαν τὰ σκέλη· καὶ
 τοῦ ἄλλου τοῦ σφῶνθαι τοσ αὐτῶν· ἐπὶ δὲ
 τὸν ἵν' ἐλθόντες· ὡς ἰδὼν αὐτὸν ἤδη τεθνη-
 κότα, οὐ κατέαξαν αὐτοῦ τὰ σκέλη· ἀλλ' εἰς
 τῶν στρατιῶν, λόχη αὐτοῦ τὴν πλάγαν ἐ-
 ρύξεν· καὶ ἀνέωρε· ἐξήλθεν αἷμα καὶ ὕδωρ·
 καὶ ὁ ὄρακός με μαρτύρηκεν· καὶ ἀληθινῆς
 εἶναι ἡμᾶς περὶ αὐτοῦ· κακεῖνος εἶδεν
 ὅτι ἀληθὴ λέγει· ἵνα ὑμεῖς πιστάσθετε· ἐγὼ
 , μὴτο γὰρ ταῦτα· ἵνα ἡ γραφή πληρωθῇ· ὅσοι
 , οὐ σφωτρήσεται ἀπ' αὐτοῦ· καὶ παλιν ἑτέρα

Γραφή λέγει· ὅτι οὐκ εἰς οὐκ ἐξεκέντησαν·
Διατίκτον τὸν κατὰ μαρτυρίαν.

Πῶ καιρῶ ἐκείνῳ· ἐλθὼν ἰωσήφ ὁ ἀπὸ ἀριμα-
θαίας ἀσκήμων βουλευτῆς· ὃς καὶ αὐτὸς ἦν
πρὸς δεχόμενος τῷ βασιλείᾳ τοῦ θῦ· πολλή
σας εἰσῆλθεν πρὸς πῖλᾶτον καὶ ἡτοίσατο τὸ
σῶμα τοῦ ἰῦ· ὃ δὲ πῖλᾶτος ἐθαύμασεν·
εἰ ἡδὲ τέθνηκεν· καὶ προσκαλεσάμενος τὸν
κεντυρίωνα, ἐπὶ ῥώτῃσεν αὐτὸν, ὃ πάλαι αὐ-
τὸν πέθανεν· καὶ ῥοῖσ ἀπὸ τοῦ κεντυρίωνος.
ἔδωκεν αὐτὸ σῶμα τῷ ἰωσήφ· καὶ ἡγοράσας
σινδόναν· καὶ κατελῶν αὐτὸν, ἐνήλισε τῇ σινδό-
νῃ· καὶ κατέθηκεν αὐτὸν ἐν κρημνῷ, ὃ ἦν λελα-
τομημένον ἐπὶ πέτρας· καὶ προσεκύλισεν λί-
θον, ἐπὶ τῇ θύρᾳ τοῦ κρημνοῦ· ἡ δὲ μαρ-
τίαν ἡμαδαλινῇ· καὶ μαρτίαν αἰωσῇ· ἐθεώρουσι
ποῦ πῖθται· Διατίκτον τὰς κατὰ ἰωάννην·

ΙΑ **Π**ῶ καιρῶ ἐκείνῳ ἡρώτησεν τὸν πῖλᾶτον οἱ ἰω-
σήφ ὁ ἀπὸ ἀριμαθαίας, ὃν μαθητὴς τοῦ ἰῦ· κα-
κῶς μὲν οὖν δὲ ἵατον φόβον τῶν ἰουδαίων, ἵνα
ἄρῃ τὸ σῶμα τοῦ ἰῦ· καὶ ἐπέτρεψεν ὁ πῖ-
λᾶτος· ἦλθεν οὖν, καὶ ἦρεν τὸ σῶμα τοῦ ἰῦ·
ἦλθεν δὲ καὶ κινώδης οὗτος ὁ ἐλθὼν πρὸς τὸν ἰῦ
κατὰ τὸ πρῶτον· φέρων μίγμα σμύρνης καὶ ἀ-
λόης, ὡς λίτρας ἑκατὸν· ἐλάβον οὖν τὸ σῶ-
μα τοῦ ἰῦ· καὶ ἐποίησαν αὐτὸ ἐν ὁδοῖσι μετὰ
τῶν ἀρωμάτων καθὼς ἔθος ἐστὶ τοῖς ἰουδαίοις·
ἐν ταφιάζειν· ἡ δὲ ἐν τῷ τόπῳ ὅπου ἐστὶ
θῆ· καὶ πρὸς· καὶ ἐν τῷ κρημνῷ καὶ,

ἐν ᾧ οὐδέ πω οὐδεὶς ἐτίθει + ἐδιδόχετο
 παρασκευῇ τῶν Ἰουδαίων· ὅτι ἐγγίστω
 τὸ κρημνίσαι ἐν δικαστηρίῳ ἱεροῦ

Ἑσπερίον. $\overline{\text{ιβ}}$ · κατὰ ῥατοβαίον.

λέγει ἡ τῶ μὲν σαπῶν πρῶτ' ἄρ' ὅρ'

JB

ἡ ἐπαύριον, ἡ τις ἐστὶν μετ' αὐτῷ παρ' αὐδὴν.

Συνήχθησαν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ φαρισαῖοι πρὸς
πύλατον λέγοντες, ἡμεῖς ἐμνησθήμεν ὅτι ἐκ

ἄλλος ὁ πλάμος εἶπεν ἐφ' ἡμῶν· μετὰ τρεῖς ἡμέ-
 ρας ἐρχομαι, καὶ λείψω τοὺς ἀσφαλιθῆναι

τὸν ταύφον, ἕως τῆς τρίτης ἡμέρας· μή πο-
τε ἐλθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ῥυκτοσ ἤτε

φωσὶν αὐτὸν· καὶ εἴ πως ἰπῶ λαῶ, ἡ γὰρ θ' αὖ
 πὸ πάντων κενυῶν· καὶ ἔσται ἡ ὁχλοῦσι πλάνη.

χειρῶν τῆς πρώτης· ἐφ' ἡ δὲ αὐτοῖς ὁ πῖλ
τος· ἔχετε κωσουδίαν· ὑπάγετε ἀσφαλίσαι

αὐτὸς ὡς οἱ ἄλλοι· ἠδὲ ποταθεύτης ἡσφαλίσαμ
τοτὸν πᾶ' φον· σφραγίσαμτες τὸν λίθον,

μετὰ τὴν κοίτην αὐτοῦ : ἡ δὲ πόρτις αὐτῆς παρα-
 τῶ καὶ ῥῶ ἐκείνη· ἰδὼν ἰούδας
 τὴν πόρτιν αὐτῆς· ὅτι ἡ πόρτις αὐτῆς ἦν
 ἡ πόρτις αὐτῆς· ὅτι ἡ πόρτις αὐτῆς ἦν

ὁ παρὰ τοῦ διωαίτου ζητῆται ἕως τῆς παρὰ λέξεως
καὶ ἐλθόντες εἰς τὸ πομπηρόμενον χοροδᾶς.

ἵσασι δὲ καὶ ζῶσαι καὶ πολλαὶ ἀπὸ μακρῶν θη.

θεωροῦσαι αἰτήματα ἡκολούθησαν τῷ ἱερεὶ,
ἀπὸ τῆς βασιλείας δὲ ἀκοροῦσαι αὐτῷ· ἐ-

μαῖς ἡ μαρία ἡ μαρδοχαίου· καὶ μαρία ἡ
τοῦ ἰακώβου· καὶ ἡ σὴμῃ· καὶ ἡ μὴρ' τῶν

$\psi \omega \rho \zeta \epsilon \beta \bar{\epsilon} \delta \alpha \iota \omicron \upsilon : \sim \frac{\lambda}{\mu} \quad \tau \eta \varsigma \bar{\alpha}, \bar{\varphi} / \tau \bar{o} \bar{\alpha}^v$

[illegible]

*καὶ οἱ ἰουδαῖοι· ὅτι ἡ γὰρ τῆς πατρὸς ἐκκλησίας· καὶ τοῦ
ἐκείνου καιρὸς ἐγγύς· ἵνα γινώσκωμεν τὴν αὐτῆς καὶ ἑτέρας*

[illegible]

Τῷ καιρῷ ἐκείνῳ· σὺμβούλιον ἔλαβον παρὰ
 τῶν οἰ ἀρχιερέων καὶ οἱ πρῶτοι βύτεροι τοῦ λα-
 οῦ κατὰ τοῦ ἱσ. ὡς τεθαλατῶσαι αὐτὸν·
 καὶ δὴ θάρτεσ αὐτὸν ἀπήγαγον· καὶ παρέδω-
 κεν αὐτὸν πορνίῳ πῖλῳ τῷ ἡγεμῶνι·
 τότε ἰδὼν ἰούδας ὁ παραδιδῶν αὐτὸν ὅτι
 κατεκρίθη· μετὰ μεληθείς ἀπέστρεψεν τὰ
 τρία κομτὰ ἀργύρια τοῖς ἀρχιερεῶσι καὶ
 πρῶτοι βύτεροι λέγων· ἡμάρτομ παραδῶν
 αἱμα ἁθῶν· ἡ δὲ εἶπον· τί πρόστιμάς
 οὐ ὄψη· καὶ ῥίψας τὰ ἀργύρια ἐν τῷ
 μαῶ, ἀρεχώρησεν· καὶ ἀπελθὼν ἀπήγ-
 ζατο· οἱ δὲ ἀρχιερεῖς λαβόντες τὰ ἀργύ-
 ρια εἶπον· οὐκ ἔξεστιν βαλεῖν αὐτὰ ἐς τὸν
 κορβανᾶν, ἐπὶ τὴν τιμὴν αἱμαποσθεῖν· σὺ-
 μβούλιον δὲ λαβόντες· ἡγόρασαν ἐξ αὐτῶν
 τὸν ἀγρὸν τοῦ κεραμέως εἰς ταφὴν τοῖς
 ζήνοισ· διὸ ἐκλήθη ὁ ἀγρὸς κήμος, ἀγρὸς
 αἱμαποσ, ἕως τῆς σήμερον· τότε ἐ-
 πληρώθη τὸ ῥήθ ἐν δ' αἰερέμίου τοῦ προ-
 φήτου λέγοντος· καὶ ἔλαβον τὰ τρία
 κομτὰ ἀργύρια τὴν τιμὴν τοῦ τετιμῆ-

καὶ δὴ θάρτεσ αὐτὸν ἀπήγαγον· καὶ παρέδω-
καν αὐτὸν πομπῇ πῖλῳ τῷ ἡγεμῶνι·
τότε ἰδὼν ἰούδας ὁ παραδιδῶν αὐτὸν ὅτι

κατεκρίθη· μετὰ μεληθείς ἀπέσρεψεν τὰ
τριᾶκοντα ἄρ Γύρια τοῖς ἀρχιερεῶσι καὶ
πρὸς βυτέροις λέγων· ἡμάρτομ παραδοῖς

αἰμαθωον· (9) δὲ εἶπον· τί προσέμας
σὺ ὄφης· καὶ ῥίψας τὰ ἄρβυρια ἐν τῷ
μαῶ, ἀνεχώρησεν· καὶ ἀπελθὼν, ἀπήγ-

ζατο· οἱ δὲ ἀρχιερεῖς λαβόντες τὰ ἀρχιε-
ρια εἶπον· οὐκ ἔστιν βαλεῖν αὐτὰ ἐν τῷ
κορβανί, ἐπεὶ τίμη αἵματός ἐστιν· σὺ
μὲν οὖν ἀνδὲρ ἄνθρωπος ἐστὶς ὁ ὢν ἐξ ἀπῶν

τοῦ ἀγροῦ τοῦ κεραμέως εἰς ταφὴν τοῖς
ζένοις· δι' ὅ ἐκλήθη ὁ ἀγρὸς κήμος· ἀγρὸς
αἰματός, ἕως πρὸς σήμερον· τότε ἐ-

· πληρώθη τὸ ῥῆθ' ἐν ὃν αἰερεῖμί σου τοῦ προ
· φήτου λέγοντος· καὶ ἔλαβον τὰ πρῶτα
· ἀκούσας ἀρ' ὅτι αὐτὴν τὴν τιμὴν τοῦ τετιμ

μένου· ὃν ἐτίμησαν το ἀπὸ ἡγῶν ἡλ· καὶ
 ἔδωκαν αὐτὰ εἰς τὸν ἀγρὸν τοῦ κεραμείωσ·
 καθὰ συνέταξεν μοῖκς· ὁ δὲ ἴσ' ἔστη ἐκ
 προαθεν τοῦ ἡγεμόνος· καὶ ἐπὶ πρώτῃσιν
 αὐτὸν ὡς ἡγεμῶν λέγων· σὺ εἶ ὁ βασιλεὺς
 τῶν ἰουδαίων; ὁ δὲ ἴσ' ἔφη αὐτῷ· σὺ λέγῃς·
 καὶ σὺ τῶ κατηγορεῖσθαι αὐτὸν ὑπὸ τῶν ἀρ-
 χιερέων καὶ τῶν πρῶτον βυτέρων, οὐδὲν ἀπε-
 κρίνατο· τότε λέγει αὐτῷ ὁ πῖλάτος· οὐ
 κακοῦ εἰς πόσα σου κατὰ μαρτυροῖσιν;
 καὶ οὐκ ἀπεκρίθη αὐτῷ πρὸς οὐδὲν ῥήμα·
 ὡς τε θαυμάζειν τὸν ἡγεμῶνα λίαν· κα-
 τὰ δὲ ἑορτῇ εἰώθει ὁ ἡγεμὼν ἀπολύειν
 ἑνὰ τῶ ὄχλου δόμιον ὃν ἠθέλον· εἶχον
 δὲ τότε δόμιον ἐπίσημον λεγόμενον βα-
 ράββαν· συνήγαγον οὖν αὐτῶν, εἶ-
 πεν αὐτοῖς ὁ πῖλάτος· τίνα θέλετε ἀ-
 πολίσω ὑμῖν· βαράββαν; ἢ ἰὺν, τὸν λεγο-
 μένον χυ· ἡ δὲ ἰαὶ γὰρ ὅτι δὴ ἀφθόρον παρέ-
 δωκεν αὐτόν· καὶ ἡ μένου δὲ αὐτοῦ ἐ-
 πὶ τοῦ βήματος· ἀπέστειλεν πρὸς αὐτόν
 ἡγῶν αὐτοῦ λέγουσα· μὴ δέν σοι καὶ τῷ
 δὴ καί ω ἐκείνῳ· πομπὰ γὰρ ἐπαθον σὴ
 μερομ κατόμαρ δὴ αὐτῶν· οἱ δὲ ἀρχιε-
 ρεῖς καὶ οἱ πρῶτον βύτεροι ἐπῆσαν τοῖς
 ὄχλοις· ἵνα αἰτήσονται τὸν βαράββαν·
 τὸν δὲ ἰὺν ἀπολέσωσιν· ἀποκριθεὶς
 δὲ ὁ ἡγεμὼν εἶπεν αὐτοῖς· τίνα θέλε-
 τε ἀπὸ τῶν δύο ἀπολύσω ὑμῖν· οἱ δὲ εἶπ·

βαρὰ βάρη· λέγει αὐτοῖς ὁ πῖλᾶτος· τί
οὖν ποιήσω τὸν ἱὺν τὸν λεγόμενον χῆν· λέγον
τὸ αὐτῷ πάντες· στρατωθήτω· ὁ δὲ
ἐξέμαλ' εἶπεν· τί γὰρ κακοῦ ἐποίησεν·
οἱ δὲ περισῶς ἐκράζον λέγοντες· στρα-
τωθήτω· ἰδὼν δὲ ὁ πῖλᾶτος, ὅτι οὐδὲν ὄφε-
λος· ἀλλὰ μάλλον θόρυβος γίνεσθαι, λαβὼν
ἕδωρ ἀπερίφαιτο τὰς χεῖρας ἀπέμαλ-
τί τοῦ ὄχλου λέγων· ἀθῶος ἤμῃ ἀπὸ τοῦ
αἵματος τοῦ δ' ἑκαίου τοῦ του· ὑμεῖς ὁ-
ρᾶτε· καὶ ἀποκριθεὶς πᾶς ὄλαος εἶ-
πεν· τὸ αἷμα αὐτοῦ ἐφ' ἡμᾶς καὶ ἐπὶ
τὰ τέκνα ἡμῶν· τότε ἀπέλυσεν αὐ-
τοῖς τὸν βαρὰ βάρη· τὸν δὲ ἱὺν φραγέλω-
σας, παρέδωκεν ἵνα στρατωθῇ· τότε ἡ
στρατιῶται τοῦ ἡγεμόνος· παραλαβού-
ντες τὸν ἱὺν εἰς τὸ πραιτώριον· (ὡς γὰρ
ἐπαὐτὸν ὄχλῳ τὴν αἰτίαν· καὶ εὐδὲ
σαρτες αὐτὸν, περὶ ἔθνη καὶ αὐτῷ χλαμύ-
δα κοκκίνῃ· καὶ πλέξαντες σέφαρον
ἐξακαρθῶν, ἐπέθηκαν ἐπὶ τὴν κεφα-
λήν αὐτοῦ· καὶ κάλαμον ἐπὶ τὴν δεξι-
ὰν αὐτοῦ· καὶ γογγύεσσαντες ἐμπῆ-
ρσεν αὐτοῦ ἐνέπαιζον αὐτῷ λέγοντες· χαί-
ρε ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων· καὶ ἐμπύ-
σαντες εἰς αὐτὸν, ἐλάβον τὸν κάλαμον,
καὶ ἐτίπτον εἰς τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ·
καὶ ὅτε ἐνέπαιζαν αὐτὸν· ἐξέδυσαν αὐ-
τὸν τὴν χλαμύδα, καὶ ἐνέδυσαν αὐτὸν

τὰ ἱματῖα αὐτοῦ· καὶ ἀπὸ τῆς βαρύνουσας αὐτὸν ἡ
τοῦ σώματος· ἐξέρχόμενοι δὲ εὖρον ἄνθρωπον
κερὶ μαῖον ὁνόματι σίμων· τοῦτον ἡ
γράφουσα· ἵμαι ἄνθρωπον τὸν σώμα αὐτοῦ· καὶ
ἐλθόντες εἰς τόπον λεγόμενον γολγοθᾶ·
ὅς ἐστι λεγόμενος κρανίου τόπος· ἐδώκαν
αὐτῷ πίειν· καὶ γαστρίμηνος οὐκ ἔδωκαν
πίειν· ἔσθωσαν τε δὲ αὐτὸν διμερίσαντες
τοτὰ ἱματῖα αὐτοῦ, βάλλοντες κλήρον·
καὶ καθήμενοι ἐτήρουν αὐτὸν ἐκείνῃ· καὶ
ἐπέθηκαν ἐπ' αὐτὸν τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ
τὴν αἰτίαν αὐτοῦ γεγραμμένην· οὐ πῶς
ἔστιν ἴσθι, ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων· τότε
σταυροῦνται (ὡς αὐτῷ δυνάσται· εἰς σὴν
δεξιῶν· καὶ εἰς ἐξωμύμων· εἰς δὲ
τῶν κρεμασθέντων κακοῖς ἔργων ἐβλασφήμῃ
αὐτὸν λέγων· σὺ εἶ ὁ χεῖρ, σῶσον με αὐτὸν καὶ
ἡμᾶς· ἀποκριθεὶς δὲ ὁ ἕτερος ἐπετίμα
αὐτὸν λέγων· οὐδέ φοβῆσθαι σὺ τὸν θῆν· ὅτι ἐν
τῷ αὐτῷ κερὶ ματῖ εἶ· καὶ ἡμεῖς μὲν δὲ καί
ωσ, ἀξίον γὰρ ὡς ἐπράξαμεν, ἀπολαύ-
σασθαι· οὗτος δὲ οὐδὲν αὐτοῦ ποιεῖν πρᾶ-
ξεν· καὶ ἔλεγε τῷ ἰσθι, μή τιμίμου καὶ ὅ-
ταν ἔλθῃς ἐν τῇ βασιλείᾳ σου· καὶ εἶπεν
αὐτῷ ὁ ἰσθι· ἀμὲν λέγεις· σήμερον μετὰ
μοῦ ἔσθι ἐν τῷ παραδείσῳ· οἱ δὲ παρὰ
πορεύμενοι, ἐβλασφήμουν αὐτὸν κί-
νῶντες τὰς κεφαλὰς αὐτῶν, καὶ λέγον-
τες· ὁ καταλύων τὸν ναὸν καὶ ἐν ἡμέραις

ἡμέραις οἱ κοδομών, σῶσον σεαυτὸν· εἰ ὕψος εἶ
τοῦ θυ κατὰ βῆθί ἀπὸ τοῦ στροῦ + ὁμοίως δὲ καὶ
οἱ ἀρχιερεῖς ἐμπαίζον τὸ μετὰ τῶν γραμματέ
ων καὶ πρῶτον ἐτέρων καὶ φαρισαίων ἐλέγον·
ἄλλοις ἐσώσεν ἑαυτὸν οὐδὲν αὐταὶ σῶσαι +
εἰ βασιλεὺς ἦν ἐστὶν κατὰ βῆθιν ἀπὸ τοῦ
στροῦ, καὶ πῖσάσωμεν ἐπαυτῷ + πέποιθεν
ἐπὶ τὸν θυ, ρισαδάων ἀπὸν, ἡθέλη αὐτὸν· εἰ
περὶ γὰρ ὅτι θυ ἡμὶ ὕψος + τὸ αὐτὸ καὶ οἰληταὶ
οἱ ἱερεῖς αὐτῷ, ὁρᾷ δὲ ζοῦ αὐτὸν + ἀπὸ δὲ
ἐκείνης ὥρας σκόπος ἐγένετο ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν, ἐ
ώρασεν ἅπαντες + περὶ δὲ τὴν ἐν ἁπλῇ ὥραν, ἀνε
βόησεν οἱ σφωρὴ μεγάλης λέγων· ἡλὶ· ἡλὶ· λημῶ
σα βαχθαρή· τοῦ τέστιν θέμου θεέ μου, ἵνα τί με
ἐγκατέλιπες + τί νῦν δὲ τῶν σκῆ ἐσώτων ἀκού
σαρτες ἐλέγον, ὅτι ἡλὶ ἀνφωρὸς οὗτος + καὶ
ἀθέως δραμῶν εἰς ἐξ αὐτῶν, καὶ λαβὼν ἀσώ
γον, πλησας πέσξοις· καὶ περὶ θεῖς καλῶν
ἐπόπιζεν αὐτὸν + οἱ δὲ λοιποὶ ἐλέγον· ἀφῶ
ἴδομεν ἡ ἐρχεται ἡλὶ ἀσώσον αὐτὸν + ὁ δὲ ἴσ
παλὶν κράξας σφωρὴ μεγάλης, ἀφῆκεν τὸ πρῶτον +
καὶ ἴδον τὸ καταπέτασμά τοῦ ναοῦ ἐσχί
θη εἰς δύο ἀπὸ ἀνωθεν ἕως κάτω, καὶ ἡ γῆ ἐ
σεισάθη, καὶ αἱ πέτραι ἐσχίσθησαν, καὶ τὰ
μνημεῖα ἡνεώχθησαν, καὶ πολλὰ σώματα
τῶν κεκοιμημένων ἀγίων ἡγέρθη + καὶ ἐξελ
θόντες ἐκ τῶν μνημείων μετὰ τὴν ἐγερσίν
αὐτοῦ, εἰσῆλθον εἰς τὴν ἁγίαν πόλιν, καὶ ἐ
νεφάριαθησαν πολλοῖς + ὁ δὲ ἐκάτερον τὰρχος

καὶ οἱ μετ' αὐτοῦ τηροῦντες τὸν ἴν· ἰδὼν τὼ τὸν
 σεισμόν καὶ τὰ ἱρόμενα ἐφοβήθησαν φόδρ
 λέγοντες· ἀληθὺς θὺ ἰδὼς τὸν οὗτος· οἱ οὐνοῦ
 δαίος· ἵνα μὴ μείνῃ ἐπὶ τοῦ γροῦ τὰ σώματα
 ἐν τῷ σαββάτῳ· ἐπεὶ παρασκαήλῳ· ὡς γὰρ μετὰ
 ἡλίου μερῶν ἐκείνου τοῦ σαββάτου· ἡρώτη
 σάν τὸν πῖλᾶτον· ἵνα καταλάβωσιν αὐτῶν τὰ
 σκέλη· καὶ ἀρθῶσιν· ἤλθοι οὖν οἱ γρατῖώται·
 καὶ τοῦ μεν πρώτου· κατέαξαν τὰ σκέλη· καὶ
 τοῦ ἄλλου τοῦ οὐ σαυρωθέντος αὐτῷ· ἐπὶ δὲ
 τὸν ἴν ἔλθόντες· ὡς ἰδὼν αὐτὸν ἤδη τεθνηκότα·
 οὐ κατέαξαν αὐτοῦ τὰ σκέλη· ἀλλ' οἱ πάντες γρα
 τῖω τῶν λόγων αὐτοῦ τὴν πλῆρην ἐνύξεν· καὶ
 εὐθέως ἐξηλθεν αἷμα καὶ ὕδωρ· καὶ ὁ ἑώρα
 καὶ σμεμαρτύρηκεν· καὶ ἀληθὴν ἦ ἔστιν ἡ
 μαρτυρία αὐτοῦ· καὶ ὁ κῆρος εἶδεν ὅτι ἀληθὴ
 λέγει· ἵνα ὑμεῖς πιστάσσητε· ἐγένετο γὰρ ταύ
 τα· ἵνα ἡ γραφὴ πληρωθῇ· ὅς οἱ οὐ σιωπήσῃ
 σθαι αὐτοῦ· καὶ πάλιν ἑτέρα γραφὴ λέ
 γει· ὅψονται εἰς οὐρανὸν ἐκκέντησαν· ἦσαν
 δὲ ἐκ γυναικῶν πολλὰ ἀπὸ μακρόθεν θεω
 ροῦσαι· αἱ τῶν ἡκολούθησαν τῷ ἰῷ· ἀπὸ
 τῆς γαλιλαίας· ὅτι ἀκοροῖσαι αὐτῷ· ἐν αἷς
 ὡς μαρτίαν ἡ ματθαίω· καὶ μαρτίαν ἡ τοῦ ἰ
 ακώμου· καὶ ἰωσήφ· καὶ ἡ μήρ τῶν ἡγῶν
 ζαβεδάίου· ὅψιας δὲ γενομένης· ἤλθεν
 ἄρτος πλοῖσι τοῦ νομα ἰωσήφ· ὃς καὶ αὐ
 τὸς ἐμαθήτασε τῷ ἰῷ· οὗτος προσελθὼν τ
 πῖλᾳ τῷ ἡτήσατο τὸ σῶμα τοῦ ἰῷ· τότε ὁ

πιλάτος ἐκέλευσεν ἀποδοθῆναι τὸ σῶμα·
καὶ λαβὼν τὸ σῶμα οἱ ᾧ σῆς, ἐνετύλιξεν αὐ-
τὸ σινδόνι καθαρᾷ· καὶ ἐθηκεν αὐτὸ ἐν τῷ
καὶ μὴ αὐτοῦ μνημεῖο, ᾧ ἐλατόμησεν
ἐν τῇ πέτρᾳ· καὶ πρὸς κύλισας λίθου με-
γαλῆς θύρας τοῦ μνημεῖου ἀπηήλθεν· ὡς δὲ
ἐκβ. μαρία ἡ μαγδαληνὴ· καὶ ἡ ἄλλη μαρία
καθήμεναι ἀπέναντί τοῦ τάφου·

τῷ ᾧ ἡ μαρία ἡ μαγδαληνὴ· καὶ ἡ ἄλλη μαρία
καθήμεναι ἀπέναντί τοῦ τάφου·

τῷ ᾧ ἡ μαρία ἡ μαγδαληνὴ· καὶ ἡ ἄλλη μαρία
καθήμεναι ἀπέναντί τοῦ τάφου·

Καὶ σαββάτων τῇ ἐπιφωσκούσῃ εἰς μίαν σαβ-
βάτων, ἦλθεν μαρία ἡ μαγδαληνὴ· καὶ ἡ ἄλλη
μαρία, θεωρήσαι τὸν τάφον· καὶ ἰδοὺ σεις
μὲν εἰδὼς μέγας· ἀγγελοῦ γὰρ κύ καταβάς
ἐξ οὐνοῦ προσελθὼν ἀπεκύλισεν τὸν λίθον ἀ-
πὸ τῆς θύρας, καὶ ἐκάθητο ἐπ' αὐτοῦ·
ὡς δὲ ἵδεν αὐτοῦ, ὡς ἀστραπή· καὶ τὸ ἐν-
δύμα αὐτοῦ, λευκὸν ὡς χιῶν· ἀπὸ δὲ τοῦ
φόβου αὐτοῦ ἐτείθησαν οἱ τῆρου τῶ· καὶ
εἰδὼν τοὺς κενερούς· ἀποκριθεὶς δὲ ὁ ἄγγε-
λος εἶπεν ταῖς γυναιξί· μὴ φοβέσθε ὑμεῖς·
οἶδα γὰρ, ὅτι τὸν ἵμ' τὸν ἐστὼ μένον ζητεῖτε,
οὐκ ἐστὶν ὧδε· ἡ γέρθη γὰρ καθὼς εἶπεν· δά-
τε ἰδὲτε τὸν τόπον ὅπου ἐκείτο ὁ κύ· καὶ
ταχὺ πορεύεσθαι, εἶπατε τοῖς μαθηταῖς
αὐτοῦ, ὅτι ἡ γέρθη ἀπὸ τῶν κενερῶν· καὶ ἰδοὺ
προαΐει ὑμᾶς εἰς τὴν γαλιλαίαν· ἐκβ. αὐτὸν
ὅψατε ἰδοὺ εἶπον ὑμῖν· καὶ ἐξελθοῖσαι

ταχὺ ἀπὸ τοῦ μνημείου μετὰ φόβου καὶ χαρᾶς
 μεθ' αὐτοῦ· ἔδραμον ἀπαγγέλλαι τοῖς μαθη-
 ταῖς αὐτοῦ· ὡς δὲ ἐπορεύοντο ἀπαγγέλλαι τοῖς
 μαθηταῖς αὐτοῦ· καὶ ἰδού· ἰσ' ἀπὴν ἦσαν αὐταῖς
 λέγων· χαίρετε· αἰδὲ προσελθοῦσαι ἐκράτη-
 σαμεν αὐτοῦ τοῖς πόδας, καὶ προσεκύνησαν
 αὐτῷ· τότε λέγει αὐταῖς ὁ ἰσ'· μὴ φοβήσθε· ὑ-
 παῖτε ἀπαγγέλλετε τοῖς ἀδελφοῖς μου, ἵνα
 ἀπέλθωσιν εἰς τὴν γαλιλαίαν, καὶ ἑμε ὄψον-
 ται· πορεύμενων δὲ αὐτῶν· ἰδού τινες τῶν
 κουστωδίας ἐλθόντες εἰς τὴν πόλιν ἀπήγγει-
 λαν τοῖς ἀρχιερεῶσιν ὅτι ἀπαρτατὰ μερόμενα·
 καὶ (σωαθὲν τῷ μετὰ τῶν πρεσβυτέρων· (ὡς
 βούλιον τελευτῶν τῶν ἀρχιερέων· ἵνα καὶ ἔδω-
 καν τοῖς γρατίω τῷ λέγοντες· εἰπατε ὅ-
 τι οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἡμεῖς ἐλθόντες ἐκτε-
 ψαμεν αὐτὸν ἡμεῖς κοίμαμεν· καὶ εἰς αὐτὸν
 κοναθὴ τοῦτο ἐπὶ τοῦ ἡμεῖς μερόμενος· ὑμεῖς περὶ
 σμεναὶ αὐτὸν καὶ ὑμεῖς ἀμερίμνοισι ποιήσω-
 μεν· (ὡς δὲ ἐλθόντες τὰ ἀρχιερέων, ἐποίη-
 σαν ὡς ἐδίδαχθησαν· καὶ δι' ἐφημέριον
 ὁ λόγος οὗτος παραῖτουδαίοις μέχρι τῆς σήμερον·
 οἱ δὲ ἐνδεκα μαθηταὶ ἐπορεύθησαν εἰς τὴν
 γαλιλαίαν, εἰς τὸ ὄρος οὗ ἐτάξατο αὐτοῖς
 ὁ ἰσ'· καὶ ἰδόντες αὐτὸν προσεκύνησαν
 αὐτῷ· οἱ δὲ ἐδίδασκαν· καὶ προσελθὼν
 ὁ ἰσ' ἐλάλησεν αὐτοῖς λέγων· ἐδόθη μοι
 πᾶσαι ἐξουσίαι ἐν οὐρανῷ καὶ ἐπὶ γῆς· πο-
 ρεύσιντες μαθητάσας πάντα τὰ ἔθνη,

λέγει ὁ ἰσ' αὐ-
 τῶν

βαπτίζοντες αὐτοὺς εἰς τὸ ὄνομα τοῦ πατρὸς καὶ
τοῦ υἱοῦ καὶ τοῦ ἁγίου πνεύματος· διδάσκοντες
αὐτοὺς τηρεῖν πάντα ὅσα ἐνετειλάμην
ὑμῖν· καὶ ἰδοὺ ἐγὼ μεθ' ὑμῶν εἰμι· πά-
σας τὰς ἡμέρας· ἕως τῆς συντελείας τοῦ
αἰῶνος ἀμήν· ~~~~~

ἀγγελίαν ἀγαθὰν ἐδόθη ὑμῖν ταῖς 13^{αις} καὶ ἡμαρ

20^{ου}
Α

τῷ καιρῷ ἐκείνῳ· οἱ σύνδεσμοι μαθηταὶ ἐπορεύθη-
ντο· ὁ πᾶς τὸ φῶς· + ἐδόθη ὑμῖν κατὰ μέτρον·

Β

τῷ καιρῷ ἐκείνῳ· διὰ σκοτεινότητος τοῦ σαβ-
βάτου μαρτίαν ἡ μαρτυρίαν· καὶ μαρτίαν ἰσ-
χύου· καὶ σαλῶν· ἡ ὁράσας ἀνθρώπων·
ἵνα ἐλθοῦσαι ἀλέξωσιν τὸν ἥλιον· καὶ λίαν
πρῶτῃ τῇ κίαν σαμβάτων· ἐρχονται ἐπὶ τὸ
μνημεῖον ἀγαπᾶν τοὺς τοῦ ἡλίου· καὶ ἐ-
λεγον πρὸς ἑαυτὰς· τίς ἀποκίλισι ἡμῖν τὸν
λίθον σὺ πλεῖθις τοῦ μνημεῖου· καὶ ἀ-
ναβλέψασαι· θεωροῦσιν ὅτι ἀποκεκίλι-
ται ὁ λίθος· ὡς γὰρ μέγας σφόδρα· καὶ ἐ-
σελθοῦσαι εἰς τὸ μνημεῖον· ἴδον νεανίσκον
καθήμενον ἐν τοῖς δεξιotois περὶ βεβλημέ-
νον σολῶν λακωνῶν· καὶ ἐξεθαμβήθησαν·
ὁ δὲ λέγει αὐταῖς· μὴ σθαμβεῖσθε· ἵν' ἴ-
τετε τὸν μαζαρινὸν τὸν ἐστῶ μένον· ἡ γὰρ
θῆ· οὐκ ἐστὶν ὡς· ἴδε ὅτι πᾶς ὅπου ἐθήκαν
αὐτὸν· ἀλλ' ὑπάγετε εἰπατε τοῖς μαθηταῖς
αὐτοῦ καὶ τῷ πέτρῳ· ὅτι προἰστάμενος εἰς
τὴν γαλιλαίαν· ἐκὼς αὐτὸν ὅψεσθε· καθὼς
εἶπεν ὑμῖν· καὶ ἐξελθοῦσαι ἀπὸ τοῦ μνη-

μείον· εἶχεν δὲ αὐτὰς πρόμοσ καὶ ἑταῖς·
καὶ οὐδενὶ οὐδὲν εἶπον· ἐφοβοῦντο γάρ·

Ἐωθηνόν

κατὰ μαρμόν·

Γ

ὦ καιρῷ ἐκείνῳ· ἀραγε αὐτοῖς πρῶτῃ πρῶτῃ
σαββάτου· ἐφάνη πρῶτον μαρὶ αὐτῇ μάδου
ληνὴ ἀφ' ἧς ἐβελήκει ἐπ' αὐδαμόρια·
ἐκείνη πορὰ θεῖον, ἀπὴν γέλασεν τοῖς μετὰ
τοῦ γενομένου, πενθοῦσι καὶ κλαίοσι· καὶ
καί μοι αἰκούσας, ὅτι ζῇ, καὶ ἐθεάθη ἡ
παῖς, ἡ πίστις· μετὰ δὲ ταῦτα· διὸν
ἐξ αὐτῶν περιπατοῦσιν ἐφανερῶθη ἡ
τέρας μορφῇ· πορὰ γενοῖς ὅς ἄρ' οὐ· καὶ
καί μοι ἀπελθούτες, ἀπὴν γέλασεν τοῖς
λοιποῖς, οὐδὲ ἐκείνοις ἐπίσδασαν· ἡ
σερμὸς δὲ ἀραγε γενοῖς αὐτοῖς τοῖς ἐν
δεῖκα, ἐφανερῶθη· καὶ ὡς κείνοισιν τῶν
ἀπίστων αὐτῶν, καὶ σκληροκαρδῶν,
ὅτι τοῖς θεοσαμείοις αὐτὸν ἐγὼ γερμέ-
νον οὐκ ἐπίσδασαν· καὶ εἶπεν αὐτοῖς·
πορὰ θεῖον τῶ εἰς τὸν κόσμον ἀπαρτα-
κηνύξατε τὸ ἀγέλιον πᾶσι τῇ κτίσει·
ὁπίστευσας, καὶ βαπτισθεὶς, σωθήσεται·
ὁ δὲ ἀπίστευσας, κατὰ κριθήσεται· σημεῖ-
α δὲ τοῖς πίσδασασι, ταῦτα παρ' αὐτοῦ
θήσει· ἐν τῷ ὀνόματί μου, δαιμόνια
ἐκβαλοῦσιν· γλώσσαις λαλήσουσιν καὶ
καὶς, ὅφ' ἂν ἀρδοῦσιν· καὶ θαυμάσιον τῇ
πίσσει, οὐ μὴ αὐτοῖς βλαψῇ· ἐπὶ
ἀρώσει χεῖρας ἐπὶ θήσοισι καὶ καλῶς

ἔξοισιν· ὁ μὲν οὖν κῆς μετὰ τὸ λαλῆσαι αὐ-
τοῖς· ἀνελήφθη εἰς τὸν οὐρανόν· καὶ ἐκεί-
νη σὺν ἐκδεδυμένοι τοῦ οὐθῦ· ἐκείνοι δὲ ἐ-
ξεληθότες· ἐκῆρυξαν πανταχοῦ· τοῦ
κῆς (ὡς ἐργαζομένων· καὶ τὸν λόγον βεβαι-
οῦντος· δι' αὐτῶν ἐπακολουθούτων
σημαίων αὐτῶν· ~ ἔωθον δὲ

Α ἡμεῖς αὐτῶν σαμβατών· κατὰ λουκαῖ-
ὸν θρόνον βαθείας· ἤλθομεν γυναικες ἐπὶ τὸ
μνημα φέροισαι αὐτῇ τοῖ μασάζ αῤῥώμα-
τα καὶ τίμω (ὡς αὐταῖς· ἄβρον δὲ τὸν
λίθον ἀπὸ κυκλίσμενον ἀπὸ τοῦ μνη-
μείου· καὶ εἰσελθοῖσαι οὐχ ἄβρον τὸ σῶ-
μα τοῦ κῆς· καὶ ἐκῆρυξεν ἐν τῷ δια-
πορεῖσθαι αὐτὰς περὶ τοῦτου· καὶ ἰδοὺ
ἄνδρες δύο ἐπέστησαν αὐταῖς ἐναίαν θή-
σιν ἀσραπτοῖσαι· ἐμφόβων δὲ γενο-
μένων αὐτῶν· καὶ κλινουσῶν τὸ πρόσω-
πον εἰς τὴν γῆν· εἶπον πρὸς αὐτὰς· τί
ζητεῖτε τὸν ζόντα μετὰ τῶν νεκρῶν· οὐ
κέστιν ὧδε· ἀλλ' ἡ γέρθη· μνήσθητε ὡς
ἐλάλη ὑμῖν· ἐπὶ ᾧ ἐν τῇ γαλιλαίᾳ·
λέγων· ὅτι δεῖ τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου παρα-
δοθῆναι εἰς χεῖρας ἀνθρώπων ἀμαρτωλῶν·
καὶ στρωθῆναι· καὶ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἀνα-
στῆναι· καὶ ἐμνήσθησαν τῶν ῥημά-
των αὐτοῦ· καὶ ὑποστρέψασαι ἀπὸ
τοῦ μνημείου· ἀπῆγγεῖλαν ταῦτα παρ-
τα τοῖς ἐνδεκα καὶ πᾶσι τοῖς λοιποῖς·

ἡ σαρδὲ ἡ μαγδαληνὴ μαρτί καὶ ἰωάννα·
καὶ μαρτί αἰκώβου· καὶ αἱ λοιπαὶ (ὡς
αὐταῖς· αἱ ἐλθόντες πρὸς τοὺς ἀποστόλους
ταῦτα· καὶ ἐφάρησαν ἐνώπιον αὐτῶν·
ὥστε λήρως τὰ ῥήματα αὐτῶν· καὶ ἡ πίστις
αὐταῖς· ὁ δὲ πᾶς τὸς ἀμασᾶς ἐδραμεν
ἐπὶ τὸ μνημεῖον· καὶ παρακίψας βλέ-
πει τὰ ὀνόματα κείμενα μόνα· καὶ ἀ-
πῆλθεν πρὸς ἑαυτὸν· θαυμάζων τὸ γεγονός· ~

Ἐωθηνὸν ἔ· κατὰ λουκᾶν·

Καὶ ῥῶς ἐκείνῳ· ὅτι πρὸς ἀμασᾶς ἐδρα-
μεν ἐπὶ τὸ μνημεῖον· καὶ παρακίψας βλέ-
πει τὰ ὀνόματα κείμενα μόνα· καὶ ἀπῆλ-
θεν πρὸς ἑαυτὸν· θαυμάζων τὸ γεγονός·
καὶ ἰδοὺ δύο ἐξ αὐτῶν ἡ σαρ πορεύμενοι
ἐναυτῇ τῇ ἡμέρᾳ εἰς κόμην ἀπέχουσαν
σταδίους ἑξήκοντα ἀπὸ ἱλίου, ἡ ὁρμα
ἐμμαοῦ· καὶ αὐτοὶ ἀμύλοις πρὸς ἀμύ-
λοις περὶ πάντων τῶν ῥυθμιζομένων τῶν
τῶν· καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ὁμιλῇ αὐτοῖς
καὶ σὺν ἑστέ· καὶ αὐτὸς ὁ ἴσ' ἐγγίσας σὺ-
νεπορεύετο αὐτοῖς· ὁ δὲ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν
ἐκρατοῦν το, τοῦ μὴ ἐπιγνῶναι αὐτὸν·
εἰ πενδὲ πρὸς αὐτοῖς· τίνες οἱ λόχοι οὗ-
τοι, αἷσ' ἀντίβαιμα πρὸς ἀμύλοις, περὶ
πατοῦντες, καὶ ἐστὶν ἑθνωπὸι· ἀπο-
κριθεὶς δὲ ὁ εἷς, ὁ ὁρμα κλεόπας, εἰ-
πὸν πρὸς αὐτὸν· σὺ μόνος παροῖς ἡς
ἐν ἱλίου· καὶ οὐκ ἐγνώσταις ἡμέρας
ἐναυτῇ·

ἐν ταῖς ἡμέραις ταύταις· καὶ εἶπεν αὐ-
τοῖς· ποῖα· οἱ δὲ ᾗ πορεύοντο· τὰ περὶ τοῦ
μαζωραίου· ὃς ἐγγύς ἐστι ἀπὸ ἀφῆρ προφήτης·
δύνατο δὲ ἐν ἐργῷ καὶ λόγῳ· ἐν ἀρτίῳ τοῦ
θεοῦ καὶ πάντος τοῦ λαοῦ· ὅπως τε παρέ-
δωκεν αὐτὸν οἱ ἄρχοντες ἡμῶν εἰς κρίμα
θανάτου, καὶ ἐξήρωσαν αὐτὸν· ἡμεῖς δὲ
ἐλπίζομεν ὅτι αὐτὸς ἐστὶν ὁ μέλλων λυ-
τρωθῆναι τὸν Ἰσραὴλ· ἀλλὰ ἔβλεπον πάντες τοῦ
πολλοῦ τρίτην ταύτην ἡμέραν, ἀΐδοντες, ὡς
ἀφῆρ ταῦτα ἐγγύς· ἀλλὰ καὶ γινώ-
σκοντες ὅτι ἐξ ἡμῶν, ἐξ ἐσθλῶν ἡμῶν, γε-
νόμεναι ὀρθρίαι ἐπὶ τὸ μνημεῖον, καὶ μή
ἀνδροῖσαι τὸ σῶμα αὐτοῦ, ἡλθον λέγοισαι,
καὶ ὁ πᾶσι ἀνὰ γέλων ἐσπασέναι, οἱ λέ-
γοισιν αὐτὸν ζῶν· καὶ ἀπῆλθον τινὲς τῶν
ζῶν ἡμῶν ἐπὶ τὸ μνημεῖον, καὶ ἀνδροῦ-
τως, καθὼς καὶ αἰγινῶντες εἶπον, αὐ-
τὸν δὲ οὐκ ἔβλεπον· καὶ αὐτὸς εἶπεν πρὸς
αὐτοὺς· ὡς ἀνόητοι καὶ βραδείας τῆς καρ-
δίας· τοῦ πισδεῖν ἐπὶ πᾶσιν οἷς ἐ-
λάλησαμ ἐν προφῆται· οὐχὶ ταῦτα
ἐνδεῖ παθεῖν τὸν χυλόν· καὶ ἔσελθῆναι εἰς
τὴν δόξαν αὐτοῦ· καὶ ἀρξάμενος
ἀπὸ μωυσέως καὶ ἀπὸ πάντων τῶν
προφητῶν· διὸ καὶ μέλει μοι αὐτοῖς ἐν
πάσαις ταῖς γραφαῖς τὰ περὶ ἑαυτοῦ·
καὶ ἡγήσαντες εἰς τὴν κόμην οὐκ ἐπόρευον-
το· καὶ αὐτὸς προσεποιεῖτο πορευέ-
σθαι

ρω ποράδωθαι + καὶ παρεβιάσατο λόγον
 τε. μεῖνον μεθ' ἡμῶν, ὅτι πρόστασέρας
 ἐστὶ, καὶ κέκληκεν ἡ ἡμέρα + καὶ εἰσηλ
 θον τοῦ μέγα (ὡς αὐτοῖς) + καὶ ἐγένετο
 ἐν τῷ κατὰ κλιθῆναι αὐτὸν μετ' αὐτῶν.
 λαβὼν τὸν ἄρτον ἀλόγησεν. καὶ κλάσ
 ἐπεδίδου αὐτοῖς + αὐτῶν δὲ δὴ ἥμοι
 χθισανοὶ ὁφθαλμοί, καὶ ἐπέγνωσαν
 αὐτὸν. καὶ αὐτὸς ἀφαντοσεῖν ἐγένετο ἀ
 παύτων + καὶ εἶπον πρὸς ἀγγέλους.
 οὐχὶ ἡ καρδία ἡμῶν καιομένη ἦν ἐν ἐ
 μῖν. ὡς ἐλάλει ἡμῖν ἐν τῇ ὁδῷ. καὶ ὡς
 δὴ ἥμοις ἐν ἡμῖν τὰς γραφὰς + καὶ ἄρα
 σάμ τε αὐτῇ τῇ ὥρᾳ ὑπέστρεψαν εἰς ἱε
 ρουσαλήμ + καὶ ἔβρον (ὡς ἡ θροισ μένοισ
 τοῖς ἐν δέκα, καὶ τοῖς (ὡς αὐτοῖς) λέγοντας,
 ὅτι ἡ γέρθη ὅς ἐστι ὄντως καὶ ὠφθησὶ μῶν +
 καὶ αὐτοὶ ἐξηγοῦντο τὰ ἐν τῇ ὁδῷ. καὶ
 ὡς ἐβρώθη αὐτοῖς ἐν τῇ κλάσει τοῦ ἄρτου.

Ἐωθηνόρ

5

κατὰ λουκᾶν:

5^{ον}

καὶ ῥῶς ἐκείνῳ. ἄρα σὰς οἷος ἐμε
 κρῶν ἐστὶ ἐν μέσῳ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ
 καὶ λέγει αὐτοῖς, ἄρῳ ἡ ὑμῖν + πτοῦθ ἐν
 τῷ δέκα καὶ ἐμφοβοιγερούμενοι, ἐδδκου
 πρᾶ διεωρεῖν + καὶ εἶπεν αὐτοῖς. τί ἐ
 παραγμένοισι. καὶ διὰ πιδόχα λογίς μοι
 ἀραβαίνοισιν ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν +
 ἰδοὺ ἐπὰς χεῖρας μου καὶ τοῖς πόδας ὅ
 τι αὐτὸς ἐγώ εἰμι. φηλαφήσατέ με

καὶ ἴδτε ὅτι πᾶσα ἰσχυρὰ καὶ ὁ οὐρανὸς ἔχει
καθὼς ἐκείθεν ὁρᾷτε ἔχοντα· καὶ τοῦ τοῦ
πῶν ἐπέδωκεν αὐτοῖς τὰς χεῖρας καὶ τοῦ
πόδας· ἐπὶ δὲ ἀποτίστοι των αὐτῶν ἀποτίστο
χαρὰς καὶ θαυμασίων των· εἶπεν αὐτοῖς·
ἔχτε τὴν ἐξουσίαν ἐνθάδε· οἱ δὲ ἐπέδω-
κεν αὐτῶν· ἰχθύος ὁ πτοῦ μέρος· καὶ ἀπὸ
μελισσίου κυρίου· καὶ λαβὼν ἐν ὠπιομαυ-
τῶν ἐφάσεν· εἶπεν δὲ αὐτοῖς· οὗτοι οἱ
λόγοι οὗτοι ἐλάλησα πρὸς ὑμᾶς ἐπὶ ὧν ἔχ-
ετε· ὅτι διὰ πληρωθῆναι πάντα τὰ γε-
γραμμένα ἐν τῷ βιβλίῳ καὶ πρὸς
φήταις καὶ φαλμοῖς περὶ ἐμοῦ· τότε
δὴ ἡμεῖς ἐν αὐτῶν τὸν νόμον τοῦ βιβλίου
τὰς γραφὰς· καὶ εἶπεν αὐτοῖς· ὅτι
οὕτως γέγραπται· καὶ οὕτως ἐδὴ παθεῖν
τὸν χῆν· καὶ ἀναστῆναι ἐκ νεκρῶν τῇ τρί-
τῃ ἡμέρᾳ· καὶ κηρύχθῃναι ἐπὶ τὸ ὄνο-
μα τοῦ αὐτοῦ ἐν παντί· καὶ ἀφωτῖναι
μαρτυρίων εἰς πάντα ἔθνη· ἀρχάμε-
νον ἀπὸ ἱερουσαλὴμ· ὑμεῖς δὲ ἐστὲ
πῦρ τοῦτων· καὶ ἰδοὺ ἐγὼ ἀποστέλλω
τὴν ἐπαγγελίαν τοῦ πρὸς μου ἐφ' ὑμᾶς·
ὑμεῖς δὲ καθύστε ἐν τῇ πόλει ἱερουσαλὴμ· ἕως
οὐ ἐνδύσῃτε δύναμιν ἐξ ὕψους· ἐξ ἡ-
γετὸς αὐτοῦ ἐξω ἕως εἰς βηθανίαν· καὶ
ἐπάρας τὰς χεῖρας αὐτοῦ· εὐλόγησεν
αὐτοῖς· καὶ ἐχρῆτο ἐν τῷ ὀνόματι αὐ-
τοῦ· δι' ἧς ἀπαύτων καὶ ἀνεφέ-

ρθε εἰς τὸν οὐν + καὶ αὐτοὶ προσκυνή-
 σαυτες αὐτὸν ὑπέστρεψαν εἰς ἰλνῆ.
 μετὰ χαρὰς μεγάλης + καὶ ἡσαν δῆτα παρ-
 τὸς ἐν τῷ ἱερῷ· αἰρούντες καὶ ἐλογού-
 ντες τὸν θῆ' ἀμὲν· ~ ἐωθον' 3 καὶ ἰωάννην.

2

Καὶ ἡ μία τῶν σαυβάτων μαρίαν ἡ μαγδα-
 ληνῇ· ἔρχεται πρῶτ' σκοτί' ἀσά' τῶν οὐν εἰς
 τὸ μνημεῖον + καὶ βλέπει τὸν λίθον ὑρ-
 μένον ἐκ τοῦ μνημεῖου + τρέχον
 καὶ ἔρχεται πρὸς σίμων πέτρον· καὶ
 πρὸς τὸν ἄλλον μαθητὴν οὗ ἑφίλει οἱ οὐ-
 καὶ λέγει αὐτοῖς· Ἦσαν τὸν κῆ' ἐκ τοῦ μνη-
 μεῖου καὶ οὐ κοίταμεν πού' ἐθηκεν αὐ-
 τὸν + ἔξῃλθε οὖν ὁ πέτρος καὶ ὁ ἄλλος
 μαθητὴς, καὶ ἦρχοντο εἰς τὸ μνημεῖ-
 ον + ἔτρεχον δὲ οἱ δύο οὗτοι· καὶ ὁ ἄλλος
 μαθητὴς προέδραμεν πάλιν τοῦ πέτρου
 καὶ ἦλθε πρῶτος εἰς τὸ μνημεῖον + καὶ
 παρακύψας βλέπει κείμενα τὰ ὀθόρια·
 οὐ μὲντοι εἰσῆλθεν + ἔρχεται οὖν σίμων
 πέτρος ἀκολουθῶν αὐτῷ, καὶ εἰσῆλθεν
 εἰς τὸ μνημεῖον + καὶ θεωρεῖ τὰ ὀθό-
 ρια κείμενα· καὶ τοσοῦτον ὁρῶν ἐ-
 πίτησεν κεφαλὴ αὐτοῦ· οὐ μετὰ τῶν ὀθο-
 ρίων κείμενον· ἀλλὰ χωρὶς, ἐν τετύλιγ-
 μένων εἰς ἑρπτόπον + τότε οὖν εἰσῆλθε
 καὶ ὁ ἄλλος μαθητὴς ὁ ἑλθὼν πρῶτος εἰς
 τὸ μνημεῖον καὶ εἶδε καὶ ἐπίστασεν +
 οὐδέ πω γὰρ ἤδει σαυτὴν γραφὴν· ὅτι δεῖ

αὐτὸν σὺν κρῶν ἀναστῆναι· ἀπῆλθον οὖν
παλὶν πρὸς ἐαυτοὺς οἱ μαθηταί· ~

ἔωθεν ἡ. κ. ι. ιω ἀνρλω :

Καὶ ῥῶ ἐκδῶν· μαρτίαν φησὶ πρὸς τὸ
μνημαῖον κλῆσαι ἐξω· ὡς οὖν ἔκλει
ε· παρέκλινεν εἰς τὸ μνημαῖον· καὶ θε
ωρεῖ δύο ἀγγέλους ἐν λακοῖς· καθέξοντε
μοις· εἶναι πρὸς τὴν ἐφαλήν· καὶ ἐναπύ
τοις ποσὶν· ὅπου ἔκειτο τὸ σῶμα τοῦ υἱοῦ·
καὶ λέγουσιν αὐτῇ ἐκδῶν· γύναι· τί χλαί
εις· λέγει αὐτοῖς· ὅτι ἤραμ τὸν κῆμον·
καὶ οὐκ οἶδα ποῦ ἐθῆκα αὐτὸν· καὶ
ταῦτα εἰποῖσα ἐγράφη εἰς τὰ ὀπίσ
καὶ θεωρεῖ τὸν τῆν ἐσώτα· καὶ οὐκ ἴδει ὅ
τι ἴσ' ἔστι· λέγει αὐτῇ ὁ ἴσ'· γύναι· τί χλαί
πύλαι· ἐκείνη δὲ κοῖσαι· ὅτι οὐκ ἔπει
ρος ἔστι· λέγει αὐτῇ· καὶ εἰς οὐ ἐβάστασας
αὐτὸν· ἡπόμεν ποῦ ἐθῆκας αὐτὸν· καὶ
γὼ αὐτὸν ἀρῶ· λέγει αὐτῇ ὁ ἴσ'· μα
ρίαν· γραφεῖται ἐκείνη· λέγει αὐτῇ· ραβ
βουσί· ὁ λέγει αὐτῇ δὲ δάσκαλε· λέγει αὐτῇ ὁ
ἴσ'· μή μου ἀπτοῦ· οὐπω γὰρ ἀρᾶ βέβη
κα πρὸς τὸν πρῶτον· πορεύου δὲ πρὸς
τοὺς ἀδελφοὺς μου καὶ εἰπὲς αὐτοῖς· ἀ
νακαίνω πρὸς τὸν πρῶτον καὶ πρῶ
τον· καὶ θῆναι μου καὶ θῆναι μου· ἔρ
χεται μαρτίαν ἡ μαρτυρία ἡ ἀπαγγελου
σαι τοῖς μαθηταῖς ὅτι ἐώρακε τὸν
κῆρ· καὶ ταῦτα εἶπεν αὐτῇ· ~

θ

Ο υσιος οφίας τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ τῇ μετὰ τῶν
 σαυμάτων· καὶ τῶν θυρῶν κεκλεισμένων
 ὁ ποῦ ἦσαν θύματα (ἡσυχασμένοι) δὲ αὐτῶν
 φόβον τῶν ἰουδαίων· ἦλθεν οὖν καὶ ἔ-
 ση ὁ τὸ μέτρον· καὶ λέγει αὐτοῖς· ἄρ' ἴνῃ
 ἡμῖν· καὶ τοῦτο εἰπὼν ἐδύξεν αὐτοῖς
 τὰς χεῖρας καὶ τὴν πλάρην αὐτοῦ· ἐ-
 χάρησαν οὖν οἱ μαθηταὶ ἰδόντες τὸν ἥν·
 εἰσὶν αὐτοῖς οἱ σὺ πάλιν· εἰρήνη ἡμῖν·
 καθὼς ἀπέσταλκέ με ὁ πατήρ· καὶ γὰρ πέμπω
 ἡμᾶς· καὶ τοῦτο εἰπὼν ἐνεφύσησε
 καὶ λέγει αὐτοῖς· λάβετε πρῶτον· ἀν-
 τὴν αὐτῶν φῆτε τὰς ἀμαρτίας· ἀφίενται
 αὐτοῖς· ἀντὶ τῶν κρατῶν τε κεκραπῆνται·
 θῶμας δὲ εἰς αὐτῶν δώδεκα ὁ λεγομένος
 δυδύμος οὐκ ἦν μετ' αὐτῶν, ὅτε ἦλθεν οὖν·
 ἔλεγον οὖν αὐτῶν οἱ ἄλλοι μαθηταί· ἔω-
 ράκαμεν τὸν ἥν· ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· ἐ-
 ἀρμήϊδω ἐν ταῖς χερσὶν αὐτοῦ τὸν τύπον
 τῶν ἥλων· καὶ καὶ τὸν δάκτυλον μου
 εἰς τὸν τύπον τῶν ἥλων· καὶ καὶ τὴν
 χεῖράν μου εἰς τὴν πλάρην αὐτοῦ οὐ-
 κὴ πίσαλ' ὧ· καὶ μεθ' ἡμέρας ὁ
 κτὼ παλιν ἦσαν ἔσω οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ·
 καὶ θῶμας μετ' αὐτῶν· ἐρχεται οὖν τῶν
 θυρῶν κεκλεισμένων· καὶ ἔστη εἰς τὸ
 μέτρον καὶ λέγει αὐτοῖς· ἄρ' ἴνῃ ἡμῖν·
 εἴτα λέγει πᾶσι θῶμα· φέρε τὸν δάκτυ-
 λόν σου ὧδε, καὶ ἴδε τὰς χεῖρας μου·

καὶ φέρε τὴν χεῖρα σου καὶ βάλε εἰς τὴν
πλαγάν μου· καὶ μὴ γίνου ἀπίστος· ἀ-
λλὰ πίστεος· καὶ ἀπεκρίθη θῶμας καὶ ἦ
πεν αὐτῷ· ὁ κῆρ μου καὶ ὁ θῆς μου· λέ-
γει αὐτῷ ὁ ἰσ· ὅτι εἶδρα καὶ με πεπί-
στα καὶ· μακάριοι οἱ μὴ ἰδόντες καὶ πί-
στασάντες· πολλὰ μέν οὖν καὶ ἄλλα
σημεῖα ἐποίησεν ὁ ἰσ ἐνώπιον τῶν
μαθητῶν αὐτοῦ· αὐτοὶ κῆς ἡ γραμμὴ αὐ-
τῷ βιβλίῳ τοῦτα· πάντα δὲ γέγραπται·
ἵνα πιστάσῃτε ὅτι ἰσ ἐστὶν ὁ χῆς ὁ υἱὸς τοῦ
θῷ· καὶ ἵνα πιστάσῃτε, ζωὴν ἔχετε ἐν τῷ
ὀνόματι αὐτοῦ· ἕως τῆς κατασκευῆς
αὐτοῦ· καὶ ἔκ τῃ ἐφάρεωσεν αὐτὸν
ὁ ἰσ τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ ἐγερθεῖς ἐκ
μεκρῶν· ἐπὶ τῇ θαλάσῃ τῇ πύβερ-
αδδ· ἐφάρεωσεν δὲ οὕτως· ἡ σαρὶ
μοῦ σίμων πέτρος· καὶ θῶμας ὁ λεγόμε-
νος δίδυμος· καὶ μαθᾶν ἡλὸς ἀπὸ κα-
ρὰ τῇ γαλιλαίας· καὶ οἱ τοῦ ζεβεδαί-
ου· καὶ ἄλλοι σὺν τῶν μαθητῶν αὐτοῦ δύο·
λέγει αὐτοῖς σίμων πέτρος· ὑπάγω ἀλ-
λῃ· λέγουσιν αὐτῷ· ἐρχόμεθα καὶ
ἡμεῖς σὺν σοί· ἐξῆλθον· καὶ ἐνέβησαν
εἰς τὸ πλεῖον αὐθῖς· καὶ ἐνεκέρηθη
κύματι ἐπὶ ἅσας οὐδὲν· πρώτη αὖ δὲ
ἡ δειλὴ νομένης ἐστὶν ὁ ἰσ εἰς τὸν αἰθῆ-
ρα· οὐ μέντοι ἡ δεισαροὶ μαθηταὶ ὅτι
ἰσ ἐστὶ· λέγει αὐτοῖς ὁ ἰσ· παιδία,

μή τι πρόσφατον ἔχτε· ἀπεκρίθησαν
αὐτῷ· οὐ· ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· βάλτε δὲ
τὰ δεξιὰ μέρη τοῦ πλοίου τοῦ δικτύου·
καὶ ἄρῃσθε· ἐβαλομένων καὶ οὐκέτι αὐ-
τὸ ἐλκίσαι ἴσχιον ἀπὸ τοῦ πληθούτων
ἰχθύων· λέγει οὖν ὁ μαθητὴς ἐκείνος·
ὁ ἡγεῖται οὗτος τῷ πέντῳ· οὐκ εἶναι· σίμων
οὖν πέντε προσ αὐτοῖς ὅτι οὐκ εἴς τι· τὸν
πενδύτῳ δὲ ἐξώσατο· ὡς γὰρ γυμνός· καὶ
εἵσχετο εἰς τὴν θάλασσαν· οἱ δὲ
ἄλλοι μαθηταὶ τῷ πλοιαρίῳ ἦλθον· οὐ-
γάρ ἦσαν μακρὰ ἀπὸ τῆς γῆς· ἄλλως ἂν
ποπλήων δὲ ἑκατοσίων, σύροντες τὰ δι-
κτυα τῶν ἰχθύων· ὡς οὖν ἀπέβησαν
εἰς τὴν γῆν, βλέποντες ἀνθρακι ἄρκτη
μενῆν, καὶ ὄψατον ἐπὶ κεῖμενον
καὶ ἄρτον· λέγει αὐτοῖς ὁ ἴσ· ἐμὲ
κατε ἀπὸ τῶν ὄψατων ὧν ἐπείρασά-
μεν· ἀρέβησιν μὲν πέτρος καὶ ἔλκυσ-
σε τὸ δικτύον ἐπὶ τῆς γῆς μετὰ ἰχθύ-
ων μεθ' αὐτῶν· ἐκατόν πεντήκοντα τρι-
ῶν· καὶ τὸ σούπον οὐ τῶν οὐκ ἐσχιάθη, τὸ
δικτύον· λέγει αὐτοῖς ὁ ἴσ· δάτε ἄρ-
τήσατε· οὐδεὶς δὲ ἐτόλμα τῶν μαθη-
τῶν ἐξετάσαι αὐτὸν σὺ πῶς εἶ· εἰ-
δότες, ὅτι οὐκ εἴς τι· ἔρχεται οὖν ὁ
ἴσ· καὶ λαμβάνει τὸν ἄρτον καὶ δι-
δωσὶν αὐτοῖς· καὶ τὸ ὄψατον ὁμοίως·
τοῦτο ἦδη τρίτον ἐφανερώθη ὁ ἴσ·

τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ. ἔξῃθεν ἐκ κερῶν·

ἔωθεν ἱα· κατὰ ἰωαννῶν·

καὶ ῥω ἐκείνῳ· ἐφαρέρωσεν ἑαυτὸν
οἷς τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ ἐξῃθεν ἐκ κερῶν·
καὶ λέγει τῷ σίμωνι πέτρῳ· σίμων
ἰωάννα ἀγαπάς με· πλείον τοῦ τῶν· λέ-
γει αὐτῷ· ῥαὶ κέ· σὺ οἶδας, ὅτι φιλῶ σε·
λέγει αὐτῷ· βόσκε τὰ ἀρρῖά μου· λέ-
γει αὐτῷ πάλιν ἄλλοτερον· σίμων ἰωάννα
ἀγαπάς με· λέγει αὐτῷ· ῥαὶ κέ· σὺ οἶ-
δας ὅτι φιλῶ σε· λέγει αὐτῷ· ποίμει
μετὰ πρόβατά μου· λέγει αὐτῷ τὸ
τρίτον· σίμων ἰωάννα φιλεῖς με· ἐλύ-
πηθον οἱ πέτρος ὅτι εἶπεν αὐτῷ τὸ τρί-
τον φιλεῖς με· καὶ εἶπεν αὐτῷ· κέ·
σὺ παρτα οἶδας σὺ γινώσκεις ὅτι φι-
λῶ σε· λέγει αὐτῷ οἷς· βόσκε τὰ πρό-
βατά μου· ἀμὲν ἀμὲν λέγω σοι·
ὅτε ὡς μεσσηνίας ἐξώμηνες σὲ αὐτόν·
καὶ περιεπάτεις ὅπου ἠθέλω· ὅ-
ταν δὲ γένησθαι· σὺ τενεῖς τὰς χεῖ-
ρας σου· καὶ ἄλλος σε ζώσκει· καὶ οἶσκει
ὅπου οὐ θέλῃς· τοῦτο δὲ εἶπεν· ση-
μαίμων πίω θανάτῳ δοξάσῃ τὸν θῆ·
καὶ τοῦτο εἰπὼν λέγει αὐτῷ ἀκολουθή-
σω· ἐπίστροφαις δὲ οἱ πέτρος· βλέ-
πει τὸν μαθητὴν· ὃν ἡ γὰρ οἷς ἀκο-
λουθοῦνται· ὅς καὶ ἀνέπνευσεν ἐν τῷ
δεῖπνῳ ἐπὶ τὸ σῆθος αὐτοῦ καὶ ἔφη·

ἔλεγον· ἰδοὺ ἡλία· φωνή· δραμὼν δὲ εἰς ἡ-
γεμίσατο ἀπὸ ἡγοῦ ὅξιοις περιθῆτε καλὰ μὲν
ἐπὶ τὴν αὐτὸν· λέγων· ἀφετε ἰδὼμεν εἰ
ἐρχεται ἡλία· καθελεν αὐτὸν· ὁ δὲ ἰὸς ἁ-
φείδω φωνὴν μεγάλην· ἐξέπρασεν· καὶ
τὸ καταπέτασμα τοῦ ναοῦ ἐσχίσθη εἰς
δύο· ἀπὸ ἀναθῆναι ἕως κατω· ἰδὼν
δὲ ὁ κεντηρίων ὁ παραστειμένος ἐξεναντί-
ας αὐτοῦ· ὁ πούτωσ υἱάξας ἐξέπρασεν·
εἶπεν· ἀληθῶς ὁ ἄνθρωπος οὗτος ἰσοῦ θυῖναι·
ἴσαρ δὲ καὶ γυναῖκα ἀπὸ μακρόθεν θεωρῶν·
ἐναῖς τῶ μαρτίαν ἡ μαρτυρία· καὶ μαρτία
ἡ τοῦ ἱερέως τοῦ μικροῦ· καὶ ἰωσήφ·
καὶ σαλῶμην· αἱ καὶ ὅτε ἐν τῇ γαλιλαίᾳ
ἐκτολόνθων αὐτῶ· καὶ δὴ κόνου αὐτῶ·
καὶ ἄλλαι πολλαὶ αἰσιν ἀναμύσαι αὐτῶ εἰς
ἱεροσόλυμα· ~ ἔπειτα ὁ θεὸς ἦν· λόνκαρ.

Πῶ καιρῶ ἐκείνῳ· οἱ στρατιῶται ὅτε ἐστῶσαν
τοῦ ἱεροῦ ἔλαβον τὰ ἱματῖα αὐτοῦ· καὶ ἐ-
ποίησαν τέσσαρα μέρη· ἑκάστην στρα-
τῶν· ἑξῆς· καὶ τὸ χιτῶνα· τῶ δὲ ὀχιτῶ-
ν ἄραφος ἐκ τῶν ἀνθρώπων ὑφαντοῦ δὴ ὁ
λου· εἶπον οὖν πρὸς ἀλλήλους· μὴ σχίσω-
μεν αὐτὸν· ἀλλὰ λάχομεν περὶ αὐτοῦ
τίμωσ· ἔσται· ἵνα ἡ γραφὴ πληρωθῇ· ἡ
λέγουσα· ὅτι ἐμερίσαντο τὰ ἱματῖα
μου ἐαυτοῖς· καὶ ἐπὶ τὸν ἱματῖς μου
μου ἐβαλον κλήρον· οἱ μὲν οὖν στρα-
τιῶται ταῦτα ἐποίησαν· ~ ^{λέγει} εἰς ἡμεῖς.



Ζηναξάριον (ωθω αψ' ων ιβ μηνων τα εα
 πλωσε πτε' ε' ημε' ληημε' ε' εφ' ιβ μηνων εφ' ιβ
 α ηρ' τω ιρδμητ' ιτοι του νεου ε' τοι· και μην του
 πρ' ημων σιμε' του σιλι του η' α' μαρδρι του·
 τω και ρω' κ' ηρω· ηλθεν ο ισ' θ' μαζαρετ· ζη' τη ε' της α' ε' / πολου
 η του ε' π' ο' υς παντα μο' παρεδω' / ζη' τη ε' της ε' / τ' ματ'
 β του α' γιου λ' ε' μαμαρτος· και τ' / ιω του η' ε' α'
 και παυλου του νεου· κατ' α' ματ' θ' α'

Ε' ι' πεν ο' υς τοις ε' αυτου μαθηταις· υμωσ' ε'
 τε το φωσ του κοσμου· ουδυνεται πο
 λισ κρυβηται ε' πανω ο' ροισ κ' ημε' εν
 λουδε και οισι λυχρον· και τιθε' ασιν αυτον
 υπο τον νομον· αλλ' επι τω λυχρι αυ
 και λαμπη πασι τοις εν τη οικια· ου
 πως λαμψατω το φωσ υμων ε' με προσ
 θεν των ανων· ο' πως ιδωσιν υμων τ'
 καλα ε' ργα· και δεξασωσι τον πρω υ
 μων τον εν τοις οικιοις· μη νομησον
 τε ο' τι ηλθον καταλυσαι τον νομον υ'
 τοις προφητας· ουκ ηλθον καταλυ
 σαι τον νομον· αλλα πληρωσαι· αμην
 γαρ λεγω υμιν· ε' ως αν παρελθη ο
 οικωος και η' η· ιωτα εν η' μια κεραια
 ουκ η παρελθη απο του νομου· ε' ως αν
 παντα γερηται· ο' ε' αν οικωλυσει με
 αρτων εν τολων τουτων των ε' λαχισων
 και ο' δ' α' ξει ουτως τοις αν' σω· ε' λαχισος

κληθήσεται ἐν τῇ βασιλείᾳ τῶν οὐρανῶν·
οὐδ' αὖ ποιήσῃ καὶ δὴ δάξει· οὕτως με-
τὰς κληθήσεται ἐν τῇ βασιλείᾳ τῶν οὐρανῶν·
τοῦ ἁγίου ῥοῦ ἀνδρόμου· ἐπὶ οὗτο' μικρομύθας·
Ἰπενόης· ἐγὼ εἰμὶ κατὰ τὸν ἀνδρῶνα·
ἡ θύρα· ὅς ἐμοῦ ἐάν τις εἰσελθὴ σωθήσεται
καὶ εἰσελεύσεται· καὶ ἐξελεύσεται·
καὶ νομὴν ἀρῆσει· οὐκ ἐπὶ τῆς οὐκ ἐρ-
χεται· ἡ μὴ ἵνα κλέψῃ καὶ θύσῃ καὶ ἀπο-
λῶσιν· ἐγὼ ἦλθον ἵνα ζωὴν ἔχωσιν·
καὶ περισσὸν ἔχωσιν· ἐγὼ εἰμὶ ὁ ποι-
μὴν ὁ καλῶς· ὁ ποιμὴν ὁ καλῶς τὴν ψυ-
χὴν αὐτοῦ τίθεισιν ὑπὲρ τῶν προβάτων·
ὁ μὴ αὖ τὸς δὲ καὶ οὐκ ὡς ποιμὴν· οὐδὲ
κεισὶ τὰ πρόβατα ἰδὼν· θεωρῶ τὸν λύ-
κον ἐρχόμενον καὶ ἀφίησιν τὰ πρόβα-
τα καὶ φάγει· καὶ ὁ λύκος ἀρπάξει
αὐτὰ· καὶ σκορπίζει τὰ πρόβατα·
ὁ δὲ μὴ αὖ τὸς φάγει· ὁ πῆμα τὸς φάγει·
καὶ οὐ μέλει αὐτῷ περὶ τῶν προβάτων·
ἐγὼ ἡ μὴ ὁ ποιμὴν ὁ καλῶς· καὶ γινώ-
σκω τὰ ἐμὰ· καὶ γινώσκωμαι ὑπὸ τῶν
ἐμῶν· καθὼς γινώσκω καὶ ὁ πῆρ· καθὼς
γινώσκω τὸν πρῶτον· καὶ τὴν ψυχὴν μου
τίθειμι ὑπὲρ τῶν προβάτων· καὶ ἄ-
λλα πρόβατα ἔχω ἃ οὐκ ἐστὶν ἐν τῇ
αὐτῇ ταύτῃ· καὶ κείνα με δεῖ ἀγα-
γεῖν· καὶ τῆς φωνῆς μου ἀκοῖσιν· καὶ
γενήσονται μία ποίμνη εἰς ποιμὴν·

μου ἐπὶ τῷ θῷ τῷ στίμῳ· ὅτι ἐπέβλε-
ψεν ἐπὶ τῇ ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ.
ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοὶ σὺ με πάσαι
αἰνεαὶ· ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλῆα ὁ δὲ
νατὸς καὶ ἁγίον τὸ ὄνομα αὐτοῦ· ἔμεκην
δὲ μαρίαμ, ὡς αὐτὴ ὡσεὶ μίαν σ. τρεῖς, καὶ ὁ
πῆρεψεν εἰς τὸν οἶκον αὐτῆς· ἔτλητο γὰρ

Καὶ ῥῶ ἐκ γένου· εἰσῆλθεν γὰρ καὶ Λουκᾶς
οἷος εἰς κώμην τινὰ· γυνὴ δὲ τις ὄνομα πῆ-
μαρθα ὑπεδέξατο αὐτὸν εἰς τὸν οἶκον αὐ-
τῆς· καὶ τῇδε τῷ ἀδελφῇ καλουμένῃ μα-
ρία· ἡ καὶ παρακαθήσασα παρὰ τοῖς πό-
δας τοῦ Ἰησοῦ ἠκούσθη τὸν λόγον αὐτοῦ· ἡ δὲ μαρθα
περὶ τῶν αὐτῶν περὶ πολλῶν ὁμιλίασεν· ἐπὶ
ταύταις δὲ εἶπεν· καὶ οὐ μέλει σοι ὅτι ἡ ἀ-
δελφὴ μου, μόνη με κατέλιπε ὁμιλοῦν.
Εἰπέ οὖν αὐτῇ Ἰησοῦς· ὡς ἀρτίλαβεται·
ἀποκριθεὶς δὲ εἶπεν αὐτῇ ὁ ἰσ· μαρθα
μαρθα μεριμνάς καὶ τὴν βάζει περὶ πο-
λλὰ· ἐνός δὲ ἐστὶ χρεία· μαρία δὲ τὴν ἀγα-
θὴν μερίδα ἐξελέξατο, ἣ τις οὐκ ἀφε-
ρεθήσεται ἀπ' αὐτῆς· ἐγένετο δὲ ἐν τῷ λέ-
γειν αὐτὸν ταῦτα· ἐπαρασάπισ γυνὴ φω-
μὴν σὺ τοῦ ὄχλου εἶπεν αὐτῇ· μακα-
ρία ἡ κοιλία ἡ βασάσασάσε, καὶ μαρτο
οἷος ἐθήλασας· αὐτὸς δὲ εἶπεν· με-
νοῦν γε· μακάριοι οἱ αἰοῦσιν τῷ τῷ λόγον
τοῦ θῷ καὶ φυλάσσον τὸ αὐτὸν·

Θ πρῶτα τῆς δὲ καὶ ἰωάννης καὶ ἄλλοι· ἡ σὺ / τῆς τοῦ λου

Τ πωρὰ πῆρε μηροδῶρ· μητροδῶρ καὶ μηφοδῶρ αἰ·
 ζη' σα' / ιζ' τοῦ μαθθα'.

ια πησὸς ἡμῶν θεοδῶρ αἰ· ζη' οὐ πῶν η'.

ιβ πωρὰ πῆρε μαθ' αὐτονομ' ἡκουγ' τοῦ· ζη' τῆς τῆς β' εἰ / τοῦ λου.

ιγ πωρὰ πῆρε μαθ' αὐτονομ' ἡκουγ' τοῦ· ζη' τῆς τῆς β' εἰ / τοῦ λου.
 λίου τοῦ ἀκατομ παρ'· ζη' ἀατ' εἰς ἡμῶν παρ'.

Γαμβῶν προτῆς ἡμῶν· ζη' σα' / ζ' τοῦ μαθ'.

Κερὶ αἰκῆς προτῆς ἡμῶν· κατὰ ἰω ἀμνῶν.

Κι' πενοῦς· οὐδεὶς ἀρα βέβηκεν ὁ τὸν οὐῶν
 ἡμῶν οὐ τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

οὐ τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

ιδ ἡμῶν οὐ τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

τοῦ οὐῶν κατὰ βῆσ, οὐ τοῦ οὐῶν.

λάβει αὐτὸν ὁ υἱὸς καὶ σῶσαι· ἐγὼ γὰρ οὐ χέ-
ρισκω ἐν αὐτῷ αἰτία· παλὶν ὁ πῖλατος λέ-
γει τῷ ἰω· πόθεν εἶσὺ· ὃ δὲ ἰσ' ἀποκρισένου
κέδωκεν αὐτῷ· λέγει οὖν αὐτῷ ὁ πῖλατος·
ἐμοὶ οὐ λαλεῖς· οὐκ οἶδας ὅτι ἐξοιῶμαι
ἐχῶ σῶσαι σε· καὶ ἐξοιῶμαι ἐχῶ ἀπολίσαι
σε· ἀπεκρίθη ἰσ'· οὐκ εἶχω ἐξοιῶσαι οὐδὲ
μῖαν κατὰ μοῦ εἰ μὴ κῶ σοι δεδωμένομα ἄνω-
θεν· τότε οὖν ὁ πῖλατος ἀμοίσασ τοῦ
πομπὸν λόγον ἡγάσεν ἐξωτὸν ἰὺ καὶ ἐκάθη-
σεν ἐπὶ τοῦ βήματος εἰς τὸ πομπεζόμε-
νον λιθόστυπον· ἐβραῖσι δὲ γαβαθὰ· κῶ
δὲ παρασκὰ ἡ τοῦ πάσης· ὠρα κῶ ὡσθ' ἐστὶ·
καὶ λέγει τοῖς ἰουδαίοις· ἴδε ὁ βασιλεὺς ὁ
μῶν· οἱ δὲ ἔφραζαν λέγοντες· ἄρον ἄ-
ρον σῶσον αὐτὸν· λέγει αὐτοῖς ὁ πῖλατος·
τὸν βασιλέα ὑμῶν σῶσω· ἀπεκρίθησαν
ἱερεῖς· οὐκ ἐχόμεν βασιλέα ἡμῶν καὶ
σαρα· τότε οὖν παρέδωκεν αὐτὸν αὐτοῖς ἰσ'
σῶθῃ· παραλαμόντες δὲ τὸν ἰὺ ἡγάγον εἰς τὸ
πραιτώριον· καὶ βασάζων τὸν σῶν ἐαυτοῦ·
ἐξῆλθεν δὲ τὸν λεζόμενον κραιῖου τὸ πομπ· ὁ
λέγεται ἐφραῖσι γαλγοθὰ· ὅπου αὐτὸν ἐσῶ-
σαν· καὶ μετ' αὐτοῦ ἄλλοις δύο ἐντεύθεν καὶ
ἐντεύθεν· μέσον δὲ τὸν ἰὺ· ἐγράψεν δὲ καὶ
πίτλον ὁ πῖλατος· καὶ ἐθήκεν ἐπὶ τοῦ σῶν·
κῶ δὲ γεγραμμένον· ἰσ' ὁ μαζωραῖος ὁ βασιλεὺς
τῶν ἰουδαίων· τοῦτον οὖν τὸν πίτλον πο-
λλοὶ ἀνέγνωσαν τῶν ἰουδαίων· ὅτι ἐγγλῶν

183
 ὅτο ποσὶς πόλεωσ' ὅπου ἐστῶθι οἷσ'· καὶ ἰὺ
 γεγραμμένον· ἐβραϊστ'· ἑλληνιστ'· ρωμαϊστ'
 εἰς ἡ' κ' (αὐτὸ παρ' αὐτῶν ὡς τοῦ ἰὺ ἡ μὴρ αὐτοῦ·
 καὶ ἡ ἀδελφὴ τῆς μῆρ αὐτοῦ μαρία ἡ τοῦ κλω
 πᾶ· καὶ μαρία ἡ μαγδαληνὴ + ἰσ' οὐκ ἰδὼν
 τὴν μῆρ καὶ τὸν μαθ' ἡ τὴν παρεστῶτα οὐκ
 γὰρ λέγει τῇ μῆρ αὐτοῦ· γύναι· ἰδεὶ ὁ υἱός
 σου· εἴτα λέγει τῷ μαθ' ἡ τῇ· ἰδοὺ ἡ μὴρ σου·
 καὶ ἀπεκείνησ' τῆς ἡμέρας ἐλάβεν αὐτὴν
 ὁ μαθ' ἡ τῆς ἐκείνου εἰς τὰ ἴδια + μετὰ
 ταῦτα· ἔδωκε οἷσ' ὅτι πάντα τετέλεται·
 περὶ αὐτοῦ· κλίνας τὴν κεφαλὴν, παρέ
 δωκε τὸ πρῶν + οἱ οὐκ ἰουδαῖοι ἱραμὴ
 μέντη ἐπὶ τοῦ στῆθους τὰ σώματα ἐν τῷ
 σαββάτῳ· ἐπεὶ παρασκευῆται + ἰὺ γὰρ
 μεγάλη ἡ ἡμέρα ἐκείνου τοῦ σαββάτου +
 ἡρώτησαν τὸν πῖλᾶτον ἱρακατε αὐτῶν
 οἱ αὐτῶν τὰ σκέλη καὶ ἀρθῶσιν + ἰὺ
 δοκοῦν οἱ γραπῶται· καὶ τοῦ μεν πρώ
 του, κατέαξαν τὰ σκέλη· καὶ τοῦ ἄλλου
 τοῦ συστῶθεντος αὐτῶν + ἐπὶ δὲ τὸν ἱμ' ἐλ
 θόντες· αἷς ἐίδον αὐτὸν ἡδὴ τεθνηκότα, οὐ
 κατέαξαν αὐτοῦ τὰ σκέλη + ἀλλ' οἱ τῶν γραπ
 ῶτων, λόγι αὐτοῦ τὴν πλῆραν ἐρύξε· καὶ
 εὐθέως ἐξηλθεν αἷμα καὶ ὕδωρ· καὶ ὁ ε
 ωρακὸς μεμαρτύρηκεν, καὶ ἀληθινὴ ἐ
 σιν ἡ μαρτυρία αὐτοῦ· ~

Γαλιλαῖα μετ' τὴν ἡμέραν· ζ' τῇ γ' τῆς γ' ἐκ τοῦ πασ.
 Κυριαὴ μετ' τὴν ἡμέραν· ζ' τῇ γ' τῆς γ' τῶν η' σειῶν·

Δημόσια Κεντρική Βιβλιοθήκη Βέροιας

τείσ καὶ οἱ φαρισαιοὶ γυναικαὶ ἐπὶ μοιχαλῶν
 τεύχεσιν· καὶ σῆσαρτες αὐτῶν ἐν μέ-
 σω λέγουσιν αὐτῶν· ὁ δὲ ἀποκαλεῖ αὐτὴν ἡ γυνὴ
 κατήχηται ἐπὶ αὐτοφόρῳ μοιχαλόμενῃ·
 καὶ ἐν τῷ νόμῳ ἱμαῶν μωσῆος ἐκτείλατο τὰς
 τοιαύτας λίθάς· οὐ οὖν τί λείγεις· τοῦ
 ποδὲ εἶπον ἐπειράζοντες αὐτὸν· ἴρασχῶ
 σιν κατηγορίαν κατὰ τοῦ· ὁ δὲ ἰὸς κατὰ
 κύβας τῷ δαυτῷ, ἐγράψεν ὁ τῷ γυνὴ
 ὡς δὲ ἐπέμενον ἐρωτῶντες αὐτὸν, ἀνέ-
 κειν καὶ εἶπεν αὐτοῖς· ὁ ἀνὰ μάρτυ-
 ρος ὑμῶν πρῶτος βαλὼν λίθον ἐπαι-
 νῶν· καὶ παλὶν κατὰ κύβας· ἐγράψεν
 εἰς τῷ γυν· οἱ δὲ ἀκούσαντες ἐξῆρχον-
 το εἰς καθέως· ἀρξάμενοι ἀπὸ τῶν πρῶ-
 τυτέρων· καὶ κατελείφθη ὁ ἰὸς καὶ ἡ γυνὴ·
 ἐν μέσῳ οἶσαν· ἀνακύβας δὲ ὁ ἰὸς εἶπεν
 αὐτῇ· γύναι, ποῦ εἶσιν· οὐδεὶς σε κατακρί-
 νει· ἡ δὲ εἶπεν· οὐδεὶς κε· εἶπε δὲ ὁ ἰὸς·
 οὐδὲ ἐγώ σε κατακρίνω· πορεύου καὶ ἀπὸ
 τοῦ νῦν κέ τί ἀμαρτάνεις·

Θ ΤΟΥ Α' ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ ΙΑΚΩΒΟΥ ΤΟΥ ΑΛΦΑΙ· ΖΗΤΩΝ Τ ΤΟΥ ΛΟΥ·

Γ ΤΩΝ ΑΓΓΕΛΩΝ ΕΥΛΑΜΠΙ ΚΑΙ ΔΙΛΑΜΠΙ· ΖΗΤΩΝ Τ ΤΗΣ ΔΙΠΛΗΣ ΓΕΝΕΤΕΡΙΑΣ

ΙΑ ΤΟΥ Α' ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ ΦΙΛΙΠΠΟΥ Τ ΤΗΣ ΔΙΠΛΗΣ· ΖΗΤΩΝ Τ ΤΗΣ ΓΕΝΕΤΕΡΙΑΣ

ΙΒ ΤΩΝ ΑΓΓΕΛΩΝ ΠΡΟΒΟΥ ΤΑΡΑΧΟΥ ΚΑΙ ΑΝΘΡΩΠΟΥ ΤΟΥ

ΖΗΤΩΝ Τ ΤΗΣ ΙΒ ΚΑΙ ΤΟΥ ΛΟΥ·

ΙΓ ΤΩΝ ΑΓΓΕΛΩΝ ΤΑΡΑΧΟΥ ΚΑΙ ΠΑΠΟΥ· ΖΗΤΩΝ Τ ΤΟΥ ΠΑΤΕΡΟΣ

ΙΔ ΤΩΝ ΑΓΓΕΛΩΝ ΜΑΖΑΡΙ ΓΕΡΜΑΣΙ ΚΑΙ Τ ΛΟΙΠΩΝ· ΖΗΤΩΝ Τ ΤΗΣ ΓΕΝΕΤΕΡΙΑΣ

ΙΕ ΤΟΥ ΑΓΓΕΛΟΥ ΛΟΥΚΙΑΡΟΥ· ΖΗΤΩΝ Τ ΤΟΥ ΑΥΤΟΥ

15 τοῦ α' ἡ' λογι^α του εκατοντα^α: ζη' ἡ' α' του ματ^α
 16 τοῦ α' προφη^α ο' σιέ: ζη' τη παρ^α της η' α' του λου^α:
 17 τοῦ α' αποσο^α καὶ δαδ^α χι^α λου καὶ. δα^α κατὰ λου^α
 18 ἱπεν ο' α' τοῖς ε' αὐτοῦ μαθηταῖς. ο' α' κούων
 ἱμῶν, ε' μου ακούει. καὶ ο' α' θων ἱμασ.
 ε' με' α' δε πει. ο' δε ε' με' α' δε πων. α' θεῖ τον
 α' αποσει λαρ ταί με. ὑπέρ σρε φαρ δέ ο' α'
 δομή κορ ταί με τα χαρ^α α' λέγοντες. κ' ε'
 καὶ τα δαιμόρια ὑποτάσσεται ἡμῖν ἐν τῷ
 ὀνόματί σου. εἰπεν δ' αὐτοῖς. ε' θεώ
 ρουν τον σαταραν ὡς α' σραπὴν ἐκ του οὐ
 ραμου πεισόντα. ἰδού δ' ὁ δωμ^α ὑμῶν τῶν
 ἐξοισίαν του πατεῖν ε' παρ^α ὄφρων καὶ
 σκορπίων καὶ ε' πὶ πάσαν τὴν δυνάμειν
 του ἐχθροῦ. καὶ οὐδὲν ἱμασ οὐ μὴ α' δ^α
 κήσιν. πλην ἐν τούτῳ μὴ χαίρει. ὅτι τ'
 πράματα ὑμῶν ὑποτάσσεται. χαίρει
 τε δέ, ὅτι τα ὀνόματα ὑμῶν ἐγγράφη
 ἐν τοῖς οὐνοῖς. ἐναπὴ τῆ α' ρα ἡ γαλι
 α' σατο το πρὶ ο' ἰσ καὶ εἰπεν. ε' ξομολο
 γούμενοι περ^α κα' του ὕου καὶ της γῆς. ὅτι α'
 πικρῖσας ταῦτα ἀποσφώρ καὶ ὠνετῶν.
 καὶ ἀπεκαύλυσας αὐτὰ νηπίοις. καὶ ο' πῆρ.
 ὅτι οὕτως ε' γέντο εὐδοκία ἐμ' προαθενόσου.
 19 τοῦ α' προφη^α ιωηλ: ζη' τη β' της η' α' του λου^α
 20 τοῦ α' μῆ' ἡ' α' ρτεμι. ζη' σα' τ' του λου κα.
 21 τοῦ α' πρ^α ἡ' μ' ἱλαρίωμοσ: ζη' τη παρ^α της β' α' του λου.
 22 τοῦ α' ἐναγίοις πρ^α ἡ' μ' α' βερκίου ἐπισκώπ^α
 ε' ραπόλεωσ. ζη' τη γ' με' τῶν γ'.

2. The first of these is the fact that the

1α τοῦ ὁ πρὸς ἡμῶν δαμῆ ἡλ' ἔστι· ζή' μοῦ' α
1β τοῦ ὁ πρὸς ἡμῶν σπυρίδωνος· ζή' σε πέν γ
1γ τοῦ α' ἡγ' ἡε εὐσταθίου καὶ τ' (ὡαυ· ζή' τ' ἡε α' δ' α
1δ τοῦ α' ἡε θέρσου καὶ τ' (ὡαυ· ζή' τ' ἡε α' δ' α
1ε τοῦ α' ἡε ἱερομαρ' ελευθερίου· ζή' σ' α' γ' τοῦ παρ'.
1ς τοῦ α' προφήτου ἀγγαίου· ζή' τ' ἡε α' δ' α
1ζ τῶν ἀπ' τριῶν παρ' καὶ δαμῆ ἡλ' τοῦ προφήτου·

Σὺ πενός· οὐ αὖ ἡμῶν γραμματεὶς ἡγ' ἡλ'·
καὶ φαρισαιοὶ ὑποκριταί· ὅτι ἐς ἐς αὐτὰ
μνημεῖα τὰ ἀδύλα· καὶ οἱ ἄνθρωποι περι
πατοῦντες ἐπ' αὐτῶν οὐ κοίτασιν· ἀποκρι
θεὶς δὲ τις τῶν νομικῶν λέγει αὐτῷ· διδά
σκαλε· ταῦτα λέγων· καὶ ἡμᾶς ὑπερίβεις·
ὁ δὲ εἶπεν καὶ ὑμεῖς τοῖς νομικοῖς οὐαὶ·
ὅτι φορτίζετε τοῖς ἀνθρώποις φορτίαι δυσβά
σταται· καὶ αὐτοὶ ἐνὶ τῶν δακτύλων
ὑμῶν οὐ προσφάτετε τοῖς φορτίοις·
οὐ αὖ ὑμῖν ὅτι οἱ κοδομεῖτε τὰ μνημεῖ
αὐτῶν προφητῶν· οἱ δὲ πρὸς ἡμῶν ἀπέ
κτειναν αὐτοὺς· ἀρὰ μαρτυρεῖτε καὶ
ὡσαύδοιτε τοῖς ἔργοις τῶν πρώτων ἡ
μῶν· ὅτι αὐτοὶ μὲν ἀπέκτειναν αὐ
τοὺς· ὑμεῖς δὲ οἱ κοδομεῖτε αὐτῶν τὰ
μνημεῖα· ὧς αὐτοὶ καὶ ἡ σοφία τοῦ
θεοῦ εἶπεν· ἀποσελῶ εἰς αὐτοὺς προ
φήτας· καὶ ἀποστόλους· καὶ ἐξ αὐτῶν
ἀποκτενοῦσιν· καὶ σὺ δ' ἀξιοῖσιν· ἵνα
ἐζητηθῇ τὸ αἷμα πάντων τῶν προφη
τῶν· τὸ σῶμα δὲ ἀποκαταβῇ

ἰὼραμ δὲ ἐγέννησε τὸν ὀβίαμ· ὀβίας δὲ ἐ-
 γέννησε τὸν ἰὼάδαμ· ἰὼάδαμ δὲ ἐγέννησε
 τὸν ἄχαζ· ἄχαζ δὲ ἐγέννησε τὸν ἰζεκιήλ·
 ἰζεκιήλ δὲ ἐγέννησε τὸν μαρσάμ· μαρ-
 σάμ δὲ ἐγέννησε τὸν ἀμὼν· ἀμὼν δὲ ἐ-
 γέννησε τὸν ἰωσίαν· ἰωσίας δὲ ἐγέννησε
 τὸν ἰεχορίαμ· καὶ τοῖς ἀδελφοῖς αὐτοῦ·
 ἐπὶ τῇς μετοικεσίας βαβυλωνος· μετὰ
 δὲ τῷ μετοικεσίαν βαβυλωνος· ἰεχορίας
 ἐγέννησε τὸν σαλαθιήλ· σαλαθιήλ δὲ ἐ-
 γέννησε τὸν βοροβάβελ· βοροβάβελ δὲ ἐ-
 γέννησε τὸν ἀβτούδ· ἀβτούδ δὲ ἐγέννησε
 τὸν ἐλῖακίμ· ἐλῖακίμ δὲ ἐγέννησε τὸν
 ἄζωρ· ἄζωρ δὲ ἐγέννησε τὸν σάδωκ· σάδωκ
 δὲ ἐγέννησε τὸν ἀχείμ· ἀχείμ δὲ ἐγέννη-
 σε τὸν ἐλιούδ· ἐλιούδ δὲ ἐγέννησε τὸν ἑ-
 λεάζαρ· ἐλεάζαρ δὲ ἐγέννησε τὸν ματθάν·
 ματθάν δὲ ἐγέννησε τὸν ἰακώβ· ἰακώβ
 δὲ ἐγέννησε τὸν ἰωσήφ τὸν ἀνδραμαρίαν·
 ἐξ οὗ ἐγεννήθη ἰσὸς λεγόμενος χεὶς· πᾶσαι
 οὖν αἱ γενεαὶ ἀπὸ αὐράαμ ἕως δα὿ν γενε-
 αὶ δεκάπενταρῶ· καὶ ἀπὸ δα὿ν ἕως τῆς
 μετοικεσίας βαβυλωνος, γενεαὶ δεκάπεν-
 τῶ· καὶ ἀπὸ τῆς μετοικεσίας βαβυλωνος,
 ἕως τοῦ χυ γενεαὶ δεκάπενταρῶ·
 τοῦ δὲ ἰούχυ ἡ γεννησις οὕτως ἐστίν· μνησαδὶθ
 σις γὰρ τῆς μητρὸς αὐτοῦ μαρίαν τῷ ἰωσήφ·
 πρὶν εἰς βελθεῖν αὐτοῖς· εὐρέθη ἐν γα-
 στρὶ ἐχούσῃ σὲ πρὸς ἑαυτοῦ· ἰωσήφ δὲ ὁ

τοῦ
 τῆς ἰούχου

μήρ αὐτῆς δικαιοσύνη· καὶ μὴ θέλων αὐτῇ
 παραδειγματίσαι· ἐβουλήθη λαῶν ἀπολύ-
 σαι αὐτῇ· ταῦτα δὲ αὐτοῦ ἐν θυμῷ κέντησεν·
 ἰδοὺ ἄγγελος κυρίου κατ' ὄναρ ἐφάνη αὐτῷ· λέγων·
 ἰωσήφ ἱὸς δαδ· μὴ φοβηθεῖς παραλαβεῖν κτλ
 ῥῖαμ πλὴν γυναικά σου· τὸ γὰρ ἐν αὐτῇ γερ-
 θέν ἐκ πρὸς ἐστὶν αἰτίου· τέξεται δὲ ἕνα υἱόν καὶ ὁ
 λίσσει τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἱν· αὐτὸς γὰρ σώσει
 τὸν λαόν αὐτοῦ ἀπὸ πάντων ἀμαρτιῶν αὐτῶν·
 τοῦ ποδὲς ὅλον μένον· ἵνα πληρωθῇ τὸ ῥῖ-
 θέν ὑπὸ τοῦ κυρίου ἀπὸ τοῦ προφῆτου λέγοντος·
 ἰδοὺ ἡ παρθένος ἐν βάτρ' ἐξεί· καὶ τέξεται
 υἱόν καὶ καλέσει τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐμ-
 μαμουήλ· ὅ ἐστι μεθερμηνεύον· με-
 θῆμω ὁ θεός· δι' ἐξθθείσ δὲ οἱ ἰωσήφ ἀπὸ
 τοῦ ὕπνου· ἐποίησεν ὡς προσέταξεν αὐ-
 τῷ ὁ ἄγγελος κυρίου· καὶ παρέλαβε τὴν γυ-
 ναῖκα αὐτοῦ· καὶ οὐκ ἐγίνωσκεν αὐτήν·
 ἕως οὗ ἔπεσε τὸν υἱόν αὐτῆς τὸν πρότοτον
 κομ· καὶ ἐκάλει τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἱν·
 ἡ ἑορηνώσκειν ὅτι εἰμὴ ἡ ἑορτὴ τῆς γιγνώσκου-
 νήσεως ἐν ἡμῶν φθάσει· ἐπεὶ δὲ τὸ ὅπιον
 σαμβάτον καὶ ἡ κυριακὴ τὸ προ-τῆς γιγνώ-
 νήσεως σαββατοκρίαν κοινίσιν· καὶ ἔχον
 ταῖς ἡμέραις· τὸ δὲ τῆς παρασκευῆς σαμβάτον·
 ἔχον δὲ τῆς ἀναμνήσεως τοῦτο γίνεσθαι ἡμῶν
 ἵπεν ὁ κύριος τὴν παραβολὴν ταύτην· ὁμοίαι ἐ-
 σὶν ἡμῶν καὶ τῶν παλαιῶν κοινιστῶν·
 ἡ τῆς δὲ τῆς ἡμέρας τοῦ ματ

103
ἡ παρακλήσις τοῦ αἵματος τοῦ υἱοῦ ἡμῶν· ἡ λου-
τὴν τῶν υἱοῦ ἡμετέρων ἐκείνων· ἐξῆλθεν δὲ ῥ-
μα παρὰ καὶ σαροσ αἰγούρου ἀπογράφ-
εσθαι πᾶσαν τὴν οἰκουμένην· αὕτη ἡ ἀ-
πογραφὴ πρῶτη ἐγένετο· ἡ μετὰ οὖν τοσ-
πλίσσιν ῥίαν κυριεύου· καὶ ἐπορεύοντο
πάντες ἀπογράφεσθαι ἕκαστος εἰς τὴν ἰ-
δίαν πόλιν· ἀνέβη δὲ καὶ ἰωσήφ ἀπὸ
τῆς γαλιλαίας εὐπόλεως ραβάρτα εἰς
τὴν ἰουδαίαν εἰς πόλιν δαὺδ· ἡ τις κα-
λεῖται βηθλεὲμ· διὰ τὸ εἶναι αὐτὸν ἐξ οἱ-
κου καὶ πρίαν δαὺδ· ἀπογράψασθαι (ὡς
μαρτὰς τῆ μεμενησάμεν ἡ αἰτω γυναικὶ
οἷον ἐγένετο· ἐγένετο δὲ ἐν τῷ εἶναι αὐ-
τοῦ ἐκ· ἐπλήθησαν αὖ ἡμέραι τοῦ τ-
κεῖν αὐτὴν· καὶ ἐτεκεν τὸν υἱὸν αὐτῆς τὸν
πρῶτότοκον· καὶ ἐσπαρταρίσεν αὐτὸν·
καὶ ἀνέκρινεν αὐτὸν ἐν τῇ φάτρει· διότι
οὐκ ἦν αὐτοῖς τόπος ἐν τῷ καταλύματι·
καὶ ποιμένας ἦσαν ἐν τῇ χώρα τῇ αὐτῇ ἀ-
γραυλοῦντες· καὶ φύλασσοντες φύλακας
τῆς νύκτος ἐπὶ τῶν ποιμένων αὐτῶν·
καὶ ἰδοὺ ἀγγελος κυ· ἐπέστη αὐτοῖς· καὶ ἐφο-
βήθησαν φόβον μέγαν· καὶ εἶπεν αὐ-
τοῖς ὁ ἄγγελος· μὴ φοβεῖσθε· ἰδοὺ γὰρ ἐν-
αγγελίζομαι ὑμῖν χαρὰν μεγάλην· ὅτις
ἐστὶν παντὶ τῷ λαῷ· ὅτι ἐπέχθη ὑμῖν
σήμερον σῆρ· ὅς ἐστις ἡς· ἐν πόλει δαὺδ·

καὶ τοῦτο ὑμῖν τὸ σημεῖον· ἀρῆσθαι βρέφος
 ὅσων γὰρ ὡς κένον καὶ κένον ἐν φατύνῃ· καὶ
 ἐξέφυκε ἐγὼ τοῦ σὺν τῷ ἀγγέλῳ πληθὺς ἔσται
 τῶν οὐρανῶν αἰρουμένων τὸν θῦν καὶ λέγοντων·
 δόξα ἐν ὑψίστοις θῶ· καὶ ἐπὶ γῆς εἰρήνη ἐν ἀνθρώποις
 ἀδούκῃ· καὶ ἐγὼ ὡς ἀπῆλθον ἀπὸ πάντων
 εἰς τὸ νοῦν οἱ ἄγγελοι· καὶ οἱ ἄνθρωποι οἱ ποι
 μέντες εἶπον πρὸς ἀγγέλους· διέλθωμεν δὲ
 εἰς βῆθλεἐμ· καὶ ἴδωμεν τὸ ῥήμα τοῦ
 τοῦτο γεγονός· οὐκ ἔστι ἐγνώρισεν ἡμῖν· καὶ
 ἔλθον ἀσάσμεν τῶν· καὶ ἀνδρῶν τῶν τε
 μαρίαν καὶ τὸν Ἰωσήφ· καὶ τὸ βρέφος καὶ
 κένον ἐν τῇ φατύνῃ· ἰδοὺ τῶν δὲ ἐγνώ
 ρισαν περὶ τοῦ ῥήματος τοῦ λαλῆσαι τοῦ
 αὐτοῖς· περὶ τοῦ παιδίου τοῦτου· καὶ πα
 ρτες οἱ ἀκούσαντες ἐθαύμασαν· περὶ
 τῶν λαλῆσαι τῶν ἐπὶ τῶν ποιμένων πρὸς
 αὐτοῖς· ἰδὲ μαρίαν πάντας (ὡς τῆς)
 τὰ ῥήματα ταῦτα· σὺμβάλλουσαι ἐν
 τῇ καρδίᾳ αὐτῆς· καὶ ὑπέσχετο οἱ ποι
 μέντες δόξαζοντες καὶ αἰρουντες τὸν θῦν·
 ἐπὶ πάντοτε οἱς ἤκουσαν καὶ εἶδον· καὶ
 ἐλαλήθη πρὸς αὐτοῖς· ~

καὶ κατασάβ' γεννητοῖς τοῦ κυρίου ἡμῶν ἰησοῦ· ἡμε
 ρῆς ἑκάστης προέωσθη· ἡ ἐπὶ οὐρανῶν· καὶ
 ματ' τοῦ κυρίου ἡ γεννητοῖς οὐποσῶν· ἡ τῶν πρῶν
 ἀπὸ τῶν· ἡ τῶν λαλοῦντων κατὰ αἶον
 τοῦ κυρίου γεννηθέντος ἐν βῆθλεἐμ τῆς πόλεως
 δαβὶδ ἐν ἡμέραις ἡρώδου τοῦ βασιλέως·

ἰδοὺ μάλο' ἀποάματολὼν παρεσέμοντο εἰς ἱερο
 σόλυμα· λέγοντες· πού ἐστιν ὁ τεχνίτης βασιλεὺς
 τῶν ἰουδαίων· εἶδμεν γὰρ αὐτοῦ τὸν ἄστέρα
 ἐν τῇ ἀματολίᾳ· καὶ ἤλθομεν πρὸς κινήσαι
 αὐτόν· ἀκοίσας δὲ ἡρώδης ὁ βασιλεὺς, ἐ-
 τάραχθι· καὶ πᾶσαι ἱεροσόλυμαι μετὰ
 τοῦ· καὶ (ὡς ἀγαθῶν πάντα τοῖς ἀρχι-
 ρεῖς καὶ γραμματεῖς τοῦ λαοῦ· ἐπιώθα-
 ντο παρ' αὐτῶν· πού ὅχ' ἔγερται· οἱ δὲ εἶ-
 που αὐτῷ· ἐνβιβλέμεν τὴν ἰουδαίαν· οὐ-
 , τωσ γὰρ γέγραπται διὰ τοῦ προφήτου· καὶ
 , σὺ βιβλίεμ ἐν γῇ ἰούδα· οὐδαμῶς ἐλα-
 , χίσῃ δ', ἐν τοῖς ἡγεμόσιν ἰούδα· σὺ σοῦ
 , γὰρ ἐξελεύσῃαι ἡγούμενος· ὅς τις ποι-
 , μαρῇ τὸν λαόν σου τὸν ἱὸν· τότε ἐν
 ῥώδῃσι λάθραι καλέσας τοῖς μάγοις· ἐν
 κρίβωσεν παρ' αὐτῶν τὸν χρόνον τοῦ φαι-
 νομένου ἁστέρος· καὶ πέμψας αὐτοῖς εἰς
 βιβλίεμ εἶπεν· πορεύεσθαι ἀκριβῶς
 ἐξετάσατε περὶ τοῦ παιδίου· ἐπεὶ
 δὲ ἀΐρηται, ἀπαγγείλατέ μοι· ὅπως καὶ
 γὰρ ἐλθῶν, πρὸς κινήσω αὐτόν· οἱ δὲ ἀ-
 κοίσαυτες τοῦ βασιλέως ἐπορεύθη-
 σαν· καὶ ἰδοὺ ὁ ἁσὴρ ὅν εἶδον ἐν τῇ ἀ-
 ματολίᾳ, προήλθεν αὐτοῖς· ἕως ἐλθῶν
 ἔστη ἐπάνω οὐκ ὡς τὸ παιδίον· ἰδόν-
 τες δὲ τὸν ἁστέρα, ἐχαρίσαντο χαρὰν
 μεγάλην σφόδρα· καὶ ἐλθόντες
 εἰς τὴν οἰκίαν εἶδον τὸ παιδίον·

μεταμαρτίαν τῆς καρδίας αὐτοῦ· καὶ πωσὸν τὸ
 προσεκύνησαν αὐτό· καὶ ἀνείξαντες
 τοῖς θεοσαυροῖς αὐτῶν· προσήνεγκαν αὐ-
 τῷ δῶρα· χρυσόν· καὶ λίπανον· καὶ σμύρ-
 ναν· καὶ χρηματῖας τέρας κατόμαρ
 μὴ ἀνακαμφαί· πρὸς ἡρώδην· δι' ἄλλης
 ὁδοῦ ἀνελθόντες εἰς τὴν χώραν αὐτῶν·
 καὶ προσάξιόν τῃς ἐπιτομῆς αὐτοῦ· καὶ
 μαχώρησαν τῶν τῶν μαγῶν· καὶ ἀποθάνου
 ἰδοὺ ἀφ' ἐλοσὺ φαίνεται κατόμαρ τῷ ἰω-
 σήφ· λέγων· ἐγερθεὶς παράλαβε τὸ παι-
 δίον καὶ τὴν μητέρα αὐτοῦ καὶ φάγε εἰς αἰγύ-
 πτον· καὶ ἰάθη σου· ἕως ἃν εἰπωσί· με-
 λει γὰρ ἡρώδης ζητεῖν τὸ παιδίον τοῦ ἀ-
 πολείσαι αὐτό· ὁ δὲ ἐγερθεὶς· παρέλα-
 βε τὸ παιδίον καὶ τὴν μητέρα αὐτοῦ καὶ
 καὶ ἀνελθόντες εἰς αἰγύπτον· καὶ
 ὡς κεί· ἕως τῆς τελευτῆς ἡρώδου· ἵ-
 να πληρωθῇ τὸ ρηθὲν ὑπὸ τοῦ κυρίου
 τοῦ προφήτου· λέγοντος· ἐξ αἰγύ-
 πτου ἐκάλεσα τὸν Ἰσραήλ· τότε
 ἡρώδης ἰδὼν ὅτι συνεπαίχθη ὑπὸ τῶν
 μαγῶν· ἐθυμώθη λίαν· καὶ ἀποστεί-
 λας ἀνέλεν πάντας τοὺς παῖδας τοῦ
 συβηθλεῖν καὶ ἅν πάσι τοῖς ὁρίοις αὐτῆς·
 ἀπὸ δ' ἑτοῖς καὶ κατὰ τέρας· κατὰ τὸ
 χρόνον οὐκ ἠκρίβωσε παρ' αὐτῶν μαγῶν·
 τότε ἐπληρώθη τὸ ρηθὲν ὑπὸ ἱερεμίου
 τοῦ προφήτου λέγοντος· φωνὴ ἐν ῥάμῃ

· ἡ κοίτης· θρήνος καὶ κλαυθμὸς καὶ ὀδυρμὸς
· πολλὸς· ῥα χιῖλ κλαίοντα ταῦτέ κ' αὐτῇ.
καὶ οὐ καὶ θέλει παρακληθῆναι ὅτι οὐκ ἔστι
Τελαιτίσαντος δὲ τοῦ ἡρώδου· ἰδοὺ αἴθε-
λος κ' κατόμαρ φαίνεται τῷ ἰωσήφ· ἐν
αἰμίπωλέων· ἔγερθεῖς παράλαβε τὸ
παιδίον καὶ τὴν μητέρα αὐτοῦ· καὶ πορεύου
εἰς γῆν ἰσραὴλ· τεθυήκασι γὰρ οἱ ζῆτοί σου
τὴν ψυχὴν τοῦ παιδίου· ὁ δὲ ἔγερθεῖς
παρέλαβε τὸ παιδίον καὶ τὴν μητέρα αὐτοῦ·
καὶ ἦλθεν εἰς γῆν ἰσραὴλ· ἀκούσας δὲ ὅ-
τι ἄρ' ἔλασεν κασιλάει ἐπὶ τῆς ἰου-
δαίας ἀπὸ τῆς ἡρώδου τοῦ πρὸς αὐτοῦ· ἐφο-
βήθη· ἐκείθεν ἀπελθὼν· χρηματισθεῖς δὲ
κατόμαρ, ἀνεχώρησεν εἰς τὰ μέρη τῆς
γαλιλαίας· καὶ ἐλθὼν κατῴκησεν
εἰς πόλιν λεγομένην ναζαρέθ· ὅπως
πληρωθῇ τὸ ῥῆθ ἐν δ' αὐτῶν προφητῶν·
ὅτι ναζωραῖος κληθήσεται· ~

αἰματόν· ἔτι τὸν χυμὸν ἡμῶν· καὶ ματθαίου
ὡ καὶ ῥα ἐκείνῳ ἡ κολούθησαν τῷ ἰω-
ὄηλοι πολλοὶ· καὶ ἐθεράπευσεν αὐτοὺς
πάντας· καὶ ἐπετίμῃσεν αὐτοῖς ἵ-
να μὴ φανερὸν αὐτὸν ποιήσωσιν· ὅπως
πληρωθῇ τὸ ῥῆθ ἐν δ' αὐτοῦ προφήτου λε-
γομένου· ἰδοὺ ὁ παῖς μου ὃν ἡρέτισαι,
ὁ ἀγαπητός μου· εἰς ὃν ἀδίκησεν ἡ ψυ-
χή μου· θέσω τὸ πρῶτόν μου ἐπ' αὐτόν·
καὶ κηρύξω τοῖς ἔθνεσιν ἀπαγγελεῖ·

οὐ κέρισε· οὐδὲ κραυγάζει· οὐδὲ κοινοῖ τῆς
 ἐν ταῖς πλατείαις τῇ φωνῇ αὐτοῦ· καὶ
 λαμνοῦ τε τριμῆρον οὐ κατεάξει·
 καὶ λίμον τῷ φόμον οὐ σβέσει· ἕως αὖ
 ἐκκλήσει εἰς ῥίκοσ τῷ κρῖσιν· καὶ τῷ ὄ
 ροματὶ αὐτοῦ ἐλθὼν ἐλπίοισιν·

κερσανη μετ' αὐτῶν χυμένον: ἔν τῃ παρτομύσει

[illegible]

τῶν χυμῶν καὶ τῶν φῶ· ἀναπνεύσας

$\frac{\partial}{\partial t} \left(\frac{\partial \psi}{\partial x} \right) + \frac{\partial}{\partial x} \left(\frac{\partial \psi}{\partial t} \right) = \frac{\partial^2 \psi}{\partial x^2} + \frac{\partial^2 \psi}{\partial t^2}$

Τοῦ αὐτοῦ πρὸ ἡμετέρας Μακ^τ Περφάνου.

[illegible]

ταῖς δὲ πρὸς τὸν ἀντιθέτοντα καὶ καὶ πρὸς

πατρι. $\omega\sigma\alpha\upsilon$ $\eta\gamma$ $\alpha\pi\rho\omicron\sigma\epsilon\sigma$ $\alpha\omega\gamma\gamma\omega$ $\eta\gamma$ $\alpha\lambda\theta\theta\epsilon\sigma\rho\alpha$

καὶ θεοῦ ἡμεῖς αὐτοὶ καὶ παῖδες καὶ μετὰ καὶ τὸ

πρὸς ἡμ. Θεοδώρ. τοῦ γραμμ. 85

καὶ μεθέοψ καὶ πῶς αὐτὸς μὴ πῶς :

μεθ' ὧν καὶ τὸ ἄγιον πνεῦμα

ἔα με θέσθαι τὰς καὶ τῆς τοῦ κρῖνι ἐλαττωθῆναι.

αἱ τ' ὅτι ἀπὸ τοῦ οὐρανοῦ τρέφου: -

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

Ниспота' сар^и териториѣ оубкѣ нмѡр ѿ дѹ:

καὶ τοῦ ἐναγῆ πρὸς ἡμ³ βασιλ⁸. ρχιέ πῖσιω^{πρ}

και σαρί' ας και η παρθενί' ας:

Τὸ σῶμα λαμβάνει σοφίαν· ἀκούσά τ' αὐτῶν πάντων τοῦ

$\{ \pi \mid \pi \in \Pi \}$

ὦ καὶ ῥῶ ἐκ ῥῶ· ὑπέρτατοι ποιμένες
δοξαζοντες καὶ αἰνοῦντες τὸν θῆ· ἐπὶ
πασίμοις ἡκοισαν καὶ εἶδον· καθὼς ἐ-

λαλήθει πρὸς αὐτοῖς· καὶ ὅτε ἐπλήθυ-
σαν αἱ ἡμέραι ἐκ τῷ τοῦ περιτεμεῖν τὸ
παιδίον καὶ ἐκλήθη τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἰσ-
τὸ κληθὲν ὑπὸ τοῦ ἀγγέλου, προτοῦ συ-
λῆφθῆναι αὐτὸν ἐν τῇ κοιλίᾳ· τὸ δὲ παι-
δίον ἠύξαρε καὶ ἐκραταιοῦτο πῦν· πλη-
ρούμενον σοφίας· καὶ χάρις θυγὼν ἐ-
παύω· καὶ ἐποράοντο οἰγορεῖς αὐ-
τοῦ κατ' ἐπὶ τὸς ἡμέρας τῆς ἐορτῆς τοῦ πάς-
χει· καὶ ὅτε ἐγένετο ἐπὶ τῶν δώδεκα· ἀ-
ναβάντων αὐτῶν εἰς ἱεροσόλυμα, κα-
τὰ τὸ ἔθος τῆς ἐορτῆς· καὶ τελειω-
σάντων τὰς ἡμέρας ἐν τῷ ὑποστέφει
αὐτοῖς· ὑπέμεινε οἷός τις ὁ παῖς ἐν ἱερῷ·
καὶ οὐκ ἔγνω ἰωσήφ καὶ ἡ μήρ αὐτοῦ·
νομίσαντες δὲ αὐτὸν ἐν τῇ συνουσίᾳ εἶ-
ναι· ἦλθον ἡμέρας ὁδοῦ· καὶ ἀνεβί-
τωσαν αὐτὸν ἐν τοῖς συγγενέσι καὶ ἐν
τοῖς γνωστοῖς· καὶ μὴ εὐρόντες αὐτὸν
ὑπέστρεψαν εἰς ἱερῷ ζήτησάντες αὐτόν·
καὶ ἐγένετο μεθ' ἡμέρας τρεῖς· εὗρον
αὐτὸν ἐν τῷ ἱερῷ καθεζόμενον ἐν με-
σῶ τῶν διδασκάλων καὶ αὐκούοντα αὐ-
τῶν· καὶ ἐπερωτῶντα αὐτοῖς· ἐξί-
σαντο δὲ πάντες οἱ αὐκούοντες αὐτοῦ·
ἐπὶ τῇ συνέσει καὶ ταῖς ἀποκρίσεσιν
αὐτοῦ· καὶ ἰδόντες αὐτὸν ἐξεπλάγη-
σαν· καὶ πρὸς αὐτὸν ἡ μήρ αὐτοῦ εἶ-
πεν· τέκνον· τί ἐποίησας ἡμῖν οὕτως;

ἰδοὺ ὁ πῦρ σου καὶ ὁ δῶλωμένοι ἐξ ἡ τούμεν
 σε· καὶ εἶπεν πρὸς αὐτοὺς· τί ὅτι ἐξητέτε
 με· οὐκ ἔβλεπε ὅτι ἐν τοῖς τοῦ πρὸς μου δεῖξαι
 καὶ με· καὶ αὐτοὶ οὐκ ᾔδον· καὶ τὸ ῥῆμα ὅτι
 λαλεῖ αὐτοῖς· καὶ κατέβη μετὰ αὐτῶν· καὶ ἦλ
 θεν εἰς μαζαρά· καὶ ἐν ὑποτασσόμενος αὐ
 τοῖς· ἰδὲ μετὰ αὐτοῦ διετίρει πάντα τὰ
 ῥήματα ταῦτα ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ· καὶ
 ἴσ' προέκοπτε σοφία καὶ ἡλικία καὶ χαριτι·
 παρὰ θῶ καὶ ἀντοῖς·

ροεὶς ὦν φῶ· αὐτοῦ αἰ

ιλικίας πᾶν ῥῆμα·

ροεὶς ὦν φῶ· αὐτοῦ αἰ· ροφῆ· ἀλαχίου

αὐτοῦ αἰ· ροφῆ· ἀλαχίου

ροεὶς τῶν φῶ· αὐτοῦ αἰ· ποσολτ· Ὁ·

αὐτοῦ αἰ· ποσολτ· Ὁ·

ὡ καὶ ῥῶ ἐκείνῳ· παραπύλαι ἰῶαν·
 ὁ βαπτιστὴς κηρύσσων ἐν τῇ ἐρημίᾳ τῆς
 ἰουδαίας καὶ λέγων· μετανοεῖτε· ἡ
 γῆ κεκρυφαία βασιλεία τῶν οὐρανῶν· οὗ
 τος γὰρ ἐστὶν ὁ ῥῆθεις ὑπὸ ἡσυχίας τοῦ
 προφήτου λέγοντος· φωνὴ βοῶντος
 ἐν τῇ ἐρήμῳ· ἐποιμασατε τὴν ὁδὸν
 αὐτοῦ· ἀδείας ποιεῖτε τὰς τρίβοις αὐ
 τοῦ· αὐτὸς δὲ ὁ ἰῶαννης εἶχεν τὸ ζῦ
 γμα αὐτοῦ ἀπὸ τρίχων καμήλου·
 καὶ ζώην τε δερματίνην περὶ τὴν ὀσφύν
 αὐτοῦ· ἡ δὲ προφή αὐτοῦ ἡ ἀκριβὴς·

καὶ μέλι ἄγριον· τότε ἐξέπορεύθη πρὸς αὐ-
τὸν ἱεροσόλυμα· καὶ πᾶσαι ἰουδαίαι καὶ
πᾶσαι ἡ περίχωρος τοῦ ἱερουδαίου· καὶ ἐβα-
πτίζοντο ἐν τῷ ἱερουδαίῳ ποταμῷ ὑπαὶ αὐτοῦ·
ἐξομολογούμενοι τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν·

κίριακή προτῶν φῶ

κατὰ μαρκον

Αρχὴ τοῦ ἀγγελίου ἰουχὺ ἰου τοῦ θυ· ὡς ἔ-
γραπται ἐν ταῖς προφήταις· ἰδοὺ ἔγω ἀπο-
στέλλω τὸν ἄγγελόν μου προπρὸς σέ· καὶ
ὅς κατασκάσει τὴν ὁδὸν σου ἐμπροσθέν
σου· φωνή βοῶντος ἐν τῇ ἐρήμῳ· ἔτοι-
μάσατε τὴν ὁδὸν κυ· ἀθείας ποιεῖτε
τὰς τρίβοις αὐτοῦ· ἐρχέσθαι ἰωάννην βα-
πτίζων ἐν τῇ ἐρήμῳ· καὶ κηρύσσειν βαπτί-
σιν μετανοίας εἰς ἅφεςιν ἁμαρτιῶν·
καὶ ἐξέπορεύθη πρὸς αὐτὸν πᾶσαι ἱε-
ρουδαίαι χώρα καὶ ἱεροσόλυμίται· καὶ
ἐβαπτίζοντο πάντες ἐν τῷ ἱερουδαίῳ πο-
ταμῷ ὑπαὶ αὐτοῦ· ἐξομολογούμενοι τὰς
ἁμαρτίας αὐτῶν· ἰωάννης δὲ οἶω ἁμνὸς ἐν
δεδυσμένος τρίχας καμήλου· καὶ ζώνην
δερματίνην περὶ τὴν ὀφθαλμοῦ αὐτοῦ· καὶ
βελώναις αὐρίδας καὶ μέλι ἄγριον· καὶ
ἐκήρυκε λέγων· ἐρχέσθαι ὁ ἰσχυρότερός
μου ὀπίσω μου· οὗ οὐκ ἔχω ἰκανοὺς
κίβας λίσαι τῶν ἱματίων ὑποδύ-
ματων αὐτοῦ· ἐγὼ μὲν ἐβάπτισα
ὑμᾶς ἐν ὕδατι· αὐτὸς δὲ βαπτίσει ὑ-
μᾶς ἐν πνεύματι·

Ἐκ παραμύθων αὐτῶν θεοφάνη:

Ἐκ λουκᾶ:

Ἦν ἐκ τῆς πεντέ καὶ δεκάτης τῆς ἡγεμονίας
 τῆς κερκυραίας καὶ σαροῦ ἡγεμονάρχου πορτί-
 ου πλάτου τῆς ἰουδαίας· καὶ τετραρχῶν
 τῶν γαλιλαίας ἡρώδου· φιλιππου δὲ
 τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ τετραρχῶν τῶν τῆς
 ποικιλίας καὶ τραχυνίτιδος χώρας· καὶ χυ-
 σαρίου τῆς ἀβιγνῆς τετραρχῶντος ἐπὶ ἀρ-
 χι ἐρέως ἀνυῖα καὶ καὶ αἰφᾶ· ἐγένετο ῥῆ-
 μα θῦ ἐπὶ ἰωάννῳ τῷ βαπτιστῇ ἐν τῇ
 ἐρήμῳ· καὶ ἦλθεν εἰς πᾶσαν τὴν πε-
 ρὴν τοῦ ἰορδάνου· κηρύττων βαπτίζων
 μετανοίας εἰς ἄφθον ἁμαρτιῶν· ὡς γέ-
 γραπταὶ ἐν βιβλῶν· ἡσαΐου τοῦ προ-
 φῆτου· λέγοντος· φωνὴ βοῶντος ἐν τῇ
 ἐρήμῳ· ἐτοιμάσατε τὴν ὁδὸν κυ· δὲ
 θείας ποιεῖτε τὰς τρίβους αὐτοῦ· πᾶ-
 σαι φάρμακον πληρωθῆσθαι· καὶ πανόρος
 καὶ βοιωὸς ταπεινωθῆσθαι· καὶ ἔσαι
 τὰ σκολιά· εἰς δὲ θεῖαν καὶ αἰτραχῆ·
 εἰς ὁδοὺ λήσας· καὶ ὄψεται πᾶσα σὰρξ
 τὸ σῶμα τοῦ θῦ· ἐλέγνον οὖν τοῖς
 παρανομικοῖς ὄχλοις· βαπτισθῆναι ὑ-
 παύτου· γεννήματα ἐχιδνῶν· τίς
 ὑπέδειξεν ὑμῖν φυγεῖν ἀπὸ τῆς μελλού-
 σης ὀργῆς· ποιήσατε οὖν καρποὺς ἁ-
 γίου τῆς μετανοίας· καὶ μὴ ἀρξάσθε
 λέγειν ἐν ἑαυτοῖς· πρῶτον ἔχομεν τὸν
 αἰῶνα· λέγω γὰρ ὑμῖν· ὅτι δύνανται

ὅθ' ἐκ τῶν λίθων τούτων ἐχέουσι τέκνα
τῶν αἰνῶν + ἔβη δὲ καὶ ἡ ἀξίμη· πρὸς
τῶν ῥίζαν τῶν δένδρων κείται· πάντων οὖν
δένδρων μὴ ποιοῦν καρπὸν καλόν· ἐκ
κόπτεται καὶ εἰς πῦρ βάλλεται· καὶ ἐ-
πιρῶ των αὐτῶν οἱ ὄχλοι· λέγοντες· τί οὖν
ποιήσωμεν· ἀποκριθεὶς δὲ λέγει αὐτοῖς·
ὁ ἐχὼν δρόχον τῶν ραβδῶν· μεταδίδω τῶν μέ-
λων τῶν ἐχόντων· καὶ ὁ ἐχὼν βρώματα ὁμοίως
ποιεῖτω· ἔλθοι δὲ καὶ τελῶσαι βαπτί-
σθαι· καὶ εἶπον πρὸς αὐτόν· Μὴ δα-
σκαλε· τί ποιήσωμεν· ὁ δὲ εἶπεν πρὸς
αὐτοὺς· μὴ δὲν πλέον παρὰ τὸ δῶκε-
ταμεν ὑμῖν πράξετε· ἐπιρῶ-
των δὲ αὐτῶν καὶ γραταόμενοι· λέγοντες·
καὶ ἡμεῖς τί ποιήσωμεν· καὶ εἶπεν πρὸς
αὐτοὺς· μὴ δὲν ἀδιασείσητε· μὴ δὲ σὺ-
κοφαντήσητε· καὶ ἀρκείσθε τοῖς ὀφει-
οῖς ὑμῶν· πρὸς δὲ κῶν τοσδε τοῦ λαοῦ
καὶ διαλογίζομεν ὧν πάντων ἐν ταῖς
καρδίαις αὐτῶν περὶ τοῦ ἰωάννου· μέ-
ποτε αὐτὸς εἰσερχέσθαι· ἀπεκρίνατο
ὁ ἰωάννης ἀπαντὶ λέγων· ἐγὼ μὲν ὕ-
δατι βαπτίζω ὑμᾶς· ἐρχεται δὲ ὁ ἰσχυ-
ρότερός μου οὗ οὐκ εἰμὶ ἱκανὸς λῦσαι
τὸν ἵμαρτα τῶν ὑποδημάτων αὐ-
τοῦ· αὐτὸς ὑμᾶς βαπτίσει ἐν πρῆ-
πῳ καὶ πυρὶ· οὐ τὸ πτύον ἐν τῇ χει-
ρὶ αὐτοῦ· καὶ διακαθαρίσει τὴν ἄλωνα,

αὐτοῦ· καὶ σὺν ἀξίει τὸν σίτον εἰς τὴν ἀ-
ποθήκην αὐτοῦ· τὸ δὲ ἄχρον κατὰ καίσει
πυρὶ ἀσβέσω· πολλὰ μὲν οὖν καὶ εἴ-
τερα παρακαλῶν ἀνελίβητο τὸν λαόν·
τὰς γὰρ θεοφάρια τοῦ κυρίου ἡμῶν ἰσχύει· ^{πρὸς ὅσον πρὸς ἡμᾶς}
φωρὴν κυρίου ἐπὶ τὸ ὕδωρ· ^{ἐπὶ} μέγατε τὸ κυρίου· ^{ἡμᾶς}

Τὼ καιρῶ ἐκείνῳ· ἦλθεν οἱ σὺν ἀπομαζαρε-
τῆς Γαλιλαίας· καὶ ἐβαπτίσθη ὑπὸ ἰω-
άννου εἰς τὸν ἰορδάνην· καὶ ἀθέωσ-
αν βαῖνον ἀπὸ τοῦ ὕδατος· εἶδεν οὐ-
χί· ζομενοὺς τοῖς οὐνοῖς· καὶ τὸ πρῶτον αὖτε
περισερᾶν κατὰ βαῖνον ἐπαύτο· καὶ
φωρὴ ἐγένετο ἐπὶ τὸν κύριον· σὺ εἶ
οἱ υἱός μου ὁ ἀγαπῆτός, ἐν ᾧ ἐνδόξασαι·
^{εἰς τὸν λαόν} καὶ ^{ἡμᾶς}

Τὼ καιρῶ ἐκείνῳ· παραγίγεται οἱ σὺν ἀ-
πο τῆς γαλιλαίας ἐπὶ τὸν ἰορδάνην,
πρὸς τὸν ἰωάννην τοῦ βαπτισθῆναι ὑ-
παὐτοῦ· ὁ δὲ ἰωάννης διεκόλυσεν
αὐτὸν λέγων· ἐγὼ χρεία ἔχω ὑποσού-
βαπτισθῆναι, καὶ σὺ ἐρχῇ πρός με·
ἀπὸ κριθείς δὲ οἱ σὺν εἶπεν πρὸς αὐτόν·
ἀφ' ὧ ἀρτί· οὗτος γὰρ πρέπομ ἐστὶν ἐν
μῇ πληρῶσαι πάσαν δικαιόσιν·
τότε ἀφίεισιν αὐτόν· καὶ βαπτισθεὶς,
ὁ ἰσὺς ἀνέβη ἀπὸ τοῦ ὕδατος· καὶ ἰ-
δὼν ἀνέχθισαν αὐτῷ οἱ οὐνοὶ, καὶ εἶ-
δε τὸ πρῶτον τοῦ θύ κατὰ βαῖνον αὐτὸν πε-
ρισερᾶν, καὶ ἐρχόμενον πρὸς αὐτόν·

καὶ ἰδοὺ φωνὴ ἐκ τῶν οὐρανῶν λέγουσα·
οὗτος ἐστὶν ὁ υἱός μου ὁ ἀγαπητός ἐν ᾧ ἐ-
δόκη (α): ~

3
47. ματ
2
Ἡσώαξις τοῦ ἁγίου πνεύματος πρὸς καὶ βαπτί-
σματος· ὡς καὶ ὁ ἐκείνῳ· ἔλεπε ὁ ἱωάννης τὸν
ἱὸν ἐρχόμενον καὶ λέγει· ἰδὲ ὁ ἄγγελος τοῦ
θεοῦ ὁ ἁγίων πνεῦμα ἀμαρτίαν τοῦ κόσμου·
οὗτος ἐστὶν περὶ οὗ ἐγὼ εἶπον· ὁπίσω
μου ἐρχέσθαι ἄγγελος ὃς ἐμπροσθέν μου ἡ-
γορεῖ· ὅτι πρῶτος μου εἰμι· καὶ ἡ οὐ
κὴδὲν αὐτὸν, ἀλλ' ἵνα φανερωθῇ τῷ ἱσχυ-
ρὸν τοῦ ἡλθόντος ἐγὼ ἐν τῷ ὕδατι καπτι-
ζων· καὶ ἐμαρτύρησεν ὁ ἱωάννης λέ-
γων· ὅτι τεθέσται τὸ πρῶτον κατὰ βα-
πτισμῶς περισσεῖν ἐξ ὕδατος, καὶ ἐμνησθῇ
ἐπαύτῳ· καὶ ἡ οὐκ ἔστιν αὐτὸν, ἀλλ' ὅ
πέμψας με βαπτίζειν ἐν ὕδατι· ἐκεῖ-
νος μοι εἶπεν· Ἐφ' ὃν ἂν ἰδῇς τὸ πρῶτον
κατὰ βαπτισμὸν καὶ μένον ἐπαύτῳ·
οὗτος ἐστὶν ὁ καπτιζων ἐν πρὶν ἁγίῳ· καὶ
ἡ ἐώρακα καὶ μεμαρτύρηκα, ὅτι
οὗτος ἐστὶν ὁ υἱὸς τοῦ θεοῦ· ~

(αὐτὰρ μετὰ τὸ φῶς: κτ' ματθαίου:

Καὶ ῥῶς ἐκῆνω· ἀμήχθη δ' οἷός τις
 πῦρ ἐρήμον· ὑπὸ τοῦ πῦρ πειρασ-
 θῆναι ὑπὸ τοῦ ὀφθαλμοῦ· καὶ κηρύ-
 σαι ἡμέρας τεσσαράκοντα· καὶ κη-
 ρύσαι τεσσαράκοντα, ἕτερον ἐπι-
 ράσεν· καὶ προσελθὼν αὐτῷ ὁ πειρά-

ζων εἶπεν· εἰ ὑὸς εἶ τοῦ θῦ· εἰ πείμαι οἱ
 λίθοι οὗτοι ἄρτοι γένωνται· ὁ δὲ ἀποκρι-
 θεὶς εἶπεν· γέγραπται· οὐκ ἐπ' αὐτῷ μό-
 νω ζήσεται ἄνθρωπος, ἀλλ' ἐπὶ παντὶ ῥήματι.
 σὺ ποραιομένω δ' ἡσάματος θῦ· τότε
 παραλαμβάνει αὐτὸν ὁ δὲ ἄβολος εἰς τὴν
 ἀπὸ πόλιν· καὶ ἵσχυισεν αὐτὸν ἐπὶ τὸ
 πτερύγιον τοῦ ἱεροῦ, καὶ λέγει αὐτῷ· εἰ
 ὑὸς εἶ τοῦ θῦ· καί λησέ αὐτὸν καὶ τῷ· γέγρα-
 πται γὰρ ὅτι τοῖς ἀγγέλοις αὐτοῦ, ἐν τελεί-
 τε περὶ σοῦ· καὶ ἐπὶ χειρῶν ἀγγέλων σου·
 μήποτε προσκύνῃς πρὸς λίθον τὸν πόδα
 σου· ἔφη αὐτῷ ὁ ἰσ· πάλιν γέγραπται·
 οὐκ ἐκπειράσεις κύριον τὸν θεόν σου· πάλ-
 λιν παραλαμβάνει αὐτὸν ὁ δὲ ἄβολος·
 εἰς ὄρος ὑψίλον λίαν· καὶ δείκνυσιν
 αὐτῷ πᾶσας τὰς βασιλείας τοῦ κόσμου
 καὶ τὴν δόξαν αὐτῶν· καὶ λέγει αὐτῷ·
 ταῦτα πάντα σοὶ δώσω, εἰ ἂν πτωῶν
 προσκυνήσῃς μοι· τότε λέγει αὐτῷ
 ὁ ἰσ· ὕπαγε ὀπίσω μου σατανα·
 γέγραπται γὰρ· κύριον τὸν θεόν σου προσ-
 κυνήσεις· καὶ αὐτῷ μόνῳ λατρεύ-
 σεις· τότε ἀφίησιν αὐτῷ ὁ δὲ ἄβο-
 λος· καὶ ἰδοὺ ἀγγελοι προσήλθον καὶ
 ᾤκον αὐτῷ·

κυριακὴ μετὰ τὰ φῶς· καὶ ματθαῖον·

Καὶ ῥῶ εὐδῆρῳ· ἀκούσας ὁ ἰσ· ὅτι ἰω-
 ἀννης παρεδόθη, ἀνεχώρησεν εἰς τὴν

γαλιλαίαν· καὶ κατὰ λειπὼν τὴν μα-
 ζαρέτ· ἐλθὼν κρητὴν κησεν εἰς καπερνα-
 οὐμ τὴν παραθαλασσίαν· ἐν ὁρίοις ζα-
 βουλῶν καὶ μεφθαλείμ· ἵνα πληρω-
 θῇ τὸ ρήθιν ὁ Ἰακώβου τοῦ προφήτου
 λέγοντος· γῆ ζαβουλῶν καὶ γῆ μεφθα-
 λείμ· ὁ δὲν θαλάσσιος πέρας τοῦ ἰσραὴλ
 μου· γαλιλαίαν τῶν ἐθνῶν· ὅλας οὐ-
 καθήμενος ἐν σκοτίᾳ· εἶδεν φῶς μέγα·
 καὶ τοῖς καθήμενοις ἐν χώρα καὶ σκι-
 ἀι θαλάσσης φῶς ἀνέτειλεν αὐτοῖς·
 ἀπο τότε ἤρξατο ὁ ἰσὺς κηρύσσειν καὶ
 λέγειν· μετανοεῖτε· ἡ γὰρ κεν γὰρ εἰς
 βασιλείαν τῶν οὐρανῶν·

- 7 μεθέορ ^{ζητῶν τῆς δόξης} καὶ τῶν ἁγίων ^{του} ιουλιανού
 καὶ βασιλίστου· ^{ζητῶν τῆς δόξης} τοῦ ματ.
 8 μεθέορ ^{ζητῶν τῆς δόξης} καὶ τῶν ἁγίων ^{του} πολυεύκτ· ^{ζητῶν τῆς δόξης} τοῦ λου.
 9 μεθέορ ^{ζητῶν τῆς δόξης} καὶ τοῦ ἁγίου γρηγορίου
 ἐπισκοπῶντος· καὶ ὁ δὲ μετὰ τὴν μελιτινή· ^{ζητῶν τῆς δόξης} τοῦ λου.
 10 μεθέορ ^{ζητῶν τῆς δόξης} καὶ τοῦ ἁγίου πρῶτου θεοδοσίου
 τοῦ κοινομάρχου· ^{ζητῶν τῆς δόξης} τοῦ λου.
 11 μεθέορ καὶ τῆς ἁγίας ^{του} ιουλιανῆς καὶ πρῶ-
 τῆς τατιανῆς· ^{ζητῶν τῆς δόξης} τοῦ λου.
 12 μεθέορ καὶ τῶν ἁγίων ^{του} ερμίου καὶ στρατονίου ^{του} λου.
 13 πρῶτος πρῶτος ἁβραάμ· ^{ζητῶν τῆς δόξης} τοῦ λου.
 14 πρῶτος πρῶτος πάλου τοῦ θη καὶ καὶ ἰωάν-
 νη καὶ τοῦ· ^{ζητῶν τῆς δόξης} τοῦ λου.
 15 Ἡ πρῶτος καὶ ἡ σὺς τῆς πρῶτης ἀποστο-
 λου πέτρου· ^{ζητῶν τῆς δόξης} τοῦ λου.

ὡς καιρῶς ἐκείνῳ· ἀνὴρ γὰρ οἱ γονεῖς τοῦ
 παιδίου ἱμ', εἰς ἑεροσόλυμα· παραστή-
 σαι τῷ κυῖ καθὼς γέγραπται ἐν νόμῳ κυ· ὅτι
 πᾶν ἄρσεν δι' ἀρόγον μὴ τὰν ἄξιον τῷ κυ
 κληθήσεται· καὶ τοῦ δδῶναι θυσίαν κατὰ
 τὸ εἰρημένον ἐν νόμῳ κυ· ζάχος τρυφώ-
 ρων· ἡ δὲ δόξα αὐτοῖς περισσεύει·
 καὶ ἰδοὺ κυ ἄρσος ἐν ἑρουσαλήμ, ὡς ὄνο-
 μα σὺ μωρ· καὶ ὁ ἄρσος οὗτος δὲ και-
 ρος καὶ ἀλαφρὴ· πρὸς δεχόμενος παρὰ
 κλησὶν τοῦ ἱηλ· καὶ πρῶτον κυ ἁγίον ἐπαύ-
 τόν· καὶ κυ αὐτῷ κεχρηματῖς μένον
 ὑπὸ τοῦ πρῶτος τοῦ ἁγίου· μὴ ἰδεῖν θάνα-
 τον· πρὶν ἢ ἰδεῖν τὸν κυ· καὶ ἦλθεν
 ἐν τῷ πρῶτῳ εἰς τὸ ἑρὸν· καὶ ἐν τῷ εἶσαι
 γὰρ τοῖς γονεῖς τοῦ παιδίου ἱμ'· τοῦ ποι-
 ῆσαι αὐτοῖς κατὰ τὸ εἶθισμένον τοῦ
 νόμου περὶ αὐτοῦ· καὶ αὐτοὶ ἐδέξα-
 το εἰς τὰς ἀγκαλάς αὐτοῦ· καὶ ἀλό-
 γισεν τὸν θυμὸν καὶ ἔπεν· μὴ ἀπολύ-
 εις τὸν δούλον σου δάσσοτα κατὰ τὸ ῥή-
 ματος ἐν ῥήμει· ὅτι εἶδον οἱ ὀφθαλ-
 μοί μου τὸ σπρίον σου· ὃ ἡτοίμασας κα-
 τὰ πρόσωπον πάντων τῶν λαῶν· φῶς
 εἰς ἀποκάλυψιν ἐθνῶν· καὶ δέξαμεν λαοῦ
 σου ἱηλ· καὶ κυ ἰωσήφ καὶ ἡ μηρ' αὐ-
 τοῦ θαυμάζοντες ἐπὶ τοῖς λαλοῦ με-
 ροῖς περὶ αὐτοῦ· καὶ ἀλόγισεν αὐτοῖς
 σὺ μωρ· καὶ εἶπεν πρὸς μαριὰμ τὴν

τὸν
 ἡ τοῦ
 σὺ μωρ

τοῦ

μὲν αὐτοῦ· ἰδοὺ οὕτως καὶ ταῖς πῶσιν
 καὶ ἀράσασιν πολλῶν· ἐν τῷ ἱηλ· καὶ εἰς
 σημεῖον ἀντίλεγομεν· καὶ σοὺ δὲ αὐ-
 τῆς τῆς ψυχῆς δι' ἐλπίσιν ῥομφαία·
 ὅπως ἂν ἀποκαλυφθῶσιν ἐκ πολλῶν
 καρδιῶν διάλογισμοι· καὶ ἰὼ ἀρμῶν
 προφήτης θύγατερ φαῖου ἡλ· ἐκφυλῆς
 αἰσῆρ· αὐτὴ προβεβηκίαν ἐν ἡμέραις
 πολλαῖς· ζήσασα ἔτι μετὰ ἀνδρῶς ἐπὶ τῷ
 ἀπὸ τῆς παρθενίας αὐτῆς· καὶ αὐτῇ χή-
 ρα ὡς ἐτῶν ὀγδοήκοντα τεσσάρων· ἡ
 οὐκ ἀφίστατο ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ νησεΐαις καὶ
 δέησεν λατρεύουσα κύματα καὶ ἡμέραν·
 καὶ αὐτὴ αὐτῇ τῇ ὥρᾳ ἐπίστασα ἀνθω-
 μολογίῃ τοῦ κῶ καὶ ἐλάλει περὶ αὐτῆς·
 πᾶσι τοῖς πρὸς δεχόμενοις λύτρωσιν ζῶ-
 ῖ ἡμῶν· καὶ ὡς ἐτέλεσαν ἅπαντα
 τὰ κατὰ τὸν νόμον κῶ· ὑπέστρεψαν
 εἰς τὴν γαλιλαίαν εἰς τὴν πόλιν αὐτῶν
 ναζαρέτ· τὸ δὲ παιδίον ἡύξατο· καὶ
 ἐκραταιοῦτο πρὶ· πληρούμενον σοφί-
 ας· καὶ χάρις θῷ ἰὼ ἐπ' αὐτῷ·

τοῦ α

- 7 τοῦ α καὶ δὲ καὶ συμεῶν· καὶ ἀρμῆς τῆς προ-
 φητείας· ζῆ γὰρ τῆς ἐσθ' ἐκ τῆς ἐλπί· γὰρ μὲν·
 8 τοῦ α καὶ πρὸς ἡμῶν ἰσχυροῦ τοῦ πηλοισιῶτ·
 9 ζῆ τῆς παρὰ τῆς β' ἐκ τῆς τοῦ λουκά·
 10 τῆς α καὶ ἡ ἀγάθης· ζῆ τῆς ἐκ τῆς γ' ἐκ τῆς λου·
 11 τοῦ α καὶ βουκὸς ἐπιστῶν ἐκ τῆς ζῆ· σα ζ' τοῦ λου·
 12 τοῦ α καὶ παρθενί· ἐπιστῶν ἐκ τῆς ζῆ· ἐκ τῆς γ'

4 πρῶτος προφήτης Ζαχαρίου ἐν τῶν 15. ζή' τη' ε' της α' του
 και' τ' α' μ' / με' θεοδώρου του στρατηλάτη: ζή' σα' ε' του πατ'
 5 του α' με' μικροφύρου: ζή' σα' ε' του πατ'
 6 του α' ιερομε' χαλαρόποιου: ζή' τη' ε' της β' του πατ'
 7 του α' ιερομε' βλασίου: ζή' κ' του α' του πατ'
 8 των α' πρῶτος μελεπίου οὐτιοχί και' αὐτῶν
 9 κων' / πόλεως: ζή' σε πτε' ε'
 10 του ε' / πρῶτος με' μαρτιριανού: ζή' τη' ε' της δ' του πατ'
 11 του ε' / πρῶτος με' ανξενίου: ζή' μο' ε' α'
 12 του α' αποστόλου οὐκισίμου: ζή' σα' ε' του πατ'
 13 του α' ιερομε' παμφίλου και' της (νωδ)ας
 14 αὐτοῦ: ζή' τη' ε' της β' του πατ'
 15 του α' με' θεοδώρου του τύρα: ζή' π' της α' του πατ'
 16 των α' πρῶτος με' λαόν βώμιος και' φλαβιαν'
 17 κων' / πόλεως: ζή' σε πτε' β'
 18 των α' με' με' μαξίμου θεοδώρου και' ασκλη
 19 ποδώρου: ζή' α' του πατ'
 20 του ε' / πρῶτος με' παφμουτίου: ζή' π' της β' του πατ'
 21 του α' α' σαθόρου αν'τιοχίας και' τ' ο' / πρῶτος με'
 22 Τιμοθέου του εὐσὺμβόλου: ζή' τη' π' της β' του πατ'
 23 των α' με' των εὐτοις α' η' / ζή' α' του πατ'
 24 του α' ιερομε' πολυκα' / επισκ' / με' / ζή' τῶν
 25 **Ε**ἰ πενθὸς τοῖς εἰ αὐτοῦ μαθηταῖς. Ε'
 26 αὐτὸς ὁ κύκλος τοῦ σίτου πτωχὸν εἰς τὴν
 27 γῆν ἀποθάψει, αὐτὸς ὁ κύκλος μένει. Ε'
 28 αὐτὸς ἀποθάψει, πολὺν καρπὸν φέρει.
 29 ὁ φίλων τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, ἀπολέσει αὐ
 30 τὴν. καὶ ὁ μισῶν τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἐν
 31 τῷ κόσμῳ τοῦ πᾶν, εἰς ζωὴν αἰώνιον φέρεται.

λάξει αὐτῶν· ἐὰν ἐμοὶ δῶκεν εἰ τίς· ἐ
μοὶ ἀκολουθήτω· καὶ ὅπου εἰ μὴ ἐγὼ·
ἐκθ' καὶ ὁ δῶκεν ὁ ἐμὸς ἔσται· καὶ
ἐὰν τις ἐμοὶ δῶκεν, τί μὴ σὺ αὐτὸν ὁ
πῆρ· εἰ περὶ αὐτοῖς οἷός· ἐπὶ μὲν ὁ
χρόνον τὸ φῶς μεθ' ὑμῶν ἔσται· περιπατεῖ
τε ἕως τὸ φῶς ἔχει· ἵνα μὴ σκοτία
ὑμῶν καταλάβῃ· καὶ ὁ περιπατῶν
ἐν τῇ σκοτίᾳ, οὐκ οἶδε ποῦ ὑπάγει· ἕως
τὸ φῶς ἔχει· πῶς ἔχει τὸ φῶς· ἵνα
ὑοὶ φωτὸς γένηθε· ~

- α) μαρτυροῦν τῆς πίστεως κεφαλὴ τοῦ τιμῆ προφῆ
πρὸς καὶ βαπτιστῶν· ζήτῃ τῆς ἐκκλησίας τῆς τοῦ λου
κ) τοῦ ἐκκλησιαστικοῦ πρὸς ἡμᾶς· ταρασὶ ἐπισκοπῶν κωνσταν
πόλεως· ζήτῃ σε πᾶσι
κ) τοῦ ἁγίου πορφυρίου ἐπισκοπῶν γαλιλίας· καὶ τῆς ἁγίας
μακαρίου· ἱεροσολύμων· ζήτῃ σε πᾶσι
κ) τοῦ ἁγίου πρὸς ἡμᾶς προκοπῇ τοῦ δεκάλογου· ζήτῃ σε πᾶσι
κ) τοῦ ἁγίου καὶ ὁμολογῆσαι βασιλεῖ· ζήτῃ πᾶσι τῆς ἐκκλησίας
κ) ἡ ἐκκλησία τῶν ἁγίων ἡμεῖς παπῶν· διοδώρου
καὶ κλαυδίου· ~ ζήτῃ τῆς ἐκκλησίας τῆς τοῦ λου
~~ἐκκλησία~~ τῆς ἐκκλησίας ἡμεῖς λαὸς ἡμεῖς ἐκκλησία ἡμεῖς ἐκκλησία
α) τῆς ἐκκλησίας ὅσοις εὐδοκίᾳ· ζήτῃ τῆς ἐκκλησίας τῆς ἐκκλησίας
β) τοῦ ἁγίου ἱεροῦ θεοδώρου ἐπισκοπῶν κερύν· ζήτῃ πᾶσι τῆς ἐκκλησίας
γ) τῶν ἁγίων ἡμεῖς εὐτροῦ κλεονί· καὶ βασιλῆς· ζήτῃ πᾶσι τῆς ἐκκλησίας
δ) τῶν ἁγίων ἡμεῖς παύλου καὶ σουλιανού τῶν ἁγίων
ταδελέφων· ζήτῃ τῆς ἐκκλησίας τῆς ἐκκλησίας
ε) τοῦ ἁγίου ἡμεῖς κόνωνος· καὶ ἡ σιχίου πρεσβυτέρου
ρου ἱεροσολύμων· ζήτῃ τῆς ἐκκλησίας τῆς ἐκκλησίας

- 5 τῶν ἀπὸν μὲν ἔφε τῶν σκαμοῦν· ζή τῇ πρὸ τῆς ἐκ τῆς ματ
 6 τῶν ἀπὸν ἔφε τῶν ἐν χειρὶ ἐπισηπιοῦν
 7 βασιλέως· ἐφραῖμ καπὶ τῶν· καὶ τῶν λοιπῶν·
 8 τοῦ ἀπὸν θεοφυλάκτου ἐπισηπιοῦ
 9 μικροῦ τοῦ ὁμοῦ· ζή τῇ πρὸ τῆς ἐκ τῆς ματ
 10 τῶν ἀπὸν μὲν ἔφε τῶν ἐν σκαμοῦν· ζή τῇ πρὸ τῆς ἐκ τῆς ματ
 11 τοῦ ἀπὸν κοδράτ τοῦ ἐν κορίν· ζή τῇ πρὸ τῆς ἐκ τῆς ματ
 12 τοῦ ἀπὸν σοφονί· ἀρ ἐπισηπιοῦ· ἱεροσόλυμ· ζή τῇ πρὸ τῆς ἐκ τῆς ματ
 13 τοῦ ἐπὶ πρὸς ἡμῶν θεοφάτ τοῦ ὁμοῦ· ζή τῇ πρὸ τῆς ἐκ τῆς ματ
 14 ἡρακομὴ τοῦ λεϊφάν τοῦ ἐν ἀπὸν πρὸς ἡμῶν μικροῦ
 15 κωνσάν· πόλε· ζή τῇ πρὸ τῆς ἐκ τῆς ματ
 16 τοῦ ἀπὸν ἔφε ἀλεξάν· τοῦ ἐν πύδνα· ζή τῇ πρὸ τῆς ἐκ τῆς ματ
 17 τοῦ ἀπὸν τῶν τοῦ ἐν ρουφούταρ· καὶ τοῦ ἐπὶ ἐνεδύκτ
 18 τοῦ ἐν ρῶ· καὶ τοῦ ἀπὸν ἱερομάτ διορίου·
 19 ζή τῇ πρὸ τῆς ἐκ τῆς ματ
 20 τῶν ἀπὸν ἔφε τροφήμ καὶ θάμου· ζή τῇ πρὸ τῆς ἐκ τῆς ματ
 21 τοῦ ἐπὶ πρὸς ἡμῶν ἀλεξίου τοῦ ἀπὸν τοῦ θύ·
 22 ζή τῇ πρὸ τῆς ἐκ τῆς ματ
 23 τοῦ ἐν ἀπὸν πρὸς ἡμῶν κυρί· ἱεροσόλυμ· ζή τῇ πρὸ τῆς ἐκ τῆς ματ
 24 τῶν ἀπὸν ἔφε τρισηπιοῦ καὶ δαρίασ· ζή τῇ πρὸ τῆς ἐκ τῆς ματ
 25 τῶν ὁσὶ πρῶν ἡμῶν τῶν ἀπὸν ρεθῶν ἐν μὲν τοῦ ὁσὶ
 26 πρὸς ἡμῶν σάμβαν· ζή τῇ πρὸ τῆς ἐκ τῆς ματ
 27 καὶ τοῦ ἐπὶ ἱακώμ ἐπισηπιοῦ καὶ τοῦ ἐπὶ ἀμαρίου·
 28 καὶ τοῦ ἀπὸν ἔφε ἀρτέμονος· ζή τῇ πρὸ τῆς ἐκ τῆς ματ
 29 τοῦ ἀπὸν ἱεροῦ βασιλέα καὶ τῶν ἐπισηπιοῦ· ζή τῇ πρὸ τῆς ἐκ τῆς ματ
 30 τοῦ ἐπὶ νίκωνος· καὶ τῶν σκαμοῦν· ζή τῇ πρὸ τῆς ἐκ τῆς ματ
 31 τοῦ ἀπὸν ἱεροῦ ἀρτέμονος· ζή τῇ πρὸ τῆς ἐκ τῆς ματ
 32 οὐρίος ἀναγελις μὲν τῆς πρὸ τῆς ματ· ζή τῇ πρὸ τῆς ἐκ τῆς ματ
 33 μνησθήσων τῶν ὁμοῦ· ἀκωσθίαν· ζή τῇ πρὸ τῆς ἐκ τῆς ματ

Κύριε ἡμεῖς ἐκείναις· σὺ ἐλάβες
 ἡ ἐλίσσας βε ἡ γὰρ ἡ ζαχαρίου· καὶ περιέχευ
 βεν ἐαυτὴν ἡμεῖς πεύτε λέγοισαι· ὅτι οὕτως
 μοι πεποίηκεν ὁ κς· ἐν ἡμέραις αὐτοῦ ἐπεὶ
 δὲ ἀφ' ἐλὶν τὸ ὄνειδος μου ἐν ἁρτίῳ· ἐν
 δὲ τῷ μηνὶ τῷ ἐκείνῳ ἀπεστάλη ὁ ἀρχάγγελος
 γαβριήλ ὑπὸ τοῦ θυ εἰς πόλιν τὴν γαλιλαί
 ας ἡ ὄνομα μαζαρέτ, πρὸς παρθενομ με
 μνησαμένην ἀνδρὶ, ὡ ὄνομα ἰωσήφ·
 ἐξ οἴκου δαὲ· καὶ τὸ ὄνομα τῆς παρθε
 ρου μαριάμ· καὶ εἰσελθὼν ὁ ἄγγελος
 πρὸς αὐτὴν εἶπε· χαῖρε κεχαριτωμένη
 ὁ κς μετὰ σοῦ· ἀλογημένη σου ἐν γυναι
 ζίν· ἡ δὲ ἰδοῖσαι διέταράχθη ἐπὶ τῷ λό
 γῳ αὐτοῦ· καὶ διέλογίζετο· ποταπὸς εἴη
 ὁ ἀσπασμὸς οὕτως· καὶ ἦπεν ὁ ἄγγελος
 αὐτῇ· μή φοβοῦ μαριάμ· ἔρτω γὰρ χάριν
 παρὰ τῷ θῷ· καὶ ἰδοῦ σου μήτηρ ἐν γαστρὶ
 καὶ τέξῃ υἱόν· καὶ καλέσεις τὸ ὄνομα αὐ
 τοῦ υἱοῦ· οὗτος ἔσται μέγας, καὶ υἱὸς υἱί
 σου κληθήσεται· καὶ δώσει αὐτῷ κς ὄθρ
 τὸν θρόνον δαὲ τοῦ πρὸς αὐτοῦ· καὶ βα
 σιλεύσει ἐπὶ τὸν οἶκον ἰσραὴλ εἰς τοὺς
 αἰῶνας· καὶ τῆς βασιλείας αὐτοῦ οὐκ ἔ
 σται τέλος· εἶπεν δὲ μαριάμ πρὸς τὸν
 ἄγγελον· πῶς ἔσται μοι τοῦτο; ἐπεὶ ἄν
 δραιοῦ ἥ γὰρ καὶ· καὶ ἀποκριθεὶς ὁ ἄγγε
 λος εἶπεν αὐτῇ· πᾶν ἄξιον ἐπὶ λαοῦται
 ἐπὶ αὐτῇ· καὶ δύνανται υἱὸς σου ἐπισκιάσει

σοι· ὁ δὲ καὶ τὸ ἐνόμενον ἄκουσθηθήσε-
ται ἡ δὲ θύ· καὶ ἰδοὺ ἐλίσσεται ἡ σιγή
ῥήσους· καὶ αὐτὴ (σωθληφ) ἡ αὐτὴ ἐν γῆρ
αὐτῆς· καὶ οὗτος μὴν ἐκ τὸς ἐστὶν αὐτῇ
τῇ καλουμένης εἶρα· ὅτι οὐ καδῶσα
τίσει παρὰ τῷ θῷ παρρημα· εἶπε
δὲ μαρι ἄμ· ἰδοὺ ἡ δούλη καὶ γένοιτό μοι
κατὰ τὸ ῥήμα σου· καὶ ἀπήλθεν ἀπ' αὐ-
τῆς ὁ ἀγγελος· ~

- κτ τοῦ ἀφ' ἑραπίου γαβριήλ· ζή' ὁ κτ' ἡ
κτ τῆς ἀπ' ματρὶ τῆς ἐνθεσαλωνί· ζή' σα' ἡ τ' ματ
κτ τοῦ ὁσι' πρὸς ἡμ' ἡλαρίων· τοῦ θανμά· ζή' π' τ' ῥ' αὐτ' λ'
κτ τοῦ ὁσι' πρὸς ἡμ' ἡ ἰω' ἱεροσολύμ· ζή' σε πτε' γ'
λ τοῦ ὁσι' πρὸς ἡμ' ἡ ἰω' τοῦ γραφίως τῆς κλ' μα'·
ζή' τῆς ἐτῆς ὅ' εἰ' τοῦ ματ·
λα τῶν ἀπ' ἡφ' ἐμ' ἐν ἀνδρ' καὶ μεοφύ· ζή' τῆς γ' τ' ἰβ' εἰ' τοῦ λου·
α τῆς ὁμαρί' τῆς αἰγυπ'· ζή' τῆς β' τῆς εἰ' τοῦ λου·
β τῶν ἀπ' ἡφ' ἐπιφανίου καὶ εδεσίου καὶ τῆς
(σωθ) ἡσ' αὐ· ζή' σα' τ' τοῦ λου·
γ τοῦ ὁσι' πρὸς ἡμ' ἡ κη' ἡ γουμέν' του μηδικ'·
ζή' τῆς ε' τῆς ὅ' εἰ' τοῦ ματ·
δ τῶν ἀπ' ἡφ' θεοδου' ἀμαθόποδος καὶ ἰω' φήφ
τοῦ ὕμνογράφου· ζή' τῆς γ' τῆς ἰβ' εἰ' τοῦ λου·
ε τοῦ ὁσι' γεωρ' τοῦ ἐν μαλαί· ζή' ἡ γ' γ' τῶν μηδ'·
ς τοῦ ἀ' ευτυχίου ἐπιστῶ' κωνσταντ'· ζή' σε πτε' γ'
ζ τοῦ ἀ' γεωρ' ἐπιστῶ' μετυλ'· ζή' σε πτε' γ'
η τῶν ἀγίων ἀποστόλων ἡρωδῶνος ἀγάβου
καὶ τῶν λοιπ'· ζή' σα' ζ' τοῦ λου·

ς Τῆς αὐτῆς εἰρήνης· καὶ τῆς αὐτῆς ἀφοδοῦ καὶ τῶν
 λοιπῶν· ζῆτῆς τῆς εὐπλοῦς τοῦ λούου
 ε Τῆς αὐτῆς παρὰ τῆς πελαγίας· ζῆτῆς τῆς τοῦ ματ
 ς τοῦ αὐτοῦ καὶ δὲ καίου· ἰωβ· ζῆτῆς τῆς εὐπλοῦς τοῦ ματ
 ζ τοῦ αὐτοῦ καὶ δὲ καίου· καὶ τοῦ ἐνοῦν ὡς φανέντος
 ἐν μέσῳ τοῦ σπύου· ζῆτῆς τῆς πρὸ τῆς εὐπλοῦς
 ιβ τοῦ αὐτοῦ ἀποσῶ καὶ δὲ τῶν τοῦ θεολοῦ·

καὶ ἰωβ ἀνέκω·

καὶ ῥῶς ἐκδῶ· εἰς τὴν ἐκδοσαν παρὰ τῶν
 σπύου τοῦ ἰωβ καὶ αὐτοῦ· καὶ ἡ ἀδελφὴ τῆς
 καὶ αὐτοῦ· μαρτίαι ἡ τοῦ κλῶ παὶ καὶ μαρ
 τία ἡ μαρδαμὴν· ἰδοὺ ἰδὼν τὴν μαρτίαν
 καὶ τὸν μαθητὴν παρεστῶτα ὁ ἡγάπα·
 λέγει τῇ μαρτίᾳ αὐτοῦ· γύναι· ἰδοὺ ὁ ἰσὸς αὐτοῦ
 εἶπα λέγει τῷ μαθητῇ· ἰδοὺ ἡ μαρτί σου·
 καὶ ἀπεκείνη τῆς ἡμέρας ἐλαυνεναὶ
 τὴν ὁμαθητὴς ἐκείνος εἰς τὰ ἰδιώματα
 οὗτος ἐστὶν ὁ μαθητὴς ὁ μαρτύρων περὶ
 τοῦ τῶν καὶ γράψας ταῦτα· καὶ οἶδα
 μεν ὅτι ἀληθεῖς ἐστὶν ἡ μαρτία αὐ
 τοῦ· ἐστὶ δὲ καὶ ἄλλα πολλὰ· ὅσα ἐποίη
 σεν ὁ ἰσὸς· ἀπὶ μαρτίαι αὐτοῦ γράφειτε καθὲν·
 οὐδὲ αὐτὸν οἶμαι τὸν κοῦμον χωρὶς αὐτοῦ
 τὰ γραφόμενα μετὰ τῶν ἀμεινῶν·

θ τοῦ αὐτοῦ προφῆτης ἡσαίου· καὶ τοῦ αὐτοῦ καὶ χρι
 στοφόρου· ζῆτῆς τῆς εὐπλοῦς τοῦ πᾶσιν·

ι τοῦ αὐτοῦ ἀπὸ εἰμῶν τοῦ ζηλωτοῦ· ζῆτῆς τῆς τοῦ λούου·

ια τοῦ αὐτοῦ ἱεροῦ καὶ παχυνῶ· ζῆτῆς τῆς τοῦ πᾶσιν·

ιβ τῶν ἀπὸ τῶν ἡμετέρων γερμανῶν ἀπὸ ἐπιστολῶν καὶ γράμ
 των·

- 14 πρὸς καὶ ἐπιφάνειαν ἀρεποῦ κυ: ζή' σε πρὸς β
 15 τοῦ α' ἡγεῖ ἀλεξάνδρ' ζή' τῇ β πρὸς ἰζ' εὐ' τοῦ λου:
 16 τοῦ α' ἡγεῖ δισιδώρου: ζή' τῇ γ τῇ σ' ἰβ' εὐ' τοῦ λου:
 17 τῶν ὁσὶ πρὸς ἡμ' παχωμ' καὶ θεὸν τοῦ ἡγιασμοῦ καὶ τοῦ
 ὁσίου πρὸς ἡμ' βαρυμάρου: ζή' τῇ γ μὴ τὴν γ.
 18 τοῦ α' προφῆ' ζαχαρί' ἐν ὁσ' 15: ζή' τῇ δ τῇ σ' ἰα' εὐ' τῶν
 19 τοῦ α' ἀποσὸ' ἀνδρομίκου: ζή' σὰ' ζ' τοῦ λου:
 20 τῶν α' ἡγεῖ πέτρου διονυσίου φιλεταίρου καὶ
 τῶν λοιπῶν: ζή' τῇ ε' τῇ σ' γ' εὐ' τοῦ ματ':
 21 τοῦ α' πρίκίου καὶ τ' (ἡναῦ): ζή' σὰ' γ' τοῦ πασ'
 22 τοῦ α' ἡγεῖ θαλαλαίου: καὶ τοῦ ἐν ἀγ' πρὸς ἡμ' νι
 μὴ τῇ λυκί: ζή' τῇ ε' τῇ σ' ματ' ἡ' π' ζή' σ' π' γ'
 23 τῶν ἐν ἀγ' βασιλῆ' ἡμ' καὶ ἰσοσῶλ κωνσταντίου
 καὶ ἐλένης: ζή' τῇ ε' τῇ σ' εὐ' τοῦ πασ' ἀπὸ τοῦ γ'.
 24 τοῦ α' ἡγεῖ βασιλῆ' καὶ τῶν σὺν αὐτ' ζή' τῇ ε' τῇ σ' ματ'
 25 τοῦ ἐν ἀγ' πρὸς ἡμ' μὴ ἐπισκοπῶν: ζή' σε πρὸς γ'
 26 τοῦ ε' πρὸς ἐν μὲ τοῦ ἐν θαυμαῶν: ζή' τῇ γ' μὴ τὴν γ'
 27 ἡγ' εἰρεσίς τῇ σ' τῇ μ' κεφαλῆς τοῦ α' ἰω' προφῆ'
 πρὸς καὶ ματ': ζή' τῇ ε' τῇ σ' εὐ' τοῦ λου:
 28 τοῦ α' ἀποσὸ' ἰούδα: ζή' σὰ' τῶν ἰη.
 29 τοῦ α' ἀποσὸ' καρπου ἐν τ' ο: ζή' φ' εὐ' κτ'
 30 τοῦ α' ἡγεῖ ἐξαδίου: ζή' σὰ' γ' τοῦ πασ'.
 31 τῇ σ' αὐτ' ἡγεῖ θεοδοσίας: ζή' σὰ' ἰζ' τοῦ ματ'
 32 τοῦ ε' πρὸς ἡμ' ἰσαακίου δαλματ': ζή' τῇ γ' μὴ τὴν γ'
 33 τοῦ α' ματ' ἐρμείου: ζή' τῇ π' τῇ σ' εὐ' τ' νησεί:
 34 τῇ σ' αὐτ' ἡγεῖ ἰουστίνου καὶ τῶν αὐτ': ζή' τῇ γ' εὐ' τῇ σ' ματ'
 35 τοῦ ἐν ἀγ' ἰοισ πρὸς ἡμ' νικηφόρου ἀρ' ἐπισκῶ
 κωνσταντ' πόλεως: ζή' σε πρὸς γ'.

- Δημόσια Κεντρική Βιβλιοθήκη Βέροιας

Πειδὲς περ πολλοὶ ἐπεχείρισαν ἀναπαύσαι
 αὐτοὺς ἢ ἡγοῦν περὶ τῶν πεπληροφορημένων
 ἐν ἡμῶν πραγμάτων· καθὼς παρέδωσαν ἑ
 μὲν οἱ ἀπαρχὴς αὐτὸ πᾶσι καὶ ὑπέρκειται
 γερόμενοι τοῦ λόγου· ἐδὲ καὶ οἱ παρ
 κολουθηκότες ἀνῶθεν πᾶσιν ἀκριβοῦς κα
 θεξίαντοι γράψαι κράτιστε θεόφιλε· ἵνα ἐ
 πὶ γὰρ περὶ ὧν κατηχήθης λόγων πῶς ἀσφαλῶς
 ἐκτύχῃς ἐν ταῖς ἡμέραις ἡρώδου τοῦ βασιλέως·
 τῆς ἰουδαίας· ἱεραὶς τὸ ὄνομα πίζαχαρί
 ας· ἐξεφῆμερίας αὐτοῦ· καὶ ἡ γυνὴ αὐτοῦ
 ἐν τῶν θυγατέρων ἀαρῶν· καὶ τὸ ὄνομα
 αὐτῆς ἐλισαῦβε· ἡσαν δὲ δίκαιοι ἀμφώ
 τεροι ἐνώπιον τοῦ θ· πορευόμενοι ἐν
 πασαις ταῖς ἐντολαῖς καὶ δικαιώμασι τοῦ
 κυ· ἀμεμπτοὶ· καὶ οὐκ ἐκείνοις τέκνον·
 καθὼς τὴν ἐλισαῦβιν ἐκείραν· καὶ ἀμφο
 τεροι προέβηκότες ἐν ταῖς ἡμέραις αὐτῶν
 ἰώσαν· ἐκτύχῃς δὲ ἐν τῷ ἱερατῇ φησὶ αὐτὸν
 ἐν τῇ τάξει τῆς ἐφῆμερίας αὐτοῦ ἐναν
 τίου τοῦ θ· κατὰ τὸ ἔθος τῆς ἱερατείας·
 ἐλάχε τοῦ θ· μῖαν· εἰσελθὼν εἰς τὸν
 ναὸν τοῦ κυ· καὶ πᾶν τὸ πλῆθος κυ τοῦ
 λαοῦ πρὸς ἀχόμενον ἐξωτὴν ὥραι τοῦ
 θυμῆς αἵματος· ὡφθῆ δὲ αὐτῷ ἄγγελος κυ
 ἐστὼς ἐν δεξιῶν τοῦ θ· ἱερατοῦ τοῦ θ·
 μῆς αἵματος· καὶ ἐπαράχθη ζαχαρίας
 ἰδὼν· καὶ φόβος ἐπέπεσεν ἐπ' αὐτόν·
 εἶπε δὲ πρὸς αὐτόν ὁ ἄγγελος· μή φοβοῦ

ἡσυχία

ζαχαρία· διότι εἶσθαι κοίσθη ἡ δέησί σου·
καὶ ἡ γυνὴ σου ἡ ἐλπίσά σου γεννήσει υἱόν·
ὅσοι καὶ καλέσεις τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἰωάν-
νου· καὶ ἔσται χαρά σοι καὶ ἀσφάλις·
καὶ πολλοὶ ἐπὶ τῇ γέννησί σου αὐτοῦ χαρίσονται·
ἐσται γὰρ μέγας ἐνώπιόν σου· καὶ
οἶνον καὶ σίκερα οὐ μὴ πίῃ· καὶ πνῆσ-
πὸς πληθήσεται· ἐπὶ σὺ κοιλίας μη-
τρὸς αὐτοῦ· καὶ πολλοὶ τῶν υἱῶν ἡλῆ ἐπι-
στέψουσιν ἐπὶ κνήμιν αὐτῶν· καὶ αὐ-
τὸς προέλθεται ἐνώπιον αὐτοῦ ἐν
πνῆ καὶ δωάμεν ἡλίου· ἐπὶ στεψαι
καρδίαν πρῶν ἐπὶ τέκνα· καὶ ἀπει-
θεὶς ἐν φρονήσει δίκαιων· ἐποιμά-
σαι κώλαον κατὰ σκεβαμένον· καὶ
εἰπερ ζαχαρίας πρὸς τὸν ἄγγελον· κα-
τὰ τὴν ὑπόστασιν τοῦτο· ἐγὼ γὰρ ἤμιν
πρῶτον· καὶ ἡ γυνή μου προε-
βήκει ἐν ταῖς ἡμέραις αὐτῆς· καὶ
ἀποκριθεὶς ὁ ἁγῆλος εἶπεν αὐτῷ·
ἐγὼ ἤμιν βαρὶ ἡλὸς παρεστηκὸς ἐνώπι-
ον τοῦ θύ· καὶ ἀπεσάλιν λαλῆσαι
πρὸς σέ καὶ ἀστέλισασθαί σοι ταῦτα·
καὶ ἰδὼν ἐσησίωπών καὶ μὴ δωάμενος
λαλῆσαι ἄχρι τῆς ἡμέρας γένηται ταῦτα·
ἀνθρώπων οὐκ ἐπίστευσας τοῖς λόγοις μου·
οἵτινες πληρωθήσονται εἰς τὸν καιρὸν
αὐτῶν· καὶ ἰὼν ὅλας πρὸς δόκω τὸν
ζαχαρίαν· καὶ ἐθαύμαζον ἐν τῷ χρό-

ῥίξαι αὐτὸν ἐν τῷ μαῶ + ἐξελθὼν δὲ οὐκ
 ἔδωκε λαλήσαι αὐτοῖς + καὶ ἐπέγνωσαν
 ὅτι ὁ πῦσας ἐώρακεν ἐν τῷ μαῶ + καὶ
 αὐτὸς ἰὼ δ' ἀνέβη αὐτοῖς + καὶ διέμνη
 καφὸς + καὶ ἐγένετο ὡς ἐπλήθυνον αὐ
 τῶν ἡμερῶν τῆς λειτουργίας αὐτοῦ, ἀπῆλθεν
 εἰς τοὺς οἶκον αὐτοῦ + μετὰ δὲ ταύτας τὰς
 ἡμέρας + ^{αὐτῶν} συνέλαβεν ἡ ἐλισαβέθ ^{τὸν} υἱόν
 αὐτοῦ + καὶ περιέκρυβεν ἐαυτὴν
 μήνας πέντε λόγους + ὅτι οὕτως κοίτη
 ποίηκεν ὡς ἐν ἡμέραις αἷς ἐπαύδεν αὐ
 τήν τὸ ὄνειδος μου ἐν ἀνθρώποις + ^{τὴν} ^{ἐξουσίαν}
 ἡ δὲ ἐλισαβέθ ἐπλήθυνε ὁ χρόνος τοῦτε,
 καὶ αὐτὴν + καὶ ἐγέννησεν υἱόν + καὶ ἔ
 κοιτο + ^{αὐτῶν} περίοικοι καὶ οἱ συγγενεῖς αὐ
 τῆς + ὅτι ἐμεγάλυνεν τὸ ἔλεος αὐτοῦ
 μετὰ αὐτῆς + καὶ συνέχαιρον αὐτῇ + καὶ ἐ
 γενέτο ἐν τῇ ὁδοῦ ἡμέρα ἦλθον περιτε
 μεῖν τὸ παιδίον + καὶ ἐκάλουν αὐτὸ
 ἐπὶ τὸ ὄνομα τῆ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ ζαχα
 ρίαν + καὶ ἀποκριθεὶς ἡ μήτηρ αὐτοῦ
 εἶπεν + οὐχί + ἀλλὰ κληθήσεται ἰωάν
 νης + καὶ εἶπον πρὸς αὐτήν + ὅτι
 οὐδεὶς ἐστὶν ἐν ταῖς ἡμετέρας οὗ καλεῖ
 ται τῷ ὀνόματι τοῦτω + ἐνέμαρξεν δὲ
 τῷ πατρὶ αὐτοῦ τὸ τί ἂν θέλοι καλεῖσθαι
 αὐτόν + καὶ αὐτήσας πῖνακίδον ἐ
 γραψέλεγων + ἰωάννης ἐστὶ τὸ ὄνο
 μα αὐτοῦ + καὶ ἐθαύμασαν πάντες +

ἀρεάχθη δὲ τὸ σῶμα αὐτοῦ παρὰ χεῖρα
 καὶ ἠγλώσσω αὐτοῦ· καὶ ἐλάλη εὐλογῶν
 τὸν θῆ· καὶ ἐγένετο ἐπὶ πάντας φόβος
 τοῖς περιόικοις τὰς αὐτοῦ· καὶ ἐνόη
 τῇ ὁρῇ τῆς ἰουδαίας· οὗ ἐλαλεῖτο
 πάντα τὰ ῥήματα ταῦτα· καὶ ἔθου
 το πάντες οἱ ἀκούοντες ἐν τῇ καρδίᾳ
 αὐτῶν λέγοντες· τί ἄρα τὸ παιδίον τοῦ
 τοῦ ἐστίν· καὶ χεῖρ κυρίου μετὰ αὐτοῦ· καὶ
 ζαχαρίας ὁ πῦρ αὐτοῦ· ἐπλήσθη πρὸς ἡ
 ου· καὶ προέφη τὰς λέγων· ἄλογον
 τὸς κς ὁ θς τοῦ ἱηλ· ὅτι ἐπεσκέψατο
 καὶ ἐποίησε λύτρωσιν τῷ λαῷ αὐτοῦ·
 καὶ σὺ παιδίον προφήτης ὑψίστου κλη
 θήσῃ· προπορεύσῃ γὰρ προπροσώπου κυ·
 ἐτοιμάσαι ὁδὸν αὐτοῦ· τὸ δὲ παιδί
 ον ἠύξαρε καὶ ἐκραταιώθη πῦρ· καὶ κυ
 ἐνταῖς ἐρήμοις· ἕως ἡμέρας ἀναδεί
 ζεωσ αὐτοῦ πρὸς τὸν ἰσραήλ· ~

κε Τῆς αὐτῆς φάρονίας· ζῆτ' αὐτῶν ἰς τοῦ ματ

κς Τοῦ εὐπρὸς ἡμῶν θεοσαλῶνι· ζῆτ' ἡ ἐπὶ τῶν τ' ματ

λ Τοῦ εὐπρὸς ἡμῶν σαμφῶν τοῦ ξενοδύχ· ζῆτ' αὐτῶν ἰς τ' λ

κη Ἡαρακομῶν τῶν ληφῶν τῶν ἡλῶν κίρου κη
 ἰσάμμου· ζῆτ' αὐτῶν α.

κθ τῶν αὐτῶν καὶ κορυφαί ἀποστολῆς πᾶσι παύ· ἡς ὁρ' προ

η σ εἰς πᾶσαν τὴν γλῶσσαν ἐξηλθὲν ἐνόφθόμος· σ

ο ἰοῦνοι δὲ ἡλῶνται δόξα θυ· πᾶς ἡ τῶ

ζῆτ' αὐτῶν ἰα· ἐφ' ἡμῶν αὐτῶν ὅτι· ἐπὶ

σημαίμων ποίωθαι αὐτῶν δόξασει τὸν θῆ·

ὦ καιρῷ ἐκείνῳ· ἐλθὼν ὁ ἰσ' εἰς τὰ μέ-
 ρη καισαρίας τῆς φιλιππου· ἤρῳ τὰ τοῦ
 μαθητῶσ αὐτοῦ λέγων· πῶς με λέγου-
 σιν οἱ ἄνθρωποι εἶναι τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου· οἱ δὲ εἶ-
 πομε· ὅτι μενὶ ὡς ἀνθρώπου τὸν βαπτιστὴν· ἄλλοι
 δὲ ἡλίαν· ἑτέροι δὲ ἱερεῖς· ἢ ἕνα
 τῶν προφητῶν· λέγει αὐτοῖς· ὑμεῖς δὲ
 πῶς με λέγετε εἶναι· ἀποκριθεὶς δὲ ὁ
 κύριος πρὸς αὐτοὺς· οὐκ ὁ ἔσθ' υἱὸς τοῦ
 θύτου ζῶντος· καὶ ἀποκριθεὶς ὁ ἰσ' εἶ-
 πεν αὐτῷ· μακάριος εἰ σὶ μὲν βασιλεὺς
 ὅτι σὰρξ καὶ αἷμα οὐ κατεκάλυψέ σοι· ἀ-
 λλ' ὁ πατήρ μου ὁ ἐν τοῖς οὐρανοῖς· καὶ ἔγωγε σοι
 λέγω· ὅτι σὺ εἶ πρὸς καὶ ἐπὶ πάντες
 τῆς πέτρας οἰκοδομήσω μου τὴν ἐκκλη-
 σίαν· καὶ πύλαι αἰδου οὐ κατησχεύουσιν
 αὐτήν· καὶ ὁ θάνατος οὐ κατενεύσει τὴν
 βασιλείαν αὐτῶν οὐρανῶν· καὶ ὁ ἔσθ' ἀν-
 θρώπου εἶπὶ τῆς γῆς· ἔσθαι δὲ δεμένον ἐν
 τοῖς οὐρανοῖς· καὶ ὁ ἔσθ' ἀνθρώπου εἶπὶ
 τῆς γῆς· ἔσθαι λεγόμενον ἐν τοῖς οὐρανοῖς·

τελειον

λ τὰ ῥα ἅπαντα ἀποδοῦναι τῶν ἰσ'· ζή' μοῦ ε' αὐτῶν ἐπὶ τὸν

φησὶ τοῦτο καὶ λαὸς φησὶ ἐπὶ τῶν ἰσ' φησὶ

α τὰ ῥα ἅπαντα ἀποδοῦναι τῶν ἰσ'· ζή' μοῦ ε' αὐτῶν ἐπὶ τὸν

β τὰ ῥα ἅπαντα ἀποδοῦναι τῶν ἰσ'· ζή' μοῦ ε' αὐτῶν ἐπὶ τὸν

γ τὰ ῥα ἅπαντα ἀποδοῦναι τῶν ἰσ'· ζή' μοῦ ε' αὐτῶν ἐπὶ τὸν

δ τὰ ῥα ἅπαντα ἀποδοῦναι τῶν ἰσ'· ζή' μοῦ ε' αὐτῶν ἐπὶ τὸν

ε τὰ ῥα ἅπαντα ἀποδοῦναι τῶν ἰσ'· ζή' μοῦ ε' αὐτῶν ἐπὶ τὸν

ς τὰ ῥα ἅπαντα ἀποδοῦναι τῶν ἰσ'· ζή' μοῦ ε' αὐτῶν ἐπὶ τὸν

ζή' μοῦ ε' αὐτῶν ἐπὶ τὸν

- η τοῦ ἁγίου ἡρώδου προκοπίου: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 θ τοῦ ἁγίου ἡρώδου παρμενίου: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 ι τοῦ ἁγίου ἡρώδου τῶν ἐνικοπῶν: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 ια τοῦ ἁγίου ἡρώδου εὐφρατίου: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 ιβ τοῦ ἁγίου ἡρώδου πρόκλου: ἰλαρίου καὶ τῶν λοιπῶν.
 ιγ τοῦ ἁγίου ἡρώδου σαραπίωνος: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 ιδ τοῦ ἁγίου ἡρώδου αὐτοῦ: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 ιε τοῦ ἁγίου ἡρώδου κίρκου καὶ οὐλίτηος: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 ις τοῦ ἁγίου ἡρώδου ἀνθιμου βύσσου καὶ τῶν λοιπῶν καὶ τοῦ ἁγίου ἡρώδου ἀντιόχου: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 ιζ τοῦ ἁγίου ἡρώδου μαρίνου: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 ιη τοῦ ἁγίου ἡρώδου αἰμιλιανού: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 ιθ τοῦ ἁγίου ἡρώδου δίου: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 κ τοῦ ἁγίου ἡρώδου ἡλίου: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 κα τοῦ ἁγίου ἡρώδου ιερεκίου: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 κβ τοῦ ἁγίου ἡρώδου φωκαίου: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 κγ τοῦ ἁγίου ἡρώδου τροφίου καὶ τῶν λοιπῶν: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 κδ τοῦ ἁγίου ἡρώδου χριστιανῶν: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 κε τοῦ ἁγίου ἡρώδου ἀνθίου τῶν μετὰ τὸν θάνατον: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 κς τοῦ ἁγίου ἡρώδου παρασκευῆ καὶ τοῦ ἁγίου ἡρώδου ἱεροῦ: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 κζ τοῦ ἁγίου ἡρώδου παντελεμονίου: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 κη τοῦ ἁγίου ἡρώδου ἀποστόλου προχώρου: μικάφορος ἡ τῶν λοιπῶν: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 κθ τοῦ ἁγίου ἡρώδου καλλινίκου καὶ θεοδότου: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 λ τοῦ ἁγίου ἡρώδου εἰλασιλουάρου κρίσεντος: ἐπαινετοῦ ἡρώδου: ζήτω ἡ τὸ πούλου.
 λα τοῦ ἁγίου ἡρώδου ἰωάννου τοῦ γραμματέως: ζήτω ἡ τὸ πούλου.

α ΠΗ αὐ ἐν ἡμῶν λαῶν. ὁ ἡμῶν ἐν τῷ ἡμῶν ἡμῶν.
 β τῶν αὐτῶν παῖδ' τῶν μαθητῶν καὶ τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ
 καὶ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ ἐλεάζοντες τὴν ψυχὴν αὐτοῦ.
 γ Παρακαλοῦντες τοὺς μαθητὰς τοῦ ἀδελφοῦ στεφάνου.
 δ τὴν ἐκκλησίαν αὐτῶν τοῦ λουκάου.

ε τῶν ὁσίων πρῶν ἡμῶν. ἰσακίου φαίτου καὶ
 δαρμάτου. ὅτι τίς ἦν ἐν αὐτοῖς τοῦ ματῆ

ς τῶν ἀδελφῶν εὐδοκίαν. ὅτι πᾶσι τῶν ἐκκλησιῶν.

ζ τοῦ ἀδελφοῦ εἰσιγνίου. ὅτι ἦν ἐν τῶν μαθητῶν.

η ἡμετέρας φωνῆς τοῦ κυρίου ἡμῶν. ὅτι ὁρᾷ πρὸς ἡμᾶς
 θ αὐτῶν ἐν ἡμῶν. ὅτι ἐν ἡμῶν οἱ οὐνοὶ. ὅτι λουκάου.

καὶ αὐτῶν ἐν ἡμῶν. παραλαμβάνει οἱ οὐ
 τοῦ πετρου καὶ ἰωάννου καὶ ἰακώβου. καὶ
 ἀνέβη εἰς τὸ ὄρος πρὸς ἀξίαντα καὶ ἐγένετο
 ἐν τῷ προσείχεσθαι αὐτοῦ. τὸ εἶδος τοῦ
 προσώπου αὐτοῦ ἕτερον. καὶ οἱ μαθηταὶ
 αὐτοῦ λαλῶντες ἐξασπράττων. καὶ ἰδοὺ
 ἄνδρες δύο (ὡς ἐλάλοισιν αὐτῷ. οἱ τῶν
 ἡσυχαστῶν καὶ ἡλίας. οἱ ὁφθέντες
 αὐτῷ ἐδόξα. ἔλεγον τῷ ἐξοδισμῷ αὐτοῦ
 ὡς ἐμελεν πληροῦν ἐν ἡμῶν. ὁ δὲ πέτρος
 καὶ οἱ ὡς αὐτῷ. ἡσαν βεβαρημένοι ὑπνῷ.
 ὁ δὲ ἄγγελος ἡσυχαστῶν δὲ εἶδον τῷ ἐξοδισμῷ
 αὐτοῦ. καὶ τοῖς δύο ἄνδρας τοῖς ὡς αὐτῷ
 αὐτῷ καὶ ἐγένετο ἐν τῷ διαχωρίζεσθαι
 αὐτοῖς ἀπ' αὐτοῦ. εἶπεν πέτρος πρὸς
 τοὺς ἡμῶν. ἐπίσταται. καλὸν ἐστὶν ἡμῶν
 δεῖναι. ποιήσωμεν τρεῖς σκηναί. μία
 ἀρσὶ. καὶ μία ἀρσὶ. καὶ μία ἀρσὶ.

μή ἴδωσ' ἰλέγει· ταῦτα δὲ αὐτοῦ λέγοντος· ἔ-
γερτο με φέλη καὶ ἐπεσκέασεν αὐτοῖς· ἐ-
φοβήθησαν δὲ ἐν τῷ ὄρει θῆν' ἐκρήμω εἰς τὴν
με φέλην· καὶ φωνή ἔγερτο ἐκ τῆς με φέ-
λης λέγουσα· οὗτος ἐστὶν ὁ υἱός μου ὁ ἀγαπῶ-
νός ἐν ᾧ ἀδύναμις αὐτοῦ ἀκούετε· καὶ ἐν
πάντε νύθαι τὴν φωνὴν· ἀνέβη δ' ὁ ἴσ' μόνος·
καὶ αὐτοὶ ἐσίγησαν· καὶ οὐδεὶς ἀπήγγε-
λας ἐν ἐκρήμω ταῖς ἡμέραις· οὐδὲν ὦρ ἐ-
ωράκασι· ~ ἔτι ληποῦν κατὰ μαρ-

Τῶ καιρῷ ἐκείνῳ· παρὰ λαμψάνει ὁ ἴσ'
τὸν πέτρον καὶ ἰακώβον καὶ ἰωάννην τὸν
ἀδελφὸν αὐτοῦ· καὶ ἀναφέρει αὐτοὺς εἰς
ὄρος ὑψηλὸν κατ' ἰδίαν· καὶ μετεμορφώ-
θη ἐμπροσθεν αὐτῶν· καὶ ἔλαμψεν τὸ
πρόσωπον αὐτοῦ ὡς ὁ ἥλιος· τὰ δὲ ὀφθαλ-
μία αὐτοῦ ἐγένοντο λαμπρὰ ὡς τὸ φῶς·
καὶ ἰδοὺ ὡφθῆσαν αὐτοῖς μαῖαι καὶ ἰ-
λίας μετὰ αὐτοῦ σὺ μαχοῦντες· ἀπο-
κριθεὶς δὲ ὁ πέτρος εἶπεν τῷ ἰσ'· κέ' κα-
λὸν ἐστὶν ἡμᾶς ὦδε θῆναι· εἰ θέλῃς ποιῆ-
σάμεν ὦδε τρεῖς σκηναῖς· σοὶ μία· καὶ
μωσέϊ μία· καὶ μίαν ἡλίας· ἐπὶ αὐτοῦ
λαλοῦντος· ἰδοὺ με φέλη φωνὴ ἐπεσκέα-
σεν αὐτοὺς· καὶ ἰδοὺ φωνὴ ἐκ τῆς με φέ-
λης λέγουσα· οὗτος ἐστὶν ὁ υἱός μου ὁ ἀ-
γαπῶνός ἐν ᾧ ἀδύναμις αὐτοῦ ἀκούετε·
καὶ ἀκούσατε τὰς οἰμαθῆτάς· ἐπε-
σον ἐπὶ πρόσωπον αὐτῶν· καὶ ἐφοβήθη

τοῦ πρὸς ἡλ' :

σαμοφόδρα + καὶ προσελθὼν οἷός ἡ ἴαπο αὐτῶν.
καὶ εἶπεν· εἰρήθητε καὶ μὴ φοβήσθε· ἐπα-
ραττω δὲ τοῖς ὀφθαλμοῖς αὐτῶν οὐδὲν αἶ-
εῖδον, εἰ μὴ τὸν ἵμνιον· καὶ καταβαινόν-
των αὐτῶν ἐκ τοῦ ὄρους· ἔρε τέλει αὐτοῖς
οἷός λέγων· μὴ δυνί εἶπτε τὸ ὄραμα· ἕως
οὐ οὕτως τοῦ ἀνθρώπου ἐκ νεφρῶν ἀφασίς·

ζ τοῦ ὁπρὸς ἡμῶν δοματίου τοῦ πατρὸς· ζῆτι πῶς τῆς βεῖς τῶν λού.

η τοῦ ὁπρὸς ἡμῶν καὶ ὁμοῦ αἰμλιαρὸν ἐπισκῶν ζῆτι.
καὶ τῶν ἡμετέρων καὶ λεονίδω· ζῆτι ζῆτι ζῆτι.

θ τοῦ ἁποσὸς μαθί / τοῦ αὐτοῦ τοῦ προδότη τοῦ ἰού /
ῥοαχθὲν τοῖς· ζῆτι τῆς τῆς ἰε εἰς τοῦ ματ.

ι τοῦ ἁφῆ λαυρεντίου· ζῆτι σῶς τῶν πᾶς

ια τοῦ ἁφῆ εὐπλου· ζῆτι φῶς αἵ

ιβ τῶν ἁφῆ φωτίου καὶ αἰνῶν· ζῆτι τῆς τῆς ἰε εἰς τῶν λού.

ιγ τοῦ ὁπρὸς ἡμῶν καὶ ὁμοῦ μαφίμ· καὶ τῶν ἡμετέρων ζῆτι.
στεφᾶν παμφί καὶ τῶν λού· ζῆτι τῆς τῆς ἰε εἰς τῶν λού.

ιδ τοῦ ἁφῆ μαρμελόν· καὶ τῶν ὁμαθῶν· ζῆτι σῶς τῶν λού.

ιε ἡκοίμης τῆς πᾶς ὁμοῦ καὶ ὁμοῦ καὶ ὁμοῦ
καρίας· ζῆτι τῶν πᾶς ὁμοῦ σε πᾶς ἰε.

ις ἐξέδωκεν ἀνακομήν τοῦ ἁφῆ διὰ τῆς μορφῆς τοῦ
καὶ τῶν ἁφῆ ὁμοῦ· ζῆτι τῆς τῆς ἰε εἰς τῶν λού.

ιζ τῶν ἁφῆ μίρωνος στρατηγικοῦ καὶ παύ /
ζῆτι τῆς τῆς ἰε εἰς τῶν λού.

ιη τῶν ἁφῆ φλώρου καὶ λαύρου· ζῆτι πᾶς τῆς ἰε εἰς τῶν λού.

ιθ τοῦ ἁφῆ ἀνδρέου τῆς στρατηγικοῦ· ζῆτι τῆς τῆς ἰε εἰς τῶν λού.

ικ τοῦ ἁφῆ ἀποσὸς θάδαίου· ζῆτι σῶς τῶν λού.

ια τῆς ἁφῆ βασίς καὶ τῶν πᾶς· ζῆτι σῶς τῶν λού.

ιβ τοῦ ἁφῆ ἀγαθορίκου· ζῆτι σῶς τῶν πᾶς.

ρε τήρει αὐτόν· καὶ ἀκούσας αὐτοῦ πολλὰ ἐ-
 ποίη· καὶ ἡ δέ ὡς αὐτοῦ ἦκουε· καὶ γενομένη
 ἡ ἡμέρα αὐτοῦ· ὅτε ἡ ῥῶδὸς τοῖς γερμεσί οἱς
 αὐτοῦ δεῖ προμεποίη τοῖς μεγίσταις αὐτοῦ·
 καὶ τοῖς χιλιάρχοις καὶ τοῖς πρώτοις τῆς βα-
 λυλαίας· καὶ εἰσελθοῖσις τῆς θύρας τῆς αὐ-
 τῆς τῆς ἡμέρας αὐτοῦ· καὶ ὀρχήσασθαι· καὶ ἡ
 ῥῶδὸς τῆς ἡμέρας καὶ τοῖς ζωαρχαῖς
 τοῖς· εἰπὲν ὁ βασιλεὺς τῷ κορασίῳ· αἱ
 τῶν μοι ὅ ἐστιν θέλω· καὶ δώσω σοι· καὶ ὁ μὲν
 σεν αὐτῇ· ὅτι ὅ ἐστιν αἱ τῶν μοι δώσω σοι ἕως
 μίσου τῆς βασιλείας μου· ἡ δὲ ἐξελθοῖσα
 εἰπὲν τῇ μητρί αὐτῆς· τί αἱ τῶν μοι· ἡ δὲ ἔφη·
 τὴν κεφαλὴν ἰωάννου τοῦ βαπτιστοῦ· καὶ ἡ
 σελθοῖσα ἀπὸ τοῦ βαπτιστοῦ πρὸς τὸν
 βασιλέα· ἡ τῶν μοι λέγουσα· θέλω ἰνα μοι
 δώσῃ ἐξ αὐτῆς ἐπὶ πίνακι τὴν κεφαλὴν ἰω-
 ἀννου τοῦ βαπτιστοῦ· καὶ περίλυπος γε-
 μενος ὁ βασιλεὺς· ὅτι αὐτοῖς ὅρκους καὶ τοῖς
 ζωαρχαῖς μένος οὐκ ἔθελε σφαιρῶν αὐτῇ
 θετήσαι· καὶ ἀπὸ τοῦ βασιλέως ὁ βασιλεὺς
 ἀποκρουσάτωρα ἐπέταξεν ἐρεχθῆναι
 τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ· ὁ δὲ ἀπελθὼν ἀπεκεφα-
 λισεν αὐτὸν ἐν τῇ φυλακῇ· καὶ ἡ ἡμέρα τῆς
 κεφαλῆς αὐτοῦ ἐπὶ πίνακι· καὶ ἔδωκε
 αὐτῇ τὸ κορασίον· καὶ τὸ κορασίον ἔδωκε
 κεν αὐτῇ τῇ μητρί αὐτῆς· καὶ ἀκούσαν-
 τες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἦλθον καὶ ἡραγί-
 πτωμα αὐτοῦ· καὶ ἔθνη καὶ αὐτὸ ἐν ἡμέρῃ

καὶ σωζομενται οἱ ἀπόστολοι πρὸς τὸν ἰν. καὶ
ἀπὴν γὰρ λαμβάνω πάντα· καὶ ὅσα ποί
ησαν· καὶ ὅσα ἐδίδαξαν· ~

λ τῶν ἀπὸ πρίν ἀλεξάνδρου καὶ ἰων. καὶ τοῦ οὐρίου
πρὸς ἡμῶν φαντι· ~ ζη' ^{μὲν} α

λβ τὰ καταθέσθαι τῆς τιμῆς ζώνης τῆς π' ^θ τοῦ· ~
ἐν τοῖς χαλκοπρατίοις· ~ ζη' ^{μὲν} ιε τοῦ λου·

ε' περὶ ἀπαξίς τῶν ἀδελφῶν ἀναπνεύσας
εἰς δὲ ἀφόροις ἡμῶν ἢ μὴ ἢ λ' ἢ λ' ἢ παρὺν
εἰς ἐμάς· ζη' ^{μὲν} παρατῆσθαι ^{αὐτὸν} ζη' ^{μὲν} ἰού ^{μὲν} κθ' ^{μὲν} τοῦ
εἰς μὴ φόβουσι· ζη' ^{μὲν} τῆς ^{μὲν} β' ^{μὲν} ματ' ^{μὲν} ζη' ^{μὲν} τῆς ^{μὲν} δ' ^{μὲν} τοῦ
εἰς μὴ φόβου ἐθ'· ζη' ^{μὲν} τῆς ^{μὲν} α' ^{μὲν} τοῦ λου·
εἰς λτ' εὐχαριστήριον καὶ πολεμικὸν ^{μὲν}
εἰς λτ' παρακλησέως· ζη' ^{μὲν} σα' ^{μὲν} ις τοῦ λου·
εἰς ἀνομβρίαν· καὶ μαθαῖον

Καὶ ῥω ἐκείνῳ· προσελθόντες οἱ φαρισαῖ
οὗτοι καὶ οἱ σαδδουκαῖοι· πειράζοντες
ἐπιρώτων αὐτὸν· σημεῖον ἐκ τοῦ οὐνοῦ
εἰς ἐπιδείξαι αὐτοῖς· ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶ
πεν αὐτοῖς· ὁ ψῆφος ἡγομένης λέγετε ἀδύνα
τον πυρραβεῖν γὰρ ὁ οὐρανὸς καὶ πρῶτ' ἡμερῶν χει
μῶν· πυρραβεῖ γὰρ συγνάζων ὁ οὐρανὸς·
ὑποκρίται· τὸ μὲν πρόσωπον τοῦ οὐνοῦ
ἡ γὰρ κτὰ διακρίνειν· τὰ δὲ σημεῖα τῶν
καιρῶν οὐ δύνασθαι γινῶναι· ἀμὲν λέ
γω ὑμῖν· ὅτι οὐδεὶς προφήτης δεκτός ἐ
στίν ἐν τῇ πόλει αὐτοῦ· ἐπαληθῆς δὲ λέ
γω ὑμῖν· πολλὰ χεῖρα ἦσαν ἐν ταῖς ἡμέραις

7. π. μ. ε. ι. ε. ρ. ο. μ. ε. β. α. γ. γ. λ. ι. ο. γ. ο. ο. τ. ο. ε. μ. α. λ. ο. π. α. τ. ι. κ. ε. γ. γ. ρ. ι. μ. α. τ. ι. α. σ. ι. β. ρ. μ. α. ι.
 κ. ε. ξ. ο. δ. ο. υ. κ. ο. μ. ρ. ι. γ. κ. η. λ. ο. κ. η. τ. α. κ. η. φ. ι. ε. ρ. ο. θ. ι. α. γ. η. λ. ι. ο. γ. η. α. λ.
 κ. ο. π. ι. ο. β. ο. λ. ι. σ. ι. γ. α. τ. ο. α. ε. ρ. ι. σ. η. μ. α. λ. ι. α. ρ. α. τ. ο. μ. α. γ. η. ο. ρ. ρ. ι. α. σ. ι. ο. γ. τ. η.
 ρ. ε. ο. φ. ο. ρ. ο. γ. κ. α. τ. ε. ρ. ο. γ. η. μ. α. γ. κ. η. τ. ο. ρ. μ. η. γ. η. μ. α. λ. ο. γ. α. ο. γ. α. τ. ι. μ. α. γ. α.
 ε. η. ι. μ. ε. ρ. α. τ. η. ε. η. μ. α. σ. ι. ο. ς. : -

ὁ ἀφ' αὐτοῦ
τὸ πνεῦμα
τοῦ ὁ ἀφ' αὐτοῦ
δημοσθένους
ἡμεῖς

απο

Αρχαία Κεντρική Βιβλιοθήκη Βερόνας